

कुर्आन का पैग़ाम

# तफ़्सीर फ़ारूकी

कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़्सीर या व्याख्या

भाग-5

सन्देश

मुफ़विकरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद

अबुल हसन अली हसनी नदवी (अली मियाँ रह०)

अनुवाद एवं व्याख्या

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी

(अध्यक्ष, जमअीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअीयत पयामे अम्न,

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू0पी0) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

|                     |                                                                |
|---------------------|----------------------------------------------------------------|
| नाम-                | तफ़सीर फ़ारुकी (कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़सीर या व्याख्या) |
| अनुवाद और व्याख्या- | मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी                              |
| कम्पोज़ीटर-         | इरफ़ान अहमद                                                    |
| संस्करण-            | तीसरा संस्करण                                                  |
| पुस्तक संख्या-      | 3000                                                           |
| वर्ष-               | 2018                                                           |
| हदिया (मूल्य)-      | 600                                                            |
| प्रकाशक-            | जमज़ीयत पयामे अमन                                              |

|            |                                                                     |
|------------|---------------------------------------------------------------------|
| Writer     | Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi (Acharya)                          |
| S. No.     | 3000                                                                |
| Publisher: | Jamiat Payam-e-Amn<br>Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India-20 |
| Website.   | www.islamicjpamn.com                                                |
| Mobile-    | 0091- 9919042879, 9984490150                                        |

## मिलने के पते

1. मजलिसे तहकीकात व नशरियात, नद्वतुल उलमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522-2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुहम्मद अली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522-2741539)
3. अल् फुरकान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुहल्ला, जबलपुर, मध्य प्रदेश (9424708020)
5. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, कानपुर (9935044343)
6. मकतब: शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ (9198621671)

## التحفة العرفية في تفسير القرآن

इस (तफ़सीर फ़ारुकी भाग-5) में पारा नं० (17) सूर: अल् हज़ आयत नं (30) से पारा नं० (12) सूर: फ़ातिर आयत नं० (11) तक की पूरी तफ़सीर है।



पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुजू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अमल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

कुर्आन के व्याख्या की शुरुआत पेज नं० 22 से 584 तक है। उस से पहले विषय सूची और उलमा के संक्षिप्त लेख और प्राक्कथन है।

इस तफ़सीर के भाग-एक में विश्व प्रसिद्ध उलमा के संक्षिप्त सन्देश जैसे-हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् कासिम नोअमानी कासमी, मौलाना मुहम्मद सालिम कासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आजूमी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहमान हिलाल उस्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अतीक अहमद कासमी, मौलाना ख़ालिद साहब गाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल कादिर मज़ाहिरी, मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह कासमी मद्दज़िल्लहुल्ल आली आदि की तस्दीक मौजूद है और प्राक्कथन में कुर्आन का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। इन सब का मुकम्मल लेख भाग-एक के अन्त में दिया गया।

## दो शब्द

### बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह अनुवाद एवं व्याख्या इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान एवं दाअी-ए-इस्लाम मुफ़सिरे कुर्आन 'हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी साहब' जो हिन्दी और अरबी दोनों भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। इनकी दीनी शिक्षा कारी, आलिम, फ़ाज़िल व मुफ़्ती की है और संस्कृत से आचार्य हैं। जिनके क़लम से लगभग 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें उर्दू भाषा में लफ़्ज़ी (शाब्दिक) तर्जुमः और हिन्दी में तीखें पारः की तफ़्सीर और यह सात भागों में 'तफ़्सीर फ़ारूकी' काबिले ज़िक्र है, जिसे हर तबूके के लोगों ने इस की आसान भाषा की वजह से पसन्द किया, जो घरों और मस्जिदों में पढ़ी जाती है। जिसके कई एडीशन प्रकाशित करने का शर्फ़ हासिल हो चुका है। इस के तर्जुमः व तफ़्सीर की मुख्य विशेषता इस तरह हैं:-

#### तर्जुमः की विशेषता-

इस के तर्जुमें में 'मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी साहब' का वह मक़बूल तर्जुमः है जिसके 2016 तक बीस एडीशन से ज़्यादा छप चुके हैं, इसकी भाषा बहुत सरल है जिसको मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, कम पढ़ा हो या ज़्यादा हर वर्ग आसानी से समझ लेता है।

#### तफ़्सीर की विशेषता-

- (1) यह तफ़्सीर मुस्लिम हो या व ग़ैर दोनों को सामने रखते हुए आम बोलचाल की भाषा में लिखी गई है, ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी इस से फ़ायदा उठा सकें।
- (2) तफ़्सीर में हदीस और मोअतबर (अथैन्टिक) उल्मा की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है।
- (3) इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के हिसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर अलग-अलग आयतों की तफ़्सीर बयान की गई है।
- (4) इस में पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर, जिसमें सबसे पहले उस आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक्त की हालत) फिर उस आयत से सम्बन्धित हदीस, और मोअतबर उल्मा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एहक़ाम, और साइंसी तहकीक़ के साथ ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब और उस से मुतअल्लिक़ फ़ज़ायल जो सही हदीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

नोट- इस तरह यह एक मुफ़ीद तोहफ़ा तमाम इन्सानों की रहनुमाई के लिए पेश किया जाता है जिस पर चन्द मशहूर उल्मा जैसे- हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् कासिम नोअमानी कासमी, मौलाना मुहम्मद सालिम कासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आजूमी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहमान हिलाल उस्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अतीक़ अहमद कासमी, मौलाना ख़ालिद साहब गाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल कादिर मज़ाहिरी, मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह कासमी मद्दज़िल्लहुल् आली आदि की तस्दीक़ के प्रमाणित सन्देश संक्षेप में मौजूद हैं।



## विषय सूची

| विषय | पृष्ठ सं० |
|------|-----------|
|------|-----------|

|                                                                                |    |
|--------------------------------------------------------------------------------|----|
| मुफक्किरे इस्लाम, 'हज़रत मौलाना सय्यद अबुल् हसन अली नदवी' (रह०) के कलम से..... | 11 |
|--------------------------------------------------------------------------------|----|

|                                                                    |    |
|--------------------------------------------------------------------|----|
| प्रख्यात विश्व विद्वानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख जैसे ..... | 13 |
|--------------------------------------------------------------------|----|

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल् हसन अली हसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् कासिम नोअमानी कासमी, मौलाना मुहम्मद सालिम कासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद सईदी मजाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी, मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहमान हिलाल उस्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुप्ती अतीक अहमद कासमी, मौलाना खालिद साहब गाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल कादिर मजाहिरी, मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह कासमी मद्दज़िल्लहुल् आली।

|                |    |
|----------------|----|
| प्राक्कथन..... | 19 |
|----------------|----|

| विषय | पृष्ठ सं० | विषय | पृष्ठ सं० |
|------|-----------|------|-----------|
|------|-----------|------|-----------|

### भाग-22 सूर-ए-हज़ की व्याख्या आयत नं० 30 से शुरु

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 30 से 41 तक).....   | 23 |
| व्याख्या (आयत नं० 30 से 41 तक)..... | 24 |

|                                       |    |
|---------------------------------------|----|
| शिक़ और झूठ से बचने की ताकीद.....     | 24 |
| अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क.....        | 28 |
| कुर्बानी के जानवर.....                | 29 |
| अल्लाह तआला दुश्मनों को हटा देगा..... | 32 |
| जिहाद की इजाज़त और उस के फ़ायदे.....  | 32 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 42 से 57 तक).....   | 35 |
| व्याख्या (आयत नं० 42 से 57 तक)..... | 36 |

|                                                   |    |
|---------------------------------------------------|----|
| हलाक़ शुदा बस्तियों की हालत.....                  | 36 |
| ईमान और आमाले सालिह पर मग्फ़िरत.....              | 39 |
| हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) की मुख़ालिफ़्त..... | 39 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 58 से 70 तक).....   | 41 |
| व्याख्या (आयत नं० 58 से 70 तक)..... | 42 |

|                                        |    |
|----------------------------------------|----|
| बेहतर रिज़्क का वादा.....              | 42 |
| अल्लाह तआला की तख़लीक़.....            | 43 |
| हर उम्मत के लिए अ़िबादत के तरीक़े..... | 44 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 71 से 78 तक).....   | 46 |
| व्याख्या (आयत नं० 71 से 78 तक)..... | 47 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| काफ़िरों को कुआन भारी पड़ता है..... | 47 |
| मअ़बूदों (उपास्यों) की बेबसी.....   | 48 |
| पैग़ाम पहुँचाने वालों का चुनाव..... | 49 |
| दीन में तंगी नहीं है.....           | 51 |
| मुस्लिम.....                        | 53 |

### भाग-23 सूर-ए-मूमिनून की व्याख्या

|                           |    |
|---------------------------|----|
| तफ़्सीर सूर: मूमिनून..... | 56 |
|---------------------------|----|

|                                    |    |
|------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 1 से 22 तक).....   | 57 |
| व्याख्या (आयत नं० 1 से 22 तक)..... | 58 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 23 से 41 तक).....   | 63 |
| व्याख्या (आयत नं० 23 से 41 तक)..... | 64 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 42 से 62 तक).....   | 68 |
| व्याख्या (आयत नं० 42 से 62 तक)..... | 69 |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 63 से 90 तक).....   | 73 |
| व्याख्या (आयत नं० 63 से 90 तक)..... | 74 |

|                                      |    |
|--------------------------------------|----|
| अनुवाद (आयत नं० 91 से 118 तक).....   | 79 |
| व्याख्या (आयत नं० 91 से 118 तक)..... | 80 |

विषय

पृष्ठ सं० विषय

पृष्ठ सं०

## भाग-24

### सूर-ए-नूर की व्याख्या

तफ़्सीर सूर: नूर..... 87

अनुवाद (आयत नं० 1 से 10 तक)..... 88

व्याख्या (आयत नं० 1 से 10 तक)..... 88

ज़ानी की सज़ा..... 89

ज़िना से सम्बन्धित मसायल..... 90

दुश्मनाने इस्लाम की बातें..... 91

रज़्म अल्लाह की किताब में है..... 92

ज़िनाकारी के नुक्सानात और निकाह की फज़ीलत..... 93

आज़ाद लड़के और लड़कियाँ..... 94

ज़िना तमाम मज़ों का इलाज है..... 96

लज़ज़त चाहिए इन्सानियत नहीं..... 97

पाक-दामन औरतों पर आरोप की सज़ा..... 99

लिआन का हुक्म..... 100

लिआन का तरीका..... 101

अनुवाद (आयत नं० 11 से 26 तक)..... 102

व्याख्या (आयत नं० 11 से 26 तक)..... 103

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की..... 103

बराअत का एलान

शैतान की पैरवी..... 112

अनुवाद (आयत नं० 27 से 34 तक)..... 117

व्याख्या (आयत नं० 27 से 34 तक)..... 118

दूसरे के घर जाने में इजाज़त..... 118

हदीस में इजाज़त के अहकाम व आदाब..... 121

नज़र की हिफ़ाज़त का बयान..... 124

बेपर्दगी को पसन्द करने वालों की जाहिलाना बातें..... 132

सूर: अहज़ाब में हुक्म..... 133

अहज़ाब में पर्दे का हुक्म..... 134

नमाज़ में धोका..... 137

हुया की अहमियत..... 138

पर्दे की जगह का छूना हराम है..... 138

लअनत के हक्दर..... 140

निकाह की ज़रूरत और अहमियत..... 140

मकातिब बनाने का हुक्म..... 144

अनुवाद (आयत नं० 35 से 45 तक)..... 149

व्याख्या (आयत नं० 35 से 45 तक)..... 150

नेक बन्दे क्रियामत के दिन से डरते हैं..... 152

काफ़िरों के आमाल का बदला..... 156

आसमान और ज़मीन वालों की तस्बीह..... 158

अनुवाद (आयत नं० 46 से 57 तक)..... 162

व्याख्या (आयत नं० 46 से 57 तक)..... 163

ईमान वालों की कामियाबी..... 165

मुनाफ़िकों का झूठी कसमें खाना..... 166

ईमान और नेक बन्दे..... 167

शर्त की ख़िलाफ़वर्ज़ी..... 169

सहाब-ए-किराम के दुश्मन..... 170

रवाफ़िज़ (शियों) का अक़ीदा..... 170

अनुवाद (आयत नं० 58 से 64 तक)..... 172

व्याख्या (आयत नं० 58 से 64 तक)..... 173

तीन वक्तों में इजाज़त लेने का एहतिमाम..... 173

किसी के घर में तीन वक्तों में जाना मना है..... 174

बूढ़ी औरतों के लिए गुन्जाइश है..... 175

रिश्तेदारों के घरों में खाने-पीने की इजाज़त..... 176

अहले ईमान रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त..... 178

लेकर जाते

## भाग-25

### सूर-ए-फुरक़ान

तफ़्सीर सूर: फुरक़ान..... 183

अनुवाद (आयत नं० 1 से 16 तक)..... 184

व्याख्या (आयत नं० 1 से 16 तक)..... 185

अनुवाद (आयत नं० 17 से 20 तक)..... 190

व्याख्या (आयत नं० 17 से 20 तक)..... 190

अनुवाद (आयत नं० 21 से 35 तक)..... 192

व्याख्या (आयत नं० 21 से 35 तक)..... 193

अनुवाद (आयत नं० 36 से 52 तक)..... 197

व्याख्या (आयत नं० 36 से 52 तक)..... 198

अनुवाद (आयत नं० 53 से 77 तक)..... 202

व्याख्या (आयत नं० 53 से 77 तक)..... 203

विषय

पृष्ठ सं० विषय

पृष्ठ सं०

## भाग-26

### सूर-ए-शुअरा

तफ्सीर सूर: शुअरा..... 209

अनुवाद (आयत नं० 1 से 33 तक)..... 210

व्याख्या (आयत नं० 1 से 33 तक)..... 211

फिरऔन और हज़रत मूसा (अलै०) की बातचीत-215

अनुवाद (आयत नं० 34 से 68 तक)..... 217

व्याख्या (आयत नं० 34 से 68 तक)..... 218

अनुवाद (आयत नं० 69 से 104 तक)..... 223

व्याख्या (आयत नं० 69 से 104 तक)..... 224

अनुवाद (आयत नं० 105 से 140 तक)..... 229

व्याख्या (आयत नं० 105 से 140 तक)..... 230

अनुवाद (आयत नं० 141 से 175 तक)..... 235

व्याख्या (आयत नं० 141 से 175 तक)..... 236

अनुवाद (आयत नं० 176 से 212 तक)..... 240

व्याख्या (आयत नं० 176 से 212 तक)..... 241

अनुवाद (आयत नं० 213 से 227 तक)..... 247

व्याख्या (आयत नं० 213 से 227 तक)..... 247

## भाग-27

### सूर-ए-नम्ल

तफ्सीर सूर: नम्ल..... 253

अनुवाद (आयत नं० 1 से 14 तक)..... 254

व्याख्या (आयत नं० 1 से 14 तक)..... 255

अनुवाद (आयत नं० 15 से 37 तक)..... 259

व्याख्या (आयत नं० 15 से 37 तक)..... 260

अनुवाद (आयत नं० 38 से 53 तक)..... 265

व्याख्या (आयत नं० 38 से 53 तक)..... 266

अनुवाद (आयत नं० 54 से 59 तक)..... 270

व्याख्या (आयत नं० 54 से 59 तक)..... 270

अनुवाद (आयत नं० 60 से 66 तक)..... 272

व्याख्या (आयत नं० 60 से 66 तक)..... 272

अनुवाद (आयत नं० 67 से 81 तक)..... 276

व्याख्या (आयत नं० 67 से 81 तक)..... 276

अनुवाद (आयत नं० 82 से 93 तक)..... 280

व्याख्या (आयत नं० 82 से 93 तक)..... 281

## भाग-28

### सूर-ए-कसस

तफ्सीर सूर: कसस..... 286

अनुवाद (आयत नं० 1 से 13 तक)..... 287

व्याख्या (आयत नं० 1 से 13 तक)..... 288

अनुवाद (आयत नं० 14 से 28 तक)..... 291

व्याख्या (आयत नं० 14 से 28 तक)..... 292

अनुवाद (आयत नं० 29 से 42 तक)..... 297

व्याख्या (आयत नं० 29 से 42 तक)..... 298

अनुवाद (आयत नं० 43 से 53 तक)..... 303

व्याख्या (आयत नं० 43 से 53 तक)..... 304

अनुवाद (आयत नं० 54 से 67 तक)..... 308

व्याख्या (आयत नं० 54 से 67 तक)..... 309

अनुवाद (आयत नं० 68 से 88 तक)..... 313

व्याख्या (आयत नं० 68 से 88 तक)..... 315

## भाग-29

### सूर-ए-अन्कबूत

तफ्सीर सूर: अन्कबूत..... 323

अनुवाद (आयत नं० 1 से 16 तक)..... 324

व्याख्या (आयत नं० 1 से 16 तक)..... 325

अनुवाद (आयत नं० 17 से 27 तक)..... 331

व्याख्या (आयत नं० 17 से 27 तक)..... 332

अनुवाद (आयत नं० 28 से 44 तक)..... 335

व्याख्या (आयत नं० 28 से 44 तक)..... 336

अनुवाद (आयत नं० 45 से 60 तक)..... 341

व्याख्या (आयत नं० 45 से 60 तक)..... 342

| विषय                                | पृष्ठ सं० | विषय                                | पृष्ठ सं० |
|-------------------------------------|-----------|-------------------------------------|-----------|
| अनुवाद (आयत नं० 61 से 69 तक).....   | 348       | कियामत के दिन मुजरिमों की हालत..... | 386       |
| व्याख्या (आयत नं० 61 से 69 तक)..... | 348       | अल्लाह का वादा.....                 | 387       |

## भाग-30

### सूर-ए-रूम

|                                            |     |
|--------------------------------------------|-----|
| अनुवाद (आयत नं० 1 से 19 तक).....           | 352 |
| व्याख्या (आयत नं० 1 से 19 तक).....         | 353 |
| उबई बिन खलफ़ से हार-जीत की बाजी.....       | 353 |
| दुनियावी इल्म और जिहालत.....               | 356 |
| आसमान व ज़मीन में फ़िक्र की दअवत.....      | 357 |
| ज़मीन में चल फिर कर देखें.....             | 358 |
| कियामत के दिन.....                         | 359 |
| अल्लाह तआला की तस्बीह का हुक्म.....        | 359 |
| अनुवाद (आयत नं० 20 से 32 तक).....          | 362 |
| व्याख्या (आयत नं० 20 से 32 तक).....        | 363 |
| अल्लाह तआला की कुदरत.....                  | 363 |
| एक जान का मतलब.....                        | 364 |
| मुहब्बत व रहमत.....                        | 365 |
| अल्लाह तआला की निशानियाँ.....              | 366 |
| भाषाएँ.....                                | 366 |
| इन्सानों के रंग.....                       | 367 |
| रिज़्क की तलाश.....                        | 367 |
| आसमान व ज़मीन.....                         | 368 |
| शिक्र और तौहीद की मिसाल.....               | 370 |
| अनुवाद (आयत नं० 33 से 45 तक).....          | 373 |
| व्याख्या (आयत नं० 33 से 45 तक).....        | 374 |
| इन्सानों की आदत.....                       | 374 |
| अल्लाह की रज़ा में खर्च.....               | 375 |
| दस गुना बदला.....                          | 375 |
| समुद्रों का फ़साद.....                     | 380 |
| अनुवाद (आयत नं० 46 से 60 तक).....          | 382 |
| व्याख्या (आयत नं० 46 से 60 तक).....        | 383 |
| हवा, बारिश और मुर्दों को ज़िन्दा करना..... | 383 |
| नाउम्मीदी के बाद उम्मीद.....               | 384 |
| मुर्दों, अन्धों और बहरों को हिदायत.....    | 385 |
| इन्सानों की कमज़ोरी.....                   | 386 |

## भाग-31

### सूर-ए-लुक्मान

|                                                    |     |
|----------------------------------------------------|-----|
| अनुवाद (आयत नं० 1 से 19 तक).....                   | 390 |
| व्याख्या (आयत नं० 1 से 19 तक).....                 | 391 |
| गाने बजाने की हकीकत.....                           | 393 |
| गाने से सम्बन्धित रसूलल्लाह (सल्ल०) का फ़रमान..... | 394 |
| गाने बजाने वाली चीज़ों को मिटाने का हुक्म.....     | 395 |
| जाहिल पीरों की बदअमली.....                         | 396 |
| लहवल् इदीस (जो चीज़ों को उलझाये).....              | 397 |
| शतरंज वगैरह का ज़िक्र.....                         | 397 |
| इज़रत हकीम लुक्मान (रह०) का परिचय.....             | 399 |
| हिकमतें.....                                       | 400 |
| शिक्र बहुत बड़ा जुल्म है.....                      | 400 |
| वालिदैन् के साथ अच्छा सुलूक.....                   | 401 |
| दूध पिलाने का समय.....                             | 401 |
| दुनिया में भलाई के साथ.....                        | 402 |
| इज़रत लुक्मान की वसीयतें.....                      | 403 |
| बेटों को नमाज़ का हुक्म.....                       | 403 |
| सब्र करने की अहमियत व ज़रूरत.....                  | 404 |
| अपनी बड़ाई न करो.....                              | 404 |
| घमण्ड.....                                         | 404 |
| आवाज़ को पस्त करने का हुक्म.....                   | 405 |
| अनुवाद (आयत नं० 20 से 34 तक).....                  | 406 |
| व्याख्या (आयत नं० 20 से 34 तक).....                | 407 |
| अल्लाह तआला की नेअमतें.....                        | 407 |
| इन्सान के अधीन.....                                | 408 |
| अल्लाह तआला की नेअमतें.....                        | 408 |
| इख़्लास.....                                       | 409 |
| अल्लाह तआला की तख़लीक.....                         | 410 |
| अल्लाह तआला की तअरीफ़.....                         | 411 |
| कलिमात.....                                        | 411 |
| अल्लाह तआला की नेअमत.....                          | 412 |
| कियामत के दिन की हाज़िरी.....                      | 413 |

| विषय                                              | पृष्ठ सं० | विषय                                         | पृष्ठ सं० |
|---------------------------------------------------|-----------|----------------------------------------------|-----------|
| पाँच चीजों का इल्म सिर्फ अल्लाह तआला ही को है 414 |           | रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआ..... 448           |           |
| <b>भाग-32</b><br><b>सूर-ए-सज्दः</b>               |           | दुआ की कुबूलियत..... 448                     |           |
|                                                   |           | सख्त भूक और सर्दी..... 449                   |           |
| तफसीर सूरः सज्दः..... 417                         |           | रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई..... 450      |           |
| अनुवाद (आयत नं० 1 से 14 तक)..... 418              |           | हज़रत जाबिर (रज़ि०) के यहाँ मेहमानी..... 451 |           |
| व्याख्या (आयत नं० 1 से 14 तक)..... 419            |           | ख़न्दक वालों की दअवत..... 452                |           |
| अनुवाद (आयत नं० 15 से 30 तक)..... 424             |           | नोअमान बिन बशीर की बहन..... 453              |           |
| व्याख्या (आयत नं० 15 से 30 तक)..... 425           |           | अनुवाद (आयत नं० 12 से 25 तक)..... 454        |           |
| <b>भाग-33</b><br><b>सूर-ए-अहज़ाब</b>              |           | व्याख्या (आयत नं० 12 से 25 तक)..... 456      |           |
|                                                   |           | मुनाफ़िकों की शरारत..... 456                 |           |
| तफसीर सूरः अहज़ाब..... 431                        |           | फैसला अल्लाह के हाथ में है..... 459          |           |
| अनुवाद (आयत नं० 1 से 11 तक)..... 432              |           | मोमिनीन के लिए उस्वह..... 461                |           |
| व्याख्या (आयत नं० 1 से 11 तक)..... 433            |           | अनुवाद (आयत नं० 26 से 30 तक)..... 465        |           |
| मुँह बोले बेटे..... 434                           |           | व्याख्या (आयत नं० 26 से 30 तक)..... 465      |           |
| ज़िहार..... 434                                   |           | ग़दारी की सज़ा..... 465                      |           |
| बेटा बना लेना..... 435                            |           | बनू कुरैज़ा का सरदार..... 466                |           |
| ज़रूरी मसायल..... 436                             |           | अस्र की नमाज़..... 467                       |           |
| आप (सल्ल०) की बीवियाँ..... 438                    |           | बनू कुरैज़ा का कबीला..... 467                |           |
| रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शफ़क़तें..... 438           |           | पहली बात..... 467                            |           |
| हमदर्दी..... 439                                  |           | दूसरी बात..... 467                           |           |
| अज़ाजे मुतहहरात (रज़ि०) का एहतिराम..... 440       |           | तीसरी बात..... 468                           |           |
| रिश्तेदारी के उसूल..... 440                       |           | अबू लुबाबा का वाकिया..... 468                |           |
| अम्बिया-ए-किराम (अलै०) से अहद..... 441            |           | फैसला..... 470                               |           |
| नबियों से अहद (प्रतिज्ञा)..... 442                |           | बनू कुरैज़ा का फैसला..... 471                |           |
| मीसाक की हिक़मतें..... 442                        |           | हज़रत सअद बिन मअज़ की वफ़ात..... 471         |           |
| कौम का इन्कार..... 443                            |           | ख़र्च की माँग..... 472                       |           |
| ग़ज़-ए-अहज़ाब के मौक़े पर अल्लाह की मदद..... 443  |           | ख़र्च का मुताल्बा (माँग)..... 474            |           |
| क़त्ल की साज़िश..... 444                          |           | तलाक़ नहीं..... 475                          |           |
| ग़ज़-ए-अहज़ाब..... 445                            |           | दोहरे अज़ाब व सवाब का हक़..... 477           |           |
| दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए ख़न्दक..... 445       |           | अनुवाद (आयत नं० 31 से 40 तक)..... 478        |           |
| दुश्मनों का ख़न्दक पार करना..... 446              |           | व्याख्या (आयत नं० 31 से 40 तक)..... 479      |           |
| कुछ काफ़िरों का क़त्ल..... 446                    |           | अज़ाजे मुतहहरात (रज़ि०) की फ़ज़ीलत..... 479  |           |
| जिहाद में नमाज़..... 447                          |           | नामहरमों से बात करने का तरीक़ा..... 480      |           |
|                                                   |           | घरों में ठहरे रहने का हुक्म..... 480         |           |
|                                                   |           | औरत मर्द का जमा होना..... 481                |           |
|                                                   |           | मोमिन मर्दों और औरतों की सिफ़ात..... 486     |           |
|                                                   |           | जन्नत की बशारत..... 487                      |           |



## सन्देश

विश्व इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान तथा  
प्रसिद्ध श्रेष्ठ विचारक (मुफक्किरे इस्लाम)  
हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली  
हसनी नदवी (रह०) के शुभ कलम से-

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन, वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदिल्लमुर्सलीन, मुहम्मदिन व  
अला आलिही व अस्हाबिही अजूमअीन

मुसलमानों के ज़िन्दगी की तमाम अ़िबादतों में नमाज़ ही वह अहम और बुनियादी रूकून है जिसे दिन में पाँच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है। अल्लाह का बन्दा जब अपने पालनहार के सामने बन्दगी के लिए खड़ा होता है तो सबसे पहले उस ज़ात की तअरीफ़ और बेशुमार नेअमतों का शुक्रिया अदा करता है जो उसके पालनहार ने उस पर किये हैं, यह वह परवरदिगार है जो केवल मुसलमानों का पालने वाला ही नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक को ज़िन्दगी और रिज़्क देने वाला और सबसे ज़्यादा उन पर रहम करने वाला है। उसी ने तमाम मख़्लूक को अपनी कुदरत से पैदा किया और उसी का हुक्म सब पर जारी होता है।

इस दुनिया की हर चीज़ उसी की मुहताज है, वह एक है उसका कोई साझीदार नहीं, वही सीधी राह दिखाता है। कोई मुसलमान जब भी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह सूरः फ़ातिहा को बार-बार पढ़ता और सुनता है कि इसमें पूरे कुर्आन मजीद के पैग़ाम की रुह और खुलासा है। इस सूरः के अन्दर तमाम इन्सान की तब्क़ात की ज़रूरतों और ख़्वाहिशों के इख़्तिलाफ़ के बावजूद हर ग़िरोह और शख़्स की तस्कीन (तसल्ली) का सामान मौजूद है। इस मुख़्तसर सूरः में ज़िन्दगी का पैग़ाम है, उम्मीद और खुशख़बरी है उस इन्सान के लिए जिसको हर तरफ़ से धुत्कारा जाता है, हर तरफ़ से तक्लीफ़ों और आज़्माइशों के तूफ़ान में जो घिरा हुआ है। माल, कुव्वत, मन्सब और सेहत इसका साथ छोड़ देते हैं। महबूबतरीन औलाद भी काम नहीं आती। ऐसा कमज़ोर व मुहताज इन्सान सूरः फ़ातिहा पढ़ कर अपने दिली एहसासात व जज़्बात की तर्जुमानी करता है, वह उस रब से मदद माँगता है जो तमाम मख़्लूक का पालनहार है। जो रोज़े जज़ा का मालिक है। वही अ़िबादत का हक्कदार है, वही सीधी राह दिखाता है।

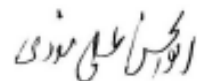
जहाँ तक मुसलमानों का तअल्लुक है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए और दीनी मर्कज़ों के लिए और मदरिस और फ़ायदे उठाने वालों के लिए, क़दीम अर्सा से उर्दू में इस्लाम के मबादी व तअलीमात से वाकिफ़ कराने के लिए बहुत सी किताबें और रिसाले लिखे गये, जिनसे बहुत फ़ायदा पहुँचा। जब तक फ़ारसी का रिवाज था 'माला बुद्दमिन्हु' जैसी किताबें लिखी गईं फिर 'तअलीमुल् इस्लाम' के नाम से

कई मुस्तनद उल्मा ने बहुत सी कुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे इत्फों में रायज और मक्बूल हैं, और उनसे हजारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेअदाद के लोगों ने फायदा उठाया, और दीन का इल्म मालूम करने और उन पर चलने का तरीका सिखाया, और मुस्लिम दाअीयाने इस्लाम की कोशिश और खुद फितरते सलीम के तकाज़ा और हिदायते रब्बानी से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाके में बहुत सी जगह सैकड़ों की तअदाद में और बहुत सी जगह हजारों की तअदाद, और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाके में अपने इरादा व अख़्तियार और अपने क़द्रो इन्साफ़ से दीने इस्लाम को कुबूल किया।

वक्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अजीजुल क़द्र 'मोलवी मुहम्मद सरवर फारूकी नदवी' ने अन्जाम दिया और वक्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़हीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुतालबा और तकाज़ा पूरा किया। इससे पहले बहुत से किताबचे इनके कलम से हिन्दी में आ चुके हैं जिनसे हमारे ग़ैर मुस्लिम भाईयों को ख़ासतौर से इस्लाम के बारे में मुफ़ीद मालूमात हासिल हुई।

इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि आसान हिन्दी ज़बान में ऐसी किताबें बक़्सरत तैयार की जाएँ, ताकि इस मुल्क में सदियों से रहने वाले शहरी एक दूसरे के मज़हब, अफ़ायद, तहज़ीब व तारीख़ से वाकिफ़ हों, जिससे ग़लतफ़हमियाँ दूर हों और प्रेम व मुहब्बत और भाईचारगी में इज़ाफ़ा हो।

इस में मुसन्निफ़ ने पहले कुर्आन मजीद का तअरूफ़ इख़्तिसार से कराया है और बताया है कि कुर्आन ही एक ऐसी महफूज़तरीन किताब है जो हर प्रकार की तहरीफ़ व तब्दीली से पाक है। जिसे अल्लाह तआला ने इस कुर्आन की हिफ़ाज़त का खुद वादा अपने ज़िम्मे लिया है। मुसन्निफ़ ने इन्सानी ज़िन्दगी से उसका तअल्लुक, फिर सूरः के तअरूफ़ के साथ उसके मफ़हूम और उसकी तशरीह की है, उम्मीद है कि यह मुफ़ीद होगा। अल्लाह पाक अज़ीज़ेग़ामी की इस कोशिश को कुबूल फ़रमाए।



अबुल हसन अली नदवी

18 जमादिल् अब्वल 1419 हि०

**नोट:-** अल्हम्दुलिल्लाह कुर्आन मजीद के काम को मैंने हज़रत मौलाना के मश्वरह से 1996 ई० में ही शुरू कर दिया था और आप की ज़िन्दगी में सूरः फ़ातिहा और तीस्रें पारे की तफ़सीर छप चुकी थी। ऊपर की तहरीर हज़रत मौलाना ने उसी के मुक़द्दमे में यह दुआइया कलिमात तहरीर फ़रमाये थे, जिसे शुरू में दर्ज कर दिया गया है और बाकी उल्मा की तहरीरें संक्षेप में दी गई हैं।



## प्रख्यात विश्व विद्वानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख

तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए हैं और दुरुद व सलाम की बारिश हो मोहसिने आज़म सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर, जिन्होंने कुर्आन मजीद की तअलीम दी और अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों तमाम सहाब-ए-किराम व आज तक के रावियों और उम्मत के उल्मा-ए-किराम पर जिन्होंने कुर्आन करीम की तअलीम को अगली नस्ल तक मुन्तक़िल किया।

अल्लाह तआला की मुझ पर बेशुमार नेअमतें हैं जिन में सब से बड़ी नेअमत यह है कि उस ने कुर्आन मजीद के समझने, सीखने, पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

अल्हम्दु लिल्लाह “हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी” (रह०) के मशवरे से मैंने 1996 ई० में ही कुर्आन मजीद का काम शुरू कर दिया था और लगभग 18 साल से इस काम में मुसलसल मशगूल हूँ।

इस में सबसे पहले सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर प्रकाशित की गई, फिर तीस्रें पारे के अलग-अलग सूरतों की तफ़्सीर, फिर तीस्रें पारे की मुकम्मल तफ़्सीर, फिर पूरे कुर्आन मजीद का हिन्दी अनुवाद “कुर्आन का पैग़ाम” नाम से प्रकाशित हुआ, उसके बाद जैसे-जैसे तफ़्सीर का काम होता रहा, एक-एक भाग “तफ़्सीर फ़ारुकी” के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा, जिस पर विश्व प्रसिद्ध कुर्आनी उलूम के माहिरीन से मुफ़ीद मशवरे लिये जाते रहे और नाचीज़ की दरख़्वास्त पर वह अपने सन्देश से हिम्मत अफ़ज़ाई भी फ़रमाते रहे।

अब जबकि अल्हम्दु लिल्लाह किसी हद तक तफ़्सीर का काम पाँच भागों में आने वाला है, इसलिए हम अपने असातिज़ा व मुहसिनों के पैग़ामात को भाग पाँच में मुकम्मल तौर से, जो अलग-अलग भागों पर अलग-अलग तारीख़ों में लिखे गये थे, उसे भी शामिल कर रहे हैं, जिस से मुतालअ करने वालों को रहनुमाई भी होगी और हमारे सभी मुहसिनों को उसका अज़्र भी मिलेगा।

चूँकि पैग़ामात की सूची लम्बी है इसलिए शुरू में केवल “हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी” (रह०) के सन्देश को पूरा शामिल करने के बाद हर एक के सन्देश से कुछ पंक्ति दर्ज की गई है। उस के बाद सभी बुजुर्गों के सन्देश आख़ीर में मुकम्मल तौर से दिये गये हैं जिस से मुतालअ करने वाले मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

यहाँ केवल नाम और उनके सन्देश की एक पंक्ति दर्ज की जाती है, जिससे इस की अहमियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जैसे-

### (1) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान एवं श्रेष्ठ विचारक हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल्लाही के क़लम से-

‘नाज़िम,’ दारुल उलूम, नदवतुल उल्मा, लखनऊ, व ‘अध्यक्ष,’ मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (इण्डिया)

“हमारे अज़ीज़ ‘मौलवी मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी साहब’ जो एक फ़ाज़िल शख्स और अरबी व हिन्दी दोनों से अच्छी वाक्फ़ियत रखने वाले हैं, मेरे सामने इस वक़्त इन्हीं का हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर कुर्आन है जिसको इन्होंने बड़ी मेहनत व क़बिलियत से तैयार किया है।

उम्मीद है कि सारे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाई जो हिन्दी ज़बान ही के ज़रिये ज़्यादा बेहतर समझ सकते हैं, इस तर्जुमे व तफ़्सीर से सही फ़ायदा उठाएँगे।” मुसलमान हज़रात तो अमल करने के लिए और

उसकी रहनुमाई में अपनी ज़िन्दगी संवारने के लिए और ग़ैर मुस्लिम भाई इस्लाम और कुर्आन की सही हकीकत और तालीमात से वाक्फ़ियत हासिल करने के लिए। मेरी दुआ है कि यह तफ़्सीर मुफ़ीद और कामियाब साबित हो।

## (2) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल् कासिम नोअमानी कासमी मददज़िल्लहुल् आली के कलम से-

मुहतमिम, दारुल उलूम देवबन्द

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी के हिन्दी तर्जुमे पर मुल्क के मुतअदिद अकाबिर अहले इल्म ने गहरी नज़र से तर्जुमः को देखकर अपनी पसन्दीदगी का इज़हार भी किया है, इसलिए उम्मीद है कि यह तर्जुमः न सिर्फ़ हिन्दीवाँ मुसलमानों के लिए; बल्कि उन विरादराने वतन के लिए भी “कुर्आन के पैग़ाम” को समझने में मदद देगा, जो संजीदा और इन्साफ़ पसन्द हैं और कुर्आन पाक के पैग़ाम को समझना चाहते हैं। अल्लाह तआला इन की खिद्मत को कुबूल फ़रमाए और मज़ीद दीनी खिद्मत की तौफ़ीक़ बख़्शे।

## (3) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम कासमी मददज़िल्लहुल् आली के कलम से-

मोहतमिम, “दारुल उलूम वक्फ़”, देवबन्द व उपाध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड इण्डिया

“पेशे नज़र तफ़्सीर “कुर्आन का पैग़ाम, “तफ़्सीर फ़ारुकी” बज़वान हिन्दी और इस तफ़्सीर के ज़रिये दअवत “मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी” ने इल्मी ज़ौक-ए-सलीम, वकीअ दीनी सलाहियत, वसीअ मुतअला और उलूमे कुर्आनी से इस्तिफ़ादह की राह अ़वाम व ख़वास के लिए खोल दी है।

उम्मीद है कि यह तफ़्सीर मुवलिफ़ीन, मुसन्निफ़ीन, मुहक्किनीन, मुकर्ररीन और मुदर्रसीन के लिए एक कीमती इल्मी तोहफ़ा साबित होगी”।

## (4) प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना सय्यद अरशद मद्नी मददज़िल्लहुल् आली के कलम से-

उस्ताज़ हदीस, दारुल उलूम, देवबन्द व अध्यक्ष- जमअीयतुल् उलम-ए-हिन्द (भारत)

“अब जबकि हिन्दी भाषा हमारे मुल्क की सरकारी भाषा है और उम्मत का एक बहुत बड़ा तबक्का उर्दू से दूर है। इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि इस्लामी उलूम को हिन्दी भाषा में भी किया जाए।

यह बात काबिले क़द्र है कि “मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी साहब” ने इस ज़रूरत को महसूस किया और हज़रत थानवी (रह०) के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी भाषा में कुर्आन शरीफ़ का तर्जुमः व तफ़्सीर किया है, अगरचे यह फ़कीर अपनी मसूफ़ियत की वजह से इसको एक-एक शब्द नहीं देख सका, लेकिन हज़रत थानवी (रह०) के तर्जुमे को सामने रखना इस तर्जुमे व तफ़्सीर की सिकाहत (प्रमाण) के लिए काफी है”।

### (5) प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी मद्दज़िल्लहुल् आली के कलम से-

नाज़िम व मुतवल्ली मदरसा मज़ाहिरुल् उलूम (वक्फ़) सहारनपुर (यू०पी०) इण्डिया

“मुझे यह मालूम होकर खुशी हुई कि दारुल् उलूम नद्वतुल् उल्मा, लखनऊ के एक आलिमे दीन “जनाब मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी” ग़ैर मुस्लिमों में दअवत व तब्लीग़ के लिए कोशों और फ़िक्रमन्द हैं, इस सिल्सिले में उन्होंने मुख़्तलिफ़ किताबें और किताबचे भी मुरत्तब व शायी किये हैं।

इसी तरह उन्होंने कुर्आन करीम के दअवती उस्तूब को मद्देनज़र रखते हुए हिन्दी ज़बान में “तफ़्सीर फ़ारुकी” के नाम से बाबरकत सिल्सिला शुरु किया है, जिस का भाग एक मेरे पास बग़र्ज़ तदरीज़ पहुँची है। अल्लाह तआला मौलाना मोहरत की इस कोशिश व काविश को शर्फ़ कुबूल और मक़ामे कुबूलियत अता फ़रमाए”।

### (6) प्रख्यात विद्वान तथा श्रेष्ठ साहित्यकार हज़रत मौलाना सअीदुर्रहमान आज़मी नदवी मद्दज़िल्लहुल् आली के कलम से-

मुहतमिम- दारुल् उलूम नद्वतुल् उल्मा, लखनऊ व चान्सलर- इन्टीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ

“हमारे इस मुल्क में हिन्दी ज़बान में कुर्आन करीम के तर्जुमे मुख़्तलिफ़ इदारों और शख़्सियात की तरफ़ से शाए (प्रकाशित) हो कर मक्बूल हो चुके हैं।

“लेकिन अभी तक किसी ऐसे आलिमे दीन की तरफ़ से जिसको हिन्दी ज़बान पर पूरी तरह उबूर हासिल हो और वह अरबी ज़बान की रुह को समझ कर हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल करने की भरपूर सलाहियत (योग्यता) रखता हो, कोई काम न हो सका था”।

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में निहायत खुशी हो रही है कि हमारे हलक़-ए-नद्वतुल् उल्मा की तरफ़ से यहाँ के आलिमे दीन ‘मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी’ जो अरबी, उर्दू, हिन्दी के माहिर मायानाज़ अदीब (साहित्यकार) आलिम और सहाफ़ी (पत्रकार) कुर्आन करीम का हिन्दी ज़बान में एक निहायत ही काबिले उसूक और अरबी ज़बान की रुह से करीब तर हिन्दी तर्जुम: व तफ़्सीर पेश कर रहे हैं।

### (7) प्रख्यात इस्लामी विश्व विद्वान हज़रत मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी मद्दज़िल्लहुल् आली के कलम से-

नाज़िम अल् मअहदुल् आली इस्लामी हैदराबाद व जनरल सेक्रेट्री इस्लामिक फ़िक्: अक़ेडमी, इण्डिया व सेक्रेट्री आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड

कुर्आन को एक पैग़ाम की शक्ल में, दअवती उस्तूब और आसान अन्दाज़ में पेश करने की ज़रूरत थी, चुनाँचे मुहिब्बी फ़िल्लाह जनाब ‘मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी’ (सदर जमअीयत पयामे अम्न, लखनऊ) ने इसी अन्दाज़ में कुर्आन पाक के तर्जुमे व तशरीह की कामियाब कोशिश की है।

इस तफ़्सीर में सब से पहले “सूर: का तआरूफ़” के उन्वान (शीर्षक) से हर रुकूअ का खुलासा पेश किया है, फिर आयतों के तर्जुमे और हर आयत के मुतअल्लिक़ तफ़्सीर, अस्बाबे नुज़ूल, फ़ज़ीलत, ज़रूरी मसायल और आयत के पैग़ाम को बयान किया गया है। तफ़्सीर के दौरान हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफीअ साहब (रह०) की “मअरिफुल् कुर्आन” के अलावा अस्लाफ़ की मुतअदिद कुतुब तफ़्सीर से इस्तिफ़ादा

हैं। एक खास बात इस तफ़्सीर की यह है कि हर आयतों के अलग-अलग नम्बर डाल कर आयतों की तशरीह की गई है, ताकि लोग थोड़ा-थोड़ा वक़्त निकाल कर आसानी के साथ फ़ायदा उठा सकें और तल्बा व तालिबात भी अलग-अलग सबक के तौर पर इसे पढ़ सकें।

### (8) इज़रत मौलाना सय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल् आली के कलम से-

(शिक्षा महासचिव (मुअतमद तअलीम) दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ)

‘मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी साहब’ जो आलिमे दीन होने के साथ-साथ हिन्दी के भी सनद याफ़ता आलिम हैं। मौलाना सरवर साहब बहुत सी हिन्दी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, और इससे पहले बहुत सी किताबों के तर्जुमे भी कर चुके हैं और अब तफ़्सीर का काम भी पूरा कर चुके हैं। अल्लाह तआला इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और इसको कुर्आन फ़हमी का ज़रिया बनाए और हिदायत के मिलने का उनवान बनाए।

### (9) इज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर साहब नदवी मज़ाहिरी गुजराती के कलम से-

नायब मुहतामिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

हमारे अज़ीज़े गिरामी ‘मुफ़्ती मौलवी मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी साहब’ ने जो नदवा से सनद याफ़ता होने के साथ हिन्दी से भी वाकिफ़ हैं, वाकिफ़ ही नहीं बल्कि मुसलसल इस तरह के कामों में लगे रहने की वज़ह से अ़वाम में समझी जाने वाली हिन्दी जो हिन्दुस्तानी ज़बान है उससे भी वाकिफ़ हैं इन्होंने इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है और एक हद तक उसको पाये तक्मील तक पहुँचा कर इस के चार हिस्से शाए भी किया और अब पूरे कुर्आन की तफ़्सीर शाया करने जा रहे हैं जिस पर वह मुबारकबाद के मुस्तहिक् हैं।

### (10) मुफ़्तिरे कुर्आन इज़रत मौलाना मुफ़्ती फुज़ैलुर्रहमान हिलाल उस्मानी मद्दज़िल्लहुल् आली के कलम से-

रुक्न तासीसी (फ़ाउन्ड मेम्बर) आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड व सदर-दारुस्सलाम इस्लामी मर्कज़, मलियर कोटला पंजाब, अल् हिन्द

यह नाचीज़ “मोहतरम मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी साहब” को इस अज़ीम ख़िद्मत पर दिली मुबारकबाद पेश करते हुए उम्मीद रखता हूँ कि इन्शाअल्लाह इन की इस ख़िद्मत से हिन्दी जानने वाले तबके को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचेगा।

अल्लाह तआला से दुआ है कि मौलाना की यह ख़िद्मते शर्फ़ कुबूलियत हासिल करे।

### (11) इज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) के कलम से-

भूतपूर्व सहसम्पादक ‘अर्राइद’ व उस्तादे इदीस, दारुल उलूम नदवतुल उलमा (लखनऊ)

“हिन्दी में तर्जुमें की बहुत कमी थी, अगर तर्जुमें कुछ हुए भी तो उन में कुर्आनी तर्जुमें के आदाब का पूरा लिहाज अक्सर तर्जुमे करने वालों ने नहीं रखा, ज़रूरत थी कि कोई अच्छा हिन्दीवाँ जो अरबी से भी वाकिफ़ हो इस काम को अन्जाम देता।

बड़ी खुशी की बात है कि ‘दारुल उलूम नदवतुल उलमा’ के फ़ाज़िल “मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी

साहब नदवी” ने मौलाना फतेह मुहम्मद ख़ाँ साहब जालन्धरी के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी में तर्जुमानी की कोशिश की है। अल्लाह तआला इस तर्जुमानी व तफ़्सीर को क़बूल फ़रमाये और तमाम गुमराह लोगों के लिए इसको हिदायत का ज़रिया बनाए”।

### (12) इज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी मद्दज़िल्लहुल् अली

(प्रधान सम्पादक, तअमीर-ए-हयात व उस्ताज़ दारुल उलूम, नद्वतुल उलमा, लखनऊ)

हमें निहायत खुशी व मसरत है कि नद्वतुल उलमा जिसकी बुनियाद ही इस पर पड़ी थी कि हालात के रुख़ और माहौल को सामने रखकर काम किया जाए और उसके फ़ाज़िलों को वक़्त की ज़बान में बात करने का सलीका सिखाया जाए ताकि वह दीन की ख़िद्मत का हक़ अदा कर सकें। इसके एक फ़ाज़िल मौलाना मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी ने अच्छी आसान हिन्दी ज़बान में कुर्आन करीम का तर्जुमः कर दिया है जो हमारी नई नस्ल के लिए ज़रूरी है और बिरादराने वतन तक, जिसकी रौशनी पहुँचाने का भी ज़रिया है। हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला इससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

### (13) इज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया नदवी मद्दज़िल्लहुल् अली के क़लम से-

(उस्ताज़ हदीस व अमीद कुल्लियतुशशरीआ, दारुल उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ)

अल्लाह ने मोहतरम “मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी” को हिन्दी से वाक्फ़ियत को इनके लिए इतना मुफ़ीद बना दिया है जिस का अन्दाज़ा करना इनकी किताबों और हिन्दी तर्जुमः कुर्आन पाक और हिन्दी “तफ़्सीर फ़ारुकी” को पढ़े बग़ैर मुश्किल है। कुर्आन मजीद की तफ़्सीर व तर्जुमः का काम खासतौर से हिन्दी में बहुत मुश्किल है। हिन्दी पढ़ने वालों के मज़हब ज़ौक़ व मिज़ाज को सामने रखते हुए यह काम करना जितना ज़रूरी है उतना ही मुश्किल है लेकिन बस तौफ़ीक़ की ज़रूरत है जिस ने मौलाना से इतना बड़ा काम ले लिया है। इसके बहुत अच्छे नतीजे सुनने में आए हैं। अल्लाह तआला मुफ़्ती साहब की उम्र और काम में बरकत अता फ़रमाये और इनकी मेहनत और कोशिशों को मज़ीद बार आवर करे।

### (14) इज़रत मौलाना मुफ़्ती अतीक अहमद क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् अली के क़लम से-

(उस्ताज़ फ़िक़:-दारुल उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ व नाज़िम मअहदुशशरीआ, लखनऊ)

हिन्दी ज़बान में इस्लामियात पर काम करने वालों में एक मोअतबर नाम जनाब “मौलाना मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी” का है, जो दारुल उलूम नद्वतुल उलमा के होनहार फ़ाज़िल और हिन्दी ज़बान में बहुत सी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, मुतवाज़ेअ, मिलनसार और धुन के पक्के हैं, इन्होंने कुर्आन करीम का हिन्दी तर्जुमः किया है जिस के मुतअदिद एडीशन शायर कर चुके हैं।

अल्लाह तआला से दुआ है कि मौलाना मौसूफ़ की यह दीनी ख़िद्मात अल्लाह की बारगाह में मक्बूलियत हासिल करें और बन्दगाने खुदा को इन से ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुँचे।

### (15) इज़रत मौलाना मुहम्मद ख़ालिद साहब गाज़ीपुरी नदवी मद्दज़िल्लहुल् अली के क़लम से-

उस्ताज़, हदीस, दारुल उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ व सदर जमअीयतुल मअरिफ़, लखनऊ

अल्लाह का लाख-लाख एहसान व करम है कि इस अहम ज़रूरत को पूरा करने के लिए हमारे फ़ाज़िल ‘मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी’ ने एक मुकम्मल तफ़्सीर बज़बान हिन्दी में बड़ी मेहनत व लगन से तैयार

की है और हिन्दुस्तानी माहौल को सामने रखते हुए सलफ़-ए-सालिहीन के तरीके को पेशे नज़र रखते हुए हिन्दुस्तानी लोगों की खिद्मत में एक नादिर व नायाब कुर्आनी तोहफ़ा पेश किया है।

### (16) इज़रत मौलाना मुफ़्ती नियाज़ अहमद साहब नदवी मद्दज़िल्लहुल् अली-

(उस्ताज़ हदीस व फ़िक्र: व वकील कुल्लियतुशशरीआ अर्थात् सदर मुफ़्ती दारुल उलूम नद्वतुल उलूमा, लखनऊ)

‘मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी साहब’ जो उलूम-ए-शरीआ में माहिर, नदवे के होनहार फ़ाज़िल जिन की कुर्आनी उलूम पर अच्छी निगाह है। यह हिन्दू मज़हबी किताबों से भी वाकिफ़ रखते हैं और हिन्दू भाईयों के दर्मियान ख़ासतौर से हिन्दी ज़बान को ज़रिया बना कर दअवत का काम कर रहे हैं। इससे पहले इनका हिन्दी तर्जुम: कुर्आन का पैग़ाम नाम से कई एडीशन छप चुके हैं जो इनके मक्बूलियत की दलील है।

चूँकि मैं इन्हें लगभग पन्द्रह बीस साल से दअवत के कामों में मशगूल देख रहा हूँ जो एक अच्छी फ़िक्र के हामिल हैं और अल्लाह तआला इनके इसी ज़ुबे की वजह से इन से बहुत से काम ले रहा है, जिसमें मदारिस, मकातिब और नौजवानों की तर्बियत भी शामिल है।

उम्मीद है कि हिन्दी जानने वालों के लिए यह तफ़ासीर मराज़ेअ की हैसियत रखेगी। अल्लाह तआला इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

### (17) इज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहीबुल्लाह कासमी मद्दज़िल्लहुल् अली के कलम से-

(मुबल्लिग़ मदरस: रहमानिया, दरभंगा, बिहार)

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में खुशी हो रही है कि “मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी साहब” एक आलिमी इदारे दारुल उलूम नद्वतुल उलूमा से फ़ारिग़ होने के साथ संस्कृत और हिन्दी ज़बान से वाकिफ़ हैं। जो बराबर तमाम इन्सानों को जहन्म से निकाल कर जन्नत में ले जाने का काम करते हैं, जिसके लिए उन्होंने बड़ी तअदाद में इस्लामी लिट्रेचर तैयार किया है, जो एक सहाफ़ी और जमअीयत पयामे अम्न के सदर हैं।

जनाब मौलाना ‘मुफ़्ती सरवर फ़ारुकी नदवी’ ने ख़ासतौर से इस मुल्क के हिन्दी तब्के वालों की तरफ़ से शुक्रिया के मुस्तह़िक़ हैं, जिन्होंने इन्सानी हिदायत का एक बड़ा तोहफ़ा तैयार किया है।

### (17) मोहतरम जनाब अन्सार अहमद सिद्दीकी साहब के कलम से-

अध्यक्ष हिन्दी विभाग इस्लामिया डिग्री कालेज, इन्दौर, एम०पी०

हमारे लिए बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रिय मित्र जनाब ‘मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी’ साहब ने हिन्दी भाषा में कुर्आन का अनुवाद और व्याख्या करने का बहुत महान प्रयास किया है। अल्लाह तआला इन के इस प्रयास को सफल बनाये यह हमारी दिली दुआ है और मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हिन्दी जगत में सभी लोग इससे लाभ उठाएँगे।

**नोट-** अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारे और हमारी नस्ल और पूरी उम्मत के लिए कुर्आन मजीद की तिलावत, खिद्मत और इशाअत को ज़िन्दगी का मक्सद बना दे, ज़िन्दगी गुज़ारे तो बस कुर्आन और शारेअ कुर्आन के साये में और मौत आए तो इसी खिद्मत को अन्जाम देते हुए।

10 मुहर्रम 1436 हिज्री

मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी  
दारुल उलूम नद्वतुल उलूमा, लखनऊ  
04-11-2014

## प्राक्कथन

अल्लाह तआला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अपना क़लाम नाज़िल किया जिसे कुर्आन के रूप में जाना जाता है। इसके विभिन्न अनुवाद व व्याख्याएँ हुईं जिसमें इस कुर्आन के पैग़ाम की विशेषता संक्षेप में इस तरह है:-

### “कुर्आन का पैग़ाम” (अनुवाद) की खुसूसियत

- 1- कुर्आन के अनुवाद में आसान से आसान शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों, एक साथ समझ सकें, अगर कहीं वह शब्द, जो मुसलमानों के यहाँ बहुत प्रयोग होते हैं लेकिन हिन्दू भाई जानते भी नहीं। जैसे रहमत, मग़्फ़िरत आदि तो ऐसे शब्दों की हिन्दी, कोष्ठक में कर दी गई है।
- 2- इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि जो कुर्आन के शब्द हैं और उनके स्थान पर दूसरे शब्द भी हैं जैसे- ज़ालिम= अत्याचारी, करीब=समीप, अज़ाब=यातना आदि, तो इस अनुवाद में वही शब्द प्रयोग किये गये हैं जो कुर्आनी होने के साथ समाज में भी बोले जाते हों।
- 3- अनुवाद में यह भी कोशिश की गई है कि अनुवाद मूल अरबी से ज़्यादा से ज़्यादा करीब हो, कहीं-कहीं ज़रूरत के अनुसार कोष्ठक में व्याख्या कर दी गई है और उन शब्दों से भी बचने की कोशिश की गई है जो हमारे ज़माने से पहले उचित थे, मगर आज वही शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगे हैं।
- 4- अनुवाद में विशेष रूप से मूल अरबी कुर्आन, फिर अब तक जितने भी अनुवाद हिन्दी, उर्दू, अरबी, इंग्लिश में हुए हैं, सबसे फ़ायदा उठाया गया है।

### तफ़्सीर फ़ारुकी की खुसूसियात

यह तफ़्सीर ख़ासतौर पर आम मुस्लिम व गैर मुस्लिम लोगों के लिए तैयार की गई है। इसलिए ऐसे शब्द जो अ़वाम की समझ से बाहर हों नहीं लिखे गये और कोशिश इस तरह की गई है कि दर्स के तौर पर रोज़ाना एक-एक सबक पढ़ा जा सके। तफ़्सीर व तशरीह में मोअतबर उलम-ए-मोहक्किनीन और सलफ़ व सालिहीन की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है।

- 1- यह सूर: अल् हज़ आयत नं० (30) से सूर: फ़ातिर आयत नं० (11) तक की तफ़्सीर है।
- 2- यह तफ़्सीर मुस्लिम व गैर मुस्लिम दोनों को सामने रखते हुए आम भाषा में लिखी गई है ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी फ़ायदा उठा सकें।
- 3- इस तफ़्सीर में हदीस और मोअतबर (Authentic) उल्मा की तफ़्सीरों से फ़ायदा उठाया गया है।
- 4- इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के हिसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुम: फिर हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर बयान की गई है।
- 5- इस में सबसे पहले पूरी सूर: का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों

का तर्जुम: उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़सीर जिसमें सबसे पहले उसी आयत का शाने नुजूल (नाज़िल होने के वक़्त की हालत) फिर उसी आयत से सम्बन्धित हदीस और मोअतबर उलूमा की तफ़सीर की रौशनी में तफ़सीर, फिर मसायल, एहक़ाम और उसी आयत से सम्बन्धित नई साइंसी तहकीक़ और ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब के साथ उस से मुतअल्लिक़ फ़ज़ायल जो सही हदीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

6- इसमें अक्सर आयतों का शाने नुजूल ज़िक्र किया गया है ताकि ग़ैर मुस्लिम भाईयों के लिए कुर्आन के समझने में आसानी हो, लेकिन शाने नुजूल ज़िक्र करने का यह मतलब नहीं कि वह आयत केवल उसी समय या उन्हीं लोगों के लिए है बल्कि जब भी कहीं उस तरह के हालात हों तो वह आयत रहनुमाई करेगी। इसलिए कि कुर्आन क़ियामत तक हर ज़माने के तमाम इन्सानों के लिए है। किसी भी आयत के शाने नुजूल (कुर्आन के अवतरित होने का कारण) से यह न समझा जाए कि यह तो केवल उसी ज़माने के लिए है और अब हम से यह बात नहीं कही जा रही है।

इसी तरह अल्लाह पाक अपनी शान के मुताबिक़ उन सभी हज़रात को अज़्र अता फ़रमाए जिन्होंने किसी भी तरह का तआउन किया हो, जिस में विशेष रूप से मुहम्मद आरिफ़ अलाना साहब के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने इस भाग को छपवाने में ताउन किया। अल्लाह तआला कुर्आन के ख़ादिमों में शुमार फ़रमा कर कुर्आन की शिक्षानुसार अमल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए और सारी इन्सानी बिरादरी तक कुर्आन का पैग़ाम पहुँचाने की मुझे और मेरी नस्ल को और पूरी उम्मत को तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन

**मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी**

दारुल् उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ

4 रबीउस्सानी, 15-01-2016





# कुर्आन की व्याख्या अगले पेज से शुरू हो रही है

पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुजू करके) शुद्ध  
होकर आदर के साथ अमल की नियत से ध्यानपूर्वक  
पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख्याल रखें।

(भाग-22)

सूर-ए-हज (सूर: नं.22)

आयत नं० 30 से पूरी सूर:

## आयत नं० 30 से 41 तक

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرْمَتَ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأَجَلْتُ لَكُمْ الْأَنْعَامَ إِلَّا مَا يُشْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۚ حَقَّاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الظُّيُورُ أَوْ تَهْوِي بِهِ السَّيْلُ فِي مَكَانٍ سَجِيQ ۚ ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۚ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۚ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۚ فَإِنَّهُمْ آلَاءُ اللَّهِ وَإِحْدُ قُلَّةٌ أَسْلُبُوا ۚ وَبَيَّرَ الْمُحْسِنِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالضَّالِّينَ عَلَىٰ مَا آصَابَهُمْ وَالْبُقِيعِي الصَّلَاةِ ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۚ وَالْبَدَنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ فَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۚ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا الْقَائِنَ ۚ وَالْمُعْتَزَ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۚ لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا ۚ وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ ۚ وَبَيَّرَ الْمُحْسِنِينَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ۚ اذُنَ الَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۚ الَّذِينَ أَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَٰغِي حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبَّنَا اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَهْذَمَتْ صَوَامِعُ وَبِيْعُ وَصَلُوتُ وَمَسَاجِدُ يُذَكَّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۚ الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝

### अनुवाद-

(30) यह और जो व्यक्ति अल्लाह की ठहरायी हुई हुरमतों (अल्लाह की बाँधी हुई पाबंदियों) की इज्जत करेगा, तो यह उसके 'रब' के यहाँ उसके लिए बेहतर है; और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल किये गये, सिवाय उनके जिनका हुक्म तुम्हें सुना दिया गया; तो मूर्तियों की बन्दगी से बचो, और बचो झूठी बात से; (31) इस तरह कि अल्लाह ही की ओर के होकर 'उसके' साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझीदार ठहराता है, तो मानो वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएँ या हवा उसे किसी दूर जगह फेंक दे। (32) यह (है हमारा हुक्म) और जो व्यक्ति अल्लाह के निश्चित किये हुए निशानों का आदर करे, तो यह दिलों के परहेज़गारी की बात है। (33) उनमें एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उनको उस क़दीम (पुरातन) घर तक पहुँचना है। (34) और 'हमने' हर उम्मत के लिए कुर्बानी का तरीक़ा निश्चित किया, ताकि वह उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें, जो 'उसने' उन्हें दिये हैं; तुम्हारा अल्लाह 'एक ही अकेला अल्लाह है;' तो अपने को 'उसी' के हवाले कर दो और नर्मी (विनम्रता) अपनाने वाले को खुशख़बरी सुना दो; (35) जिनका हल यह है कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो उनके दिल दहल जाते हैं; जो मुसीबत में सब्र करने वाले और नमाज़ कायम करने वाले हैं; और जो रोज़ी 'हमने' उन्हें दी है उसमें से वे खर्च करते हैं। (36) और (कुर्बानी के) जानवरों को भी 'हमने' तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है, तुम्हारे लिए उनमें भलाई है, तो उन्हें क़तार में खड़ा कर के

उन पर अल्लाह का नाम लिया करो, फिर जब वे अपने पहलुओं के बल गिर पड़ें, तो खुद भी उनमें से खाओ और सब्र करने वालों और माँगने वालों को भी खिलाओ, इस तरह 'हमने' उनको तुम्हारे बस में कर दिया, ताकि तुम शुक्र करो। (37) अल्लाह तक न उनका गोशत पहुँचता है, और न उनका खून, लेकिन 'उसके' पास तुम्हारा तक्वा (परहेज़गारी) पहुँचता है, इसी तरह अल्लाह ने उनको तुम्हारे काबू में कर दिया, कि 'उसने' जो तुमको राह सुझाई है, उस बदले में अल्लाह की बड़ाई बयान करो, और (ऐ नबी) नेक लोगों को खुशख़बरी सुना दीजिए। (38) अल्लाह उन लोगों की ओर से दिफ़ा (प्रतिरक्षा) करता है, जो ईमान लाए, बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी ख़ियानत (दगाबाजी) करने वाले, कुफ़्र करने वाले को। (39) (उन लोगों को) इजाज़त दी जाती है जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उन पर जुल्म हो रहा है, और अल्लाह उनकी मदद करने पर कादिर (सामर्थ्य) है; (40) (यह वे लोग हैं) जो अपने घरों से नाहक निकाले गये, केवल इस बात पर कि वे कहते हैं, "हमारा 'रब' अल्लाह है," अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता, तो खानकाहें (मठ) और गिरजा, और यहूदी प्रार्थना भवन, और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का ख़ूब नाम लिया जाता है, सब ढा दिये जाते, और अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा, जो 'उसकी' मदद करेगा; बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला है; (41) तो यह वे लोग हैं कि अगर धरती पर 'हम' इन्हें सत्ता दें, तो वे नमाज़ कायम करेंगे, और ज़कात देंगे और भली बात का हुक्म करेंगे और बुराइयों से रोकेंगे; और सब मामलों का अंजाम तो अल्लाह ही के हाथ में है।

### आयत नं० 30 से 41 तक की व्याख्या

**30** ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرْمَتَ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُشْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ ۚ

### शिरक और झूठ से बचने की ताकीद

“जो शख्स अल्लाह की हु्रमत की तअज़ीम करे तो वह उस के रब के पास उस के लिए बेहतर है”। शब्द 'हु्रमात' हु्रमत का बहुवचन है। 'साहिबे रुहुल मआनी' लिखते हैं कि हु्रमत से हर वह चीज़ मुराद है जिस का शरअी एहतिराम (Respect) करने का हुक्म दिया गया है। तमाम शरीअत का हुक्म जिन बन्दों को दिया गया है (चाहे हज़ से सम्बन्धित हों या दूसरी अ़िबादात से) उन सब का एहतिराम करना ज़रूरी है और सब से बड़ा एहतिराम यह है कि दिल व जान से अपनाए और इख़्लास के साथ अ़मल करे, उस में नमाज़, रोज़: का एहतिराम, इल्म दीन का एहतिराम और सारे दीनी अ़माल का एहतिराम आ जाता है।

'हज़रत इब्ने अब्बास' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हज़ में जो चीज़ें हराम हैं वह यह हैं गुनाह न करे, लड़ाई झगड़े से परहेज़ करे, बीवी-शौहर वाले सम्बन्ध न रखे, ज़मीनी शिकार न करे, एहराम में रोकी गई चीज़ों से रुका रहे। जो शख्स अल्लाह के ज़रिये हराम की हुई चीज़ों की तअज़ीम (Respect) करेगा

फायदे में रहेगा। अल्लाह तआला उस के आमाँल की क़द्र फ़रमाएगा और क़ियामत के दिन उन पर अज़्र व सवाब देगा।

وَأُحِلَّتْ لَكُمْ الْبَهِيمَةُ

“और तुम्हारे लिए चौपाये हलाल कर दिये गये यानी उन के ज़ब्ह करने और खाने की इजाज़त दी गई है”।

إِلَّا مَا يَمِثِلُ عَلَيْكُمْ

“मगर जिन की तुम पर तिलावत की गई”।

यानी जिस का बयान कुर्आन करीम की दूसरी आयात में पढ़ कर सुना दिया गया है। यह बयान सूर: बकर:, सूर: माइदा, सूर: अन्आम में है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़बानी भी इस को बता दिया गया।

‘साहिबे रूहुल् मआनी’ लिखते हैं कि यहाँ इस बात का ज़िक्र इस लिए है कि हलाल जानवर जिन्हें आमतौर पर ज़ब्ह कर के लोग खाते हैं। जैसे-ऊँट, गाय, बकरा, भेड़, दुम्बा। एहराम में उन के ज़ब्ह करने की मनाही नहीं है, केवल खुश्की के जानवरों का शिकार करने की मनाही है।

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ

“सो तुम नापाकी से यानी बुतों से बचो”।

मुशिरकीन जानवरों को बुतों के ज़रिये करीबी बनने के लिए ज़ब्ह करते थे और यह उन के नज़्दीक मूर्तियों की इबादत थी। इसलिए फ़रमाया कि हलाल जानवरों को खाओ पियो, लेकिन मूर्तियों की इबादत में प्रयोग न करो। न देवी देवता और मूर्तियों के लिए ज़ब्ह करो और न ज़ब्ह करने के बाद उन के गोश्त का उन पर चढ़ावा चढ़ाओ।

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने तौहीद सिखाई थी और कुर्बानी की शुरुआत की थी। जो कुर्बानी केवल अल्लाह की रज़ा के लिए थी, लेकिन बाद में अहले अरब मुशिरक हो गये तो वह देवी देवताओं के लिए एहराम बाँधते थे और उन के करीबी बनने के लिए जानवरों को ज़ब्ह करते थे और तल्बिया (हज में लब्बैक कहना) में भी शिर्क के शब्दों को बढ़ा लेते थे और यूँ कहते हैं **إلا شريك هو لك** इसलिए शब्दों के लिए यह बात बयान फ़रमाई कि जानवरों का इस्तेमाल खाने-पीने के लिए है, ग़ैरुल्लाह के लिए ज़ब्ह करने के लिए नहीं।

وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ (और झूठी बात से बचो।)

इस में हर तरह के झूठ से बचने का हुक्म फ़रमा दिया। झूठी बात, झूठी ख़बर, झूठी क़सम, झूठा वादा, सब से बचना फ़र्ज़ है। झूठ से बचने का हुक्म तो आम है, लेकिन यहाँ खासतौर से इस का ज़िक्र इसलिए फ़रमाया कि मुशिरकीने अरब जो शिर्क के काम करते थे उन में कुछ जानवरों को हलाल और कुछ को ह़राम कहते थे जिस का बयान सूर: माइदा की आयत **مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَهِيمَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ** की तफ़्सीर में गुज़र चुका है।

सूर: अअराफ **وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آيَاتًا وَاللَّهُ أَعَزُّ مِنْهَا** में भी उन की इस गुमराही का जिक्र है।

**31**

**حُفَّاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۝**

‘हजरत खुरैम बिन फातिक’ (रज़ि०) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सुबह की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप खड़े हो गये और तीन बार फ़रमाया कि झूठी गवाही को अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर क़रार दिया गया है। इस के बाद आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई:-

**فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝ حُفَّاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ**

इस का मतलब यह है कि मूर्तियों से और झूठी बात से बचते हुए अल्लाह तआला की तरफ़ झुके रहो यानी अक़ीदा भी तौहीद का रखो और आ़माल भी उस के हुक्म के मुताबिक़ अन्जाम दो और शिर्क से दूर रहो।

इस के बाद मुशिरकों का हाल बयान फ़रमाया **وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ**

यानी जो शख्स अल्लाह के साथ शिर्क करे, उसकी ऐसी मिसाल है जैसे कोई शख्स ऊँचाई से गिर पड़े और परिन्दे उसे उचक लें और उस की बोटियाँ नोच-नोच कर खा जाएँ और उस की दूसरी मिसाल यह है कि किसी शख्स को हवा उड़ा कर ले जाए और किसी दूर-दराज़ जगह में ले जाकर फेंक दे।

‘अल्लामा बग़वी’ ने ‘मुआलिमुल् तन्ज़ील’ भाग 3 पेज नं० 286 में लिखा है कि जैसे कोई शख्स गिरे और परिन्दे उचक कर और नोच-नोच कर उस की बोटियाँ खा लें या जिसे हवा उड़ा कर ले जाए और किसी दूर जगह ले जाकर फेंक दे। यही हाल मुशिरकों का है कि वह तो हलाक ही होकर रहेगा, उस के छुट्कारे का कोई रास्ता नहीं है। उस की आख़िरत में बर्बादी है, उस के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है।

**32**

**وَمَنْ يُعْظَمِ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۝**

(और जो शख्स अल्लाह के शआयर की तअज़ीम करेगा तो बेशक यह दिलों के तक्वा की बात है) इस से पहले अल्लाह के ज़रिये हराम की हुई चीज़ों के तअज़ीम की फज़ीलत बयान फ़रमाई।

इस के बाद अल्लाह के शआयर के बारे में इश्राद फ़रमाया कि जो शख्स इन की तअज़ीम करेगा उस के बारे में यह समझ लिया जाए कि यह तअज़ीम करना दिलों के तक्वा की वजह से है यानी जिन लोगों के दिलों में तक्वा है वही अल्लाह के शआयर की तअज़ीम (Respect) करते हैं। हुस्मात में शआयर (चिन्ह) भी दाख़िल है उन की और अहमियत बताने के लिए अलग से हुक्म दिया है।

सूर: बकर: में फ़रमाया **إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ** (बिलाशुब्हा ‘सफ़ा’ और ‘मरवह’ अल्लाह की ख़ास निशानियों में से हैं।)

और सूर: माईदा में फ़रमाया **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَجْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ**

“ऐ ईमान वालों अल्लाह के शआयर की बेहुरमती न करो”।

जो चीजें इबादात (उपासना) का ज़रिया बनी हैं, उन्हें शआयर (चिन्ह) कहा जाता है। इस में बहुत सी दीनी चीजें आ जाती हैं और बाज़ हज़रात ने उन में ख़ास अहमियत वाली चीजों को शुमार कराया है।

हज़रात ज़ैद बिन अस्लम ने फ़रमाया कि शआयर छः हैं:-

- (1) सफ़ा, मरवह
- (2) कुर्बानी के जानवर
- (3) हज़ के मौके पर कंकरियाँ मारने की जगह
- (4) मस्जिदे ह़राम
- (5) अरफ़ात
- (6) रुक्न यानी हज़्रे अस्वद और उन की तअज़ीम (Respect) का मतलब यह है कि उन जगहों में जिन कामों के करने का हुक्म दिया गया है उन्हें अन्जाम दिया जाए।

“हज़रात इब्ने उमर (रज़ि०) से नक़ल किया गया है कि हज़ की तमाम जगहें शआयर हैं उन के कौल के मुताबिक़ ‘मिना’ और ‘मुज्दल्फ़ा’ भी ख़ास शआयर में शामिल हो जाते हैं”।

**33**

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَيَّئٍ ثُمَّ مَجْلُهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۖ

(उन जानवरों में तुम्हारे लिए एक निश्चित वक़्त तक नफ़ा है) यानी जिन जानवरों को हज़ या उमरह में ज़ब़्द करने के लिए निश्चित कर दिया तो अब उन से नफ़ा हासिल न किया जाए। इस से पहले उन का दूध और उस पर सवारी करना और उन का ऊन काट कर काम में लाना जायज़ था। जब वह हज़ या उमरह में ज़ब़्द करने के लिए निश्चित कर दिये गये तो अब उन से नफ़ा हासिल न किया जाए। इसलिए कि उस ज़माने में कुर्बानी के जानवर साथ ले जाया करते थे और उन्हें मक्का मुकर्रमा में या मिना में ज़ब़्द किया करते थे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़्जतुल् विदाअ के मौके पर बड़ी संख्या में ‘हदी’ के जानवर पहले से एक सहाबी (नाजिया अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु) की निगरानी में भेज दिये थे और बहुत से जानवर हज़रात अली (रज़ि०) यमन से लेकर आए थे, यह सब सौ ऊँट हो गये थे, जिन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने और हज़रात अली (रज़ि०) ने मिना में कुर्बान फ़रमाया।

‘तमत्तुअ’ और ‘क़िरान’ वाले पर अगरचे एक ही ‘दम’ वाजिब है, लेकिन जितने ज़्यादा जानवर अल्लाह की राह में ज़ब़्द कर दिये जाएँ बेहतर है।

‘हज़ इफ़राद’ वाले पर हज़ की कुर्बानी वाजिब नहीं, लेकिन उस के लिए भी मुस्तहब (पसन्दीदा) है कि कुर्बानी करे।

केवल उमरह किया जाए तो उस में कुर्बानी वाजिब नहीं। इस के बावजूद रसूलुल्लाह (सल्ल०) उमरतुल् हुदैबिया के मौके पर हदी के जानवर ले गये थे जिन्हें एह़सार (रोके जाने) हो जाने पर वहीं ज़ब़्द फ़रमा दिया।



जब किसी जानवर को हदी के लिए निश्चित कर दिया तो अब न उस का दूध निकाले, न ऊन काटे और न उस पर सवारी करे। हाँ, अगर मजबूरी हो जाए कि सवारी के बगैर गुज़ारा नहीं हो सकता तो दूसरी सवारी मिलने तक उस पर सवार हो सकता है। हदी (कुर्बानी) के जानवर के थनों में अगर दूध आ जाए तो थनों पर ठंडा पानी छिड़क दे, ताकि ऊपर से दूध का उतरना बन्द हो जाए और जिस जानवर को हदी के लिए मुतअय्यन (Fix) कर दिया, ज़ब्र के बाद सब को सद्क़: कर दे और गोशत काटने वाले की उजरत भी उस में से न दे बल्कि अपने पास से अदा करे, यही हुक्म अम कुर्बानी के जानवर का है।

ثُمَّ مَجِّئَهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ

(फिर उन जानवरों के ज़ब्र करने की जगह बैतुल अतीक के पास है) बैतुल अतीक से पूरा हरम मुराद है। हरम में जिस जगह भी हज या उमरह से सम्बन्धित जानवर ज़ब्र कर दे उस की अदाएगी हो जाएगी, हरम से बाहर उन जानवरों का ज़ब्र करना दुरुस्त नहीं है। 'दम एहसार' के बारे में फरमाया और एहराम में शिकार करने पर जो जानवर शिकार के बदले ज़ब्र किया जाए उस के बारे में غَذَايَا بِلَعْلِكَ فَرَمَاया है और यहाँ भी अम हदी (कुर्बानी) के बारे में ثُمَّ مَجِّئَهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ फरमाया है।

नोट-

अगर हदी (कुर्बानी) नफ़ली हो और वह रास्ते में हलाक होने लगे तो उसे वहीं ज़ब्र कर दे और उसे निशान लगाकर फ़कीरों के लिए छोड़ दे, न खुद खाए न कोई दूसरा साहिबे निसाब (शरीअत की शर्त के अनुसार सम्पन्न) खाए और निशानी का तरीका यह है कि कोई किसी चीज़ में खून लगाकर जानवर की गर्दन पर मार दें ताकि खून फैल जाए और जम जाए और लोग यह समझ लें कि यह हदी (कुर्बानी) का जानवर है और अगर हदी का जानवर रास्ते में हलाक होने लगे जो वाजिब था या उस में ऐब पैदा हो जाए जिसकी अदाएगी वाजिब हो तो दूसरा जानवर उसके बदले में कर दे और उस पहले वाले जानवर का जो चाहे करे।

**34-35** وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقْنَهُمْ مِنْ بَيْنَةِ الْأَنْعَامِ ۚ فَلِلَّهِ الْوَحْدُ فَلَهُ أَسْبِقُوا ۚ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُم وَالْمُتَّقِينَ ۚ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَهُمْ يُنفِقُونَ ۝

## अल्लाह का दिया हुआ रिज़क़

शब्द منسلक अ़िबादत के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है और जानवर ज़ब्र करने के लिए भी और हज के अहकाम अदा करने के लिए भी। जैसा कि सूर: बकर: में है وَإِذَا مِمَّا يَكُنَّا فَرَمَاया है, यहाँ पर तीनों अर्थ हो सकते हैं। यह मतलब भी हो सकता है कि हम ने हर उम्मत के लिए अ़िबादत के तरीके तय किये हैं और कुर्बानी के अर्थ में हो सकता है और कुर्बानी की जगह के अर्थ में भी और



हज के कामों के अर्थ में भी, लेकिन आयत के सन्दर्भ (Back ground) से मालूम होता है कि यहाँ जानवरों की कुर्बानी करना मुराद है क्योंकि **لِيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ** के साथ ही **وَلِكُلٍّ أَمَةٌ جَعَلَ ضَلَكُ** फरमाया है।

**لِيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ**

“सो तुम्हारा मअबूद एक ही मअबूद है सो उस की फरमाँबरदारी करो”।

इस में यह बात बताई गई है कि जानवरों के ज़ब्र करने में केवल अल्लाह तआला की रज़ा हो।

इस के बाद **مُخَيَّتِينَ** यानी अजिजी करने वालों और फरमाँबरदारी और इताअत के साथ गर्दन झुका देने वालों को अल्लाह के रज़ामन्दी की खुशख़बरी सुनाने का हुक्म दिया और उन के चार गुण (characteristic) बयान फरमाये:-

- 1- पहला गुण यह है कि जब उन के सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, जिस में उस की ज़ात (Personality) व सिफ़ात (attributes) का ज़िक्र और उस के हुक्मों और वादे और वअ़ीद का ज़िक्र सब दाख़िल है तो उन के दिल डर जाते हैं।
- 2- दूसरा गुण यह बयान फरमाया कि उन पर जो मुसीबतें आती हैं उन पर सब्र करते हैं।
- 3- तीसरा गुण यह बयान फरमाया कि वह नमाज़ों को कायम करने वाले हैं।
- 4- चौथा गुण यह बयान फरमाया कि अल्लाह तआला ने जो कुछ उन्हें अता फरमाया है उस में से खर्च करते हैं। शब्द ‘फ़र्ज़’ ज़कात और सद्कात वाजिबा और नफ़ली सद्कात सब को शामिल है। कुर्बानी के जानवरों में से खर्च करना फ़कीरों को और दोस्तों को देना यह भी उस में दाख़िल है।

**36**

**وَالْبَدَنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۚ  
فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا الْقَانِعَ ۚ وَالْبُغْتَزَ ۚ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ  
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝**

### कुर्बानी के जानवर

**البدن** बहुवचन (Plural) है **بدنه** की, बड़े जानवरों को ‘बुद्ना’ कहा जाता है। ‘इमाम अबू हनीफ़ा’ (रह०) के नज़्दीक शब्द ‘बुद्ना’ ऊँट और गाय दोनों को कहते हैं। फरमाया कि हम ने उन को अल्लाह के शआयर यानी दीनी यादगारों और बड़ी निशानियों में से बना दिया है, उन में तुम्हारे लिए ख़ैर है, दुनियावी और आख़िरत के फ़ायदे भी, क्योंकि अल्लाह तआला के लिए उन को ज़ब्र करने पर सवाब अज़ीम का वादा है।

और ‘इमाम शाफ़र्र’ के नज़्दीक ‘बुद्ना’ का मतलब केवल ऊँट है। ज़बीहा (आम कुर्बानियाँ जो पूरी दुनिया में होती हैं) और हदी (वह जानवर हैं जो हरम में हज के मौके पर ज़ब्र किये जाते हैं) इन सब में ऊँट, गाय, बकरी, भेड़ और दुम्बा ज़ब्र करना शरीअत के मुताबिक़ दुरुस्त है। इन के अलावा और किसी जानवर की कुर्बानी हज में या कुर्बानी के दिनों में दुरुस्त नहीं है। ऊँट और गाय में सात हिस्से

हो सकते हैं और बाकी जानवरों में केवल एक हिस्सा होता है।

अहले अरब ऊँटों की परवरिश करते थे और उन के यहाँ उन की नस्लें चलती थीं और बड़ी संख्या में अरबों के पास ऊँट होते थे। हज के मौके पर बतौर हदी (कुर्बानी) ऊँटों को साथ ले जाते थे, फिर मिना में उन्हें नहर (ज़िबह) करते थे। 'नहर' का तरीका यह है कि ऊँट को खड़ा कर के उस का बायाँ पिछला पैर बाँध दिया जाए और 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर खड़े-खड़े ज़बह की जगह में तेज़ बरछा मार दिया जाए, इस को 'नहर' कहते हैं।

ऊँट में 'नहर' करना और बकरी आदि में ज़बह करना सुन्नत है। (ज़बह का मतलब तो सभी को मालूम है।) ऊँट को खड़ा कर के नहर करने में यह हिक्मत है कि इस से उसकी जान आसानी से निकल जाती है। (अरबों के लिए 'नहर' बहुत आसान काम था) 'नहर' करने से ऊँट गिर पड़ता था, अगर बहुत से ऊँट कतार (पंक्ति) में खड़े होते तो जिस-जिस को बरछा लग जाता वह गिरता चला जाता था। जब 'नहर शुदा' ऊँट ज़मीन पर गिर जाता तो उस की खाल निकाल लेते थे और गोشت की बोटियाँ बनाकर खा लेते थे। इसी को फ़रमाया:-

فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا

“फिर जब वह अपने पहलुओं पर गिर पड़े तो उन में से खा लो”।

وَاطْعَمُوا الْقَائِعَ وَالْمُعْتَرَّ

“और 'क़ानेअ' को भी खिलाओ और 'मुअतर' को भी”।

'क़ानेअ' वह ज़रूरतमन्द जो सवाल नहीं करता, अपनी ज़रूरत को दबाए बैठा रहता है और 'मुअतर' वह होता है जो ज़बान से सवाल कर लेता है या ऐसे ढंग से सामने आ जाता है जिस की वजह से उसे लोग ज़रूरतमन्द समझ कर कुछ न कुछ दे देते हैं। 'क़ानेअ' की ज़रूरतों का खयाल करना ज्यादा बेहतर है और सायल को भी देना जायज़ है। सवाल करने वालों के लिए भी कुछ हिदायात हैं जो हदीस की किताबों में मौजूद है।

كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

“इसी तरह हम ने उन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़र कर दिया यानी काबू में दे दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो।” यह जानवर तुम्हारी मिल्कियत हैं उन पर तुम्हारा कब्ज़ा है और तुम उन्हें बाधते हो, खोलते हो, जहाँ चाहते हो ले जाते हो उन का दूध भी पीते हो गोشت भी खाते हो। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़रूरी है, उस ने तुम्हारे काबू में दे दिया, उस पर तुम्हें अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना ज़रूरी है। अगर कोई जानवर मचल जाए बिगड़ जाए ज़िद करने लगे तो तुम्हारे काबू से बाहर हो जाता है उस वक़्त तुम उस से काम नहीं ले सकते, थोड़ी देर के लिए अल्लाह ने तस्वीर (Control) हटा दी तो तुम बेबस हो कर खड़े रहते हो।

37

لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومَهَا وَلَإِذَا دُمًّا وَهِيَ وَ لَإِنْ يَنَالَهُ الثَّقَوَىٰ مِنْكُمْ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ

لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ ۚ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۝

“अल्लाह को हरगिज़ उन के गोश्त और खून नहीं पहुँचते, लेकिन तुम्हारा तक्वा पहुँचता है”।

यानी जो जानवर कुर्बानी और हज के मौके पर ज़ब्ह करते हो, अल्लाह तआला को उन की कोई ज़रूरत नहीं, उस के पास न उन का गोश्त पहुँचता है और न खून।

उन को तुम ही खा पीकर बराबर कर देते हो (कुछ गोश्त खुद खाया कुछ अपने घर वालों को खिलाया कुछ दोस्तों को दिया, कुछ फ़कीरों और मित्कीनों को दिया। यह सब तुम्हारे ही काम आ गया (अल्लाह तआला को तो तुम्हारे दिलों का तक्वा पहुँचता है। इस्लाम के साथ जानवर ज़ब्ह किये या दिखावे के तौर पर, खुशदिली से कुर्बानी की है या बददिली के साथ अल्लाह तआला को सब कुछ मालूम है। उस के मुताबिक़ बदला देगा जो चीज़ अल्लाह के लिए कुर्बान की जा रही है, वह अच्छी से अच्छी खुशदिली के साथ हो।

‘हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा’ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि यौमुल् फ़ख़्र (ज़िल् हिज्ज की दस्वी तारीख़) के दिन (कुर्बानी का) खून बहाने से ज़्यादा महबूब कोई चीज़ नहीं है और कुर्बानी का जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ आएगा और उस का खून ज़मीन पर गिरने से पहले अल्लाह तआला के यहाँ मक़ामे कुबूलियत में पहुँच जाता है, लिहाज़ा तुम खुशदिली के साथ कुर्बानी करो। (तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने अरक़म (रज़ि०) से रिवायत है कि सहाबा ने अज़ किया या रसूलुल्लाह! यह कुर्बानियाँ क्या हैं? आप ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे बाप इब्राहीम (अलै०) का जारी किया हुआ तरीक़ा है। अज़ किया इस में हमारे लिए क्या सवाब है? फ़रमाया, हर बाल के बदले एक नेकी है! अज़ किया अगर ऊन वाला जानवर हो (जिस में बाल बहुत ज़्यादा होते हैं) तो उस के बारे में क्या हुक्म है? फ़रमाया ऊन के हर बाल के बदले में भी एक नेकी है।

كَذَلِكَ سَعَرَهَا لَكُمْ لِتَكْبُرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ

“इसी तरह अल्लाह ने उन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र फ़रमा दिया ताकि तुम उस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उस ने तुम को हिदायत दी” अल्लाह तआला ने ईमान भी नसीब फ़रमाया, आमांले सालिहा की तौफ़ीक़ भी दी। अगर वह हिदायत न देता तो तुम ईमान से भी महरूम रहते और उस की अ़िबादत से भी और यह भी समझो कि अल्लाह तआला ही ने तुम्हें हिदायत दी है। जानवरों को अल्लाह के लिए ही ज़ब्ह करते रहो अगर उस की तरफ़ से हिदायत न मिलती तो मुशिरक हो जाते और ग़ैरुल्लाह के लिए ज़ब्ह करते।

وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ (और मुहसिनीन को बशारत दे दीजिए) शब्द मुहसिनीन मुवहहिदीन, मुख़्लसीन, आब्दीन, क़ानितीन, शाकिरीन सब को शामिल है उन सब को खुशख़बरी है कि उन के लिए मौत के बाद ख़ैर व ख़ूबी और क़ियामत के दिन जन्नत का दाख़िला है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अल्लाह तआला न तुम्हारे जिस्मों को देखता है और न ही तुम्हारी शक्लों को बल्कि वह तुम्हारे दिलों को देखता है।” (मुस्लिम)

38

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُجِبُ كُلَّ خَوَافٍ كُفُورٍ

## अल्लाह तआला दुश्मनों को हटा देगा

यहाँ इस आयत में अल्लाह तआला ने इस का जिक्र फरमाया है कि मुशिरकीन जो मोमिनीन को तक्लीफ देते हैं और उन्हें हरम शरीफ के दाखिले से रोकते हैं यह कुछ दिन की बात है। अल्लाह तआला काफिरों को हटा देगा, फिर मोमिनीन अमन व अमान के साथ चले फिरेंगे और हज व उमरह करेंगे। अल्लाह तआला ने अपना वादा पूरा फरमाया और 8 हिज्री में मक्का मुकर्रमा फतेह हो गया।

إِنَّ اللَّهَ لَا يُجِبُ كُلَّ خَوَافٍ كُفُورٍ

“बिलाशुब्हा अल्लाह तआला किसी भी खयानत करने वाले नाशुक्रे को पसन्द नहीं फरमाता”।

हर काफिर और मुशिरक खयानत करने वाला है, उस के ज़िम्मे है कि अपने खालिक व मालिक ‘वहदहु लाशरीक’ की अ़िबादत करे और उस के भेजे हुए दीन को माने, लेकिन वह ऐसा नहीं करता, लिहाज़ा वह बहुत बड़ा खायन है। इसीलिए शब्द खव्वान मुबालिगा के साथ लाया गया है और हर काफिर कफूर यानी नाशुक्रा भी है, पैदा तो फरमाया अल्लाह तआला ने और अ़िबादत करता है गैरुल्लाह की और उन धर्मों को अपनाता है जिन्हें लोगों ने खुद तराश लिये हैं। यह खालिक की बहुत बड़ी नाशुक्रा है कि नेअमतें उस की खाए और उसी के दीन से दूर रहें, अल्लाह तआला उन से मुहब्बत नहीं फरमाता। मुशिरक और काफिर सब अल्लाह तआला के नज़्दीक ग़ज़ब के हक्दार हैं, आखिर यह लोग मग़्लूब (हारेंगे) होंगे और अल्लाह के मोमिन बन्दे ही कामियाब होंगे।

39

أُوْنِ لِلَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُْنِ اللَّهُ عَلَىٰ تَضَرُّعِهِمْ لَقَدِيرٌ

## जिहाद की इजाज़त और उस के फ़ायदे

मक्का मुकर्रमा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दअवत का काम शुरू किया। आप की दअवत पर शुरू में उन लोगों ने लब्बैक (Accept) कहा जो दुनियावी एतिबार से कमज़ोर थे, उन हज़रात के पास माल भी न था और उन में वह लोग भी थे जो मुशिरकीन के गुलाम थे और कुछ परदेशी थे। मुशिरकीने मक्का उन हज़रात को बहुत सख़्त तक्लीफें देते और बुरी तरह मारते पीटते थे, यहाँ तक कि उन में बहुत से हज़रात हब्शा हिजरत कर गये, रसूलुल्लाह (सल्ल०) और दूसरे सहाबा-ए-किराम हिजरत (Migrate) कर के मदीना मुनव्वरह तशरीफ ले आए, फिर हब्शा के मुहाजिरीन भी मदीना मुनव्वरह पहुँच गये। जब तक यह हज़रात मक्का मुकर्रमा में थे उन को सब्र करने का हुक्म था, जंग करने की इजाज़त न थी।

मगर जब मदीना मुनव्वरह में मुसलमान जमा हो गये और अमन की जगह मिल गई (Centre) तो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जंग की इजाज़त दे दी। हज़रात इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फरमाया

कि जब नबी करीम (सल्ल०) मक्का मुकर्रमा से हिजरत कर के तशरीफ ले आए तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने कहा कि उन लोगों ने अपने नबी (सल्ल०) को शहर से बाहर कर दिया है। यह लोग ज़रूर हलाक होंगे। इस पर अल्लाह तआला ने आयते शरीफ़ **أُولَئِكَ الَّذِينَ يَنْتَظِرُونَ بِآيَاتِهِمْ فَلَبَرُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ تَقْوِيهِمْ لَظَهِيرٌ** नाज़िल फ़रमाई।

‘हज़रत अबू बक्र सिद्दीक’ ने आयत सुनकर यूँ फ़रमाया कि मैं आयत के नाज़िल होने पर समझ गया कि अब (मुशिरकीन से हमारी) जंग होगी। चुनौचे हिजरत के दूसरे ही साल ग़ज़व-ए-बद्र का वाकिआ पेश आया और अल्लाह के हुक्म से थोड़े से मुसलमान काफ़िरों की तीन गुना तअ़दाद से ऊपर ग़ालिब आ गये। इस के बाद अगले साल ग़ज़व-ए-उहद का वाकिआ पेश आया और फिर ग़ज़वात के मौक़े पेश आते रहे। अल्लाह तआला को हमेशा से कुद़रत है कि जिस की चाहे मदद फ़रमाएँ। मक्का में वह मुसलमानों को काफ़िरों की तकलीफ़ों से महफूज़ रखने पर कादिर था और इस के बाद भी उसे कुद़रत थी कि जंग किये बग़ैर मुसलमान मदीना मुनव्वरह में आराम से रहें और दुश्मन चढ़ कर न आएँ और उन से मुकाबिला न हो, लेकिन अल्लाह तआला की हिकमत का तकाज़ा हुआ कि मुसलमानों के जान व माल अल्लाह की राह में ख़र्च हों और उन को बहुत ज़्यादा सवाब दिया जाए।

मुशिरकीने मक्का ने जो अहले ईमान से दुश्मनी की और उन को तकलीफ़ें दीं, मक्का मुकर्रमा छोड़ने पर मजबूर किया, उस की वजह केवल यह थी कि यह हज़रात अल्लाह का नाम लेते थे, अल्लाह को अपना रब मानते थे, इस्लाम कुबूल कर लिया था, मगर किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया था, किसी किस्म का कोई जुर्म नहीं किया था, काफ़िरों के नज़दीक उन का सिर्फ़ यह जुर्म था कि वह अल्लाह तआला को मानने के कायल हो गये।

**40-41**

إِلَّذِينَ أَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ يَغِيرُهُمْ ۖ إِيَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَهَدَمَتِ صَوَامِعُ وَبِيْعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذَكِّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝

इस में जिहाद और क़िताल की हिकमत बयान फ़रमाई गई है और यह बताया गया है कि क़िताल और जिहाद केवल इसी उम्मत के लिए नहीं है। इस उम्मत से पहले जो मुसलमान थे उन के लिए भी क़िताल था। बात यह है कि कुफ़्र और इस्लाम की हमेशा दुश्मनी रही है। इसी वजह से इन्कारियों और मानने वालों में लड़ाईयाँ होती रही हैं। अपने-अपने ज़माने में हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) की उम्मतों ने काफ़िरों से जंग की है और इस के ज़रिये काफ़िरों का ज़ोर तोड़ा है। यह अल्लाह तआला की आदत रही है कि एक जमाअत के ज़रिये दूसरी जमाअत को टकराता रहा है, अगर यह सूरतेहाल न होती तो काफ़िर अहले ईमान की अ़िबादतगाहों को गिराकर ख़त्म कर देते। यहूद ने (जो अपने ज़माने

में मुसलमान थे) दुश्मनों से मुकाबिला और क़िताल किया और अपनी अ़िबादतगाहों को बचाया। फिर नसारा का दौर आया (जो अपने ज़माने के मुसलमान थे) उन्होंने भी काफ़िरों से जंग की और अपने अ़िबादतख़ानों की हिफ़ाज़त की, वह दोनों क़ौमें अब भी हैं, लेकिन सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) का दीन कुबूल न करने की वजह से काफ़िर हैं, अब उम्मत मुहम्मदिया मुसलमान है और काफ़िरों से यदि मुसलमान मुकाबिला न करें तो उन की मस्जिदें गिरा दी जाएँ जिन में अल्लाह तआला का बहुत ज़िक्र किया जाता है।

काफ़िरों को यह कहां ग़वारा है कि मुसलमान अज़ानें दें और मस्जिदें बनाएँ और उन में जमाअत से नमाज़ें पढ़ें, काफ़िर मुसलमानों से डरते रहते हैं इसलिए सारी दुनिया में मस्जिदें कायम हैं और बराबर उन की तअ़दाद बढ़ रही है।

इस के बाद अल्लाह तआला ने उन बन्दों के गुण (characterstics) बयान फ़रमाए जो मक्का मुकर्रमा से निकाले गये। फिर जब उन्हें सत्ता सौंपी गई तो उन्होंने दीन की ख़िद्मत की, खुद भी नमाज़ें कायम कीं और ज़कातें अदा कीं और दूसरों से भी दीन पर अमल कराया, अमल कराने के लिए अच्छाई का हुक्म और बुराई से रोकने की ज़रूरत होती है, उन हज़रात ने दोनों चीज़ों का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाया।

जिन हज़रात के यह गुण बताए गये हैं उन का सब से पहला ग़िरोह हज़रात खुल्फ़ा-ए-राशिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का हैं। यह हज़रात मक्का मुकर्रमा से निकाले गये और इन्होंने अपने ज़माने में वह सब काम किये, जिन का ऊपर ज़िक्र फ़रमाया है।

‘तफ़सीर इब्ने कसीर’ भाग 3 पेज 226 में है कि हज़रात उस्मान (रज़ि०) ने फ़रमाया कि यह आयत मेरे और मेरे अस्हाब के बारे में है, हम नाहक अपने घरों से निकाले गये जब कि हमारा इस के अलावा कोई कुसूर न था कि हम अपने पैदा करने वाले को मानते थे, फिर हमें अल्लाह ने ज़मीन में सत्ता दी तो हम ने नमाज़ कायम की, ज़कात अदा की और अच्छाई का हुक्म दिया और बुराई से रोका।

आयते शरीफ़ा से यह भी मालूम हुआ है कि अल्लाह तआला जिस मुसलमान को सत्ता नसीब फ़रमाए वह नमाज़ भी पढ़े, ज़कात भी दे, लोगों को नेकियों का हुक्म करे और गुनाहों से रोके। (आजकल लोग गुनाहों के फैलाने और गुनाह आम करने का ज़रिया बनते हैं और अ़वाम से डरते हैं कि अगर उन्हें गुनाहों से रोका तो नाराज़ हो जाएँगे और उन की सत्ता छिन जाएगी।)

आख़िर में फ़रमाया **وَبَلَّغْ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ**

(और सब कामों का अन्जाम अल्लाह ही के अख़्तियार में है) मुसलमानों का शुरुआती ज़माना दुःख तक्लीफ़ का था। मक्का मुकर्रमा छोड़ना पड़ा, फिर उसी मक्का में फ़ातिहाना दाख़िल हुए। अल्लाह तआला ने ज़मीन में शासन नसीब फ़रमाया, ज़मीन के बहुत बड़े हिस्से पर उन की हुक्मत कायम रही और अब भी दुनिया के बहुत बड़े हिस्से पर उन का शासन है।

सब का अन्जाम अल्लाह ही के अख़्तियार में है, उस ने मुसलमानों को ख़ूब बढ़ाया, सत्ता से नवाज़ा, काफ़िरों के मुकाबिले में उन का अन्जाम अच्छा हुआ और आख़िरत में हर मोमिन का अन्जाम तो अच्छा है ही।



## आयत नं० 42 से 57 तक

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكَذَّبَ مُوسَى فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٌ ۝ فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَمِنْهَا خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا وَبِئْرٌ مُعْتَظَلَةٌ وَقَصْرٌ مَشِيدٌ ۝ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْنَى الْأَبْصَارَ وَلَكِنْ تَعْنَى الْقُلُوبَ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۖ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنْ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُمُهَا ۚ وَالَّتِ الْمَصِيرُ ۖ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَلَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۖ فَيَنسُخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ أَيْتَهُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۖ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَلَا يَزَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمٌ عَقِيمٌ ۖ أَلَمْ يَكُنْ يَوْمَئِذٍ يَوْمَئِذٍ ۚ يُحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۖ

### अनुवाद-

(42) और अगर ये लोग आप को झुठलाते हैं तो, इनसे पहले कौमे नूह, और आद, और समूद ने भी झुठलाया था; (43) और कौमे इब्राहीम और कौमे लूत भी, (झुठला चुकी है); (44) और मद्यन वालों ने भी झुठलाया था, और मूसा भी झुठलाए जा चुके हैं, तो 'मैंने' काफ़िरों को मोहलत दी, फिर 'मैंने' उन्हें पकड़ लिया, तो (देखो) मेरा अज़ाब कैसा रहा; (45) और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें 'हमने' हलाक कर डाला कि वे ज़ालिम थीं तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं, और कितने ही कुएँ बेकार हो गये, और कितने ही पक्के महल। (46) तो क्या यह लोग ज़मीन पर चले फिरे नहीं! कि इनके दिल ऐसे हो जाते जिनसे यह समझने लगते, या कान ऐसे हो जाते जिनसे यह सुनने लगते? वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल अन्धे हो जाया करते हैं। जो सीनों में हैं। (47) और आप से (यह लोग) अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं, और अल्लाह कभी अपने वादा के खिलाफ़ न करेगा, और आपके 'रब' के यहाँ का एक दिन, तुम लोगों की गिनती के अनुसार, एक हजार वर्ष के बराबर है। (48) और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिनको मोहलत दी और वे ज़ालिम थीं फिर 'मैंने' उन्हें पकड़ लिया, और 'मेरी' ही ओर लौट कर आना है। (49) कह दीजिए, "ऐ लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ।" (50) तो जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) और इज़्ज़त की रोज़ी है। (51) और जो लोग कोशिश करते

रहते हैं, हमारी निशानियों के बारे में नीचा दिखाने के लिए, वही लोग दोज़ख वाले हैं। (52) और 'हमने' आप से पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा, मगर यह कि जब वह कोई तमन्ना करता था तो शैतान उसकी तमन्ना में (वस्वसा) डाल देता था, मगर अल्लाह शैतान के डाले हुए (वस्वसे) को मिटाता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को मजबूत करता है, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है; (53) ताकि यह शैतान के डाले हुए वस्वसे को उन लोगों के लिए आजमाइश बना दे, जिनके दिलों में रोग है, और जिनके दिल कठोर हैं, बेशक यह ज़ालिम विरोध में बहुत दूर जा पड़े; (54) और ताकि यह लोग जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे जान लें कि यह आप के रब की ओर से हक़ है, तो वह इस पर ईमान लाएँ, और उसके सामने उनके दिल झुक जाएँ, और अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह दिखा देता है। (55) और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे हमेशा उसकी ओर से शक ही में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि क़ियामत अचानक उन पर आ जाए या महरूमि के दिन का अज़ाब आ जाए (56) उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी, 'वह' उनके बीच फैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे अमल किये, वह नेअमत के बाग़ों में होंगे। (57) और जिन लोगों ने इन्कार किया और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, उनको ज़िल्लत वाला अज़ाब होगा।

### आयत नं० 42 से 57 तक की व्याख्या

42-48

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ۖ وَقَوْمٌ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ  
لُوطٍ ۚ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكَذَّبَ مُوسَىٰ فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ  
نَكِيرِ ۚ فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئْسَ  
مُعْطَلَةٌ ۖ وَقَصْرِ مَشِيدٍ ۚ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ  
يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْنَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْنَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۚ وَيَسْجَعُونَكَ  
بِالْعَدَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنْ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۚ  
وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَمَلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا ۚ وَالَّتِ الْبَصِيرُ ۚ

### हलाक शुदा बस्तियों की हालत

इन आयात में पहले तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि अगर आप के लोग आपको झुठला रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है, आप से पहले भी हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) को उन की उम्मतों ने झुठलाया है।

हज़रत नूह (अलै०) की कौम और कौमे आद (जो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की कौम थी) और कौमे समूद (जो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम थी) और हज़रत इब्राहीम (अलै०) और हज़रत लूत (अलै०) की कौम और मद्यन वाले लोग (जिन की तरफ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम भेजे गये थे)



उन सब ने अपने-अपने नबियों को झुठलाया और हज़रत मूसा (अलै०) को भी झुठलाया गया। उन हज़रात ने सब्र किया और दअवत का काम जारी रखा। आप भी सब्र कीजिए और अपना काम जारी रखिए। यह तो आप की ज़ात के विषय में है, अब रहा झुठलाने वाले का मामला तो उन्हें पिछली उम्मतों से सबक लेना चाहिए। उन उम्मतों में जो काफ़िर थे उन्हें अल्लाह तआला ने ढील दी फिर उन्हें पकड़ लिया।

यह पकड़ सख़्त अज़ाब की सूरत में थी। उन लोगों को पता चल गया कि अल्लाह का अज़ाब कैसा है? उन लोगों को उन के हालात मालूम हैं, उन से नसीहत हासिल करना चाहिए कि वह कैसे सख़्त अज़ाब में मुब्तिला हुए। इस के बाद इर्शाद फ़रमाया कि कितनी ही बस्तियाँ थीं जो ज़ालिम थीं और नाफ़रमानी पर तुली हुई थीं, हम ने उन्हें हलाक (ख़त्म) कर दिया, दुनिया में उन के निशान मौजूद हैं उन के घरों की दीवारें उन की छतों पर गिरी हुई हैं (क्योंकि पहले छतें गिरीं फिर ऊपर से दीवार गिरीं) और कितने ही कुएँ पड़े हैं जो बेकार हैं, किसी के कुछ काम नहीं आते और कितने ही वीरान महल पड़े हैं जिन्हें बनाने वालों ने मज़बूत बनाया था, आज वह किसी के काम में नहीं आते। उन के बनाने वाले और रहने वाले हलाक व बर्बाद हुए, आज कोई उन में झांकने वाला नहीं है।

मज़ीद फ़रमाया, क्या यह लोग दुनिया में नहीं घूमे फिरे? (बल्कि यह घूमे फिरे और बर्बाद शुदा बस्तियों से गुज़रे हैं और ऐसे महल्लात और कुंवे इन्होंने देखे हैं जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ (लेकिन नसीहत की निगाह से नहीं देखते) अगर नसीहत लेने का मिज़ाज होता तो उन को समझ में आ जाता और उन में जो नसीहत की बातें हैं, अगर उन्हें सुनने की तरह सुनते तो नसीहत हासिल कर लेते और सुनी हुई बातों को अनसुनी न करते। नसीहत की चीज़ें सामने हैं आँखों से देख रहे हैं लेकिन यह आँखों से देखना ज़ाया (बेकार) हो रहा है, अस्ल बात यह है कि दिल अन्धे बने हुए हैं इसीलिए यह न नसीहत लेते हैं, न हक़ कुबूल करते हैं।

फिर फ़रमाया कि वह आप से जल्दी अज़ाब आ जाने का तकाज़ा करते हैं और इसे जल्दी बुलाने के तकाज़े में अज़ाब का इन्कार करना मक्सूद है। मतलब उन का यह है कि अज़ाब आना है तो आ क्यों नहीं जाता? हम तकाज़ा कर रहे हैं फिर भी अज़ाब का जुहूर नहीं, तो इस का मतलब यह है कि यह यूँ ही बातें हैं अब तक न अज़ाब आया है न आएगा) इस के जवाब में फ़रमा दिया कि **وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ** (अल्लाह तआला वादा ख़िलाफ़ी न करेगा) अज़ाब ज़रूर आएगा मगर उसके आने के लिए जो वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दिया उसी के मुताबिक़ आएगा। अज़ाब आने में देर होना इस बात की दलील (Evidence) नहीं है कि आना ही नहीं है।

फिर फ़रमाया **وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ**

“और बिलाशुब्हा आप के रब के नज़दीक़ एक ऐसा दिन है जो तुम लोगों के शुमार के मुताबिक़ एक साल के बराबर होगा”।

इस में यह बताया कि कुफ़्र की सज़ा अगर किसी क़ौम को दुनिया में न दी गई तो क़ियामत तो सामने है ही, वह दिन बहुत सख़्त होगा। दोज़ख़ का अज़ाब तो बाद में होगा, इस से पहले क़ियामत के दिन

के अज़ाब और मुसीबत में जो मुक्तिला होंगे उसी को सोच लें और गौर कर लें, क़ियामत का दिन एक हज़ार साल का होगा और इतने लम्बे दिन में जो तक्लीफ़ होगी उस का अन्दाज़ा इसी से कर लें। नबी अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया, सूरज एक मील के फ़ासले पर होगा और उसकी गर्मी से इस क़दर पसीना होगा कि बाज़ का पसीना टख़्नों तक और बाज़ का कमर तक और बाज़ का मुँह तक होगा यानी पसीना में ऐसे खड़े होंगे जैसे कोई शख्स नहर में खड़ा हो या पसीना लगाम की तरह मुँह में घुस रहा होगा।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि फुकरा मालदारों से पाँच सौ साल पहले जन्मत में दाख़िल होंगे और यह पाँच सौ साल क़ियामत के दिन का आधा दिन होगा। (तिर्मिज़ी)

(आयत से मालूम हुआ कि क़ियामत का दिन एक हज़ार साल का होगा और सूर: मअरिज में फ़रमाया कि **فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ**

“उस दिन में जिस की मिक्दार पचास हज़ार साल होगी”।

इस से मालूम हुआ कि क़ियामत का दिन पचास हज़ार साल का होगा। दोनों बातों में बज़ाहिर फ़र्क मालूम होता है, लेकिन हकीकत में अन्तर नहीं है क्योंकि हाज़िरीन की हालत अलग-अलग होगी किसी को ऐसा मालूम होगा कि हिसाब-किताब में पचास हज़ार साल लगे और किसी को यह महसूस होगा कि एक हज़ार साल में हिसाब से फ़ारिग़ हो गया, हिसाब की शिद्दत और कमी के एतिबार से एक हज़ार और पचास हज़ार साल फ़रमाया।

‘इमाम बैहकी’ ने हज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) से नक्ल किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया गया है कि वह दिन तो बहुत ही लम्बा होगा जिस की मिक्दार पचास हज़ार साल होगी। (मक्सद यह था कि वह दिन कैसे कटेगा) आप ने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्जे में मेरी जान है, यह दिन मोमिन पर ऐसा हल्का कर दिया जाएगा कि एक फ़र्ज नमाज़ में जो वक़्त खर्च होता है उस से भी हल्का मालूम होगा।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से जब फी यौम **كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ** के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया कि अल्लाह तआला ही को इस का इल्म है, मैं जो बात नहीं जानता उसे बयान करना अच्छा नहीं समझता।

आख़िर में बतौर खुलासा यह फ़रमाया **وَكَايْنِ مِنْ قَرِيْبٍ** और कितनी बस्तियों को मैंने ढील दी इस हाल में कि वह जुल्म करने वाली थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ सब को लौट कर आना है, यानी दुनिया में जो मुक्तिला-ए-अज़ाब हुए वह अपनी जगह है। क़ियामत के दिन मेरी तरफ़ लौट कर आएँगे और क़ियामत के दिन उसके बाद जो कुफ़्र की सज़ा मिलेगी वह उस के अलावा होगी।

**49-51**

**قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۖ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝**

## ईमान और आमांले सालिहा पर मग़्फ़िरत

इन आयात में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि आप लोगों को बता दें कि मैं एक डराने वाला ही हूँ डराना और वाज़ेह तौर पर सब कुछ बयान कर देना यह मेरा काम है। मनवाना और हाथ पकड़ कर अमल करवाना मेरा काम नहीं और अज़ाब लाना भी मेरा काम नहीं। मुझ से अज़ाब लाने की जल्दी करना तुम्हारी हिमाक़त और जिहालत है, मेरी दअवत व तब्लीग़ पर जो भी ईमान ले आए और आमांले सालिहा में लगा रहे, उस के लिए मग़्फ़िरत और इज़्ज़त के रिज़्क की खुशख़बरी देता हूँ। मैं नज़ीर (चेतावनी देने वाला) भी हूँ और बशीर (खुशख़बरी देने वाला) भी हूँ। तुम अगर ईमान न लाए तो अपना अन्जाम सोच लो।

फिर फ़रमाया कि जो लोग आज़िज़ करने के लिए हमारी आयात (signs) में कोशिश करते हैं यानी हमारी आयात को भी कभी जादू कभी शेअर (कविता) बताते हैं और कभी कहते हैं यह पिछले लोगों की लिखी हुई बातें हैं और इस तरह की बातें करके ईमान वालों को मजबूर करना चाहते हैं, ऐसे लोग दोज़ख़ वाले हैं (क्योंकि हक़ आ जाने के बाद भी हक़ को कुबूल नहीं करते और बेकार की हुज्जतबाज़ी करते हैं।)

**52-57**

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۖ فَيَلْسَنُ  
اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحَكِّمُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي  
الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ  
بَعِيدٍ ۚ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْفِتَ لَهُ  
قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادٍ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ  
كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمٌ عَقِيمٌ ۚ أَلَمْ يَكُنْ  
يَوْمَ مِثْرَةَ يَثْرَبَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جُلَّتِ السَّعِيرُ ۚ وَالَّذِينَ  
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

## हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) की मुख़ालिफ़त

इन आयात में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी और फ़रमाया कि आप के मुख़ालिफ़ीन (Opponents) जो कुछ हरकतें करते हैं यह कोई नई बात नहीं है, आप से पहले भी अम्बिया-ए-किराम (अलै०) के साथ ऐसा ही होता रहा है, उन हज़रात ने जब लोगों के सामने अल्लाह की किताब पढ़ी तो शैतान ने उन की तिलावत के बारे में लोगों के दिलों में तरह-तरह के शक व और शुब्हात (Doubts) डाल दिये। जैसा कि सूर: अन्आम में फ़रमाया:-

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَاطِئِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ

“और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बना दिये जो इत्सानों में से भी हैं और जिन्नात

में से भी, यह धोका देने के लिए एक दूसरे की तरफ़ ऐसी बातें कहते हैं जो बज़ाहिर भली मालूम होती हैं।

सूर: अन्आम में फ़रमाया है **وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُخَوِّنَ إِلَىٰ أَوْلِيَٰهِمْ لِيَمْاَدِلُوْكُمْ**

“और बिलाशुब्हा शयातीन अपने दोस्तों की तरफ़ ऐसी चीज़ें डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें”।

शयातीन और उन के दोस्त अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आते, इस्लाम कुबूल नहीं करते और इस्लाम के बारे में शक व शुब्हात फैलाते हैं।

अल्लाह तआला की तरफ़ से जिन को हिदायत मिलना है और हिदायत पर जमे रहना है, वह लोग शैतान के डाले हुए शुक्क व शुब्हात के बावजूद दीन में और ज़्यादा मज़बूत हो जाते हैं।

अल्लाह तआला अपनी आयात को और ज़्यादा मज़बूत बना देता है और शैतानी शुक्क व शुब्हात से वह लोग प्रभावित होते हैं जिन के दिलों में मर्ज़ है यानी निफ़ाक़ है और जिन के दिल सख़्त हैं यानी वह काफ़िर जिन्होंने झूठे मुँह से भी इस्लाम कुबूल नहीं किया। शैतान जो वस्वसे डालता है यह उन लोगों की आज़्माइश का ज़रिया बन जाता है क्योंकि हक़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाने के बावजूद हक़ को कुबूल नहीं करते। जिन की तबीअत में हठधर्मी है उन के हठधर्मी को शैतानी वस्वसों से मज़बूती मिलती है जिस की वजह से वह शैतान ही के पीछे लगे रहते हैं और जिन हज़रात को इल्म दिया गया है वह यकीन करते हैं कि जो कुछ नबी ने पढ़ा वह अल्लाह की तरफ़ से है, हक़ है, सच है, रब की तरफ़ से है, अपने इस यकीन की वजह से ईमान पर और ज़्यादा मज़बूत हो जाते हैं और उन के दिल अल्लाह तआला की तरफ़ झुक जाते हैं। अहले ईमान पर अल्लाह तआला का यह इन्आम है कि वह उन्हें सीधे रास्ते पर रखता है।

इसी को फ़रमाया:-

**وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْيَقِيْنُ الْمَوْفَىٰ بِهِ** और काफ़िरों के बारे में फ़रमाया है:-

**وَالَّذِينَ كَفَرُوا فِي بُرْهَانٍ بِّنَآءٍ** और काफ़िर लोग इस बात की तरफ़ से जो नबी ने तिलावत की है शक में रहेंगे और उन का यह शक यहाँ तक रहेगा कि या तो उन पर क़ियामत आ जाए या क़ियामत से पहले उन पर ऐसे दिन का अज़ाब आ जाए जो उन के हक़ में बिल्कुल ही ख़ैर से ख़ाली हो, लेकिन उस वक़्त ईमान लाना फ़ायदेमन्द न होगा।

**الْمَلَكُ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُ** क़ियामत के दिन अल्लाह तआला ही की बादशाही होगी, अहले दुनिया की वक़्ती हुक्मते, सल्तनते ख़त्म हो चुकी होंगी, अल्लाह तआला ही दोनों जमाअतों (मोमिनीन और काफ़िरीन) के दर्मियान फैसला फ़रमा देगा। जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किये वह नेअमत के बाग़ों में होंगे और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की आयतों को झुठलाया उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब होगा, दुनिया में वह ईमान कुबूल कर के इज़्जत के साथ नहीं रहना चाहते और कुफ़्र में इज़्जत समझते हैं, लिहाज़ा उन्हें दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा जिस में बहुत ज़्यादा सख़्त अज़ाब है और बहुत बड़ी ज़िल्लत भी है।



## आयत नं० 58 से 70 तक

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَاتَلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝  
 لَيَذَلَّتْ لَهُمْ مَذَاجُهُ يَرْضَوْنَهُ ۚ وَ إِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوِّقَ بِهِ ثُمَّ يُغْنِ عَلَيْهِ  
 لَيُبْصِرْهُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُؤَلِّجُ النِّيلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِّجُ النَّهَارَ فِي النِّيلِ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ  
 بَصِيرٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ  
 اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ  
 وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلَكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَيُمْسِكُ  
 السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَكَرِيمٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُبَيِّنُكُمْ ثُمَّ  
 يُخَيِّكُمْ ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مُنْشَأً لَهُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُكَ فِي الْأَمْرِ ۚ وَأَدْعُ إِلَى رَبِّكَ ۚ  
 إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٌ ۝ وَإِنْ جَدَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْبَلُونَ ۝ اللَّهُ يُخَيِّمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ  
 تَخْتَلِفُونَ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

### अनुवाद-

(58) और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में घर-बार छोड़ा, फिर क़त्ल कर दिये गये या मर गये, अल्लाह उनको ज़रूर अच्छी रोज़ी देकर रहेगा; और बेशक अल्लाह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (59) 'वह' उन्हें ऐसी जगह दाख़िल करेगा, जिससे वह खुश हो जाएँगे, बेशक अल्लाह जानने वाला, हलीम (सहनशील) है। (60) यह है (उनका बदला) और जो व्यक्ति बदला ले, वैसा ही जैसा कि उसके साथ किया गया, फिर उस व्यक्ति पर ज़्यादती की जाए, तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा; बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला है। (61) यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में, और अल्लाह सुनता, देखता है; (62) यह इसलिए भी कि अल्लाह ही बरहक़ (सत्य) है और अल्लाह के सिवा जिन को यह पुकारते हैं, वे सब असत्य हैं और इस लिए कि अल्लाह ऊँची शान वाला, बड़ा है। (63) क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है, तो ज़मीन हरी भरी हो जाती है? बेशक अल्लाह बारीक (सूक्ष्म) चीज़ों का जानने वाला और ख़बर रखने वाला है। (64) 'उसी' का है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) और सब तअरीफ़ों के लायक़ है। (65) क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए काम में लगा रखा है? जो ज़मीन पर है, और नाव को भी, कि वह 'उसके' हुक्म से समुद्र में चलती हैं, और 'उसी' ने आसमान को धरती पर गिरने से रोक रखा है, मगर हाँ 'उसकी' इजाज़त हो तो बात दूसरी है; बेशक अल्लाह इन्सानों के हक़ में बड़ी नर्मी करने वाला मेहरबान है। (66) और 'वही' तो है जिसने तुमको ज़िन्दगी दी, फिर तुम्हें मौत देगा फिर तुमको ज़िन्दा करेगा; इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है। (67) हर उम्मत (समुदाय) के लिए 'हमने' इबादत का एक तरीक़ा निर्धारित किया है, जिस पर वे चल रही हैं, तो ये लोग इस मामले में आप से न झगड़ें, आप

अपने 'रब' की ओर बुलाते रहिए, बेशक आप सीधी राह पर हैं। (68) और अगर यह आप से झगड़ा करें तो कह दीजिए, “तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे (खूब) जानता है।” (69) अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच इस बात का फैसला कर देगा, जिन बातों में तुम मतभेद करते हो। (70) क्या तुम्हें मालूम नहीं! कि अल्लाह जानता है, जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, यह सब एक किताब में है? बेशक यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

## आयत नं० 58 से 70 तक की व्याख्या

58-60

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ لِيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِبِشْرٍ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيُصْرَفَهُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوءٌ غَفُورٌ ۝

### बेहतर रिज़्क का वादा

मक्का में मुसलमानों को तरह-तरह से तकलीफें दी जाती थीं, जिन की वजह से बहुत से सहाबा (रज़ि०) ने हब्शा हिजरत की और बहुत से हज़रात ने मदीना हिजरत की। खुद रसुलुल्लाह (सल्ल०) ने अपना वतन मक्का छोड़ कर मदीना मुनवरह हिजरत फरमाई। फिर हब्शा के मुहाजिरीन भी मदीना मुनवरह पहुँच गये। जब मदीना मुनवरह मर्कज़ बन गया तो बहुत से कबीले और बहुत से इलाकों के लोग भी मदीना मुनवरह आ गये, केवल अल्लाह के लिए वतन को छोड़ना वतन में जो कुछ माल व दौलत, घर ज़ायदाद, सामान हो उस सब को छोड़कर दूसरी जगह जाकर बस जाना इस में बड़ा इम्तिहान है, बाद में जो लोग विभिन्न इलाकों में मुसलमान हुए उन में से भी बहुत बड़ी संख्या में मुसलमानों को हिज़रत करनी पड़ी और इस का सिलसिला अब भी जारी है।

हिज़रत का सवाब बहुत ज़्यादा है और अगर हिजरत करने वाला क़त्ल हो जाए तो इस का और ज़्यादा सवाब होगा। अगर मक्तूल न हो, अपनी मौत मर जाए तो अल्लाह तआला के यहाँ उस की भी बहुत बड़ी कीमत है। इस को फरमाया:-

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में हिज़रत की, फिर मक्तूल हो गये या अपनी मौत मर गये अल्लाह तआला उन्हें ज़रूर उम्दह रिज़्क अता फरमाएगा और इस से जन्नत में खाने-पीने की चीज़ें और दूसरी नेअमतेँ मुराद हैं ۝ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

“और अल्लाह तआला सब देने वालों से बेहतर देने वाला है।”

لِيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ “अल्लाह तआला ऐसे लोगों को ऐसी जगह में दाख़िल फरमाएगा जिस से वह खुश होंगे।”



यानी उन्हें जन्मत नसीब फ़रमाएगा, जो उन्हें पसन्द होगी वहाँ हमेशा रहेंगे और वहाँ से कहीं जाना गवारा नहीं करेंगे। **وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ**

और अल्लाह तआला जानने वाला, हिल्म वाला है, वह सब के आ़माल को जानता है। अपने इल्म के मुताबिक़ बदला देगा और वह हलीम (सहनशील) भी है, सज़ा देने में जल्दी नहीं करता, वह हिक्मत के मुताबिक़ अपने निश्चित समय के अनुसार सज़ा देगा।

इस के बाद 'साहिबे रूहुल् मआनी' फ़रमाते हैं यह बात जो ऊपर बयान हुई मुकर्रर है। अल्लाह तआला ने जैसा फ़रमाया है वैसा ही होगा **وَمَنْ عَاقَبْ بِثُلٍّ مَّا عُوْقِبَ بِهِ** और जो शख्स उतना बदला ले जितना उसे तकलीफ़ पहुँचाई गई, फिर उस पर अगर ज़्यादती की जाए तो अल्लाह तआला ज़रूर उस की मदद फ़रमाएगा। इस आयत में ज़्यादती करने वाले से बदला लेने की इजाज़त मालूम हुई बशर्ते कि बदला लेने में बराबरी का ध्यान रखे यानी जितनी तकलीफ़ पहुँचाई गई हो उतनी ही तकलीफ़ पहुँचा सकता है। अगर किसी ने उतना ही बदला लिया जितना बदला लेने का अख़्तियार था, फिर उस पर उस शख्स की तरफ़ से ज़्यादती की गई जिस ने पहले ज़्यादती की शुरुआत की थी तो अल्लाह तआला ज़रूर उस शख्स की मदद फ़रमाएगा जिस पर दोबारा ज़्यादती की गई **إِنَّ اللَّهَ لَعَفُؤٌ غَفُورٌ**

(बिलाशुब्हा अल्लाह तआला माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है) अल्लाह तो माफ़ फ़रमा देता है लेकिन बन्दे बदला ले लेते हैं। अगर बन्दे भी माफ़ कर दिया करें तो अल्लाह तआला से उस का सवाब पाएँगे। जैसा कि सूर: शूरा में फ़रमाया-

**فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ** "सो जिस ने माफ़ किया और सुलह की तो उस का अज़्र अल्लाह पर है।"

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मज़लूम की बददुआ से बचो चाहे वह काफ़िर हो, इसलिए कि उसके (और अल्लाह के) दर्मियान पर्दा नहीं है।" (बुख़ारी)

**61-66**

**ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلَّكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۝**

## अल्लाह तआला की तख़लीक

मज़लूम को प्रभावी कर देना अल्लाह तआला की कुदूरते कामिला की वजह से है, जो कुछ सारी

दुनिया में है वह सब उसी का है। सारे इन्क़िलाबात ज़माने के हों या जगह के सब उसी की कुदरत व मर्जी और इरादे से होते हैं, वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल फ़रमाता है, वह हर बात को सुनता है सब कुछ देखता है। वह हक़ है उस के अलावा जो लोगों ने मअ़बूद बनाए हैं वह सब बातिल हैं, वह बड़ा है, वही आसमान से पानी उतारता है जिस से ज़मीन हरी-भरी हो जाती है, वह मेहरबान है और अपनी सारी मख़्लूक़ की ख़बर रखता है, वह बेनियाज़ और हर तरह की तअ़रीफ़ का हक़दार है।

अल्लाह तअ़ाला ने वह सब कुछ तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र फ़रमा दिये यानी तुम्हारे काम में लगा दिये। जो कुछ ज़मीन में है, कशियाँ उसी के हुक्म पर चलती हैं और यह आसमान जो तुम्हारी नज़र के सामने है जो अल्लाह की बड़ी मख़्लूक़ है, अल्लाह तअ़ाला ने उसे केवल अपनी कुदरत से रोक रखा है लिहाज़ा वह ज़मीन पर नहीं गिरता, अगर वह चाहे तो आसमान को गिरा सकता है लेकिन वह उसे अपनी कुदरत से थामे हुए है। अल्लाह तअ़ाला बहुत बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है, अगर वह आसमान को न रोके और आसमान ज़मीन पर गिर पड़े तो कोई ज़िन्दा नहीं बच सकता। यह अल्लाह तअ़ाला की मेहरबानी है कि काफ़िरों और फ़ासिकों को भी ज़िन्दा रखता है और सब के लिए ज़िन्दगी के अस्बाब फ़राहम करता है, उसी ने पहली बार ज़िन्दगी दी है, उस ज़िन्दगी के बाद वही मौत देता है, फिर ज़िन्दा फ़रमाएगा। इन्सान दुनिया के इन्क़िलाबात को देखता है, अल्लाह की नेअ़मतों को इस्तेमाल करता है लेकिन नाशुक्री करता है यह सब कुछ देखते हुए भी कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आता।

**67-70**

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعَنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَىٰ  
هُدًى مُّسْتَقِيمٌ ۝ وَإِنْ جَدَلْتَهُمْ فَقُلْ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ رَبِّمَا نَعْمَلُونَ ۝ اللَّهُ يَخْتَارُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ  
فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ  
ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

### हर उम्मत के लिए अ़िबादत के तरीके

मुशिरकीन और दूसरे काफ़िरों के जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) का और आप के बयान किये हुए अहक़ामे शरअ़िया पर एतिराज़ करते थे उन में यहूद व नसारा भी थे, यह लोग यूँ कहते थे कि यह अहक़ाम और अ़ामाल हम ने पहले किसी से नहीं सुने। आप की बताई हुई ऐसी चीज़ें भी हैं जिन का पुरानी उम्मतों के अ़ामाल व अहक़ाम में कोई ज़िक्र नहीं मिलता, यह झगड़े करते और इन्कार पर तुले रहे।

अल्लाह तअ़ाला ने उन लोगों को जवाब दे दिया لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ

(हम ने हर उम्मत के लिए अ़िबादत के तरीके मुक़र्रर कर दिये जिन के मुताबिक़ वह अ़मल करते थे।)

अल्लाह तअ़ाला सबसे बड़ा हाकिम और रब है, उसे अख़्तियार है कि जिस उम्मत को जो चाहे हुक्म फ़रमाए।

किसी मख़्लूक़ को कोई हक़ नहीं कि अल्लाह तअ़ाला पर एतिराज़ करे और यूँ कहे कि आख़िरी



नबी जो आए हैं उन की शरीअत में बहुत सी वह चीजें हैं जो पिछले नबियों की शरीअत में नहीं थीं।

हठधर्मियों का जवाब देने के बाद इर्शाद फ़रमाया **فَلَا يُنَازِعُكَ فِي الْأَمْرِ**

“सो वह इस अम्र में आप से झगड़ा न करें”।

खातिमुल् अम्बिया (सल्ल०) मुस्तक़िल शरीअत लेकर तशरीफ़ लाए। आप के तशरीफ़ लाने पर तमाम पिछले शरअी हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) हो गये, जो शख्स आप के इर्शाद पर एतिराज़ और झगड़ा करता है उस का एतिराज़ करना अल्लाह पर एतिराज़ है, जो कुफ़्र दर कुफ़्र है, यह लोग झगड़ेबाज़ी से दूर रहें।

**وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ**

(और आप उन को अपने रब की तरफ़ बुलाते रहिए बिलाशुब्हा आप हिदायत पर हैं जो सीधा रास्ता है।)

मतलब यह है कि आप अपने काम में लगे रहेंगे और हक़ की दअवत देते रहें कोई कुछ भी एतिराज़ करे किसी के एतिराज़ से मुतास्सिर (प्रभावित) न हों। अल्लाह की तरफ़ से आप को हिदायत वाला सीधा रास्ता बताया गया है और उस के हक़ होने की जो अल्लाह की तरफ़ से ज़मानत दी गई है वह आप के लिए काफी है।

**وَإِنْ جَدَلْتُمْ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ**

“और अगर यह लोग आप से झगड़ा करें तो आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तुम्हारे कामों को बेहतर जानता है”।

वह तुम्हारे आ़माल की सज़ा देगा मज़ीद फ़रमाया **اللَّهُ يَخْلُكُم بِبَيْنِكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ**  
(अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन तुम्हारे दर्मियान उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला फ़रमा देगा जिन में तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे।)

जब अल्लाह तआ़ला फ़ैसला फ़रमाएगा तो सब कुछ ज़ाहिर हो जाएगा, मगर उस वक़्त मुन्किरीन को हक़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के ज़रिये जो हुक्म भेजा है (يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ के तौर पर) यहीं इस दुनिया में तस्लीम कर लें तो यह ईमान लाना आख़िरत के दिन मुफ़ीद होगा।

**أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ**

“क्या तुझे मालूम नहीं जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह उस सब को जानता है?”

**إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ**

(बिलाशुब्हा यह किताब में लिखा हुआ है) यानी लौहे महफूज़ में दर्ज है **إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ**  
बिलाशुब्हा यह अल्लाह पर आसान है। ‘लौहे महफूज़’ में सब कुछ महफूज़ फ़रमाना उस के लिए ज़रा भी मुश्किल नहीं है। कोई मुन्किर और हठधर्मी यह न समझे कि इतनी ज़्यादा मख़्लूक के हालात एक ही किताब में कैसे समाएँगे।

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले जबकि उसका अ़र्श पानी पर था, मख़्लूक (सृष्टि) की तक्दीरें लिख दी थीं।” (मुस्लिम)

## आयत नं० 71 से 78 तक

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانٌ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا ثَلَاثَةٌ عَلَيْهِمْ  
 إِيمَانٌ بَيِّنَةٌ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْبُكَرَ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ أَفَأَنْتُمْ كُمْ  
 بِشَرٍّ مِنْ ذَلِكَ النِّارِ وَعَذَابُ اللَّهِ الَّذِي كَفَرُوا ۝ وَبَشِّرِ الْمَصِيرَ ۝ يَأْتِيهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٍ فَاسْتَعُوهَا ۝ إِنَّ الَّذِينَ  
 تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۝ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۝ ضَعُفَ  
 الظَّالِمُ وَالْمُظْلُومُ ۝ مَا قَدَّرَ اللَّهُ حَقَّ قَدْرِهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ  
 إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۝ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا الرُّكْعَا وَأَسْجُدُوا  
 وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۝ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ  
 حَرَجٍ ۝ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۝ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلِ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا  
 شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۝ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۝ وَالزُّكُوتَ وَاتُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۝ فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

### अनुवाद-

(71) यह लोग अल्लाह को छोड़ कर उन चीजों की पूजा करते हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और न उनके बारे में उनको कोई इल्म है; और इन जालिमों का कोई मदद्गार नहीं। (72) और जब उनको 'हमारी' साफ-साफ आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके चेहरों से नागवारी झलक रही होती है, जैसे वे उन लोगों पर हमला कर बैठेंगे जो 'हमारी' आयतें उनको सुनाते हैं, कह दीजिए, "मैं तुम्हें बताऊँ कि इससे बदतर चीज़ क्या है? और आग जिसको अल्लाह ने काफ़िरों से वादा कर रखा है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।" (73) ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, इसे ध्यान से सुनो! अल्लाह के सिवा जिनको तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब इकट्ठा क्यों न हो जाएँ; और अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले, तो वे उससे छुड़ा भी नहीं सकते, तालिब (मदद चाहने वाला) भी कमजोर और मतलूब भी (जिनसे मदद चाही)। (74) उन्होंने अल्लाह की जैसी क़दर करनी चाहिए थी नहीं की, बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) है। (75) अल्लाह फरिश्तों में से और इन्सानों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, देखने वाला है। (76) 'वह' जानता है जो कुछ उनके आगे है, और जो कुछ उनके पीछे है, और सभी मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। (77) ऐ ईमान वालो! रुकूअ़ करो, सज्दः करो, अपने 'रब' की इबादत करो, और भलाई के काम करो, ताकि तुम कामियाब हो। (78) और अल्लाह की राह में, जिहाद करो जैसा कि जिहाद करने का हक़ है, 'उसने' तुम्हें चुन लिया, और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी, (और) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (तुम्हारे लिए पसंद किया) है; 'उसने' तुम्हारा नाम पहले (की किताबों में) भी मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इसमें भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हों, और तुम लोगों पर गवाह हो, तो नमाज़ कायम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो, 'वही' तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, तो 'वह' क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मदद्गार।

## आयत नं० 71 से 78 तक की व्याख्या

**71-72**

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ  
مِنْ نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا ثُلِيَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ  
يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتَّبِعُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۖ قُلْ أَفَأَنْتُمْ كُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَلِكُمْ  
الْبَارِ ۖ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبَشِّرِ الْبَصِيرَ ۝

### काफिरों को कुर्आन भारी पड़ता है

इन आयात में मुशिरकीन की बातों को रद्द करने और साथ ही अज़ाब का ज़िक्र भी फ़रमाया, जो आखिरत में होगा। पहले तो यह फ़रमाया कि यह लोग उन चीज़ों की अ़िबादत करते हैं जिन के मअ़बूद (उपास्य) होने की अल्लाह तअ़ाला ने कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई और उन के पास कोई अक्ली दलील भी नहीं है जिस से शिर्क करना जायज़ मालूम होता हो, यह लोग शिर्क कर के ज़ालिम बने हुए हैं और इस जुल्म की सज़ा उन्हें मिल जाएगी। जब इन्हें अज़ाब होगा तो इनका कोई भी मदद्गार न होगा।

इस के बाद इशार्द फ़रमाया कि जब इन मुशिरकों को हमारी आयात सुनाई जाती हैं जिन के मज़ामीन ख़ूब वाज़ेह (स्पष्ट) होते हैं तो काफिरों के चेहरे बदल जाते हैं और चेहरों पर नागवारी महसूस होने लगती है। नागवारी की यह हालत है कि जो अहले ईमान इन्हें हमारी आयात सुनाते हैं उन पर हमला करने को तैयार हो जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि अभी हमला कर देंगे, उन की यह हालत बयान करने के बाद फ़रमाया कि ऐ नबी (सल्ल०)! आप इन से कह दें कि दुनिया में तुम्हें नागवारी महसूस होती है यह तो हल्की नागवारी है, इस से बढ़कर वह नागवारी होगी जो दोज़ख़ में दाख़िल होकर पेश आएगी। दोज़ख़ की आग का अज़ाब बहुत बड़ा अज़ाब है वह काफिरों को नागवार होगा लेकिन उस से छुट्कारे का कोई रास्ता न होगा। दुनिया में कुर्आन सुनकर जो नागवारी होती है उस का तो कुछ गुस्से वाला मुँह बनाकर कमी कर भी लेते हो, आखिरत में जो अज़ाब होगा न हल्का होगा, न ख़त्म होगा, दोज़ख़ की उस आग का अल्लाह तअ़ाला ने काफिरों से वादा फ़रमाया है यानी दुनिया में पहले से बता दिया कि कुफ़्र की सज़ा दोज़ख़ है, उस से कभी छुट्कारा न होगा।

وَبَشِّرِ الْبَصِيرَ (और दोज़ख़ बुरा ठिकाना है।)

**73-74**

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاستَمِعُوا لَهُ ۖ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا  
وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۖ ضَعُفَ الظَّالِمُ  
وَالْبَطُولُ ۝ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

## मअबूदों (उपास्यों) की बेबसी

अल्लाह को छोड़कर अिबादत करने वालों और उन के मअबूदों (उपास्यों) के बारे में अजीब बात बयान फरमाई और इस को एक मिसाल से फरमाया कि यह ऐसी बात है जिसे मुशिरकों के सामने बार-बार जिक्र करना चाहिए। मुशिरकों को सुनाएँ और उन से कहें कि खूब ध्यान से सुनो ताकि तुम्हें अपनी गुमराही का खूब पता चल जाए।

इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तअाला को छोड़ कर तुम जिन की अिबादत करते हो और जिन्हें मदद के लिए पुकारते हो यह एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, अगर सब मिलकर भी एक मक्खी पैदा करना चाहें तो बेबस होकर रह जाएँगे। अल्लाह तअाला इतनी बड़ी कायनात (Universe) का पैदा करने वाला है उस की अिबादत छोड़ कर कमजोर मख्लूक की अिबादत करना और कमजोर मख्लूक से मुरादें माँगना बहुत बड़ी बेवकूफी और बहुत दूर की गुमराही है।

अल्लाह तअाला के सिवा तुम ने जितने भी उपास्य बना रखे हैं यह मक्खी पैदा तो क्या करते अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो उस से छुड़ा भी नहीं सकते। साहिबे रुहुल् मअानी ने लिखा है कि मुशिरकीन बुतों के जिस्मों पर ज़ाफ़रान लगा देते थे और उन के सरो पर शहद मल देते थे, फिर दरवाज़ा बन्द कर के चले जाते और उधर खिड़कियों से मक्खी आ जाती थी जो शहद को खा जाती। (हिन्दुस्तान के मुशिरकों का अब भी यह तरीका है कि बुतों पर चढ़ावे चढ़ाते हैं, उन के सामने मिठाईयाँ रखते हैं, मक्खियों को मजे आ जाते हैं और यह बेजान उपास्य मामूली मक्खी तक के सामने कुछ भी नहीं) अपने बेबस मअबूदों की हालत खुद आँखों से देखते हैं, लेकिन उन के सामने सर झुकाने से बाज़ नहीं आते।

जो शख्स हज़रत अम्बिया-ए-किराम (अलै०) की दअवत से मुँह मोड़ेगा, वह उसी तरह बेबस मख्लूक के सामने ज़लील होगा जो लोग ख़ालिफ़ व मालिक के कायल नहीं होते और उस की ज़ात पाक को सज्दः नहीं करते, वह यूँ ही मारे-मारे फिरते हैं और अपने से भी ज़्यादा बेबस मख्लूक के सामने सज्दः करते हैं।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फरमाया, “अल्लाह तअाला फरमाता है कि उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो मेरी तरह तख़लीक़ (सृष्टि) करना चाहता है? अगर किसी में वाकई कुदूरत है तो वह एक ज़र्रह, या एक दाना, या एक जौ ही पैदा कर के दिखा दे।”

(बुख़ारी व मुस्लिम)

صُعَفَ الظَّالِمُ وَالْبَطُولُ (तालिब भी कमजोर और मतलूब भी कमजोर) साहिबे रुहुल् मअानी लिखते हैं कि तालिब से मुशिरक यानी ग़ैरुल्लाह की अिबादत करने वाला और मतलूब से मअबूद बातिल मुराद हैं और मतलब यह है कि जैसा उपासक वैसा ही उपास्य दोनों कमजोर हैं, मअबूद तो कमजोर इसलिए हैं कि वह मक्खी तक से मिठाई भी नहीं छुड़ा सकते और उसकी अिबादत करने वाला इसलिए कमजोर है कि अपनी अक्ल के पीछे लठ लिए फिरता है। मअबूद तो बेजान कमजोर है ही उस की

अ़िबादत करने वाला उस से बढ़कर कमज़ोर है। उस की कमज़ोरी अ़क़ल के एतिबार से है, वह ऐसी चीज़ से नफ़ा का उम्मीदवार है जो अपने चढ़ावे की चीज़ को मक्खी तक से नहीं छुड़ा सकता।

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ (लोगों ने अल्लाह तआला की वह तअज़ीम (सम्मान) न की जो तअज़ीम (सम्मान) उस की शान के लायक हो) अल्लाह तआला अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता है, ख़ालिक व मालिक है, तन्हा अ़िबादत का हक़दार है वह नफ़ा भी देता है और नुक़सान भी, वह हर चीज़ पर कादिर है, हर चीज़ को देखता है, हर ऊँची और हल्की से हल्की आवाज़ को सुनता है। तमाम बन्दों पर लाज़िम है कि उसे 'वहदहु लाशरीक' मानें और उस के तमाम गुणों पर ईमान लाएँ जो कुर्आन व हदीस में ज़िक्र हुए हैं। ऐसी ज़ात वहदहु लाशरीक को छोड़कर उस की पैदा की हुई मख़्लूक को मअबूद बना लेना अल्लाह तआला की तअज़ीम (सम्मान) से बहुत दूर और गुमराही है।

जब मुशिरकीन से मुसलमान कहते हैं कि तुम अपने पैदा करने वाले को नहीं मानते तो वह कहते हैं कि हम तो मानते हैं, झूठी ज़बान से अल्लाह तआला के मानने का दावा करते हैं, लेकिन साथ ही उस की अ़िबादत में दूसरों को शरीक ठहराते हैं। यह मानना उस की शान के लायक नहीं है कि उस की मख़्लूक (सृष्टि) में से खुदा बना लिये जाएँ और उन के लिए जानवर ज़बह किये जाएँ और उन को सज्द: किये जाएँ। यह अल्लाह तआला का मानना कहाँ हुआ और उस के शायाने शान उस की तअज़ीम (सम्मान) कहाँ हुई?

إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ (बिलाशुब्हा अल्लाह तआला बड़ी ताक़त वाला प्रभावी है) ऐसे ताक़तवर को छोड़कर कमज़ोर चीज़ की अ़िबादत करना जो उस की मख़्लूक है, बहुत बड़ी गुमराही है।

75

اللَّهُ يَضْطَرُّنِي مِنَ الْمَلَأِكَةِ رَسُولًاٍّ وَمِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ

## पैग़ाम पहुँचाने वालों का चुनाव

सारी मख़्लूक अल्लाह ही की मख़्लूक है। उस ने अपनी मख़्लूक में से जिसे चाहा जो मर्तब: दे दिया और जिसे चाहा किसी बड़े काम के लिए चुन लिया, रिसालत और नुबूव्वत बहुत बड़ा मर्तब: (पद) है। रसूल का काम यह है कि अल्लाह तआला के पैग़ाम और उस के अहक़ाम उस के बन्दों तक पहुँचाए। फ़रिशतों को अल्लाह तआला ने यह इज़्ज़त बख़्शी है कि उन के ज़रिये अपने नबियों और रसूलों की तरफ़ पैग़ाम भेजे और सहीफ़ें और किताबें नाज़िल फ़रमाई, जिन्हें इन्सानों में से मुन्तख़ब (Select) फ़रमाकर नुबूव्वत व रिसालत से नवाज़ा, फिर उन नबियों और रसूलों ने इन्सानों तक वह हुक्म पहुँचाए जो फ़रिशतों के ज़रिये अल्लाह तआला की तरफ़ से उन के पास पहुँचे, फ़रिश्ते भी अल्लाह तआला की मख़्लूक हैं उन में से जिन्हें चाहा पैग़म्बर बनाया और अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जिसे चाहा यह मर्तब: (पद) अता किया। किसी को हक़ नहीं पहुँचता कि यूँ सवाल करे कि फ़लाँ को क्यों नहीं बनाया, अल्लाह समीअ है, बसीर है, वह सब की बातें सुनता है सब के हालात देखता है, जो उस के फैसलों को कुबूल

करेगा उसे इस का भी इल्म है और जो उस के फैसलों पर एतिराज़ करेगा वह उस से भी बाख़बर है और जिस-जिस में अल्लाह तआला ने जो गुण रखे हैं उसे उस का भी पता है।

**76-77** يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا  
وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ ۖ فَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

वह जानता है जो कुछ उन के आगे और जो कुछ उन के पीछे है।

यानी उसे इन्सानों के अगले पिछले हालात व अमाल सब मालूम हैं (और **وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ** (और तमाम उमूर अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं) अल्लाह तआला को हर तरह का अख़्तियार है। दुनिया में जो कुछ होता है वह भी उसी की मर्जी और इरादे से होता है और आख़िरत में भी केवल उसी के इरादा और मर्जी के मुताबिक़ सब कुछ होगा और उसी का हुक्म चलेगा, सारे फैसले उसी के होंगे और हक़ होंगे।

**يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا** (ऐ ईमान वालों! रुकूअ करो और सज्दः करो) यानी नमाज़ पढ़ो। नमाज़ में क्योंकि रुकूअ सज्दः दो बड़े रुकन हैं, इसलिए उन का ख़ासतौर से हुक्म दिया। जिस में पूरी नमाज़ पढ़ने का हुक्म आ गया। **وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ** (और अपने रब की अ़िबादत करो) नमाज़ के अ़लावा जो दूसरी अ़िबादात हैं यह हुक्म उन सब अ़िबादात को शामिल हो गया। **وَافْعَلُوا الْخَيْرَ** (और ख़ैर के काम करो) यह तमाम नेक अ़माल के लिए है और जानी अ़िबादात और फ़रायज़, वाजिबात, अच्छे अ़ख़्लाक़ व आदाब, निजी और सामूहिक ज़िन्दगी के अ़हक़ाम सब को शामिल है **لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ** (ताकि तुम कामियाब हो जाओ) यानी तमाम बातों पर अ़मल करते हुए अल्लाह तआला से कामियाबी की उम्मीद रखो।

हज़रत इमाम शाफ़ई (रह०) के नज़्दीक यह सज्दः की आयत है और इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहिमा के नज़्दीक इस आयत पर सज्दः तिलावत नहीं है। दोनों लोगों के दलायल हदीस व फ़िक्ः में मौजूद हैं।

**78** وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادٍ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ  
إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِن قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا  
شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلَى  
وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

शब्द 'जिहाद' जुहद से बना है। अ़रबी में मेहनत व मशक्क़त और कोशिश को 'जुहद' कहा जाता है। यह शब्द अपने आम मअ़ना के एतिबार से हर उस मेहनत और कोशिश को कहते हैं जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए हो, जिहाद जो क़िताल यानी जंग करने के मअ़ने में मशहूर है वह भी इस मेहनत और कोशिश का एक हिस्सा है, मुसलमान अपने नफ़्स से जिहाद करता है यानी नफ़्स की नगवारियों के बावजूद नेक कामों में लगता है, गुनाहों को छोड़ता है। नफ़्स रोड़े अट्काता है और चाहता है कि जो भी अ़मल हो दुनियादारी के लिए हो, ज़ाती शोहरत और ऊँचा पद हासिल करने



और लोगों से तअरीफ़ कराने के लिए हो। इस मौके पर नफ़्स से जिहाद करना होता है, पूरी तरह उस के तकाज़ों को दबाकर सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिए जो काम किया जाए वह सब जिहाद में शामिल है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि **جَاهِدُوا الْمُشْرِكِينَ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ وَالسُّنَّةِ** अपने मालों और अपनी जानों और अपनी ज़बानों से मुश्रिकीन से जिहाद करो। इस से मालूम हुआ कि दुश्मनाने दीन को कमज़ोर करने और उन का ज़ोर तोड़ने के लिए मालों को खर्च करना अपनी जानों को उस काम में लगा देना और अपनी ज़बानों से मुक़ाबिला करना बहस और मुनाज़िरह (Debate) में हरा देना, दुश्मन को जवाब देना यह सब जिहाद है। दुश्मनाने दीन के मुक़ाबिले में किताबें लिखना, उन को छापना, उन को तम्बीह (चेतावनी) करना इस्लाम की दअवत पहुँचाना इस सब को **جَاهِدُوا فِي اللَّهِ** का उम्मी हुक्म शामिल है। इख़्लास के साथ जो शख्स जितना अपनी ताक़त के बक़्द करेगा उस का जिहाद **جهاد** का हक़दार हो जाएगा, कभी-कभी कोई भली बात कह देना ही बड़े दर्जे का अमल हो जाता है, इसीलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि **افضل الجهاد كلمة حق عند سلطان جائر** (सब जिहादों से अफ़ज़ल उस शख्स का जिहाद है जो ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ कलिमा कह दे। खुलासा यह है कि जो भी मोमिन अल्लाह की रज़ा के लिए और अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने के लिए जिस तरह की भी मेहनत करेगा वह जिहाद होगा। फिर मुख़्तलिफ़ हालात के एतिबार से पद भी मुख़्तलिफ़ (Different) हैं, हर शख्स अपनी ताक़त के एतिबार से इख़्लास के साथ अमाल में लगे।

**مُؤَاجَبَتِكُمْ** (अल्लाह तआला ने तुम्हें चुन लिया) पिछली तमाम उम्मतों पर अल्लाह तआला ने तुम्हें यानी उम्मते मुहम्मदिया **والتحية على صاحبها الصلوة** को फ़ज़ीलत दी, उन्हें सय्यदुल् अम्बिया (सल्ल०) की उम्मत होने का शर्फ़ हासिल हुआ, उन पर अल्लाह तआला ने कुर्आन नाज़िल फ़रमाया जिसे बाआसानी याद कर लेते हैं। दुनिया में सबसे आख़िर में आए और जन्नत में पहले दाख़िल होंगे।

‘सुन्नत तिमिज़ी’ में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आयत **كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ** की तिलावत फ़रमाई। फिर फ़रमाया कि तुम सत्तरवीं उम्मत को पूरा कर रहे हो तुम सब उम्मतों से बेहतर हो और अल्लाह के नज़्दीक सब उम्मतों से ज़्यादा मुकर्रम हो। (قال الترمذی هذا حديث حسن)

जब अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी फ़ज़ीलत दी, अब उस इन्आम व इकराम का तकाज़ा यह है कि अल्लाह तआला के दीन की ख़ूब बढ़-चढ़ कर ख़िद्मत करें।

## दीन में तंगी नहीं है

**وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمُ الدِّينَ مِنْ حَرَجٍ** (अल्लाह ने तुम पर तुम्हारे दीन में तंगी नहीं फ़रमाई) यह भी अल्लाह तआला का बहुत बड़ा इन्आम है कि उस ने उम्मते मुहम्मदिया को जो हुक्म अता फ़रमाए हैं उन में तंगी नहीं रखी, जिस को जो भी हुक्म दिया है वह उस के करने पर कुद्रत रखता है। अहक़ाम को पूरा करने में सहूलत है और हालात की रिआयत रखी गई है। ‘बनी इस्राईल’ पर जो सख़्तियाँ थीं

उन का जिक्र सूर: बकर: की आखिरी आयत رَبَّنَا وَلَا تَجْعَلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا جَعَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا में गुज़र चुका है वह इस उम्मत पर नहीं है। 'बनी इस्राईल' पर बहुत सी पाकीज़ा चीज़ें ह़राम थीं, माले ग़नीमत में से कुछ भी उन के लिए ह़लाल नहीं था, ज़कात में पूरी मालियत का चौथाई निकालना फ़र्ज़ था और कपड़ा धोकर पाक नहीं हो सकता था, उस के लिए नापाकी की जगह को काट देना पड़ता था और जब कोई शख्स छिप कर रात को गुनाह करता था तो सुबह को उस के दरवाज़े पर लिखा होता था कि उस ने फ़लों गुनाह किया है।

उम्मत मुहम्मदिया के लिए माले ग़नीमत भी ह़लाल है, ज़कात भी थोड़ी सी मिक्दार में फ़र्ज़ है यानी चाँद के एतिबार से निसाब पर एक साल गुज़र जाए तो खाने-पीने और खर्च करने से जो बचे उस का 1/40 फ़र्ज़ है और वह भी हर माल पर फ़र्ज़ नहीं है सिर्फ़ सोना चाँदी नक्द कैश और माले तिजारत पर फ़र्ज़ है, ज़मीन की पैदावार में से दस्वाँ या बीसवाँ हिस्सा फ़कीरों को देना फ़र्ज़ है। रमज़ानुल् मुबारक के रोज़े फ़र्ज़ हैं, लेकिन शरई मुसाफ़िर और मरीज़ को इजाज़त है कि रमज़ान में रोज़े न रखें और बाद में क़ज़ा रख लें और बहुत बूढ़े को इजाज़त है कि रोज़ों के बदले फ़िदया दे दें और ऐसे शख्स को बाद में क़ज़ा रखने का भी हुक्म नहीं है।

हज़ उस शख्स पर फ़र्ज़ है जो सवारी पर मक्का मुकर्रमा तक आने जाने की कुदरत (Capacity) रखता हो वह भी ज़िन्दगी में एक बार चाहे बहुत बड़ा मालदार ही क्यों न हो।

रात-दिन में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। उन में यह आसानी रखी गई है कि फ़ज़्र से जुह तक कोई नमाज़ फ़र्ज़ नहीं और जुह से अ़स तक कोई फ़र्ज़ नमाज़ नहीं है। यह पूरा वक़्त ह़लाल कमाई के लिए और सीखने सिखाने के लिए फ़ारिग़ है। फिर अ़िशा से फ़ज़्र तक कोई नमाज़ फ़र्ज़ नहीं है, यह वक़्त आराम व राहत और सोने के लिए है और जो फ़र्ज़ नमाज़ें हैं उन की तमाम रकअतें फ़र्ज़ और वित्र वाजिब और सुन्नन मुअक्किदह बहुत थोड़ी हैं। शरई सफ़र में फ़र्ज़ नमाज़ चार रकअतों के बदले दो रकअतें कर दी गई हैं और मरीज़ को अपनी ताक़त के मुताबिक़ नमाज़ अदा करने की इजाज़त दी गई है, खड़े होकर न पढ़ सके तो बैठ जाएँ और बैठ कर पढ़ने की ताक़त नहीं तो लेट कर पढ़ लें।

वुजू और गुस्ल कोई मुश्किल काम नहीं ठंडे पानी से वुजू करे या गर्म से करे। अगर पानी न हो तो या पानी तो हो, लेकिन मर्ज़ की वजह से इस्तेमाल पर कुदरत न हो तो गुस्ल व वुजू दोनों की जगह तयम्मुम कर लेना ही काफ़ी है।

ह़लाल जानवरों और पाकीज़ा चीज़ों के खाने की इजाज़त दी गई है। ख़बीस और नजिस चीज़ों और उन जानवरों के खाने की इजाज़त नहीं दी जिन के खाने से अख़्लाक़ पर बुरा असर पड़ता है, जिन आमाँल से शरीअते इस्लामिया ने मना फ़रमाया है, वही इन्सानों की भलाई के लिए है।

जिहाद आ़म हालत में फ़र्ज़ किफ़ाया है और अगर दुश्मन चढ़ आएँ तो फ़र्ज़ ऐन हो जाता है क्योंकि उस वक़्त अपनी जान और दूसरे मुसलमान मर्दों औरतों बच्चों की हिफ़ाज़त का मस्ला आ जाता है। फिर अगर जिहाद में शहीद हो जाए तो उस का इतना बड़ा मर्तब: है कि हज़ारों साल दुनिया की ज़िन्दगी की



भी उस के सामने कोई हकीकत नहीं है।

याद रहे कि दीन के आसान होने और दीन में तंगी न होने का यह मतलब नहीं है कि किसी अमल के करने में कुछ भी तक्लीफ न हो और सारी चीजें हलाल हों और जो जी चाहे कर लिया करें, अगर ऐसा होता तो न फ़ज्र की नमाज़ फ़र्ज़ होती जिस में उठना दुश्वार है, न अज़्र की नमाज़ फ़र्ज़ होती जो कारोबार का ख़ास वक़्त होता है और न हराम व हलाल की बातें होती बल्कि कोई हुक्म ही नाज़िल न होते। आसान होने का यह मतलब है कि कोई इस पर अमल करना चाहे तो कर सकता है, आजकल ऐसे बे-पढ़े लोग काबिल बन जाते हैं जो सूद, जुआँ हराम गोश्त खाने और गुनाहों को जायज़ कर रहे हैं और दलील यह देते हैं कि दीन में आसानी है, यह लोग इस्लाम के और मुसलमानों के दुश्मन हैं। जो लोग कुर्आन वाले और इस्लाम के सही जानने वाले हैं उन के पास यह जिहालत के मारे न खुद जाते हैं न मुसलमानों को जाने देते हैं, लोगों को समझ लेना चाहिए कि यह उन की हमदर्दी नहीं बल्कि उन की आख़िरत तबाह करने के काम में लगे हुए हैं।

(तुम अपने बाप इब्राहीम के मिल्लत की पैरवी करो) हज़रत इब्राहीम (अलै०) के बाद जितने भी नबी और रसूल आए वह उन सब के बाप हैं यानी उन की नस्ल और वंश में से हैं। अरब के लोग उन्हीं की वंश में से हैं, उन्हीं में से ख़ातिन्नबीय्यीन वल् मुरसलीन (सल्ल०) थे, चूँकि कुर्आन के पहले मुख़ातब (audience) अहले अरब ही थे, इसलिए यूँ फ़रमाया कि अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत की पैरवी करो। दूसरी आयत में है जो मिल्लते इब्राहीम की इत्तिब़ा का आया है उन में शब्द अबीकुम (तुम हमारे बाप) नहीं है।

हज़रत इब्राहीम (अलै०) के मिल्लत की सब से बड़ी दअवत तौहीद ही है जिस की तमाम अम्बिया-ए-किराम (अलै०) ने दअवत दी है, इसलिए कि उन्होंने बड़ी तक्लीफ़ें उठाई हैं और हज़रत इब्राहीम (अलै०) की शरीअत के बहुत से हुक्म शरीअते मुहम्मदिया में शामिल हैं।

## मुस्लिम-

هُوَ سَيِّدُكُمْ السَّيِّدِينَ وَمِنْ قَبْلُ (अल्लाह तआला ने तुम्हारा नाम पहले से मुसलमान रखा है यानी कुर्आन मजीद नाज़िल होने से पहले जो किताबें नाज़िल फ़रमाई, उन में अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुस्लिमीन रखा है وَفِي هَذَا) (और इस कुर्आन में भी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुस्लिमीन रखा।)

كما قال تعالى يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَبْغُوا إِلَهًا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

इस नाम और लक़ब पर जितना भी फ़ख़ करें कम है और इस लक़ब की लाज़ भी रखें यानी सच्चे पक्के फ़रमाँबरदार बन कर रहें, अल्लाह तआला के अहक़ाम को दिल व जान से मानें और खुशी व बशाशत के साथ हुक्मों की पैरवी करते रहें।

बाज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि سَيِّدُكُمْ السَّيِّدِينَ का मतलब यह है कि हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने तुम्हारे वजूद में आने से पहले ही तुम्हारा नाम 'मुस्लिमीन' रख दिया था, जैसा कि सूर: बक़र: में हज़रत इब्राहीम व इस्माईल (अलै०) दोनों की दुआ नक़ल फ़रमाते हुए फ़रमाया कि:-

وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا جَعَلْنَا قُرْآنًا مَجِيدًا فِي هَذِهِ وَأَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا شَدِيدًا لِّئَلَّا تُكُونَ لِلْإِنسَانِ لَهْزَةً يَوْمَ الْحِسَابِ (और चूंकि उन की यह दुआ कुर्आन मजीद में मौजूद है लिहाजा इस एतिबार से उन्होंने इस कुर्आन में भी तुम्हें मुसलमान का लकब दिया।

لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ

ताकि रसूल तुम्हारे लिए गवाह हों और रसूल और तुम लोगों के मुकाबिले में गवाह बनो।

इस का तअल्लुक **وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ** से भी हो सकता है और **هُوَ سَيُنَظِّرُ الْبَلِيَّةَ** से भी।

पहली सूरत में मतलब यह होगा कि अल्लाह की राह में जिहाद करो, जैसा जिहाद करने का हक है। तुम्हारा यह अमल तुम्हें उस मर्तबः पर पहुँचा देगा कि अल्लाह के आखिरी रसूल (सल्ल०) तुम्हारे लिये गवाह बनेंगे।

दूसरी सूरत का मतलब यह होगा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा नाम 'मुस्लिमीन' यानी फ़रमाँबरदार रखा पुरानी किताबों में भी और कुर्आन करीम में भी, जब इस नाम की क़द्र करोगे और अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार बन कर रहोगे तो इस काबिल होगे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तुम्हारे हक़ में गवाही देंगे।

सूरः बकरः में फ़रमाया **وَكَلَّاكُم مَّا جَعَلَكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّيُتَّقَ الرَّسُولَ وَيُتَّقَ اللَّهَ** (और इसी तरह हम ने तुम को एक ऐसी जमाअत बना दी जो एतिदाल (Balance) वाली है, ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाओ और रसूल तुम पर गवाह हो जाएँ)। हज़रत नूह और दूसरे अम्बिया-ए-किराम (अलै०) क़ियामत के दिन जब यह फ़रमाएँगे कि हम ने अपनी-अपनी उम्मतों को तौहीद की दअवत दी तो उन से गवाह तलब किये जाएँगे। इस पर वह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और उन की उम्मत को बतौर गवाह पेश करेंगे।

इस के बाद इस उम्मत से सवाल होगा कि इस बारे में आप लोग क्या कहते हैं? वह जवाब में कहेंगे कि हम पैगम्बरों के दावे की तस्दीक़ (पुष्टि) करते हैं।

उम्मत मुहम्मदिया से सवाल होगा कि तुम को इस मामले की क्या ख़बर है? वह जवाब में कहेंगे कि हमारे पास हमारे नबी (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और उन्होंने ख़बर दी कि तमाम पैगम्बरों ने अपनी उम्मत को **فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا** (सो नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो) हुक्म दिया।

यानी जब अल्लाह तआला ने तुम्हारा इतना बड़ा मर्तबः कर दिया कि मैदाने क़ियामत में हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) के गवाह बनोगे और तुम्हारी गवाही से पिछली उम्मतों पर हुज्जत कायम की जाएगी तो इस का तफ़ाज़ा यह है कि अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे बनो, उस के दीन को पूरी तरह अमल करो। इस दीन के जो अरकान हैं उन में से यह दो बड़े रुक्न हैं।

**وَأَعِظُوا بِاللَّهِ** (और मज़बूती के साथ अल्लाह को पकड़े रहो) यानी अल्लाह तआला पर ही भरोसा रखो। उसी से अपनी ज़रूरतों का सवाल करो, दुनिया व आखिरत की ख़ैर उसी से तलब करो

**هُوَ مَوْلَاكُمْ** (वह तुम्हारा मौला है सो अच्छा मौला है और अच्छा मदद करने वाला है) मौला का मअना है काम बनाने वाला। अहले ईमान काम बनाने वाला काम बनाता है, अहले ईमान के लिए उसी की मदद काफ़ी है। वह मोमिनीन का मौला है और काफ़ि़रों का कोई मौला नहीं।

كما قال تعالى ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَالْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ

(भाग-23)

सूर-ए-मूमिन्नू

(सूरः नं.23)

## तफ़्सीर सूर: मूमिनून

**नाम-** मूमिनून शब्द इस आयत **قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ** से लिया गया है। मुफ़्स्सिरीन ने लिखा है कि इस सूर: के शुरु में और आयात नं० (57) से (61) तक मोमिनों की अज़ीम सिफ़ात (characteristic) बयान की गई है, इसलिए इस का यह नाम रख दिया गया है।

### नाज़िल होने का ज़माना-

‘कुर्तुबी’ कहते हैं कि यह सूर: सब के नज़दीक मक्की है। ‘इमाम अहमद’ और ‘मुस्लिम’ ने ‘अब्दुल्लाह बिन अल् सायब’ से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने मक्का में सुबह की नमाज़ में सूरतुल् मूमिनून पढ़ी, यहाँ तक कि जब हज़रत मूसा व हज़रत हारून (अलै०) और हज़रत ईसा (अलै०) का ज़िक्र आया तो आप को खाँसी शुरु हो गई तो आप (सल्ल०) ने रुकूअ़ फ़रमा लिया। इस में हज़रत मूसा व हज़रत हारून (अलै०) का भी ज़िक्र आयत नं० (45) में आया है।



## आयत नं० 1 से 22 तक

\*

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝ إِلَّا عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝ فَمَنْ ابْتَغَى وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِمَتْلَبِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۝ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النَّطْفَةَ عَلَاقَةً ۝ فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً ۝ فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا ۝ فَكَسَوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۝ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝ ثُمَّ اكْتُمُ بَعْدَ ذَلِكَ لَيْلِيُونَ ۝ ثُمَّ أَكْمَرُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝ تَبْعَثُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ ۝ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۝ يَقْدَرُ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْآرِضِ ۝ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ۝ فَانْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ ۝ وَمِنْ تَحْتِهَا أَعْنََابٌ ۝ لَكُمْ فِيهَا أَنْهَارٌ ۝ كَثِيرَةٌ ۝ وَ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَ شَجَرَةٌ تَخْرُجُ مِنْ طُورٍ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدَّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْأَكْلِيلِ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۝ نَتَّبِعُكُمْ فِي بَطُونِهَا ۝ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ ۝ كَثِيرَةٌ ۝ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝

### अनुवाद-

① (बेशक) कामियाब हो गये ईमान वाले, ② जो अपनी नमाज़ में खुशूअ (विनम्रता) अपनाते हैं; ③ और जो व्यर्थ बातों से मुँह फेर लेते हैं ④ और जो ज़कात अदा करते हैं; ⑤ और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्त आंगों) की हिफाज़त (रक्षा) करते हैं, ⑥ सिवाय अपनी पत्नियों के, या बाँदियों के, जो उनकी सम्पत्ति हैं, तो उनके बारे में कोई मलामत नहीं। ⑦ तो जो इसके सिवा हूँढे, तो यही लोग हृद से बाहर निकलने वाले हैं। ⑧ और जो अपनी अमानतों और अहद (प्रतिज्ञा) का ध्यान रखते हैं; ⑨ और जो अपनी नमाज़ों की हिफाज़त (रक्षा) करते हैं; ⑩ यही लोग वारिस होने वाले हैं; ⑪ जो फिरदौस (जन्नत) के वारिस होंगे, उसमें वे हमेशा रहने वाले हैं। ⑫ और 'हमने' इन्सान को मिट्टी के जौहर (तत्व) से बनाया। ⑬ फिर 'हमने' उसे नुत्फ़ा (वीर्य) बना कर एक सुरक्षित जगह में रखा; ⑭ फिर 'हमने' उस नुत्फ़े (वीर्य) को जमे हुए खून का रूप दिया, फिर जमे हुए खून के टुकड़े को हड्डियों का रूप दिया, फिर हड्डियों पर गोشت चढ़ाया, फिर 'हमने' उसे एक नई सूरत में बना दिया, तो अल्लाह बड़ी बरकत वाला और सबसे अच्छा पैदा करने वाला है। ⑮ फिर इसके बाद तुम को निश्चित रूप से मरना है; ⑯ फिर निश्चय ही क़ियामत के दिन उठाए जाओगे। ⑰ और 'हमने' तुम्हारे ऊपर सात आसमान पैदा किये, और 'हम' मख़्लूक (सृष्टि) की ओर से गाफ़िल नहीं; ⑱ और 'हमने' ही एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उसको ज़मीन में ठहरा दिया, और 'हम' उस पर कादिर हैं कि उसको ग़ायब कर दें; ⑲ फिर 'हमने' उसके ज़रिये तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये; तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं और उसमें से तुम खाते भी हो; ⑳ और वह वृक्ष भी जो 'तूर-ए-सैना' (पर्वत) से निकलता है, जो तेल और खाने वालों के लिए सालन लिए हुए उगता है; ㉑ और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी बड़ा सबक है कि उनके पेटों में जो कुछ है उससे 'हम' तुम्हें (दूध) पिलाते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ायदे हैं और कुछ को तुम खाते भी हो, ㉒ और उन पर, और नावों पर तुम सवार होते हो।

## आयत नं० 1 से 22 तक की व्याख्या

1-11

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ الَّذِينَ يَرْتُونَ الْغُرُوسَ ۝ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

अल्लाह तआला ने पहली आयत से आयत नं० (11) तक मोमिनों की वह सिफात बयान की हैं, जिन के पाये जाने की सूरत में उन से फ़लाह और कामियाबी का वादा किया गया है और इस फ़लाह से मुराद जहन्नम से निजात और जन्नत का हासिल होना है। जैसा कि इस की सराहत आयत नं० (11) में आ चुकी है और सूर: आले इमरान आयत नं० (185) में भी अस्ल कामियाबी जहन्नम से निजात और जन्नत के हासिल होने को बताया गया है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है “فَمَنْ يُخْرِجْ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ” “जो शख्स जहन्नम से दूर कर के जन्नत में दाख़िल कर दिया गया वह कामियाब हो गया।”

**वह सिफात इस तरह हैं:-**

**पहली सिफ़त** यह है कि वह मोमिनीन अपनी नमाज़ों में खुशूअ अपनाते हैं यानी सुकून व इत्मिनान के साथ नमाज़ पढ़ते हैं, इधर-उधर नहीं झाँकते, उन के दिलों पर असर होता है और कभी-कभी अल्लाह के ख़ौफ़ से उन की आँखों से आँसू जारी होता है। नमाज़ में खुशूअ की इसी अहमियत के पेशेनज़र कुछ उल्मा ने इसे फ़र्ज़ करार दिया है।

अल्लाह तआला ने सूर: ताहा की आयत नं० (14) में फ़रमाया है “وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي” “मेरे नबी! मुझे याद करने के लिए नमाज़ कायम कीजिए।” इसलिए अगर कोई शख्स नमाज़ में खुशूअ नहीं अपनाता, बल्कि उस का दिल गाफ़िल रहता है तो उस ने नमाज़ का मक्सद पूरा नहीं किया।

**दूसरी सिफ़त** यह है कि वह हर ऐसी फ़िक्र और ऐसे कौल व अमल से मुँह मोड़ते हैं जिस की अल्लाह की तरफ़ से इजाज़त न हो। उन की ज़िन्दगी में बेहूदा बातों और नाजायज़ कामों के लिए फ़ुर्सत नहीं होती है।

**तीसरी सिफ़त** यह है कि वह अपने मालों की ज़कात अदा करते हैं। कुछ लोगों ने इस से शिर्क और दूसरे गुनाह से नफ़्स की पाकी मुराद ली है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: शम्स आयत नं० (9) में फ़रमाया है “فَاللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ” “जिस ने अपने नफ़्स को गुनाहों से पाक किया वह कामियाब हो गया।”

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ कहते हैं हो सकता है कि दोनों ही मअने मुराद हों, यानी वह लोग ज़कात अदा करते हैं और अपने नफ़्स को शिर्क और गुनाहों से पाक रखते हैं।

**चौथी** सिफ़त यह है कि वह अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं यानी वह न नंगे होते हैं और न ह़राम तरीकों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हैं।

इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह सिर्फ़ अपनी बीवियों और लौंडियों के पास जाते हैं, ऐसा करने से वह क़ाबिले मलामत नहीं हैं इसलिए कि अल्लाह ने उन के लिए उसे जायज़ करार दिया है और ज़िना की बुराई को वाज़ेह (Clear) करने के लिये अल्लाह तआला ने आगे फ़रमाया कि जो हलाल की हदों को फलांगने की कोशिश करेंगे वह अल्लाह की निगाह में ज़ालिम होंगे।

यहाँ क़ाबिले तवज्जोह बात यह है कि अल्लाह तआला ने बन्दे की फ़लाह व कामियाबी को शर्मगाह की हिफ़ाज़त के साथ शर्त लगाई है और उस की अहमियत ज़ाहिर करने के लिए कहा कि जो अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त नहीं करेगा कामियाब नहीं होगा और क़ाबिले मलामत होगा और ज़ालिमों में से हो जाएगा और पाकदामिनी की शदीद अहमियत के पेशेनज़र ही अल्लाह तआला ने मोमिनों को निगाहें नीची रखने और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने का हुक्म दिया है।

**पाँचवीं** सिफ़त यह है कि वह लोग अमानतों और वादों की हिफ़ाज़त करते हैं चाहे वह अमानतें अल्लाह की हों या बन्दों की और चाहे वह अहद (Agreement) अल्लाह के साथ हों या बन्दों के साथ।

**छठी** सिफ़त यह है कि वह लोग अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं यानी पाँचों फ़र्ज़ नमाज़ें वक़्त पर जमाअत से अदा करते हैं, पाकी की शर्तों को पूरा करते हैं, रुकूअ और सज्दे में जल्दबाज़ी नहीं करते और नमाज़ की सुन्नतों और आदाब का भी लिहाज़ रखते हैं।

यही वह छः सिफ़त हैं जो किसी इन्सान में पाई जाती हैं तो वह मोमिन कामिल होता है, कामियाब व कामरान बनता है और फिरदौस का हक्दार होता है। अल्लाह तआला हमें इन्हीं में से बनाए। आमीन

**12-14**

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ۖ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۚ ثُمَّ خَلَقْنَا  
النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَاقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكَسَوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا  
آخَرَ فَتَبَرَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝

“हमने इन्सान को मिट्टी के सत् से बनाया”।

(1) **नुत्फ़ा (Sperm)**– अर्थात एक बूंद (वीर्य) या पानी की थोड़ी सी मात्रा।

“फिर हमने इसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूंद के रूप में रख दिया।”

(2) **सुरक्षित जगह**– माँ के पेट में।

(3) **‘अल्क्ह’ (Alquah)**

यह अरबी में तीन अर्थों में प्रयोग होता है।

(क) रक्त का थक्का (Blood clot.) जैसा (ख) जोंक (Leech) जैसा

(ग) लट्की (Suspended) हुई वस्तु जैसा



“फिर इस बूँद को लोथड़े (अल्कह) का रूप दिया।”

**(क) रक्त का थक्का जैसा-**

इसी अवस्था में भ्रूण के विकास की बहुत सी शक्तें शुरू होती हैं। इसी अवस्था में रुधिर बंद वाहिनियों (Vessel) में आता है, जिस से यह अवस्था रक्त के थक्के से भरने के बाद जोंक जैसी होती है, जो गर्भाशय (Uterus) से जुड़ी होती है।

**(ख) जोंक जैसा**

**(ग) लट्की हुई वस्तु जैसा**

कुआन का शब्द ‘अल्कह’ विभिन्न रूप में बदलता है।

**(3) ‘मुज्गह’ (MUDGHAH) अर्थात गोشت का लोथड़ा या बोटी जैसा या चबाई हुई वस्तु जैसा-**

“फिर हमने इस लोथड़े को बोटी (मुज्गह) का रूप दिया।”

“फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाई।”

**(4) ‘इज़ाम’ (IDHAMAH)**

कठोर बोटी अर्थात कार्टिलेज और हड्डी जिसमें vertebral column का निर्माण होता है।

“फिर हमने उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया”

**(5) ‘कसौनलुइज़ाम लहमा’ (KASAUNALIDHAMA LAHMA)**

अर्थात हड्डियों पर मांस का चढ़ना।

“फिर हमने उसे एक दूसरा ही सृजन रूप देकर खड़ा किया, अतः बहुत ही बरकत वाला है सबसे उत्तम सृष्टि”

**(6) ‘ख़लक़न आख़र’ (Khalqan Akhar)**

अर्थात एक नया जीव बना दिया।

अल्लाह तआला ने अपनी कमाले कुदरत और हिक्मत साबित करने के लिए इन्सान की तज़लीक़ के विभिन्न दर्जे बयान किये। फ़रमाया कि हम ने इन्सान को मिट्टी के खुलासा (Extract) से पैदा किया है यानी मिट्टी पानी के साथ मिली तो पौधे पैदा हुए जिन्हें इन्सान ने खाया तो खून बना। उस खून से हम ने नुत्फ़ा पैदा किया और उस नुत्फ़े को रहम मादर (गर्भाशय) में पहुँचाया जहाँ जाकर अल्लाह के हुक्म से ठहर गया, फिर उसे सुख़ और जमे हुए खून में बदल दिया, फिर उसे गोشت का एक टुकड़ा बना दिया, फिर उस टुकड़े से हम ने इन्सानी जिस्म हड्डियाँ तैयार कीं और फिर उन पर गोشت की तहें जमा दीं, फिर दूसरे अज़ा (Organs) बनाए, अच्छी शक्ल व सूरत बनाई और एक इन्सान बनाकर रहम मादर (गर्भाशय) से बाहर ले आए। यह सब उस अल्लाह की अज़ीम कारीगरी है जो अज़ीम कुदरत व हिक्मत का मालिक है।



## 15-16

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَنَبِتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ۝

फिर इन्सान को अपनी निश्चित उम्र गुज़ार कर मर जाना है, लेकिन अल्लाह की हिकमत का तकाज़ा यह है कि जिस इन्सान को उसने इतने एहतिमाम से पैदा किया और ज़िन्दगी देकर अमल की मोहलत दी, उसे यूँ ही नष्ट न कर दे। इसीलिए क़ियामत के दिन अल्लाह तआला इन्सानों को क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा कर के हिसाब व जज़ा के लिए निकालेगा।

## 17

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝

कुर्आन करीम आमतौर पर इन्सानों की पैदाइश का ज़िक्र करने के बाद आसमानों और ज़मीन की पैदाइश का ज़िक्र करता है। अल्लाह तआला ने सूर: अल् मोमिन आयत नं० (57) में फ़रमाया है:-

لَخَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ “आसमानों और ज़मीन की पैदाइश यकीनन इन्सान की पैदाइश से बहुत बड़ा काम है” और इस से मक्सूद अल्लाह तआला के कमाले कुदरत का इज़हार होता है। चुनाँचे यहाँ भी इन्सान की तख़लीक़ का ज़िक्र करने के बाद इन्सान को मुख़ातब (Address) कर के फ़रमाया कि हम ने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाए हैं और हम अपनी मख़्लूक़ात से गाफ़िल नहीं हैं। हम देखते हैं सारे आलम का निज़ाम बेहतर तरीक़े से चल रहा है वरना फ़साद (Contradiction) बरपा हो जाता और हर चीज़ तबाह व बर्बाद हो जाती।

## 18

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَدِيرُونَ ۝

पानी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेअमत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम आसमान से इन्सानों की ज़रूरत के मुताबिक़ बारिश नाज़िल करते हैं, फिर उसे ज़मीन की तहों में ठहरा देते हैं और ज़रूरत व हिकमत के अनुसार चश्मों के ज़रिये उसे ऊपर लाते हैं।

अल्लाह तआला ने सूर: जुमर आयत नं० (21) में फ़रमाया:-

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ “क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह तआला आसमान से पानी उतारता है और उसे ज़मीन की तहों में पहुँचा देता है।” अल्लाह तआला ने आगे फ़रमाया और हम जब चाहें इस पानी को ख़त्म कर दें।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि यह अज़ीम नेअमत इन्सानों से तकाज़ा करती है कि वह अल्लाह तआला का हमेशा शुक्र अदा करते रहें और डरते रहें कि अगर शुक्र अदा न किया तो नेअमत छीनी जा सकती है।

## 19

فَأَنشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّن تَجِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُم فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

इस में फ़रमाया कि हम ने इस पानी के ज़रिये तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात पैदा किये, जिन में मुख़्तलिफ़ (Different) जायक़े और रंग के फल पैदा होते हैं और उन फलों में से बाज़ खाना के तौर पर इस्तेमाल होते हैं।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि खजूर और अंगूर का ज़िक्र बतौर खास इसलिए किया गया है कि अहले हुज्जाज दूसरे फलों की बनिस्बत इन दोनों फलों को ज़्यादा जानते थे। दूसरे मुमालिक में अल्लाह ने दूसरे बहुत से लज़ीज़ (स्वादिष्ट) व लाभदायक फल पैदा किये हैं, जिन का शुक्र अदा करने से उन मुल्कों के रहने वाले बेबस हैं।

**20**

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ وَصِیْعٌ لِلذَّكَايِنِ ۝

इस में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने एक और दरख़्त (पेड़) पैदा किया है जो तूर सीना के इर्द-गिर्द के इलाकों में कसरत से होता है यानी जैतून का दरख़्त, जिस से तेल निकलता है और जिसे खाने वाले सालन के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

**21-22**

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسَبِّحُكُمْ فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝  
وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفَالِكِ تَحْمِلُونَ ۝

चौपाये भी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेअमत हैं और इन में इन्सान के लिए बड़ी नसीहत की बाते हैं। इन्सान की बनावट, उस की ज़िन्दगी और उस से हासिल होने वाले मुनाफ़ेअ में ग़ौर व फ़िक्र कर के अल्लाह तआला के वजूद और उस की वहदानियत पर ईमान ले आता है।

गोबर और खून के दर्मियान से गुज़रता हुआ जो दूध जानवरों के पेट से निकलता है इन्सान उसे पीता है, उस का गोश्त खाता है, उन के बाल और ऊन से जो कपड़े तैयार होते हैं उन्हें पहनता है, उन पर सवारी करता है और उन पर बोझ लादकर दूर-दराज़ शहरों तक जाने के लिए सूखे रास्ते तय करता है और समुद्री रास्तों के लिए कश्तियाँ इस्तेमाल करता है।

यह तमाम नेअमतें इन्सानों से तकाज़ा (Demand) करती हैं कि वह अल्लाह का शुक्र अदा करें, उस के एहसानात को याद करें, उसी की अ़िबादत करें और उसके साथ अ़िबादत में किसी को शरीक न बनाएँ।



## आयत नं० 23 से 41 तक

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَتُوبُوا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَائِكَةً ۖ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأُولَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَبَرِّضُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَوَحَيْنَا إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا ۖ وَقَارَ السَّيُورُ ۖ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُخْرَقُونَ ۝ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَعَكَ عَلَى الْفُلِ ۖ قَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَقَالَ رَبِّ انزِلْنِي مُنزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَائِكَةُ مِنَ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ وَالْحَيَوَةُ الدُّنْيَا ۖ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ ۖ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۝ وَلَبِثَ أَطْعَمْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ ۖ إِنَّكُمْ إِذَا لَخَسِرُونَ ۝ أَلَيْسَ لَكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ مُخْرَجُونَ ۝ هِيَ هَاتِ هَاتِ لِمَا تُوعَدُونَ ۝ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ يُفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْحَبَنَّ لِلَّذِينَ ۝ فَلَاخَذَهُمْ الصِّبْغَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُلَامًا ۖ فَبَعَدَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

### अनुवाद-

(23) और 'हमने' नूह को उनकी कौम की ओर भेजा, तो उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी कौम! 'अल्लाह की इबादत करो,' उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं, क्या तुम डरते नहीं?' (24) तो उनकी कौम के सरदार, जिन्होंने इन्कार किया था, कहने लगे कि "यह तुम ही जैसा एक इन्सान है, तुम पर यह बड़ापन जमाना चाहता है", और अगर अल्लाह को मंजूर होता तो फरिश्तों को भेजता, हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप-दादों से कभी नहीं सुनी; (25) यह तो बस एक जुनूनी आदमी है, तो कुछ दिन इसके बारे में इन्तिजार करो।" (26) (नूह ने दुआ की) कहा, "ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर, इस बात पर कि इन्होंने मुझे झुठलाया।" (27) तब 'हमने' उनकी ओर वय्य की कि "हमारी आँखों के सामने और हमारी वय्य के अनुसार नाव बनाइए और फिर जब 'हमारा' हुक्म आ जाए, और तूफान उमड़ पड़े, तो हर तरह के नर और मादा का जोड़ा उसमें रख लीजिए, और अपने घर वालों को साथ ले लीजिए, और जिन के विरुद्ध पहले ही फैसला हो चुका है, और ज़ालिमों के बारे में मुझ से कुछ न कहिए, वे तो डूब कर ही रहेंगे; (28) फिर जब आप नाव पर सवार हो जाएँ, और आप के साथी भी तो कहिए 'तअरीफ है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया, (29) और कह दीजिए 'ऐ मेरे 'रब' मुझे बरकत के साथ उतार, और 'तू' सबसे अच्छा उतारने वाला है।" (30) बेशक इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं, और आजमाइश तो 'हम' करते ही हैं। (31) फिर 'हमने' इनके बाद दूसरे गिरोह को पैदा किया, (32) और उनमें 'हमने', खुद उन्हीं में से एक रसूल भेजा (उसने कहा) कि "अल्लाह ही की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?" (33) और उनकी कौम में जो सरदार थे, जिन्होंने इन्कार किया, और आखिरत के मिलने को झुठलाया, और 'हमने' उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश भी दे रखा था, वे बोले, "यह तो बस तुम्हारे

ही तरह के एक आदमी हैं, जिस तरह का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो तुम पीते हो, उसी तरह का यह भी पीता है, (34) और अगर तुम अपने ही जैसे आदमी (बशर) के पीछे चल पड़े, तो तुम घाटे में रहोगे। (35) क्या यह तुम से वादा करता है, “जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियों का रूप हो जाओगे तो तुम निकाले जाओगे?” (36) दूर की बात है, बहुत दूर, की जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है? (37) ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की ज़िन्दगी है, जिसमें हम मरते और जीते हैं, और हमें हरगिज़ उठाया न जाएगा, (38) यह तो एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह के नाम पर झूठ गढ़ा है, और ‘हम’ इसकी बात को हरगिज़ मानने वाले नहीं।” (39) उन्होंने कहा, “ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर, जो इन्होंने मुझे झुठलाया है।” (40) कहा, “जल्द ही यह लोग शर्मिन्दा हो कर रहेंगे।” (41) तो सच ही हुआ कि एक सख्त आवाज़ ने आ पकड़ा और ‘हमने’ उन को कूड़ा-करकट बना डाला; और फिटकार हो, ऐसे ज़ालिमों पर।

### आयत नं० 23 से 41 तक की व्याख्या

23-25

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَتُوبُوا لِعِبَادَةِ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنَ الْإِغْيَارِ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَقَالَ الْكَافِرُونَ ۝ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَائِكَةً مِّنَ السَّمَاءِ سَاجِدًا ۚ يَهْدِي إِلَىٰ آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ ۖ بِهِ جِنَّةٌ ۖ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

तौहीद के दलायल (Evidence) बयान करने के बाद नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली के लिए अब कुछ अम्बिया व रसूलों के वाकिआत बयान किये जा रहे हैं, जिन की बेअसत (Birth) का मक़सद इन्सानों को तौहीद की दअवत देना था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, “ऐ हमारे रसूल! हम ने आप से पहले नूह को नबी बनाकर भेजा था, तो उन की कौम ने उन को झुठलाया जिस तरह आज आप की कौम आप के साथ कर रही है। उन्होंने अल्लाह के हुक्मों की मुख़लिफ़त (विरोध) की और उस के साथ ग़ैरों को शरीक ठहराया तो अल्लाह ने उन से अपना और अपने रसूल का इन्तिक़ाम ले लिया।

हज़रत नूह (अलै०) ने अपनी कौम से कहा कि तुम लोग सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत करो और उस के साथ अ़िबादत में किसी को शरीक न बनाओ, इसलिए कि उस के सिवा कोई तुम्हारा मअबूद (उपास्य) नहीं है, तुम जो उस के साथ दूसरों की भी अ़िबादत करते हो तो क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि उस का ग़ज़ब तुम पर नाज़िल हो जाए?

यह सुनकर सरदाराने कौम ने जिन्होंने कुफ़्र की राह अख़्तियार की थी, अपनी कौम से मुख़ातब होकर कहा कि यह (नूह) तो तुम्हारे ही जैसा एक इन्सान है, चाहता है कि तुम्हारा सरदार बन जाए इसलिए नुबूवत का झूठा दावा कर रहा है और कहता है कि मुझ पर आसमान से वह्य (Revelation) आती है। अगर अल्लाह अपना पैग़म्बर भेजना चाहता तो आसमान से फ़रिशतों को भेजता। हम ने यह नहीं सुना है कि पिछली कौमों के पास अल्लाह ने किसी इन्सान को अपना नबी बना कर भेजा हो। सच तो यह है कि इस आदमी को जुनून हो गया है, इसलिए लोगों! हमें इन्तिज़ार करना चाहिए मुम्किन है

कि इस का जुनून खत्म हो जाए या इस को मौत आ जाए और निजात मिल जाए।

‘राजी’ लिखते हैं कि यह पाँचों शुब्हात जिन का मुशिरकीन-ए-कौम ने इज्हार किया था, इतने घटिया थे कि अल्लाह तआला ने इन्हें बयान कर देना काफी समझा क्योंकि हर अक्लमन्द इन्सान इसे सुनते ही कौमे नूह की बीमार अक्ल पर मातम करने लगेगा, इसलिए कि इन्सानों का नबी इन्सान ही होना चाहिए और नबी को अपनी बड़ाई भी साबित करनी चाहिए ताकि लोग उस की इत्तिबअ (पैरवी) करें और कौमे नूह ने अगर नहीं सुना था कि अल्लाह ने पिछली कौमों के पास उन्हीं में से अम्बिया भेजे थे, तो यह इस बात की दलील नहीं है कि हकीकत में उन के पास अम्बिया नहीं आए थे और यह जो कहा कि इसे जुनून हो गया है तो यह सरासर झूठ था, इसलिए कि वह जानते थे कि नूह एक अच्छे इन्सान हैं।

26-29

قَالَ رَبِّ الظُّمُرُ بِمَا كَذَّبُوا ۖ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلَ ۖ فَأَعْيَيْنَا وَوَحَيْنَا ۖ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا  
وَفَارَ التَّوْرُ ۖ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ  
مِنْهُمْ ۚ وَلَا تَحْطِئْ فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ۖ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ  
مُغْرَقُونَ ۖ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَنَا مِنْ  
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلَ مُبَارَكًا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۖ

हज़रत नूह (अलै०) लगभग साढ़े नौ सौ साल तक तब्लीग करते रहे और इस राह की हर तकलीफ बर्दाश्त करते रहे, लेकिन उन के कौम की सरकशी बढ़ती गई यहाँ तक कि उन्होंने अपने रब से मदद माँगी और कहा ऐ मेरे रब! अब तू मेरी मदद कर और इन की ओर से मुझे बराबर झुठलाने की वजह से इन्हें तबाह कर दे, तो अल्लाह तआला ने उन से कहा कि आप मेरी निगरानी और मेरी तअलीमात के मुताबिक कश्ती बनाइए और जब तन्नूर से पानी उबलने लगे तो तमाम हैवानात के नर व मादा के जोड़े, पेड़-पौधे और फलों के दरख्त कश्ती में रख लीजिए और अपने अहल व अयाल को सवार कर लीजिए सिवाय उन के जिन का हलाक हो जाना मुक़्दर हो चुका है (जैसे उन का बेटा और उन की बीवी) और अज़ाब देखने के बाद आप को उन ज़ालिमों पर रहम न आ जाए और सोचने न लगिये कि अब अगर अज़ाब टल जाए तो शायद यह लोग ईमान ले आएँ इसलिए कि मेरा यह फैसला है कि इन्हें कुफ़ व सरकशी की हालत में ही डूब जाना है और जब आप और दूसरे अहले ईमान कश्ती पर सवार हो जाएँ तो अल्लाह का शुक्र कीजिए कि





30

**31-41**

फिर उन्होंने बात का रुख बदलते हुए कहा, इस की यह बात कितनी तअज्जुब खेज़ (Strange) है कि जब तुम लोग मरकर मिट्टी बन जाओगे और सिर्फ तुम्हारी हड्डियाँ रह जाएँगी तो दोबारा तुम्हें ज़िन्दा किया जाएगा। यह बड़ी अनहोनी और अक्ल से दूर की बात है। हकीकत यह है कि हमारी दुनियावी

ज़िन्दगी जब ख़त्म हो जाएगी तो हम दोबारा नहीं उठाए जाएँगे। यह आदमी अल्लाह के बारे में झूठ बोल रहा है कि अल्लाह तुम्हें दोबारा ज़िन्दा करेगा और तुम्हारे आमाँल का हिसाब लेकर तुम्हें बदला देगा, इसलिए हम उस पर ईमान नहीं लाएँगे।

जब उन्होंने अपने पैग़म्बर को खुले आम झुठलाया और अपने इन्कार का एलान कर दिया और अल्लाह के नबी उन की ओर से बिल्कुल नाउम्मीद हो गये तो आख़िर में उन्होंने अपने रब से मदद माँगी और कहा, ऐ मेरे रब! अब तू मेरी मदद फ़रमा और उन की ओर से मुझे बराबर झुठलाने की वजह से उन्हें हलाक कर दे, तो अल्लाह तआला ने उन से कहा कि कुछ ही देर के बाद यह लोग अपने इन्कार व सरकशी पर पश्चाताप (Regret) करेंगे, चुनाँचे एक सख़्त चीख़ ने उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लिया, जिस के वह हक्दर थे।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि बज़ाहिर जो अज़ाब उन पर मुसल्लत किया गया था, वह फ़रिश्ते की चीख़ और सख़्त ठंडी और तूफ़ानी हवा थी। उस अज़ाब ने उन्हें ऐसा तबाह किया कि वह सैलाब के कीड़े-मकोड़ों की तरह हकीर चीज़ बन गये और ज़ालिमों का उन के कुफ़्र व हठधर्मी और अल्लाह के रसूल की मुख़ालिफ़त की वजह से ऐसा सफ़ाया हो गया कि दुनिया उन के बदतरीन वजूद से पाक हो गई।



## आयत नं० 42 से 62 तक

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۖ مَا تَلْقَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۖ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رَسُولَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۖ فَبَعْدَ الْقَوْمِ الْيُومِنُونَ ۖ ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَإِخَاهُ هَارُونَ ۖ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ۖ فَقَالُوا إِنَّا نَحْنُ الْبَشَرُ مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّا عِبُدُونَ ۖ فَكَذَّبُواهُمْ فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۖ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةً آيَةً ۖ وَأَوَيْنَهُمَا إِلَىٰ رَبِّوَيْدٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۖ يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۖ وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّةٌ وَاحِدَةٌ ۖ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۖ فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلٌّ حِزْبٌ بِمَا لَدَيْهِمْ فِرْحُونٌ ۖ فَذَرَهُمْ فِي عَمْرِهِمْ حَتَّىٰ جِئْنَا ۖ أَيْخُسُونَ أَنَا نُهْدِيهِمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَنِينَ ۖ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْغَيْرَاتِ ۖ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۖ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَاوَا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۖ أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْحَيَرَاتِ ۖ وَهُمْ لَهَا شَاقِقُونَ ۖ وَلَا تَكُنْ فَنَفْسًا إِلَّا وَسْعَهَا وَلَكِنَّا كَتَبْنَا بِإِلْحَاقٍ وَهُمْ لَا يَتْلُمُونَ ۖ

### अनुवाद-

(42) फिर 'हमने' उनके बाद दूसरी नस्लों को पैदा किया। (43) कोई उम्मत (गिरोह) न तो अपने निर्धारित समय से आगे बढ़ सकती है, और न पीछे हट सकती है। (44) फिर 'हमने' लगातार अपने रसूल भेजे, जब भी-कभी किसी गिरोह में से कोई रसूल उनके पास पहुँचा तो उसे झुठलाते रहे, तो 'हम' भी एक के पीछे एक को लगाते चले गये; और उनकी कहानियाँ बन कर रह गई फिटकार हो उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते। (45) फिर 'हमने' मूसा और उनके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ भेजा; (46) फिर और और उसके सरदारों की ओर तो उन लोगों ने घमंड किया, और वे सरकश लोग थे। (47) तो वे कहने लगे, "क्या हम अपने ही जैसे दो आदमियों की बात मान लें, और उनकी कौम के लोग हमारे गुलाम हैं?" (48) तो उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया तो तबाह हो जाने वालों में शामिल हो गये। (49) और 'हमने' मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग राह पा सकें। (50) और मरयम के बेटे और उनकी माँ को 'हमने' एक निशानी बनाया, और 'हमने' उन दोनों को एक ऊँची जगह पर जो ठहरने के लायक थी, और जहाँ स्रोत जारी था पनाह दी थी। (51) "ऐ रसूलों पाकीज़ा चीज़ें खाओ, और अच्छा काम करो, जो कुछ आप लोग करते हैं उसे 'मैं' जानता हूँ; (52) और यह सब तुम्हारी जमाअतें, एक ही दिन पर हैं, और 'मैं' तुम्हारा 'रब' हूँ, तो 'मुझसे' डरते रहो।" (53) तो उन्होंने खुद अपने मामले (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर डाला, हर गिरोह उसी पर खुश है, जो उसके पास है। (54) तो उन्हें एक समय तक उनको गफलत में डूबे रहने दें। (55) क्या यह लोग समझते हैं कि 'हम' जो उनकी माल, और सन्तान से मदद किये जा रहे हैं; (56) तो यह उनके लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं,) बल्कि उन्हें इसका एहसास ही नहीं है। (57) बेशक जो लोग अपने 'रब' के भय से काँपते रहते हैं, (58) और जो अपने 'रब' की आयतों पर ईमान रखते हैं, (59) और जो अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराते, (60) और जो दे सकते हैं देते हैं और (हाल यह होता है कि) दिल उनके काँप रहे होते हैं, कि उन्हें अपने रब की ओर



लौट कर जाना है; (61) यही वे लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए आगे लपकते हैं। (62) और 'हम' किसी व्यक्ति की ताकत से बढ़कर उस पर बोझ नहीं डालते, और 'हमारे' पास किताब (आमाल नामा) है, जो सच-सच बतलाती है, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

## आयत नं० 42 से 62 तक की व्याख्या

**42-43**

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۖ مَا سَبِقُ لَنَا أُمَّةٌ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝

अल्लाह तआला ने कौमे हूद की हलाकत के बाद दूसरी कौमों को पैदा किया। कुछ मुफ़स्सरीन का ख़याल है कि यहाँ **قُرُونًا آخَرِينَ** से मुराद हज़रत सालेह, हज़रत लूत और हज़रत शुऐब (अलै०) की कौमें हैं और कुछ कहते हैं कि इन से मुराद 'बनी इस्राईल' हैं।

अल्लाह तआला ने अपने कमाले इल्म व कुदरत के इज़हार के लिए फ़रमाया कि जिस काफ़िर कौम की हलाकत व बर्बादी का जो वक़्त मुक़द्दर है, उस में जल्दी व देरी नहीं हो सकती है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: यूनस आयत नं० (49) में फ़रमाया है:-

إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ "जब उन का वक़्त मुक़र्रर आ जाएगा तो एक घड़ी न वह पीछे हो सकेंगे और न आगे।"

**44**

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَاءً ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رُسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۖ فَبِعَذَابِنَا يَوْمُئِذٍ ۝

इस में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह कौमों के पास अम्बिया व रसूलों को लगातार भेजता रहा, लेकिन उन में से अक्सर लोग उन अम्बिया को झुठलाते रहे जिस के नतीजे में हम उन्हें हलाक करते रहे, यहाँ तक कि दुनिया उन के वजूद से पाक हो गई और आने वाली नस्लों के लिए सिर्फ़ उन के किस्से रह गये।

**45-49**

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ۖ فَقَالُوا الْاٰثِمُونَ لِشَرِّينَ مِثْلَنَا ۚ وَقَوْمُهُمْ لَنَا عِذُوْنَ ۖ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسٰى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝

इन कौमों के दुनिया से रुख़सत हो जाने के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै०) और उन के भाई हारून (अलै०) को नौ निशानियाँ देकर जिन में हज़रत मूसा (अलै०) के असा (लाठी) की हैसियत एक चमत्कार की सी थी, फिरऔन और फिरऔनियों को तौहीद की दअवत देने के लिए भेजा, लेकिन घमण्ड में आकर उन लोगों ने हज़रत मूसा व हारून की दअवत को कुबूल करने से इन्कार कर दिया।

अल्लाह तआला ने उन के बारे में फ़रमाया कि उन का घमण्ड हृद से पार कर गया था, उन्होंने कहा कि क्या हम अपने ही जैसे इन्सानों पर ईमान ले आएँ? और वह भी ऐसे दो इन्सान हैं जिन की

कौम हमेशा फरमाँबरदार रही है, चुनाँचे उन्होंने दोनों नबियों को झुठला दिया और उन की दअवते तौहीद को ठुकरा दिया तो अल्लाह तआला ने उन्हें पानी में डुबो दिया।

आयत नं० (49) में अल्लाह तआला ने फरमाया कि फिरऔन और फिरऔनियों की हलाकत और उन की गुलामी से बनी इस्राईल की आज़ादी के बाद हम ने हज़रत मूसा (अलै०) को तौरेत अता की, ताकि बनी इस्राईल उस पर अमल कर के रज़ा-ए-इलाही की राह पर चलते रहें।

**50**

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَإِمَّةً آيَةً وَأَوْيَيْنَهُمَا إِلَىٰ رَبِّوَةٍ ذَاتِ قُرْأٍ وَمَعْنٍ ۝

हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै०) की पैदाइश भी अल्लाह तआला के अज़ीम कुदरत की निशानी है कि बिना बाप के नुत्फे (Spermatoza) के उन की माँ मरयम (अलै०) के रहम (गर्भाश्य) में उन का हमल (गर्भ) करार पा गया। इन्सानी कुदरत से बालातर यह वाकिआ इन्सान को दअवत देता है कि वह अल्लाह तआला पर ईमान ले आएँ और सिर्फ उसी की अ़िबादत करें।

‘साहिबे फ़तुह बयान’ लिखते हैं कि उस ज़माने के यहूदी बादशाह ने हज़रत ईसा (अलै०) और उन की माँ को क़त्ल करना चाहा तो मरयम उन को लेकर फिलिस्तीन शहर (रमल्ला) में जाकर छुप गई और बारह साल तक वहाँ छुपी रहीं। यह शहर ऊँचाई पर स्थित है और उस के इर्द-गिर्द की ज़मीन हरी-भरी है और उस में पानी का चश्मा जारी है। जब यहूदी बादशाह ने दोनों माँ और बेटे के खिलाफ़ साज़िश की तो अल्लाह तआला ने इल्हाम के ज़रिए उन्हें (रमल्ला) चले जाने का हुक्म दिया, ताकि इस हरी-भरी फ़िज़ा में दोनों ज़िन्दगी बसर करें।

**51**

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

हज़रत ईसा (अलै०) और उन की माँ मरयम (अलै०) को अल्लाह तआला ने (रमल्ला) शहर में जो नेअमते दीं उन का ज़िक्र आ जाने के बाद यह बताना चाहा कि अल्लाह तआला ने तमाम अम्बिया-ए-किराम को हलाल रिज़क का हुक्म दिया और कहा कि शर्त यह है कि हलाल अल्लाह की तमाम नेअमते खाइए और उन से फ़ायदा उठाइए। चुनाँचे सभी अम्बिया ने हलाल चीज़ों का इन्तिज़ाम किया। कहा जाता है कि मरयम (अलै०) धागा बटती थीं और उस की आमदनी से दोनों माँ-बेटे का गुज़र बसर होता था।

हज़रत दाऊद (अलै०) अपने हाथ की कमाई खाते थे और सहीह हदीस से साबित है कि नबी करीम (सल्ल०) मामूली रक़म के बदले अहले मक्का की बकरियाँ चराते थे।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इस आयत में उन ईसाई राहिबों का रद्द करना मक्सूद है जो अच्छी चीज़ों के खाने को तक्वा के खिलाफ़ समझते थे। इसी तरह अल्लाह तआला ने सभी नबियों को नेक अमल करने का हुक्म दिया क्योंकि दुनिया व आख़िरत की कामियाबी और नेकबख़्ती का दारोमदार नेक कामों पर ही है।

**52-53**

وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۝ فَتَقَطُّوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۚ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

अल्लाह तआला ने तमाम अम्बिया-ए-किराम को यह भी कहा कि आप सब का दीन एक ही है, वह यह कि लोगों को एक अल्लाह की अ़िबादत की तरफ़ बुलाइए। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: आले इमरान आयत नं० (19) में फ़रमाया है **إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ** “बेशक अल्लाह के नज़्दीक दीन सिर्फ़ इस्लाम है” और तमाम इन्सानों का रब भी सिर्फ़ मैं हूँ। इसलिए अगर उन्होंने मेरी वह्दानियत का इन्कार कर के मेरे साथ ग़ैरों को अ़िबादत में शरीक ठहराया, तो फिर उन्हें मेरे अज़ाब का इन्तिज़ार करना चाहिए।

**54**

**فَذَرَهُمْ فِي عَمْرِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝**

अल्लाह तआला ने तो तमाम अम्बिया को एक ही दीन देकर भेजा, जिस का ज़िक्र ऊपर आ चुका है, लेकिन उन अम्बिया के गुज़र जाने के बाद लोग बहुत सी जमाअतों और फ़िर्कों (Groups) में बंट गये। पहले तो यहूद व नसारा बने, फिर हर एक के अलग-अलग कई फ़िर्के बन गये।

इसी तरह जिन लोगों ने शिर्क की राह अख़्तियार की, उन की भी मुख़्तलिफ़ (Different) जमाअतें बनती चली गई और हर जमाअत खुश होती रही कि वही हक़ पर है और दूसरी जमाअतें गुमराह हैं।

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को सम्बोधित कर के फ़रमाया कि आप उन्हें ज़लालत व गुमराही में यूँ ही छोड़ दीजिए उन के अन्दर हक़ को कुबूल करने की सलाहियत ही नहीं है और अगर उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं होता तो तंग दिल न होइए क्योंकि अल्लाह के यहाँ हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्रर है।

**55-56**

**أَيُّسَبُّونَ أَتْمَانَهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَنِينَ ۝ لَسَارِعَ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ بَل لَا يَشْعُرُونَ ۝**

इस आयत में फ़रमाया कि हम जो काफ़िरों के माल और औलाद में बढ़ावा दे रहे हैं, तो क्या वह इस खुशफ़हमी में पड़े हुए हैं कि हम उन्हें ख़ैरात व बरकात से नवाज़ने में जल्दी कर रहे हैं? ऐसी कोई बात नहीं है बल्कि वह जानवरों की तरह अक्ल व शुऊर से अ़ारी हैं, इसीलिए तो वह समझ नहीं पा रहे हैं कि हकीकत में उन के लिए रस्सी ढीली की गई है ताकि गुनाहों की तरफ़ मज़ीद बढ़ते चले जाएँ।

**57-60**

**إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ يَأْتِي رَبَّهُمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ يَرْجُونَ لَا يُشْرِكُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝**

काफ़िरों के बरअक्स अल्लाह की ओर से ख़ैरात व बरकात के हक़दार वह होते हैं जो इन चार सिफ़ात के मालिक होते हैं।

पहली सिफ़त यह है कि वह अल्लाह के अज़ाब के ख़ौफ़ से काँपते रहते हैं। दूसरी सिफ़त यह है कि वह अपने रब की आयतों और दलीलों पर ईमान रखते हैं। तीसरी यह कि वह अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं बनाते और चौथी यह कि वह अल्लाह की राह में माल खर्च करते हुए डरते रहते हैं कि मालूम नहीं सद्क़: कुबूल होगा या नहीं और उन्हें यह फ़िक्र लगी रहती है कि क़ियामत के दिन उन्हें अल्लाह के अज़ाब से कैसे छुट्कारा मिलेगा।

61

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْحَزَنِ لَهُمْ سُيُوفٌ ۝

इस आयत में कहा गया है कि यही लोग हकीकत में हर खैर व बरकत की तरफ बढ़ने वाले हैं। 'तिर्मिजी' 'इब्ने माजा' और 'हाकिम' वगैरहम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है, उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा कि अल्लाह तआला के कौल **وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ** का मतलब यह है कि आदमी चोरी करे, ज़िना करे और शराब पिये, मगर इस के बावजूद अल्लाह से डरता रहे तो आप ने फ़रमाया, नहीं बल्कि यह है कि आदमी रोज़ रखे, सद्क़ करे, नमाज़ पढ़े और इस के बावजूद अल्लाह से डरे कि ऐसा न हो कि उस का अमल काबिले कुबूल न हो।

62

وَلَا تُكَلِّفْ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

नेक आमाल की तरफ़ पहल करने वालों का जब ज़िक्र आया तो यह बताना मुनासिब हुआ कि अल्लाह तआला बन्दों को उन की ताक़त से ज़्यादा का मुकल्लफ़ नहीं बनाता, इन्सान अपनी वुस्अत (capacity) भर कोशिश कर के अपने रब की रज़ा और उस की जन्नत को पा सकता है।

इस के बाद अल्लाह ने भलाई की तरफ़ बढ़ने वालों को बताया कि उन के आमाल एक ऐसी किताब में लिखे जा रहे हैं जो किसी भी नेकी या बदी को बेकार नहीं होने देते हैं, इसीलिए उन के साथ बेइन्साफी नहीं होगी, बल्कि उन नेकियों का उन्हें पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा।

जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: जासिया की आयत नं० (29) में फ़रमाया:-

هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنبِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

“यह है हमारी किताब जो तुम्हारे बारे में सच-सच बोल रही है, हम तुम्हारे आमाल लिखवा रहे थे”।



## आयत नं० 63 से 90 तक

بَلْ قَالُوا هُمْ فِي غَمَرَةٍ مِنْ هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عِلْمُونَ ﴿٦٣﴾ حَتَّى إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمُ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿٦٤﴾ لَئِنْ لَمْ يَنْقُصْهُمْ مِمَّا لَهُمْ لَنَكْتُمَنَّ عَنْ يَمِينِكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُونَ ﴿٦٥﴾ مُسْتَكْبِرِينَ ۖ بِهِ سَبْعًا تَهْجَرُونَ ﴿٦٦﴾ أَفَلَمْ يَذْكُرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٧﴾ أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٨﴾ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَكَثُرُوهُمْ بِالْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٦٩﴾ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧٠﴾ أَمْ سَأَلْتَهُمْ خَزَايَا فَخَرَّجَ رَبُّكَ خَيْرًا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧١﴾ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيِّبُونَ ﴿٧٣﴾ وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلْجُودُ فِي طَغْيَانِهِم يَعْبَهُونَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَعَاذُوا رَبَّهُمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا فَتَنَّا عَلَيْهِمُ آبَاءَ ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْسَوُونَ ﴿٧٦﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٩﴾ بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨٠﴾ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّنَا لَسَبْعُونَ يَوْمًا ۖ لَقَدْ وَعَدْنَا كُنْ وَابْأَوْنَا هَذَا مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨١﴾ قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٢﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿٨٥﴾ بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

### अनुवाद-

(63) बल्कि उनके दिल इसकी ओर से ग़फ़लत में (फंसे हुए) हैं, और उनके सिवा उनके कुछ और भी काम हैं जो यह करते रहते हैं। (64) यहाँ तक कि जब 'हम' इनके खुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे, तो यह तिलमिला उठेंगे। (65) (कहा जाएगा), "आज तिलमिलाओ नहीं, तुम्हें 'हमारी' ओर से कोई मदद मिलने वाली नहीं।" (66) 'मेरी' आयतें तुमको पढ़-पढ़ कर सुनाई जाती थीं, तो तुम उल्टे पाँव भागते थे। (67) खुद को बड़ा समझते, और एक कहानी कहने वाला ठहरा कर छोड़ देते।" (68) तो क्या उन लोगों ने इस कलाम (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, या यह कि उनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गयी, जो उनके पहले बाप-दादा के पास न आई थी? (69) या इन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए इसका इन्कार कर रहे हैं, (70) या यह कहते हैं, "इसको जुनून हो गया है;" बल्कि इनका रसूल हक़ बात लेकर इनके पास आया है, और इनमें से बहुतों को सच बात बुरी लगती है। (71) और अगर हक़ (अल्लाह) उनकी खुशी पर चलने लगता, तो आसमान और ज़मीन, और जो कुछ उनके बीच में है टूट-फूट गये होते, बल्कि 'हमने' उनको उनकी नसीहत पहुँचाई, तो वे अपनी नसीहत से मुँह फेरते हैं। (72) क्या आप उनसे कुछ रोज़ी माँगते हैं? रोज़ी तो आप के 'रब' की (दी हुई) सबसे बेहतर है, और 'वही' सब रोज़ी देने वालों से बेहतर है। (73) और आप तो उनको सीधी राह की ओर बुला रहे हैं, (74) और बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, वह राह से बहकने वाले हैं। (75) और अगर 'हम' उन पर मेहरबानी कर दें और उन्हें जो तकलीफें पहुँच रही हैं उसे दूर कर दें, तो भी यह अपनी गुमराही में भटकते हुए जमे रहेंगे। (76) और 'हमने' उन्हें अज़ाब में पकड़ा, तब भी वे अपने 'रब' के आगे न तो झुके और न वे गिड़गिड़ाए; (77) यहाँ तक कि जब



‘हम’ उन पर सख्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो वे निराश हो कर रह जाएँगे। (78) और ‘वही’ है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, (मगर) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो; (79) और ‘वही’ तो है जिसने तुम को ज़मीन पर फैला रखा है, और तुम लोग ‘उसी’ के पास इकट्ठा किये जाओगे। (80) और ‘वही’ है जो जिलाता है और मारता है, और ‘उसी’ के बस में है रात और दिन का उलट-फेर, तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते; (81) (नहीं,) बल्कि यह लोग ऐसी ही बात कहते हैं जैसे पहले के (काफ़िर) कहते आए हैं। (82) कहते हैं, “जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे? (83) यह वादा तो हमसे और हमारे बड़ों से पहले से होता आया है, यह तो केवल अगलों की बे सनद बातें हैं।” (84) कह दीजिए, “ज़मीन और उस पर जो कुछ है, (सब) किसका है? बताओ अगर तुम जानते हो?” (85) वे बोल पड़ेंगे, “अल्लाह का,” कह दीजिए, “फिर तुम सोचते क्यों नहीं?” (86) कह दीजिए, “सातों आसमान का मालिक, और आलीशान अर्श (महान राजासन) का मालिक कौन है?” (87) वे कहेंगे “सब अल्लाह ही का है” कह दीजिए, “फिर डरते क्यों नहीं?” (88) कह दीजिए, “वह कौन है? जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, और वह पनाह देता है, और कोई ‘उसके’ मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो?” (89) वह ज़रूर यही कहेंगे कि यह सब अल्लाह ही का है,” कह दीजिए, “फिर तुम पर कहाँ से जादू चल जाता है?” (90) (नहीं,) बल्कि हम उनके पास हक़ (सत्य) लेकर आए हैं, और बेशक यह झूठे हैं।

### आयत नं० 63 से 90 तक की व्याख्या

**63**

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمَرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا غَالُونَ

इन आयतों में भलाई की तरफ़ बढ़ने वाले मोमिनों की जो सिफ़ात बयान की गई हैं उन से यह कुफ़र कोसों दूर हैं और उन के दिलों पर गुफ़लत तारी है और कुफ़र व शिर्क के अलावा भी उन्होंने बड़े गुनाहों का अमल किया है, जो उन के नाम-ए-आमाल में हैं और यह सारे आमाल उन्हें जहन्नम तक पहुँचा कर रहेंगे।

**64-67**

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿٦٤﴾ لَئِن جُرَّوْا الْيَوْمَ لَنُكَفِّرَنَّ ﴿٦٥﴾ وَلَئِن تُضْرَبُوا لَنُضْزِرَنَّ ﴿٦٦﴾ قُلْ كَذَٰلِكَ قَالَ رَبِّي لِقَوْمٍ كَفَرُوا ۖ فَتُحْصَرُونَ ﴿٦٧﴾

जिन कुफ़ारे कुरैश को अल्लाह तआला ने माल व औलाद से नवाज़ा था और जिन की रस्सी ढीली की थी ताकि कुफ़र व सरकशी में तेज़ी के साथ आगे बढ़ते चले जाएँ। जब मैदाने बद्र में अल्लाह ने उन की गिरफ़्त की और कैद व बन्द और क़त्ल की सूरत में अज़ाब उन पर मुसल्लत हो गया या जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दुआ की तो अल्लाह ने उन्हें कहतसाली (सूखा) में मुब्तिला (Involve) कर दिया, फिर चीख़ व पुकार करने लगे।

उस वक़्त अल्लाह तआला ने उन से कहा कि अब चीख़ व पुकार का कोई फ़ायदा नहीं है, अब हमारे अज़ाब से निजात दिलाने के लिए तुम्हारा कोई मदद्गार नहीं है। जब मेरी आयतें तुम्हारे सामने

पढ़ी जाती थीं और कहा जाता था कि इन से नसीहत हासिल करो तो तुम मुँह मोड़ कर चल देते थे और इस घमण्ड में मुब्तिला (Involve) थे कि तुम लोग हरम वाले हो तो भला तुम पर कौन ग़ालिब आ सकता है? और कअबः के आस-पास अपनी रातों की मजलिस में कुर्आन में ऐब निकालते थे, कभी उसे जादू बताते थे तो कभी शायर ताकि लोग उस पर ईमान न लाएँ।

कुछ मुफ़स्सरीन ने अज़ाब से मुराद 'अज़ाबे आख़िरत' लिया है और कहा है कि काफ़िरो की चीख व पुकार क़ियामत के दिन अज़ाबे जहन्नम की वजह से होगी, मैदाने बद्र में या मक्का में क़हत साली की वजह से काफ़िरो ने चीख व पुकार नहीं की थी।

**68-70** أَفَلَمْ يَذْكُرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ۚ أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۚ  
أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ وَكَثُرَهُمُ لِلْحَقِّ كِرْهُونَ ۚ

नबी करीम (सल्ल०) की बेअसत और कुर्आन करीम के जुज़ूल के बाद अहले कुरैश का कुफ़्र पर इस्तरा क़बिले हैरत काम था, इसीलिए अल्लाह तआला ने उन की गिरिफ़्त की और कहा कि उन्होंने कुर्आन में सच्चे दिल से ग़ौर व फ़िक्र क्यों नहीं किया? ताकि यह बात उन पर खुल जाती। यह अल्लाह की सच्ची किताब है और जिन पर नाज़िल हुई है वह उस के सच्चे रसूल हैं और उन की यह बात भी क़बिले मलामत (निन्दनीय) है कि उन्होंने कुर्आन और अक़ीदा-ए-तौहीद का इसलिए इन्कार कर दिया कि यह उन के पूर्वजों का अक़ीदा नहीं था और उन की यह बात भी क़बिले हैरत है कि जिस आदमी को उन्होंने बचपन से जाना पहचाना, ज़िन्दगी भर जिस की सच्चाई व अमानत की गवाही दी, जब उन्होंने इस्लाम की दअवत पेश की तो उन के साथ ऐसा करने लगे जैसे पहले से उन के अख़्लाक व किरदार को जानते ही नहीं थे और इस से भी धिनौनी बात उन का यह आरोप लगाना है कि मुहम्मद को जुनून हो गया है, हालांकि तमाम कुफ़ारे मक्का जानते थे कि मुहम्मद (सल्ल०) उन में सब से ज़्यादा अक्लमन्द और सन्जीदा (Serious) आदमी हैं।

इसीलिए अल्लाह तआला ने उस के बाद कहा, बात यह है कि इन्कारी ख़ूब जानते थे कि कुर्आन अल्लाह का कलाम है और मुहम्मद उन सब से ज़्यादा सच्चे अमानतदार और समझदार इन्सान हैं और जिस दीन की तरफ़ वह उन्हें बुला रहे हैं वह दीन बरहक़ है, लेकिन उन में अक्सर लोग अपने घमण्ड और कुफ़्र व सरकशी की वजह से इस का इन्कार कर रहे हैं।

**71** وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ۚ

अल्लाह तआला ने उन के इन्कार की मज़ीद तर्दीद करते हुए फ़रमाया कि अगर दीने इस्लाम उन की इच्छाओं के मुताबिक़ होता तो दुनिया का निज़ाम दरहम-बरहम हो जाता और आसमान और ज़मीन में पाई जाने वाली तमाम मख़्लूक़ात ख़्वाहिशाते नफ़स की पैरवी और गुनाहों के करने की वजह से तबाह व बर्बाद हो जाती।

इस के बाद कुर्आन ने उन की अक्ल पर मातम किया है कि कुर्आन अहले कुरैश की ज़बान में



नाज़िल हुआ और उन्हीं में से एक शख्स पर नाज़िल हुआ है। यह बात उन के लिए फख्र व इज़्ज़त का ज़रिया थी, लेकिन उन्होंने अपने घमण्ड की वजह से इस से मुँह मोड़ लिया है।

**72-74**

أَمْسَأَلَهُمْ خَرْجًا فَأَخْرَجَ رَبُّكَ خَيْرًا ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزَاقِينَ ۝ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَإِنَّ الدِّينَ لَآ يُوْثِقُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَكِبُونَ ۝

इस आयत में उन की हालत पर तअज्जुब किया गया है कि आप उन से तब्लीग़ इस्लाम का कोई बदला तो नहीं माँगते हैं कि उन पर यह बात सख्त गुज़र रही है। आप को तो आप के रब की ओर से दुनिया में जो रोज़ी मिल रही है और आखिरत में जो सवाब मिलेगा वह हर चीज़ से बेहतर है, क्योंकि अल्लाह तआला तो सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है और आप तो उन्हें उस राह की तरफ़ बुला रहे हैं जो बिल्कुल सीधी राह है, इस में कोई कमी नहीं है यानी आप उन्हें दीन इस्लाम की तरफ़ बुला रहे हैं, इसलिए होना तो यह चाहिए था कि वह आप का एहसान मानते और उसे तुरन्त कुबूल कर लेते, लेकिन वह लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, इसलिए इस दीन को कुबूल करने से मुँह मोड़ रहे हैं।

**75-77**

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكْبَرُوا ۖ لِرَبِّهِمْ وَيَا يُحْزَنُونَ ۝ حَقٌّ إِذَا فَعَلْنَا عَلَيْهِمْ بَأْسًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدًا إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْسُتُونَ ۝

कुरैश वालों के कुफ़्र व सरकशी पर मज़ीद नकीर करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन का अन्दुरुन इतना काला हो चुका है कि अगर हम उन के हाल पर रहम करते हुए भूक और क़हतसाली (सूखा) की तकलीफ़ को दूर भी कर दें, तो भटकते फिरेंगे और ईमान नहीं लाएँगे और इस का अमली तजुर्बा भी हो चुका है कि हम ने उन्हें भूक और क़हतसाली (सूखा) में मुब्तिला किया और मैदाने बद्र में उन में के बहुत से क़त्ल किये गये और जो बाकी रहे वह जेल में बन्द कर दिये गये, लेकिन उन्हें इस की तौफ़ीक़ नहीं हुई कि वह अपने रब के सामने झुकते बल्कि अपने इन्कार पर अकड़ते रहे। चुनाँचे जब उन की सरकशी हद से बढ़ गई तो हम ने उन के सामने सख्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया जिस की सख्तियों ने उन्हें भयानक दुख व नाउम्मीदी में डाल दिया।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इस अज़ाब से मुराद या तो 'अज़ाबे आखिरत' है या बद्र में उन का क़त्ल किया जाना है या वह क़हत जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआ की वजह से वाक़ेअ हुआ था या फ़तेह मक्का, जिस के बाद उन का ग़ुरुर टूट गया और नाउम्मीदी का गहरा साया उन के दिलों पर पड़ गया था।

**78**

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمُ السِّنْعَ وَالْأَبْصَارَ ۖ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर यकीनन कादिर है, इसलिए कि उस की कुद़रत का आलम यह है कि उस ने इन्सानों के मिट्टी से बने जिस्मों में सुनने और देखने की ताक़त पैदा की, गोश्त का एक लोथड़ा पैदा किया जिसे दिल कहा जाता है, उस में सोचने और समझने की कुद़रत दी। इन नेअमतों से मोमिन व काफ़िर सभी फ़ायदा उठाते हैं, लेकिन मुशिरकीन उन का शुक्रिया

अदा नहीं करते क्योंकि शुक्र का अमली तकाज़ा यह था कि वह ईमान ले आते।

**79**

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٩﴾

और उस ने इन्सानों को पहली बार बिना किसी पिछले नमूना के पैदा किया और नस्तों के ज़रिये उन की संख्या बढ़ा कर पूरे आलम में फैला दिया और जब क़ियामत आएगी तो फिर वह अपनी क़ब्रों से उठ-उठ कर मैदाने महशर में जमा हो जाएँगे और उस के सामने अपने आमाल का हिसाब चुकाएँगे तो जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया है, वह यकीनन उन्हें दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।

**80-83**

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنََّّا لَسَبْعُونَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا لَكُنْ وَابًا هَذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

और वही है जो मनी के बूँद को ज़िन्दगी देता है, खून के लोथड़े में रुह फूँकता है और मुख़लिफ़ (Different) दौर से गुज़ार कर एक मुकम्मल इन्सान की शक्ल में माँ के पेट से बाहर निकलता है और वही है जो रात व दिन को घटाता बढ़ाता है। इन सब पर इस के अलावा कोई दूसरा क़ादिर नहीं है तो मक्का वालो! तुम्हारी अक्ल में इतनी सी बात नहीं आती कि जिस ने पहली बार बिना पिछले नमूना के तुम्हें पैदा किया था, वह यकीनन तुम्हें दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है?

हकीकत यह है कि जिस के दिल की आँख अन्धी हो उसे किसी दलील से कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता, इसीलिए तुम ने तमाम दलायल सुनने के बावजूद आख़िरत के इन्कारियों की तरह यही कहा कि जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे और हमारी सिर्फ़ हड्डियाँ रह जाएँगी तो क्या दोबारा ज़िन्दा कर के क़ब्रों से उठाए जाएँगे? इस से पहले भी हम से और हमारे पूर्वजों से ऐसी बात कही जा रही है, लेकिन अब तक तो कुछ भी नहीं हुआ। इसलिए यह पुरानी किताबों की कहानियाँ हैं जिन्हें लोग बयान करते आ रहे हैं, हकीकत से इस बात का कोई तअल्लुक नहीं है।

**84-89**

قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ يَمْلِكُ أَنْ يَكُونَ كُلُّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

मरने के बाद उठाए जाने के अक़ीदे पर मज़ीद दलील पेश की जा रही है कि ऐ मेरे रसूल! अगर आप इन काफ़िरों से पूछेंगे कि ज़मीन और उस पर मौजूद तमाम मख़्लूक़ात का मालिक कौन है? तो वह कहेंगे कि अल्लाह ने इन्हें पैदा किया है और वही इन का मालिक है। फिर आप इन से कहिए कि तुम इतनी बात का यकीन नहीं कर पाते हो कि जिस ने इन्हें पहली बार पैदा किया है, वह इन्हें दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है।

और ऐ मेरे रसूल! अगर आप इन से पूछेंगे कि सातों आसमान और अर्श अज़ीम का रब कौन

है? तो वह कहेंगे कि अल्लाह इन का रब है। फिर आप इन से कह दीजिए कि अगर तुम लोग जानने के बावजूद उस के साथ किसी को शरीक बनाते हो, कुर्आन और रसूल को झुठलाते हो, तो क्या तुम उस के अज़ाब से डरते नहीं हो? और ऐ मेरे रसूल! अगर आप इन से पूछें कि हर चीज़ का मालिक कौन है और किस के हाथ में हर चीज़ का ख़ज़ाना है? कौन है वह जो जिसे चाहता है पनाह देता है?

और कोई नहीं जो उसे रोक दे और जिसे वह नुक़सान पहुँचाना चाहे कोई नहीं जो उसे बचा ले, तो वह कहेंगे कि अल्लाह के सिवा कोई इन बातों पर क़ादिर नहीं है तो फिर आप उन से कह दीजिए कि यह जानते हुए क्यों धोका खाते हो और क्यों मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार करते हो।

90

بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

अल्लाह तआला ने इन्सानों के कौल की ख़बर दे दी है कि उस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और इस हकीक़त को साबित करने के लिए उस ने स्पष्ट (Clear) दलायल पेश कर दिये हैं। इसलिए कुफ़ारे कुरैश जो अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक ठहराते हैं, यह केवल उन का आरोप है। जैसा कि अल्लाह तआला ने इसी सूरः के आख़िरी आयत में फ़रमाया है:-

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۖ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ

“जो शख्स अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद को पुकारेगा जिस की कोई दलील उस के पास नहीं है, तो इस का हिसाब उस के रब के पास होगा।”



## आयात नं० 91 से 118 तक

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذَا أَذَّهَبَ كُلَّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهُ عَمَّا يُصِفُونَ ۝ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنَّمَا تُرِيدُنِي مَا يُوعَدُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنَّا عَلَى أَنْ تُرِيدَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ۝ إِذْ فَعَّ بِالَّذِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ ۝ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝ وَقَالَ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَازِلِ الشَّيْطَانِ ۝ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِي ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۚ وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ حَقَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ تَلْفَحُ وَجُوهُهُمْ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝ أَلَمْ تَكُنْ أَيْتُنِي شَتَّىٰ عَلَيْكُمْ فُكْنُكُمْ فِيهَا تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا عَلَّمَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتَنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝ قَالَ اخْسَوْا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ۝ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ فَاتَّخَذَ ثَوْبَهُمْ سَجْرًا حَتَّىٰ أَنْصَبُوا فِي أَنْفُسِهِمْ ذِكْرًا وَكُنْتُمْ تَضْحَكُونَ ۝ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۚ أَفَكُنْتُمْ أَهْلًا لَّهَا ۚ فَمِنْهُمْ قَوْمٌ لَا يَشْعُرُونَ ۝ قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ۝ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ فَسَلِّ الْعَادِينَ ۝ قَالَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقَكُمْ عَبَثًا وَأَنْتُمْ آلَيْنَا لَا تَرْجِعُونَ ۝ فَتَعَلَّىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقَّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۚ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقَالَ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

### अनुवाद-

(91) अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया, और न 'उसके' साथ कोई और मअबूद (उपास्य) है; ऐसा होता तो हर मअबूद अपनी मख्लूक (सृष्टि) को लेकर अलग हो जाते, और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देते, ये जो कुछ बयान करते हैं, अल्लाह उससे पाक है; (92) 'वह' जानने वाला है, छिपे और खुले का, और उस शिर्क से बहुत ऊँचा है जो यह करते हैं! (93) (ऐ मुहम्मद) कह दीजिए, "ऐ मेरे 'रब'! अगर आप मुझे दिखा दें, जिसका वादा इनसे किया जा रहा है; (94) ऐ मेरे रब! मुझे इन जालिम लोगों में शामिल न कीजिए।" (95) और 'हम' जो वादा इनसे कर रहे हैं, 'हम' आप को भी दिखा कर उन पर नाज़िल करने की कुदरत (सामर्थ्य) रखते हैं, (96) बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहिए जो बहुत अच्छी हो, 'हम' खूब जानते हैं, जो यह कहा करते हैं। (97) और कह दीजिए, "ऐ मेरे रब! मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ शैतान के वस्वों से।" (98) और ऐ मेरे रब! "मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ, इससे कि वह (शैतान) मेरे पास आए।" (99) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ जाएगी तो कहेगा, "ऐ मेरे रब! मुझ को (दुनिया में) वापस भेज दीजिए; (100) ताकि जिस (दुनिया) को छोड़ आया हूँ उसमें (फिर जाकर) भले काम करूँ।" हरगिज़ नहीं! यह तो बस एक बात है, जो वह कह रहा है, और उनके पीछे एक बर्ज़ख (मरने के बाद क़ियामत तक रहने की जगह) है, उस दिन तक के लिए जब वे उठाए जाएंगे। (101) फिर जब सूर (नर सिंघा) में फूँक मारी जाएगी, तो उस दिन उनके बीच न रिश्तेदारियाँ होंगी, न एक-दूसरे को पूछेंगे; (102) तो जिनके पलड़े भारी होंगे वही कामियाब होंगे; (103) और जिनके पलड़े हल्के होंगे, वे वही होंगे, जिन्होंने अपने को घाटे

में डाला, हमेशा जहन्म में रहेंगे। (104) आग उनके चेहरों को झुलसा देगी, और उसमें उनके चेहरे बिगड़ गये होंगे। (105) “क्या ‘मेरी’ आयतें तुमको पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, तो तुम उनको झुठलाते थे?” (106) कहेंगे, “ऐ हमारे रब! कमबख्ती (दुर्भाग्य) हम पर छा गयी थी, और हम गुमराह हो गये थे,” (107) ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! फिर अगर हम (दोबारा) ऐसा करें तो हम ही ज़ालिम होंगे।” (108) फरमाएगा “पड़े रहो! इसी में ज़िल्लत के साथ और ‘मुझसे’ बात न करना।” (109) मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा था, जो कहता था “ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं, ‘हमें’ माफ़ कर, और ‘हम’ पर रहम कर, और ‘तू’ सब रहम करने वालों से अच्छा रहम करने वाला है; (110) तो तुम उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे, यहाँ तक कि उनके पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम उनकी हँसी उड़ाया करते थे। (111) आज उनके सब्र का बदला मैंने यह दिया है, कि वे कामियाब हो गये।” (112) (अल्लाह) पूछेगा, ‘तुम’ धरती में कितने वर्ष रहे।” (113) वे कहेंगे, “एक दिन या एक दिन से भी कम, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए।” (114) (अल्लाह) फरमाएगा, “तुम उसमें बहुत थोड़े ही रहे, काश! तुमने यह बात जान ली होती; (115) क्या तुमने यह समझा था कि ‘हम ने’ तुमको बेकार पैदा किया है, और यह कि तुमको हमारी ओर लौट कर नहीं आना है?” (116) तो अल्लाह ‘वह’ सच्चा मालिक, बहुत ऊँचा है, ‘उसके’ सिवा कोई बअबूद (उपास्य) नहीं, वही इज्जत वाले अर्श का मालिक है। (117) और जो आदमी अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअबूद (उपास्य) को पुकारे, जिसके पास उसका कोई प्रमाण नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके ‘रब’ के पास है, बेशक इन्कार करने वाले कभी कामियाब नहीं होंगे। (118) और कहो, “ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर दे, और रहम कर, ‘तू’ तो सबसे अच्छा रहम करने वाला है।”

## आयत नं० 91 से 118 तक की व्याख्या

91-92

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذَا أَذَّاهَبَ كُلُّ إِلَهٍ مِمَّا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ

अल्लाह तआला ने अपनी न कोई औलाद बनाई है और न उस के साथ कोई दूसरा मअबूद है, इसलिए कि अगर कई मअबूद होते तो हर एक अपनी मख्लूक़ात में अपनी मर्जी के मुताबिक़ अधिकार चलाता और नतीजा यह होता कि दुनिया के निज़ाम को संभालने में उन के दर्मियान टकराव पैदा होता, लेकिन मामला इस के ख़िलाफ़ (Opposite) है, पूरे आलम (Universe) की हर चीज़ एक दूसरे से एक ख़ास निज़ाम के मुताबिक़ जुड़ी हुई है।

अगर कई मअबूद होते तो हर एक दूसरे पर ग़ालिब आने की कोशिश करता और अगर दोनों एक दूसरे के मुक़ाबिले में बेबस होते तो मअबूद (उपास्य) न होते और अगर एक ग़ालिब (प्रभावी) होता और दूसरा प्रभावहीन होता तो मग़्लूब मअबूद (उपास्य) न होता। इसीलिए अल्लाह तआला ने फरमाया **سُبْحَنَ اللَّهُ عَمَّا يُصِفُونَ** उस की ज़ात ज़ालिम मुशिरकों के इस दावे से पाक है कि उस का कोई बेटा हो या उस का कोई शरीक हो। वह तो ग़ायब व हज़िर सब का इल्म रखता है, इसलिए उस की ज़ात आला सिफ़ात मुशिरकों के आरोप से बुलन्द व बाला है।



**93-94**

قُلْ رَبِّ إِنَّمَا نَنْبَأُكَ مَا يُوعَدُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

इस तरह के कलाम में उन मुशिरकीने मक्का के लिए धमकी है जिन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) की बेअसत और नुजुले कुर्आन से कोई फायदा नहीं उठाया, वह अपने कुफ़ व शिर्क पर जमे रहे। अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा, आप दुआ करते रहिए कि ऐ मेरे रब! अगर तू काफ़िरो पर अज़ाब नाज़िल करते वक़्त तक मुझे ज़िन्दा रखे तो उन ज़ालिमों के साथ मुझ पर भी कोई अज़ाब न नाज़िल करना।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में इशारा है कि वह अज़ाब बड़ा ही सख़्त होगा और काफ़िरो के इस हँसी उड़ाने की तर्दीद है कि अगर अज़ाब की बात सही है तो फिर जल्दी क्यों नहीं आ जाता।

**95**

وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ نُرِيكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जिस अज़ाब का उन से वादा किया जा रहा है हम उसे किसी वक़्त भी लाने पर कादिर हैं, लेकिन हिक्मत का तकाज़ा यह है कि उसे उस के वक़्त मुक़रर तक रोके रखा जाए।

**96**

ادْفَعْ بِالَّتِي فِي يَدَيْكَ مِنَ الْبَقِيَّةِ ۖ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝

अल्लाह तआला ने अहले कुरैश से जिस अज़ाब का वादा कर रखा था उस का वक़्त आने तक नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया गया कि शिर्क करने वालों से जो उन का और दीन इस्लाम का मज़ाक उड़ाते हैं उस पर सब्र करें, दरगुज़र करें और जिहाद के हुक्म का इन्तिज़ार करें। इसीलिए कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि यह आयत, जिहाद वाली आयत के ज़रिये मन्सूख़ (Ineffective) हो चुकी है।

कुछ दूसरे मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि काफ़िरो के बारे में तो आयतें जिहाद के ज़रिये इस का हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) हो चुका है, लेकिन मुसलमानों के आपस के तअल्लुकात के सिलसिले में इस का हुक्म बाकी है यानी यह आयत मुसलमानों से मुताल्बा (Demand) करती है कि वह आपस में दरगुज़र से काम लें।

आयत के आख़िर में कहा गया है कि मुशिरकीने मक्का जो कुछ अल्लाह तआला के बारे में कहते हैं कि उस का कोई शरीक है या उस का कोई लड़का है या वह जो कुछ उस के रसूल (सल्ल०) के बारे में कहते हैं कि वह झूठा है या क़ियामत और मरने के बाद उठाए जाने को झुठलाते हैं, तो अल्लाह तआला इन सारी बातों से वाकिफ़ है और इन मुशिरकों को इस का अज़ाब भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।

**97-98**

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۝

मुसलमानों को अहले कुफ़ से दरगुज़र करने की तअलीम देने के बाद नबी करीम (सल्ल०) और उन की उम्मत को शैतान के फंदों और वस्वसों से महफूज़ रहने का तरीका सिखाया जा रहा है कि वह अल्लाह के ज़रिये शैतान मरदूद और उस के वस्वसों से पनाह माँगते रहें।

इमाम अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसई आदि ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत

की है कि नबी करीम (सल्ल०) सहाब-ए-किराम को सोते वक़्त यह दुआ पढ़ने की नसीहत करते थे, ताकि शैतान नींद की हालत में डरा न सके।

”بِسْمِ اللَّهِ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ وَأَنْ يَحْضُرُونَ“

“मैं अल्लाह का नाम लेकर सोता हूँ अल्लाह के मुकम्मल और पूरे कलिमात के ज़रिये उस के ग़ज़ब, उस की सज़ा, उस के बन्दों के शर और शैतान के वस्वसों से पनाह माँगता हूँ और इस बात से पनाह माँगता हूँ कि वह मेरे पास आए।”

रावी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र अपने बालिग बच्चों को सोते वक़्त इस दुआ के पढ़ने की नसीहत करते थे और नाबालिगों के गले में लिख कर लट्का देते थे।

‘मुस्नद अहमद’ में है कि ख़ालिद बिन अल् वलीद ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा, “या रसूलल्लाह! मैं नींद में डर जाता हूँ। तो आप ने उन से कहा, “जब अपने बिस्तर पर जाओ तो यह दुआ पढ़ लो (जो अभी गुज़री है) तो शैतान तुम्हारे करीब नहीं आएगा और नुक़सान नहीं पहुँचाएगा।”

और ‘अबू दाऊद’ व ‘तिर्मिज़ी’ ने रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) शैतान से पनाह माँगते थे और कहते थे “أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ”

“मैं अल्लाह के ज़रिये जो बड़ा सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है, मरदूद शैतान से पनाह माँगता हूँ यानी उस के वस्वसे से, फूंक मारने से और मुँह से फूंकने से पनाह माँगता हूँ।”

99

حَقِّ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ اجْعَلْنِي

यह बात मुश्रिकीने मक्का के बारे में है कि वह अपने कुफ़्र व ज़लालत पर ही जमे रहेंगे, यहाँ तक कि जब उन्हें अपनी मौत के आसार नज़र आने लगेंगे और उन के गुनाहों के स्याह (काले) बादल उन की आँखों के सामने मण्डलाने लगेंगे तो कहेंगे, “मेरे रब! मुझे मोहलत दे ताकि दुनिया में रहकर नेक काम करूँ।” तो अल्लाह तआला उन की तलब को रद्द कर देगा और कहेगा, “अब ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता।”

كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا का एक मतलब यह भी हो सकता है कि यह बात यूँ ही उन की ज़बान से निकल रही है। अगर ऐसा कर भी दिया जाए तो भी वह अपने कुफ़्र पर जमे रहेंगे, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरतुल् अन्आम आयत नं० (28) में फ़रमाया है وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا إِلَيْهَا يُهْوَاغَنَّهُ अगर वह दुनिया की तरफ़ लौटा भी दिये जाएँ तो जिस कुफ़्र व शिर्क से उन्हें रोका गया था, वही दोबारा करने लगेंगे।”

100

لَعَلِّي أَفْعَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ

इस आयत के आखिर में फ़रमाया कि मौत आ जाने के बाद उन के और दुनिया की तरफ़ दोबारा लौटाए जाने के दर्मियान दुनिया की बाक़ी उम्र हायल हो जाएगी और वह अलमे बरज़ख़ (मौत के बाद से क़ियामत तक का ज़माना) में रहेंगे यहाँ तक कि जब क़ियामत आएगी तो वह अपनी क़ब्रों से उठाए जाएँगे, लेकिन वह ज़िन्दगी अमल की नहीं बल्कि हिसाब व जज़ा की ज़िन्दगी होगी।



101

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَسْأَلُونَ

यहाँ दूसरी बार 'सूर' के फूँके जाने के बारे में है। जिस के बाद तमाम लोग ज़िन्दा होकर मैदाने महशर में जमा होने के लिए दौड़ने लगेंगे। उस वक़्त लोगों पर ऐसी घबराहट, खौफ़ व दहशत तारी होगी कि हर एक को अपने आप के सिवा किसी से कोई दिलचस्पी नहीं रहेगी। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: अ ब स आयत नं० (34) से (37) तक में फ़रमाया है:-

يَوْمَ يَفِرُّ الْرءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَيْنِهِ ۖ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ

“उस दिन आदमी अपने भाई से, अपनी माँ, अपने बाप, अपनी बीवी और अपनी औलाद से भागेगा। उन में से हर एक दिन अपनी निजात की ऐसी फ़िक्र होगी जो उस के लिए काफी होगी” और सूरतुल् मआरिज आयत नं० (10) में फ़रमाया وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيماً उस दिन कोई दोस्त अपने किसी दोस्त को नहीं पूछेगा”।

और सूर: साफ़ात की आयत नं० (27) और सूर: तूर की आयत नं० (25) में जो आया है:-

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ “उस दिन लोग एक दूसरे से पूछेंगे” इस से मालूम होता है कि क़ब्रों से निकलने के वक़्त लोगों पर सख़्त घबराहट होगी और एक दूसरे से पूछने वाली बात किसी और वक़्त होगी। आयात व अहदीस से अन्दाज़ा होता है कि क़ियामत का दिन लम्बा होगा और इस लम्बी मुद्दत में लोग मुख़लिफ़ (Different) हालात से गुज़रेंगे।

102-104

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۖ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ

خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۖ تَلْفَحُ وَجُوهُهُمْ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ

क़ियामत के दिन जिस की नेकियों का पलड़ा झुक जाएगा वह जहन्नम से निजात पाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और जिस की बुराईयों का पलड़ा झुक जाएगा वह जहन्नम में ढकेल दिया जाएगा, जिस में वह हमेशा रहेगा, आग उस के चेहरे को झुलस देगी, उस के होंठ जल जाएँगे, उस के दाँत दिखाई देने लगेंगे और उस की शक्ल बिगड़ कर निहायत भयानक और डरावनी हो जाएगी।

105-106

أَلَمْ تَكُنْ أَيْتِي شَتًى عَلَىٰ عِبَادِكَ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۖ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا

وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ

उन की तकलीफ़ को बढ़ाने के लिए उन से कहा जाएगा, “क्या हमारे रसूल, हमारी आयतें तुम्हें पढ़कर सुनाते नहीं थे? लेकिन तुम उन्हें झुठलाते रहे तो उन के पास इस का कोई जवाब नहीं होगा”। बतौर माफ़ी के सिर्फ़ वह यह कहेंगे, “ऐ हमारे रब! हमारी बद्बख़्ती हम पर ग़ालिब आ गई थी कि हम दुनियावी लज़्ज़तों में डूबे रहे, ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी करते रहे और राहे हक़ से कोसों दूर रहे”।

107-111

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۖ قَالُوا احْسَبُوا فِيهَا وَلَا تُكْسِبُونَ ۖ إِنَّهُ كَانَ

فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ فَاتَّخَذَ  
 سُوهُمْ سَخِرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُم ذِكْرِي وَلَنْتُمْ عَنْهُمْ يُضْحَكُونَ ۝ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۚ  
 إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

फिर परेशानी से घबरा कर कहेंगे, “ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकालकर दोबारा दुनिया में भेज दे, अगर हम ने फिर कुफ़ व शिर्क की राह अख़्तियार की तो वाकई हम ज़ालिम होंगे”। तो अल्लाह तआला उन्हें ठुकरा देगा और इस तरह उन्हें धुत्कार कर चुप कर देगा जिस तरह कुत्ते को धुत्कार कर भगा दिया जाता है और इस का सबब बयान करते हुए उन से कहेगा कि दुनिया में मेरे मोमिन बन्दे अपने ईमान व अमल के वसीला से मुझ से मग़ि़रत व रहमत तलब करते थे तो तुम उन की अ़िबादतों और दुआओं का मज़ाक़ उड़ाते थे, आज मैंने उन्हें उन के सब्र के बदले में जन्नत दे दी है।

**112-114** قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ۝ قَالُوا لَيْثًا يُوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمِ فَتَنِلِ الْعَا دِينَ ۝ قُلْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنْتُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

इस आयते करीमा में इस तरफ़ इशारा है कि काफ़िर कुछ साल की दुनियावी ज़िन्दगी में अल्लाह की अ़िबादत न कर के आख़िरत में बहुत बड़ा नुक़सान उठाएँगे, अगर उन्होंने भी दुनिया में मोमिनों की तरह नेक अ़मल किया होता तो आज वह भी जन्नत के हक्दार होते।

अल्लाह तआला काफ़िरों से पूछेगा कि जिस दुनियावी ज़िन्दगी के ऐश व इशरत में तुम मग्न रहे वह कितने दिन की ज़िन्दगी थी, तो वह जहन्नम की सज़ा की वजह से दुनिया का ऐश व आराम भूल जाएँगे और उन्हें ऐसा मालूम होगा कि जैसे दुनिया में उन्होंने सिर्फ़ एक दिन या उस से भी कम वक़्त गुज़ारा था और परेशानी व तक्लीफ़ से तंग आकर कहेंगे, “या रब! तेरे गिनने वाले फ़रिश्ते ज़्यादा जानते हैं कि हम कितने दिन रहे थे”। तो अल्लाह तआला फिर उन से कहेगा, “बहरहाल तुम लोग दुनिया में कम ही दिन रहे थे, अस्ल ज़िन्दगी तो अब शुरू हुई है। अगर तुम इस हकीकत पर ईमान लाए होते और मिटने वाली ज़िन्दगी को हमेशा की ज़िन्दगी पर तर्ज़ीह न दिये होते और सब्र के साथ अल्लाह की बन्दगी की होती तो मोमिनों की तरह आज तुम भी कामियाब होते”।

**115-118** أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۝ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۚ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वाले काफ़िरों को मज़ीद डांट पिलाई जा रही है कि क्या तुम लोग इस ग़लतफ़हमी में मुब्तिला (Involve) हो कि हम ने तुम्हें बिना किसी मक्सद के बेकार पैदा किया है और तुम्हें मरने के बाद दोबारा हमारे पास लौट कर नहीं आना होगा?

अल्लाह की ज़ात इस से बहुत ही बुलन्द व बाला है कि वह किसी चीज़ को बेकार पैदा करे। हम ने तो तुम्हें अपनी अ़िबादत के लिए पैदा किया है। इसीलिए अल्लाह तअ़ाला ने इसके बाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी दूसरे की भी अ़िबादत करेगा, जिस की उस के पास कोई दलील नहीं है तो उसे इस बुरे अ़मल का अपने रब के पास हिसाब देना होगा और उसे इस बुराई का बदला मिल कर रहेगा।

आयत के आख़िर में अल्लाह तअ़ाला ने अपने नबी (सल्ल०) को सिखाया कि वह हर हाल में अपने रब की हम्द व तअ़रीफ़ बयान करते रहें और उस से मग़ि़रत व रहमत की दुआ करते रहें।



(भाग-24)

सूर-ए-नूर

(सूर: नं.24)

## तफ़सीर सूर: नूर

**नाम-** यह नाम आयत नं० (35) **اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** से लिया गया है। 'साहिबे मुहासिनुल् तन्ज़ील' लिखते हैं कि इस सूर: में अल्लाह के नूर को एक मिसाल के ज़रिये इस तरह बयान किया गया है कि इस से इन्सान को अल्लाह की मअरिफ़त हासिल होती है, इसलिए इस का नाम 'सूरतुन्नूर' रखा गया है।

### नाज़िल होने का ज़माना-

यह सूर: मदनी दौर में ग़ज़्व-ए-बनी अल् मुस्तलक के बाद नाज़िल हुई थी, जो मुहम्मद बिन इस्हाक़, 'साहिबे किताबुल् यस्रा' की रिवायत के मुताबिक़ शअबान 6 हि० में हुई थी। इस की दलील यह है कि इसी ग़ज़्वा से वापसी पर मदीना मुनव्वरह पहुँचने से पहले मशहूर वाकिआ इफ़क़ पेश आया था यानी उम्मुल् मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा की इफ़क़ व पाक दामिनी पर मुनाफ़ि़कों के सरदार 'अब्दुल्लाह बिन सलोल' ने तोहमत (Allegation) लगाया था। जिस की तफ़सील इस सूर: में मौजूद है।

इस सूर: में पर्दा और मुसलमान मर्दों व औरतों की इफ़त व पाकदामिनी (Holiness) की हिफ़ाज़त से सम्बन्धित बहुत से मसायल बयान किये गये हैं, जो इस्लामी सोसाइटी की खुसूसियत हैं।



## आयत नं० 1 से 10 तक

سُورَةُ النُّورِ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَيْشَهِدَ عِدَايَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ يُزْمَنُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شَهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يُزْمَنُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شَهَادَةٌ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَدُوا بِحُدُودِ اللَّهِ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَذَرُوا عَلَيْهَا عَذَابَ آلِ نَجْمٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ عَذَابَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ

### अनुवाद-

① यह एक सूरः है, जिसे 'हमने' उतारा है, और इसे 'हमने' फर्ज ठहराया है, और 'हमने' इसमें साफ-साफ हुक्म उतारा है, शायद कि तुम नसीहत हासिल करो। ② बदकारी करने वाली औरत और बदकारी करने वाला मर्द, दोनों में से हर एक को सौ-सौ कोड़े मारो; और अगर अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो तो अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में इन दोनों पर ज़रा भी तरस न आए, और उन्हें सज़ा देते समय ईमान वालों की एक जमाअत मौजूद हो। ③ ज़ानिया (बदकार) मर्द निकाह किसी के साथ नहीं करता सिवाय ज़ानिया (बदकार) औरत या मुशिरक औरत के, और ज़ानिया (बदकार) औरत के साथ कोई निकाह नहीं करता सिवाय ज़ानिया या मुशिरक के, और यह ईमान वालों के लिए हुराम कर दिया गया है। ④ और जो लोग पाकदामन औरतों पर (बदकारी का) आरोप लगाएँ! और चार गवाह न ला सकें, तो उनको अस्सी कोड़े मारो; और कभी उनकी गवाही कुबूल न करो और यही लोग फ़ासिक (कप्टाचारी) हैं; ⑤ सिवाय उनके जो इसके बाद तौबः कर लें और सुधार कर लें, तो अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम वाला है। ⑥ और जो लोग अपनी पत्नियों पर (बदकारी का) इल्ज़ाम लगाएँ और उनके पास खुद उनके अपने सिवा कोई गवाह मौजूद न हो, तो उनमें से एक (पति या पत्नी) चार बार अल्लाह की क़सम खाकर गवाही दे कि बेशक वह सच्चा है; ⑦ और पाँचवीं बार यह गवाही दे कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत (फिटकार) हो। ⑧ और पत्नी से इस तरह सज़ा टल सकती है, कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर बयान करे कि बेशक यह झूठा है; ⑨ और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझ (औरत) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो, अगर वह सच्चा हो। ⑩ और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल व रहम न होता, और (यह बात न होती कि) अल्लाह बड़ा तौबः कुबूल करने वाला, हिकमत वाला है (तो तुम मुसीबत में फंस जाते)।

## आयत नं० 1 से 10 तक की व्याख्या

1-2

سُورَةُ النُّورِ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ

وَأَجِدُ فِيهَا يَأْتِكُم بَعْثٌ مِّنَ رَبِّكُمْ يَكُونُ رَاقِعَةً فِي دِينِ اللَّهِ وَإِنَّ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ  
وَلَيْشَهِدَ عَدَايَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

इस के शुरु में इज़्ज़त व पाकदामनी की हिफ़ाज़त का बयान है और ज़िना करने वालों और तोहमत लगाने वालों की सज़ा ज़िक्र की गई है। पहली बात तो यह फ़रमाई कि हम ने यह सूर: नाज़िल की और इस में जो अहक़ाम हैं उन पर अमल करने की ज़िम्मेदारी डाली है।

فَرَضَها का यह तर्जुम: इसलिए किया गया है कि इस सूर: में जो अहक़ाम हैं वह सब फ़र्ज़ नहीं हैं, अल्बत्ता मोमिन बन्दों को सब पर अमल करना चाहिए। इन में फ़रायज़ भी हैं और ग़ैर फ़रायज़ भी। फिर फ़रमाया وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ (और हम ने इस में स्पष्ट आयात नाज़िल की हैं, इन आयात में जो अहक़ाम (निर्देश) हैं उन पर अमल करें لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ (ताकि नसीहत हासिल हो।)

## ज़ानी की सज़ा

इस में ज़िना करने वाले मर्द और ज़िना करने वाली औरत की सज़ा बयान फ़रमाई गई है और फ़रमाया कि उन में से हर एक को सौ कोड़े मारो और साथ ही यह भी फ़रमाया कि सज़ा जारी करने में तुम्हें उन पर रहम न आए।

अल्लाह के क़ानून के सामने किसी की रिआयत और किसी पर कोई रहम करना, तरस खाना, दुरुस्त नहीं है। अल्लाह तआला 'अरहमुररहिमीन' है। जब उस ने सज़ा का हुक्म दे दिया तो चाहे वह सज़ा तुम्हारी नज़रों में सख्त हो तब भी उसे लागू करना है। उस ने इन्सान को पैदा किया वह इन्सान के मिज़ाज आदात व ख़स्तत को पूरी तरह जानता है, उसे मालूम है कि इन्सान अपनी तबीअत और मिज़ाज के एतिबार से किस सज़ा के ज़रिये ज़िनाकारी के जुर्म से रुक सकता है। चूंकि इस में ज़ानी मर्द और ज़ानिया औरत की सज़ा के साथ दूसरों को सबक दिलाना भी मक्सूद है, इसीलिए यह भी हुक्म दिया कि जब उनको ज़िना की सज़ा दी जाए तो उस वक़्त मोमिनीन की एक जमाअत हाज़िर रहे।

बहुत से लोग हाज़िर होंगे तो उन्हें भी नसीहत हासिल होगी और सज़ा का वाकिआ अपनी मजलिसों और क़बीलों में और बाहर से आने जाने वाले मुसाफ़िरों की मुलाक़ातों में ज़िक्र करेंगे तो सब से ख़तरनाक सज़ा की चर्चा होगी, जिस से आमतौर पर पूरे मुल्क में इज़्ज़त व पाकदामिनी की फ़िज़ा बनेगी और लोग ज़िनाकारी से रुक जाएंगे।

हज़रत उबादह बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “दूर और नज़्दीक अल्लाह के हुद्द (सज़ाओं) को कायम करो और किसी मलामत (निन्दा) करने वाले की मलामत (निन्दा) अल्लाह के हुक्म के बारे में तुम्हें न पकड़े”। (रवाहु इब्ने माजा)

तुम्हें किसी की मलामत न पकड़े इस का मतलब यह है कि हर हालत में अल्लाह तआला के हुक्म को लागू किया करो, दुश्मन एतिराज़ करेंगे इस को न देखो।



रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया कि ज़मीन में एक हद (सज़ा) कायम की जाए तो यह उस से बेहतर है कि चालीस दिन बारिश बरसती रहे। (रवाह इब्ने हज़ाज़)

यानी चालीस दिन बारिश होने का जो नफ़ा है उस से कहीं ज़्यादा ख़ैरात व बरकात का नुज़ूल होगा जबकि अल्लाह की एक हद (सज़ा का हुक्म) कायम कर दिया जाए।

अल्लाह ने पहले ही फ़रमा दिया है **وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ**

(और तुम्हें अल्लाह के दीन के बारे में उन दोनों के साथ रहम के बर्ताव का ज़च्चा न पकड़े।)

उस से बढ़कर जुल्म यह है जो सरापा कुफ़्र है कि अल्लाह तआला के जारी हुक्मों को ज़ालिमाना और वहशियाना सज़ाएँ कह देते हैं और अजीब बात यह है कि फिर भी मुसलमान होने के दावेदार हैं, मुजरिमीन को शरई सज़ाएँ नहीं दी जाती हैं, उस की वजह से डाका और ज़िना की कसरत है। चोरियाँ भी बहुत हो रही हैं, ज़िनाकारी के अड़े भी खुले हुए हैं और जगह-जगह ज़िनाकारी होती रहती है।

## ज़िना से सम्बन्धित मसायल

**मस्ला-** जो मर्द औरत आज़ाद हो यानी किसी का मम्लूक (गुलाम) नहीं, अक़िल, बालिग़, मुसलमान हो, उस का निकाह शरीअत के अनुसार हुआ हो, फिर आपस में मियाँ-बीवी वाला काम भी किया हो तो ऐसे मर्द व औरत को 'मोहसिन' कहते हैं। अगर उन में से कोई ज़िना करे तो उस की सज़ा रज्म यानी संगसार करना (पत्थर मार-मार कर हलाक कर देना) है और जो मर्द औरत मोहसिन न हो, अगर वह ज़िना करे तो उन की सज़ा सौ-सौ कोड़े हैं।

**मस्ला-** कोड़े लगाते वक़्त यह ख़याल कर लिया जाए कि अगर मर्द को कोड़े लगाए जा रहे हैं तो सतर औरत (ज़ख़री अंग को छुपाने) के लिए जितने कपड़े की ज़रूरत है वह उस पर बाकी रहें, बाकी कपड़े उतार दिये जाएँ और अगर औरत को कोड़े लगाए जाएँ तो उस के आम कपड़े न उतारे जाएँ। हाँ, अगर उसने लिहाफ़ ओढ़ रखा है या कोई और ऐसी चीज़ पहन रखी है जो मारने की तक्लीफ़ से बचा सकती है तो उसे उतरवा दिया जाएगा।

**मस्ला-** मर्द को खड़ा कर के और औरत को बिठा कर कोड़े मारे जाएँ।

**मस्ला-** ऐसे कोड़े से मारा जाएगा जिस के आख़िर में गिरह लगी हुई न हों और यह मारना दर्मियाना दर्जे का हो और एक ही जगह कोड़े न मारे जाएँ बल्कि अलग-अलग जगह पर मारे जाएँ। अलूबत्ता सर चेहरा और शर्मगाह पर कोई कोड़ा न मारा जाए।

**मस्ला-** जिस ज़िनाकार मर्द या औरत को रज्म यानी संगसार करना है उसे बाहर मैदान में ले जाए, जिन लोगों ने ज़िना की गवाही दी थी पहले वह पत्थर मारें, फिर अमीरुल् मोमिनीन पत्थर मारें और उसके बाद दूसरे लोग मारें। अगर गवाह पत्थर मारने की शुरुआत करने से इन्कारी हो जाएँ तो जुर्म रुक जाएगा। अगर ज़ानी के इक़्रार की वजह से संगसार किया जाने लगे तो पहले अमीरुल् मोमिनीन

पत्थर मारे, उस के बाद दूसरे लोग और औरत को रज्म करने लगे तो उस के लिए गढ़ा खोद कर उस में खड़ी कर के रज्म करें तो यह बेहतर होगा।

**मस्ला-** जब किसी मर्द या औरत के बारे में चार शख्स गवाही दे दें कि उस ने ज़िना किया है और यूँ कहें कि हम ने उन को यह अमल करते हुए इस तरह देखा जैसे सुर्मादानी में सलाई हो तो अमीरुल् मोमिनीन या काज़ी उन चारों गवाहों के बारे में तहकीक़ और तफ़्तीश करेगा कि उन का इन्साफ़ पसन्द होना और उनका नेक सच्चा होना साबित हो जाए तो अमीरुल् मोमिनीन या काज़ी ज़िना करने वाले पर हद शरई क़ानून (कोड़े या संगसार) लागू कर दे।

अगर चार गवाह न हों या चार तो हों लेकिन उन का फ़ासिक़ (गुनाहगार) होना साबित हो जाए तो उस पर हद जारी न होगी जिस के बारे में उन लोगों ने ज़िना की गवाही दी, बल्कि उन लोगों को हद क़ज़फ़ (आरोपियों की सज़ा) लगाई जाएगी जिन्होंने गवाही दी। (हद क़ज़फ़ से मुराद आरोप लगाने की सज़ा है जो अस्सी (80) कोड़े हैं।)

**मस्ला-** ज़ानी के अपने इक़्रार से भी ज़िना का सुबूत हो जाता है (मर्द हो या औरत) जब इक़्रार करने वाला आक़िल बालिग़ हो और चार मजलिसों में चार मर्तबः इक़्रार करे तो काज़ी उस से दर्याफ़्त (पूछना) करे कि ज़िना क्या होता है और तूने किस से ज़िना किया और कहाँ ज़िना किया? इक़्रार करने वाला जब यह बातें बता दे तो काज़ी उस पर भी शरई क़ानून के अनुसार हद लागू कर देगा।

## दुश्मनाने इस्लाम की बातें

आजकल बहुत से लोग ऐसे निकले हैं जो अपनी जिहालत के जोर पर शरीअते इस्लामिया में तहरीफ़ (संशोधन) करने के पीछे पड़े हुए हैं। दुश्मनाने इस्लाम और बहुत से सत्ताधारी उन की सरपरस्ती करते हैं और उन को रिश्वत देकर उन से ऐसी बातें लिखवाते हैं जो शरीअते इस्लामिया के खिलाफ़ होती हैं। चौदह सौ साल से तमाम अ़वाम और ख़वास यही जानते और समझते और अ़कीदा रखते हैं कि इस्लाम में ज़ानी ग़ैर मुहसिन की सज़ा सौ कोड़े और ज़ानी मोहसिन की सज़ा रज्म यानी संगसार करना है।

अपने इल्म को जाहिलाना अन्दाज़ में इस्तेमाल करने वाले अब यूँ कह रहे हैं कि कुर्आन मजीद में रज्म नहीं है। उन लोगों से सवाल है कि कुर्आन मजीद में यह कहाँ फ़रमाया है कि जो कुछ कुर्आन में न हो वह दीन इस्लाम नहीं है। कुर्आन ने तो यह फ़रमाया है कि:-

وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا (जो कुछ रसूलुल्लाह (सल्ल०) दें उसे पकड़ लो और जिस से रोके रुक जाओ।)

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बाज़ ज़ानियों को ज़िना साबित होने के बाद और मोहसिन साबित होने पर संगसार फ़रमा दिया तो अब किस का मक़ाम है जो उस को रद्द करे और उसे अल्लाह के दीन से निकाल दे।

### रज्म अल्लाह की किताब में है-

हज़रत उमर (रज़ि०) के दिल में अल्लाह तआला ने यह बात डाल दी थी कि बाद में आने वाले रज्म की सज़ा के इन्कारी होंगे, इसलिए उन्होंने एक दिन मेम्बर पर फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हक् के साथ भेजा और आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई। 'किताबुल्लाह' में जो कुछ नाज़िल हुआ उस में रज्म यानी संगसार करने की आयत भी थी, हम ने इस आयत को पढ़ा और समझा और याद किया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने संगसार किया और हम ने भी आप के बाद संगसार किया, अब मैं इस बात से डरता हूँ कि ज़्यादा वक़्त गुज़रने पर कोई कहने वाला यूँ न कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हम रज्म की आयत को अल्लाह की किताब में नहीं पाते (यह कहकर वह दीन इस्लाम में रज्म की मशरुअियत का इन्कारी होगा) जिस की वजह से लोग एक ऐसे फ़रीज़ा को छोड़कर गुमराह हो जाएँगे, जिसे अल्लाह ने शुरू फ़रमाया।

रज्म, अल्लाह की किताब में है (यानी इस की मशरुअियत मन्सूख़ नहीं हुई) हृद उस मर्द औरत पर जारी की जाएगी जो मोहसिन हो, जबकि गवाह कायम हो जाएँ या इक़्रार हो या किसी औरत को हमल हो जाए (जिस हमल की वजह से हृद लाज़िम होती हो)। (रवाहुल् बुख़ारी पेज नं० 109)

हज़रत उमर (रज़ि०) ने यह जो फ़रमाया, रज्म अल्लाह की किताब में है। इस का मतलब यह है कि जिस आयत में यह मज़मून (विषय) था उस की तिलावत मन्सूख़ (निरस्त) कर दी गई है, लेकिन इस का हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) नहीं हुआ। जिन हज़रात ने इल्म उसूल फ़िका पढ़ा है वह इस का मतलब समझते हैं और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि इस से मुराद सूर: निसा की आयत **أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا** की तरफ़ इशारा है।

तीसरा मतलब यह है कि अगर अल्लाह की किताब में स्पष्ट तौर पर मौजूद नहीं है तो इस से यह साबित नहीं होता कि दीन इस्लाम में रज्म नहीं है। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इसको शुरू फ़रमा दिया तो अल्लाह की किताब में हो गया क्योंकि अल्लाह की इताअत के साथ अल्लाह के रसूल की इताअत किताबुल्लाह के मज़मून (विषयों) में शामिल है।

यह जो लोग कह रहे हैं कि 'रज्म' कुर्आन करीम में नहीं है। अव्वल तो उन से सवाल है कि जुह अम्र और अ़िशा की चारों रकअतें मग़िब की तीन और फ़ज़्र की दो हैं इस को किसी आयत में दिखा दें। ज़कात का क्या निसाब है? इस को किसी आयत से साबित करें। क्या वजह है कि नमाज़ और ज़कात की अदाएगी के लिए जो इस्लाम के अरकान में से हैं कुर्आन मजीद की आयत में तलाश नहीं की जाती, उन पर अमल करने के लिए तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद ही काफ़ी है और रज्म को दीन में समझने के लिए आयाते कुर्आनिया की तलाश है। बेदीनों का कोई दीन नहीं होता इसीलिए यह लोग ऐसी बातें करते हैं।

## ज़िनाकारी के नुक्सानात और निकाह की फज़ीलत

काफ़िरो और बेदीनों को इस पर तअज़्जुब है कि शरीअते इस्लामिया में ज़िना को क्यों ह़राम करार दिया गया? यह लोग समझते हैं कि यह मर्द-औरत का अपना ज़ाती मामला है जिस का जिस से जी चाहे लज़्ज़त हासिल कर ले, उन लोगों की यह बात जाहिलाना है, यह कहना कि बन्दों को अख़्तियार है जो चाहें करें यह बहुत बड़ी गुमराही है। जब ख़ालिके कायनात ने पैदा फ़रमाया और सब उसी की मख़्लूक और मम्लूक (बन्दे) हैं तो किसी को भी अख़्तियार नहीं कि वह ख़ालिक और मालिक के बताए हुए क़ानून के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारे। कोई इन्सान खुद अपना नहीं है, न उस के अंग अपने हैं, वह तो ख़ालिक की मिल्कियत है। इन अंगों को क़ानूने इलाही के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करना बगावत है।

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलै०) को पैदा फ़रमाया, फिर उन के लिए हज़रत हव्वा (अलै०) को पैदा फ़रमाया, फिर उन से इन्सानों की नस्ल को जारी फ़रमाया। मर्द औरत में जो एक दूसरे की तरफ़ फ़ित्त्री मैलान है उस के लिए निकाह को रखा और निकाह के क़वानीन मुकर्रर फ़रमाए। जब मर्द औरत का निकाह हो जाए तो आपस में एक दूसरे से क़ानून शरीअत के मुताबिक़ फ़ायदा उठाना जायज़ है। इस में जहाँ नफ़िसयाती उभार का इन्तिज़ाम है वहाँ इन्सानों की नस्ल व नसब के पाक रखने और आपस में रहमत और शफ़क़त को बाकी रखने का और औरत को घर में इज़्ज़त व आबरू के साथ घर बैठे ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी होने का इन्तिज़ाम है। मर्द कमा कर लाए औरत घर में बैठे और खाए, लिबास भी शौहर के ज़िम्मे और रहने का घर भी, औलाद पैदा हो तो माँ-बाप की शफ़क़त में पले बढ़े। कोई चचा हो, कोई मामू हो, कोई दादा हो, कोई दादी हो, कोई ख़ाला हो, कोई फूफी, हर एक बच्चे को प्यार करे, गोद में ले और हर एक उस को अपना समझे।

सिलह रहमी के उसूल पर सब रिश्तेदार दूर के हों या करीब के आपस में एक दूसरे से मुहब्बत भी करें, माली मदद भी करें, निकाहों की मजलिसों में जमा हों या करीब के आपस में एक दूसरे से मुहब्बत भी करें, वलीमा की दअवतें खाएँ, अ़कीके हों, जब कोई मर जाए कफ़न-दफ़न में शरीक हों यह सब बातें निकाह से मुतअल्लिक़ हैं।

अगर निकाह न हो और औरत मर्द यूँ ही आपस में अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात पूरी करते रहें तो जो औलाद होगी वह किसी बाप की तरफ़ मन्सूब नहीं होगी और जब औरत ज़िनाकार है तो यह पता भी न चलेगा कि किस मर्द के नुत्फ़े से हमल करार पाया। जब कोई बाप ही नहीं है तो कौन बच्चे की परवरिश करे, बच्चे को कुछ मालूम नहीं मैं किस से पैदा किया हुआ हूँ मेरे माँ-बाप कौन हैं, चूँकि बाप ही नहीं इसलिए यूरोप वगैरह में बच्चों की वलदियत माँ के नाम से लिख दी जाती है। रिश्तेदारों की जो शफ़क़तें थीं बाप की ओर से हों या माँ की ओर से बच्चा उन सब से महसूस रहता है। ज़िनाकार औरतों के भाई-बहन भी अपनी बहन की औलाद को उस नज़र से नहीं देखते जो शफ़क़त भरी निकाह वाली माँ की औलाद को देखा जाता है। हर समझदार आदमी ग़ौर कर सकता है कि निकाह की सूरत में जो

औलाद हो उस की मुश्फ़क़ाना तर्बियत और माँ-बाप की आग़ोश में परवरिश होना इन्सानियत के इकराम का सबब है या ज़िनाकारों की औलाद की हुकूमतों वाली परवरिश, इस के मुक़ाबिले में कोई हैसियत नहीं रखती है? फिर जब निकाह का सिलसिला होता है तो माँ-बाप, लड़का और लड़की के लिए जोड़ा ढूँढ़ते हैं।

### आज़ाद लड़के और लड़कियाँ-

आज़ाद लड़के और लड़कियाँ नफ़्सानी ख़्वाहिशात पूरा करने के लिए दोस्त (फ़्रेंड) तलाश करते फिरते हैं। यह औरत की कितनी बड़ी ज़िल्लत और हिक़ारत है कि वह गली कूचों में कपड़े उतारे खड़ी रहे और मर्दों को अपनी तरफ़ लुभाये और जो शख्स उस की तरफ़ झुके उस को कुछ दिन के लिए दोस्त बना ले, फिर जब चाहे यह छोड़ दे और जब चाहे वह छोड़ दे। अब फिर दोनों तलाश यार में निकलें, क्या इस में इन्सानियत की मिट्टी पलीद नहीं होती? फिर चूँकि औरत का कोई शौहर नहीं होता और जिन को दोस्त बनाया जाता है वह क़ानूनन उस के खर्च के ज़िम्मेदार नहीं होते, इसलिए कि शौहर नहीं होता और जिन को दोस्त बनाया जाता है वह क़ानून उस के खर्च के ज़िम्मेदार नहीं होते, इसलिए औरतें खुद कमाने पर मजबूर होती हैं, शोरूमों पर खड़ी हुई माल सप्लाई करती हैं, रोड पर बैठ कर आने जाने वाले लोगों के जूतों पर पालिश करती हैं। अज़ब बात है कि औरतों को यह ज़िल्लत और रुस्वाई मन्ज़ूर है और निकाह कर के घर में मलिका बनकर बच्चों की माँ होकर इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी गुज़ारना नापसन्द हैं।

इस्लाम ने औरत को बड़ा मक़ाम दिया है, वह निकाह कर के इफ़्त व अज़मत की हिफ़ाज़त के साथ घर की चार दीवारी में रहे और उस का निकाह भी उस की मर्जी से हो, जिस में महेर भी उस की मर्जी से मुक़र्रर हो, फिर उसे माँ-बाप और औलाद और बहन भाई से मीरास भी मिले। यह ज़िन्दगी अच्छी है या दर बदर यार ढूँढ़ती फिरे और ज़िना करती फिरे यह बेहतर है? कुछ तो सोचना चाहिए।

इस तम्हीद के बाद अब एक समझदार आदमी के अन्दर ज़िना की बुराई और घृणा पूरी तरह आ जाती है। इस्लाम को यह ग़वारा नहीं है कि नसब ख़ल्लत-मल्लत हो, पैदा होने वाले बच्चों के बाप का पता न चले या कई शख्स दावेदार हो जाएँ कि यह बच्चा मेरे नुत्फ़े (वीर्य) से है।

जो मर्द औरत ज़िनाकारी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन से हरामी बच्चे पैदा होते हैं। इन्सानियत इस से ज़्यादा क्या गिरेगी कि बच्चा हो और उस का बाप कोई न हो? अहले नज़र उसे हरामी कहते हों या कम से कम यूँ समझते हों कि देखो वह हरामी आ रहा है। यह बात शरीफ़ों के लिए मौत है, लेकिन अगर तबई शराफ़त बाकी न रहे, दिलों में इन्सानियत का एहतिराम न हो, तो मुआशरे में हरामी हलाली होने की हैसियत ही बाकी नहीं रहती। जिन मुल्कों में ज़िनाकारी अ़ाम है उन के यहाँ हरामी होना कोई ऐब और हलाली होना कोई इज़्ज़त की बात नहीं। अब यह लोग चाहते हैं कि मुसलमान भी हमारी हँ में हँ मिला दें और कुर्आन के बागी होकर हमारी तरह ज़िनाकार हो जाएँ और ज़िनाकारी की सज़ा मन्सूख़ (निरस्त) कर दें, भला मुसलमान यह कैसे कर सकता है। अगर कोई मुसलमान ऐसा करेगा तो उसी वक़्त काफ़िर हो जाएगा।

इस्लाम जो पाकदामिनी का दीन है उस के मानने वाले शहवत परस्तों का साथ कहाँ दे सकते हैं, जिनाकारी में चूँकि शहवत परस्ती है इसलिए शहवत परस्त उसे छोड़ने वाले नहीं हैं। इस्लामी समाज ने जिना की सज़ा सख्त रखी है, फिर उस में फ़र्क़ रखा गया है। ग़ैर शादीशुदा मर्द औरत जिना कर लें तो उसे सौ कोड़े लगाए जाएँ और शादी शुदा शख्स जिना कर ले उस की सज़ा रज्म मुकर्रर की गई है। मर्द हो या औरत, जो लोग शहवत परस्त हैं उन के तक़ाज़ों पर काफ़िर मुल्कों की पार्लियामेन्टों ने न सिर्फ़ यह कि मर्द औरत के लिए आपसी रज़ामन्दी से जिना को क़ानूनन जायज़ करार दे दिया है बल्कि मर्द को भी इजाज़त दे दी है कि वह किसी मर्द की बीवी बनकर रहे। उन लोगों को न इन्सानियत की ज़रूरत है, न शराफ़त की, न नसब महफूज़ रखने की, न इज़्ज़त के साथ जीने की, न औरतों को अच्छा मक़ाम देने की, शहवत परस्त हैं शहवत के बन्दे हैं। इस शहवत परस्ती के नतीजे में जो एड्स वग़ैरह की नई-नई बीमारियाँ पैदा हो रही हैं जिन से सारा समाज प्रभावित होता जा रहा है और जिस की रोकथाम से हुकूमतें बेबस हैं उन पर नज़र नहीं, बस शहवत पूरी होनी चाहिए यह उन लोगों का मिज़ाज बन गया है।

यह जिना की कसरत, मौतों की ज़्यादती का भी सबब है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जिस क़ौम में ख़यानत ज़ाहिर हो जाए अल्लाह तआला उन के दिलों में रोअब डाल देते हैं और जिस क़ौम में जिना फैल जाए उस में मौत की कसरत होगी और जो लोग नाप-तौल में कमी करने लगें, उन का रिज़्क काट दिया जाएगा यानी रिज़्क कम मिलेगा और उस की बरकत ख़त्म कर दी जाएगी और जो क़ौम नाहक़ फ़ैसले करेगी उन में क़त्ल की कसरत होगी और जो क़ौम बद्अहदी करेगी उन पर दुश्मन मुसल्लत कर दिया जाएगा। (रवाहु मालिक फ़िल् मुवत्ता)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से यह भी मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब किसी आबादी में जिना और सूदख़ोरी का रिवाज हो जाए तो मानों उन लोगों ने अपनी जानों पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल कर लिया। (अल् तर्गीब वल् तर्हीब पेज नं० 278 भाग 3)

हज़रत मैमूना (रज़ि०) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, मेरी उम्मत बराबर ख़ैर पर रहेगी जब तक कि उन में हरामी बच्चों की कसरत न हो जाए सो जब उन में औलाद अल् जिना की कसरत हो जाएगी तो अल्लाह तआला उन पर जल्द ही आम अज़ाब भेज देगा।

(रवाहु अहमद, कमा फ़िल् तर्गीब पेज नं० 277 भाग 3)

‘सहीह बुख़ारी’ में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपना एक ख़्वाब बयान फ़रमाया, उस में बहुत सी चीज़ें देखीं उन में एक यह भी देखा कि तन्नूर की तरह एक सूराख़ है उस के ऊपर का हिस्सा तंग है और नीचे का हिस्सा वसीअ है, उस के नीचे आग जल रही है। जो लोग उस तन्नूर में हैं वह आग की तेज़ी के साथ ऊपर को आ जाते हैं, जब आग धीमी पड़ती है तो नीचे को वापस चले जाते हैं। यह लोग नंगे मर्द और नंगी औरतें हैं उन के चीख़ पुकार की आवाज़ें भी आ रही हैं। आप ने फ़रमाया कि उन के बारे में मैंने अपने साथियों (हज़रत जिब्रैल और हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम) से दर्याफ़्त किया कि यह कौन हैं? उन्होंने बताया कि यह जिनाकार मर्द और जिनाकार औरतें हैं।

## ज़िना तमाम मर्ज़ों का ज़रिया है

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक रोज़ हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हुए और इशार्द फ़रमाया कि ऐ मुहाजिरीन! पाँच चीज़ों में जब तुम मुब्तिला (Involve) हो जाओ और खुदा न करे कि तुम मुब्तिला हो तो पाँच चीज़ें ज़रूर ज़ाहिर होंगी (फिर उन की तफ़सील फ़रमाई।)

- (1) जब किसी क़ौम में खुल्लम-खुल्ला बेह्याई के काम होने लगें तो उन में ज़रूर ताऊन और ऐसी-ऐसी बीमारियाँ फैल जाएँगी जो उन के बाप दादों में भी कभी नहीं हुई।
- (2) और जो क़ौम नाप-तौल में कमी करने लगेगी क़हत और सख़्त मेहनत और बादशाह के जुल्म के ज़रिये उन की गिरफ़्त की जाएगी।
- (3) और जो लोग अपने मालों की ज़कात रोक लेंगे उन से बारिश रोक ली जाएगी (यहाँ तक कि) अगर चौपाये (गाय बैल गधा घोड़ा वगैरह) न हों तो बिल्कुल बारिश न हो।
- (4) जो क़ौम अल्लाह और उस के रसूल के अहद को तोड़ देगी, अल्लाह उन पर ग़ैरों में से दुश्मन मुसल्लत फ़रमा देगा जो उन की बाज़ मम्लूक चीज़ों पर कब्ज़ा कर लेगा।
- (5) और जिस क़ौम के सत्ताधारी लोग अल्लाह की किताब के ख़िलाफ़ फैसले देंगे (और अहक़ामे खुदावन्दी में अपना अख़्तियार व इन्तिखाब जारी करेंगे) तो वह आपसी जंग में मुब्तिला (Involve) होंगे।  
(इब्ने माजा)

इस हदीस पाक में जिन गुनाहों पर उन के ख़ास नतायज का ज़िक्र फ़रमाया है, अपने नतायज के साथ इस ज़मीन पर बसने वाले इन्सानों में मौजूद हैं। सब से पहली बात जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इशार्द फ़रमाई वह यह है कि जिस क़ौम में खुल्लम खुल्ला बेह्याई के काम होने लगें उन में ज़रूर ताऊन (ख़ास बीमारी) फैलेगा और ऐसी-ऐसी बीमारियाँ बकसरत ज़ाहिर होंगी जो उन के बाप दादाओं में कभी न हुई होंगी।

आज बेह्याई कितनी आम है, सड़कों पार्कों क्लबों और नाम निहाद क़ौमी और सकाफ़ती प्रोग्रामों में, उरुसों और मेलों में, होटलों और दअवती पार्टियों में किस क़दर बेह्याई के काम होते हैं, उस के ज़ाहिर करने और बताने की ज़रूरत नहीं है, जानने वाले बख़ूबी वाकिफ़ हैं। फिर इस बेह्याई और फुहशकारी के नतीजे में वबाई मर्ज़ ताऊन, हैज़ा, एड्स फैलते रहते हैं और ऐसे-ऐसे मर्ज़ सामने आ रहे हैं जिन के तबई अस्बाब और इलाज के समझने से डाक्टर बेबस हैं, जिस क़दर डाक्टरी तरक्की कर रही है उसी क़दर नये मर्ज़ ज़ाहिर होते जाते हैं। इन मर्ज़ों के मौजूद होने का सबब जो सच्चे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया है यानी बेह्याईयों का फैलना जब तक वह ख़त्म न होगा, नये-नये मर्ज़ों का आना भी ख़त्म नहीं हो सकता। इस दौरे के लोगों का अब यह तरीक़ा हो गया है कि उन के नज़्दीक शहवत परस्ती ही सब कुछ है, ज़िन्दगी का खुलासा शहवत परस्तों के नज़्दीक सिर्फ़ यही रह गया है कि



मर्द और औरत बिना किसी शर्त और बिना किसी पाबन्दी के आपस में एक दूसरे से शहवत पूरी किया करें।

पहले तो बाज़ देशों ने इस किस्म के क़ानून बना दिये थे, लेकिन अब वह कान्फ़्रेंस बुला-बुला कर सारे अ़ालम के इन्सानों को इस बेहूदगी में लपेटना चाहते हैं। अस्त में बात यह है कि इस किस्म के कान्फ़्रेंस करने वाले इन्सानियत खो ही बैठे हैं।

## लज़ज़त चाहिए इन्सानियत नहीं

यह लोग इस मक़ाम पर उतर आए हैं कि हम इन्सान न रहें तो क्या हर्ज है? मज़ा तो मिलेगा। इन्सान बनने और इन्सानी तकाज़े पूरा करने में नफ़्स की आज़ादी में फ़र्क़ आता है। लिहाज़ा इन्सानियत की ज़रूरत क्या है? जानवर भी तो दुनिया में रहते हैं और जीते हैं हम भी जानवर हो गये तो क्या हुआ? यह बात लोग ज़बान से कहें या न कहें उन का तरीक़े कार और रंग ढंग ऐसा ही है। इसी को कुर्आन मजीद में फ़रमाया **وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَيَتَمَنَّوْنَ أَنْ يَكُونُوا كَمَا كُنَّ الْإِنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ**

(और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह ऐसे मुतमतेअ होते हैं और खाते हैं जैसे जानवर खाते हैं और दोज़ख़ की आग उन का ठिकाना है।)

इन्सान को जो अल्लाह तआला ने अक्ल, समझ और जो इज़ज़त बख़्शी उस इज़ज़त की वजह से और उसे ऊँचा रखने के लिए जो अहक़ाम (निर्देश) अता फ़रमाए इस के लिए कुछ चीज़ों को हराम करार दिया और कुछ चीज़ों को हलाल। मर्द और औरत का आपस में मिलना भी हलाल है, लेकिन निकाह करने के बाद, फिर उस निकाह के भी क़ानून हैं। तमाम अम्बिया-ए-किराम (अलै०) के निकाह करते थे सिवाय हज़रत यहया और हज़रत ईसा (अलै०) के कि इन दोनों हज़रात ने न निकाह किया, न औरतों से सम्भोग किया। अफ़सोस है कि हज़रत ईसा (अलै०) के इत्तिब़ा का जो क़ौमें दावा करने वाली हैं वह उन की तरफ़ बग़ैर निकाह के औरतों से फ़ायदा उठाने का दावा करती हैं।

हाँ, हज़रत ईसा (अलै०) आख़िरी ज़माने में जब आसमान से तशरीफ़ लाएँगे उस वक़्त दज्जाल को क़त्ल करेंगे और निकाह भी फ़रमाएँगे, फिर आप के औलाद भी होगी। (इब्ने अल् जौज़ी फ़ी किताबु वफ़ा)

जब वह तशरीफ़ लाएँगे तो सलीब को तोड़ देंगे और ख़िन्ज़ीर को क़त्ल कर देंगे वह इस तरह अपने अमल से दीन नसरानियत को बातिल करार देंगे। (रवाहु मुस्लिम)

**फ़ायदा-** कुर्आन मजीद में आमतौर पर औरतों को मर्दों ही के साथ शरीक कर के अहक़ामे शरअिया बताए गये हैं। जैसे- जहाँ-जहाँ 'या अय्युहल्ल लज़ीना आमनू' लाया गया वहाँ मर्दों का ज़िक़र है। जैसा कि **إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ** और जैसे **وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا** लेकिन ज़िना की हद (सज़ा) बयान करते हुए दो बातें ज़्यादा काबिले तवज्जोह हैं। पहली बात तो यह कि यहाँ केवल मुज़क्कर (पुरुष) नहीं प्रयोग हुआ है बल्कि शब्द 'अल् ज़ानिया' मुस्तक़िल ज़िक़र किया गया है। दूसरा 'अल् ज़ानियतु' को 'अल् ज़ानी' पर पहले रखा गया है।

अब किसी भी मर्द या औरत को यह शुब्हा करने की गुन्जाईश नहीं रही कि शायद ज़िना की हद्द (सज़ा) जारी करना मर्दों ही के साथ ख़ास हो। कुर्आन मजीद के अन्दाज़े बयान से यह भी स्पष्ट हो गया कि औरतों में ज़िना की चाहत बनिस्बत मर्दों के ज़्यादा है, उन की हिफ़ाज़त का ज़्यादा एहतिमाम किया जाए। चोरी में मर्द पेश-पेश होते हैं, इसलिए सूर: माइदा की आयत में शब्द 'अल् सारिक' को पहले फ़रमाया और ज़िना की तरफ़ मायल होने में औरतों का रुझान ज़्यादा होता है, इसलिए हद्द ज़िना बयान फ़रमाते हुए पहले शब्द 'अल् ज़ानिया' फ़रमाया।

**फ़ायदा-** शरीअते इस्लामिया ने जो ज़िना की सज़ा मुकर्रर फ़रमाई है बज़ाहिर यह सख़्त मालूम होती है और सख़्ती इसलिए है कि लोगों की इज़्ज़त व आबरू महफूज़ रहे और इस जुर्म की तरफ़ लोगों का मैलान न हो। अगर किसी ग़ैर मुहसिन को लोगों की एक जमाअत के सामने कोड़े लगा दिये जाएँ और किसी मोहसिन को संगसार कर दिया जाए और उस की शोहरत हो जाए तो सालों तक दूर-दराज़ इलाकों के लिए एक ही को सज़ा देना इबरत का सामान बन जाएगी।

इस्लाम ने अव्वल तो ऐसे अहक़ाम बताए हैं जिन पर अमल करने से ज़िना का सादिर होना ही आसान नहीं। नज़रों पर पाबन्दी है, औरतों की बेहिजाबी पर पाबन्दी है, ना महरमों से पर्दा है, महरम बुरे ख़याल वाले से भी पर्दे का हुक्म है। इन सब बातों के बावजूद ज़िना हो जाए तो उस की सज़ा के लिए ऐसी शर्तें लगाई हैं जिन का वजूद में आना ही मुश्किल है।

अगर चार गवाह, गवाही दे दें कि हम ने फ़लों मर्द व औरत को इस तरह ज़िना करते देखा जैसे सुर्मादानी में सलाई हो तब ज़िना का सुबूत होगा। ज़ाहिर है ऐसे चार गवाह मिलना आम हालत में नामुम्किन है। हाँ, अगर कोई मर्द औरत ज़िना का इक़्रार कर लें तो उस पर सज़ा जारी होगी, लेकिन इस में भी अमीरुल् मोमिनीन और काज़ी को हुक्म दिया गया है कि मामूली से शुब्हात पर हद्द को रोक दें। मक्सूद लोगों की पिटाई करना और संगसार करना नहीं है, बल्कि ज़िना से बचाना मक्सूद है

इस सब के बावजूद फिर भी कोई शख्स ज़िना के जुर्म में पकड़ा जाए और उसूले शरीअत के मुताबिक़ उस का ज़िना साबित हो जाए तो अमीरुल् मोमिनीन और काज़ी उस पर हद्द जारी कर देगा क्योंकि यह शख्स मुसलमानों के मुआशरे का एक ऐसा अंग है जो बिल्कुल ही सड़ चुका है, जिसे काटे बग़ैर जिस्म की इस्लाह मुम्किन नहीं होती, लोग ज़िना की सज़ा की सख़्ती को तो देखते हैं उस सज़ा की हिक्मतों को नहीं देखते।

**3**

الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

कुछ हज़रात ने यह मतलब बताया है कि किसी ज़ानी को ज़ानिया या मुशिरका के अलावा किसी औरत से निकाह करने की इजाज़त नहीं। इसी तरह ज़िनाकार औरत को किसी ग़ैर ज़ानी और ग़ैर मुशिरक से निकाह करने की इजाज़त नहीं और मोमिनीन के लिए हराम है कि किसी ज़ानिया या मुशिरका से निकाह करे।

जिन हज़रात ने यह मतलब बताया है साथ ही यह भी फ़रमा दिया कि यह हुक्म हिजरत के शुरुआती दौर में था, बाद में ज़ानी और ज़ानिया के बारे में तो यह हुक्म मन्सूख हो गया और मुशरिक और मुशरिका के बारे में बाकी रहा, यानी ज़ानी मर्द ग़ैर ज़ानी औरत से निकाह कर सकता है जबकि मोमिन हों और किसी मोमिन का मुशरिक औरत से और किसी मोमिना का किसी मुशरिक से जायज़ नहीं।

इन हज़रात ने फ़रमाया है कि आयत करीमा **وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ** से इस आयत का हुक्म मन्सूख हो गया। बाज़ हज़रात ने आयत का नुज़ूल बताते हुए बाज़ किस्से भी नक्ल किये हैं और यह किस्से नक्ल फ़रमा कर जो कुछ फ़रमाया है वह भी पहले कौल मन्सूख को माना है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से एक रिवायत है कि हज़रत मुजाहिद, अता बिन अबी रिबाह, क़तादा, जुहरी और शअबी (ताबिअीन किराम) ने फ़रमाया कि जब मुहाजिरीन मदीना मुनव्वरह आए और उन के पास अमवाल नहीं थे, तंग दस्त भी थे और कुम्बा व कबीला भी न था तो उस वक़्त उन्हें माल और ठिकाने की ज़रूरत थी, मदीना मुनव्वरह में फ़ाहिशा औरतें थीं जो माल लेकर ज़िना करती थीं, उन के पास पैसा भी बहुत था। यह फुकरा मुहाजिरीन जो मक्का मुअज़्ज़मा से आए थे उन्होंने उन से निकाह करने के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त माँगी, जिस में मस्लहत यह थी कि यह औरतें उन पर खर्च करेंगी, इस पर यह आयत नाज़िल हुई और उन औरतों से निकाह करने से मना फ़रमा दिया। इसी तरह के और भी कुछ किस्से हैं जो हज़रत इक्रिमा से मन्कूल हैं। (मुअलिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 323 भाग 3)

**4-5**

**وَالَّذِينَ يَزْمُونَ الْبُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شَهَدَاءَ فَأُولَٰئِكَ جُنُودُهُمْ كُفَرَاءٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۖ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۗ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝**

### पाक-दामन औरतों पर आरोप की सज़ा

इस्लाम में मोमिन मर्द व औरत की आबरू की बड़ी अहमियत है। अगर कोई मर्द या औरत किसी पाक दामन मर्द या औरत को साफ़ लफ़्ज़ों में ज़िना की तोहमत लगा दे, जैसे यूँ कह दे कि ऐ ज़ानी! ऐ रन्डी! ऐ फ़ाहिशा! और जिसे आरोप लगाया है वह काज़ी के यहाँ मुताल्बा करे कि फ़लों शख्स ने मुझे ऐसे-ऐसे शब्द कहे हैं तो काज़ी उसे अस्सी कोड़ों की सज़ा देगा।

फुक्हा की इस्तिलाह (परिभाषिक रूप) में इस को 'हद्दे क़ज़फ़' कहते हैं। यह कोड़े अलग-अलग तौर पर अज़ा ज़िस्म पर मारे जाएँगे और उस के कपड़े न उतारे जाएँगे जो आमतौर से पहने जाते हैं। अल्बत्ता रुई के कपड़े या पोस्तीन या ऐसी चीज़ जो चोट लगने से रुकावट हो उस को उतार लिया जाएगा।

आरोप लगाने वाले की यह तो जिस्मानी सज़ा हुई, इस के अलावा एक सज़ा और भी है और वह यह है कि जिस शख्स को हद्दे क़ज़फ़ (सज़ा) लगाई गई उस शख्स की गवाही कभी भी किसी बारे में भी मक्बूल नहीं होगी। अगर उस ने तौब: कर ली तो तौब: से गुनाह तो माफ़ हो जाएगा, लेकिन गवाही के

काबिल फिर भी न माना जाएगा। इस का यह इज़्ज़त का मक़ाम हमेशा के लिए छीन लिया गया कि वह कभी किसी मामले में गवाह बने।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के नज़्दीक आयत का यही मतलब है **إِنَّ الَّذِينَ تَابُوا** जो इससे अलग है, उन के नज़्दीक **وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا** से अलग नहीं है बल्कि **وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ** से अलग है यानी तौब: करने से फ़िस्क का हुक्म ख़त्म हो जाएगा, लेकिन गवाह बनने के बुलन्द मक़ाम से हमेशा के लिए मह़रूम हो गया।

**6-10**

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ  
إِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ۝ وَيَذَرُوهَا الْعَذَابَ  
أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ  
الصّٰدِقِينَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝

## लिअान का हुक्म

कोई मर्द या औरत अगर किसी मर्द या औरत को ज़िना की तोहमत लगा दे और अपनी बात को सच्चा साबित करने के लिए चार गवाह पेश न कर सके तो उस तोहमत लगाने वाले पर हद्दे क़ज़फ़ जारी होगा यानी उसे अस्सी कोड़े लगाए जाएंगे (जिस की व्याख्या ऊपर गुज़र चुकी है) लेकिन अगर कोई मर्द अपनी बीवी के बारे में यूँ कहे कि इस ने ज़िना किया है और औरत उस को झुठलाए और शौहर के पास चार गवाह न हों, तो गवाह न होने की वजह से शौहर को हद्दे क़ज़फ़ नहीं लगाई जाएगी बल्कि अमीरुल् मोमिनीन या काज़ी, लिअान का हुक्म देगा।

यह शब्द 'लअनत' से लिया गया है और मतलब यह है कि मर्द औरत दोनों आपस में कसमें खाएँ और हर एक ऐसे शब्द कहे जिस से खुद उस की अपनी ज़ात पर लअनत पड़ती हो। जब किसी मर्द ने अपनी बीवी के बारे में यूँ कहा कि इस ने ज़िना किया है या यूँ कहा कि यह जो बच्चा पैदा हुआ है मुझ से नहीं है तो अब उस पर लाज़िम है कि चार गवाह पेश करे।

अगर गवाह पेश करने से अज़िज़ हो (और उमूमन ऐसा ही होता है क्योंकि ज़िना गवाहों के सामने नहीं किया जाता) और औरत यूँ कहे कि इस ने मुझे तोहमत लगाई है तो अमीरुल् मोमिनीन या काज़ी शौहर से कहेगा कि तू 'लिअान' कर दे और यह इक़्रार कर कि तूने झूठा आरोप लगाया है। अगर उन दोनों में से किसी बात पर राज़ी न हो तो काज़ी उसे बन्द कर देगा, यहाँ तक कि लिअान करने पर राज़ी हो जाए या यूँ कहे कि मैंने झूठी तोहमत लगाई है।

अगर इस दूसरी बात का इक़्रार करे तो फिर उसे हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी, अगर वह अपने नफ़्स को नहीं झुठलाता और उसे बराबर इस बात पर इस्सर है कि मेरी बीवी ने ज़िना किया है तो काज़ी दोनों के दर्मियान 'लिअान' करने का हुक्म देगा।

## लिआन का तरीका-

लिआन का तरीका यह है कि पहले मर्द खड़ा होगा और चार मर्तब: यूँ कहेगा:-

اشهد بالله اني لمن الصادقين فيما رميت هذه من الزنا

“मैं अल्लाह को गवाह बनाकर कसम खाता हूँ कि मैं इस औरत के बारे में जो कह रहा हूँ कि इस ने ज़िना किया है, मैं इस बात में सच्चा हूँ”।

फिर पाँचवीं मर्तब: यूँ कहे *لَعْنَتُ اللّٰهُ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ* فيما رمى هذه من الزنا (इस औरत के बारे में जो मैंने कहा है कि इस ने ज़िना किया, इस बारे में अगर मैं झूठा हूँ तो मुझ पर अल्लाह की लअनत हो।)

पाँचों मर्तब: जब शब्द *هذه* (इस औरत) के शब्द अदा करे तो हर मर्तब: औरत की तरफ़ इशारा करे। जब मर्द पाँचों मर्तब: इन शब्दों को कह चुके तो उस के बाद औरत चार मर्तब: कहे:-

اشهد بالله انه لمن الكاذبين فيما رمانى به من الزنا

(मैं अल्लाह को गवाह बनाकर कसम खाती हूँ कि इस मर्द ने जो मुझे ज़िना की तोहमत लगाई है, इस बारे में यह झूठा है।)

फिर पाँचवीं मर्तब: यूँ कहे *ان غضب الله عليها ان كان من الصادقين فيما رمانى به من الزنا* (मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो, अगर यह अपनी इस बात में सच्चा हो जो इस ने मेरी तरफ़ ज़िना की निस्बत की है।)

जब दोनों लिआन कर लें तो अब काज़ी इन दोनों के दर्मियान तफ़रीक़ (अलैहिदगी) कर देगा और यह तफ़रीक़ (अलगाव) करना ‘तलाक़ बाइना’ के हुक़म में होगा और अगर लिआन इसलिए था कि नौ मौलूद बच्चा के बारे में शौहर ने यूँ कहा था कि यह मेरा बच्चा नहीं है तो लिआन के बाद तफ़रीक़ (अलगाव) करने के साथ-साथ काज़ी उस बच्चे का नसब उस मर्द से ख़त्म कर देगा और यह हुक़म लागू कर देगा कि यह बच्चा अपनी माँ का है, उस औरत के शौहर का नहीं। लिआन करने के बाद अगर शौहर अपने को झुठला दे यानी यूँ कह दे कि मैंने झूठा आरोप लगाया था तो फिर काज़ी उसे ‘हदे कज़फ़’ यानी अस्सी कोड़े लगाएगा।

हदीस की किताबों में ‘हिलाल इब्ने उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हुमा’ के अपनी-अपनी बीवी से लिआन करने का ज़िक्र मिलता है।

‘सहीह बुख़ारी’ में पेज नं० 799 व पेज नं० 800 और ‘सहीह बुख़ारी’ किताबुल तफ़सीर पेज नं० 695 में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि हिलाल बिन उमय्या ने जो अपनी बीवी के बारे में यूँ कहा कि इस ने फ़ल्लाँ शख़्स से ज़िना किया है तो यह आयात *وَالَّذِينَ يَزْمُونَ اَزْوَاجَهُمْ* नाज़िल हुई।

लिआन की कुछ शरायत हैं, जो फ़िक़: की किताबों में लिखी हैं। उन में से एक यह है कि बीवी नाबालिगा न हो, दीवानी न हो और शौहर नाबालिग़ और दीवाना न हो और अगर गूंगा शौहर इशारों से अपनी बीवी को आरोप लगा दे तो उस की वजह से काज़ी लिआन का हुक़म नहीं देगा।



## आयत नं० 11 से 26 तक

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِفْكِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا ۖ وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشَّهَدَاءِ ۖ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي هَذِهِ شَيْءٌ ۚ وَرَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَالَّذِينَ لَا يَدْرُونَ الْبِرَّ وَالْإِجْرَ لِمَسْأَلَتِهِمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسَّبِّحَةِ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۝ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا ۖ سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۚ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۚ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوبَ الشَّيْطَانِ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوبَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۚ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغُفْلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَنْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ يَوْمَئِذٍ يُؤْفِكُهُمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بَرُّهُمُ الْغَيْبَاتِ وَالظَّالِمَاتِ لِلظَّالِمِينَ ۚ أُولَٰئِكَ مَكْرُؤٌ مَّا يَقُولُونَ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَزَكْرٌ كَرِيمٌ ۝

### अनुवाद-

(11) जो लोग तोहमत गढ़ लाए हैं तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है, तुम उसे अपने लिए बुरा मत समझो, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही है, उनमें से हर व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिसने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा बोझ लिया, उसके लिए बड़ा अज़ाब है। (12) ऐसा क्यों न हुआ! कि जब तुम ने वह बात सुनी थी, तब मोमिन मर्द और मोमिन औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और (क्यों न) कहा कि “यह तो खुली तोहमत (आरोप) है?” (13) यह (लोग) अपने कहने के अनुसार चार गवाह क्यों न लाए? तो जब यह गवाह नहीं लाए, तो बस यह अल्लाह के नज़दीक झूठे ही हैं; (14) और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आखिरत में अल्लाह की मेहरबानी और उसका रहम न होता, तो जिन कामों में तुम (लोग) पड़ गये थे उसकी वजह से तुम पर बड़ा अज़ाब आ जाता। (15) जब तुम अपनी ज़बानों से इसका एक-दूसरे से ज़िक्र कर रहे थे और अपने मुँह से वह बात कह रहे थे, जिसके बारे में तुम्हें कुछ भी इल्म न था, और तुम उसे एक हल्की बात समझ रहे थे; हालाँकि अल्लाह के नज़दीक वह बड़ी (भारी) बात थी। (16) और जब तुमने यह बात सुनी थी तो तुमने क्यों न कह दिया “हमें ऐसी बात ज़बान पर लाना अच्छा नहीं लगता, तू पाक है यह एक बड़ी तोहमत है।” (17) अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, कि फिर कभी ऐसा न करना! अगर तुम मोमिन हो। (18) और अल्लाह तो आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है, और अल्लाह तो जानने वाला, हिकमत वाला है। (19) जो लोग

चाहते हैं कि ईमान वालों में बेहयाई फैले, उनके लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (20) और अगर अल्लाह का फज़ल (अनुग्रह) और उसका रहम तुम पर न होता, और अल्लाह तो है ही बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला। (21) ऐ ईमान वालो! शैतान के नक्शे क़दम (पद चिन्हों) पर न चलो, और जो कोई शैतान के नक्शे-क़दम पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बुराई का हुक्म देगा, और अगर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी दया न होती तो तुममें से कोई व्यक्ति भी पाक न हो सकता, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (22) और तुममें जो लोग बड़ाई वाले और कुदरत (सामर्थ्य) वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि रिश्तेदारों और मोहताजों और अल्लाह की राह में हिज़रत करने वालों की मदद नहीं करेंगे, उन्हें चाहिए कि माफ़ करें और दरगुज़र से काम लें, क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे? और अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (23) जो लोग शरीफ़ पाकदामन (बुरे कामों से) बेख़बर ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में लानत की गयी है और उनके लिए बड़ा अज़ाब है; (24) जिस दिन उनकी ज़बानें और हाथ और पैर उनके (ख़िलाफ़) गवाही देंगे, जो कुछ वे करते थे; (25) उस दिन अल्लाह उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा जिसके वे हक़दार हैं, और जान लेंगे कि बेशक अल्लाह ही (हक़ है और) हक़ को स्पष्ट करने वाला है। (26) ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लिए हैं, और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लिए, और पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए, और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए, यह लोग इन बातों से बरी हैं, उनके लिए माफ़ी, और इज़ज़त की रोज़ी है।

## आयत नं० 11 से 26 तक की व्याख्या

**11** إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لَكِنِّ امْرِئًا مِّنْهُمْ مَّا الْكَسَبَ مِنَ الْإِفْكِ  
وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

### हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बराअत का ए़लान

इन आयत में एक वाक़िआ का ज़िक्र है और इस मौक़े पर जो मुनाफ़िक्कीन ने बुरा किरदार दिखाया उस का ज़िक्र है और कुछ मुसलमान जो अपनी सादगी में उन के साथ हो लिए और कुछ मुसलमान जिन्होंने एहतिथात से काम न लिया, उन को नसीहत फ़रमाई गई है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) सफ़र में तशरीफ़ ले जाते और अज़्वाजे मुतहहरात (बीवियों) में से किसी को साथ ले जाना होता तो कुरअ डाल लेते थे। 6 हिज़्री में आप ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक के लिए तशरीफ़ ले गये, उस सफ़र में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप के साथ थीं, यह एक डोली में सवार रहती थीं। डोली एक किस्म का बड़ा कार्टून जैसा होता था जिस में एक दो आदमी बैठ सकते थे उस को ऊँट की कमर पर रख दिया जाता था।

वापसी में जब मदीना तय्यिबा के करीब पहुँचे और थोड़ी सी दूरी रह गई तो आख़िरी रात में रवानगी



का एलान कर दिया। यह एलान रवानगी से पहले कर दिया जाता था, ताकि अहले ज़रूरत अपनी ज़रूरतों से फ़ारिग़ होकर तैयार हो जाएँ।

हज़रत आइशा सिदीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब एलान सुना तो क़ज़ा-ए-हाजत के लिए थोड़ी दूर चली गई (जंगल में तो ठहरे हुए थे जिन में मर्द भी थे इसलिए दूर जाना मुनासिब समझा) वापस आई तो देखा कि गले में जो हार था वह कहीं गिर गया है, उस को तलाश करने के लिए निकली जिस की वजह से वापसी में देर हो गई। अब जो अपनी जगह वापस पहुँची तो क़ाफ़िला रवाना हो चुका था।

ऊँट पर डोली रखने वालों को यह अन्दाज़ा नहीं हुआ कि यह ख़ाली है जिसे हमेशा उठाकर ऊँट पर रख देते थे, उसी तरह उन्होंने उस वक़्त भी डोली को ऊँट पर रख दिया, उन्हें यह ख़याल न आया कि इस में उम्मुल मोमिनीन है या नहीं हैं, जिस की वजह खुद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह बयान फ़रमाया कि हम को ज़्यादा ख़ुराक खाने को नहीं मिलती थी, इसलिए बदन हल्का था ज़्यादा बोझल नहीं था, डोली उठाने वालों को ख़ाली होने का एहसास न हुआ और उन के ऊँट को क़ाफ़िला के दूसरे ऊँटों के साथ रवाना कर दिया।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी जगह तशरीफ़ लाई तो देखा कि क़ाफ़िला मौजूद नहीं है। अल्लाह तआला ने उन को समझ दी, वह चादर ओढ़ कर वहीं लेट गई और यह ख़याल किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब देखेंगे कि मैं डोली में नहीं हूँ तो मुझे तलाश करने के लिए यहीं वापस आएँगे, इधर-उधर कहीं जाने में ख़तूरा है कि आप को तलाश करने में दुश्वारी हो।

‘सफ़वान बिन मुअत्तल सुलैमी’ एक सहाबी थे, जिन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस काम पर मुक़र्रर फ़रमाया था कि लश्कर के आगे बढ़ने के बाद आया करें (इस में यह मस्लहत थी कि किसी की चीज़ गिरी पड़ी हो तो उठा कर लेते आएँ) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब वह वहाँ पहुँचे जहाँ मैं लेटी थी तो उन्हें उन्होंने मुझे वहाँ देखकर ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन’ पढ़ा, उन की इस आवाज़ से मेरी आँख खुल गई और मैंने अपनी चादर से चेहरा ढांक लिया (इस से उन जाहिलों की बात रद्द होती है जो कहते हैं कि चेहरे का पर्दा नहीं है) वह क़रीब आए और अपनी ऊँटनी को बिठा दिया मैं ऊँटनी के अगले पैर पर अपना क़दम रख कर सवार हो गई। इस के बाद वह ऊँटनी की महार पकड़े हुए आगे-आगे पैदल चलते रहे, दोपहर के वक़्त मैं लश्कर के पास पहुँच गई उस वक़्त लश्कर पड़ाव डाल चुका था। लश्कर के साथियों में ‘अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल’ भी था, यह मुनाफ़िक़ों का सरदार था, इस ने तोहमत लगा दी (कि यह दोनों जानबूझकर पीछे रह गये थे।)

इस बात के प्रचार में इस का बड़ा हाथ था, इस के साथ दूसरे मुनाफ़िक़ भी थे और सच्चे मुसलमानों में से दो मर्द और एक औरत भी इस बात में शरीक हो गये थे। मर्द तो ‘हस्सान बिन साबित’ और ‘मुस्तह बिन असासा’ थे और औरत ‘हम्ना बिनत जुहश’ थीं यह उम्मुल् मोमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन थीं।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान फ़रमाया कि हम मदीना मुनव्वरह पहुँच गये, लेकिन मुझे

किसी बात के बारे में मालूम न था, मैं बीमार हो गई तो मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ से महसूस किया कि पहले से आप तशरीफ लाते तो घर के दूसरे लोगों से पूछ लेते थे कि उस का क्या हाल है? मुझे मालूम नहीं था कि बाहर क्या बातें चल रही हैं। इसी दौरान यह हुआ कि मैं 'मुस्तह' की वालिदा के साथ रात को क़ज़ा-ए-हाजत के लिए निकली, उस वक़्त तक घरों के करीब बैतुल ख़ला (Tiolet) नहीं बनाये गये थे।

क़ज़ा-ए-हाजत के लिए आबादी से बाहर रात के वक़्त मैं जाया करती थी, मैं मुस्तह की 'वालिदा' के साथ जा रही थी कि चादर में उन का पांव फंस गया, उस पर उन की ज़बान से यह शब्द निकल गये कि 'मुस्तह' हलाक हो। मैंने कहा यह तो आप ने ऐसे शख्स के लिए बुरे शब्द कह दिये जो ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक हुआ था। यह सुनकर कहने लगीं क्या तूने सुना है जो लोग कह रहे हैं? (उन के कहने वालों में 'मुस्तह' भी हैं) इस के बाद उन्होंने मुझे तोहमत लगाने वालों की बातें बताई जिस से मेरे मर्ज़ में और ज़्यादा बढ़ौतरी हो गई।

जब मैं अपने घर वापस आई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ लाए और आदत के अनुसार उसी तरह दूसरे लोगों से दर्याफ़्त फ़रमाया कि उस का क्या हाल है? मैंने अर्ज़ किया मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं अपने माँ-बाप के यहाँ चली जाऊँ। आप ने इजाज़त दे दी तो मैं अपने मैके चली आई।

वालिदा से मैंने पूछा कि लोगों में क्या बातें चल रही हैं? उन्होंने कहा कि बेटी तुम तसल्ली रखो, जिस औरत की सौतनें होती हैं उस के साथ (हसद में) ऐसा हुआ ही करता है। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! वाकई ऐसा हो रहा है? यह बातें उड़ाई जा रही हैं?

इस के बाद मैं रात भर रोती रही, ज़रा देर भी आँसू न थमे और न मुझे नींद आई। इस के बाद रोते-रोते यह हाल हो गया कि मैंने समझ लिया कि मेरा जिगर फट जाएगा। इसी परेशान हाली में रात-दिन गुज़रते रहे और एक महीना तक रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर मेरे बारे में कोई व्ह्य नाज़िल नहीं हुई। मैं समझती थी कि अल्लाह तआला मुझे ज़रूर बरी फ़रमा देगा और ख़याल यूँ था कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) कोई ख़्वाब देख लेंगे जिस में अल्लाह तआला मुझे बरी फ़रमा देंगे, मैं अपने आप को इस लायक नहीं समझती थी कि मेरे बारे में भी कुर्आन मजीद में कोई आयत नाज़िल होगी।

एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) हमारे पास बैठे हुए थे कि आप (सल्ल०) पर व्ह्य नाज़िल हो गई और आप को पसीना आ गया जैसा कि व्ह्य के वक़्त आया करता था। यह पसीना ऐसा होता था कि सर्दी के दिनों में भी पसीने के क़तरे टपक जाते थे जो मोतियों की तरह होते थे। जब आप (सल्ल०) की यह हालत दूर हुई तो मैंने देखा कि आप (सल्ल०) मुस्कुरा रहे थे, आप ने सब से पहले यह फ़रमाया कि आइशा! अल्लाह की तअरीफ़ कर अल्लाह ने तेरी बराअत (निजात) नाज़िल फ़रमा दी, उस वक़्त जो आयतें नाज़िल हुईं उन की शुरुआत **إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ** से थी।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "किसी शख्स के झूठा होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि हर सुनी सुनाई बात दूसरे से नकल कर दे।" (मुस्लिम)

‘मुस्तह’ जो तोहमत लगाने वालों में शरीक हो गये थे, यह हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के रिश्तेदार थे, (मुस्तह की वालिदा सल्मा हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की ख़ालाज़ाद बहन थीं) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) उन का ख़याल रखते थे और उन पर माल ख़र्च किया करते थे। जब हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बराअत (आरोप से बरी होने) की आयात नाज़िल हुई तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने क़सम खा ली कि अल्लाह की क़सम! मैं अब मुस्तह पर कभी भी ख़र्च न करूँगा। इस पर आयते शरीफ़ा وَلَا يَأْتِلُ أَهْلُ الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ (आख़िर तक) नाज़िल हुई। इस पर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं कभी भी उस का ख़र्चा नहीं रोकूँगा।

(सहीह बुख़ारी भाग 1 पेज नं० 364 व भाग 2 पेज नं० 594 व भाग 2 पेज नं० 696)

जो आयात हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बराअत में नाज़िल हुई उन की शुरुआत **إِنَّ الدِّينَ جَاءُؤُ بِالْإِفْكِ** से है जिन में यह बताया गया है कि जिन लोगों ने आरोप लगाया है यह तुम ही में का एक ग़िरोह है। हदीस में इस बारे में अब्दुल्लाह बिन उबई जो मुनाफ़िकों का सरदार और मुख़्तलस मुसलमानों में ‘हज़रत हस्सान बिन साबित’ ‘हज़रत मुस्तह बिन असासा’ और ‘हज़रत जमना बन्ते हबिश्’ के नाम आए हैं। उन को **عَصِيَّةٌ مِّنْكُمْ** फ़रमाया कि तुम में से एक जमाअत ने तोहमत लगाई है।

‘अब्दुल्लाह बिन उबई’ मुनाफ़िकों का सरदार जो दिल से मुसलमान नहीं था, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर इस्लाम का दावा करने वालों में से था, इसलिए लफ़्ज़ **مِّنْكُمْ** में उसे भी शामिल कर लिया गया। (मुनाफ़िकीन पर ज़ाहिरी तौर पर इस्लाम के हुक्म जारी होते थे और वह भी अपने को अहले ईमान में शुमार करते थे) बात के फैलाने में तो अब्दुल्लाह बिन उबई आगे-आगे था और सादगी की वजह से यह तीन मुख़्तलस मुसलमान भी शरीक हो गये थे। बाद में तीनों ने तो तौब: कर ली थी, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उबई और दूसरे मुनाफ़िकीन अपनी बात पर जमे रहे उन्होंने तौब: नहीं की।

**لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ** (तुम इस तोहमत (आरोप) वाली बात को अपने लिए बुराई न समझो बल्कि तुम्हारे लिए बेहतर है) यह बात हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को, उन के वालिदैन् को, हज़रत सफ़्वान को और तमाम मोमिनीन् को शामिल है। मतलब यह है कि यह जो वाकिआ पेश आया है उसे अपने लिए बुरा न समझो बल्कि अपने हक़ में उसे अच्छा समझो। बज़ाहिर वाकिआ (घटना) से सद्मा तो पहुँचा, लेकिन इस सद्मे पर सब्र करने से जो अज़्र सवाब मिला और जो अल्लाह तआला की ओर से हिदायत मिली उन सब में तुम्हारे लिए ख़ैर है और उस में हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत सफ़्वान (रज़ि०) के लिए बहुत बड़ा दर्जा (पद) है कि अल्लाह तआला ने कुआन करीम में उन की बराअत (निजात) नाज़िल फ़रमाई। यह आयात क़ियामत तक पढ़ी जाती रहेंगी और बराबर नमाज़ों में इन की तिलावत होती रहेगी।

**لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ** (हर शख़्स के लिए गुनाह का वही हिस्सा है जो उस ने कमाया) यानी इस बारे में जितना जिस ने हिस्सा लिया वह उसी क़दर गुनाह का हक़दार हुआ और उसी हिस्सा से अज़ाब का हक़दार होगा। सब से बड़ा गुनाहगार वह है जिस ने इस आरोप को बनाया और इस को

आगे बढ़ाने में पेश-पेश रहा। बाज़ सीधे-साधे लोग उस के साथी बन गये और बाज़ सुनकर ख़ामोश रहे गये, उन्हें ख़ामोश रह जाने के बजाय तुरन्त रद्द करना चाहिए था।

وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ (और उन में से जिस ने इस बोहतान (आरोप) में बड़ा हिस्सा लिया उस के लिए बड़ा अज़ाब है) जिस ने बोहतान में बड़ा हिस्सा लिया था वह अब्दुल्लाह इब्ने उबई रईसुल् मुनाफ़िकीन था। अज़ाबे अज़ीम से दोज़ख़ का अज़ाब मुराद है और दुनिया में भी उसे दोहरी सज़ा दी गई।

‘साहिबे रूहुल् मआनी’ ने बहवाला मोअज़म तब्रानी हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़ल किया है कि जब आयत बराअत (आरोप मुक्ति की आयत) नाज़िल हुई तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ ले आए और ‘हज़रत उबादह बिन जिराह’ (रज़ि०) को बुलवाया तो उन्होंने लोगों को जमा किया, फिर आप ने हज़िरीन को आयत बराअत सुनाई और आप ने ‘अब्दुल्लाह बिन उबई’ को बुलवाया और उस पर दो हदें (सज़ा) जारी फ़रमाई यानी दोबार 80-80 कोड़े लगाए और आप ने हस्सान, मुस्तह और हम्ना को भी बुलाया उन पर भी एक-एक हद जारी फ़रमाई यानी हर एक को अस्सी-अस्सी कोड़े लगाए गए।

12

لَوْ اِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝

(जब तुम लोगों ने यह बात सुनी तो मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने अपनी जानों के बारे में यह गुमान क्यों न किया कि यह बात साफ़ झूठ है) इस में उन मुसलमान मर्दों और औरतों को भी नसीहत है जो अब्दुल्लाह इब्ने उबई की बातों में आकर तोहमत वाली बात के साथ लग गये थे और उन लोगों को भी तम्बीह (warning) है कि जो बात सुनकर चुप रह गये थे या शक में पड़ गये यानी सब पर ज़रूरी था कि नेक गुमान करते और बात सुनते ही यूँ कह देते कि यह साफ़ और स्पष्ट झूठ है। इस में यह भी स्पष्ट कर दिया कि जब किसी मोमिन मर्द, औरत पर तोहमत लगाई जाए तो फ़ौरन यूँ कह दे कि यह झूठ है और अच्छे गुमान से काम लें, बद्गुमानी में न साथ हों और न बद्गुमानी करे।

इस से मालूम हुआ कि हर मुसलमान मर्द औरत के साथ अच्छा ख़याल रखना वाजिब है और जो शख्स बिला दलील शरई किसी पर तोहमत (आरोप) लगाए उस की बात को झुठलाना और रद्द करना वाजिब है, क्योंकि इस में बिलावजह मुसलमान की बेआबरुई और रुस्वाई है।

हज़रत मुआज़ बिन अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस किसी ने किसी मोमिन की हिमायत की और किसी मुनाफ़िक की बुराई से उसे बचाया तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता भेजेगा जो उस के गोश्त को दोज़ख़ की आग से बचाएगा और जिस किसी ने किसी मुसलमान को ऐब लगाया, अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ के पुल पर खड़ा करेगा या तो वह उस से निकल जाएगा या वहीं खड़ा रहेगा। (रवाहु अबू दाऊद)

यानी जिस को ऐब लगाया था उसे राज़ी करे या अपने कहे की सज़ा पाये। यहाँ औरतें ख़ासतौर

से ध्यान दें जो बात-बात में एक दूसरे को छिनाल, हरामज़ादी, रंडी आदि कह देती हैं। सास, बहू, नन्द, भावज की लड़ाईयों में ऐसा होता रहता है और कुछ औरतें तो अपनी लड़कियों को भी नहीं बख्शाती हैं छिनाल वगैरह तो उन का तकिया कलाम ही हो जाता है। (अल्लाह तआला जिहालत से बचाए)

हज़रत अस्मा बिनत यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने ग़ायबाना अपने भाई की तरफ़ से बचाव किया (गीबत के ज़रिये जिस का गोश्त खाया जा रहा था उस की सफ़ाई दी) अल्लाह तआला ने इस बचाव करने वाले के लिए अपने ऊपर यह वाजिब कर लिया है कि उसे दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमाएगा। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 424)

हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो भी मुसलमान अपने भाई की आबरू (इज़ज़त) की तरफ़ से दिफ़ाअ करेगा, अल्लाह तआला के ज़िम्मे है कि क़ियामत के दिन उसे दोज़ख़ की आग से दूर रखेगा। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 424)

आयते शरीफ़ा में यह तअलीम दी गई है कि अहले ईमान के बारे में बद्गुमानी से बचें। एक हदीस में इर्शाद है **ایاکم والظن فان الظن اکذب الحديث**

(कि तुम बद्गुमानी से बचो क्योंकि बद्गुमानी सब बातों में झूठी चीज़ है। (रवाहु बुख़ारी)

और एक हदीस में इर्शाद है **حسن الظن من حسن العبادة** कि नेक गुमानी अच्छी आदत से है।

(रवाहु अबू दाऊद)

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि अल्लाह तआला ने यूँ फ़रमाया:-

**لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا**

(जब तुम ने यह बोहतान (आरोप) वाली बात सुनी तो मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने अपनी जानों के बारे में अच्छा गुमान क्यों नहीं किया?)

इस में जो **بِأَنفُسِهِمْ** फ़रमाया, इस में यह बताया गया है कि सब मुसलमान आपस में एक ही हैं, अगर किसी मुसलमान पर आरोप लगाया जाए तो सुनने वाले मुसलमान यूँ समझें कि यह आरोप हमें ही लगाया गया है और इस में हमारी अपनी रुस्वाई है। यह ऐसा ही है जैसे सूर: हुजरात में है **وَتَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ** फ़रमाया है। चूँकि सब मुसलमान एक ही हैं इसलिए एक को तोहमत लगाना या लगवाना सब को आरोप लगाने के बराबर है।

‘हज़रत नोअमान बिन बशीर’ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, सब अहले ईमान आपस में ऐसे हैं जैसे एक ही शख्स हो। अगर आँख को तक्लीफ़ होती है तो सारे जिस्म को तक्लीफ़ होती है और अगर सर में तक्लीफ़ होती है तो सारे जिस्म को तक्लीफ़ होती है।

(रवाहु मुस्लिम)

लिहाज़ा जब एक मुसलमान को जिस्मानी और रुहानी तक्लीफ़ पहुँचे या कोई आरोप लगाया जाए तो सब को तड़प उठना चाहिए। तक्लीफ़ दूर करने के लिए सब फ़िक्रमन्द हों और जो तोहमत लगी है हर शख्स यूँ समझे कि यह तोहमत मुझे लगाई गई है। फिर तोहमत लगाने वाले के बारे में यूँ भी कहे

कि वह झूठा है, मुसलमान की हिमायत भी करे और उस की तरफ़ से बचाव भी करे।

**13**

لَوْلَا جَاءَ وَعَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ، فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ، فَأَوَّلَكَ عَنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ ۖ

(यह लोग अपनी बात पर चार गवाह क्यों न लाए? सो जब वह गवाह न लाए तो वह अल्लाह के नज़्दीक यानी उस के नाज़िल किये हुए क़ानून शरई के एतिबार से झूठे हैं) इस में तोहमत (आरोप) लगाने वालों को तम्बीह (warning) है कि बिना देखे एक मुसलमान मर्द या एक मुसलमान औरत पर तोहमत (आरोप) लगा रहे हैं, जो लश्कर से पीछे रह गये। क्या लश्कर के पीछे रह जाना ही इस बात के लिए काफी है कि उस की तरफ़ बुरी बात जोड़ दी जाए? न खुद देखा और न किसी और शख्स ने गवाही दी, बस बुराई की तोहमत (आरोप) लगाकर उछालना शुरू कर दिया, उन का झूठा होना इसी से ज़ाहिर है। अगर किसी को कोई शख्स तोहमत (आरोप) लगाए तो उस के लिए चार ऐसी गवाह पेश करे, गवाह न हों तो वह क़ानून शरई में झूठा माना जाएगा और उस पर हद्दे क़ज़फ़ लगेगी जिस का पहले रुकूअ में ज़िक्र हो चुका है। इस में बादशाह और क़ाज़ियों को बता दिया कि जो शख्स किसी पर तोहमत (आरोप) लगाए उस से चार गवाह तलब करें।

अगर वह चार गवाह न ला पाये तो उस को झूठा समझें और उस पर हद्दे (सज़ा) कायम कर दें, चूँकि यह इज़्ज़त का मामला है इसलिए उस के सुबूत के लिए चार गवाहों की शर्त रखी गई है और दूसरे हुक्म के साबित करने के लिए दो गवाहों का होना काफी समझा गया है।

यहाँ यह शुब्हा होता है कि जब यह क़ानून शरई है तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तोहमत (आरोप) लगाने वालों से क्यों गवाह तलब न फ़रमाए? गवाह तलब फ़रमाते और चूँकि वह गवाह तलब करने से आजिज़ थे, इसलिए तुरन्त तोहमत (आरोप) लगाने वालों पर हद्दे (सज़ा) जारी फ़रमा देते। एक महीना तक परेशानी में मुब्तिला रहने की क्या ज़रूरत थी?

अस्ल बात यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) 'रहमतुल लिलआलमीन' थे। आप को यह गवारा न था कि ईमान लाने के बावजूद कोई शख्स आप की तरफ़ से बदगुमान होकर और कोई ऐसा वैसा कलिमा ज़बान से निकाल कर काफ़िर हो जाए। बात का उठाने और फैलाने वाला तो मुनाफ़ि़कों का सरदार था, लेकिन तीन मुसलमान भी उस के हिमायती हो गये थे और कुछ मुसलमान ख़ामोश थे। कुछ मुरतद (दीन को छोड़ने वाले) थे, अगर बात सुनते ही उसी वक़्त चट-पट हद्दे लगाई जाती तो अन्देशा था कि कुछ लोग यूँ ख़याल कर लेते कि देखा, चूँकि अपना मामला था इसलिए बात कहने वालों की पिटाई कर के दबा दिया।

अगर कोई ऐसा कहता तो काफ़िर हो जाता, लोगों में हर तरह के इन्सान होते हैं, कमज़ोर ईमान वाले भी थे और उस वक़्त **مولفة القلوب** भी थे। इसलिए आप ने कमज़ोर ईमान वालों का ईमान बाकी रखने के लिए अपनी जान पर तकलीफ़ बर्दाश्त फ़रमा ली और मामले की तहक़ीक़ (Investigation) फ़रमाई। फिर जब अल्लाह तआला की तरफ़ से बराअत (निजात होने की आयत) नाज़िल हो गई तो सब



को मानना पड़ा और आप ने भी हद्दे (सज़ा) जारी फ़रमा दी।

यह बात हर अक्लमन्द आदमी समझ सकता है कि जब किसी की बीवी को तोहमत (आरोप) लगाई जाए और वह ग़लत भी साबित हो जाए तो वह उसे अपनी किताब में ज़िक्र नहीं कर सकता। रसूलुल्लाह (सल्ल०) की चहेती बीवी को तोहमत (आरोप) लगाई गई जिस का ज़िक्र कुर्आन मजीद में है। अगर कुर्आन मजीद अल्लाह की किताब न होती या आप की लिखी हुई होती या आप को किसी आयत या मज़मून के छिपाने का अख़्तियार होता तो आप तोहमत (आरोप) वाले विषय को बाकी न रखते।

इस से मालूम हुआ कि कुर्आन मजीद न आप की लिखी हुई किताब है और न आप को किसी आयत या मज़मून के छिपाने का अख़्तियार था। अल्लाह तआला ने जो कुछ नाज़िल फ़रमाया, आप (सल्ल०) ने हुक्मे इलाही के मुताबिक़ अल्लाह के बन्दों तक पहुँचा दिया।

**14** وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَكُنْتُمْ فِي مَا أَقْبَضَ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ

यह आयत उन मोमिनों के बारे में नाज़िल हुई जो बेएहतियाती की वजह से इस तोहमत (आरोप) में किसी किस्म की शिरकत (सहयोग) कर बैठते थे। अल्लाह तआला ने दुनिया में उन पर रहम फ़रमाया कि तौब: की तौफीक़ दे दी और आख़िरत की माफ़ी का वादा फ़रमा लिया। अगर अल्लाह की तरफ़ से तौब: की तौफीक़ न होती तो जिस काम में लगे थे, उस की वजह से बड़ा अज़ाब आ जाता।

**15** إِذْ تَقُولُ لِلْيَسْتِ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسِبُونَهُ هَيِّئًا ۚ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ

(जबकि तुम इस बात को एक दूसरे के मुँह से सुनते थे और अपने मुँह से निकालते थे और ऐसी बात कर रहे थे कि जिस का तुम्हें इल्म नहीं और तुम ख़याल कर रहे थे कि यह हल्की बात है, हाँलाकि वह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी बात है।)

यानी जब कोई किसी पर आरोप लगाए तो उसे सुनना, फिर ले उड़ना और दूसरों तक पहुँचाना बड़ा गुनाह है, इस बात को हल्का समझना सख़्त ग़लती की बात है। इस में इस बात पर तम्बीह (warning) है कि जब किसी के बारे में कोई तोहमत (आरोप) की बात कही जाए तो उसे नक्ल कर के अपनी ज़ात को यूँ कह कर बेकुसूर करार देना कि हम ने तो तोहमत (आरोप) नहीं गढ़ी, तुम ने तो सुनी हुई बात नक्ल की है यह भी ईमानी तकाज़ों के खिलाफ़ है, तोहमत वाली बात को नक्ल करना ही बड़ा गुनाह है।

**16-17** وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَنَكَ هَذَا بَيْنَانٌ عَظِيمٌ ۚ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا

(जब इस बात को सुना तो तुम ने यूँ क्यों न कहा कि हम इस बात को अपनी ज़बान पर नहीं ला सकते।



### سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ

यानी तुम्हें इस बात को सुनते ही तअज्जुब से यूँ कहना चाहिए कि सुब्हानल्लाह यह बड़ा बोहतान है। इस में मुसलमानों को यह बताया गया है कि तोहमत वाली ख़बर सुनते ही साफ़ कह दें कि हम इसे ज़बान पर नहीं ला सकते, यह तो बोहतान अज़ीम है।

يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है, अगर तुम ईमान वाले हो तो फिर ऐसी हरकत मत करना।

**18-19** وَيُبينُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنْ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

और अल्लाह तुम्हारे लिए स्पष्ट तौर पर आयात बयान फ़रमाता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। इस में हदेक़ज़फ़ कुबूले तौब: नसीहत आदि सब दाख़िल हैं। जिन को शर्मिन्दगी थी उन की तौब: कुबूल फ़रमा ली और हदे (सज़ा) जारी करने में हिक्मत थी इसलिए हदे (सज़ा) जारी करा दी।

إِنْ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ

बिलाशुब्हा जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि ईमान वालों में बदकारी (बुरे कामों) की चर्चा हो, उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है।

وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते।)

इस आयत में एक रूल बता दिया और यह फ़रमाया कि जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि ईमान वालों में बेहयाई की चर्चा हो उन के लिए दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है। जिन लोगों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के ऊपर आरोप लगाने में हिस्सा लिया इस में उन को भी तम्बीह है और बाद में आने वाले लोगों को भी तम्बीह (warning) है। आरोप लगाना तो गुनाह ही है, अगर कोई शख्स किसी को तोहमत (आरोप) लगा दे या किसी शख्स से बेहयाई का गुनाह हो ही जाए और इस का किसी को पता चल जाए तब भी इस बात को न उछाले, गुनाहगार की पर्दापोशी करे। हाँ, समझाने का अहल हो तो सुधार की नियत से अच्छे तरीके पर समझा दे। अगर दलील शरई हद्द जारी भी हो जाए तब भी इस हद्द जारी करने का मक्सद बेहयाई ही की रोकथाम है।

बेहयाई का अमली तौर पर फैलाना या किसी बेहयाई वाले काम की चर्चा करना और शोहरत देना यह सब **يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ** में दाख़िल है। जो लोग ऐसी हरकत करें उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब की चेतावनी फ़रमाई है।

आजकल नंगेपन का जोर है। कुछ लोग मुसलमानों में बेहयाई का रिवाज देने पर तुले हुए हैं और मुसलमान खुद भी ऐसी-ऐसी फ़िल्में देखते और बनाते हैं और ऐसे-ऐसे अख़बार व रिसाले छापते हैं और नाविल व अफ़साने लिखते हैं जिन से मुसलमानों में बेहयाई की चर्चा होती है उन सब को इस **لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ** की चेतावनी दी गई है।

20

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ

“और अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और रहमत है और यह बात कि अल्लाह रऊफ़ व रहीम है तो तुम भी न बचते”।

21-26

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوبَ الشَّيْطَانِ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوبَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ  
وَالنُّكْرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ ۚ  
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ وَلَا يَأْتِلْ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ  
وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَلْيَعْلَمُوا وَلْيَصْغَحُوا ۚ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ  
إِنَّ الَّذِينَ يُزْمِنُونَ بِالْغَفْلَةِ الْبُؤْمِنَةِ لَعَنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ يَوْمَ  
تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ يَوْمَ لَا يُؤْفِكُهُمُ اللَّهُ فِيهِمْ  
الْحَقُّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۚ الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۚ وَالطَّيِّبَاتُ  
لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَزِيَرَةٌ كَرِيمٌ ۚ

## शैतान की पैरवी

यह छः आयत हैं जिन का तअल्लुक भी ऊपर की आयत से है जो सूरः के शुरु से लेकर अब तक बयान की गई।

पहली आयत में अहले ईमान को तम्बीह (warning) फ़रमाई और इशार्द फ़रमाया कि शैतान के कद्मों की पैरवी न करो यानी उस के बताए हुए तरीकों पर न चलो। जो शख्स शैतान की पैरवी करेगा यानी उस के बताए हुए रास्ते पर चलेगा, शैतान उसे बर्बाद कर देगा क्योंकि वह बेहयाई के कामों का और तरह-तरह की बुराईयों का हुक्म देता है। जिस ने उस की बात मानी वह गुमराही के गढ़े में गिरा, फिर अगर तौबः न की तो हलाक हुआ। फिर फ़रमाया कि अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई भी पाक न होता, अल्लाह तअला की तरफ़ से तौबः की तौफीक ही न होती। जैसा कि मुनाफ़ि़ीन निफ़ाक़ पर अड़े रहे, हज़रत सिद्दीक़ा पर आरोप लगाया, उस पर भी जमे रहे।

وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ

(और लेकिन अल्लाह जिस को चाहता है पाकीज़ा बना देता है) गुनाहगारों को तौबः की तौफीक़ दे देता है और जिस पाक दामन को तोहमत लगा दी जाए उस की निजात का रास्ता निकाल देता है।

(और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है) हर शख्स की अच्छी बुरी बात को सुनता है और हर एक के अमल को जानता है।

दूसरी आयत وَلَا يَأْتِلْ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ में यह फ़रमाया कि तुम में से बड़े दर्जे वाले और उस्अत वाले ऐसी कसमें न खाएँ कि रिश्तेदारों और मिस्कीनों और ‘फी सबीलिल्लाह’ हिज़रत करने वालों

पर खर्च न करेंगे। पहले गुज़र चुका है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) अपने रिश्तेदार 'मुस्तह बिन असासा' पर माल खर्च किया करते थे, जब 'मुस्तह' ने 'हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा' पर तोहमत (आरोप) लगाने वालों का साथ दिया, फिर अल्लाह तआला ने बराअत (निजात) नाज़िल फ़रमा दी, तो 'हज़रत अबू बक्र सिद्दीक' ने क़सम खा ली कि अब तुझ पर खर्च न करूँगा। इस पर आयते करीमा **وَلَا يَأْتِلُ أُولَٰئِكَ الْفَضْلَ مِنْكُمْ** (आख़िर तक) नाज़िल हुई।

'तुफ़सीर दुर्रे मन्सूर' में 'हज़रत क़तादा' से नक़ल किया गया है कि जब यह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तआला की तरफ़ से दरगुज़र करने का हुक्म हुआ और अल्लाह ने यूँ भी फ़रमाया:-

**أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ** (क्या तुम यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए।)

तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत अबू बक्र को बुलाया और उन्हें यह आयत सुनाई।

**أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ**

“क्या तुम यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए?”

“हज़रत अबू बक्र ने अर्ज़ किया, मैं तो ज़रूर यह चाहता हूँ कि अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमाए”। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम माफ़ करो, दरगुज़र करो, इस पर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! अब तो यह ज़रूरी बात हो गई कि आज से पहले मैं जो कुछ 'मुस्तह' पर खर्च किया करता था उसे नहीं रोकूँगा वह बदस्तूर जारी रहेगा।

'दुर्रे मन्सूर' में एक रिवायत यह भी नक़ल की है कि आयते बाला नाज़िल होने के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) ने हज़रत 'मुस्तह' पर इस से दो गुना खर्च फ़रमाया करते थे जो पहले खर्च करते थे। बाज़ रिवायत में है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अगर मैं कोई क़सम खा लूँ फिर क़सम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने में ख़ैर देखूँ तो क़सम का कफ़ारा दे दूँगा और जो बेहतर काम है उसी को अपनाऊँगा।

'दुर्रे मन्सूर' में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से नक़ल किया गया है कि हज़रत अबू बक्र के अलावा और भी बाज़ सहाबा थे, जिन लोगों ने अपने रिश्तेदारों का खर्चा बन्द करने की क़सम खा ली थी, जिन्होंने 'हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा' पर तोहमत (आरोप) लगाने में कुछ हिस्सा लिया था। अल्लाह तआला ने सब को तम्बीह (warning) की और यह आयतें नाज़िल फ़रमाई। (भाग 2 पेज नं० 34-35)

तीसरी, चौथी और पाँचवीं आयत में पाकदामन औरतों को तोहमत (आरोप) लगाने वालों की सज़ा और दुनिया व आख़िरत की बद्दहली का ज़िक्र फ़रमाया। पहले तो यह फ़रमाया कि जो लोग उन औरतों को तोहमत लगाते हैं जो पाक दामन हैं, बुरे कामों से गाफ़िल हैं और मोमिन हैं, ऐसे लोगों पर दुनिया और आख़िरत में लअनत है, उन पर अल्लाह की फिट्कार है और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। फिर फ़रमाया कि उन की बुरी हरकतों का सुबूत क़ियामत के दिन खुद उन के अपने अंगों की गवाही से होगा। क़ियामत के दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ पांव उन के ख़िलाफ़ उन कामों की गवाही देंगे जो काम वह दुनिया में किया करते थे, ज़बान कहेगी इस ने मुझे फ़लाँ बुरी बातों में इस्तेमाल किया और हाथ पैर

कहेंगे कि इस ने हमें गुनाहगारी के फ़लों-फ़लों काम में इस्तेमाल किया।

यहाँ जो यह सवाल पैदा होता है कि सूर: यासीन में **الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ** फ़रमाया (कि हम उन के मुँहों पर मुहर लगा देंगे) और सूर: नूर में फ़रमाया **يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ** (कि उन की ज़बानें गवाही देंगी।)

इस में बज़ाहिर टकराव मालूम होता है। इस सवाल का जवाब यह है कि यह मुख़लिफ़ (Different) समय में होगा। बाज़ वक़्तों में ज़बानें गूंगी हो जाएँगी उन पर मुहर लगा दी जाएगी, कुछ बोल न सकेंगे। फिर बाद में ज़बान को बोलने की ताक़त दे दी जाएगी और जिस की ज़बान थी, खुद उसी की ज़बान उस के ख़िलाफ़ गवाही देगी।

**يَوْمَ يَكْفِيهِمُ اللَّهُ** उस रोज़ अल्लाह तआला उन का पूरा-पूरा बदला दे देगा जो उन का वाकई बदला होगा। यह बदला अज़ाब की सूरत में सामने आएगा और उस दिन उन को मालूम हो जाएगा कि वाकई अल्लाह तआला सही और ठीक फैसला करने वाला है और वह हकीक़त को ज़ाहिर करने वाला है। यहाँ दुनिया में अगर कोई यह समझता है कि मेरे आ़माल का हिसाब नहीं होगा यह उस की जिहालत और गुमराही की बात है। क़ियामत के दिन जब हिसाब होगा अल्लाह तआला के फैसले सामने आ जाएँगे जो बिल्कुल हक़ और सही होंगे, मुजरिमीन जान लेंगे कि हमारा यह समझना कि हमारी हरकतों का किसी को पता न चलेगा ग़लत निकला, अल्लाह तआला ने सब को ज़ाहिर फ़रमा दिया।

यह आयात उन लोगों के बारे में हैं जिन्होंने आयात बराअत नाज़िल होने के बाद भी तौब: न की और तोहमत वाली बात से बाज़ न आए।

छठी आयत में यह फ़रमाया कि ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लायक हैं और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लायक हैं और पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों के लायक हैं। इसमें पहली बात तो यह बताया कि अल्लाह तआला ने तबीअतों में जोड़ रखा है, गन्दी और बद्कार औरतें बद्कार मर्दों की तरफ़ और गन्दे और बद्कार मर्द गन्दी और बद्कार औरतों की तरफ़ मायल होते हैं।

इस तरह पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों की तरफ़ और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों की तरफ़ राग़िब (Attract) होते हैं और इसी वजह से अच्छों को अच्छा जोड़ मिल जाता है और बुरों को बुरा जोड़ हासिल होता है।

इस से मालूम हुआ कि हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) को जो अल्लाह तआला ने बीवियाँ अता फ़रमाई वह पाकीज़ा बीवियाँ थीं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) जो तमाम अम्बिया-ए-किराम (अलै०) के सरदार हैं उन की बीवियाँ भी पाकीज़ा (पवित्र) हैं। जब अल्लाह तआला ने उन्हें सरदार अम्बिया (सल्ल०) की बीवी बनने का शर्फ़ अता फ़रमा दिया तो अब उन के बारे में बुरी बात का ख़याल करना और ज़बान पर लाना रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शान पर हमला करने के बराबर हुआ। इसीलिए हज़रात आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाने वालों के बारे में (जिन्होंने बुरी बात को उठाया, आगे बढ़ाया और फैलाया, फिर आयते कुर्आनियाँ नाज़िल होने पर भी तौब: न की) **لَعَنَافِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ** फ़रमा दिया।

أُولَٰئِكَ مُّزَوَّنٌ بِمَا يَقُولُونَ

यह पाकीज़ा मर्द और पाकीज़ा औरतें उस चीज़ से बरी हैं जो लोग उन के बारे में कहते हैं यानी तोहमत लगाते हैं।

لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

“उन के लिए गुनाहों की मग्फिरत है और इज्जत वाला रिज़्क है”।

यानी उन के लिए जन्नत है जिस में इज्जत के साथ खाएंगे।

مُّزَوَّنٌ بِمَا يَقُولُونَ में ‘हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा’ की बराअत (निजात) के साथ हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल (रज़ि०) की भी सफ़ाई आ गई। (मुआलिमुत्तन्ज़ील भाग 3 पेज नं० 335)

‘हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा’ फ़रमाया करती थीं कि मुझे चन्द चीज़ों पर फ़ख़ है, फिर उस को इस तरह बयान फ़रमाती थीं (1) कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मेरे अलावा किसी बाकिरह यानी कुंवारी औरत से निकाह नहीं फ़रमाया। (2) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की जब वफ़ात हुई तो आप (सल्ल०) का सर मेरी गोद में था। (3) आप मेरे घर में दफ़न हुए। (4) आप के ऊपर (बाज़ मर्तबः) ऐसी हालत में वह्य आती थी कि आप मेरे साथ एक ही लिहाफ़ में होते थे। (5) आसमान से मेरी बराअत नाज़िल हुई। (6) मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़लीफ़ा और दोस्त (यार ग़ार) की बेटी हूँ। (7) मैं पाकीज़ा पैदा की गई। (8) मुझ से मग्फिरत और रिज़्क करीम का वादा फ़रमाया गया।

‘अल्असाबा’ में बहवाला तबूक़ात इब्ने सअद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यूँ नक्ल किया है कि मुझे चन्द ऐसी नेअमतेँ अता की गई हैं जो मेरे अलावा किसी और औरत को नसीब नहीं हुईं (1) मैं सात साल की थी जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझ से निकाह किया। (2) फ़रिश्ता मेरी सूरत को आप के पास एक रेशमी कपड़े में लेकर आया ताकि आप (सल्ल०) मुझे देख लें। (3) मैं नौ साल की थी जब जिफ़ाफ़ हुआ। (4) मैंने जिब्रईल (अलै०) को देखा। (5) मैं बीवियों में आप (सल्ल०) को सब से ज़्यादा महबूब थी। (6) मैंने आप (सल्ल०) की आख़िरी हयात में आप (सल्ल०) की तीमारदारी (ख़िद्मत) की, मेरे ही पास आप की वफ़ात हुई। आप की वफ़ात के समय मेरे और फ़रिश्तों के अलावा कोई मौजूद नहीं था। (दुर्रे मन्सूर भाग 5 पेज नं० 32)

बाज़ लोगों ने फ़रमाया कि हज़रत यूसुफ़ (अलै०) पर तोहमत लगाई गई तो अल्लाह तआला ने एक छोटे बच्चे को बोलने की ताक़त दी और उस ने उन की बराअत (निजात) ज़ाहिर की और हज़रत मरयम (अलै०) पर तोहमत लगाई गई तो उन के बेटे हज़रत ईसा (अलै०) (जबकि वह गोद ही में थे) ने उन की बराअत ज़ाहिर की और ‘हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा’ पर तोहमत लगाई गई तो उन की बराअत ज़ाहिर फ़रमाने के लिए अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में उन की बराअत नाज़िल फ़रमाई।

‘हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा’ को जो तोहमत लगाई गई थी कुर्आन मजीद में उन की बराअत नाज़िल फ़रमाई और अल्लाह तआला ने तोहमत लगाने वालों को झूठा करार दिया और जिन्होंने आयत नाज़िल होने के बाद भी तोहमत (आरोप) से तौबः न की उन के लिए फ़रमाया कि दुनिया व

आखिरत में मलून हैं और यह भी फरमाया कि उन के लिए बहुत बड़ी सज़ा है और यह भी फरमाया कि उन की हरकत का अल्लाह तज़ाला उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फरमाया, “सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो। अल्लाह से शिर्क, जादू, क़त्ल नाहक़, सूदख़ोरी, यतीम के माल को हड़प करना, मैदान क़िताल में पीठ दिखाना, भोली भाली मोमिन औरतों पर तोहमत (आरोप) लगाना।” (बुख़ारी व मुस्लिम)





## आयत नं० 27 से 34 तक

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ اجْعُوا فَاجْعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝ قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَعْظُمُونَ مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَى لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَعْظُمْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ ۚ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِبْنَاتِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوْ الشَّعِيعِينَ غَيْرِ أُولَى الْأَرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوْ الظِّلِلِّ ۚ الَّذِينَ لَمْ يَطْهَرُوا عَلَى عَوْرَتِ النِّسَاءِ ۚ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۚ وَتَوْبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا إِنَّهُ يَتُوبُ الْعُثُونَ ۚ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَنكِحُوا الْكَاِفِي مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلْيَسْتَغْفِرِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي أَنشَأَ وَلَا تُكْرِهُوا فَتِيَّتَكُمْ عَلَى الْإِغَاءِ ۚ إِنْ أَرَدْتُمْ مَحْضًا لَتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يَكْرِهْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَمَثَلًا لِمَنْ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

### अनुवाद-

(27) ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा दूसरे के घरों में दाखिल न हुआ करो, जब तक कि इजाज़त हासिल कर के घर वालों को सलाम न कर लिया करो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम याद रखो; (28) तो अगर तुम वहाँ किसी को न पाओ, तो अन्दर न जाओ, जब तक कि तुमको इजाज़त न मिल जाए, और अगर तुमसे वापस होने के लिए कहा जाए, तो वापस हो जाओ, यह तुम्हारे लिए पाकीज़ा तरीका है और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह खूब जानता है। (29) तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि तुम ऐसे घरों में दाखिल हो, जिनमें कोई न रहता हो, उसमें तुम्हारा सामान हो और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो। (30) कह दीजिए, “ईमान वाले मर्दों से कि अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की हिफाज़त करें, यह उनके लिए पाकीज़ा तरीका है, अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे करते हैं।” (31) और कह दीजिए, “ईमान वाली औरतों से कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें, और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें” और अपनी जीनत न दिखावें, सिवाय उसके कि जो खुले रहते हैं (हाथ पैर आदि), और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नी ओढ़ें रहें; और अपना साज़ व सिंघार न दिखावें सिवाय अपने पति के, या अपने बाप के, या अपने पति के बापों (ससुर) के, या अपने बेटे के, या अपने पति के बेटों या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के, या अपने भाँजों के, या अपनी (जैसी) औरतों के, या लौंडी-गुलाम के सिवा उन ख़ादिमों के जो औरतों की इच्छा न रखें या उन बच्चों के जो औरतों के पदों की चीज़ों को नहीं जानते; और अपने पैर ऐसे ज़ोर से न रखें कि उनके अन्दरुनी ज़ेवर मालूम हो जाएँ और



ऐ ईमान वालो! सब अल्लाह के सामने तौब: करो, ताकि तुम्हें कामियाबी हासिल हो। (32) और अपनी कौम की बेवा औरतों का निकाह कर दिया करो, तुम्हारे गुलामों और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक हों, अगर वह तंग हों तो अल्लाह उन्हें अपने फज़ल से खुशहाल कर देगा, और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला, जानने वाला है। (33) और जो लोग विवाह का सामर्थ्य न रखते हों वे अपने को पाकदामन रखें, यहाँ तक कि अल्लाह अपने फज़ल से उन्हें मालदार कर दे, और जिन लोगों पर तुम्हें मिल्कियत हासिल है उनमें से जो (आज़ादी का) लिखित समझौता करना चाहते हों उनके साथ लिखित समझौता कर लो, अगर तुम जानते हो कि उनके अन्दर भलाई है, और उनको भी अल्लाह के उस माल में से दो, जो 'उसने' तुम्हें दिया है, और अपनी लौंडियों को कुकर्म पर मजबूर न करो, जबकि वे खुद पाकदामन रहना चाहती हों, केवल इसलिए कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी हासिल करना चाहते हो और जो उनको मजबूर करेगा, तो उनके मजबूर किये जाने के बाद अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (34) और 'हमने' तुम्हारी ओर खुली हुई आयतें उतार दी हैं, और उन लोगों की मिसालें भी पेश कर दी हैं, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, और परहेज़गारों के लिए नसीहत है।

## आयत नं० 27 से 34 तक की व्याख्या

**27** يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

### दूसरों के घर जाने में इजाज़त

यहाँ से सूर: नूर का तीसरा रुकूअ़ शुरू हो रहा है। शुरू सूर: से बेहयाई की रोकथाम और बेहयाई वाले काम की सज़ा और तोहमत लगाने वाले की सज़ा का और तोहमत लगाने की मज़म्मत (निन्दा) का बयान था।

बेहयाई से पहले कुछ ऐसे अस्बाब होते हैं जो क़रीब करते-करते एक दिन बेहयाई के काम पर डाल देते हैं, उन में से एक बहुत बड़ा सबब ऐसी जगह नज़र का पड़ जाना भी है जहाँ नज़र डालना मना है। नज़र की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह तआला ने घरों में दाख़िल होने के लिए इजाज़त लेने का हुक्म दिया है और इन आयात में इजाज़त लेने का क़ानून बताया है। इर्शाद फ़रमाया कि जो घर तुम्हारे नहीं हैं (यानी जिन में तुम नहीं रहते) उन में उन्सियत हासिल किये बिना दाख़िल मत हो।

‘उन्सियत’ हासिल करने से इजाज़त लेना मुराद है। मुफ़स्सरीन ने इस की तफ़सीर **حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا** से की है। जो शख्स अन्दर आना चाहता है, इजाज़त लेता है, नाम बताता है, वह साहिबे ख़ाना से मानूस होता है और उन्हें अपनी ज़ात से मानूस करता है। इसलिए **حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا** फ़रमाया और साथ ही **وَتَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا** फ़रमाया यानी इजाज़त लेने के साथ सलाम करने का हुक्म दिया।

‘अज़ला बिन यसार’ (रज़ि०) कहते हैं कि “एक शख्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा कि क्या मैं घर में दाख़िल होने के वक़्त अपनी माँ से भी इजाज़त माँगू? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, वह बोला कि मैं तो उसके साथ घर में रहता हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, फिर भी इजाज़त लेकर दाख़िल हो।

वह कहने लगा कि मैं तो उसकी खिद्मत करता हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि फिर भी इजाज़त लेकर दाख़िल हो। क्या तू इस बात को पसन्द करता है कि तू अपनी माँ को नंगी देखे? वह कहने लगा नहीं। आप ने फ़रमाया फिर इजाज़त लेकर जाओ।” (मुवत्ता इमाम मालिक)

हज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं कि “मैं आप (सल्ल०) के पास उस क़र्ज़ा के सिलसिले में बात करने के लिए हज़िर हुआ जो मेरे वालिद पर था। मैंने दरवाज़े पर दस्तक दी आप (सल्ल०) ने (अन्दर से पूछा) कौन है? मैंने कहा, “मैं हूँ” आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मैं तो मैं भी हूँ” यानी आप (सल्ल०) ने (नाम बताने के बजाए) “मैं हूँ” कहने को बुरा समझा।” (बुख़ारी)

एक सहाबी सलाम किये और इजाज़त लिए बिना रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिद्मत में हज़िर हो गये, आप ने फ़रमाया कि वापस जाओ और यूँ कहो **السلام عليكم ادخل** (तुम पर सलाम हो क्या मैं दाख़िल हो जाऊँ?) (रवाहु अबूदाऊद)

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि **لا تاذنوا لمن لم يبدأ بالسلام** (उसे अन्दर आने की इजाज़त न दो जो सलाम से शुरुआत न करे।) (मिशकातुल मसाबीह)

**ذِكْرُ خَيْرِ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ** (यह तुम्हारे लिए बेहतर है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।)

**28-29**

**فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ائْجِعُوا فَانْجِعُوا ۚ هُوَ أَزْكى لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝**

(सो अगर तुम उन घरों में किसी को न पाओ तो उन में उस वक़्त तक दाख़िल न हो जब तक तुम्हें इजाज़त न दी जाए।)

खाली घर देखकर अन्दर न चले जाया करो क्योंकि पहले तो यह हो सकता है कि उस में अन्दर कोई आदमी मौजूद हो, लेकिन तुम्हें पता न चला हो और दूसरी बात यह है कि अगर मकान खाली ही हो तब भी बिला इजाज़त अन्दर चला जाना दुरुस्त नहीं है क्योंकि यह दूसरे की मिल्क में एक तरह का बिला इजाज़त तसरुफ़ (इस्तेमाल) करना होगा। जिस घर में यह हो कि कोई शख्स अन्दर नहीं है, जब उस में बिला इजाज़त अन्दर जाना मना है तो जिस मकान में किसी मर्द या औरत के मौजूद होने का इल्म हो उस में बिला इजाज़त अन्दर जाना कैसे जायज़ होगा? इस के बाद फ़रमाया:-

**وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ائْجِعُوا فَانْجِعُوا ۚ هُوَ أَزْكى لَكُمْ** (और अगर तुम से कहा जाए कि वापस चले जाओ तो लौट जाओ यह तुम्हारे लिए पाकीज़ा बात है।)

इस आयत में यह बता दिया कि जब किसी के यहाँ अन्दर जाने की इजाज़त माँगो और अन्दर से यूँ कह दिया जाए कि वापस तशरीफ़ ले जाइए, इस वक़्त मौका नहीं है या हमारी और आप की ऐसी बेतकल्लुफी नहीं जिस की वजह से अन्दर बुलाएँ, ज़बान से कहें या हालात से महसूस हो या और कोई वजह हो तो वापस हो जाएँ, इस में ज़िल्लत महसूस न करें।

यह जो फ़रमाया **فارجعوا هوازكى لكم** इस में यह बता दिया कि जब इजाज़त माँगने पर वापस होने को कह दिया जाए तो वापस हो जाए यह इस से बेहतर है कि वहीं बैठा या खड़ा रहे और वहाँ से न टले क्योंकि इस से साहिबे ख़ाना को तकलीफ़ होगी। अगर पहली ही बार अन्दर से जवाब मिल जाए तो आगे इजाज़त लेने की फ़िक्र में न पड़े क्योंकि इस से घर वालों को तकलीफ़ होगी और अगर पहली बार इजाज़त लेने पर वापस होने को कह दिया गया तो अब अन्दर आने की मनाही के बाद भी इजाज़त पर इस्सार करे तो उसे ज़लील होने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जब किसी घर में अन्दर जाने की इजाज़त माँगी और कोई अन्दर से न बोला, फिर दूसरी बार भी ऐसा ही हुआ और तीसरी बार भी, तो वापस हो जाए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है:-

**اذا استاذن احدكم ثلاثا فلم يؤذن له فليرجع** (रवाहुल् बुख़ारी पेज नं० 923)

एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) हज़रत सअद बिन उबादह (रज़ि०) के मकान पर तशरीफ़ ले गए आप ने तीन बार इजाज़त तलब फ़रमाई, अन्दर से जवाब न आया तो आप वापस हो गये। अन्दर से हज़रत सअद (रज़ि०) जल्दी से निकले और आप को अन्दर ले गये और आप की ख़िद्मत में खाने के लिए किशमिश पेश किये। (मिशकातुल् मसाबीह पेज 369)

इस से मालूम हुआ कि जब तीन बार इजाज़त तलब करने पर भी इजाज़त न मिले तो इस के बाद इजाज़त लेने के लिए चीखते रहना और लगातार घंटियाँ बजाना, किवाड़ा पीटना यह सब ख़िलाफ़े शरीअत है, इस में अपने को बेआबरु होने के लिए पेश करना है और घर वाले को भी तकलीफ़ देना है।

इस के बाद फ़रमाया:-

**لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ**

(इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं कि ऐसे घरों में दाख़िल हो जाओ जिन में कोई रहता न हो उन में तुम्हारे इस्तेमाल करने की कोई चीज़ हो।)

**وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَبْذُرُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ**

(और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।)

इस आयत में उन घरों में इजाज़त तलब किये बिना अन्दर जाने की इजाज़त दे दी जिन में आमतौर से सब को आने-जाने की इजाज़त होती है और जो किसी ख़ास फ़र्द या ख़ानदान की रिहाइश के लिए ख़ास नहीं होते। जैसे मुसाफ़िर ख़ाने और मस्जिदें ख़ानकाहें, अस्पताल, इन में उसूल-ए-शरीअत के मुताबिक़ आने जाने वालों को नफ़ा हासिल करने की इजाज़त होती है, इन में दाख़िल होने के लिए इजाज़त की ज़रूरत नहीं। हाँ, मस्जिद में इमाम का कमरा, इदारों के दफ़ातिर, जिन में सब को आने की इजाज़त नहीं उन में दाख़िल होने के लिए इजाज़त लेना ज़रूरी है।

‘तफ़सीर जलालैन’ में **ببيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم** की तफ़सीर करते हुए लिखा है:-

**ای منفعة لكم باستكنان وغيره لبيوت الربط والخانات المسبلة** (मुआलिमुत्तन्ज़ील भाग 3 पेज नं० 337)

हज़रत क़तादा से नक़ल किया है:-

هي الحانات والبيوت والمنازل المبنية للمسابلة لياو واليهاء ورواها وامتعتهم اليها فيجوز دخولها بغير استئذان والمنفعة فيها بالنزول وايء المتاع والاتقاء من الحر والبرد

और हज़रत अता ने **يُؤْتَى غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ** की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाया कि मुर्दा घरों से मुराद टूटे-फूटे गिरे पड़े वीरान घर हैं और मताउन से कज़ा-ए-हाजत मुराद है। मतलब यह है कि टूटे-फूटे वीरान खंडर घरों में पेशाब पाख़ाना की हाजत पूरी करने के लिए जाओ तो इस में कोई गुनाह नहीं है। (मुआलिमुल्लन्ज़ील)

‘तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर’ में नक़ल किया गया है कि जब आयते करीमा **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بَيْتًا غَيْرَ بَيْتِكُمْ** नाज़िल हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने अज़र किया या रसूलुल्लाह! कुरैश के ताजिर मक्का, मदीना, शाम और बैतुल् मक्दिस् के दर्मियान सफ़र करते हैं और रास्तों में घर बने हुए हैं उन्हीं में ठहर जाते हैं, उन में कोई रहता नहीं है तो किस से इजाज़त लें, किस को सलाम करें। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा **لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ** नाज़िल फ़रमाई और इन घरों में बिला इजाज़त दाख़िल होने की इजाज़त दे दी। (दुर्रे मन्सूर भाग 5 पेज नं० 40)

## हदीस में इजाज़त के अहक़ाम व आदाब

इस में चन्द हदीसों का तर्जुमा लिखा जाता है जिन में किसी के यहाँ अन्दर जाने की इजाज़त लेने के आदाब ज़िक्र हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिस्म (रज़ि०) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) किसी ख़ानदान के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाते (और इजाज़त लेने के लिए खड़े होते) तो दरवाज़े के सामने खड़े नहीं होते थे, बल्कि उस के दाईं ओर या बाईं ओर खड़े होकर ‘अस्सलामु अलैकुम’ फ़रमाते थे, उस ज़माने में दरवाज़ों पर पर्दे नहीं थे। (रवाहु अबू दाऊद)

इस से मालूम हुआ कि जब अन्दर आने की इजाज़त लेने लगे तो अपनी नज़र की हिफ़ाज़त करे ताकि खुले दरवाज़े के अन्दर से या किवाड़ों की दराज़ से अन्दर नज़र न जाए।

हज़रत सौबान (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन चीज़ें हैं जो किसी के लिए हलाल नहीं हैं:-

- (1) कोई शख्स ऐसा न करे कि कुछ लोगों का इमाम हो, मगर दुआ करने के वक़्त उन्हें छोड़कर अपने ही लिए केवल दुआ को ख़ास कर ले, अगर किसी ने ऐसा किया तो उस ने मुक्तादियों की ख़यानत की।
- (2) और इजाज़त से पहले किसी घर के अन्दर नज़र न डाले, अगर ऐसा किया तो उस घर के रहने वालों की ख़यानत की।
- (3) और कोई शख्स ऐसी हालत में नमाज़ न पढ़े, जबकि पेशाब पाख़ाना को रोके हुए हो। (रवाहु अबू दाऊद)

‘हज़रत सुहैल बिन सअद’ (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख्स ने दरवाज़े के सुराख़ से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के घर में नज़र डाली तो उस वक़्त आप (सल्ल०) के हाथ में कंधी जैसी कोई चीज़ थी, जिस

से सर मुबारक को खुजा रहे थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अगर मुझे मालूम होता कि तू मुझे देख रहा है तो इस कंधी जैसी चीज़ से तेरी आँखों को ज़ख्मी कर देता, इजाज़त तो नज़र ही की वजह से रखी गई है। (रवाहु बुख़ारी पेज नं० 922)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अगर कोई शख्स तुम्हारे मकान में झाँके और तुम कंकरी मार कर उस की आँख फोड़ दो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं।” (बुख़ारी व मुस्लिम)

“और एक हदीस में इर्शाद है **فَانْفَعَلَ فَقَدْ دَخَلَ** यानी जिस ने अन्दर नज़र डाल दी मानो वह तो दाख़िल ही हो गया”। (रवाहु अबू दाऊद)

मतलब यह है कि अगर देख रहा है तो इजाज़त क्यों ले रहा है? इजाज़त तो इसीलिए रखी गई है कि साहिबे ख़ाना अपने घरेलू हालात को दिखाना नहीं चाहता। जब इजाज़त से पहले देख लिया तो समझो अन्दर ही चला गया।

जब इजाज़त लेने के लिए किसी का दरवाज़ा या घंटी बजाए और अन्दर से कोई सवाल करे कि कौन है तो साफ़ तौर पर अपना नाम बता दे और अहले ख़ाना नाम से भी न पहचानता हों तो समझो अपना सही पूरा परिचय करा दे।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैं अपने वालिद के क़र्ज़ा की अदाएगी के सिलसिले में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। मैंने दरवाज़ा खट्खटाया, आप (सल्ल०) ने अन्दर से फ़रमाया कौन है? मैंने जवाब में अर्ज़ कर दिया **अना** (यानी मैं हूँ) आप ने कराहत के अन्दाज़ में फ़रमाया **अना, अना** (रवाहु बुख़ारी पेज नं० 923)

मतलब यह है कि मैं-मैं करने से अहले ख़ाना क्या समझेंगे कि कौन है, मैं तो हर शख्स ही है।

जिस घर में कोई शख्स खुद अकेला ही रहता हो उस में तो उसे इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं, दरवाज़ा खोले अन्दर चला जाए, लेकिन जिस घर में और लोग भी रहते हैं अगरचे अपने महारिम ही हों (वालिदैन बहन भाई आदि) तब भी अन्दर आने की इजाज़त ले।

हज़रत अता बिन यसार ताबई से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से एक शख्स ने सवाल किया, क्या मैं अपनी वालिदा के पास भी इजाज़त लेकर जाऊँ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, अन्दर जाने के लिए वालिदा से भी इजाज़त लो। उस शख्स ने कहा मैं तो वालिदा के साथ घर में रहता ही हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया (इस के बावजूद) इजाज़त लेकर अन्दर जाओ, उस शख्स ने कहा कि मैं अपनी वालिदा का ख़िद्मत गुज़ार हूँ (जिस की वजह से अक्सर अन्दर आना जाना पड़ता है) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, फिर भी इजाज़त लेकर ही दाख़िल हो, तुझे यह पसन्द है कि अपनी वालिदा को नंगी देख ले, उस ने कहा यह तो पसन्द नहीं है। आप ने फ़रमाया बस तो उस के पास इजाज़त लेकर ही जाओ।

(रवाहु मालिक व हदीस मुर्सल)

अगर किसी घर में केवल मियाँ-बीवी रहते हों तब भी मुस्तहब यह है कि बिना किसी इत्तिलअ के

अन्दर न जाए दाखिल होने से पहले खांस कर या पांव की आहट से बाख़बर कर दे कि मैं आ रहा हूँ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की अहलिया मोहतरमा ने बयान किया है कि 'अब्दुल्लाह' जब कभी भी बाहर से घर आते तो दरवाज़े से बाहर खांस कर के पहले से अपने आने की ख़बर दे देते थे ताकि वह हमें किसी ऐसी हालत में न देखें जो उन को नापसन्दीदा हो। (इब्ने कसीर फ़ी तफ़सीर)

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बीवी यह समझ कर कि मियाँ को जल्दी आना नहीं है बनाव श्रंगार के बिना घर में रहती है, ऐसी हालत में अचानक शौहर की नज़र पड़ जाए तो एक तरह की वहशत मालूम होगी। इस किस्म की बातों की वजह से उसे भी मुस्तहब और बेहतर करार दिया है कि जिस घर में सिर्फ़ बीवी हो उस में भी किसी इशारे से अपने आने की ख़बर देकर दाख़िल हो, मियाँ-बीवी का आपस में कोई पर्दा नहीं है।

औरतें भी औरतों के पास इजाज़त लेकर जाएँ क्योंकि मालूम नहीं कि जिस औरत के पास जाना है वह किस हाल में है, औरत को भी दूसरी औरत के जिस्म के हर हिस्से को देखना जायज़ नहीं है। अगर वह गुस्ल (स्नान) कर रही हो या कपड़े बदल रही हो तो बिला इजाज़त उस के घर में दाख़िल होने की सूरत में बदन के उस हिस्से पर नज़र पड़ जाने का सन्देह रहेगा, जिसे दूसरी औरत का शरअन देखना जायज़ नहीं है। (इस की कुछ तफ़सील इन्शाअल्लाह आगे आएगी) फिर यह भी मुम्किन है कि जिस औरत के पास जाना है वह किसी ऐसे काम में हो जिस की वजह से बात करने की फुर्सत न हो या अपनी मशगूलियत से किसी औरत को बाख़बर करना मुनासिब न जानती हो।

'तफ़सीर इब्ने कसीर' में हज़रत इमाम अयास से नक़ल किया है कि हम चार औरतें थीं जो अक्सर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हाज़िर हुआ करती थीं, घर में जाने से पहले हम उन से अन्दर आने की इजाज़त तलब किया करते थे, जब इजाज़त देती तो हम अन्दर चले जाते थे।

कभी-कभी ऐसा होता है कि इजाज़त लेने वाले की आवाज़ बाहर से पहुँच सकती है। ऐसी सूरत में इजाज़त लेने वाले को 'अस्सलामु अलैकुम' कह कर और अपना नाम बताकर इजाज़त लेना चाहिए ताकि अन्दर से यह पूछने की ज़रूरत न पड़े कि तुम कौन हो।

हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) हज़रत उमर (रज़ि०) से मिलने के लिए गये तो बाहर से यूँ कहा **السلام عليكم هذا عبدالله بن قيس السلام هذا ابو موسى السلام عليكم هذا الاشعري** (रवाहु मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 211)

अगर किसी शख्स को बुला कर भेजा हो और जिसे बुलाया हो वह उसी वक़्त कासिद (दूत) के साथ आ गया और कासिद (दूत) बिना इजाज़त उसे अपने साथ अन्दर ले जाने लगे तो ऐसी सूरत में इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं।

**فقدروى ابوهريرة رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم**

**اذادعى احدكم فجاء مع الرسول فان ذالك له اذن** (रवाहु अबूदाऊद)

(वजह इस की यह है कि जो बुलाने गया है वही साथ लेकर अन्दर दाख़िल हो रहा है, उसे मालूम है कि अन्दर बिला इजाज़त चले जाने का मौक़ा है।)



**नोट- (1)** बाज़ लोगों से बहुत ज़्यादा बेतकलीफ़ी होती है और ऐसे दोस्त को यह भी मालूम होता है कि इस वक़्त जाऊँगा तो घरवालों को तकलीफ़ न होगी और यह मौक़ा औरतों के पास होने का और किसी राज़ की बात का नहीं है। ऐसा शख्स अपने दोस्त की आम इजाज़त पर (जो खासतौर से उसे दी गई हो) नई इजाज़त लिए बिना भी दाख़िल हो सकता है। इस को हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने यूँ बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझ से फ़रमाया कि तुम्हारे लिए मेरे पास आने की बस यही इजाज़त है कि तुम्हें मेरी आहिस्ता की आवाज़ सुनकर यह पता चल जाए कि मैं अन्दर मौजूद हूँ तुम पर्दा उठाओ और अन्दर आ जाओ। हाँ, अगर मैं मना करूँ तो और बात है। (रवाहु मुस्लिम)

(2) इजाज़त देने के लिए ज़बान ही से इजाज़त देना ज़रूरी नहीं। अगर इजाज़त देने के लिए आपस में कोई इस्तिलाह (शब्द) मुक़रर कर रखी हो और उस के मुताबिक़ अमल कर लिया जाए तो वह भी इजाज़त में शुमार होगा।

“हज़रत अली (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में मेरा एक बार दिन को एक बार रात को जाना होता था, जब मैं रात को जाता था तो आप वापस कर देते थे”।

(रवाहु नसई कमा फ़िल् मिशकात पेज नं० 401)

(3) अगर कोई शख्स किसी शेख़ या उस्ताज़ के पास जाए और दरवाज़ा खट्खटाए बिना वहीं दरवाज़ा से हट कर एक तरफ़ इस इन्तिज़ार में बैठ जाए कि अन्दर से निकलेंगे तो बात कर लूँगा या कोई मस्ला पूछ लूँगा या आपके साथ मदरसा या बाज़ार जाने के लिए साथ हो जाऊँगा तो यह जायज़ है, क्योंकि इस से अहले ख़ाना को कोई तकलीफ़ नहीं होगी।

(4) अगर किसी के किवाड़ों पर दस्तक दे तो इतनी ज़ोर से हाथ न मारे कि अहले ख़ाना परेशान हो जाएँ। सोते हुए जाग उठें या नमाज़ पढ़ने वाले परेशान हो जाएँ, इतने आहिस्ता से बजाए कि अन्दर आवाज़ पहुँच जाए कि कोई शख्स दरवाज़े पर है।

**30-31**

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۚ وَلَا يُدْرِينَ زِينَتُهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أُوَّابَائِهِنَّ أَوْ آبَاءٍ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءٍ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتٍ أُخُوتِهِنَّ أَوْ نِسَاءٍ يَمْسُكْنَ ۖ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۚ أَوِ الْوَسْطَىٰ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَتِ النِّسَاءِ ۚ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ ۚ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۚ وَتَوْبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا ۖ إِنَّهُ يَتُوبُ الْعُتُوبِينَ ۝

### नज़र की हिफ़ाज़त का बयान

इन दोनों आयतों में पर्दे के हुक्म बयान फ़रमाए गये हैं, पहले तो मर्दों और औरतों को नज़रें पस्त



यानी नीची रखने का हुक्म फ़रमाया और साथ ही यह भी फ़रमाया कि अपनी शर्मगाहों को महफूज़ रखें यानी ज़िना न करें। दोनों बातों को साथ जोड़ कर यह बता दिया कि नज़र की हिफ़ाज़त न होगी तो शर्मगाहों की हिफ़ाज़त भी न रहेगी।

घरों में जाने के लिए जो इजाज़त लेने का हुक्म है उस में जहाँ दूसरे हुक्मों की रिआयत है वहाँ नज़र की हिफ़ाज़त भी है। जब नज़र की हिफ़ाज़त होगी तो मर्द व औरत का मेल-जोल आगे नहीं बढ़ेगा और ज़िना तक न पहुँचेंगे।

चूँकि नज़र को भी मज़ा आता है और नज़र से ही शुरुआत होती है, इसलिए अल्लाह तआला ने नज़र पर पाबन्दी लगाई है और नज़र को भी ज़िना करार दिया है।

“रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि आँखों का ज़िना देखना है और कानों का ज़िना सुनना है और ज़बान का ज़िना बात करना है और हाथ का ज़िना पकड़ना है और पांव का चल कर जाना है और दिल ख़्वाहिश करता और चाहत करता है और शर्मगाह उस को सच्चा कर देती है या झूठा कर देती है”।

(रवाहु मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 336)

मतलब यह है कि ज़िना से पहले जो ज़ानी मर्द और ज़ानी औरत की तरफ़ से नज़रबाज़ी और बातचीत, छूना और पकड़ना और चल कर जाना होता है यह सब ज़िना में शुमार है और यह चीज़ें असली ज़िना तक पहुँचा देती हैं। कभी-कभी असली ज़िना का अमल हो ही जाता है (जिस के बारे में फ़रमाया कि शर्मगाह तस्दीक़ कर देती है।)

और बाज़ मर्तब: असली ज़िना नहीं हो पाता है, मर्द औरत उसे नहीं कर पाते (जिस को यूँ बयान फ़रमाया कि शर्मगाह झुठला देती है। यानी अंगों से ज़िना तो हो गया, लेकिन उस के बाद असली ज़िना का मौक़ा नहीं मिलता) नज़र की हिफ़ाज़त नज़र का हुक्म मर्दों को भी है और औरतों को भी है।

नज़र के बारे में शरीअत में बहुत से अहक़ाम हैं, एक औरत दूसरी औरत के किस हिस्से पर नज़र डाल सकती है और एक मर्द दूसरे मर्द के किस हिस्से को देख सकता है, इस के भी क़ानून हैं और शहवत की नज़र तो सिवाय मियाँ-बीवी के किसी के लिए ह़लाल नहीं। जिस नज़र से नफ़्स को मज़ा आए वह शहवत की नज़र है। अगर औरत पर्दा न करे मर्दों को तब भी नज़र डालना मना है।

हज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि रास्तों में मत बैठा करो। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हमारे लिए इस के अलावा कोई जगह नहीं है? इसलिए कि हम रास्तों में बैठ कर बातें करते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अगर तुम्हें यह करना ही है तो रास्तों को उस का हक़ दिया करो। अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह रास्ते का हक़ क्या है? फ़रमाया नज़रें पस्त रखना, किसी को तकलीफ़ न देना, सलाम का जवाब देना, भलाई का हुक्म करना, गुनाह से रोकना। (रवाहु बुख़ारी)

अपने महरमों से पर्दा नहीं है, लेकिन अगर वहाँ भी शहवत की नज़र पड़ने लगे तो पर्दा लाज़िम है। अगर कोई औरत यह समझती हो कि मेरा फ़ल्लाँ महरम मुझ पर बुरी नज़र डालता है तो पर्दा करे,

अगर बेध्यानी से कहीं ऐसी नज़र पड़ जाए जो हलाल नहीं है तो फौरन नज़र को हटा ले।

“हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा अचानक नज़र पड़ जाए तो क्या करूँ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि नज़र को फेर लो”। (रवाहु मुस्लिम)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) को ख़िताब करते हुए इश्राद फ़रमाया कि ऐ अली! नज़र पड़ जाने के बाद नज़र को बाकी न रखो, यानी जो नज़र बेअख़्तियार पड़ जाए उस को फौरन हटा लो क्योंकि बेअख़्तियार जो नज़र पड़ी उस पर मुवाख़िज़ा (पकड़) नहीं। अगर नज़र को बाकी रखा तो उस पर मुवाख़िज़ा (पकड़) होगा। **فان لك الاولى وليست لك الاخرة** (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 269)

हज़रत उबादह बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इश्राद फ़रमाया कि तुम मुझे छः चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हारे लिए जन्नत का ज़ामिन हो जाता हूँ। (1) जब बात करो तो सच बोलो (2) जब वादा करो तो पूरा करो (3) जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो अदा कर दो (4) और अपनी शर्मगाहों को महफूज़ रखो (5) और अपनी आँखों को नीची रखो (6) और अपने हाथों को (जुल्म व ज़्यादती से) रोके रखो। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 415)

हिफ़ाज़त नज़र और हिफ़ाज़त शर्मगाह का हुक्म देने के बाद इश्राद फ़रमाया:-

**وَلَا يُدِينَنَّ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا**

और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें, मगर जो उस में से ज़ाहिर हो जाए।

“हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से ऊपर की चादर मुराद है। जब औरत अच्छी तरह कपड़ों में लिपट कर चौड़ी चादर ओढ़ कर मुँह छिपा कर किसी ज़रूरत से बाहर निकलेगी तो ऊपर की चादर पर मर्दों की नज़र पड़ेगी, चूँकि औरत मजबूरी से निकली है और ऊपर की चादर पर शहवत की नज़र भी नहीं पड़ती इसलिए इस तरह का निकलना मना नहीं है। उस पर नज़र पड़ जाए तो यह उस ज़ीनत के ज़ाहिर करने में शामिल नहीं है जो मना है”।

ज़ीनत के ज़ाहिर करने की मुमानिअत के बाद फ़रमाया:-

**وَلْيُضَرِّبْنَ بِخُرْبُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ** (और चाहिए कि मोमिन औरतें अपने दुपट्टों को अपने गिरेबानों पर डाले रहा करें।)

इस में सीना ढाँके रहने का हुक्म फ़रमाया है क्योंकि गिरेबान आमतौर से सीने पर ही होता है, ज़माने जाहिलियत में औरतें सरों पर दुपट्टे डालकर दोनों किनारे पीठ की तरफ़ छोड़ दिया करती थीं जिस से गिरेबान और गला और सीना और कान खुले रहते थे। अल्लाह तआला ने मोमिन औरतों को हुक्म दिया कि इन चीज़ों को छुपा कर रखें।

सहीह बुख़ारी (पेज नं० 700 भाग 2) में है कि ‘हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा’ ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने अपनी किताब में **وَلْيُضَرِّبْنَ بِخُرْبُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ** का हुक्म नाज़िल फ़रमाया तो सहाबी औरतों ने अपनी चादरों को फाड़ कर दुपट्टे बना लिए। यह हदीस सुनन अबी दाऊद (किताब अल् बास पेज 2 भाग 211) में भी है।

इस में यह शब्द हैं कि **شَتَّنَ كُفَّ مِرْوَطَهُنْ فَاخْتَمَرْنَ بِهَا** उन्होंने अपनी मोटी-मोटी चादरों को काट कर दुपट्टे बना लिये।

इस से मालूम हुआ कि सरों के दुपट्टे ऐसे हों जिन में बाल नज़र न आएँ और उन्हें इस तरह ओढ़ा जाए कि सर, गर्दन, कान और सीना सब ढंका रहे। याद रहे कि यह आम हालात में घरों में रहते हुए अमल करने का हुकम है, बाहर निकलने का इस में ज़िक्र नहीं है बाहर निकलने में चेहरा ढांकना भी लाज़िम है।

आजकल की औरतें जिन्हें कुआँन व हदीस के अहकाम का ध्यान नहीं है पहले तो उन्होंने बारीक दुपट्टे बना लिए हैं जिन में बाल नज़र आते हैं उन्हें ओढ़ कर नमाज़ भी सही नहीं होती, दूसरे ज़रा सा हिस्सा सर पर डाल कर चल देती हैं। ज़माने जाहिलियत की औरतों की तरह आधे-आधे सीने तक सब कुछ खुला रहता है। उन को गर्मी लगती है, इस्लाम के तकाज़ों की कुछ परवाह नहीं करती हैं।

इस के बाद उन मर्दों का ज़िक्र फ़रमाया जिस के सामने ज़ीनत का इज़हार जायज़ है। यह वह मर्द हैं जो शरअन महरम माने जाते हैं, उनसे फ़िल्ने का ख़तरा नहीं क्योंकि महरम खुद उन औरतों की इज़ज़त व इफ़्फ़त के मुहाफ़िज़ होते हैं, फिर उन का रिश्ता ऐसा है कि रहन-सहन में उन से पर्दे का एहतिमाम करना दुश्वार भी है। यूँ फ़रमाया **لَا يَبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا بِعَوَّلَتِهِنَّ** (और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर) मियाँ-बीवी का आपस में किसी जगह का कोई पदा नहीं, लेकिन गुप्त अंगों को न देखना फिर भी अफ़ज़ल है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया **فَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَطْرًا** मैंने कभी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शर्म की जगह को नहीं देखा, यहाँ तक कि बीवी शौहर वाले ख़ास अमल के वक़्त भी पूरी तरह नंगे होने से मना फ़रमाया है।

|                                  |                                                            |
|----------------------------------|------------------------------------------------------------|
| أَوِّالِيَهُنَّ                  | (अपने बापों)                                               |
| أَوِّالِيَهُنَّ بِعَوَّلَتِهِنَّ | (अपने शौहरों के बापों)                                     |
| أَوِّالِيَهُنَّ                  | (अपने बेटों)                                               |
| أَوِّالِيَهُنَّ بِعَوَّلَتِهِنَّ | (अपने शौहरों के बेटों) अपने बेटे हों या दूसरी बीवी से हों। |
| أَوِّ إِخْوَانِهِنَّ             | (अपने भाईयों)                                              |
| أَوِّ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ       | (अपने भाईयों के बेटों)                                     |
| أَوِّ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ       | (अपनी बहनों के बेटों)                                      |

### महरम-

आयते करीमा के अल्फ़ाज़ से मालूम हुआ कि औरत का अपने बाप (जिस में दादा भी शामिल है और शौहर का बाप और अपने लड़के और शौहर के लड़के (जो किसी दूसरी बीवी से हों) और अपने भाई (चाहे हकीकी भाई हों चाहे बाप शरीक भाई हों चाहे माँ शरीक) और अपने भाईयों के लड़के और अपनी बहनों के लड़के (इस में तीनों किस्म के बहन भाई दाख़िल हैं जिन का ज़िक्र ऊपर हुआ) इन

लोगों के सामने औरत जीनत के साथ आ सकती है और यह लोग औरत के महारिम कहलाते हैं, लेकिन इन लोगों को भी अपनी महरम औरतों का पूरा बदन देखना जायज़ नहीं है, यह लोग अपनी महरम औरत का चेहरा और सर और बाजू व पिन्डुलियाँ देख सकते हैं बशर्ते कि औरत को और देखने वाले मर्द को अपने नफ्स पर इत्मिनान हो, यानी दोनों में से किसी को शहवत का अन्देशा न हो और अपनी महरम औरत की पीठ और रान को देखना जायज़ नहीं है, अगरचे शहवत का अन्देशा न हो।

‘महरम’ उस को कहते हैं जिस से कभी भी निकाह हलाल न हो। जिन लोगों का ज़िक्र हुआ उन के अलावा चचा, मामू भी महारिम हैं। दूध शरीक भाई बहन और रज़ाई बेटा (जिसे दूध पिलाया हो) भी महरम हैं। उन लोगों के भी वही अहकाम हैं जो ऊपर ज़िक्र हुए हैं। ख़ाला और फूफी और चचा ताया के लड़के और बहनोई महरम नहीं हैं। उन का वही हुक्म है जो ग़ैर महरम का हुक्म है।

इस के बाद फ़रमाया **أَوْسَائِيَّت** (या अपनी औरतों के सामने) यानी मुसलमान औरतें मुसलमान औरतों के सामने अपनी जीनत ज़ाहिर कर सकती हैं। ‘साहिबे हिदाया’ ने लिखा है कि एक मर्द दूसरे मर्द के सारे बदन को देख सकता है, अलूबत्ता नाफ़ से लेकर घुटने तक मर्द भी मर्द को नहीं देख सकते। इसी तरह औरत भी दूसरी औरत के केवल उसी बदन के हिस्से को देख सकती है यानी नाफ़ से लेकर घुटने तक के हिस्से को नहीं देख सकती और इन दोनों मसलों में भी कैद है कि शहवत की नज़र न हो।

बहुत सी औरतें विलादत (पैदाइश) के वक़्त बहुत ज़्यादा बेएहतियाती करती हैं, दाई और नर्स को बच्चा पैदा कराने के लिए बक़द्रे ज़रूरत सिर्फ़ पैदाइश की जगह देखना जायज़ है, उस से ज़्यादा देखना मना है, आसपास जो औरतें मौजूद हों अगरचे माँ-बहन ही हों वह भी नाफ़ से लेकर घुटने तक के हिस्से को न देखें क्योंकि उन का देखना बिना ज़रूरत है।

नर्स और दाई को मजबूरन नज़र डालनी पड़ती है। दूसरी औरतों को कोई मजबूरी नहीं है लिहाज़ा उन्हें देखने की इजाज़त नहीं, यह जो दस्तूर है कि विलादत के वक़्त औरत को नंगी कर देती हैं और औरतें देखती रहती हैं यह हराम है।

आयते शरीफ़ा में जो **أَوْسَائِيَّت** फ़रमाया है (अपनी औरतें) इस में शब्द अपनी से हज़रात मुफ़स्सरीन और फुक्हा-ए-किराम ने यह मस्ला साबित किया है कि जो काफ़िर औरतें हैं, उन के सामने मुसलमान औरतें बेपर्दा होकर न आएँ क्योंकि वह अपनी औरतें नहीं हैं।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने हज़रत मुजाहिद ताबई से नक़ल किया है-

**لا تضع المسلمة خمارها عند مشركة لان الله تعالى يقول اونسائهن فليست من نسائهن**

(यानी मुसलमान औरत अपना दुपट्टा किसी मुशिरक औरत के सामने उतार कर न रखे क्योंकि अल्लाह तआला ने **أَوْسَائِيَّت** फ़रमाया है और मुशिरक औरतें मुसलमान औरतों में से नहीं हैं) हर काफ़िरा औरत मुशिरका या ग़ैर मुशिरका सब का यही हुक्म है।

मुअलिमुत्तन्ज़ील में है:-

**والكافرة ليست من نسائنا لانها اجنبية في الدين، كتب عمر بن الخطاب الى ابى عبيدة ابن الجراح رضى الله عنهما ان يمنع نساء اهل الكتاب ان يدخلن الحمام مع المسلمات**

काफिर औरत हमारी औरतों में से नहीं हैं। हज़रत उमर (रज़ि०) ने 'अबू उबैदह बिन जराह' (रज़ि०) को लिखा था कि अहले किताब औरतों को मुसलमान औरतों के साथ हमामात में दाखिल होने से मना करें।

'दुर्रे मुख्तार' में लिखा है **الذمية كالرجل الاجنبى فلا تنظر الى بدن المسلمة** (ज़िम्मी औरत यानी काफिर औरत जो मुसलमानों की अमलदारी में रहती हो वह मुसलमान औरत के बदन को न देखे) इस में साहिबे रद्द अल् मुख्तार ने लिखा है:-

**لا يحل للمسلمة ان تنكشف بين يدي يهودية او نصرانية او مشركة الا ان تكون امه لها  
كما فى السراج ونصاب الاحتساب ولا ينبغي للمرأة الصالحة ان تنظر اليها المرأة  
الفاجرة لانها تصفها عند الرجال فلا تضع جلبلا بها ولا خمارها كما فى السراج**

मुसलमान औरत के लिए यह इलाल नहीं है कि यहूद व नसरानिया या मुशिरका औरत के सामने बेपर्दा हों। हाँ, अगर उस की अपनी मम्लूका (बाँदी) हो तो उस के सामने आना अलग बात है और किसी नेक औरत के लिए यह मुनासिब नहीं है कि फ़ाजिर औरत के सामने बेपर्दा हो जाए क्योंकि वह मर्दों के सामने इस का हाल बयान करेगी, लिहाज़ा उस के सामने अपनी चादर और दुपट्टे को न उतारे।  
(रद्द अल् मुख्तार)

मुसलमान औरत, काफिर औरत के सामने सिर्फ़ चेहरा और हथेलियाँ खोल सकती है। तमाम ग़ैर मुस्लिम औरतें, भंगिन, धोबन, नर्स, लेडी डाक्टर वगैरह जो भी हों उन सब के बारे में यही हुक्म है जो ऊपर बयान हुआ। बच्चे पैदा कराने के लिए मुसलमान दाईयाँ और नर्स हों तो बेहतर और यह भी बक़्द्रे ज़रूरत पैदाईश की जगह नज़र डाल सकती हैं और अगर किसी ग़ैर मुस्लिम औरत को बच्चा जनवाने के लिए बुलवाएँ तो उस के सामने कोई औरत सर न खोले और जहाँ तक मुम्किन हो काफिर औरत को बुलाने से परहेज़ करें।

**ذكر ابن كثير فى تفسيره عن مكحول وعبادة بن نسي انهما كرهما ان تقبل لا تكون**

**قابلة اى حاضرة عند الولادة لتعمل عمل الاستبلااد حينئذ تلد المرأة المسلمة**

**النصرانية واليهودية والمجوسية المسلمة**

**او ما ملكت ايمانهن** {या उन के सामने जो उन की मम्लूक (बाँदी) हैं} अभी पर्दा का बयान जारी है। जब मुसलमान शरई जिहाद करते थे तो गुलामों बाँदियों के मालिक हो जाते थे, जब से शरई जिहाद को छोड़ा है और काफिरों के साथ मुआहिदों में बंधे हैं गिरते जा रहे हैं। जब बाँदी और गुलाम होते थे तो औरतें भी उन की मालिक होती थीं, उस वक़्त यह सवाल भी होता था कि औरत का अपने गुलाम और अपनी बाँदी से कितना पर्दा है **اَوْ مَا مَلَكَتْ اِيْمَانُهُنَّ** में इसी को बयान फ़रमाया है।

'हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा' ने फ़रमाया कि इस से सिर्फ़ बान्दियाँ मुराद हैं। 'मर्द मम्लूक' यानी गुलाम मुराद नहीं हैं। हज़रत इमाम शाफ़ई का भी यही कौल है। 'साहिबे रुहुल् मआनी' ने लिखा है कि

हज़रत 'सईद बिन मुसय्यिब' पहले यूँ कहते थे कि गुलाम और बाँदी का एक ही हुक्म है (यानी किसी मुसलमान औरत का उस के अपने मम्लूक गुलाम या बाँदी से वह पर्दा नहीं जो अजनबी से है) बाद में उन्होंने रुजूअ़ फ़रमाया और फ़रमाया **لا يغرنكم آية النور رفانها في الاناث دون الذكور**

(यानी तुम सूर: नूर की आयत की वजह से धोके में मत पड़ना क्योंकि वह मम्लूक औरतों के बारे में है, मम्लूक मर्दों के बारे में नहीं है।)

'साहिबे हिदाया' फ़रमाते हैं कि औरत का गुलाम अगरचे उस का मम्लूक है, मगर वह मर्द ही है, वह न महरम है, न शौहर है जबकि शौहर (बीवी) हक्दार है, लिहाज़ा मम्लूक गुलाम का वही हुक्म है जो अजनबी मर्दों का हुक्म है। 'अल्लामा कुर्तुबी' ने 'अहकामुल् कुर्आन' भाग 12, पेज 233-234 में 'हज़रत इब्ने अब्बास' और 'हज़रत आमिर शअबी' 'हज़रत मुजाहिद' और 'हज़रत अता' से नक्ल किया है कि गुलाम मम्लूक अपनी आका औरत के बालों पर नज़र न डाले।

घरों में काम करने वाले जो नौकर चाकर हैं उन का हुक्म भी वही है जो अजनबी मर्दों का है, इस में किसी का इख़्तिलाफ़ (असहमति) नहीं। इसी तरह जो औरतें घरों में काम करती हैं, वह मम्लूक और बांदियाँ नहीं हैं, उन पर भी लाज़िम है कि मर्दों से पर्दा करें जिन के घरों में काम करती हैं और मर्दों पर भी लाज़िम है कि उन पर नज़रें न डालें।

**أَوَالِثَّيِّعِينَ غَيْرِأُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ** (या उन मर्दों के सामने जो बद्हवास हों जिन्हें हाज़त नहीं है) मतलब यह है कि जो बद्हवास पागल टाइप के लोग हों, जिन को शहवत से कोई वास्ता नहीं, औरतों के हालात और गुणों से कोई दिलचस्पी नहीं, उन्हें बस खाने-पीने को चाहिए तुफैली बन कर पड़े रहते हैं, ऐसे लोगों के सामने औरतें अगर ज़ीनत (बनाव श्रृंगार) ज़ाहिर कर दें तो कोई हर्ज नहीं है यानी यह लोग भी महरमों के दर्जे में हैं। आयत का यह मतलब 'हज़रत इब्ने अब्बास' (रज़ि०) से मन्कूल है उन्होंने फ़रमाया **هذا الرجل يتبع القوم وهو مغفل في عقله لا يكثرث للنساء ولا يشهى عن نساء** (दुर्रें मन्सूर पेज नं० 43 भाग 5)

हज़रत ताऊस ताबर्ज़ी से भी इसी तरह के शब्द नक्ल किये गये हैं उन्होंने फ़रमाया:-

**هو الاحمق الذي لا حاجة له في النساء**

याद रहे कि अगर इन मर्दों के सामने औरत गहरे पर्दे का एहतिमाम न करे (महरमों की तरह समझे) तो इस की इजाज़त तो है, लेकिन औरतों को उन पर शहवत की नज़र डालना जायज़ नहीं है।

कुर्आन मजीद के अल्फ़ाज़ **غَيْرِأُولِي الْإِرْبَةِ** हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) की तफ़सीर से मालूम हो गया कि उन मर्दों के सामने औरतें आ सकती हैं जो गाफ़िल, बेअक्ल हों, न उन में शहवत हो, न औरतों की तरफ़ दिलचस्पी हो। इन में बूढ़े मर्द शहवत वाले और हिंजड़े दाख़िल नहीं हैं। औरतें ऐसे लोगों को बूढ़ा समझ कर या बाबा दादा कह कर सामने आ जाती हैं यह गुनाह की बात है। अगर कोई शख्स नामर्द हो या उस का (मख़सूस अंग) कटा हुआ हो वह भी **غَيْرِأُولِي الْإِرْبَةِ** में शामिल नहीं है और उस के सामने आना भी मना है।

'सहीह बुख़ारी' में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपनी अहलिया मुतह़हरह 'उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु



अन्हा' के पास थे, वहाँ घर में उस वक्त एक मुखन्नस (हिंजड़ा) भी था, उस हिंजड़े ने हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई से कहा कि ऐ अब्दुल्लाह! अगर अल्लाह तआला ने तायफ़ को फ़तेह़ फ़रमा दिया मैं तुझे ग़ीलान की बेटी बता दूँगा, जब सामने आती है तो उस के पेट में चार शिकनें होती हैं और जब पीठ मोड़ कर जाती है तो उस की कमर से आठ शिकनें नज़र आती हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उस की बात सुनकर इर्शाद फ़रमाया कि यह लोग हरगिज़ तुम्हारे घरों में न आएँ।

(मिशक़ातुल मसाबीह 270 अज़ बुख़ारी व मुस्लिम)

قال صاحب الهداية الخصى فى النظر الى الاجنبية كالفحل لقول عائشة  
رضى الله عنها الخضاء مثله فلا يبيع ما كان حراما قبله ولا نه فحل يجمع وكذا  
المجبوب لانه يسحق وينزل وكذا المخنث فى الردى من الافعال لانه فحل  
فاسق والحاصل انه يؤخذ فيه بحكم كتاب الله المنزل

أَوِ الْفِطْلَ الَّذِي لَمْ يَطْرُقْ عَلَيْهِ عَوْرَتُ الْمَرْءِ (या उन लड़कों पर जो औरतों के पर्दा की चीज़ों पर जानकारी नहीं लेते) यानी वह नाबालिग़ लड़के जो औरतों के मख्सूस हालात और सिफ़ात से बिल्कुल बेख़बर हैं उन के सामने औरत आ सकती है और जो लड़का औरतों से सम्बन्धित हालात और खूबियों को जानता और समझता हो उस से पर्दा करना वाजिब है।

وَلَا يَضْرِبْنَ بِالْأُصْبُعِ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفَيْنَ مِنْ زِينَتِهِنَّ

(और औरतें अपने पांव न मारें यानी ज़ोर से न रखें जिससे उन का छुपा हुआ ज़ेवर मालूम हो जाए) औरतों को ज़ेवर पहनना तो जायज़ है बशर्ते कि दिखावे के लिए न हो और जो ज़ेवर पहने उस में यह शर्त है कि बजने वाला ज़ेवर न हो तो ज़ेवर के अन्दर कोई बजने वाली चीज़ डाले और न ज़ोर से पांव मार कर चले क्योंकि ऐसा करने से ग़ैर महरम ज़ेवर की आवाज़ सुन लेंगे जो आपस में टकरा कर बज सकता है।

‘हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा’ के पास एक लड़की लाई गई, वह बजने वाला ज़ेवर पहने हुए थी। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि जब तक उस का यह ज़ेवर न काट दो, हरगिज़ मेरे पास न लाओ। मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है कि उस घर में फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते जिस में बजने वाली चीज़ हो। (रवाहु अबू दाऊद)

जब ज़ेवर की आवाज़ सुनना महरमों को मना है तो औरत के लिए अपनी आवाज़ सुनाने में ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है। मजबूरी दर्जे में नामहरमों से ज़रूरत की कोई बात की जाए तो इस की गुंजाईश है उस को समझ लिया जाए। औरत अगर बाहर निकले तो ख़ूब एहतिमाम के साथ पर्दे में निकले और पर्दा के लिए जो बड़ी चादर या बुर्का इस्तेमाल करे वह भी कढ़ा हुआ कामदार और बेल-बूटे वाला न हो जो मर्दों की नज़र को लुभाने वाला हो और जब ज़ेवर की आवाज़ सुनाना जायज़ नहीं तो नामहरमों को खुशबू सुंघाना तो और भी मना है।



हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फरमाया, जो औरत इत्र लगाकर रास्ते से गुज़रे ताकि लोग उसकी खुशबू से लुफ्त अन्दोज़ हों तो वह ऐसी और ऐसी (यानी बद्कार) है। (तिर्मिज़ी)

وَتُؤْتُونَ إِلَى اللَّهِ حَبِيبًا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

“ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह के हुज़ूर में तौब: करो ताकि कामियाब हो जाओ”।

इस में मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को हुक्म दिया गया है कि सब अल्लाह के हुज़ूर में तौब: करें, तौब: करने में कामियाबी है। हर तरह के तमाम गुनाहों से तौब: करें और नफ़्स व नज़र से जो गुनाह हो गए हों उन से ख़ास तौर से तौब: करें। नफ़्स व नज़र का ऐसा गुनाह है जिस पर दूसरों को ख़बर नहीं होती और नज़रों को और नफ़्सों के इरादों को अल्लाह तआला ही जानता है या वह जानता है जो गुनाह में मुब्तिला हो।

किसी मर्द ने किसी मर्द या औरत को बुरी नज़र से देख लिया या किसी औरत को बुरी नज़र से देख लिया या किसी औरत ने किसी मर्द पर नफ़्सानियत वाली नज़र डाल दी तो उस का उस शख्स को पता नहीं चलता जिस पर नज़र डाली है और न किसी दूसरे शख्स को पता चलता है, अपने नफ़्स व नज़र की खुद ही निगरानी करते रहें और हर गुनाह से तौब: करें।

## बेपर्दगी को पसन्द करने वालों की जाहिलाना बातें

जब से लोगों में सिर्फ़ इस्लाम का दावा रह गया है और इस्लाम पर चलने की हिम्मत नहीं है, वह यह चाहते हैं कि दीनदार भी रहें और आज़ाद भी, ऐसे लोग बेपर्दगी के हामी हैं। यह लोग चाहते हैं कि मुसलमान औरतें काफ़िर औरतों की तरह गली कूचों में फिरेँ और बाज़ारों में गश्त लगाएँ।

उन लोगों को तो और कुछ न मिला الا ما ظر منها मिल गया और الا ما ظر منها की तफ़सीर जो ‘हज़रत इब्ने मसऊद’ (रज़ि०) ने की है कि इस से ऊपर की चादर मुराद है, चूँकि यह उन लोगों के नफ़्सानी ज़चात के खिलाफ़ थी इसलिए इस से तो एराज़ किया और हज़रत इब्ने अब्बास से जो इस की तफ़सीर में वजह और कफ़न (चेहरा और हाथ) है उसे ले उड़े। क्या वजह है हज़रत इब्ने मसऊद की तफ़सीर को छोड़ दिया? जबकि वह पुराने सहाबी हैं, साबिकीन अब्वलीन में से हैं, जिन के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इश्राद है:-

عبدكم ام عبدكم ام عبدكم ام عبدكم कि تمسكوا بعهداين ام عبدكم के उम्मे अबद के बेटे (इब्ने मसऊद) की तरफ़ से जो दीनी हुक्म मिले उस को मज़बूती से पकड़ लो। (मिशकात पेज नं० 578)

‘हज़रत इब्ने अब्बास’ (रज़ि०) मुफ़स्सिरे कुआन और बड़े आलिम थे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन को भी الوجه والكفان की दुआ दी थी। अगर उन की इस तफ़सीर को लिया जाए जो उन्होंने الوجه والكفان से की है तब भी उस से औरतों को बेपर्दा होकर बाहर निकलने का जवाज़ साबित नहीं होता क्योंकि पहले तो आयते शरीफ़ा में الا ما ظر منها नहीं फरमाया है

(यानी यह नहीं फ़रमाया कि औरतें ज़ाहिर किया करें, बल्कि यूँ फ़रमाया कि जो ज़ाहिर हो जाए) अब समझ लें जब औरत चेहरा खोल कर बाहर निकलेगी तो इज़्हार हो गया? क्या इस को यूँ कहेंगे कि बिला अज़्ज़ियार ज़ाहिर हो गया है? फिर यह भी स्पष्ट रहे कि आयत में नामहरम के सामने ज़ाहिर होने का ज़िक्र नहीं है, औरतों की पर्दा दरी के हामी यहाँ नामहरमों को घसीट कर खुद से ले आए।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) के कलाम में नामहरमों के सामने औरत का चेहरा और अलूकफ़ैन (हाथ) के ज़ाहिर होने और ज़ाहिर करने का कोई ज़िक्र नहीं है, उन की बात का सीधा सादा मतलब यह है कि औरत को आ़म हालत में जबकि वह घर के कामकाज में लगी हुई हो सारे कपड़े पहने रहना चाहिए। अगर चेहरा और हाथ खुला रहे और घर की औरतें और बाप-बेटे और दूसरे महरमों की नज़र पड़ जाए तो यह जायज़ है।

लोगों में यूँ ही बेदीनी है, ऊपर से उन्हें यह मुफ़्त के नासमझ भी मिल गए जिन्होंने कह दिया कि चेहरे का पर्दा नहीं है, अगर है तो मुस्तहब दर्जे का। इन लोगों ने न आयात और अह़ादीस को देखा और न यह सोचा कि औरत बेपर्दगी को सिर्फ़ चेहरे तक सीमित न रखेगी।

देख लें! बेपर्दा बाहर निकलने वाली औरतों का क्या हाल है। क्या सिर्फ़ चेहरा ही खुला रहता है? उन लोगों ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) के कौल को देखकर मतलब ग़लत निकाल लिया, फिर अपनी जाती राय को औरतों में फैलाना शुरु कर दिया।

### सूर: अहज़ाब में हुक्म

وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ

(और जब तुम उन से किसी बरतने की चीज़ का सवाल करो तो उन से पर्दा के पीछे से माँगो) पढ़िए और ग़ौर कीजिए कि अगर चेहरा पर्दा में नहीं है तो पर्दा के पीछे से माँगने की क्या ज़रूरत है? यूँ भी औरतें आमतौर से घरों में नंगी तो नहीं रहती हैं आमतौर से हाथ और चेहरा खुला रहता है, अगर चेहरे का पर्दा नहीं तो नामहरम मर्दों को कोई चीज़ लेने के लिए पर्दा के बाहर से तलब करने का हुक्म क्यों फ़रमाया?

तो मालूम हुआ कि चेहरा ही अस्ल पर्दा की चीज़ है, फिर उस में हुक्म का शब्द भी है जो वजूद पर दलालत (Evidence) करता है। इस से उन नासमझों के बात को रद्द करना है जो यूँ कहते हैं कि चेहरा को ढांपना अफ़ज़ल है, वाजिब नहीं है।

अब सूर: अहज़ाब की एक और आयत देखिए इर्शाद है:-

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيزٍ

(ऐ पैग़म्बर! अपनी बीवियों से और अपनी साहिबज़ादियों से और दूसरे मुसलमानों की बीवियों से कह दीजिए कि अपने ऊपर अपनी चादरों के हिस्सों को नीचा कर लिया करें) इस आयत की तफ़सीर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया:-

امر نساء المومنین ان یغطین رؤوسهن ووجوهن بالحلابیب الاعینا واحدة لیعلم انهن حرائر

(मुआलिमुल्लन्ज़ील भाग 3 पेज नं० 544)

“यानी मोमिनीन की औरतों को हुक्म दिया गया है कि वह अपने सरो को और चेहरों को बड़ी और चौड़ी चादरों से ढाँके रहा करें सिर्फ एक आँख खुली रखें, ताकि यह मालूम हो जाए कि यह बांदियाँ नहीं हैं”।

याद रहे कि यह वही ‘इब्ने अब्बास’ हैं जिन की तरफ़ **إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا** की तफ़्सीर **الوجوه والكفان** मन्सूब है। मालूम हुआ कि उन्होंने जो यह फ़रमाया है कि **إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا** से **وجه وكفین** मुराद हैं। इस का यह मतलब नहीं है कि खुला चेहरा लेकर नामहरमों के सामने आ जाया करें या चेहरा खोल कर बाहर निकला करें।

जब उन्होंने इस दूसरी आयत की तफ़्सीर में यह फ़रमा दिया कि बड़ी चादरों से अपने सर और चेहरा ढाँके रहें और देखने की ज़रूरत से सिर्फ एक आँख खुली रहे तो मालूम हुआ कि **إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا** की तफ़्सीर जो उन्होंने ‘वजह’ और ‘कफ़ैन’ फ़रमाया है, इस से उन के नज़्दीक घरों में रहते हुए चेहरे और हाथ खुले रहने की इजाज़त मुराद है।

शैतान बुरे-बुरे वस्वसे डालता है और गुमराही के रास्ते दिखाता है, उस ने पर्दा के मुख़ालिफ़ीन (विरोधियों) को यह बात समझाई कि पर्दा का हुक्म रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बीवियों के लिए है और उन्हीं के लिए ख़ास है। उन लोगों के इस बात की तर्दीद सूरः अहज़ाब के अल्फ़ाज़ से स्पष्ट तौर पर हो रही है क्योंकि इस में शब्द निसा ‘अल् मोमिनीन’ मौजूद है, फिर एक मोटी समझ वाला इन्सान (जिसे ख़ौफ़े खुदा हो) यह समझने पर मजबूर हो जाता है। जब ‘अज़्वाजे मुतहहरात’ को पर्दा करने का हुक्म है जिन के बारे में **وازواجه امهاتهم** (और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियाँ ईमान वालों की माँ हैं) फ़रमाया है, जिन पर किसी मोमिन की बुरी नज़र पड़ने का सन्देह भी न था तो उन औरतों के बारे में पर्दे का हुक्म क्यों न होगा जिन की तरफ़ जानबूझकर बुरी नज़र डाली जाती हैं और जो खुद मदों को अपनी तरफ़ मायल (attract) करने का इरादा रखती हैं? क्या किसी अक्ल वाले इन्सान की समझ में यह बात आ सकती है कि ख़ानदाने नुबूवत की चन्द औरतों को पर्दा का हुक्म देकर उम्मत की तमाम औरतों को क़दीम ज़माने की जाहिलियत की तरह बेपर्दा होकर बाहर फिरने की इजाज़त दे दी हो।

## अह़ादीस में पर्दे का हुक्म

अब अह़ादीस देखें कि जब ग़ज़्वा बनी मुस्तलिक के मौके पर ‘हज़रत सफ़वान बिन मुअ़त्तल’ (रज़ि०) की हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर नज़र पड़ी और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने उन के ‘इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिअून’ पढ़ने की आवाज़ सुनी तो हज़रत आइशा की आँख खुल गई और उन्होंने फ़ौरन अपना चेहरा ढाँप लिया। वह फ़रमाती हैं कि सफ़वान ने मुझे पर्दे का हुक्म नाज़िल होने से पहले देखा था। इसी से समझ लिया जाए कि पर्दे का जो हुक्म नाज़िल हुआ था वह चेहरे से भी ज़ाहिर था वरना उन्हें चेहरा ढाँपने की और यह बयान करने की ज़रूरत न

थी कि उन्होंने मुझे हिजाब नाज़िल होने के हुक्म से पहले देखा था।

इससे पहले यह वाकिआ बहवाला 'सहीह बुख़ारी' गुज़र चुका है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपनी अहलिया मोहतरमा 'उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा' के पास थे, वहीं एक हिजड़ा भी था, उस ने 'हज़रत उम्मे सल्मा' के भाई से कहा, अगर अल्लाह तआला ने तायफ़ को फ़तेह कर दिया तो मैं तुम्हें 'गीलान' की बेटी बता दूँगा जो ऐसी-ऐसी है। इस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि यह लोग हरगिज़ तुम्हारे घरों में दाख़िल न हों।

“हज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि हज़रत उमर (रज़ि०) ने यूँ कहा कि या रसूलुल्लाह! आप के पास अच्छे बुरे लोग आते जाते हैं। (वहाँ उम्माहातुल् मोमिनीन भी होती हैं) अगर आप उम्माहातुल् मोमिनीन को पर्दा करने का हुक्म दे देते तो अच्छा होता। इस पर अल्लाह तआला ने पर्दे वाली आयत नाज़िल फ़रमाई”। (सहीह बुख़ारी पेज नं० 706)

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि पर्दा की आयत में नामहरमों के सामने चेहरे ढांपने का हुक्म नाज़िल हुआ क्योंकि इस से पहले भी कपड़े पहने हुए ही रहती थीं।

“हज़रत अनस (रज़ि०) की एक रिवायत में है वह फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैनब बिनत जहश के साथ शब (रात) गुज़ार कर सुबह को वलीमा किया तो एक बड़ी दअवत की, लोग आते रहे, खाते रहे और जाते रहे, आप के मिज़ाज में हया बहुत थी, आप ने उन से नहीं फ़रमाया कि तुम चले जाओ बल्कि खुद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुज़रे की तरफ़ चले गये। जब मैंने आप को ख़बर दी कि वह लोग चले गये तो आप वापस तशरीफ़ ले आए। आप के साथ दाख़िल होने लगा तो आप ने मेरे और अपने दर्मियान पर्दा डाल दिया और आयत हिजाब यानी आयते करीमा **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ** (आख़िर तक) अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमा दी”।

(सहीह बुख़ारी पेज नं० 706, 707)

हज़रत अनस (रज़ि०) आपके ख़ादिम थे, दस बरस तक उन्होंने आप की ख़िदमत की। जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ तो आप ने पर्दा डाल दिया और हज़रत अनस को अन्दर आने नहीं दिया। अब सवाल यह है कि इस से पहले जो हज़रत अनस घरों में अन्दर आते जाते थे, क्या अज़वाज मुतहहरात कपड़े नहीं पहनती थीं? क्या चेहरे के सिवा किसी और जगह भी उन की नज़र पड़ती थी?

अगर चेहरा पर्दे में नहीं तो उन को अन्दर जाने से क्यों रोका गया? अज़वाजे मुतहहरात से फ़रमा देते कि उस को आने जाने दो सिर्फ़ चेहरा खुला रखा करो, लेकिन वहाँ मुस्तक़िल दाख़िल होने पर पाबन्दी लगा दी गई। इस से समझ लिया जाए कि पर्दे का जो हुक्म नाज़िल हुआ उस में अस्ल चेहरे ही का छिपाना है वरना जिस्म के दूसरे हिस्से पहले भी नामहरमों के सामने ज़ाहिर नहीं किये जाते थे।

‘सुनन अबू दाऊद’ किताबुल् जिहाद में है कि ‘हज़रत उम्मे ख़ालिद’ (रज़ि०) का बेटा एक जिहाद के मौके पर शहीद हो गया था, वह चेहरे पर नकाब डाले हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उन का यह हाल देखकर एक सहाबी (रज़ि०) ने कहा कि तुम अपने बेटे का हाल मालूम करने

के लिए आई हो और नकाब डाले हो? 'हज़रत उम्मे ख़ालिद' ने जवाब दिया अगर बेटे के बारे में मुसीबतज़दह हो गई हूँ तो अपनी शर्म व हया खोकर हरगिज़ मुसीबतज़दह न बनूँगी।

“हज़रत उम्मे ख़ालिद के पूछने पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जवाब दिया कि तुम्हारे बेटे के लिए दो शहीदों का सवाब है। उन्होंने अर्ज किया, “या रसूलुल्लाह क्यों?” इर्शाद फ़रमाया, “इसलिए कि उसे अहले किताब ने क़त्ल किया है”। (सुनन अबू दाऊद भाग 1 पेज नं० 336)

इस वाकिये से भी उन लोगों का रद्द होता है जो चेहरे को पर्दे से अलग समझते हैं और यह भी साबित होता है कि पर्दा हर हाल में लाज़िम है। रंज हो या खुशी, नामहरम के सामने बेपर्दा होकर आना मना है, बहुत से मर्द और औरत ऐसा तरीक़ा अख़्तियार करते हैं कि मुसीबत के वक़्त शरीअत का कोई क़ानून नहीं समझते। जब घर में कोई मौत हो जाएगी तो इस बात को जानते हुए कि नौहा करना सख़्त मना है, औरतें ज़ोर-ज़ोर से नौहा करती हैं जनाज़ा घर से बाहर निकाला जाता है तो औरतें दरवाज़े के पास बाहर तक उस के पीछे चली आती हैं और पर्दे का कुछ ख़याल नहीं करतीं। याद रखिए! गुस्सा हो या रज़ामन्दी, खुशी हो या मुसीबत, हर हाल में शरीअत के हुक्मों की पाबन्दी करना लाज़िम है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़ व उमरह के मसायल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि:-

**لا تَتَقَبَّ الْمَرْأَةُ الْمَحْرَمَةَ** (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 235)

यानी एहराम वाली औरत नकाब न डालें, इस से साफ़ ज़ाहिर है कि ज़माने नुबूवत में औरतें चेहरों पर नकाब डाल कर बाहर निकली थीं। याद रहे कि हुक्म यह है कि औरत हालते एहराम में चेहरा पर कपड़ा न डाले। यह मतलब नहीं है कि नामहरमों के सामने चेहरा खोले रहे, यह जो औरतों में मशहूर है कि हालते एहराम में पर्दा नहीं यह ग़लत है। इस ग़लतफ़हमी को हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की एक हदीस से दूर कर किया जा सकता है, उन्होंने फ़रमाया कि हम हालते एहराम में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ थे, गुज़रने वाले अपनी सवारियों पर हमारे पास से गुज़रते थे तो हम अपनी चादर को अपने सर से आगे बढ़ाकर चेहरे के सामने लट्का लेते थे। जब वह लोग आगे बढ़ जाते तो हम चेहरा खोल लेते थे। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 236)

मस्ला यह है कि एहराम वाली औरतें अपने चेहरे को कपड़ा न लगाएँ। यह मतलब नहीं है कि नामहरमों के सामने चेहरा खोले रहे। इस फ़र्क़ को 'हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा' ने स्पष्ट फ़रमा दिया, जैसा कि अबू दाऊद शरीफ़ की रिवायत में मौजूद है।

बेपर्दगी के हिमायती अपनी दलील में एक हदीस भी पेश करते हैं और वह यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र' से फ़रमाया, कि ऐ अस्मा! जब औरत को हैज़ आ जाए यानी बालिग़ हो जाए तो उस के लिए यह ठीक नहीं है कि चेहरा और हथेलियों के अलावा कुछ नज़र आए। पहले तो यह हदीस ही 'मुन्क़तउल् अस्नाद' है।

'हज़रत इमाम अबू दाऊद' ने इस की रिवायत की है लेकिन साथ ही यह भी फ़रमा दिया है कि **خالد بن دريك لم يسمع من عائشة رضي الله عنها** फिर इस में भी नामहरमों को देखने दिखाने का कोई ज़िक्र नहीं है।

पर्दा के मुखालिफों (विरोधियों) को पर्दा हटाने की दलील के लिए कुछ न मिला तो 'हज़रत इब्ने अब्बास' के कौल को हुज्जत बना लिया और उसे कुर्आन करीम के ज़िम्मे लगा दिया, हालांकि कुर्आन मजीद में वजह और कफ़न (चेहरा और हाथ) का कहीं ज़िक्र नहीं है।

## नमाज़ में धोका

कुछ लोगों ने नमाज़ के मस्ले में धोका खाया है या खुद से धोका खाने का बहाना बनाया है। यह लोग कहते हैं कि नमाज़ के बयान में यूँ लिखा है कि औरत का चेहरा और हथेली सतर में दाख़िल नहीं है। इस से भला नामहरमों के सामने चेहरा खोलना कैसे साबित हुआ? नमाज़ में जिस्म ढाँकने का मस्ला दूसरा है और नामहरमों के सामने चेहरा खोलना अलग बात है। देखिए साहिबे दुर्रे मुख़्तार शुरुतुस्सलात के बयान में हुरह यानी आज़ाद औरत की नमाज़ में पर्दापोशी का हुक्म बताते हुए लिखते हैं:-

**وللمحرة جميع بدنّها حتى شعرها النازل في الاصلاح خلا الوجه والكفين والقدمين على المعتمد**

इस में यह बताया कि नमाज़ में आज़ाद औरत के लिए चेहरा और हथेलियाँ और दोनों क़दम के अलावा सारे बदन का ढाँकना लाज़िम है यहाँ तक कि जो बाल सर से लट्के हुए हों उन का ढाँकना भी ज़रूरी है। इस के बाद लिखते हैं:-

**”وتمنع المرأة الشابّة من كشف الوجه بين رجال لا لانه عورة بل لخوف الفتنة  
كمسه وان امن الشهوة لانه اغلظ الوجه بين رجال لا لانه عورة بل لخوف الفتنة  
كمسه وان امن الشهوة لانه اغلظ ولدائبت به حرمة المصاهرة ولا يجوز النظر اليه  
بشهوة كوجه الامر دفائه يحرم النظر الى وجهها ووجه الامر اذاشك في الشهوة اما  
يدونها فيباح ولو جميلا كما اعنمده الكمال**

फुक्हा पर अल्लाह तआला की रहमतेँ हों जिन को अल्लाह तआला ने तम्बीह फ़रमा दी कि ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो नमाज़ के मस्ले से नामहरमों के सामने चेहरा खोलने पर दलील ले सकते हैं। इसलिए उन्होंने 'किताबुस्सलात' ही में नमाज़ में सतर औरत का हुक्म बताकर तुरन्त उसी जगह यह भी बता दिया कि जवान औरत को मर्दों के सामने चेहरा खोलने से मना किया जाएगा क्योंकि इस में फ़िल्ने का डर है और जवान औरत के चेहरे की तरफ़ और बेरेश (बिना दाढ़ी वाले) लड़कों के चेहरों की तरफ़ शहवत से देखना जायज़ नहीं है, जबकि इस में शक हो कि शहवत यानी नफ़्स की कशिश होगी, जब इस में शक हो कि देखने में शहवत होगी या नहीं, ऐसी सूरत में न सिर्फ़ यह कि औरत के चेहरे पर नज़र डालना ह़राम है बल्कि बेरेश लड़के को देखना भी ह़राम है। फिर जब शहवत का यकीन ग़ालिब गुमान हो तो नज़र डालना कैसे ह़राम न होगा?

अब समझ लिया जाए कि इस ज़माने में जो औरत चेहरा खोल कर बाहर निकलेगी उस पर नज़रें



डालने वाले मर्द आमतौर से शहवत वाले हैं या बिला शहवत वाले हैं।

साहिबे जलालीन लिखते हैं:-

وَلَا يَبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَهُوَ الْوَجْهَ وَالْكَفَّانِ فِي جُوزِ نَظَرِهِ لَا حَتْبَىٰ لَنْ لَمْ يَخْفُفْتَنِي أَحَدُ الْوَجْهِينِ وَالثَانِي  
يَحْرَمُ لَانَهُ مَظَنَّةُ الْفِتْنَةِ وَرَجَعَ حَسْبُ اللَّيْلِ

यानी {हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) के कौल के मुताबिक} चेहरा और हथेलियाँ मुराद हैं, लिहाज़ा अगर फित्ना का खौफ़ न हो तो अजनबी को देखना जायज़ है। यह (इमाम शाफ़ई के नज़्दीक) एक राय है और दूसरी राय यह है कि चूँकि चेहरे को देखने में फित्ना का अन्देशा है, इसलिए अजनबी को नामहरम औरत का चेहरा देखना हराम है। इस दूसरी राय को तर्जिह दी गई है ताकि फित्ना का दरवाज़ा बिल्कुल बन्द हो जाए। (मालूम हुआ कि शाफ़ई का भी यही फ़रमाना है चेहरे का पर्दा करना लाज़िम है।)

## हया की अहमियत-

इस्लाम में हया और शर्म की बहुत अहमियत है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि हया और ईमान दोनों साथ-साथ हैं, जब एक उठाया जाता है तो दूसरा भी उठा लिया जाता है।

(मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 432)

हया के तकाज़ों में जहाँ नामहरमों से पर्दा करना है वहाँ मर्दों के आपस के और औरतों के आपस के पर्दा के भी अहक़ाम (आदेश) हैं।

“हज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है, कोई मर्द किसी मर्द की शर्म की जगह को न देखे और कोई औरत किसी औरत के शर्म की जगह को देखें और न दो मर्द (कपड़े उतार के) एक कपड़े में लिपटें और न दो औरतें (कपड़े उतार कर) एक कपड़े में लिपटें”। (मुस्लिम)

इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस तरह औरत का मर्द से पर्दा है उसी तरह औरत का औरत से और मर्द का मर्द से भी पर्दा है, लेकिन पर्दों में तफ़सील (व्याख्या) है। नाफ़ से लेकर घुटनों के ख़त्म तक किसी भी मर्द को किसी मर्द की तरफ़ देखना हलाल नहीं है। बहुत से लोग आपस में ज़्यादा दोस्ती हो जाने पर पर्दा की जगह एक दूसरे को बिला तकल्लुफ़ दिखा देते हैं (यानी पैट आदि उतार कर सामने बदलते हैं) यह सरासर हराम है, उसी तरह औरत को औरत के सामने नाफ़ से लेकर घुटनों के ख़त्म तक खोलना हराम है।

## पर्दे की जगह का छूना हराम है-

जितनी जगह में नज़र का पर्दा है उतनी जगह को छूना भी दुरुस्त नहीं है चाहे कपड़े के अन्दर हाथ डाल कर ही क्यों न हो। जैसे- किसी भी मर्द को यह जायज़ नहीं कि किसी मर्द के नाफ़ से लेकर घुटनों तक के हिस्से को हाथ लगाए। इसी तरह किसी औरत को यह जायज़ नहीं कि किसी औरत के



नाफ़ के नीचे के हिस्से को घुटनों के ख़त्म तक हाथ लगाए। इसी वजह से ह़दीस में दो मर्दों को एक कपड़े में लिपटने की मनाही फ़रमाई है और यही मनाही औरतों के लिए भी है यानी दो औरतें एक कपड़े में न लिपटें।

यह जो कुछ बयान हुआ ज़रूरत और मजबूरी के अलावा हैं, मजबूरी सिर्फ़ दो जगह पेश आती है। एक तो बच्चा पैदा कराने के वक़्त, इस में भी दाई, नर्स, लेडी डाक्टर सिर्फ़ बक़द्रे ज़रूरत पर्दा की जगह में नज़र डाल सकती है मगर किसी दूसरे को देखने की इजाज़त नहीं है।

दूसरी मजबूरी इलाज के मौक़े में पेश आती है। इस में भी **الضرورة تقدر بقدر الضرورة** का लिहाज़ करना लाज़िम है। जिस का मतलब यह है कि मजबूरन जितने बदन का देखना ज़रूरी हो, इलाज करने वाला बस उतना ही देख सकता है। जैसे- अगर रान में ज़ख़्म हो तो हकीम या डाक्टर सिर्फ़ उतनी ही जगह देख सकता है, जिस का देखना ज़रूरी है।

(जैसे- आपरेशन करना है या कूल्हे में किसी मजबूरी से इन्जेक्शन लगाना है तो सिर्फ़ इन्जेक्शन लगाने के लिए ज़रा सी जगह खोली जाए जिसका तरीक़ा ऊपर ज़िक्र हुआ और जो जगह इलाज की मजबूरी से डाक्टर या हकीम को देखना जायज़ है दूसरे लोगों को देखना जायज़ नहीं जो वहाँ मौजूद होते हैं, क्योंकि उन का देखना बिना ज़रूरत है। अगर किसी हकीम को ऐसी औरत की नब्ज़ दिखानी हो जो हकीम की मह़रम न हो तो नब्ज़ की जगह पर उंगली रख सकता है, इस से ज़्यादा मरीज़ा के जिस्म को हाथ लगाना बेहतर नहीं।

अगर कोई नामह़रम औरत अपने रिश्तेदार या ग़ैर रिश्तेदारों से पर्दा न करे तो नामह़रम मर्दों को उस की तरफ़ देखना जायज़ नहीं हो जाता। हुक्म शरई है, खुद औरत की इजाज़त से या उस के शौहर की इजाज़त से या किसी भी शख्स के कहने या इजाज़त देने से नामह़रमों को उस पर नज़र डालना ह़लाल नहीं हो जाता।

इसी तरह नौकरी पेशा के काम अन्जाम देने की वजह से बेपर्दा होकर नामह़रमों के सामने आ जाना गुनाह है, लोग मुस्लिम ख़वातीन को बेहया देखना चाहते हैं, जबकि हमारा दीन मुकम्मल है। हमें अपने दीनी कामों में या दुनियावी मसायल में काफ़िरों की नक़ल करने की क्या ज़रूरत है?

याद रहे कि जैसे नामह़रम औरतों को देखना जायज़ नहीं है उसी तरह बेरेश लड़कों पर या बारीश नौजवानों पर या दाढ़ी मुंडे ख़ूबसूरत मर्दों पर शहवत की नज़र डालना जायज़ नहीं है। शहवत की नज़र वह है जिस में नफ़्स और नज़र को मज़ा आए और आजकल लड़कों और मर्दों की कसी हुई टाइट पैन्टों ने जो नंगा होने के बराबर है, बदनज़री के मौक़े बहुत ज़्यादा फ़राहम कर दिये हैं।

हर मोमिन बदनज़री से बचे, बदनज़री गुनाह भी है और इस से ईमान की मिठास जाती रहती है। नमाज़, ज़िक्र और तिलावत में दिल नहीं लगता और उस के बरख़िलाफ़ नाजायज़ नज़र पड़ जाने पर नज़र फेर लेने से ऐसी अ़िबादत के नसीब होने का वादा है जिस की मिठास महसूस होगी।

(रवाहु अहमद कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 270)

### लअनत के हक्दार-

हज़रत हसन (रज़ि०) से (मुरसलन) मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इशार्द फरमाया कि अल्लाह की लअनत है देखने वाले पर और जिस की तरफ़ देखा जाए उस पर भी।

(मिशकातुल मसाबीह पेज नं० 270, अज़ बैहकी फी शुअबुल ईमान)

यह हदीस बहुत छोटी-छोटी बातों पर हावी है जिस में बतौर काएदा हर हराम नज़र को सबबे लअनत बताया है, बल्कि उस पर भी लअनत भेजी है जो अपनी खुशी और अख़्तियार से ऐसी जगह खड़ा हो जाए जहाँ देखने वाले ऐसी नज़र डाल सकें जो शरीअत में हलाल न हो, नाचने वाली औरतों का और नाचने वाले मर्दों का और नज़ारा कराने वाले, सब लअनत के हक्दार हैं।

अगर कोई औरत बिना पर्दा के बाज़ार में या मेले में या पार्क में चली गई जिस की वजह से ग़ैर मर्दों ने उसे देख लिया तो वह मर्द और औरत लअनत के हक्दार होंगे। इसी तरह कोई औरत दरवाज़ा से या खिड़की से या बरामदा से बाहर ताकती झाँकती है तो यह औरत बदनज़री की वजह से लअनत की हक्दार है और ग़ैर मर्दों को देखने का मौक़ा देने की वजह से भी लअनत की हक्दार होती है। इसी तरह शादी के मौक़े पर सलामी के लिए जब दुल्हा अन्दर घर में आया और नामहरम औरतों को देखने का मौक़ा दिया तो यह दुल्हा औरतों के दर्मियान बैठने की वजह से और औरतें उस को देखने की वजह से लअनत की हक्दार हुईं।

किसी औरत ने किसी औरत को अगर नाफ़ से लेकर घुटनों के ख़त्म तक का हिस्सा पूरा या कुछ दिखलाया तो देखने वाली औरत और दिखाने वाली दोनों लअनत की हक्दार हुईं।

इसी तरह अगर किसी मर्द ने किसी मर्द के सामने नाफ़ के नीचे से लेकर घुटनों के ख़त्म तक का पूरा हिस्सा या कुछ हिस्सा खोल दिया तो दिखलाने वाला और देखने वाला दोनों लअनत के हक्दार हुए। किसी औरत ने अपने महरम यानी बाप भाई वगैरह के सामने अपना पेट या पीठ या रान या घुट्ना खोल दिया तो देखने वाला और दिखाने वाली दोनों ने लअनत का काम कर लिया।

बहुत से घरानों में यह आफ़त है कि काफ़िरों की देखा-देखी केवल एक फ़ाक पहने हुए घरों में रहती हैं और पायजामा की जगह ज़रा सी लंगोटी या जाँगिया पहने रहती हैं, जिस की वजह से रानें और घुटने घर के मर्दों के सामने बल्कि नौकरों के सामने भी (जिन को घरों में रखना हराम है) खुले रहते हैं। इस तरह इस अमल से घर के सब मर्द व औरत लअनत के हक्दार हो जाते हैं।

32

وَأَنكِحُوا الْأَكْفَاءَ فِي مَنَازِلِهِمْ وَأَلْصِقِينَ مَنَازِلَهُمْ وَأَمَّا بَنُو إِسْرَءِيلَ أَن يَكُونُوا قُفَرَاءَ يُغْنِيهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

### निकाह की ज़रूरत और अहमियत

इन आयात में उन लोगों का निकाह कर देने का हुक्म फरमाया है जिनका निकाह न हुआ हो, जिस

की दोनों सूरतें हैं। एक यह कि अब तक निकाह हुआ ही न हो, दूसरी यह कि निकाह होकर छूट छुड़ाव हो गया हो या मियाँ-बीवी में से किसी की वफ़ात (Death) हो गई हो। आयते शरीफ़ में जो शब्द 'अय्यामी' आया है 'अय्यिम की जमअ (बहुवचन) है। अरबी में अय्यिम उस मर्द को कहते हैं जिस का जोड़ा न हो, चूँकि निकाह हो जाने से मर्द और औरत के नफ़्सानी उभार (desire) का इन्तिज़ाम हो जाता है और निकाह पाक दामन रहने का ज़रिया बन जाता है। इसलिए शरीअते इस्लामिया में अपना निकाह करने और दूसरों का निकाह करा देने की बड़ी अहमियत और फ़ज़ीलत है।

निकाह हो जाने से नफ़्स व नज़र पाक रहते हैं, गुनाह की तरफ़ ध्यान चला भी जाए तो अपने पास नफ़्स की ख़्वाहिश पूरा करने के लिए इन्तिज़ाम होता है।

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब बन्दा ने निकाह कर लिया तो उस ने आधे दीन को पूरा कर लिया, लिहाज़ा वह बाकी दीन के बारे में अल्लाह से डरे। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 268)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ जवानो! तुम में से जिसे निकाह करने की ताक़त हो वह निकाह कर ले क्योंकि निकाह नज़रों को नीची रखने और शर्मगाह को पाक रखने का सब से बड़ा ज़रिया है और जिसे निकाह करने की कुदरत न हो वह रोज़े रखे, क्योंकि रोज़े रखने से उस की शहवत दब जाएगी। (रवाहु बुख़ारी पेज नं० 708 भाग 2)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं, “हम कुछ जवान रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में रहते थे, मगर (निकाह के लिए) हमारे पास कुछ न था तो आप (सल्ल०) ने हमें इर्शाद फ़रमाया कि ऐ नौजवानों! तुम में से जो कोई इस्तिअत (capacity) रखता हो उसे चाहिए कि निकाह कर ले क्योंकि निकाह निगाह नीची रखने और शर्मगाह की हिफ़ाज़त के लिए बहुत बेहतर है और जो इसकी ताक़त न रखता हो तो वह रोज़े रखा करे, रोज़े उसकी शहवत को टंडा कर देंगे”। (बुख़ारी)

पूरे तौर पर कुव्वते मर्दाना (Male Sexuality) ख़त्म करने की इजाज़त नहीं क्योंकि नस्ल बढ़ाना मक़सूद है और मुसलमान की जो औलाद होती है वह आमतौर पर मुसलमान ही होती है और इस तरह से रसूलुल्लाह (सल्ल०) की उम्मत बढ़ती है। आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “ऐसी औरत से निकाह करो जिस से दिल लगे और जिस से औलाद ज़्यादा हो क्योंकि मैं दूसरी उम्मतों के मुक़ाबिले में तुम्हारी कसरत पर फ़ख़्र करूँगा”। (रवाहु अबूदाऊद पेज नं० 280 भाग 1)

अगर कुव्वते मर्दाना (Male Sexuality) ख़त्म न की जाए फिर कभी निकाह की ताक़त हो जाए तो इस में औलाद से महरूमि न होगी। हज़रत उस्मान बिन मज़अून (रज़ि०) ने अर्ज़ किया, “या रसूलुल्लाह! हमें ख़स्सी होने की इजाज़त दे दीजिए”। आप ने फ़रमाया **ليس منّا من خصى ولا اختصى ان خصاء امتي الصيام** (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 29 अज़ शरहुन्निसा)

यानी वह शख्स हम में से नहीं है जो किसी को ख़स्सी करे या खुद ख़स्सी बने, बेशक मेरी उम्मत का ख़स्सी होना यह है कि रोज़े रखे जाएँ।

आम हालात में निकाह करना सुन्नत है, हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) का तरीका है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया चार चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें अम्बिया-ए-किराम (अलै०) ने अख़्तियार फ़रमाया था:- (1) शर्म करना (2) इत्र लगाना (3) मिस्वाक करना (4) निकाह करना।

(रवाहु तिर्मिज़ी अब्बाबुल् निकाह)

फ़ुक्हा ने लिखा है कि अगर किसी को शहवत का ग़ल्बा हो और उसे ग़ालिब गुमान हो कि हुदूद शरीअत पर कायम न रह सकेगा, नफ़्स व नज़र को महफूज़ न रख सकेगा और उस के पास निकाह करने के वसायल भी मौजूद हों तो ऐसे शख्स को निकाह करना वाजिब है।

अगर शहवत का ग़ल्बा है और निकाह की ताक़त नहीं या कोई औरत उस से निकाह करने पर राज़ी नहीं तो गुनाह में मुब्तिला (Involve) होना फिर भी हलाल नहीं, शहवत दबाने के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने रोज़े रखने का नुस्खा बताया है, उस पर अमल करें। फिर जब अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे दे तो निकाह कर लें।

चूँकि आमतौर से अपने निकाह की कोशिश खुद नहीं की जाती और ख़ासतौर से औरतें और उन में भी कुंवारी लड़कियाँ अपने निकाह की खुद बात चलाने में शर्माती हैं और यह शर्म उन के लिए बेहतरीन है जो ईमान के तकाज़ों की वजह से है। इसलिए औलिया (ग़ार्जियन) को लड़कों और लड़कियों का निकाह करने के लिए फ़िक्रमन्द रहना लाज़िम है, इसी तरह बड़ी उम्र के बे-शादीशुदा मर्दों और औरतों के निकाह के लिए फ़िक्रमन्द रहना चाहिए।

आयते शरीफ़ा जो **وَالْكُفْرَ الْكَبِيرَ** फ़रमाया है, इस में यही बताया है लोगों ने निकाह को एक मुसीबत बना रखा है। दीनदार जोड़ा नहीं ढूँढ़ते, दुनियादारी और रियाकारी के चक्कर में रहते हैं जिन की वजह से बड़ी-बड़ी उम्रों के मर्द और औरत बिना निकाह के बैठे रहते हैं, नतीजा यह होता है कि लड़किया बेशर्म होकर खुद से अपना जोड़ा ढूँढ़ लेती हैं और कोर्ट में जाकर क़ानूनी निकाह कर लेती हैं तब माँ-बाप चौंकते हैं कि यह क्या हुआ और बाज़ मर्तब: यह निकाह शरअन दुरुस्त नहीं होता। औलाद के निकाहों के सिलसिले में लोगों की बेध्यानी और बे-राही की वजह से बुरे-बुरे नतायज सामने आ रहे हैं।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम्हारे पास कोई ऐसा शख्स निकाह का पैग़ाम लाए जिस के दीन और अख़्लाक से तुम खुश हो तो तुम उस से निकाह कर दो। अगर तुम इस पर अमल न करोगे तो ज़मीन में बड़ा फ़ित्ना होगा और बड़ा फ़साद होगा। (रवाहुल् तिर्मिज़ी)

“हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि औरत से चार चीज़ों की वजह से निकाह किया जाता है। (1) उस के माल की वजह से (2) उस के मर्तबे की वजह से (3) उस की ख़ूबसूरती की वजह से (4) उस के दीन की वजह से। सो तू दीन वाली औरत से निकाह कर के कामियाब हो, जा अल्लाह तुझे समझ दे”। (रवाहुल् बुख़ारी)

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि मर्द हो या औरत दोनों के लिए दीनदार और अच्छे अख़्लाक

वाला जोड़ा तलाश किया जाए। आजकल दीनदारी के बजाए दूसरी चीज़ों को देखा जाता है, बड़े-बड़े खर्चों के इन्तिज़ाम में देर लगाने की वजह से लड़कियाँ बैठी रहती हैं, दिखावा के ज़बात सादे अन्दाज़ से शादी नहीं करने देते हैं और अपनी माँ हज़रत सय्यदह फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की तरह बेटा-बेटी के निकाह करने को आर समझते हैं। अगर कोई ध्यान दिलाता है तो कहते हैं कि आजकल का दौर ऐसा है, लेकिन यह नहीं सोचते कि इस दौर को लाने वाला कौन है खुद ही दिखावे का रिवाज डाला और अब कह रहे हैं कि बड़े-बड़े इख़राजात न हों तो लड़की का निकाह कैसे करें और किस से करें।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा बरकत के एतिबार से सब से बड़ा निकाह वह है जिस में खर्चा कम से कम हो।

(मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 268)

ग़ैर शादीशुदा आज़ाद मर्दों और औरतों के निकाह का हुक्म कर देने के बाद फ़रमाया:-

وَالْطَّالِبِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ

“यानी अपने गुलामों में से उन गुलामों और बाँदियों का निकाह कर दिया करो जो सालेह (नेक) हों”।

कुछ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि सालिहीन से वह गुलाम और बाँदियाँ मुराद हैं जिनमें निकाह की सलाहियत (योग्यता) हो और कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से सालेह के माने नेक होना मुराद है, जो भी मुराद लिया जाए गुलाम और बाँदी के आका के लिए मुस्तहब है कि उन में नेकी और सलाहियत देखे तो उन का निकाह कर दे।

قال في روح المعاني والامر هنا قليل للوجوب واليه ذهب اهل الظاهر، وقيل للندب واليه ذهب الجمهور

“गुलामों और बाँदियों के निकाहों और उन से पैदा शुद्ध औलाद के मसायल कुतुब फ़िक्: में मौजूद हैं”।

आज़ाद मर्द और औरत और बाँदी मर्द और औरत के निकाह का हुक्म देने के बाद फ़रमाया:-

إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ

“अगर यह लोग मुफ़्तिस होंगे तो अल्लाह इन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी फ़रमा देगा”।

وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ (और अल्लाह उस्तत वाला, ख़ूब जानने वाला है।)

इस आयत में अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है कि अल्लाह तआला निकाह करने वालों की माली मदद फ़रमाएगा और इस में इस तरफ़ भी इशारा है कि तंगदस्ती की वजह से निकाह करने से बाज़ न रहें। अगर कोई मुनासिब औरत मिल जाए तो निकाह कर लें।

“हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन शख्स ऐसे हैं जिन की मदद करना अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे कर लिया है”।

- (1) वह मकातिब जो अदाएगी की नियत रखता हो।
- (2) वह निकाह करने वाला जो पाकदामन रहने की नियत से निकाह करे।
- (3) वह मुजाहिद जो अल्लाह की राह में जिहाद करे। (नसई फ़ी किताबुन् निकाह)

फिर फ़रमाया وَلَيْسَتْغَفِبِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ

कि जो लोग निकाह पर कुदूरत न रखते हों उन के पास माल व अस्बाब नहीं, घर दर नहीं, तो वह इस को उज़्र बनाकर अपनी इज़्ज़त को दाग़दार न करें। नज़र और शर्मगाह की हिफ़ाज़त का एहतिमाम करें, यूँ न समझ ले कि जब मैं निकाह नहीं कर सकता तो नफ़्स के उभार व ख़्वाहिशात को ज़िना के ज़रिये पूरा कर लूँ। ज़िना बहरहाल हराम है, उस के हलाल होने का कोई रास्ता नहीं है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल का इन्तिज़ार करे, जब ताक़त हो जाए तो निकाह करे और सब्र से काम ले और नफ़्स के ज़ब्बात को दबाने की तद्बीर हदीस शरीफ़ में गुज़र चुकी है कि रोज़े रखा करे।

**33** وَلَيْسَتَغْنِفَ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ  
أَيْمَانُكُمْ فَكُلَّيْتُمْ فِيهِمْ حُرّاً وَأَوْفَوْهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا فَتِيَّتَكُمْ عَلَى الْبَغَاءِ  
إِنْ أَرَدْتُمْ نَحْضًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْنَهَا فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

### मकातिब बनाने का हुक्म

गुलाम और बांदियों के बारे में शरीअत में बहुत से अहकाम हैं, जो हदीस की किताबों में मौजूद हैं। उन्हीं हुक्मों में से एक मकातिब भी है, जिस का मतलब यह है कि आका अपने गुलाम या बांदी से कहे कि अगर तू मुझे इतनी रक़म दे दे तो आज़ाद है। अगर गुलाम या बाँदी उसे मन्ज़ूर कर ले तो फिर वह आका की ख़िदमत से आज़ाद हो जाता है, गुलाम तो रहता है लेकिन अपने काम में आज़ाद हो जाता है। जब भी मुक़र्ररह पूरी रक़म दे देगा आज़ाद हो जाएगा।

जब गुलाम का आका से मकातिब का मामला हो जाए जिसे किताबत भी कहते हैं तो गुलाम मकातिब हो गया। अगर गुलाम से यह तय हुआ कि अभी नक़द लाकर रक़म दे दे तो आज़ाद है और वह किसी से उधार कर्ज़ कर के अपने आका को रक़म दे दे तो उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगा और अगर यह तय हुआ कि इतने अर्से में इतनी किस्तों में रक़म अदा करते रहना, जब आख़िरी किस्त दे दोगे तो आज़ाद हो जाओगे, तो ऐसी सूरत में माल कमाता रहे और आका को देता रहे जब आख़िरी किस्त अदा कर देगा तो आज़ाद हो जाएगा।

अगर वह रक़म देने से इन्कार कर दे और यूँ कह दे कि मैं आगे किस्त नहीं दे सकता तो दोबारा उसी तरह से गुलाम हो जाएगा जैसे गुलाम था, यानी दोबारा पूरी तरह आका के अख़्तियारात उस पर मुसल्लत हो जाएंगे।

‘तफ़सीर दुर्रे मन्सूर’ पेज नं० 45 भाग 5 में है कि ‘सबीह’ नामी एक गुलाम ने अपने आका ‘यतीब बिन अब्दुल उज़्ज़ा’ से कहा मुझे मकातिब बना दो उन्होंने इन्कार कर दिया तो यह आयते करीमा **وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ** नाज़िल हुई।

‘मुआलिमुल् तन्ज़ील’ पेज नं० 342 भाग 3 में भी यह वाकिआ लिखा है। उस में यह भी ज़ायद है कि आयत नाज़िल होने के बाद ‘सबीह’ के आका ने सौ दीनार पर मकातिब बना दिया और उस में

से बीस दीनार अपने मकातिब को बख्श दिये। यह मकातिब भी मुसलमान था जो ग़ज़्व-ए-हुनैन में शहीद हुआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस के आका हज़रत यतीब (रज़ि०) भी सहाबी थे।

चूँकि आयत में शब्द **كَاتِبُهُمْ** (अम्र का सीगा) है, इसलिए हज़रत अता और 'अम्र बिन दीनार' ने फ़रमाया है कि अगर गुलाम अपनी कीमत या उस से ज़्यादा पर किताबत का मामला करना चाहे और अपने आका से दरख्वास्त करे तो आका पर वाजिब है कि उसे मकातिब बना दे और अपनी कीमत से कम पर मकातिब बनाने का मुताल्बा करे तो आका के ज़िम्मे मकातिब बनाना वाजिब नहीं है।

लेकिन अक्सर अहले इल्म ने यूँ फ़रमाया कि यह हुक्म मुस्तहब के लिए है। यानी गुलाम के कहने पर अगर आका उसे मकातिब बना दे तो बेहतर है, अगर न बनाएगा तो गुनाहगार न होगा।

(मुआलिमुल् तन्ज़ील)

**فَكَاتِبُهُمْ** के साथ **إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا** भी फ़रमाया है यानी अगर तुम उन के अन्दर ख़ैर पाओ तो उन्हें मकातिब बना दो। ख़ैर से क्या मुराद है? इस के बारे में दुर्रे मन्सूर में 'अबू दाऊद' और 'सुनन बैहकी' से रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद नक़ल किया है कि अगर तुम उन में कमाई का ढंग देखो तो उन्हें मकातिब बना दो और उन्हें इस हाल में न छोड़ दो कि लोगों पर बोझ बन जाएँ। (मतलब यह है कि उन के अन्दर अगर माल कमाने की ताक़त और तरीक़ेकार महसूस करो तो मकातिब बना दो, ऐसा न हो कि वह लोगों से माँग कर जमा करते फिरें और उस से तुम्हें किताबत के बदले अदा करें।)

'दुर्रे मन्सूर' में यह भी लिखा है कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) अपने किसी गुलाम को मकातिब नहीं बनाते थे, जब तक यह न देख लेते कि यह कमा कर दे सकेगा। और यूँ फ़रमाते थे कि (अगर यह कमाने का अहल न हुआ तो) मुझे लोगों के मैल कुचैल खिलाएगा यानी माँग-माँग कर लाएगा।

जब आका किसी गुलाम को मकातिब बना दे तो अब वह हलाल तरीक़ों पर माल कमा कर अपने आका को किस्ते देता रहे। हदीस में है कि तीन शख्सों की मदद अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ले ली है उन में से एक वह मकातिब भी है जिस को अदाएगी का इरादा हो।

कुछ हज़रात ने ख़ैर से नमाज़ कायम करना मुराद लिया है यानी अगर तुम यह समझते हो कि वह नमाज़ कायम करेंगे तो तुम उन्हें मकातिब बना दो। (मुआलिमुल् तन्ज़ील)

लेकिन इस से यह समझ में आता है कि काफ़िर को मकातिब बनाना जायज़ न हो, हालाँकि वह भी जायज़ है और कुछ हज़रात ने फ़रमाया है कि ख़ैर से यह मुराद है कि आज़ाद हो जाने के बाद वह मुसलमानों के लिए मुसीबत और नुक्सान का ज़रिया न बने। अगर किसी गुलाम के बारे में यह महसूस होता हो कि आज़ाद होने के बाद मुसलमानों को तकलीफ़ देगा तो ऐसे ग़ैर मुस्लिम को मकातिब न बनाना बेहतर है। (ज़िक़ह फ़िल् रुह पेज नं० 155 भाग 18)

इस के बाद फ़रमाया **وَأَتَوْهُمْ مِنْ مَّالِ اللَّهِ الَّذِي اشْكُرْ**

(और उन्हें उस माल में से दे जो अल्लाह ने तुम्हें अता फ़रमाया है) इस के बारे में साहिबे मुआलिमुल्तन्ज़ील ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा और हज़रत इमाम



शाफई (रह०) से नक्ल किया है कि यह आका को खिताब है कि जिसे मकातिब बनाया है उस के बदले किताबत में से एक हिस्सा माफ कर दे और यह इन हज़रात के नज़्दीक वाजिब है।

कुछ हज़रात ने फरमाया है ¼ माफ कर दे। यह हज़रत अली (रज़ि०) का फरमान है, और 'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' से नक्ल किया गया है कि 1/3 माफ कर दे। 'हज़रत इमाम शाफई' (रह०) और दूसरे हज़रात ने फरमाया है कि इस की कोई हद (सीमा) नहीं है जितना चाहे माफ कर दे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने एक गुलाम को पैंतीस हज़ार दिरहम के एवज़ मकातिब बनाया, फिर आखिर में पाँच हज़ार दिरहम छोड़ दिये।

'हज़रत सअ़ीद बिन जबीज़' (रज़ि०) ने बयान फरमाया कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) का यह तरीका था कि जब किसी गुलाम को मकातिब बनाते तो शुरु की किस्तों में से कुछ माफ नहीं करते, फिर आखिरी किस्त में से जितना चाहते छोड़ देते थे।

ऊपर की आयत की तफ़सीर में दूसरा कौल यह है कि इस का खिताब आ़ाम मुसलमानों को है और मतलब यह है कि आ़ाम मुसलमान मकातिब की मदद करें और एक कौल यह है कि इस से मकातिब को ज़कात की रक़म देना मुराद है क्योंकि सूर: तौब: में मसारिफ़े ज़कात बयान करते हुए وَفِي الرِّقَابِ भी फरमाया है। (मुआलिमुल्लन्ज़ील पेज नं० 343 भाग 3)

'हज़रत बरा बिन आज़िब' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में एक देहात का आदमी आया और उस ने अर्ज़ किया कि मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल करा दे। आप (सल्ल०) ने फरमाया कि जान को आज़ाद कर दे और गर्दन को छुड़ा दे, उस ने अर्ज़ किया कि क्या यह दोनों एक नहीं हैं? आप ने फरमाया, नहीं! (फिर फरमाया कि) जान का आज़ाद करना यह है कि तू किसी जान को (गुलाम हो या बाँदी) पूरा-पूरा अपनी मिल्कियत से आज़ाद कर दे और فِكَرَةً (और गर्दन का छुड़ाना) यह है कि तू उस की कीमत में मदद करे।

(मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 393, अज़ बैहकी फी शुअबुल ईमान)

अल्लामा अबू बक्र हि़सास ने अहकामुल कुआन पेज नं० 322 भाग 3 में लिखा है कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अबू यूसुफ़, इमाम जुफ़र, इमाम मुहम्मद, इमाम मालिक, इमाम सूरी ने फरमाया है कि आका के ज़िम्मे यह वाजिब नहीं है कि माल किताबत में से कुछ कम करे, उसे इस पर मजबूर नहीं किया जाएगा। हाँ, अगर वह कुछ रक़म खुद से कम कर दे तो यह बेहतर है। फिर कुछ वजह से उन हज़रात के कौल को रद्द किया गया है जिन्होंने यूँ फरमाया कि आका पर बदल किताबत का कुछ हिस्सा माफ कर देना वाजिब है।

— इस के बाद फरमाया وَلَا تُكْرِمُوا فَتَيَبَكُمْ عَلَى الْبِعَاءِ إِنْ أَرَدْتُمْ مَحْضًا لَتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

(और अपनी बांदियों को ज़िना करने पर मजबूर न करो जबकि वह पाकदामन रहना चाहें ताकि तुम को दुनियावी ज़िन्दगी का कोई माल मिल जाए।)

ज़माने जाहिलियत में लोग ज़िनाकारी के आदि थे, औरतें इस पेशे को अख़्तियार कर के मालदार

बनी रहती थीं, ज़िनाकारी के अड्डों पर झंडे लगे रहते थे जिस से यह लोग पहचान लेते थे कि यहाँ कोई ज़िनाकार औरत रहती हैं। (मुआलिमुल् तन्ज़ील)

जब औरतें ज़िनाकारी के पेशे से माल हासिल करती थीं तो उस के लिए बांदियाँ ज़्यादा इस्तेमाल की जाती थीं। लोगों का यह तरीका था कि अपनी बांदियों से कहते थे कि जाओ ज़िना करो, पैसे कमा कर लाओ। वह ज़िनाकार मर्दों को ढूँढ़ती फिरती थीं और ज़िनाकारी की उजरत से जो पैसे मिलते थे वह अपने आकाओं को लाकर दे देती थीं। जब इस्लाम के अहकाम नाज़िल हुए तो ज़िनाकारी को ह़राम करार दे दिया और ज़िना की उजरत को भी ह़राम करार दे दिया। (मुस्लिम)

عن رافع بن خديج ان النبي صلى الله عليه وسلم قال ثمن الكلب خبيث ومهر البغي خبيث وكسب الحجام خبيث  
लेकिन जिन लोगों की बांदियों को ज़िनाकारी के लिए भेज कर पैसा कमाने की आदत थी, उन्हें इस्लाम का फ़ैसला अच्छा न लगा।

‘तफ़सीर दुर्रे मन्सूर’ पेज 46 भाग 5 में हदीस से ऐसी रिवायात नक़ल की हैं जिन में यह बयान किया गया है कि रईसुल् मुनाफ़िक्कीन ‘अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलोल’ के पास बांदियाँ थीं, वह ज़माने जाहिलियत में उन से ज़िना कराकर पैसा कमाता था। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़माना आया तो उसने बांदियों को ज़िना करने पर मजबूर किया, जब उन्होंने इन्कार किया तो बाज़ को उस ने मारा भी तो अल्लाह तआला ने यह आयतें नाज़िल फ़रमाईं।

وَلَا تُكْرَهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبَغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ مُحْضًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

(कि दुनियावी माल हासिल करने के लिए अपनी बांदियों को ज़िना पर मजबूर न करो, अगर वह पाकदामन रहने का इरादा करें।)

इस में जो आख़िरी शब्द हैं कि अगर वह पाकदामन रहने का इरादा करें। इस का यह मतलब नहीं है कि बांदियाँ पाकादामन न रहना चाहें तो उन्हें ज़िना पर मजबूर किया जाए बल्कि आकाओं को तम्बीह और ग़ैरत दिलाना मक्सूद है कि बांदी तो पाकदामन रहना चाहती है और तुम बेग़ैरती के साथ उन्हें ज़िना के लिए मजबूर कर के ज़िना की उजरत लेना चाहते हो।

अब जाहिलियत वाली बात नहीं रही अब तो ज़िना भी ह़राम है खुशी और रज़ामन्दी से हो या किसी की ज़बरदस्ती से और ज़िना का हुक्म देना और उस पर मजबूर करना ह़राम है और उस की उजरत भी ह़राम है।

चूँकि ‘अब्दुल्लाह बिन उबई’ मुसलमान होने का दावेदार था, इसलिए आयते शरीफ़ा में शब्द **إِنْ أَرَدْنَ مُحْضًا** बढ़ा दिया कि बांदी ज़िना से बच रही है और तू उसे ज़िना के लिए मजबूर कर रहा है, यह कैसा दाअवा-ए-इस्लाम है।

فَإِنْ لَّكَ بِهِمْ ظُلُمَاتٌ مِّنْ عَمَلٍ فَاعْلَمْنَاهُ بِمَا نَكْرَهُمْ إِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

(और जो शख्स उन पर ज़बरदस्ती करे तो उन्हें मजबूर करने के बाद, अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

मतलब यह है कि लौंडियों को जिना पर मजबूर करना हुराम है। अगर किसी ने ऐसा किया और वह आका के जन्न व इकराह से मग्लूब होकर जिना कर बैठी तो अल्लाह तआला उस के गुनाह को माफ कर देगा और इस का गुनाह मजबूर करने वाले पर होगा।

يَا نَانِي فِي مَعَالِمِ التَّنْزِيلِ وَمَنْ يُكْرِهَنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ غَفُورٌ رَحِيمٌ

للمكرهات والوزر على المكره وكان الحسن اذا قراهذه الآية قال لهن والله لهن والله

34

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ

फिर फरमाया وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ मतलब यह है कि हम ने तुम्हारे पास खुले-खुले अहकाम भेजे हैं जिन्हें स्पष्ट तौर पर बयान कर दिया है और जो उम्मतें तुम से पहले गुजरी हैं उन के भी बाज़ हालात और वाकिआत बयान कर दिये हैं जिन में तुम्हारे लिए नसीहत है और ऐसी चीज़ें नाज़िल की हैं, जिन में मुत्तकियों के लिए नसीहत है।

नसीहत तो सब ही के लिए है लेकिन जिन का गुनाहों से बचने का इरादा है वही इस से फायदा उठाते हैं, इसलिए अहले तक्वा के लिए मुफीद होने का खुसूसी ज़िक्र फरमाया।

قال صاحب الروح ص ١٢٠ ج ١٨ وقيدت الموعظة بقوله سبحانه (للمتقين) مع شمولها لكل

حسب شمول الاثرال حثا للمخاطبين على الاغتنام بالانتظام في سلك المتقين ببيان

انهم المنتفعون لآثارها المقتبسون من انوارها فحسب



## आयत नं० 35 से 45 तक

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مِثْلُ نُورِ ۖ كَيْشْكُوفٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۖ نُورٌ عَلَى نُورٍ ۖ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۖ وَيَضَرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ فِي بُيُوتِ ۖ إِذْ أَنْ تَرَفَعَ وَيُذَكِّرُ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝ إِبْرَاهِيمَ إِذْ تَبَايَعَهُمْ تِجَارَةً ۖ وَلَا يَبِيعُ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ ۖ وَآتَى الزَّكَاةَ ۖ يَتَذَكَّرُ فِيهَا لِقَاءَ رَبِّهِ ۖ إِنَّ بَصِيرَتَهُ لَیَجْزِيهِمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا ۖ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۖ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا ۖ وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فُوقَهُ حِصَابَهُ ۖ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ أَوْ كَظُلُمٍ فِي بُحْرٍ لَّيْلِيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ ۖ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ۖ ظَلُمَتْ بِعُضْمَاهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۖ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكِدْ يَرِيهَا ۖ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَالطَّيْرِ طَفَّتْ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُرْسِلُ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۖ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَن جِبَالٍ فِيهَا مِن بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ ۖ وَيَصْرِفُهُ عَن مَّن يَشَاءُ ۖ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۖ يَقْلَبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ ۖ فَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ ۖ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۖ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

### अनुवाद-

(35) अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है, उसके नूर की मिसाल ऐसी है, जैसे एक ताक़ है, जिसमें एक चिराग़ हो- चिराग़ एक शीशा के अन्दर हो, शीशा ऐसा हो, जैसे चमकता हुआ तारा, उस चिराग़ को ज़ैतून के एक बरकत वाले पेड़ के तेल से जलाया जाता हो, जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, उसका तेल आप ही आप भड़क रहा हो, चाहे उसे आप न भी छुएँ रोशनी पर रोशनी- (देता हो) अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर के हासिल होने की राह दिखा देता है, अल्लाह लोगों के लिए मिसालें देता है, और अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है; (36) ऐसे घरों में जिनको अल्लाह ने ऊँचा करने और जिनमें उसका नाम याद करने का हुक्म दिया है, उनमें उसकी तस्बीह करते रहें सुबह और शाम; (37) ऐसे लोग जिन्हें व्यापार और खरीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ कायम करने से, और ज़कात देने से, गाफ़िल नहीं करती; वे उस दिन से डरते हैं, जब दिल और आखें उलट जाएँगी; (38) ताकि अल्लाह उनको, उनके अच्छे अमल का बदला दे, और अपने फ़ज़ल से उन्हें और ज्यादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (39) और जिन्होंने इन्कार किया, उनके काम ऐसे हैं, जैसे मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा उसको पानी समझे, यहाँ तक कि जब उसके पास आए तो उसमें कुछ भी न पाए और अल्लाह को अपने पास मौजूद पाए, तो वह उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दे, और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है; (40) या (उनके अमाल ऐसे हैं) फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अन्धेरे हों, जिस पर लहर चढ़ी आ रही हो और लहर के ऊपर लहर



छा रही हो उसके ऊपर बादल हो, अन्धेरे हों एक के ऊपर एक, जब वह अपना हाथ निकाले तो वह कुछ सुझाई न देता हो, जिसे अल्लाह ही रोशनी न दे तो उसके लिए कहीं रोशनी नहीं। (41) क्या तुमने नहीं देखा! कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, अल्लाह की तस्बीह करते रहते हैं, और पंख फैलाए हुए पक्षी भी? हर एक अपनी नमाज़ और तस्बीह जानते हैं, और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को खूब मालूम है। (42) अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन का राज्य और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है। (43) क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह बादल को चलाता है, फिर उन (टुकड़ों) को आपस में मिलाता है, फिर उसे तह पर तह कर देता है; फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से मेंह बरसाता है? और आसमान से- जो (बादल के) पहाड़-हैं ओले बरसाता है फिर जिस पर चाहता है गिराता है, और जिस पर से चाहता है हटा देता है; ऐसा मालूम होता है कि बिजली की चमक निगाहों को उचक ले जाएगी। (44) अल्लाह ही रात और दिन को उलट फेर करता है, इब्रत (सबक) है उन लोगों के लिए, जो देखने वाली आँख रखते हों। (45) और अल्लाह ही ने हर जानदार को पानी से पैदा किया, उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं और कुछ अपने दो पैर पर, और कुछ चार पैर पर, अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है बेशक अल्लाह ही हर चीज़ पर कादिर है।

### आयत नं० 35 से 45 तक की व्याख्या

35

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مِثْلُ نُورٍ ۖ كَيْشْكُوۡفٍ فِيۡهَا مِصۡبَاحٌ ۖ الْمِصۡبَاحُ فِي زُجَاجٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ  
دُرِّيُّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ۚ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيۡءُ وَلَوْ لَمْ تَنۡسَسْهُ نَارٌ نُّوِّرُ عَلَى نُورٍ ۚ  
يَهۡدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَيَضۡرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۚ وَاللَّهُ يَكُلُّ شَيْءً عَلِيۡمٌ ۝

इस आयते करीमा में पहली बात तो यूँ फरमाई कि अल्लाह तआला आसमानों का और ज़मीन का नूर है। हज़रात मुफ़स्सिरीन ने इस की तफ़सीर में फरमाया कि शब्द नूर रौशन करने के माने में है और मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन को रौशन फरमा दिया है। यह रौशनी आसमानों और ज़मीन के लिए ज़ीनत है और यह ज़ीनत सिर्फ़ ज़ाहिरी रौशनी तक महदूद (सीमित) नहीं।

फ़रिश्ते आसमानों में रहते हैं, वह अल्लाह तआला की तस्बीह व ज़िक्र में मशगूल (Busy) हैं। इस से भी दुनिया में नूरानियत है और ज़मीन में, हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) तशरीफ़ लाए उन्होंने हिदायत का नूर फैलाया, इसलिए अहले ज़मीन को नूरानियत हासिल है और चूँकि ईमान की वजह से आसमानों और ज़मीन का अमान है (ईमान वाले न होंगे तो क़ियामत आ जाएगी) इसलिए ईमान की नूरानियत से आसमान और ज़मीन सब मुनव्वर हैं।

इस मअने को लेकर हज़रात इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया:-

هدى اهل السموات والارض فهم بنوره الى الحق يهتدون وبهداه من الضلالة ينجون

(मुआलिमुल्तन्ज़ील पेज नं० 345 भाग 4 व रुहुल् मअ़ानी पेज नं० 164 भाग 18)

फिर फरमाया مِثْلُ نُورٍ ۖ كَيْشْكُوۡفٍ فِيۡهَا مِصۡبَاحٌ (अल्लाह के नूर की ऐसी मिसाल है जैसे एक ताक़ है

जिस में एक चिराग़ रखा हुआ है और दो चिराग़ ऐसे किन्दील (Lamp) में है जो शीशा का बनाया हुआ है और वह किन्दील (Lamp) ऐसा साफ़ शफ़ाफ़ है जैसे चमकदार सितारा हो। चिराग़ तो खुद ही रौशन होता है फिर वह ऐसे किन्दील (Lamp) में जल रहा है जो शीशे का है और शीशा भी मामूली नहीं अपनी चमक-दमक में एक चमकदार सितारे की तरह है। फिर वह चिराग़ जल भी रहा है एक बाबरकत दरख़्त (पेड़) के तेल से, जिसे जैतून कहा जाता है।

जैतून के जिस दरख़्त से यह तेल लिया गया है वह दरख़्त भी कोई ऐसा आम दरख़्त नहीं, बल्कि वह ऐसा दरख़्त है जो न पूरब (east) के रुख़ पर है न पश्चिम (west) के रुख़ पर यानी उस पर दिन में धूप पड़ती है न तो पूरब की ओर कोई आड़ है जो उस के धूप की रौशनी से और न मग़िब (west) की तरफ़ कोई आड़ है जो उस ओर से आने वाली धूप को रोके। यह दरख़्त खुले मैदान में है जहाँ उस पर दिन भर धूप पड़ती रहती है, ऐसे दरख़्त का तेल बहुत साफ़ रौशन और लतीफ़ होता है।

कमाल यह है कि अगर उसे आग न भी छुए तो ऐसा मालूम होता है कि अभी-अभी खुद ब-खुद जल उठेगा, चिराग़ रौशन है, फिर उस में कई तरह से रौशनी बढ़ने के अस्बाब मौजूद हैं। यह सब चीज़ें जमा होकर नूर अ़ला नूर (रौशनी पर रौशनी) की शान पैदा हो गई।

यह एक मिसाल (example) है, अब यह सवाल पैदा होता है कि अल्लाह के जिस नूर को मिसाल से बयान फ़रमाया है उस से क्या मुराद है?

‘हज़रत हसन’ और ‘जैद बिन अस्लम’ ने फ़रमाया कि इस से कुर्आन करीम मुराद है और ‘हज़रत सअ़ीद बिन जुबैर’ (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी (personality) मुराद है और ‘हज़रत इब्ने मसऊद’ (रज़ि०) और ‘हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा’ ने फ़रमाया कि इस से वह नूर मुराद है जो मोमिन बन्दों के दिलों में है, वह उसी नूर के ज़रिये हिदायत पाते हैं। जिसे सूर: जुमर में यूँ बयान फ़रमाया:-

أَفَنَنْشُرَ اللَّهُ صَدْرَ الْإِسْلَامِ فَبُوعَىٰ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ رَبِّهِمْ में बयान फ़रमाया है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि नूर से फ़रमाँबरदारी मुराद है।

وهو راجع الى قول ابن مسعود وابن عباس (मुआलिमुल् तन्ज़ील)

इस मिसाल से मालूम हुआ कि इसी तरह मोमिन के दिल में अल्लाह तअ़ाला जब नूर-ए-हिदायत डालता है तो रोज़-बरोज़ उस से दिल खुल जाता है। हक़ के लिए और बढ़ता चला जाता है और हर वक़्त हुक्मों पर अ़मल करने के लिए तैयार रहता है यानी चाहे बाज़ हुक्म का इल्म भी न हुआ हो क्योंकि इल्म धीरे-धीरे हासिल होता है, जैसे वह रोग़न जैतून आग लगने से पहले ही रौशनी के लिए तैयार था। मोमिन भी हुक्मों के इल्म से पहले ही उन पर अ़मल के लिए तैयार होता है और जब उस को इल्म हासिल होता है तो नूर-ए-अ़मल यानी अ़मल के पुख़्ता इरादों के साथ नूर-ए-इल्म भी मिल जाता है जिसे वह फ़ौरन कुबूल कर लेता है, बस अ़मल व इल्म जमा होकर नूर अ़ला नूर हो जाता है और यह नहीं होता कि इल्म अहक़ाम के बाद उस को कुछ इत्मिनान हो। अगर नफ़्स के अनुसार पाया तो कुबूल कर

लिया वरना रद्द कर दिया। इसी इत्मिनान और सूर को दूसरी आयत में इस तरह बयान फरमाया है:-

فَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِنْ رَبِّهِ

— (यानी जिस शख्स का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ से एक नूर पर होता है और एक जगह फरमाया:-

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आयते करीमा तिलावत फरमाई। फिर फरमाया बिलाशुब्हा जब नूर सीने में दाखिल कर दिया जाता है तो फैल जाता है। अर्ज किया गया या रसूलुल्लाह! क्या इस की कोई निशानी है जिस के ज़रिये उस को पहचान लिया जाए। आप (सल्ल०) ने फरमाया, हाँ **दारुल ग़ुख़र** (धोके के घर यानी दुनिया) से दूर रहना और **दारुल ख़ुलूद** (हमेशगी वाले घर) की तरफ़ मुतवज़्जेह (Attention) होना और मौत आने से पहले उस के लिए तैयारी करना यह उस नूर की अलामत है-

(أَخْرَجَهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ كَمَا فِي الْمَشْكُوتِ ص ۳۴)

फिर फरमाया (अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर की हिदायत देता है) अल्लाह की हिदायत ही से ईमान भी नसीब होता है और नेक आमाल की भी तौफ़ीक़ होती है और नफ़्स को छोड़ना जिनकी मनाही हो और नेक आमाल अख़्तियार करने में आसानी हो जाती है। नफ़्स भी दिल के नेक जज़्बात के साथ हो जाता है और दोनों को आमाले सालिहा में लज़्ज़त महसूस होने लगती है।

(और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फरमाता है) ताकि उन के ज़रिये महसूस चीज़ों की तरह समझ में आ जाएँ।

(और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है) सब के आमाल व हालात उसे मालूम हैं, अपने इल्म व हिक़मत के मुवाफ़िक़ सज़ा देगा।

**36-37**

فِي بُيُوتٍ إِذْنُ اللَّهِ أَنْ تَرْفَعَ وَيَذْكَرَ فِيمَا اسْمُهُ لَا يَسْبَحُ لَهُ فِيهَا بِالْعُدْوَةِ وَالْوَصَالِ ۖ وَإِنَّا لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ تَعَالَى ۚ وَلَا يَبِيعُ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ ۚ لَا يَفُونَ يُؤْمِنُ تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۚ

## नेक बन्दे कियामत के दिन से डरते हैं

इन आयात में मसाजिद और अहले मसाजिद की फज़ीलत बयान फरमाई गई है। शब्द **فِي بُيُوتٍ** का मतलब यह है कि ऐसे लोग जिन्हें अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ कायम करने से और ज़कात अदा करने से, तिजारात और माल की ख़रीद व फ़रोख़्त ग़फ़लत में नहीं डालती, ऐसे घरों में सुबह शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं, जिन के बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन का अदब किया जाए और उन में अल्लाह का ज़िक्र किया जाए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि उन घरों से मस्जिदें मुराद हैं।



(كما وقع عند مسلم وما اجتمع قوم في بيت الله يتلون كتاب الله، الحديث)

‘अल्लामा बग्वी’ (रह०) ‘मुअलिमुत्तन्जील’ में लिखते हैं कि सुबह व शाम अल्लाह का जिक्र करने से पाँचों नमाज़ें मुराद हैं क्योंकि नमाज़ फ़ज़्र सुबह के वक़्त अदा की जाती है और बाकी नमाज़ें दिन ढलने के बाद अदा की जाती हैं। शब्द ‘आसाल’ ‘असील’ की जमअ (बहुवचन) है, जो जुह, अस्त्र, मग़रिब और अ़िशा चारों नमाज़ों पर सादिक़ आती है और कुछ उल्मा ने फ़रमाया इस से फ़ज़्र और अ़स्र की नमाज़ें मुराद हैं। (मुअलिमुल् तन्जील)

‘तफ़सीर जलालैन’ ने पहले कौल को लिया है, उन्होंने लिखा है कि **العشايا من بعد الزوال** चाहे पाँच नमाज़ें मुराद ली जाएँ या सिर्फ़ फ़ज़्र और अ़स्र मुराद ली जाएँ। आयते करीमा में नमाज़ियों की तअरीफ़ फ़रमाई गई है और फ़रमाया है कि मस्जिदों में वह लोग अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से और नमाज़ कायम करने से और ज़कात अदा करने से नहीं रोकती, दुनिया की ज़रूरत के लिए तिजारत में मशगूल (Busy) तो हो जाते हैं लेकिन बाज़ार में होते हुए तिजारत (Business) की मशगूलियत को पीछे डाल कर नमाज़ के लिए मस्जिद में हाज़िर हो जाते हैं।

‘मुअलिमुत्तन्जील’ में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा एक मर्तबः बाज़ार में मौजूद थे, नमाज़ का वक़्त हो गया तो लोग खड़े हुए और अपनी-अपनी दुकानें बन्द कर के मस्जिद में दाख़िल हो गये। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) ने यह मन्ज़र देख कर फ़रमाया कि इन्हीं लोगों के बारे में आयते करीमा **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبِيعُوا فِي سُبُحٍ وَلَا بَيْعٍ عَنْ دُرِّ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ** नाज़िल हुई।

तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त के वक़्तों में नमाज़ों के अवकात आ ही जाते हैं। इस मौक़े पर ख़ासतौर से अ़स्र के वक़्त में जबकि कहीं बाज़ार लगा हुआ हो या ख़ूब चालू मार्केट में बैठे हों और ग्राहक पर ग्राहक आ रहे हों, कारोबार छोड़कर नमाज़ के लिए उठना और फिर मस्जिद में जाकर जमाअत के साथ अदा करना ताजिर के लिए बड़े सख़्त इस्तिहान का वक़्त होता है। बहुत कम ऐसे लोग होते हैं जो माल की मुहब्बत से मग़लूब न हों और नमाज़ की मुहब्बत उन्हें दुकान से उठाकर मस्जिद में हाज़िर कर दे।

**وَأَتَيْنَا الزُّكُوفَ** के साथ **أَقَامُوا الصَّلَاةَ** भी फ़रमाया है। इस में नेक ताजिरो की दूसरी सिफ़त बयान फ़रमाई और वह यह कि लोग तिजारत तो करते हैं जिस से माल हासिल होता है और आमतौर से यह माल इतना होता है कि उस पर ज़कात अदा करना फ़र्ज़ हो जाता है। माल की मुहब्बत उन्हें ज़कात की अदाएगी से नहीं रोकती, जितनी भी ज़कात फ़र्ज़ हो जाए हिसाब कर के हर साल शरीअत के मुताबिक़ मसारिफ़ ज़कात में खर्च कर देते हैं।

हकीक़त में पूरी तरह सही हिसाब कर के ज़कात अदा करना बहुत अहम काम है, जिस में अक्सर पैसे वाले नाकाम हो जाते हैं। बहुत से लोग तो ज़कात देते ही नहीं और कुछ लोग देते हैं, लेकिन हिसाब कर के पूरी नहीं देते और बहुत से लोग उस वक़्त तो ज़कात दे देते हैं जब तक थोड़ा माल वाजिब हो, लेकिन जब ज़्यादा माल की ज़कात फ़र्ज़ हो जाए तो पूरी ज़कात देने पर नफ़्स को आमादा करने से कासिर

रह जाते हैं। एक हज़ार में से पच्चीस रुपया निकाल दें, यह नफ़्स को नहीं खलता लेकिन जब लाखों हो जाते हैं तो नफ़्स से मग़्लूब हो जाते हैं, उस वक़्त सोचते हैं कि अरे इतना ज़्यादा कैसे निकालूँ?

मगर यह नहीं सोचते कि जिस ज़ात पाक ने यह माल दिया है उसी ने ज़कात देने का हुक्म दिया है और है भी कितना कम? सौ रुपये में ढाई रुपये, जिस ने हुक्म दिया वह ख़ालिफ़ और मालिक है और उसे यह भी अख़्तियार है कि पूरा ही माल खर्च कर देने का हुक्म फ़रमा दे और वह छीनने पर और माल को हलाक करने पर भी कादिर है, फिर ज़कात अदा करने में सवाब भी है और माल की हिफ़ाज़त भी है। यह सब बातें मोमिनीन मुख़्लिसीन की ही समझ में आती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ فِي الْكُفُوفِ وَالْأَبْصَارِ

“यह लोग उस दिन से डरते हैं जिस दिन दिल और आँखें उलट-पलट होंगे”।

ऊपर जिन हज़रात की तअरीफ़ फ़रमाई थी कि उन्हें तिजारात और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से और नमाज़ कायम करने और ज़कात अदा करने से नहीं रोकती। उन का एक और गुण बयान फ़रमाया, जिस पर तमाम नेक आ़माल का और मुन्क़िरात व मुहर्मात के छोड़ने का मदार (Base) है।

बात यह है कि जिन लोगों का आख़िरत पर ईमान है और वहाँ के हिसाब की पेशी का यकीन है वह लोग नेकियाँ भी अख़्तियार करते हैं, गुनाहों से भी बचते हैं, उन्हें अपने आ़माल पर ग़ुरुर और घमंड नहीं होता, वह अच्छे से अच्छा अ़मल करते हैं फिर भी डरते हैं कि ठीक तरह अदा हुआ या नहीं।

अ़मल भी करते हैं और आख़िरत के मुवाख़िज़ा और मुहासिबा से भी डरते रहते हैं। क़ियामत का दिन बहुत सख़्त होगा, उस में आँखें भी चकरा जाएँगी और होश व हवास भी ठिकाने न होंगे।

सूर: इब्राहीम में फ़रमाया:-

إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ مُنْجِبِينَ رَبُّهُمْ لَا يُرِيدُ إِلَيْهِمْ ظَرْفُهُمْ وَأَفَلَا هُمْ هَوَاءٌ

“अल्लाह उन्हें उसी दिन के लिए मोहलत देता है जिस दिन आँखें ऊपर को उठी हुई रह जाएँगी”। जल्दी-जल्दी चल रहे होंगे, ऊपर को सर उठाए होंगे, उन की आँखें उन की तरफ़ वापस न लौटेंगी और उन के दिल हवा होंगे। जिस ने उस दिन की पकड़ और हिसाब का ख़याल किया और वहाँ की पेशी की फ़िक्र की और ख़ौफ़ खाता रहा और डरता रहा कि वहाँ मेरा क्या होगा। ऐसा शख्स दुनिया में फ़रायज़ और वाजिबात भी सही तरीक़े पर अन्जाम देगा, गुनाहों से बचेगा और उसे आख़िरत की कामियाबी नसीब होगी।

सूर: मोमिनून में फ़रमाया, وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ

इस के बारे में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया, क्या उन डरने वालों से वह लोग मुराद हैं जो शराब पीते हैं चोरी करते हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ऐ सिद्दीक़ की बेटी! नहीं (इस से यह लोग मुराद नहीं) बल्कि वह लोग मुराद हैं जो रोज़े रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, सद्क़ देते हैं और हाल उन का यह है कि इस बात से डरते हैं कि उन से उन का अ़मल कुबूल न किया जाए।

उन लोगों के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ (यह वह लोग

हैं जो अच्छे कामों में आगे बढ़ते हैं। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 457)

हकीकत में आखिरत की फ़िक्र और वहाँ का ख़ौफ़ गुनाहों के छुड़ाने और नेकियों पर लगाने का सब से बड़ा ज़रिया है।

मसाजिद के बारे में जो **فِي بُيُوتِ أَذْنِ اللَّهِ أَنْ تُرْفَعَ** फ़रमाया है। उस के बारे में कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि **فَرَفَعَ** बमअने **تَبْنِي** है और मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने उन के तअमीर करने का हुक्म दिया है।

हज़रत मुजाहिद ताबई का कौल हज़रत इसन बसरी (रह०) ने फ़रमाया कि **تَرْفَع** के माने **تَعْظُم** है कि उन मसाजिद की तअज़ीम का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है यानी उन का अदब किया जाए उन में वह काम और वह बातें न की जाएँ जो मस्जिद के बुलन्द मक़ाम के ख़िलाफ़ हैं।

(अबू बग़्गी मुआलिमुल्तन्ज़ील)

मसाजिद की तअमीर भी मुबारक है, जिस का बड़ा अज़्र सवाब है और उन के अदब करने का भी हुक्म फ़रमाया है। मस्जिदों को पाक व साफ़ रखना, उन में बुरे अशअर न पढ़ना, ख़रीद व फ़रोख़्त न करना, अपनी गुमशुदा चीज़ तलाश न करना। प्याज़ लहसुन खाकर या किसी भी तरह की बद्बू मुँह में या जिस्म में या कपड़े में लेकर आने से परहेज़ करना, उन में दुनिया वाली बातें न करना, बहुत छोटे बच्चों को साथ न ले जाना। यह सब चीज़ें मस्जिद की तअज़ीम (Respect) में दाख़िल हैं।

मसाजिद की अस्ल आबादी यह है कि अज़ानें देकर मुसलमानों को नमाज़ के लिए बुलाया जाए और दाख़िल होने के बाद 'तहीय्यतुल मस्जिद' पढ़ी जाए और जमाअत से नमाज़ें पढ़ी जाएँ और उन में अल्लाह का ज़िक्र किया जाए। कुआन मजीद का दर्स हो, दीनी बातें सिखाई और पढ़ाई जाएँ। एक नमाज़ पढ़ने के बाद मस्जिद में बैठ कर दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार किया जाए उन में एतिकाफ़ किया जाए। नमाज़ पढ़कर मस्जिद से निकले तो मस्जिद ही में दिल अट्का रहे।

अहदीस शरीफ़ा में इन बातों के एहतिमाम करने का हुक्म फ़रमाया है। हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम किसी शख्स को देखो कि मसाजिद का ध्यान रखता है तो उस के मोमिन होने की गवाही दो क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है:-

إِنَّمَا يَنْفَرُ مَسَاجِدَ الْمُؤْمِنِينَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ (तिर्मिज़ी व दारमी, मिशक़ात पेज नं० 69)

**नोट-** आयते शरीफ़ा में जो शब्द **رَجَالٌ** आया है। इस से कुछ हज़रात ने माना है कि **رجال** यानी मर्द मस्जिदों में आएँ उन में नमाज़ पढ़ें, ज़िक्र व तिलावत करें और दर्स में मशगूल (Busy) हों, यह मर्दों ही के लिए मुनासिब है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने औरतों को कुछ शर्तों के साथ मस्जिद में आने की इजाज़त तो दी है, लेकिन साथ ही यह भी फ़रमाया है कि **بِیُوتِهِنَّ خَيْرٌ لَّهُنَّ** और एक हदीस में है कि आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि औरत की नमाज़ उस के घर में यानी अन्दर के हिस्से में उस नमाज़ से बेहतर है जो सहन में पढ़े और "ख़ूब अन्दर के कमरे में नमाज़ पढ़े, यह इस से बेहतर है कि अपने घर के बाहरी हिस्से में नमाज़ पढ़े"। (रवाहु अबू दाऊद पेज नं० 84 भाग 1)

38

لِيَجْزِيَ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَزِرُّ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

(ताकि अल्लाह उन को उन के आमाल का अच्छे से अच्छा बदला दे।) **لِيَجْزِيَ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا** (और उन्हें अपने फ़ज़ल से और भी ज़्यादा दे) **وَاللَّهُ يَزِرُّ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ** (और अल्लाह जिसे चाहता है बिला हिसाब रिज़क अता फ़रमाता है) ईमान और नेक आमाल वालों के लिए अल्लाह तआला के यहाँ अच्छे से अच्छा बदला है और ज़्यादा से ज़्यादा सवाब है और बिला हिसाब रिज़क है।

39

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَغْبَالُهُمْ كَسْرَابٍ يَفْعَلُ يَحْسَبُهُ الظَّالِمُ مَاءً حَلِيًّا إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ قُوَّةً قَوِّمَهُ جَسَادُهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

### काफ़िरों के आमाल का बदला

अहले ईमान के आमाल का बदला बताने के बाद काफ़िरों के आमाल का ज़िक्र फ़रमाया और आख़िरत में उन के फ़ायदे से महसूसी ज़ाहिर करने के लिए दो मिसालें ज़ाहिर फ़रमाईं। काफ़िर लोग दुनिया में बहुत से आमाल करते हैं, जैसे- सिलह रहमी, जानवरों को खिलाना, च्यूटियों के बिलों में आटा डालना, मुसाफ़िर खाने बनवाना और पानी की सबीलें लगवाना आदि करते हैं और यह समझते हैं कि इस से हमें मौत के बाद फ़ायदा पहुँचेगा, उन की इस ग़लतफ़हमी को स्पष्ट करने के लिए दो मिसालें (Example) ज़िक्र फ़रमाईं।

पहली मिसाल यह कि एक शख्स प्यासा हो, वह दूर से रेत को देखे और उसे यह समझे कि यह पानी है (सख़्त दोपहर के वक़्त जंगलों के चट्टयल मैदानों में दूर से रेत, पानी मालूम होता है) अब वह जल्दी-जल्दी अपने ख़याल में पानी की तरफ़ चला, वहाँ पहुँचा तो जो कुछ उस का ख़याल था उस के मुताबिक़ कुछ भी न पाया वहाँ तो पानी की जगह रेत निकला (जो सख़्त गर्म था न उसे खा सकता है न उस से प्यास बुझ सकती है) जिस तरह उस प्यासे का गुमान झूठा निकला उसी तरह काफ़िरों का यह ख़याल कि ज़ाहिरी सूरत में जो अच्छे आमाल करते हैं यह मौत के बाद नफ़अ बख़्श (Beneficial) होंगे ग़लत है, क्योंकि आख़िरत में सवाब के लिए ईमान शर्त है। वहाँ पहुँचेगे तो किसी अमल का जिसे नेक समझ कर किया था कुछ भी फ़ायदा न पहुँचेगा **كَمَا قُلْنَا لَعَالَىٰ مَا عَمِلْتُمْ إِنَّكُمْ مَعْمُورُونَ** (और हम उन के आमाल की तरफ़ मुतवज्जेह होंगे सो उन को ऐसा कर देंगे, जैसे परेशान गुबार लेकिन अल्लाह तआला काफ़िरों के आमाल को जो बज़ाहिर नेक हों बिल्कुल ज़ाया नहीं फ़रमाता उन का बदला दुनिया ही में दे देता है।

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “बिलाशुब्हा अल्लाह किसी मोमिन पर एक नेकी के बारे में भी जुल्म नहीं फ़रमाएगा, दुनिया में भी उस का बदला देगा और आख़िरत में भी उस की जज़ा (Reward) देगा, लेकिन काफ़िर जो नेकियाँ अल्लाह के लिए

करता है दुनिया में उस का बदला दे दिया जाता है, यहाँ तक कि जब आखिरत में पहुँचेगा तो उस की कोई भी नेकी नहीं बची होगी जिस का उसे बदला दिया जाए”। (रवाहु मुस्लिम)

وَوَجَدَ اللَّهُ عِنْدَهُ فَوْقَهُ حِسَابَهُ

(और उस ने अल्लाह को अपने अमल के पास पाया तो उस ने इस का हिसाब पूरा कर लिया) यानी दुनिया में उस के अमाल का बदला दिया जा चुका होगा। (मुआलिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 349 भाग 3)

ووجد الله عنده اى عند عمله فوفه حسابه اى جزاء عمله اه وقال صاحب الروح  
ج ٨٨٤ وقيل وجد الله تعالى محاسبا اياه الا ان العندية بمعنى الحساب لذكر  
التوفيته بعده بقوله سبحانه فوفه حسابه اى اعطاه وافيا كاملا حساب عمله  
وجزاءه واتم حسابه بعرض الكنبته ما قدمه

(और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।) وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

यानी उसे हिसाब लेने में देर नहीं लगती और एक का हिसाब करना, दूसरे का हिसाब लेने से नहीं रोकता।

40

أَوْ كَظُلُمٍ فِي بِحْرِ لَيْلٍ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ۚ ظَلُمْتُ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۚ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكُنْ يَرَاهَا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۚ

काफ़िरो के अमाल की दूसरी मिसाल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया:-

أَوْ كَظُلُمٍ فِي بِحْرِ لَيْلٍ या यूँ समझो जैसे बहुत सी अंधेरियाँ बड़े गहरे समुद्र के अन्दरुनी हिस्से में हों और उस समुद्र को एक बड़ी मौज ने ढा़प लिया हो। फिर उस मौज के ऊपर दूसरी मौज हों, फिर उस के ऊपर बादल हों, नीचे ऊपर अंधेरियाँ ही अंधेरियाँ हैं।

अगर कोई शख्स दरिया की तह में हो जहाँ इन अन्धेरियों पर अन्धेरियाँ हों और अपना हाथ निकाल कर देखना चाहे तो वहाँ उस के अपने हाथ के देखने का ज़रा भी सन्देह नहीं। इसी तरह काफ़िर भी घटाटोप अन्धेरियों में हैं, वह समझ रहे हैं कि हमारे अमाल का अच्छा नतीजा निकलेगा हालाँकि उस का कुछ भी अच्छा नतीजा निकलने वाला नहीं है।

‘मुफ़स्सिर इब्ने कसीर’ (पेज नं० 296 भाग 3) फ़रमाते हैं कि पहली मिसाल उन काफ़िरो की है जो जिहालत में हैं, वह समझते हैं कि हमारे अमाल हमारे लिए नफ़ाबर्ख़ होंगे और दूसरी मिसाल उन लोगों की है जो कुफ़्र के सरग़नों के पैरुकार होने की वजह से काफ़िर हैं, उन्हें कुछ पता नहीं कि हमारे अगुवा का क्या हाल है और वह हमें कहाँ ले जाएगा? जब उन से पूछा जाता है कि हम कहाँ जा रहे हैं तो कहते हैं कि हम अपने सरदारों के साथ हैं, फिर जब पूछा जाता है कि वह लोग कहाँ जा रहे हैं तो कहते हैं कि हमें पता नहीं।

और कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि पहली मिसाल उन लोगों की है जो मौत के बाद सवाब मिलने के कायल हैं और यूँ समझते हैं कि हमारे नेक अमाल हमारे लिए नफ़ा देंगे और दूसरी मिसाल उन



काफ़िरो की है जो क़ियामत और आख़िरत को मानते ही नहीं और वह आमाँल के बदले के इन्कारी हैं, उन के पास ख़याली नूर भी नहीं (जबकि पहली किस्म के काफ़िरो के पास एक ख़याली नूर था) सो जिन लोगों ने आख़िरत के लिए कोई अमल किया ही नहीं उन के लिए तो बस अन्धेरा ही अन्धेरा है।

‘मुफ़स्सिर इब्ने कसीर’ ने **ظَلَمْتُ بَعْضَهَا فَوْقَ بَعْضٍ** की तफ़सीर करते हुए ‘हज़रत उबई बिन कअब’ (रज़ि०) का कौल नक़ल किया है कि काफ़िर पाँच तरह की अन्धेरियों में है। उस की बात अन्धेरा है, उस का अमल अन्धेरा है, उस का अन्दर जाना (इमरत में दाख़िल होना) अन्धेरा है और उस का निकलना अन्धेरा है और क़ियामत के दिन वह दोज़ख़ की अन्धेरियों में दाख़िल कर दिया जाएगा।

**وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُورٍ**

और अल्लाह जिस के लिए नूर मुक़र्रर न फ़रमाए उस के लिए कोई नूर नहीं।

**فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِنْ رَبِّهِ** के मुक़ाबिले में फ़रमाया। मोमिन को अल्लाह ने नूर दिया **يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ** और काफ़िर के लिए अल्लाह ने नूर मुक़र्रर नहीं फ़रमाया, इसलिए वह कुफ़्र के अन्धकार में है।

41

**الْمُتَرَاتِنَ اللَّهُ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْظَّالِمُ ظَلَمَ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝**

## आसमान और ज़मीन वालों की तस्बीह

इन आयात में अल्लाह तआला की कुदरत के कुछ मज़ाहिर बयान फ़रमाए हैं और मख़्लूक में जो उस के अधिकार हैं, उन में से कुछ अधिकार का ज़िक्र फ़रमाया और यह भी फ़रमाया कि आसमानों और ज़मीनों में जो रहने और बसने वाले हैं वह सब अल्लाह की तस्बीह यानी अल्लाह तआला की पाकी बयान करते हैं कि वह हर ऐब और हर नुक़्स से पाक है। उस मख़्लूक में परिन्दे भी हैं जो पर फैलाए हुए फ़िज़ा में उड़ते हैं, यह भी अल्लाह की तस्बीह में मशगूल रहते हैं। उन का फ़िज़ा में उड़ना और ज़मीन पर न गिरना उन के परो की हरकतों को इस क़ाबिल बनाना कि उन से उड़ें और ज़मीन पर न गिरें, इन सब में अल्लाह तआला की कुदरत का मुज़ाहिरा है।

यह विषय कि आसमानों और ज़मीन में जो भी कुछ है सब अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं, पहले भी गुज़र चुका है और कुर्आन मजीद में बहुत सी जगह ज़िक्र है।

अल्लाह की तस्बीह में मशगूल होना ज़बान से भी और ह़ाल से भी है। जो लोग अहले ज़बान हैं वह ज़बान से अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं और जिन चीज़ों को बोलने की ताक़त अता नहीं फ़रमाई गई वह भी अपने ह़ाल के मुताबिक़ अल्लाह की तस्बीह में मशगूल (Busy) हैं।

अव्वल तो हर चीज़ का वजूद ही इस बात को बताता है कि उस का ख़ालिक़ मालिक़ कादिर और हाकिम है। फिर अल्लाह तआला ने जिस को जो शुऊर (Intellect) अता फ़रमाया है अपने उस शुऊर से अल्लाह की तस्बीह और उस की अ़िबादत में मशगूल है, फ़रिश्तों में और इन्सानों और जिन्नात में

ज्यादा अक्ल फहम है, इस से कम हैवानात (पशु-पक्षी) में (वह भी मुख्तलिफ़ है) और इस से कम नबातात में और इस से कम जमादात (पदार्थों) में है। **فيما بين العباد** जमादात (बेजान चीज़ें) में बज़ाहिर जिन में समझ नहीं है, लेकिन अपने ख़ालिक की तस्बीह बयान करने के लिए उन में भी शुज़र है।

इसलिए सूरः बकरः में पत्थरों के बारे में फ़रमाया:-

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَلِأَنْبِيَائِهِمْ مِنَ خَشْيَةِ اللَّهِ  
मज़ीद समझने के लिए इन दोनों आयतों की तफ़सीर देखी जाए।

इस में यह बताया है कि जो आसमानों और ज़मीन के रहने और बसने वाले हैं उन्हें मालूम है कि हमें अपने ख़ालिक की तस्बीह और नमाज़ में किस तरह मशगूल (Busy) रहना चाहिए। कुछ हज़रात ने सलात दुआ लिया है, यह माने मुराद लेना भी दुरुस्त है लेकिन सलात का आम (General) माने लिया जाए तो इस में भी कोई हर्ज़ नहीं। जिस तरह बनी आदम दूसरी मख़्लूक की तस्बीह को नहीं समझते।

كما قال تعالى في سورة الاسراء ولكن لا تفقهون تسبيحهم  
इसी तरह अगर दूसरी मख़्लूक की नमाज़ को न जानें तो इस में सवाल की कोई बात नहीं है।

कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि तस्बीह और सलात से इताअत और फ़रमाँबरदारी मुराद है यानी अल्लाह तआला ने जिस चीज़ को काम में लगा दिया वह उस में लगी हुई है और जिस को जो दिल में डाल दिया वह उसी के मुताबिक़ अपनी इयूटी पूरी करने में लगा है।

यहाँ सवाल होता है कि बहुत से लोग अल्लाह के वजूद को नहीं मानते, उन के बारे में यह कैसे कहा जा सकता है कि वह अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं? इस का जवाब यह है कि उन का अपना वजूद ही अल्लाह की तस्बीह बयान करने के लिए काफी है और कुछ हज़रात ने फ़रमाया है कि उन नालायकों को तम्बीह करने ही के लिए तो इर्शाद फ़रमाया है कि सारी मख़्लूक अल्लाह की तस्बीह बयान करती है।

तुम ऐसे हो कि जिस ने तुम्हें पैदा किया उस को नहीं मानते और उस की तस्बीह में मशगूल नहीं होते। इसीलिए आयत के आख़िर में **وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ بِمَا يَفْعَلُونَ** फ़रमाया (और अल्लाह जानता है जो लोग करते हैं) उसे अहले ईमान के आ़माल का भी इल्म है और वह अहले कुफ़ को भी जानता है। वह सब की जज़ा-सज़ा अपने इल्म व हिक़मत के मुवाफ़िक़ लागू फ़रमा देगा।

قال صاحب الروح ج ١٨ ص ١٨٤ وإنما تسبيحهم ما ذكر من الدلالة التي يشار بهم فيها

غير العقلاء أيضا وفي ذلك من تخطئتهم وتعبيرهم ما فيه

42

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ

इस के बाद फ़रमाया **وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** (और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन का मालिक) **وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ** (और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है) इकीक़त में वही ख़ालिक व



मालिक है। यहाँ जो बराए नाम कोई हुक्मत है वह कोई भी न रहेगी। सारे फैसले अल्लाह तआला ही के होंगे।

**43** أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَرْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَاذِبُونَ سَاءَ بَرَقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝

इस में ऊपर की दुनिया के बाज़ अधिकार का ज़िक्र फ़रमाया कि अल्लाह तआला एक बादल को दूसरे बादल की तरफ़ चलाता है, फिर उन सब को आपस में मिला देता है, फिर उन को तह-ब-तह जमाने के बाद उस में बारिश नाज़िल फ़रमाता है। तू देखता है कि उस के दर्मियान से बारिश निकल रही है और जब उस की मर्ज़ी होती है तो उन्हें बादलों के बड़े-बड़े हिस्सों में से जो पहाड़ों की तरह हैं ओले बरसा देता है। यह ओले बड़े ख़तरनाक होते हैं, जिस की जान या माल को महफूज़ रखना होता है अल्लाह तआला उसे बचा देता है और जिसे माली जानी नुक़सान पहुँचाना होता है वह उन ओलों के ज़रिए उस को हलाक कर देता है।

قال صاحب الروح فى تفسيره قوله تعالى وينزل من السماء من جبال اى من السحاب من قطع عظام تشبه الجبال فى العظم والمراد بها قطع السحاب

कभी-कभी बादलों में बिजली पैदा होती है। जिस की चमक बहुत तेज़ होती है ऐसा मालूम होता है कि अभी आँखों की रौशनी को उचक लेगी। इस का पैदा फ़रमाना भी अल्लाह तआला के तसर्फ़ात (अधिकार) में से है। इस के ज़रिये मौतें भी हो जाती हैं अल्लाह तआला ही जिस को चाहता है बचा लेता है।

**44** يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

इन्हीं अधिकार में से रात और दिन का उलटना पलटना भी है, जो सिर्फ़ अल्लाह तआला की मर्ज़ी से होता है। इसी को फ़रमाया:-

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ

“अल्लाह तआला रात और दिन को पलटता है”।

रात और दिन का तअल्लुक ज़ाहिरी एतिबार से सूरज के निकलने और डूबने से है, लेकिन सूरज भी अल्लाह तआला की मख़्लूक (Creation) है, अल्लाह ने जो निकलने और डूबने का निज़ाम मुक़र्ररह फ़रमा दिया है उसी के मुताबिक़ चलता है।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

“बिलाशुब्हा इस में आँख वालों के लिए नसीहत है”।

जो शख्स अपने अक्ल व समझ से काम लेगा, अल्लाह तआला की तख़लीक़ पर ग़ौर करेगा उसे ज़रूर अल्लाह तआला की तौहीद स्पष्ट तौर से समझ में आ जाएगी और जिस ने अपने लिए यह तय कर लिया कि मुझे दलायल (Evidence) में ग़ौर नहीं करना और हक़ को नहीं मानना तो वह गुमराह ही रहेगा।

45

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَنْ يَنْشِئُ عَلَى بَطْنِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْشِئُ عَلَى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْشِئُ عَلَى أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

इस के बाद कुछ दूसरे अधिकार का जिक्र फरमाया। इर्शाद है:-

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ यानी अल्लाह तआला ने ज़मीन पर चलने फिरने वाली हर चीज़ को पानी से पैदा फरमाया। इस से हैवानात मुराद हैं जो नुत्फे से पैदा होते हैं, फिर उन जानवरों में कुछ वह हैं जो अपने पेट के बल भी चलते हैं, जैसे साँप वगैरह।

और बाज़ वह हैं जो दो पैरों से चलते हैं जैसे इन्सान और परिन्दे (जबकि खुश्की में हों) और कुछ वह हैं जो चार पांव पर चलते हैं जैसे- ऊँट, भैंस, गाय, बकरी वगैरह ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ जो चाहता है पैदा फरमाता है, उसे पूरा अख्तियार है जिसे जिस हाल और शक्ल व सूरत में पैदा फरमाए और जिस को जिस तरह चाहे कुव्वत व कुदरत अता फरमाए।

पेट के बल चलने वाले जानवरों को जिस तरह चलने और भागने की कुव्वत अता फरमाई है उन में से बहुत से दो और चार टांगों वाली चीज़ों को अता नहीं फरमाई जो नहीं चल सकती। छिपकली को देख लो वह छत से उलटी लटक कर भी दौड़ लेती है दूसरी मख़्लूक ऐसा करे तो गिर पड़े, छिपकली चल भी रही है और चिपक भी रही है। فسبحان من اعطى كل شئ خلقه ثم هدى

إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

बिलाशुब्हा अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

जिस को जैसा चाहा बनाया وما شاء الله كان وما لم يشأ لم يكن

मतलब यह है कि आ़म तौर से जो तुम इन्सान और चौपायों को देखते हो उन की तख़लीक़ नुत्फे (Semen) से है और कुछ हज़रात ने दूसरा जवाब दिया है और वह यह कि अल्लाह तआला ने पानी को पैदा फरमाया, फिर उस में से कुछ को आग बना दिया जिस से जिन्नात पैदा फरमाए और कुछ को मिट्टी बना दिया और उस से इन्सान को पैदा फरमाया और कुछ को हिस्सा-ए-नूर बना दिया। उस से फ़रिश्ते पैदा फरमाए और जितनी मख़्लूक वजूद में आई उस के वजूद में किसी न किसी तरह पानी के जौहर (Atom) का वजूद है। (मुआलिमुत्तन्ज़ील पेज नं० 351 भाग 3 व रुहुल् मअानी पेज नं० 193 भाग 18)



## आयत नं० 46 से 57 तक

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ مُبِينَاتٍ ۖ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّى فِزْيُقُ  
وَمِنْهُمْ مَن بَعْدَ ذَلِكَ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فِزْيُقُ وَمِنْهُمْ مَّعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ  
لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَمْ ادَّارُوا أَمْرًا يَخْفَوْنَ أَنَّ يَجِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ رَسُولَهُ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝  
إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَتَن يُطِيعِ  
اللَّهُ وَرَسُولَهُ وَيَخُفِ اللَّهُ وَيَخْشَى ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ وَأَقْسَبُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْدِيهِمْ لِيُنْزِلَ أَمْرَهُمْ لِيُخْرِجَنَّهُمْ ۚ قُلْ لَا تَقْسِمُوا  
طَاعَةَ مَعْرُوفَةٍ ۚ إِنْ أَلَّ اللَّهُ خَيْرٌ لِّبَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا  
حُمِّلْتُمْ ۚ وَإِنْ تُطِيعُوا تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ  
فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلِيُبَيِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلِيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي  
وَلَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ  
تُرحَّبُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي النَّارِ وَلِبَاسٌ مَّصِيدٌ ۝

### अनुवाद-

(46) 'हमने' ही स्पष्ट कर देने वाली आयतें नाज़िल की हैं, और अल्लाह जिसको चाहता है सीधी राह की ओर लगा देता है। (47) यह (मुनाफ़िक) कहते हैं, "हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और 'हमने' उसका हुक्म मान लिया" फिर इसके बाद एक गिरोह मुँह मोड़ जाता है तो ऐसे लोग ईमान वाले ही नहीं। (48) और जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फैसला करें, तो उनमें से एक गिरोह कतूरा जाता है; (49) और अगर हक उनके पक्ष में हो तो रसूल के पास बड़े फरमाँबरदार हो कर चले आते हैं। (50) क्या उनके दिलों में रोग है? या धोखे में हैं, या उनको डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ अन्याय करेंगे, (नहीं), बल्कि यह लोग खुद ही ज़ालिम हैं (51) मोमिनों की बात तो यह होती है कि जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएं, ताकि वह उनके बीच फैसला करें, तो कहते हैं, "हमने सुना और माना," तो यही लोग कामियाब होने वाले हैं। (52) और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबरदारी करे, और अल्लाह से डरे, और तक्वा (उसकी सीमाओं का ख़याल) रखे, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं। (53) और अल्लाह की पक्की कसमें खा कर कहते हैं, कि अगर आप उन्हें हुक्म दें तो वे ज़रूर निकल खड़े होंगे, कह दीजिए, "कसमें न खाओ, सामान्य तरीके से फरमाँबरदारी करो, बेशक अल्लाह को ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।" (54) कह दीजिए, "अल्लाह का हुक्म मानो और उसके रसूल का कहना मानो, फिर अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो बस (रसूल पर) वही ज़िम्मेदारी है जिसका बोझ उस पर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुम पर डाला गया है, और अगर तुम फरमाँबरदारी करोगे तो राह पा लोगे; और रसूल पर तो बस साफ-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है। (55) और अल्लाह ने उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए, और उन्होंने नेक अमल किये,

उनसे अल्लाह का वादा है कि उनको ज़मीन में ख़लीफ़ा (सत्ताधिकारी) बनाएगा जैसे उनके पहले के लोगों को ख़लीफ़ा बनाया था; और उनका दीन जो उसने उनके लिए पसंद किया है; उसको उनके लिए मज़बूत कर देगा; और उनके डर के बदले में उनको अमन देगा, कि वे 'मेरी' इबादत किया करें, और किसी को 'मेरा' साझीदार न ठहराएँ; और जो कोई इसके बाद इन्कार करे, तो ऐसे ही लोग फ़ासिक (उल्लंघनकारी) हैं। (56) और नमाज़ कायम करो, और ज़कात देते रहो और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (57) काफ़िरों के बारे में यह न समझो कि वे 'हमारी' धरती में काबू से बाहर निकल जाने वाले हैं, उनका ठिकाना आग है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

## आयत नं० 46 से 57 तक की व्याख्या

46-49

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ ۖ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ  
وَبِالرَّسُولِ وَأَلْعَنَّا شَمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِنْهُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۖ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ  
وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝

यह पाँच आयत हैं। इन में से पहली आयत में यह इर्शाद फ़रमाया कि हम ने स्पष्ट आयत और खुली निशानियाँ नाज़िल फ़रमाई हैं जो हक़ और हकीकत को स्पष्ट करने वाली हैं, जो अक्ल व समझ से काम नहीं लेता वह दलायल (Evidence) से फ़ायदा नहीं उठा सकता और गुमराही के रास्ते ही अख़्तियार किये हुए रहता है और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत दे देता है। इस के बाद जो चार आयत हैं उन को समझने के लिए मुनाफ़िक्कीन के बाज़ वाकिआत को समझना चाहिए।

‘हज़रत इमरान बिन हुसैन’ (रज़ि०) कहते हैं कि यमन से कुछ लोग आप (सल्ल०) के पास आलम की पैदाइश का हाल पूछने के लिए आए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “पहले सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात थी और उसके सिवा कोई चीज़ न थी, उसका अर्श पानी पर था। उस ने हर चीज़ को लौहे महफूज़ में लिख लिया और आसमान और ज़मीन पैदा किये”। (बुख़ारी)

एक वाकिआ सूर: निसा के आयत الْم تَرَىٰ إِلَىٰ الْيَوْمِ الْبَازِغُونَ की तफ़सीर में बयान किया जा चुका है, जो बिश्म नामी मुनाफ़िक़ का किस्सा है। दूसरा वाकिआ बाज़ मुफ़स्सरीन ने इन आयत के तहेत लिखा है।

‘साहिबे रुहुल् मअानी’ लिखते हैं कि हज़रत अली (रज़ि०) का ‘मुगीरा बिन वायल’ से एक ज़मीन के बारे में झगड़ा था, दोनों ने आपस में बख़ुशी इस ज़मीन को तक्सीम (बंटवारा) कर लिया। उस के बाद ‘मुगीरा’ ने कहा कि तुम अपनी ज़मीन मुझे बेच दो, हज़रत अली (रज़ि०) इस पर राज़ी हो गये बेचने का काम मुकम्मल हो गया, हज़रत अली (रज़ि०) ने कीमत ले ली और ‘मुगीरा’ ने ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद किसी ने ‘मुगीरा’ को समझाया कि तूने यह नुक़सान का सौदा किया है, यह बंजर या ख़ारी ज़मीन है इस पर उस ने हज़रत अली (रज़ि०) से कहा कि आप अपनी ज़मीन वापस ले लें क्योंकि मैं इस सौदे पर राज़ी नहीं था।

हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया कि तूने अपनी खुशी से यह मामला किया है और इस ज़मीन का हाल जानते हुए तूने ख़रीदा है। मुझे इस का वापस करना मन्ज़ूर नहीं है और साथ ही यह भी फ़रमाया कि चलो, हम दोनों रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर होकर अपना मुक़दमा पेश करें। इस पर वह कहने लगा कि मैं मुहम्मद (सल्ल०) के पास नहीं जाऊँगा वह तो मुझ से नफ़रत करते हैं और मुझे डर है कि वह फैसला करने में मुझ पर जुल्म कर दें।

इस पर यह आयत नाज़िल हुई, चूँकि वह शख्स मुनाफ़िक् था इसलिए उस ने ऐसी बेहूदा गुस्ताख़ी वाली बात कही और चूँकि मुनाफ़िक्कीन आपस में अन्दरूनी तौर पर एक थे और घुल मिल कर रहते और एक दूसरे की मदद भी करते थे इसलिए आयते शरीफ़ा में यह बयान इस तरह फ़रमाया कि सब मुनाफ़िक्कीन को शामिल फ़रमा लिया।

‘मुफ़स्सिर इब्ने कसीर’ ने हज़रत हसन (रज़ि०) से यह भी नक़ल किया है कि जब मुनाफ़िक्कीन में से किसी से झगड़ा होता और वह झगड़ा ख़त्म करने के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में बुलाये जाते और उसे यकीन होता कि आप मेरे ही हक़ में फैसला फ़रमाएँगे तो हाज़िर हो जाता और अगर उस का इरादा होता कि किसी पर जुल्म करे और उसे दुश्मनी का फैसला कराने के लिए आपकी ख़िद्मत में हाज़िरी के लिए कहा जाता, तो मुँह मोड़ता था और किसी दूसरे शख्स के पास चलने को कहता था। मुनाफ़िक्कीन ने अपना यह तरीक़ेकार बना रखा था, इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

इश्राद फ़रमाया कि यह लोग (यानी मुनाफ़िक्कीन) ज़ाहिरी तौर पर ज़बान से यूँ कहते हैं कि हम अल्लाह पर और उस के रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाए और हम फ़रमाँबरदार हैं। इस ज़ाहिरी कौल व क़रार के बाद अमली तौर पर उन में से एक जमाअत फिर जाती है। चूँकि हकीक़त में यह मोमिन नहीं हैं इसलिए इन्होंने ऐसा तरीक़ा बना रखा है। जब इन से कहा जाता कि अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ आओ ताकि तुम्हारे दर्मियान फैसला कर दिया जाए तो इन की एक जमाअत इस से मुँह मोड़ती है।

क्योंकि इन्हें मालूम रहता है कि हम ने जुल्म कर रखा है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर होंगे तो फैसला हमारे ख़िलाफ़ जाएगा।

अगर उन का हक़ किसी पर आता हो तो इस हक़ के वसूल करने के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में बड़ी ही फ़रमाँबरदारी के साथ हाज़िर हो जाते हैं।

मक्सद उन का सिर्फ़ दुनिया है ईमान का इक़रार और फ़रमाँबरदारी का कौल व क़रार दुनियावी नफ़ा ही के लिए है। ख़िद्मते अली में हाज़िर होने की सूरत में भी तालिबे दुनिया और हाज़िरी देने से मुँह मोड़ने में भी दुनिया ही पेशे नज़र होती है।

50

إِنْ قُلُوبُهُمْ مَّرَضٌ أَوْ زَانَبُوا أَمْرًا يَخْفَوْنَ أَنْ يَحْيِفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

क्या उन के दिलों में मर्ज़ है?

यानी इस का यकीन है कि आप अल्लाह के रसूल नहीं हैं। **أَمْرًا تَالِيًا** (या इन्हें शक है) कि आप नबी हैं या नहीं।

**أَمْ يَحْتَفُونَ أَنْ يَخِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولَهُ**

(या वह यह खौफ़ खाते हैं कि अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ से उन पर जुल्म होगा।) मतलब यह है कि इन तीन बातों में से कोई चीज़ नहीं है, उन्हें यह भी यकीन है कि आप वाकई अल्लाह के रसूल हैं और वह यह भी समझते हैं कि आपकी खिदमत में हाज़िर होकर जो फैसला होगा उस में जुल्म नहीं होगा। जब यह बात है तो मुँह मोड़ने का ज़रिया सिर्फ़ यही रह जाता है कि खुद वह ज़ालिम हैं **بَلْ أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ** वह चाहते हैं कि दूसरों का माल तो हमें मिल जाए लेकिन हम पर जो किसी का हक़ है वह देना न पड़े। अगर उन्हें डर होता कि आप का फैसला इन्साफ़ के ख़िलाफ़ होगा तो जब अपना हक़ किसी पर होता उस के लिए भी दौड़े हुए न आते, वह जानते थे कि आप का फैसला हक़ वाले के हक़ में होगा, लेकिन जब यह समझते थे कि हमारे ख़िलाफ़ होगा तो मुँह मोड़ते थे, उन का मक्सद इन्साफ़ कराना नहीं बल्कि दूसरों का माल हड़पना है।

**51-52**

**إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَنَنْ يُطِيعَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ الَّذِي هُوَ الْغَافِرُونَ ۝**

## ईमान वालों की कामियाबी

ऊपर मुनाफ़िक़ीन का हाल बयान फ़रमाया कि वह सिर्फ़ ज़बान से, ईमान और फ़रमाँबरदारी का इक़्रार और एलान कर देते हैं। फिर जब उन के झगड़ों के फैसले के लिए अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ बुलाया जाता है तो कतराते हैं और बच कर चले जाते हैं, यह लोग अपने ईमान के एलान व इक़्रार में झूठे हैं।

इन दोनों आयतों में सच्चे मोमिनीन का कौल व अमल बताया गया है कि जब उन्हें किसी फैसले के लिए अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है तो वह हर मौक़े पर **سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا** ही कहते हैं, ज़रा भी इन्कार नहीं करते। वह कहते हैं कि हम ने सुन लिया, मान भी लिया, यही हज़रात कामियाब हैं। यह पहली आयत का विषय है, दूसरी आयत में इस बात की और सफ़ाई फ़रमाई और दोबारा कामियाबी की खुशख़बरी दी। फ़रमाया कि:-

**وَنَنْ يُطِيعَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ** (और जो शख़्स अल्लाह उस के रसूल की फ़रमाँबरदारी करे।)

**وَيَخْشَ اللَّهَ** (और अल्लाह से डरे) **وَيَقْتَرِ** (और उस की नाफ़रमानी से परहेज़ करे।)

**فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ** (सो यही लोग कामियाब हैं) इस में चार चीज़ों का ज़िक्र है।

पहली अल्लाह तआला की इताअत दूसरी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पैरवी।



इताअत में वह सब चीजें दाखिल हैं जिन का अल्लाह और उस के रसूल ने हुक्म फरमाया और इताअत में उन आमाल से बचना भी दाखिल है जिन से अल्लाह और उस के रसूल ने मना फरमाया, बल्कि सुनन व आदाब पर अमल करना भी इताअत का हिस्सा है और तीसरी बात यह है कि अल्लाह तआला से डरता रहे। इस में फरायज़ और वाजिबात का एहतिमाम करना दाखिल है और चौथी चीज़ यह है कि तमाम गुनाहों से बचता रहे यानी इताअत में गुनाहों से बचना भी दाखिल है, लेकिन और ताकीद व एहतिमाम के लिए इन का जिक्र फरमाया।

मुख्तसर शब्दों में मोमिन बन्दों की कामियाबी बता दी, इसीलिए आयत के खत्म पर **فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ** फरमा दिया। कामियाब होने का मतलब यह है कि दोज़ख से बचा लिया जाए और जन्नत में दाखिल कर दिया जाए। जैसे सूर: आले इमरान में फरमाया है:-

**فَمَنْ زَحْزَحَ عَنِ النَّارِ وَادْخَلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ**

(सो जो शख्स दोज़ख से बचा दिया गया और जन्नत में दाखिल करा दिया गया वह कामियाब हो गया।)

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (पेज 299 भाग 3) ने हज़रत क़तादा से नक़ल किया है कि **يَخْشَى اللَّهَ** से उन गुनाहों के बारे में डरना मुराद है, जो गुनाह पहले हो चुके हैं और **وَيُتَّقِهِ** से यह मुराद है कि आइन्दा गुनाहों से बचे।

**53-54**

**وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۚ قُلْ لَا تُقْسِمُوا ۚ طَاعَةٌ مَعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ**  
**حَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا**  
**حُمِّلْتُمْ ۚ وَإِنْ تُطِيعُوا تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝**

## मुनाफ़िकों का झूठी कसमें खाना

इन आयात में भी मुनाफ़िकीन की तरफ़ इशारा है, वह ज़ोरदार तरीके पर अल्लाह तआला की कसमें खा-खाकर कहते थे कि हम तो फरमाँबरदार हैं, आप का हुक्म मानने को तैयार हैं। अगर आप का हुक्म हो कि हम घरबार छोड़ कर निकल जाएँ तो हम इस के लिए तैयार हैं। यह तफ़्सीर 'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' से मन्कूल है और कुछ मुफ़स्सिरनी ने इस का यह मतलब बताया है कि आप जब भी जिहाद के लिए बाहर निकलने का हुक्म फरमाएँगे तो हम ज़रूर निकल खड़े होंगे।

उन को रद्द फरमाया कि आप उन से फरमा दीजिए कसमें न खाओ, तुम्हारी फरमाँबरदारी जानी पहचानी है, कसमें खाने के बावजूद भी तुम अपने वादे पर पूरे नहीं उतर सकते। हुक्म सुनकर फिर खिलाफ़वर्ज़ी करोगे और हकीकत में बात यह है कि जो शख्स मुख़्लिस हो उसे अपनी फरमाँबरदारी ज़ाहिर करने के लिए कसमें खाने की ज़रूरत नहीं होती। वह तो हुक्म को मानता चला जाता है, उस का अमल और तर्ज़े अमल ही बता देता है कि वह मुख़्लिस है और जिसका फरमाँबरदारी का सिर्फ़ दावा हो वह अपने दावे का भरम रखने के लिए बार-बार कसमें खाता है और यकीन दिलाता है कि मैं आप का

फरमाँबरदार हूँ और हर हुक्म के लिए हाज़िर हूँ। मुनाफ़िकीन का यही तरीका था कि फरमाँबरदारी का दावा करते थे और उस पर कसमें खाते थे, फिर जब हुक्म होता था तो मुँह मोड़ लेते थे और मोमिनीन इख़्लास के साथ फरमाँबरदारी में लगे रहते थे, उन्हें कसम खाने की ज़रूरत न थी। हर शख्स को आख़िरत में भी पेश होना है, मैदाने क़ियामत में जब हिसाब होगा तो यह ज़बानी दावे और झूठी कसमें और धोका देने के इरादे और शर व फ़साद की नियतें सब ही का अन्जाम देख लेंगे।

अगर बन्दों को पता न चले तो अल्लाह तआला को तो सब कुछ ख़बर है वह अपने इल्म और हिक्मत के मुताबिक़ सज़ा देगा। **إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ** में इस मज़मून को स्पष्ट फ़रमा दिया है।

मज़ीद फ़रमाया कि ऐ मुनाफ़िकों! अगर तुम फरमाँबरदारी से बचो और मुँह मोड़ो तो इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) का कुछ नुक़सान नहीं। आप (सल्ल०) के ज़िम्मे जो ज़िम्मेदारी डाली गयी है (यानी तब्तीग़ का काम) आप उस के ज़िम्मेदार हैं और तुम जानते हो कि आप ने उसे पूरा कर दिया और तुम पर जो बोझ डाला गया तुम उस के ज़िम्मेदार हो यानी तुम्हारे ज़िम्मे फरमाँबरदारी है, तुम फरमाँबरदारी न करोगे तो अपना बुरा करोगे।

मज़ीद फ़रमाया **وَإِنْ تُطِيعُوا تَهْتَدُوا** और अगर तुम सच्चे दिल से इख़्लास के साथ फरमाँबरदारी करोगे तो राहे हक़ पा जाओगे। **وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ** और रसूल के ज़िम्मे अल्लाह तआला का पैग़ाम स्पष्ट तौर पर पहुँचाने के अलावा कुछ नहीं है। (उन्होंने पहुँचा दिया अब तुम अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करो) इस से मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के जो नायब हैं वह उम्मत को जो भी कोई बात बताएँ स्पष्ट तौर पर बताएँ। जो साफ़ तौर पर समझ में आ जाए आगे अमल करने वाले की ज़िम्मेदारी है।

**55-57**

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفْنَا فِي الْأَرْضِ مَنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا تُحْسَبُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِي النَّارِ وَلَيْسَ الْبَصِيرُ ۝

## ईमान और नेक बन्दे

‘मुआलिमुत्तन्ज़ील’ पेज नं० 353 भाग 3 में ‘हज़रत अबू अल् आलिया ताबअी’ से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सहाबा के साथ वह्य नाज़िल होने की शुरुआत के बाद ही से साबित क़दमी के साथ जमे रहे और काफ़िरों की तरफ़ से जो तकलीफ़ें पहुँचती थीं उन पर अल्लाह के हुक्म से सब्र करते रहे, सुबह शाम दुश्मनों की तरफ़ से डरते रहते थे। फिर जब मदीना मुनव्वरह हिजरत करने का हुक्म दे दिया गया तो मदीना मुनव्वरह पहुँच गये, वहाँ पहुँचने पर भी दुश्मनों से छुटकारा न हुआ।

यहूदी भी दुश्मन थे और मुनाफ़िकीन से भी ख़तरा रहता था, इसलिए हर शख्स हथियार साथ रखता था।

इसी दौरान एक शख्स के मुँह से यह निकल गया था कि क्या हम पर कोई ऐसा दिन भी आएगा जिस में हम अम्न व अमान से होंगे और हथियार साथ रखने की ज़रूरत न होगी? इस पर अल्लाह तआला ने आयते करीमा **وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ** आखिर तक नाज़िल फ़रमाई।

अल्लाह तआला ने हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से वादा फ़रमाया कि अल्लाह तआला तुम्हें ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाएगा तुम्हें ज़मीन में शासन व अख़्तियार देगा, दुश्मन हारेंगे, अरब व अज़म पर तुम्हारा शासन होगा, उन से पहले जो अहले ईमान थे उन को भी अल्लाह तआला ने ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया और सत्ता सुपुर्द फ़रमाया।

हज़रात अम्बिया किराम (अलै०) में हज़रात दाऊद और हज़रात सुलेमान (अलै०) की हुकूमत व सल्तनत तो मशहूर ही है, इन के अलावा भी बनी इस्राईल को अल्लाह तआला ने हुकूमत अता फ़रमाई और ज़मीन में शासक बनाया।

‘हज़रात अदी’ (रज़ि०) कहते हैं “मैंने हीरह से चलकर कअबः का तवाफ़ करने वाली औरत देखी, जो अल्लाह के सिवा किसी से न डरती थी।” (बुख़ारी)

हज़रात मूसा (अलै०) ने बनी इस्राईल को ख़िताब कर के फ़रमाया:-

**يَا قَوْمُ أَذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا وَآتَاكُمْ مَالًا يَوْتِ أَحْثَامُ الْعَالَمِينَ**

(ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की नेअमत को याद करो जो उस ने तुम्हें अता फ़रमाई जबकि उस ने तुम में से अम्बिया बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम को वह कुछ दिया जो ज़हानों में से किसी को नहीं दिया।)

अल्लाह तआला का हर वादा हक़ के साथ है, उस ने हर वादा पूरा फ़रमाया और आइन्दा उस के सारे वादे पूरे होंगे। हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से जो वादे फ़रमाए वह ईमान और आमांले सालिहा की बुनियाद पर थे वह सब पूरे हुए।

पूरे अरब (हिजाज, यमन, शाम, इराक़, नज्द) पर उन का क़ब्ज़ा हुआ। इन के बाद आने वाले मुसलमानों की बड़ी-बड़ी हुकूमतें कायम रहीं, सैकड़ों साल अफ़्रीका और एशिया के देशों पर उन का क़ब्ज़ा रहा। उन्हें पूरा अख़्तियार था कि अपने दीन पर चलें और लोगों को चलाएँ, इस्लाम की दअवत दें, इस्लाम को फैलाएँ।

**وَلْيَبْلُغَنَّ لَهُمْ دِينُهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ** का पूरा-पूरा मुज़ाहिरा था, निहायत सुकून इत्मिनान और अम्न व अमान के साथ रहते थे। मक्का मुअज़्ज़मा की ज़िन्दगी में जो ख़ौफ़ था, फिर मदीना मुनव्वरह में जो चन्द साल ख़ौफ़ व ख़तर के गुज़रे, उसे अल्लाह तआला ने अम्न से बदल दिया।

और **وَلْيَبْلُغَنَّ لَهُمْ دِينُهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ** में जो वादा फ़रमाया था वह देखते-देखते पूरा हो गया। इस वादे को पूरा फ़रमाने के साथ **يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا** फ़रमाया था। जिस का मतलब यह है कि ईमान और आमांले सालिहा पर मज़बूती से जमे रहें, अल्लाह की अ़िबादत करते रहें और किसी तरह का शिर्क (खुला या छिपा हुआ) न करें।

## शर्त की खिलाफवर्जी

फिर मुसलमानों ने शर्त की खिलाफवर्जी की। ईमान भी कमजोर हो गया, अच्छे आमाल भी छोड़ बैठे, अ़िबादत इलाहिया से भी दूर हुए लिहाज़ा बहुत से मुल्कों से हुक्मते ख़त्म हो गईं और बहुत सी जगह ख़ौफ़ व हिरास में मुब्तिला हो गये, अम्न व अमान तबाह हो गया और दुश्मनों से अम्न व अमान की और अपनी हुक्मते बाकी रखने की भीख माँगने लगे।

बड़ी-बड़ी हुक्मते छिन जाने के बाद अब भी कई जगह मुसलमानों की हुक्मते कायम हैं और ज़मीन के बहुत बड़े हिस्से पर अब भी उन्हें सत्ता हासिल है, मगर आपस में जंग है, दुश्मनों से राज़दारी है। कुर्आन मजीद में जो **لَا تَنَحَّيْوَا عِلَاطَةَ مَنْ يُؤْتِيَكُمْ لَآيَٰتُكُمْ حَبَالًا** फ़रमाया है इस की साफ़ खिलाफवर्जी है, हर वक़्त ख़ौफ़ज़दह हैं कि दुश्मन हमें शासन से न हटवा दें या क़त्ल न करवा दें।

अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी से दूर हैं, दुश्मनाने इस्लाम की फ़रमाँबरदारी में लगे हुए हैं। इन सब बातों के होते हुए अपना भरम और मज़बूत सत्ता कहाँ बाकी रह सकती है। अल्लाह तआला ने खिलाफ़त के वादे के साथ ही यह भी फ़रमा दिया था।

**وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَٰسِقُونَ** (जो उस के बाद नाशुकी करेगा तो वही लोग नाफ़रमान हैं।)

हम ने शब्द कुफ़्र का तर्जुमः नाशुकी से किया है कि इस के शाब्दिक माने हैं और शरीअत की इस्तिलाह में ईमान के मुक़ाबिले में इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ दोनों मतलब हो सकते हैं जो शख्स कुफ़्र अख़्तियार कर ले पूरा नाफ़रमान है, ऐसे शख्स का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

अगर कोई शख्स काफ़िर तो नहीं हुआ लेकिन नेक आमाल से दूर है, अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी से मुँह मोड़े हुए हैं उसे यानी काफ़िर न कहा जाएगा, लेकिन फ़ासिक और बागी ज़रूर है। जब ऐसे लोगों की अक्सरियत होगी और मोमिनीन को बुरा कहा जाएगा और आम लोग कुर्आन व हदीस की तअलीमात से दूर भागेंगे तो अल्लाह तआला की मदद नहीं होगी।

अगर आज भी मुसलमान मज़बूत ईमान वाले हो जाएँ और नेक आमाल वाले बन जाएँ और अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी में लग जाएँ तो फिर इन्शाअल्लाह तआला वही दिन आ जाएँगे जो खिलाफ़ते राशिदा के ज़माने में थे।

**وَاقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَاطِيعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ**

(और नमाज़ को कायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।)

इस में स्पष्ट तौर पर बता दिया गया है कि दोबारा फ़रमाँबरदारी की ज़िन्दगी पर आने और अ़िबादत बद्निया और अ़िबादत मालिया अदा करने पर आ जाएँ तो फिर रहम के हक्दार हो सकते हैं।

**لَا تَحْسَبُوْا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ**

(ऐ लोगो! काफ़िरों के बारे में यह ख़याल न कर कि रू-ए-ज़मीन में बेबस करने वाले हैं।)

इस में यह बता दिया कि कोई भी खयाल करने वाला यह खयाल न करे कि काफिर लोग ज़मीन में बेबस करने वाले हैं क्योंकि उन्हें अल्लाह की गिरफ्त से छुटकारा नहीं हो सकता और दुनिया के किसी कोने में भागकर अल्लाह के अज़ाब से नहीं बच सकते और मौत तो बहरहाल सब को आनी ही है। ज़मीन में जो शख्स जहाँ भी हो अपने मुक़रर वक़्त के मुताबिक़ इस दुनिया से चला जाएगा और काफिर का अज़ाब तो मौत के वक़्त से ही शुरू हो जाता है, इन्कार करने वालों को जो दुनिया में अज़ाब है वह अपनी जगह है और आख़िरत में उन का ठिकाना दोज़ख़ है, जो बुरी जगह है। इसी को आख़िर में फ़रमाया:-

وما وهم النار، وليئس المصير،

### सहाबा-ए-किराम के दुश्मन

दुश्मनाने इस्लाम में कुछ ऐसे लोग इस्लाम के और अहले बैत की मुहब्बत के दावेदार हैं, जो न अल्लाह तआला से राज़ी हैं, न कुर्आन से, न अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से, न हज़रात सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) से, न हज़रात अहले बैत (रज़ि०) से। सूर: नूर में अल्लाह तआला ने हज़रात सहाबा (रज़ि०) से वादा फ़रमाया है कि अल्लाह तुम्हें ख़लीफ़ा बनाएगा और ज़मीन की सत्ता की नेअमत से नवाजेगा। तारीख़ जानने वाले जानते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में यह वादा पूरा हो गया।

मुसलमानों की सत्ता अरब और अज़म में फैलती गई। हज़रत अली (रज़ि०) भी ख़लीफ़ा राशिद थे, वह तीनों खुल्फ़ा के साथ एक जान और दो दिल होकर रहे, उन की इमामत में नमाज़ें पढ़ते रहे उन के मशवरों में शरीक़ रहे। फिर जब उन्हें ख़िलाफ़त सौंप दी गई तो उन्होंने यह नहीं फ़रमाया कि यह हज़रात खुल्फ़-ए-राशिदीन नहीं थे या ख़िलाफ़त के हक़ को छीनने वाले थे और मैं सब से पहले ख़िलाफ़त का हक़दार था। वह उन्हीं हज़रात के तरीक़े पर चलते रहे, उन के फ़तेह किये हुए मुमालिक को बाक़ी रखा और कुर्आन व हदीस के अनुसार ख़िलाफ़त अन्जाम दी। उन के बाद उन के बड़े साहबज़ादे हज़रत हसन (रज़ि०) ख़लीफ़ा बने, उन की शहादत पर ख़िलाफ़ते राशिदा के तीस साल पूरे हो गये थे जिसे रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने *الخلافة من بعدى ثلاثون سنة* फ़रमाया था। उसी के मुताबिक़ 'अहले सुन्नत वल् जमाअत' इन पाँचों हज़रात को खुल्फ़-ए-राशिदीन मानते हैं लेकिन ज़्यादातर ज़बानों पर चारों खुल्फ़ा के नाम आते हैं क्योंकि हज़रत हसन (रज़ि०) की ख़िलाफ़त सिर्फ़ चन्द माह की थी।

### रवाफ़िज़ (शियों) का अक़ीदा-

रवाफ़िज़ कुर्आन के भी इन्कारी हैं और हज़रत अली (रज़ि०) के अज़ीम मर्तब: के भी (जो उन के अक़ीदे में इमाम अव्वल हैं और मासूम हैं) उन को बुज़दिल बताते हैं और यूँ कहते हैं कि उन्होंने अपनी ख़िलाफ़त का ए़लान नहीं किया जिस के वह पहले हक़दार थे और जिस की उन के पास रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ से वसीयत थी, उन लोगों के अक़ीदे में इमाम अव्वल ने हक़ को छिपाया और अपने



से पहले तीनों खुल्फा के साथ मिल कर रहे और इस में उन्होंने तकय्या (वह राज जो दिल में रखा जाए और किसी के खौफ से जाहिर न किया जाए) कर लिया था। सब को मालूम है कि हज़रत इसन (रज़ि०) के बाद रवाफ़िज़ जिन हज़रत को इमाम मानते हैं उन में से किसी की ख़िलाफ़त कायम नहीं हुई।

अगर उन लोगों की बात मान ली जाए कि हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम खलीफा नहीं थे जिन का आयते शरीफ़ा में अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है तो कुर्आन मजीद का वादा सही साबित नहीं होता (अल् अयाजु बिल्लाह) उन के सामने जब यह बात आती है तो कह देते हैं कि यह वादा इमाम मेंहदी पर पूरा होगा।

झूठे का काम झूठ ही से चलता है। आयते शरीफ़ा में तो **منكم** है जिस में हज़रत सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को मुख़ातब फ़रमाया गया है। यह लोग **منكم** को नहीं देखते अपने गुमराही पर अड़े हैं।

याद रहे कुर्आन मजीद में और किसी जगह **الَّذِينَ آمَنُوا** और **عِبِلُوا الصّٰلِحٰتِ** के दर्मियान शब्द **منكم** वारिद नहीं हुआ। वादा-ए-ख़िलाफ़त के बयान में यह शब्द आया है, वादा-ए-ख़िलाफ़त के साथ ही उसी वक़्त अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों की तर्दीद फ़रमा दी। **فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَىٰ مَن كَذَبَ بِالْقُرْآنِ**

**नोट-** आख़िर में यह जो फ़रमाया है कि काफ़िरों के बारे में यह ख़याल न करो कि वह अल्लाह की गिरफ़्त से बच कर भाग जाएँगे। इस में वह सब काफ़िर दाख़िल हैं जो ज़माने नुज़ूल कुर्आन से लेकर आज तक इस्लाम और अहले इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं और अपनी बरतरी के लिए तद्बीरें करते हैं, वह इस दुनिया में भी तबाह होंगे और आख़िरत में भी दोज़ख़ में दाख़िल होंगे।





## आयत नं० 58 से 64 तक

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَ هُنَّ طَوْفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا بَلَغَ الْاطْفَالُ مِنْكُمْ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ بَكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَغْفِفْنَ حَيْرَ لَهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الْاِغْيِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْاِعْرَاجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَطَارِحَةً أَوْ صَدِيقَتِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۝ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةٌ طَيِّبَةٌ ۝ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوا ۝ إِنْ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۝ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ۝ إِنْ اللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَلْثُونَ مِنْكُمْ لَوْ أَدَّاءَ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرٍ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَلَا إِنَّ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۝ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ۝ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۝ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

### अनुवाद-

(58) ऐ ईमान वालो! जो तुम्हारी मिल्कियत में (गुलाम आदि) हों, और तुम लोगों के वे बच्चे जो अभी जवानी को नहीं पहुँचे, उनको चाहिए कि तीन वक्तों में तुमसे इजाज़त लेकर तुम्हारे पास आएँ फज्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और दोपहर को जबकि तुम कपड़े उतार कर रखते हो, और इशा की नमाज़ के बाद, यह तीन समय तुम्हारे लिए पर्दे के हैं, इनके अलावा दूसरे वक्तों में तुम पर न कोई पकड़ है और न उन पर, कि (किसी काम के लिए) एक दूसरे के पास आते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें स्पष्ट करता है, और अल्लाह खूब जानने वाला, हिकमत वाला है। (59) और जब तुम्हारे बच्चे जवानी को पहुँच जाएँ, तो वह भी उसी तरह इजाज़त लिया करें, जिस तरह उनसे पहले वाले इजाज़त लेते रहे हैं, इस तरह अल्लाह अपना हुक्म तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है, और अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है। (60) और वह बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, अगर अपने कपड़े (चादर) उतार कर रख दें, तो उन पर कोई पकड़ नहीं, जबकि वे अपनी ज़िन्त की नुमाइश करने वाली न हों, मगर उनके हक में यही है कि वे इससे बचें, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (61) न अन्धे पर कोई हरज है, और न लंगड़े पर कोई हरज है और न रोगी पर कोई हरज है, और न तुम्हारे लिए इस बात में कि तुम अपने घरों में खाओ, या अपने बापों के घरों में, या अपनी माँओं के घरों में, या अपने भाइयों के घरों में, या अपनी बहनों

के घरों में, या अपने चचाओं के घरों में, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामाओं के घरों में, या अपनी खालाओं के घरों में, या उन घरों में, जिनकी कुन्जिया तुम्हारे हाथ में हों, या अपने दोस्त के घरों में, तुम पर कोई हरज नहीं कि तुम सब मिल कर खाओ या अलग-अलग; फिर जब घरों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम किया करो, यह अल्लाह की ओर से मुबारक और पाकीज़ा (दुआ का) कलिमा है, इस तरह अल्लाह अपनी आयतें तुम पर खोलता है, ताकि तुम अक्ल से काम लो। (62) ईमान वाले तो वही हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर पूरा ईमान रखते हैं, और जब किसी सामूहिक मामले में रसूल के साथ होते हैं तो उस समय तक चले नहीं जाते हैं जब तक कि उससे इजाज़त न ले लें, जो लोग आप से इजाज़त माँगते हैं, वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखने वाले हैं अतः जब वे किसी अपनी ज़रूरत से इजाज़त माँगे तो जिसे आप चाहें इजाज़त दे दिया करें, और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगा करें, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला रहम वाला है। (63) (मोमिनो!) रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे का बुलाना न समझो, बेशक अल्लाह उन लोगों को खूब जानता है जो तुममें से ऐसे हैं, कि आड़ लेकर चुपके से खिसक जाते हैं, तो जो लोग उनके हुक्म को मानने से मुँह फेरते हैं, उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि वे किसी फितने का शिकार न हो जाएँ या दर्दनाक अज़ाब उनको पकड़ न ले। (64) सुन लो! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है, तुम जिस हाल में भी हो 'वह' उसे जानता है और जिस दिन लोग 'उसकी' ओर लौटाये जाएँगे, कि वह क्या कर के आये हैं, 'वह' उन्हें बता देगा, और अल्लाह तो हर चीज़ को जानता है।

## आयत नं० 58 से 64 तक की व्याख्या

58-59

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَوةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَوةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثَ عَوْرَاتٍ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَ هُنَّ طَوْفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا نَكَحَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

## तीन वक्तों में इजाज़त लेने का एहतिमाम

इसी सूर: नूर के चौथे रुकूअ में किसी के पास अन्दर जाने के लिए इजाज़त लेने और इजाज़त न मिलने पर वापस हो जाने का हुक्म है। यह हुक्म अजनबी के लिए है जिन का उस घर में रहने का तअल्लुक न हो, जिस में अन्दर जाने की इजाज़त तलब करना चाहते हों।

इन दो आयतों में उन करीबी और महरमों का हुक्म फ़रमाया है जो आमतौर से एक घर में रहते हैं और हर वक्त आते जाते हों और उन से औरतों को पर्दा करना भी वाजिब नहीं है। इन में उन बच्चों का हुक्म बयान फ़रमाया जो बालिग नहीं हुए और गुलामों का ज़िक्र है (जिन्हें कामकाज के लिए अपने

आका की खिद्मत के लिए बार-बार अन्दर आना जाना पड़ता है) उन के बारे में फ़रमाया कि यह लोग तीन वक्तों में तुम्हारे पास अन्दर आने के सिलसिले में इजाज़त लेने का ख़ास ध्यान रखें।

मतलब यह है कि तुम उन्हें यह तअलीम दो और उन्हें समझाओ और सिखाओ कि वह इन वक्तों में इजाज़त लेने का ख़ास ख़याल रखें।

### किसी के घर में तीन वक्तों में जाना मना है-

इन वक्तों में से पहला वक्त, नमाज़ फ़ज़्र से पहले और दूसरा दोपहर का वक्त है। जब आमतौर से लोग कुछ कपड़े उतार देते हैं और तीसरा वक्त नमाज़ अ़िशा के बाद का है। इन तीनों वक्तों के बारे में फ़रमाया कि **ثَلَاثَ عَوَاقِبَ لَكَ** यह तीनों तुम्हारे पर्दे के अवकात हैं क्योंकि इन वक्तों में आ़म आदत के मुताबिक़ तन्हाई होती है और इन्सान बेतकल्लुफ़ी के साथ आराम से रहना चाहता है।

तन्हाई में किसी वक्त वह अंग भी खुल जाते हैं जिन का ढाँके रखना ज़रूरी है और सोते वक्त ग़ैर ज़रूरी कपड़े तो उतार ही देते हैं और तन्हाई का मौक़ा पाकर कभी-कभी मियाँ-बीवी भी बेतकल्लुफ़ी के साथ एक दूसरे से करीब होते हैं। अगर आने वाला आज़ाद लड़का हो या गुलाम या लौंडी हो और अन्दर आने की इजाज़त न ले तो बाज़ मर्तब: मुम्किन है कि उन की नज़र किसी ऐसी हालत या किसी ऐसे अंग पर पड़ जाए जिस का देखना जायज़ नहीं है, बालिग़ गुलाम मर्द अपने आका के पास इन वक्तों में जाए तो वह भी इजाज़त ले यानी मर्द का मर्द से पर्दा नहीं है लेकिन इन वक्तों में कपड़े उतारे होने का सन्देह रहता है और बाज़ मर्तब: बेध्यानी में जिस्म खुल जाता है जिन का मर्द के सामने भी खोलना जायज़ नहीं है। इसलिए इन वक्तों में इजाज़त लेने का एहतिमाम करें।

‘मुअलिमुत्तन्ज़ील’ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक अन्सारी लड़के को जिस का नाम ‘मुदल्लिज’ था, हज़रत उमर (रज़ि०) को बुलाने के लिए भेजा, यह दोपहर का वक्त था। उस ने हज़रत उमर को ऐसी हालत में देख लिया जो उन्हें नागवार हुआ उस पर यह आयत नाज़िल हुई।

इर्शाद फ़रमाया कि इन वक्तों के अ़लावा अगर यह लोग बिला इजाज़त आ जाएँ तो इस में तुम पर या उन पर कोई इल्ज़ाम नहीं है। फिर उस की वजह बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि:-

**طُوفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ**

(यह लोग तुम्हारे पास आते जाते रहते हैं) चूँकि हर वक्त इजाज़त लेने में दुश्वारी है इसलिए इन वक्तों में बिला इजाज़त दाख़िल होने के लिए घर के लड़कों और गुलामों को इजाज़त दे दी गई। आख़िर में फ़रमाया:-

**كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ** अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ अहक़ाम बयान फ़रमाता है।  
**وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ** (और अल्लाह जानने वाला है हिक़मत वाला है।)

यह पहली आयत का विषय (Subject) था। दूसरी आयत में यह फ़रमाया कि जब लड़के बालिग़

(Mature) हो जाएँ जिन्हें बालिग होने से पहले इन तीन वक्तों के अलावा बिना इजाज़त अन्दर आने की इजाज़त थी। अब बालिग (वयस्क) होने के बाद उसी तरह इजाज़त लें जैसे उन से पहले लोग इजाज़त लेते रहे, यह खयाल न करें कि कल तक तो हम यूँ ही चले जाते थे अब इजाज़त क्यों लें?

كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكَ آيَاتِهِ (अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए साफ-साफ अहकाम बयान फरमाता है।)

- وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।)

**नोट-** पहली आयत में जो तीन वक्तों में इजाज़त लेने का हुक्म फरमाया है, उस के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फरमाया कि तीन आयात ऐसी हैं जिन पर लोगों ने अमल छोड़ रखा है। एक तो यही आयत وَإِنَّا حَصَرْنَا الْقِسْمَةَ الْاُولَى الْقُرْبَى और दूसरे सूर: निसा की आयत اِنْ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ اتَّفَقْتُمْ और तीसरी सूर: हुजरात की आयत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने यह भी फरमाया कि (अक्सर लोग इस आयत पर अमल नहीं करते) (गोया कि) इस पर ईमान ही नहीं लाए और मैं तो अपनी उस बांदी को भी हुक्म देता हूँ कि मेरे पास इजाज़त लेकर आए। (इब्ने कसीर पेज नं० 303 भाग 3)

**60** وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۚ وَاَنْ يَسْتَغْفِنَ خَيْرٌ لَّهِنَّ ۗ وَاللَّهُ سَبِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

## बूढ़ी औरतों के लिए गुन्जाइश है

**القواعد** इस से बूढ़ी औरतें मुराद हैं जो घर में बैठ चुकी हैं, न निकाह के लायक हैं, न उन्हें निकाह की चाहत है, न किसी मर्द को उन से निकाह करने की इच्छा है। उन औरतों के बारे में फरमाया कि उन को इस बातों में कोई गुनाह नहीं कि वह अपने जायद कपड़े जिन से चेहरा छिपा रहता है, चादर वगैरह उतार कर रख दें यानी गैर महरम के सामने चेहरा खोल कर आ जाएँ बशर्ते कि बनाव श्रंगार का इन्हें न करें।

मतलब यह है कि उन का हुक्म उन औरतों का सा हुक्म नहीं है। अगर चेहरा और हथेलियाँ गैर महरम के सामने खोल दें तो इस में गुनाह नहीं है। अलबत्ता जिस्म के दूसरे हिस्सों को न खोलें और यह जो उन्हें चेहरा और हथेलियाँ खोलने की इजाज़त दी गई है यह जायज़ होने की हद तक है। बेहतर उन के लिए भी यही है कि एहतियात करें और नामहरमों के सामने चेहरा खोलने से भी एहतियात करें।

जब बूढ़ी औरतों को भी इजाज़त देने के बावजूद फरमाया कि उन को भी एहतियात करना बेहतर है कि चेहरा खोलकर गैर महरमों के सामने न आएँ तो इसी से समझ लिया जाए कि जवान औरतों को गैर महरमों के सामने चेहरा खोल कर आना कैसे जायज़ होगा। **هذا في القواعد فكيف في الكواعب**

(रुहुल मअनी पेज नं० 217 भाग 18)

(और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।) وَاللَّهُ سَبِيْعٌ عَلِيْمٌ

61

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ  
 بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ  
 أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْهُنَّ مَفَاتِحُهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ  
 جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ  
 مُبَارَكَةٌ طَيِّبَةٌ كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

## रिश्तेदारों के घरों में खाने-पीने की इजाज़त

अल्लामा बग़वी (रह०) ने 'मुआलिमुत्तन्ज़ील' पेज नं० 358 भाग 3 में इस आयत का सबबे नुज़ूल बताते हुए मुख़्तलिफ़ (Different) अक़वाल लिखे हैं। हज़रत सईद बिन जुबैर से नक़ल किया है कि लंगड़े, अन्धे और बीमार लोग तन्दुरुस्त आदमियों के साथ खाने से यह समझते हुए परहेज़ करते थे कि लोग हम से धिन करते हैं या यह कि कोई शख्स यूँ समझ ले कि अन्धा ज़्यादा खा गया है यह कि लंगड़े के बारे में यह ख़याल करने लगे कि उस ने दो आदमियों की जगह घेर ली। इस पर यह आयत नाज़िल हुई और हज़रत मुजाहिद ने यूँ फ़रमाया कि इस आयत में जिन लोगों का ज़िक्र है उन के यहाँ खाने की इजाज़त देने के लिए आयत का नुज़ूल हुआ।

सबबे नुज़ूल जो भी हो आयते करीमा में आपस में रिश्तेदारी की बुनियाद एक दूसरे के घर में शरई उसूल के मुताबिक़ खाने की इजाज़त दी है, चूँकि आपस की रिश्तेदारी और दोस्ती की वजह से एक दूसरे का खाना खाना और लेना देना नागवार नहीं होता, दिल की खुशी से सब खिलाने पिलाते हैं बल्कि आपस में एक दूसरे के यहाँ न खाएँ तो इस से नागवारी होती है, इसलिए आयते करीमा में बेतक़ल्लुफ़ खाने की इजाज़त फ़रमा दी।

जब हर शख्स दिल से चाहता है और हालात व मामलात इस बात को बताते हैं कि अपने रिश्तेदार की कोई चीज़ खा ली चाहे इजाज़त नहीं ली तब भी उसे नागवार नहीं तो बिला इजाज़त भी खा सकते हैं। अपने घरों से खाने में और जिन कमज़ोरों का ज़िक्र है उन को साथ खिलाने में कोई हर्ज और तंगी की बात नहीं है और उन कमज़ोरों को भी साथ खाने में कोई तंगी महसूस नहीं करनी चाहिए और बाज़ मुफ़स्सरीन ने **مِنْ بُيُوتِكُمْ** से औलाद के घर मुराद लिए हैं और मतलब यह बताया है कि तुम अपनी औलाद के घरों से खाओ, इस में कोई हर्ज नहीं। (कमा फ़िल् जलालैन)

अगर तुम अपने बापों और माओं या भाईयों या बहनों या चचाओं या फूफ़ियों या ख़ालाओं के घरों से खाओ तो इस में कोई हर्ज नहीं है। (अगर बहन या फूफी या ख़ाला का अपना ज़ाती माल है तो इस में बिला तक़ल्लुफ़ खा लेने में कोई हर्ज नहीं। हाँ, अगर उन के शौहरों का माल हो और वह दिल से राज़ी न हों तो उस के खाने में एह़तियात की जाए।)

रिश्तेदारियों को बयान फ़रमाने के बाद **أَوْ مَا مَلَكَتْهُنَّ مَفَاتِحُهُ** फ़रमाया। इस के बारे में हज़रत इब्ने



अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से वह लोग मुराद हैं जो किसी के माल की हिफ़ाज़त के वकील और ज़िम्मेदार हैं। किसी मालिक के मवेशी चराने वाले और बाग़ों की देखभाल करने वाले अगर इस माल में से खा लें तो इस की इजाज़त है, अल्बत्ता साथ न ले जाएँ और ज़ख़ीरा न बनाएँ बक़द्रे ज़रूरत खा लें।

कुछ हज़रात ने फ़रमाया इस से मम्लूक गुलाम मुराद हैं क्योंकि गुलाम के पास जो माल है वह आका की मिल्कियत है, इसलिए वह इस में से खा सकता है।

इस के बाद फ़रमाया **أَوْصِدِيكُمْ** (यानी अपने बेतकल्लुफ़ दोस्तों के घर से भी खा पी सकते हो) दोस्ती सच्ची और पक्की हो सिर्फ़ लेने ही का दोस्त न हो दोस्त के खाने पर भी दिल से खुश होता हो

**قال صاحب الروح ورفع الحرج من بيت الصديق لانه ارضى بالتبسط واسربه من كثير من ذوى القربة**

फिर फ़रमाया **لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جِيبًا أَوْ أَشْتَاتًا**

(तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इकट्ठे होकर खाओ या अलग-अलग।)

इस के बारे में 'मुअलिमुत्तन्ज़ील' में लिखा है कि अन्सार में से कुछ हज़रात ऐसे थे जिन्होंने यह तय कर लिया था कि जब कोई मेहमान साथ होगा तब ही खाएँगे। मेहमान नहीं मिलता था तो तक्लीफ़ उठाते थे, भूखे रहते थे, लिहाज़ा उन को इजाज़त दे दी गई कि चाहे इकट्ठे खाओ (मेहमान मिल जाए तो उस के साथ खा लो और चाहे तन्हा खा लो।)

इस के बाद फ़रमाया:-

**فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةٌ طَيِّبَةٌ** (सो जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने नफ़्सों को सलाम करो जो अल्लाह की तरफ़ से मुकरर है। दुआ माँगने के तौर पर जो मुबारक है पाकीज़ा है उस में यह इर्शाद फ़रमाया है कि जब तुम उन घरों में दाख़िल हो जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ तो अपने नफ़्सों को सलाम करो। इस का मतलब यह है कि वहाँ जो लोग मौजूद हैं उन को सलाम करो, चूँकि रिश्तेदार और दोस्त सब मिलकर एक ही जान हैं इसलिए **على اهلها** के बजाय **على انفسكم** फ़रमाया। इस में एक बात यह भी है कि जब तुम सलाम करोगे तो हाज़िरीन जवाब देंगे, इस तरह तुम्हारा सलाम करना अपने लिए सलामती की दुआ कराने का ज़रिया बन जाएगा। (साहिबे अल् रुह)

'हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु' कहते हैं कि एक शख्स ने आप (सल्ल०) से पूछा कि कौन सा इस्लाम अच्छा है? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "खाना खिलाना और सलाम कहना जिसे तुम पहचानते हो और जिसे तुम न पहचानते हो।" (बुख़ारी)

यह सलाम अल्लाह तआला की तरफ़ से मशरूअ है। दुआ करने के तौर पर मशरूअ किया गया है फिर यह मुबारक भी है क्योंकि इस में अज़्र है बरकतें भी हैं और यह अच्छी आदत भी है, जिस से सुनने वाला खुश होता है और अपना दिल भी खुश होता है। जब कहीं जाएँ जहाँ कहीं मुसलमान मौजूद हों या रास्ते में कोई मुसलमान मिल जाए तो 'अस्सलामु अलैकुम' कहे और जिसे सलाम किया वह जवाब दे।

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब तू अपने घर वालों पर दाख़िल हो तो सलाम कर, इस में तेरे लिए और तेरे घरवालों के लिए बरकत होगी।"

(मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 399)



हज़रत क़तादा से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “जब तुम किसी घर में दाख़िल हो तो उस घर के रहने वालों को सलाम करो और जब वहाँ से निकलो तो घरवालों को सलाम के साथ रुख़सत करो”। (मिशकातुल मसाबीह पेज नं० 399)

सलाम के मसायल हम सूर: निसा की आयते करीमा **وَالْحَيِّينَ بِحَسَنَةٍ** में बयान कर चुके हैं।

आख़िर में फ़रमाया **كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ** इसी तरह अल्लाह तआला तुम से अपने अहक़ाम बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझ जाओ।)

**62** **إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوا ۚ**  
**إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَن**  
**شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝**

## अहले ईमान रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त लेकर जाते

‘दुर्रे मन्सूर’ पेज नं० 60 भाग 5 में लिखा है कि ग़ज़्व-ए-अहज़ाब (जिसे ग़ज़्व-ए-ख़न्दक भी कहते हैं) के मौके पर कुरैश मक्का अबू सुफ़यान की कयादत (नेतृत्व) में मदीना मुनव्वरह की आबादी के करीब ‘रूमा’ नामी स्थान के पास ठहर गये और कबीला बनी ग़त्फ़ान के लोग आए तो यह लोग उहद की तरफ़ आकर ठहर गये। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उन के आमद की ख़बर हो गई। इस मौके पर ख़न्दक पहले ही से खोदी जा चुकी थी, जिस में मुसलमानों ने ख़ूब खुशी से हिस्सा लिया, लेकिन मुनाफ़िकीन अब्बल तो देर में आते थे और जब आते तो थोड़ा बहुत काम कर देते थे, फिर जब जाना होता तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के इल्म और इजाज़त के बग़ैर चुपके से खिसक जाते थे और मुसलमानों का यह हाल था कि जब कोई ज़रूरत पेश आती तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त लेकर जाते थे, फिर जब ज़रूरत पूरी हो जाती तो वापस आ जाते थे।

अल्लाह तआला ने ऊपर की आयत में अहले ईमान की ख़ूबी बयान फ़रमाई और मुनाफ़िकीन की दुनिया साज़ी और बेवफ़ाई का ज़िक्र फ़रमाया, चूँकि मुनाफ़िकीन के दिलों में ईमान ही नहीं था दुनियासाज़ी और दिखावे के लिए अपना मोमिन होना ज़ाहिर करते थे, इसलिए उन से ऐसी चीज़ें ज़ाहिर होती रहती थीं जो यह बता देती थीं कि यह लोग मोमिन नहीं हैं, यह लोग नमाज़ भी झटपट पढ़ते थे और अ़िशा और फ़ज़्र की ज़माज़ों में हाज़िर होने में जान चुराते थे, जो नमाज़ थी वह भी दिखावे की नमाज़ थी, जिहाद में जाते थे तो वहाँ भी शरारत करते थे जिस का ज़िक्र सूर: तौब: में गुज़र चुका है। जिस का ज़ाहिर (External) बातिन (Internal) एक न हो वह कहाँ तक ज़ाहिरी चीज़ पर कायम रह सकता है, कहीं न कहीं जाकर यह बात खुल ही जाती है कि यह दिल से मोमिन नहीं है।

قال صاحب الروح والتسلل الخروج من البيت على التدريج والخفية وقد للتحقيق

وقوله تعالى لو اذاي ملاودة بان يستتر بعضهم ببعض حتى يخرج

सूर: तौब: में भी मुनाफ़िकीन की हरकत को बयान फरमाया है-

وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرَأَوْنَ مِنْ أَحَدٍ مِّنْكُمْ أَنُصْرَفُوا أَصْرَفَ اللَّهُ فُلُوقَهُمْ  
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ

और जब कोई सूर: नाज़िल होती तो मुनाफ़िकीन आपस में एक दूसरे को देखते कि किसी ने देखा तो नहीं फिर चले जाते, अल्लाह ने उन के दिलों को फेर दिया इस वजह से कि यह समझते नहीं।

हज़रत ईमाम अबूदाऊद ने अपनी किताब मुरासिल में लिखा है कि जब हज़रात सहाबा-ए-किराम रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिद्मत में हाज़िर होते और किसी को नाक से खून आता या किसी ज़रूरत से जाना होता तो वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की तरफ अंगूठे के पास वाली उंगली से इशारा कर देता था, आप भी हाथ के इशारे से इजाज़त दे देते थे।

मुनाफ़िकीन का यह हाल था कि खुत्व: सुनना और मजलिस में बैठना उन के लिए भारी पड़ता था। जब मुसलमानों में से कोई शख्स बाहर जाने के लिए आप से इजाज़त तलब करता तो मुनाफ़िक यह करते कि उस मुसलमान के पास खड़े होकर उसे आड़ बना कर निकल जाते थे, इस पर अल्लाह तआला ने आयते करीमा **قَدْ عَلِمَ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ** (आखिर तक) नाज़िल फरमाई। आयात का मतलब आम है, मुसलमानों की तअरीफ़ भी फरमाई और इस में यह भी फरमा दिया कि अहले ईमान का यह तरीका होना चाहिए कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) किसी ज़रूरत या किसी मश्वरे के लिए बुलाएँ तो हाज़िर हो जाएँ और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के बुलावे को ऐसा न समझें जैसा कि आपस के बुलावे को समझते हैं (चाहे गये चाहे न गये) आपके बुलाने पर फौरन आ जाए और जब तक आप मजलिस खत्म न करें जम कर बैठे रहें। अगर मजलिस के दर्मियान से जाना हो तो आप से इजाज़त लेकर जाएँ, मुनाफ़िकों की तरह चुपके से न जाएँ।

अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया कि जब अहले ईमान आप से चले जाने की इजाज़त माँगे तो आप जिसे चाहें इजाज़त दे दें, ज़रूरी नहीं कि सभी को इजाज़त दें। मुम्किन है कि जिस ज़रूरत के पेशेनज़र इजाज़त माँग रहे हैं वह वाकई ज़रूरी न हो या ज़रूरी तो हो लेकिन मजलिस छोड़कर चले जाने पर इस से ज़्यादा किसी नुकसान का ख़तरा हो, इसलिए इजाज़त देना, न देना हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर छोड़ दिया गया।

साथ ही **وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ** भी फरमाया कि आप उन के लिए इस्तिफ़ार भी करें क्योंकि जिस दीनी ज़रूरत के लिए जमा किया गया है उसे छोड़ कर जाना अगर उज़्र ही हो तो उस में अपनी ज़ाती ज़रूरत को दीन पर मुक़द्दम रखने की एक सूरत निकलती है, इस में अगरचे गुनाह न हो मगर कोताही का शायबा है और यह भी मुम्किन है कि जिस उज़्र को क़वी (मज़बूत) समझकर इजाज़त ली उसे क़वी समझने में ही ख़ता इज्तिहादी (रिसर्च की ग़लती) हो गई हो, लिहाज़ा आप इजाज़त देने के साथ उन के लिए इस्तिफ़ार भी करें। **إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ** (बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

63

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَلْثُونَ مِنْكُمْ  
لِوَادِّءِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ ۚ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

इस आयत का एक मतलब तो मुफ़स्सरीन-ए-किराम ने यह लिया है जो ऊपर ज़िक्र हुआ कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) बुलाएँ तो हुक्म मानना वाजिब है, ज़रूर हाज़िरे ख़िद्मत हो जाओ। आपके बुलाने को ऐसा न समझो जैसा आपस में एक दूसरे के लिए बुलावे को समझते हों कि जिस बुलावे को चाहा अहमियत दी और जिस को चाहा नज़र अन्दाज़ कर दिया।

(अगरचे इस में भी हुक्क मुस्लिम में यह बताया कि **ويجيبه اذا دعاه** लेकिन इस दर्जे की ताकीद नहीं है जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बुलावे की अहमियत है, जिस की ख़िलाफ़वर्जी हराम है।)

और कुछ हज़रात ने यूँ फ़रमाया है कि **دعاء الرسول** में मतलब यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कुछ अर्ज़ करना हो, कोई बात करनी हो तो अदब के साथ। या रसूलुल्लाह! या नबी अल्लाह! कहो या मुहम्मद केवल न कहो, बात करने में ऐसा तरीका अख़्तियार न करो जिस से आपको तकलीफ़ पहुँचे। इस को सूर: हुजरात में यूँ बयान फ़रमाया:-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ  
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝

(ऐ ईमान वालों! अपनी आवाज़ें नबी (सल्ल०) की आवाज़ पर बुलन्द मत करो और बात करने में इस तरह ज़ोर की आवाज़ से न बोलो जैसे तुम आपस में एक दूसरे की बात पर ज़ोर से आवाज़ निकालते हो, ऐसा न हो कि तुम्हारे अमाल बेकार हो जाएँ और तुम्हें पता भी न चले।)

फिर फ़रमाया **فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ** (जो लोग रसूल के हुक्म की मुख़ालिफ़त करते हैं वह इस बात से डरें कि उन्हें कोई फ़ित्ना या दर्दनाक अज़ाब पहुँच जाए।)

फ़ित्ना से दुनिया में मुसीबत और मशक्कत में पड़ना मुराद है और दर्दनाक अज़ाब से आख़िरत का अज़ाब मुराद है। इस में मुनाफ़िकीन को ख़बरदार फ़रमाया गया है कि तुम जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हुक्म की मुख़ालिफ़त करते हो और चुपके से मजलिसों से खिसक जाते हो उस को मामूली बात न समझना। इस की वजह से दुनिया में भी अज़ाब में फंस हो सकते हो और आख़िरत में तो हर काफ़िर के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

**أَمْرِهِ** रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुक्म देना हकीकत में अल्लाह तआला का ही हुक्म देना था, इसलिए सूर: निसा में **مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ** फ़रमाया है।

**नोट-** हज़रात फुक्हा-ए-किराम ने फ़रमाया कि आयते करीमा **فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ** से यह साबित हो रहा है कि यह हुक्म वाजिब के लिए है क्योंकि वाजिब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी ही अज़ाब की वज़ीद हो सकती है। यह कलाम मुनाफ़िकीन के हुक्म न मानने के बारे में है, लेकिन शब्द का ज़ाहिर हर ख़िलाफ़वर्जी करने वाले को शामिल है। आम बात तो यह है कि हुक्म वज़ूब

के लिए होता है लेकिन जहाँ कहीं वजूब के लिए नहीं है वहाँ सुन्नत या मुस्तहब होने का पता क़रायन (Back Ground) से या बात के अन्दाज़ से मालूम हो जाता है।

बहुत से लोग मुसलमान होने के दोवदार हैं, लेकिन जब अल्लाह तआला का और उस के रसूल (सल्ल०) का हुक्म सामने आता है तो हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं, नफ़्स के तकाज़ों और बीवी बच्चों के मुतालिबात और रस्म व रिवाज की पाबन्दी और दुनिया की वजह से अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्ल०) के अहक़ाम की जानबूझकर ख़िलाफ़वर्ज़ी कर जाते हैं और कुछ तो ज़बानी कट्टू हुज्जती पर उतर आते हैं। जैसे- दाढ़ी मूँडने और काटने को, रिश्त के लेन-देन को और ख़यानतों का अन्दाज़ा लगा लें, फिर देखें कि ज़िन्दगी में कहाँ-कहाँ अहक़ामे शरअिया की ख़िलाफ़वर्ज़ी हो रही है और यह भी समझ लें कि उन की ख़िलाफ़वर्ज़ी पर सख़्त वअ़ीद है। हर शख़्स अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा ले और देखे कि कहाँ-कहाँ और किस-किस अमल से आख़िरत की बर्बादी हो रही है।

64

أَلَا إِنَّ اللَّهَ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُجْعَلُونَ إِلَيْهِ فَيُنْزِلُهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

यह सूर: नूर की आख़िरी आयत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही की मख़्लूक है और उसी के अधीन है, उसे अख़्तियार है कि जो चाहे हुक्म दे। कोई शख़्स कुछ भी करे अल्लाह तआला को सब का हाल मालूम है, क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो सब बता देगा, कोई चीज़ और कोई अमल उस के इल्म से बाहर नहीं लिहाज़ा सब फ़रमाँबरदारी करें और आख़िरत की पकड़ से बचें।



(भाग-25)

सूर-ए-फुरकान

(सूर: नं.25)

## तफ़्सीर सूरः फुरक़ान

**नाम-** इस सूरः में 'फुरक़ान' का शब्द तीन बार आया है, जो कुर्आन-ए-करीम की अहम सिफ़त (गुण) है। इसीलिए इस का यही नाम रख दिया गया है।

**ज़माना नुज़ूल-** अक्सर अहले इल्म के नज़्दीक यह सूरः मक्की दौर में नाज़िल हुई थी। 'कुर्तुबी' ने 'क़तादा' और 'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' के हवाले से आयात नं० (68) से (70) तक को मदनी बताया है।

मक्की दौर की सूरतों की तरह इस में भी कुर्आने करीम, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नुबूव्वत और दीन-ए-इस्लाम की सच्चाई से सम्बन्धित कुप्फ़ारे मक्का के शुब्हात को रद्द किया है और उन्हें ईमान व इस्लाम की दअवत दी गई है।





## आयत नं० 1 से 16 तक

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۝ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدْ رَاهُ تَقْدِيرًا ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَهُ يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَوَةً وَلَا نُشُورًا ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ۝ وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَنْشِئُ فِي الْأَسْوَاقِ ۚ بَلْ أَنْزَلَ إِلَيْهِ الْمَلِكُ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۝ أَوْ يُلْقَى إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مُنْجُورًا ۝ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ ذَلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ وَيَجْعَلُ لَكَ فُصُورًا ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝ إِذَا رَأَوْهُم مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَبَعُوا لَهَا تَغْيِيلًا وَرَفِيرًا ۝ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ۝ قُلْ أَذِلَّةٌ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ۝ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۖ كَانَ عَلَى رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُورًا ۝

### अनुवाद-

① 'वह' बड़ा ही बरकत वाला है जिसने फुरकान (सत्य और असत्य में अन्तर करने वाली) अपने बन्दे पर उतारा, ताकि वह सारे संसार के लिए चेतावनी (देने वाला) हो। ② 'वह' जिसके कब्जे में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, और न तो 'उसने' अपने लिए औलाद बनाई, और न 'उसकी' बादशाही में कोई उसका साझीदार है; और 'उसने' हर चीज़ को पैदा किया, फिर उसको ठीक अन्दाज़े पर रखा। ③ और उन्होंने 'उससे' हट कर ऐसे मअबूद (उपास्य) बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वे खुद पैदा किये जाते हैं। उन्हें न तो अपने नुक़सान का अधिकार है, और न फ़ायदे का, और न उन्हें मौत का अधिकार है और न ज़िन्दगी का और न (मरने के बाद) उठ खड़े होने का। ④ और जिन लोगों ने इन्कार किया, कहते हैं, "यह तो बस मन गढ़त बातें हैं, जो इसने खुद ही गढ़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने (इस काम में) इसकी मदद की है," तो ये लोग जुल्म और झूठ ही पर (उतर आए) हैं। ⑤ और कहते हैं, "यह पहले लोगों के किस्से हैं, जो इस व्यक्ति ने लिखवाये हैं, तो वह उसको सुबह और शाम पढ़ कर सुनाई जाती हैं।" ⑥ कह दीजिए, "इसे उतारा है 'उसने' जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है, बेशक 'वह' बहुत माफ़ करने वाला, रहम वाला है।" ⑦ और कहते हैं, "यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, इसकी ओर कोई फ़रिश्ता क्यों न भेजा गया कि इसके साथ रह कर चेतावनी देता; ⑧ या इसकी ओर कोई खज़ाना उतार दिया जाता, या इसके पास कोई बाग़ होता, कि उसमें से यह खाता।" और इन ज़ालिमों का कहना है, "तुम लोग तो बस एक जादू किये हुए व्यक्ति के पीछे

चल रहे हो।” ⑨ देखो! यह तुम पर कैसी-कैसी मिसालें दे रहे हैं, तो यह भटक गये हैं, अब कोई राह नहीं पा सकते! ⑩ बड़ा बरकत वाला है ‘वह’, जो अगर चाहे तो तुम्हारे लिए इससे कहीं ज्यादा (चीजें) बना दे, ऐसे बाग, जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हारे लिए बहुत से महल तैयार कर दे। ⑪ (नहीं,) बल्कि यह लोग तो क़ियामत को झुठलाते हैं, और जो उस घड़ी को झुठला दे, उसके लिए ‘हमने’ दहकती आग तैयार कर रखी है; ⑫ जब वह उनको दूर से देखेगी, तो यह उसके जोश (ग़ज़ब) और उसके चीखने चिल्लाने की आवाज़ को सुनेंगे; ⑬ और जब वे उसके किसी तंग जगह में जकड़े हुए डाले जाएंगे, तो वहाँ मौत को पुकारेंगे; ⑭ “आज एक ही मौत को न पुकारो, बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो!” ⑮ कह दीजिए, “यह बेहतर है या हमेशा-हमेश की जन्नत, जिसका वादा परहेज़गारों से किया गया है, यह उनका बदला और रहने का ठिकाना होगा।” ⑯ उसमें उनके लिए वह सब कुछ होगा जो चाहेंगे, उसमें हमेशा रहेंगे, और यह वादा तुम्हारे रब के ज़िम्मे ऐसा है जो माँगने के लायक है।

## आयत नं० 1 से 16 तक की व्याख्या

1

كَذَّبَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۝

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर कुआने करीम को नाज़िल कर के तमाम इन्सान व जिन्नात के लिए अपनी रहमतों, बरकतों और भलाईयों को आम कर दिया है। इस आयते करीमा में उन्हीं बरकतों और भलाईयों की तरफ़ इशारा कर के अल्लाह तआला ने अपनी ज़ाते बरहक की तअरीफ़ बयान किया है कि उस की भलाईयाँ और बरकतें इतनी ज्यादा और आम हैं कि कायनात की हर चीज़ पर छा गई हैं और वह ज़ात यक्ता, अपनी तमाम सिफ़ात और कामों में सब से बुलंद व आला है।

यह कुआन हक़ व बातिल (झूठ) तौहीद व शिर्क और अद्ल व जुल्म के दर्मियान फर्क करता है। इसे अल्लाह ने अपने बन्दे और रसूल मुहम्मद (सल्ल०) पर इसलिए नाज़िल किया है ताकि वह इस के ज़रिये तमाम इन्स व जिन्न को कुफ़्र व शिर्क के बुरे अन्जाम से डराए।

यह आयत इस बात की खुली दलील है कि नबी करीम (सल्ल०) तमाम जिन्न व इन्स के लिए पैग़म्बर बनाकर भेजे गए थे। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: अअराफ़ आयत नं० (158) में फ़रमाया है

“आप कह दीजिए ऐ लोगों! मैं बेशक तुम सब के लिए अल्लाह का रसूल बनाकर भेजा गया हूँ” और आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं सुख़ और काले तमाम लोगों के लिए नबी बनाकर भेजा गया हूँ। (मुस्लिम)

कुआन करीम जैसी अज़ीम नेअमत नाज़िल करने पर अल्लाह तआला ने अपनी तअरीफ़ सूर: कहफ़ की आयत नं० (1/2) में भी फ़रमाई है:-

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لِكَلِمَةٍ عَوْلاً أَلَيْسَ لِلَّهِ الْخَلْقُ كُلُّهُ أَلَوْماً ۚ فَيُذَكِّرُ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ إِنَّهُمْ أَجْرًا حَسَبًا ۝

“तमाम तअरीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे पर यह कुर्आन नाज़िल किया और इस में कोई कमी नहीं रहने दी, बल्कि हर तरह से ठीक ठाक रखा ताकि अपने पास की सख़्त सज़ा से होशियार कर दे और उन मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं खुशख़बरी दे दे कि उन के लिए बेहतरीन बदला है”।

**2** **إِلَّٰهِ لِي مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَخْزَ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِی الْمَلٰٓئِكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَرًا تَقْدِیْرًا ۝**

यानी हर चीज़ को एक खास अन्दाज़ा में रखा कि उस से वही खास अमल ज़ाहिर होते हैं जिन के लिए पैदा की गई है। अपने दायरे से बाहर क़दम नहीं निकाल सकती, न अपने हुदूद (सीमा) में अमल व तसरूफ़ करने से बेबस रहती है। हर चीज़ को ऐसा मापतौल कर पैदा फ़रमाया कि उस की बनावट के लिहाज़ से थोड़ी भी कमीबेशी या उंगली रखने की गुन्जाइश नहीं छोड़ी। बड़े-बड़े साइंसदाँ हिकमत के दरिया में गोता लगाते हैं और आख़िरकार उन को यही कहना पड़ता है:-

“مُنْعَ اللّٰهِ الَّذِیْ اَتَقَنَ كُلَّ شَیْءٍ ۝ اَوْ تَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِیْنَ”

**3** **وَاتَّخَذُوا مِنْ دُوْنِہٖ اِلٰہًا لَا یَخْلُقُوْنَ شَیْئًا وَهُمْ یُخْلَقُوْنَ وَلَا یَمْلِكُوْنَ اَنْفُسَہِمۡ ضَرًا وَلَا نَفْعًا وَلَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَلَا حَیٰوًا وَلَا نَشُوْرًا ۝**

यानी किस तरह जुल्म, तअज़्जुब व हैरत का मक़ाम है कि ऐसे क़ादिर ए-मुत्तलक की ज़बरदस्त हस्ती को काफ़ी न समझ कर दूसरे मअबूद (उपास्य) और हाकिम बना लिए जो गोया खुदा की हुकूमत में हिस्सेदार हैं, हालांकि उन बेचारों का खुद अपना वजूद भी अपने घर का नहीं, न वह एक कण के पैदा करने का अख़्तियार रखते हैं, न मारना जिलाना उन के कब्ज़े में है, न अपने अख़्तियार से किसी को जरा सा नफ़ा या नुक़सान पहुँचा सकते हैं, बल्कि खुद अपनी ज़ात के लिए भी ज़रह बराबर फ़ायदा हासिल करने या नुक़सान से महफूज़ (सुरक्षित) रहने की कुदरत नहीं रखते। ऐसे बेबस मअबूद (उपास्य) हस्तियों को खुदा का शरीक ठहराना कितनी बड़ी बेवकूफी और बेहयाई है। (रब्ब) यह तो कुर्आन नाज़िल करने वाले के गुणों का ज़िक्र था और उस से सम्बन्धित मुशिरकीन जो हरकत कर रहे थे उस की तर्दीद है। आगे खुद कुर्आन और हामिले कुर्आन की निस्वत नुक्ताचीनियों का जवाब है।

यानी यह सब कहने की बातें हैं कि कुर्आन अल्लाह की किताब है। मअज़ल्लाह मुहम्मद ने चन्द यहूदियों की मदद से एक कलाम तैयार कर लिया और उस को झूठ मूठ खुदा की तरफ़ मन्सूब कर दिया, फिर उन के साथी उस का प्रचार करने लगे।

**4** **وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا اِنْ هٰذَا اِلَّا فِتْنَةٌ وَّاَعَانَتْ عَلَیْہِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَاءَ وَظَلَمًا ۚ وَرُوْا ۝**

यानी इस से बढ़कर जुल्म और झूठ क्या होगा कि ऐसे कलाम और किताब हकीम को जिसकी अज़मत व सदाक़त सूरज से ज़्यादा रौशन है उसे झूठा कहा जाए। क्या चन्द यहूदी गुलामों की मदद से ऐसा कलाम बनाया जा सकता है जिसके मुक़ाबिले से तमाम दुनिया के बड़े बड़े साहित्यकार, आलिम व

हकीम बल्कि जिन्न व इन्स हमेशा के लिए बेबस रह जाएँ और जिस के उलूम की थोड़ी सी झलक बड़े-बड़े दिमाग की आँखों को बेनूर कर दे?

**5**

وَقَالُوا أَأَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

वह कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अहले किताब से कुछ किस्से कहानियाँ नोट कर ली हैं या किसी से नोट करा ली हैं, वही उन के सामने पढ़ी और रटी जाती हैं। नये-नये तरीके का ही उलट-फेर रहता है और कुछ भी नहीं।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं कि “पहले तो नमाज़ के दो वक़्त मुक़रर थे सुबह और शाम। मुसलमान रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास जमा होते, जो नई आयत उतरती उसे लिख लेते। जिसे काफ़िर इस तरह कहते”।

**6**

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

यानी किताब खुद फ़रमा रही है कि वह किसी एक इन्सान या कमेटी की बनाई हुई नहीं बल्कि उस खुदा की ओर से उतारी हुई है जिसके इल्म से ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ बाहर नहीं हो सकती। इस कलाम की मोअजिज़ाना फ़साहत व बलागत, उलूम व मआरिफ़, गैबी खबरें, अहक़ाम व क़वानीन और वह छुपे हुए क़वानीन जिन की तह तक तौफ़ीके इलाही के बिना रसाई नहीं हो सकती, साफ़ ज़ाहिर करते हैं कि यह किसी महदूद इल्म वाले आदमी या साज़िशी जमाअत का कलाम नहीं।

यानी अपनी मेहरबानी से ही यह कुर्आन उतारा, फिर जो लोग ऐसी रौशन हकीक़त के इन्कारी हैं बावजूद उन के ज़रायम का तफ़सीली इल्म रखने की सज़ा नहीं देता। यह भी उस की बख़्शिश और मेहरबानी ही का परतौ है।

**7**

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَنْشِئُ فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ

مَعَهُ نَذِيرًا ۝

यानी जो हमारी तरह खाना खाए और हमारी तरह ख़रीद व फ़रोख़्त के लिए बाज़ारों में जाए तो हम में उस में फ़र्क़ क्या रहा? अगर वाकई रसूल है तो चाहिए था कि फ़रिशतों की तरह खाने-पीने और रोज़ी की चीज़ों से दूर होता।

**8**

أَوْ يُنْفِثُ إِلَيْهِ كَذِبٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مُتَحَوِّرًا ۝

यानी अगर फ़रिशतों की फ़ौज नहीं तो कम से कम खुदा का कोई फ़रिशता उन को सच्चा साबित करने और रोअ़ब जमाने के लिए साथ रहता, जिसे देखकर लोगों को झुकना पड़ता। यह क्या कि कसमपुर्सी की हालत में अकेले दावा करते फिर रहे हैं या अगर फ़रिशते भी साथ न हों तो कम से कम आसमान से सोने चाँदी का कोई गैबी खज़ाना मिल जाता कि लोगों को बिना किसी रुकावट के माल ख़र्च कर के ही अपनी तरफ़ खींच लिया करते और यह भी न सहीं तो कम से कम मामूली रईसों और ज़मींदारों

की तरह अंगूर खजूर वगैरह का एक बाग़ तो उनके पास में होता, जिस से दूसरों को न देते तो कम से कम खुद बेफ़िक्री से खाया पिया करते।

जब इतना भी नहीं तो किस तरह यकीन हो कि अल्लाह तआला ने रिसालत के ओहदे पर मआज़ अल्लाह ऐसी मामूली हैसियत के आदमी को नियुक्त किया है।

यानी मियाँ की यह पोज़ीशन और इतने ऊँचे दावे सिवाय इस के क्या कहा जाए कि अक्ल खो गई है या किसी ने जादू के ज़ोर से दिमाग़ खराब कर दिया है जो ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हैं।

(अल् अयाजु बिल्लाह)

9

أَنْظُرْ كَيْفَ صَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

यानी कभी कहते हैं कि इनकी बातें केवल झूठ हैं। कभी दावे करते हैं कि नहीं दूसरों से सीख कर अपने सांचे में ढाल ली हैं, कभी आप को जादूगर बतलाते हैं, कभी काहिन, कभी शायर, कभी मजनून। यह बदलाव खुद बतलाता है कि इन में से कोई चीज़ आप पर साबित नहीं होती, इसीलिए किसी एक बात पर करार नहीं और इल्ज़ाम लगाने का कोई रास्ता नहीं आता। जो लोग अम्बिया के पास इस तरह की गुस्ताखियाँ कर के गुमराह होते हैं उनके राहे रास्त पर आने की कोई उम्मीद नहीं।

10

كَذَّبَكَ الَّذِينَ إِنِ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذَلِكَ جَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
يَجْعَلُ لَكَ قُصُورًا ۝

यानी अल्लाह के खज़ाने में क्या कमी है, वह चाहे तो एक बाग़ क्या बहुत से बाग़ उस से बेहतर अता फ़रमा दे जिस की यह लोग माँग करते हैं, बल्कि उस को कुद़रत है आख़िरत में जो बाग़, नहरें, हूरें और महल मिलने वाले हैं वह सब आप को अभी दुनिया में अता कर दें, लेकिन हिक्मते इलाही यहीं है और विरोधियों की सारी ख्वाहिशें और फ़रमाइशें भी अगर पूरी कर दी जाएँ तब भी यह हक़ व सदाक़त को कुबूल करने वाले नहीं हैं, बाकी पैग़म्बर (अलै०) की सदाक़त साबित करने के लिए जो दलायल व मोअज़िज़ात पेश किये जा चुके वह काफी हैं।

11

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝

यानी यह लोग जिन चीज़ों की माँग कर रहे हैं, हकीकत में इन के अन्दर हक़ के खोज का इरादा नहीं, केवल शरारत और तंग करने के लिए है और शरारत का सबब यह है कि उन्हें अभी तक क़ियामत और सज़ा व जज़ा पर यकीन नहीं आया। सो याद रखना चाहिए कि उन के झुठलाने से कुछ नहीं होता, क़ियामत आकर रहेगी और उन झुठलाने वालों के लिए आग़ का जो जेलख़ाना तैयार किया गया है, उस में ज़रूर रहना पड़ेगा।

12

إِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَّكَانٍ يَبْعِدُ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ۝

यानी दोज़ख़ की आग़ महशर में जहन्नमियों को दूर से देखकर जोश में भर जाएगी और उसकी ग़ज़बनाक आवाज़ों और ख़ौफ़नाक फनकारों से बड़े-बड़े दिलेरों की हवा उखड़ जाएगी।

13

وَإِذَا الْقَوَا مِنْهَا مَكَانًا صَبِيحًا مُفَكَّرِينَ دَعَوْا مُنَالِكَ شُبُورًا ۝

यानी दोज़ख में हर मुजरिम के लिए खास जगह होगी, जहाँ से हिल न सकेगा और एक तरह के कई-कई मुजरिम एक साथ जंजीरों में जकड़े होंगे, उस वक्त मुसीबत से घबरा कर मौत को पुकारेंगे कि काश! मौत आकर हमारी इन दर्दनाक मुसीबतों का खात्मा कर दे।

14

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ شُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا شُبُورًا كَثِيرًا ۝

यानी एक बार मरें तो छूट जाएँ, दिन में हजार बार मरने से और बुरा हाल होता है।

15

قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ۝

यानी झुठलाने वालों का अन्जाम सुन लिया। अब खुद फैसला कर लो कि यह पसन्द है या वह जिस का वादा मोमिनीन मुत्तकीन से किया गया है।

16

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ۝

और चाहेंगे वही जो उन के मर्तबे के हिसाब से होगा।

وَعْدًا مَسْئُولًا से मुराद आखरी वादा है जो अल्लाह तआला ने केवल फज़ल व अिनायत से अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लिया या यह मतलब है कि इस वादे के पूरा करने का मुत्तकीन सवाल करेंगे, जो यकीनन पूरा किया जाएगा। जैसा कि दुआ में है “رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رَسُولِكَ”





## आयत नं० 17 से 20 तक

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قِيْقُولُ ۖ أَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۖ قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ يُنْتَبَىٰ لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَإِبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ ۖ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۖ فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ ۖ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۖ وَمَنْ يَظْلِمِ نَفْسَهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۖ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۖ أَتَصْبِرُونَ ۖ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

### अनुवाद-

(17) और जिस दिन (अल्लाह) इनको और जिनको यह अल्लाह के सिवा पूजते हैं इकट्ठा करेगा, तो उनसे पूछेगा, “क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था, या यह खुद सीधे रास्ते से भटक गये थे?” (18) वे कहेंगे, “कि ‘तू’ पाक है, यह हमसे नहीं हो सकता था, कि हम ‘तेरे’ सिवा किसी दूसरे को संरक्षक बनाएँ, मगर ‘तूने’ इन्हें और इनके बाप-दादा को सुख सामग्री दी, यहाँ तक कि वे ‘तेरी’ याद को भुला बैठे, और ये तबाह होने वाले लोग थे।” (19) तो उन्होंने तुमको और तुम्हारी बातों को झूठा ठहराया, अब न तुम अज़ाब को टाल सकते हो, और न कोई मदद पा सकते हो, और जो व्यक्ति भी तुममें से जुल्म करेगा, ‘हम’ उसे बड़े अज़ाब का मज़ा चखाएँगे। (20) और ‘हमने’ तुमसे पहले जितने रसूल भेजे, वे खाना भी खाते थे और बाजारों में भी चलते-फिरते थे, और ‘हमने’ तुम्हें आपस में एक-दूसरे के लिए आजमाइश बना दिया, “तो क्या तुम सब्र करोगे?” और तुम्हारा रब खूब देखने वाला है।

## आयत नं० 17 से 20 तक की व्याख्या

**17** وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قِيْقُولُ ۖ أَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۖ

यानी इ़िबादत गुजारों को सुनाकर मअबूदों (उपास्यों) से दर्याफ्त किया जाएगा कि क्या तुम ने इन को शिर्क की और अपनी पूजा कराने की तर्गीब दी थी या यह खुद अपनी बेवकूफी व जिहालत और ग़फ़लत व बेतवज्जोही से गुमराह हुए?

**18** قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ يُنْتَبَىٰ لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَإِبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ ۖ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۖ

यानी हमारी क्या मजाल थी कि तुझ से हटकर किसी दूसरे को अपना मददगार समझते, फिर जब हम अपने नफ़्स के लिए तेरे सिवा कोई सहारा नहीं रखते थे तो दूसरों को कैसे हुक्म देते कि हम को अपना मअबूद (उपास्य) और हाजत रवा (सभी ज़रूरतों को पूरी करने वाला) समझें।

यानी अस्ल यह है कि यह बद्बख्त अपनी बेवकूफी से खुद ही तबाह होने को थे, हलाकत उन के लिए मुकद्दर हो चुकी थी। ज़ाहिरी सबब इस का यह हुआ कि ऐश व आराम में पड़कर और ग़फ़्तत के नशे में चूर होकर आप की याद को भुला बैठे, किसी नसीहत पर कान न धरा, पैग़म्बरों की हिदायत की तरफ़ से बिल्कुल आँखें बन्द कर लीं और दुनियावी फ़ायदे पर घमण्ड करने लगे।

आप ने जितना इन को और इन के बाप दादाओं को दुनिया के फ़ायदे पहुँचाए यह उतना ही ग़फ़्तत में तरक्की करते गए। चाहिए तो यह था कि अल्लाह के इन्आमात को देखकर हकीकी मालिक की बन्दगी और शुक्रगुज़ारी करते, उलटे हठधर्मी होकर कुफ़्र पर तुल गए यानी जो अमृत था, बद्बख्ती से उन के हक़ में ज़हर बन गया।

**19** فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَبِئْسَ تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا تَصْرًا وَمَنْ يَظْلِمْ مِنْكُمْ نَذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۝

यह अल्लाह तआला की तरफ़ से इशारा होगा कि लो! जिन पर तुम को बड़ा भरोसा था वह खुद तुम्हारे एहसान को झुटला रहे हैं और तुम्हारी हरकात से एलानिया बेज़ारी का इज़हार कर रहे हैं।

यानी अब न अज़ाबे इलाही को फेर सकते हो, न बात को पलट सकते हो, न एक दूसरे की मदद कर सकते हो, जिस को जो सज़ा मिलने वाली है उस का मज़ा चखते रहो।

शायद जुल्म से मुराद यहाँ शिर्क हो और मुम्किन है हर किस्म का जुल्म व गुनाह मुराद लिया जाए।

**20** وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

यह जवाब हुआ "مَا لِهَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ" का यानी आप से पहले जितने पैग़म्बर दुनिया में आए थे, आदमियों की तरह खाते-पीते और ज़रूरियात के लिए बाज़ार भी जाते थे, उन को फ़रिश्ता बनाकर नहीं भेजा जो खाने पीने और इन्सानी ज़रूरियात से बरी हों।

इस से मालूम हुआ कि ज़रूरत के लिए बाज़ारों में फिरना शाने तक्वा और बुजुर्गी के खिलाफ नहीं, बल्कि अगर बाज़ार न जाने का इरादा घमण्ड हो तो यह बुजुर्गी के खिलाफ़ है।

यानी पैग़म्बर हैं काफ़िरों के ईमान जाँचने के लिए और काफ़िर हैं पैग़म्बरों का सब्र जाँचने के लिए। अब देखें काफ़िरों के बेकार एतिराज़ात सुनकर किस हद तक सब्र दिखाते हो यानी काफ़िरों का कुफ़्र व तक्लीफ़ व्ह्य और साबिरों का सब्र व बर्दाश्त सब उस की नज़र में है, हर एक को उस का फल मिलकर रहेगा।



## आयत नं० 21 से 35 तक

\*

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُنْزِلْ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ لَنَرِ رَبَّنَا ۖ لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْجَارِمِينَ وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا ۝ وَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى النَّاسِ إِذْ أَنْزَلَ فِيهِ الْفُورَانَ ۝ فَجَعَلْنَاهُ مَاءً مَّشُورًا ۝ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ۝ وَيَوْمَ تَشَاقِقُ الْمَاءُ بِالْعَبَابِ وَتُزِيلُ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝ الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ إِلَٰهٌ حَقٌّ لِلْمُتَحَنِّينَ ۖ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝ وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝ يُولِيَانِي لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فَلَانًا خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَصْلَبْتَنِي مِنَ الْإِذِّكَ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا قَالِمِ الْبُغِيمِينَ ۖ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۖ كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنُ تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۝

### अनुवाद-

(21) और जो लोग 'हमसे' मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं, "क्यों न हम पर फ़रिश्ते उतारे गये या ऐसा क्यों न हुआ कि हम अपने 'रब' को देख लेते?" इन्होंने अपने जी में अपने को बड़ा समझा और बड़ी सरकशी पर उतर आए। (22) जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे, उस दिन मुजरिमों के लिए कोई खुशी की बात न होगी और पुकार उठेंगे, (खुदा करे तुम) रोक लिए (और बंद कर दिए) जाओ। (23) और 'हम' बढ़ेंगे उन आमाँल की ओर जो उन्होंने किया होगा, और उनको- उड़ती हुई धूल कर देंगे। (24) उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आरामगाह भी खूब अच्छी होगी। (25) और जिस दिन आसमान बादल के साथ फटेगा और फ़रिश्ते उतारे जाएँगे; (26) उस दिन हकीकी बादशाही 'रहमान' ही की होगी, और वह दिन काफ़िरों पर बड़ा सख्त होगा। (27) और ज़ालिम उस रोज़ अपने हाथ काट खाएगा (और) कहेगा, "काश मैंने भी रसूल के साथ राह पकड़ ली होती। (28) हाय मेरा दुर्भाग्य!! काश, मैं फ़लाँ व्यक्ति को दोस्त न बनाया होता! (29) उसने मुझे गुमराह करके नसीहत (कुर्आन) से दूर रखा, जबकि वह (नसीहत) मेरे पास आ चुकी थी, और शैतान तो है ही इन्सान को बेसहारा छोड़ने वाला।" (30) और रसूल कहेंगे, "ऐ मेरे रब! मेरी कौम ने इस कुर्आन को छोड़ दिया था।" (31) और इसी तरह 'हम' मुजरिमों में से हर नबी के लिए दुश्मन बनाते रहे, और तुम्हारा 'रब' रहनुमाई और मदद के लिए काफ़ी है। (32) और काफ़िर कहते हैं कि "इस पर पूरा कुर्आन एक ही समय में क्यों नहीं उतरा?" ऐसा इसलिए किया गया ताकि इसके ज़रिये 'हम' तुम्हारे दिल को मज़बूत करें, और हम इस (कलाम) को ठहर-ठहर कर पढ़ते रहें (या उचित क्रम के साथ रखा)। (33) और यह लोग जो (एतिराज़) भी तुम्हारे सामने लाते हैं, तो 'हम' हक़ बात तुम्हारे सामने पेश कर देते हैं, और बेहतरीन तफ़सीर (स्पष्टीकरण) के साथ। (34) जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की ओर घसीटे जाएँगे, उनका ठिकाना भी बुरा है, और उनकी राह बिल्कुल भटकी हुई है। (35) और 'हमने' मूसा को किताब दी, और उनके भाई हारून को मदद्गार के रूप में उनके साथ कर दिया।

## आयत नं० 21 से 35 तक की व्याख्या

**21** وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُنْزِلْ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ لَنَرَىٰ رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ۝

यानी जिन को यह उम्मीद नहीं कि एक रोज़ हमारे सामने हाज़िर होकर हिसाब व किताब देना है, वह सज़ा के खौफ़ से बिल्कुल बेफ़िक्र होकर ग़लत-सलत कलिमात ज़बान से बकते हैं। जैसे कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) की तरह हम पर फ़रिश्ते व्हय लेकर क्यों न उतरे या अल्लाह तआला सामने आकर हम से बात क्यों नहीं किया? कम से कम फ़रिश्ते तुम्हारी तस्दीक ही के लिए आ जाते या खुद अल्लाह तआला को हम देखते हैं कि तुम्हारे सामने दावे की ताईद व तस्दीक कर रहा है।

أُنْزِلَ عَلَىٰ الْبَنِي إِسْرَٰئِيلَ الْمَلَائِكَةُ قِيلًا (सूर: अन्आम रूकूअ-15) सूरतुल् बनी इस्राईल बनी इस्राईल रूकूअ-10) यानी उन्होंने अपने दिल में अपने को बहुत बड़ा समझ रखा है जो व्हय और फ़रिश्तों के आने की तमन्ना रखते हैं। शरारत व सरकशी की हद हो गई कि बावजूद ऐसी हरकतों के दुनिया में उन की आँखों से अल्लाह तआला को देखने और शर्फ़ कलामी से मुशरफ़ होने का मुताल्बा करें।

**22** يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا ۝

यानी घबराओ नहीं, एक दिन वह आने वाला है जब फ़रिश्ते तुम को नज़र आएँगे, लेकिन उनके देखने से तुम जैसे मुजरिमों को कुछ खुशी हासिल न होगी, बल्कि सख़्त हौलनाक मुसीबतों का सामना होगा यहाँ तक कि जो लोग इस वक़्त फ़रिश्तों के नुज़ूल का मुताल्बा करने वाले हैं उस वक़्त वह पनाह तलब करेंगे और चाहेंगे कि उनके और फ़रिश्तों के दर्मियान कोई सख़्त रोक कायम हो जाए कि वह उन तक न पहुँच सकें, लेकिन खुदा का फैसला कब रुक सकता है। फ़रिश्ते भी बतला देंगे कि आज खुशी व कामियाबी हमेशा के लिए तुम से रोक दी गई है।

मुम्किन है यह ज़िक्र (मौत के वक़्त का हो।)

وَلَنَرَىٰ يَوْمَئِذٍ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْحَكُونَ مِنْهُمْ وَأَذْأَادُهُمْ ۝ (सूर: अन्फाल रूकूअ 7)

दूसरी जगह अल्लाह तआला फरमाता है -

وَلَنَرَىٰ يَوْمَئِذٍ الظَّالِمُونَ فِي عَمَرَاتٍ مَمُوتٍ وَالْمَلَائِكَةُ بِأَسْطُورِ أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمْ يَوْمَ تَجْزُونَ عَذَابَ نَعْمُونَ ۝

(सूर: अन्आम रूकूअ-11)

यानी यह हकीकत उसके खिलाफ़ होगी जो दूसरी जगह मोमिनीन की बयान हुई है।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْهَمُوا سُبُلَ اللَّهِ لَوْ أَنَّهُمْ رَأَوْا سُبُلَ اللَّهِ لَسَعَوْا بِهَا وَاللَّهُ يَخْتَارُ مَا يُؤْتِيهِ الْغَنِيُّ وَلَا شَرَحَ الْغَنِيُّ وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝

(सूर: हामीम सज्द: रूकूअ-4)

और मुम्किन है यहाँ कियामत के दिन का ज़िक्र हो। (वल्लाहु आलम)

**23** وَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَىٰ النَّاسِ إِذْ أَخْرَجَهُمْ مِنْ ظُلُمَاتٍ إِلَىٰ نُورٍ وَفَجَعَلْنَا مَبَاءَ مَثُورًا ۝

यानी वह हम को बुलाते थे तो हम भी आ पहुँचें, मगर उनकी इज़्ज़त बढ़ाने को नहीं बल्कि इसलिए



कि उन्होंने अपनी सोच के अनुसार बातिल के मुताबिक जो भले काम किये थे, जिन पर बड़ा भरोसा था उन्हें हम बिल्कुल मलियामेट कर दें और इस तरह बेहकीकत कर के उड़ा दें जैसे खाक के हकीर ज़रत हवा में इधर-उधर उड़ जाया करते हैं क्योंकि वह आमाल रुह इख़लास व ईमान से अक्सर खाली या हक के बिल्कुल खिलाफ हुए हैं।

﴿مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا يَرْجِعُهُمْ إِلَىٰ أَعْمَالِهِمْ كَمَا شَأْنُهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ﴾ (सूर: इब्राहीम रकूअ-3)

24

﴿أَخْلَبُ الْيَوْمَ إِذْ يُؤْمِدُ خَيْرٌ مِّمَّنْ تُسْتَقَرُّ وَأَخْسَنُ مَقِيلًا﴾

यानी यह लोग उस दिन इस मुसीबत में गिरफ़्तार होंगे और जिन की हंसी उड़ाया करते थे वह जन्नत में ख़ूब ऐश व आराम के मजे लूटेंगे।

25

﴿وَيَوْمَ تَشَقُّقُ السَّمَاءُ بِالْعَنَابِ وَنُزِلَ الْمَلَكُ تَنْزِيلًا﴾

कियामत के दिन आसमानों के फटने के बाद ऊपर से बादल की तरह की एक चीज़ उतरती नज़र आएगी, जिस में अल्लाह तआला की एक खास तजल्ली होगी। (वल्लाहु आलम)

उसके साथ बेशुमार फरिश्तों का हुजूम होगा और आसमानों के फरिश्ते उस रोज़ लगातार मकामे महशर की तरफ़ नुज़ूल फरमाएँगे।

﴿هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ ثُمَّ أَنْ﴾

26

﴿الْمَلِكُ يُؤَمِّدُ الْحَقَّ لِلرَّاحِلِينَ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا﴾

यानी ज़ाहिर व बातिल हर तरह से रहमान की बादशाहत होगी और सिर्फ़ उसी का हुक्म चलेगा। "لَيْسَ الْمَلِكُ إِلَّا لِلَّهِ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ" (सूर: अब मोमिन रकूअ-2) फिर जब रहमान की हुक्मत हुई तो जो रहमत के हकदार हैं वह बेहिसाब रहमतों से नैवाज़े जाएँगे, उन के लिए रहमत की क्या कमी है, मगर बावजूद ऐसी असीमित रहमत के जो काफ़िरों के लिए बड़ी सख़्त मुश्किल और मुसीबत का दिन होगा।

27

﴿وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي أَخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا﴾

यानी अफ़सोस के साथ अपने हाथ काटेगा और कहेगा कि मैंने क्यों दुनिया में रसूल का रास्ता अख़्तियार न किया और क्यों शयातीन नुमा इन्स और जिन्न के बहकावे में आ गया, जो आज यह बुरा दिन देखना पड़ा।

28

﴿يُوَيْلِي لِيَتَنَبَّأَ لِمَ أَخَذْتُ فَلَا تَخْلِيلُ﴾

यानी जिनकी दोस्ती और बहकावे से गुमराह हुआ था या गुमराही में तरक्की की थी, उस वक़्त पछताएगा कि अफ़सोस ऐसों को मैंने अपना दोस्त क्यों समझा। काश! मेरे और उनके दर्मियान कभी भी दोस्ती न हुई होती।

हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फरमाया, "अच्छे साथी और बुरे

साथी की मिसाल इत्र बेचने वाले और भट्टी धौंकने वाले की सी है। इत्र बेचने वाला या तो आप को कुछ हदिया दे देगा या आप उस से इत्र खरीद लेंगे या आपको उस से खुशबू आएगी। भट्टी धौंकने वाला या तो आपके कपड़े जला देगा या आपको बद्बू आएगी”। (बुखारी व मुस्लिम)

**29**

لَعَذَابُكَ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۚ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدُولًا ۝

यानी पैगम्बर की नसीहत मुझ को पहुँच चुकी थी जो हिदायत के लिए काफी थी और इम्कान था कि मेरे दिल में घर कर ले, मगर उस कम्बख्त की दोस्ती ने तबाह किया और दिल को उधर मुतवज्जेह न होने दिया। बेशक शैतान बड़ा धोकेबाज़ है, आदमी को ऐन वक़्त पर धोका दे देता है और बुरी तरह रुस्वा करता है।

**30**

وَقَالَ الرَّسُولُ يَرْبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝

यानी ज़िद्दी हठधर्मी ने जब किसी तरह नसीहत पर कान न धरा तब पैगम्बर ने अल्लाह के दरबार में शिकायत की कि ऐ अल्लाह! मेरी कौम नहीं सुनती, इन्होंने कुर्आन जैसी अज़ीमुशशान किताब को (अल अयाजु बिल्लाह) बेकार करार दिया है। जब कुर्आन पढ़ा जाता है तो ख़ूब शोर मचाते और बकवास करते हैं, ताकि कोई शख्स सुन और समझ न सके। इस तरह इन लोगों ने कुर्आन जैसी क़ाबिले क़द्र किताब को बिल्कुल पीछे छोड़ दिया है।

आयत में अगरचे जिक्र सिर्फ़ काफ़िरों का है, मगर कुर्आन की तस्दीक न करना, उस में तद्बुूर न करना, उस पर अमल न करना, उस की तिलावत न करना, उस की क़िराअत की तरफ़ मुतवज्जेह न होना, उस से मुँह फेर कर दूसरी बकवास या हक़ीर चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जेह होना, यह सब सूरतें दर्जे बदरजे कुर्आन की बेहुरमती में दाख़िल हो सकती हैं।

**31**

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْجَائِمِينَ ۚ وَكُنِيَ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

जो नबी की बात मानने में रुकावटें डालते हैं और लोगों को कुबूले हक़ से रोकते हैं।

मगर जिस को अल्लाह चाहेगा राह पर ले आएगा या यह मतलब है कि अल्लाह जिस को चाहेगा हिदायत दे देगा और जिन को हिदायत नसीब न होगी, उन सब के मुक़ाबिले में तेरी मदद कर देगा। यह कि अल्लाह तअ़ाला तेरी मदद कर के मक़ाम मतलूब तक पहुँचा देगा और कोई रुकावट न हो सकेगी।

**32**

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً ۖ وَاجِدْكَ ۚ لَتُنَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۝

यानी नबी के दुश्मन लोगों को गुमराह करने के लिए ऐसे-ऐसे एतिराज़ करते हैं कि साहब! पूरा कुर्आन एक ही दफ़अ में क्यों न उतारा गया? बरसों में जो थोड़ा-थोड़ा कर के उतारा, क्या अल्लाह को कुछ सोचना पड़ता था? इस से तो शुब्हा होता है कि खुद मुहम्मद (सल्ल०) सोच-सोच कर बनाते हैं, फिर मौक़ा मुनासिब देखकर थोड़ा-थोड़ा सुनाते रहते हैं।



यानी यह क्या ज़रूरत है कि थोड़ा-थोड़ा कर के उतारा जाए। अगर गौर करे तो इस तरह नाज़िल करने में बहुत से फ़ायदे हैं जो इकट्ठा नाज़िल करने की सूरत में पूरी तरह हासिल नहीं होते। जैसे-इस सूरत में कुर्आन का हिफ़ज़ करना ज़्यादा आसान हुआ, समझने में सहूलत रही, कलाम पूरी तरह मज़बूत होता रहा और जिन हिक्मत की रिआयत इस में की गई थी, लोग मौक़ा-ब-मौक़ा उन की तमाम चीज़ों पर बाख़बर होते रहे।

हर आयत का अलग शाने नुज़ूल देखकर उस का सही मतलब तय करने में मदद मिली। हर ज़रूरत के वक़्त हर बात का बरवक़्त जवाब मिलते रहने से पैग़म्बर और मुसलमानों के दिलों को तसल्ली होती रही और हर आयत के नुज़ूल पर गोया नया दावा होता रहा। इसी सिलसिले में जिब्रईल का बार-बार आना-जाना हुआ जो एक लगातार बरकत थी। उन ही में से कुछ फ़ायदे की तरफ़ यहाँ इशारा फ़रमाया है।

**33**

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝

यानी काफिर जब कोई एतिराज़ कुर्आन पर करते हैं तो कुर्आन उस के जवाब में ठीक-ठीक बात बतला देता है, जिस में किसी किस्म का हेर-फेर नहीं होता बल्कि साफ़, मोअतदिल (सन्तुलित) बात होती है। हाँ, जिनकी अक्ल में पत्थर होते हैं वह सीधी और साफ़ बात को टेढ़ी समझें यह अलग चीज़ है, ऐसों का अन्जाम अगली आयत में बयान फ़रमाया है।

**34-35**

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ عَلَىٰ عُجُوبِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۝

यह वही लोग हैं जिनकी अक्ल पत्थरा गई और एक अल्लाह को छोड़कर अपने इच्छा पर चल पड़े। आगे ऐसी ही कुछ कौमों का जो हृश् हुआ, इब्रत के लिए उस को बयान फ़रमाते हैं।

‘हज़रत अनस बिन मालिक’ (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक शख्स ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क़ियामत के दिन काफिर अपने मुँह के बल उठाए जाएँगे? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “कि जिस रब ने इन्सान को दो पैर पर चलना सिखलाया वह उसे क़ियामत के दिन मुँह के बल क्या नहीं चला सकता”।



## आयत नं० 36 से 52 तक

فَقُلْنَا اذْهَبْ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمٌ نُّوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرَّسُلَ اَعْرِفْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۖ وَاعْتَدْنَا لِلظَّالِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَعَادًا وَثَمُوْدًا ۚ وَاَصْحَابَ الرَّيْقِ وَقُرُوْنَا الْبَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكَذٰلِكَ نَتَرَكُا تَتَرٰنَا تَثِيْرًا ۚ وَلَقَدْ اَتَوٰا عَلٰى الْقَرْيَةِ الَّتِيْ اَمْطَرْنَا مَطَرَ السَّوْءِ ۚ اَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرُوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَتَذَكَّرُوْنَ اِنْ يَتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا مُزَاجًا ۚ اِهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْبَيْتِ لَوْلَا اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَصْلُ سَبِيْلًا ۝ اَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ الْاِلٰهَةَ هُوْبَةً ۚ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝ اَمْ تَحْسَبُ اَنْ اَكْثَرُهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظَّلَّ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلْنٰ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيْرًا ۚ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ اِلَيْنَا لِبَاسًا وَالتَّوْمَ سَبَاتًا ۚ وَجَعَلَ النَّهَارَ نَشُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ اَرْسَلَ الرِّيْحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنْ سَمَاءٍ مَّاءً طَهُوْرًا ۝ لِنُنْفِئَ بِهٖ بَلَدًا مَّيِّتًا ۚ وَنُسْقِيْهٖ ۚ مَا خَلَقْنَا الْاَنْعَامَ وَاِنَا سِىْ كَثِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۚ فَابْيَ اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۚ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ تَذَكُّرًا ۝ فَلَا تَطْعَمُ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝

### अनुवाद-

(36) और कहा, दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया " तो 'हमने' उन को तबाह कर दिया। (37) और नूह की कौम ने भी, जब रसूलों को झुठलाया तो 'हमने' उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया, और ज़ालिमों के लिए 'हमने' एक दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (38) और आद, और समूद, और अर-रस्स वालों और उनके बीच की बहुत सी नस्लों को भी (तबाह कर दिया) (39) और 'हमने' हर एक के सामने मिसालें दीं, और 'हमने' हर एक को तबाह कर दिया। (40) और यह (काफिर) उस बस्ती पर से भी गुज़रे हैं जिस पर बुरी (पत्थर की) बारिश हुई, तो क्या यह उसे देखते नहीं रहे? बल्कि ये दोबारा ज़िन्दा होकर उठने की उम्मीद ही नहीं रखते। (41) और आप को जब यह लोग देख लेते हैं, तो आप का मज़ाक उड़ाने लगते हैं, "क्या यही व्यक्ति है जिसको अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है। (42) इसने तो हमें भटका कर, हमको हमारे मअबूदों (उपास्यों) से फेर ही दिया होता, अगर हम उन पर मज़बूती से ज़म न गये होते।" जल्द ही यह जान लेंगे! जब अज़ाब को देखेंगे, कि कौन राह से हटा हुआ था? (43) क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा है, जिसने अपना मअबूद अपनी इच्छा को बना रखा है? तो क्या आप उसकी ज़िम्मेदारी ले सकते हैं; (44) या आप यह समझते हैं कि इनमें अक्सर सुनते या समझते हैं? ये तो चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी ज़्यादा राह से भटके हुए हैं। (45) क्या आपने अपने 'रब' को नहीं देखा! कि 'उसने' छाया को किस तरह फैला दिया? और अगर 'वह' चाहता तो उसे ठहराया हुआ रखता, फिर 'हमने' सूरज को उसका रहनुमा (दलील) बनाया, (46) फिर 'हम' उसको धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं। (47) और 'वही' तो है जिसने रात को तुम्हारे लिए पर्दा, और नींद को आराम की चीज़, और दिन को उठ खड़े होने का समय बनाया। (48) और 'वही' तो है जो अपनी रहमत की हवाओं को आगे-आगे खुशख़बरी बना कर भेजता है, और 'हम' आसमान से पानी बरसाते, हैं खूब पाक

व साफ़; (49) ताकि 'हम' इसके ज़रिए मुर्दा बस्ती में जान डाल दें और 'अपने' पैदा किये हुए बहुत से चौपायों और इन्सानों को पिलाएँ। (50) और 'हम' इस (कुर्आन) को उन लोगों के बीच विभिन्न ढंग से पेश कर देते हैं, ताकि ध्यान दें, लेकिन अक्सर लोगों ने इन्कार और नाशुक्री के अलावा कुछ न माना। (51) और अगर 'हम' चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते। (52) तो आप काफ़िरो की बात न मानिये और इस (कुर्आन) के ज़रिये उनसे जिहाद कीजिए-बड़ा जिहाद।

## आयत नं० 36 से 52 तक की व्याख्या

**36**

قُلْنَا اذْهَبْ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَرْنَاهُمْ تَذْوِيرًا ۝

वह आयत जो अल्लाह तआला की तौहीद पर दलालत करती हैं और पिछले नबियों के बयानात, जिन का थोड़ा बहुत चर्चा पहले से चला आ रहा है, यह लोग उन्हें झुठला कर खुदाई के दावे करते हैं।

**37**

وَقَوْمٍ نُّوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرَّسُولَ اَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۝ وَاَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا اَلِيمًا ۝

एक पैगम्बर का झुठलाना सब को झुठलाना है क्योंकि दीन की बुनियाद में सब नबी एक हैं।

**38**

وَعَادًا وَثَمُودًا ۝ وَاَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۝

‘अस्हाबुरस’ (कुंवे वाले) कौन थे? इस में मुफस्सिरीन के दर्मियान इख़िलाफ़ है। ‘इमाम इब्ने जरीर तबरी’ ने कहा है कि इस से मुराद अस्हा-बुलूउख़ूद है, जिन का जिक्र सूर: बुरुज में है। (इब्ने कसीर) ‘रुहुल मअानी’ में बहुत से अक्वाल नक़ल कर के लिखा है:-

”وَمِنْ مَخَصِّصَاتِ الْاَقْوَالِ اَنَّهُمْ قَوْمٌ اَهْلَكَهُمُ اللّٰهُ بِكَذِّبِ مَنْ اُرْسِلَ الْيَوْمُ“ (यानी खुलासा यह है कि वह कोई कौम थी जो अपने पैगम्बर को झुठलाने की सज़ा में हलाक हुई) हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं “एक उम्मत ने अपने रसूल को कुंवे में बन्द किया, फिर उन पर अज़ाब आया तब वह रसूल आज़ाद हुए।”

**39**

وَكُلًّا ضَرَبْنَاهُ اِلَى الْاُمْتَالِ ۝ وَكُلًّا تَبَرْنَا تَبِيرًا ۝

यानी पहले सब को अच्छी तरह समझाया, जब किसी तरह न माना तो तख़्त उलट दिया।

**40-41**

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلٰى الْفَرِیَةِ الَّتِیْ اَمْطَرَتْ مَطَرًا سَوِیًّا ۝ اَفَلَمْ یَكُونُوْا یَرَوْنَهَا ۝ بَلْ كَانُوْا لَا یَرْجُوْنَ لِقَا رَبِّهِمْ ۝

وَإِذَا رَأَوْكَ اِنْ یَّتَخَذُوْكَ اِلٰهًا مُّزَوًّا ۝ اَهٰذَا الَّذِیْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝

यानी कौमे लूत की बस्तियाँ जिन के खण्डर पर से मक्का वाले ‘शाम’ के सफ़र में गुज़रते थे।

यानी क्या उन के खण्डर को इब्रत की निगाह से न देखा? यानी इब्रत कहाँ से होती, जब उनके नज़्दीक यह संदेह ही नहीं कि मरने के बाद फिर जिन्दा होकर उठना और अल्लाह के सामने हाज़िर होना है। नसीहत तो वही हासिल करता है जिसके दिल में थोड़ा बहुत डर हो और अन्जाम की तरफ़ से बिल्कुल बेफ़िक्र न हो।

42

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْبَةِ لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۖ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلَّ سَبِيلًا ۝

यानी बजाय नसीहत हासिल करने के उन का काम तो यह है कि पैगम्बर से ठिठकियाँ करते हैं, चुनौचे आप को देखकर मज़ाक में कहते हैं कि क्या यही बुजुर्ग हैं जिन को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है? भला यह हैसियत और मन्सबे रिसालत। क्या सारी खुदाई में यही अकेले रसूल बनने के लिए रह गये थे? हाँ, यह ज़रूर है कि इन की तक्रीर जादू का असर रखती है, तक्रीर के जोर से ऐसा रंग चढ़ाते हैं कि बड़े-बड़ों के क़दम फिसल जाएँ। यहाँ क़रीब था कि उस की बातें हम को हमारे उपास्यों से अलग कर देती, मगर हम पक्के थे कि बराबर जमे रहे और उनकी किसी बात का असर कुबूल न किया, वरना यह हम सब को गुमराह कर के छोड़ते। (अल् अयाजु बिल्लाह)

“यानी अज़ाबे इलाही को आँखों से देखेंगे, जब इन को पता लगेगा कि वाकई कौन गुमराही पर था”।

43

أَرَأَيْتَ مَنْ أَخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۖ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ۝

क्या आप ऐसे इच्छा पूजकों को राहे हिदायत पर ले आने की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं जिन का मअबूद (उपास्य) ही केवल ख्वाहिश (इच्छा पूर्ति) हो, जिधर ख्वाहिश ले गई उधर ही झुक गये।

जो बात अपनी इच्छा के मुताबिक हुई कुबूल कर ली, मुखालिफ़ हुई तो रद्द कर दिया। आज एक पत्थर अच्छा मालूम हुआ उसे पूजने लगे, कल दूसरा उस से खूबसूरत मिल गया पहले को छोड़कर उस के आगे सर झुका दिया।

44-45

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ الْكُفْرَ هُمْ يَسْمَعُونَ ۖ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۖ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ۖ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝

कैसी ही नसीहतें सुनाइये यह तो चौपाये हैं बल्कि उस से भी बदतर, उन्हें सुनने या समझने से क्या वास्ता। चौपाये तो कम से कम अपने पालने वाले मालिक के सामने गर्दन झुका देते हैं, अपने मोहसिन को पहचानते हैं, खुला छोड़ दो तो अपनी चारागाह और पानी पीने की जगह पहुँच जाते हैं, लेकिन इन बद्बख्तों का हाल यह है कि न अपने पालने वाले मालिक व राज़िक के हक़ को पहचानते हैं, न उस के एहसानात को समझते हैं, न भले-बुरे की तमीज़ है, न दोस्त दुश्मन में फ़र्क़, न हिदायत की तरफ़ क़दम उठाया बल्कि उस से कोसों दूर भागे और जो योग्यताएँ अल्लाह तआला ने अ़ता की थीं उन को नष्ट कर दिया बल्कि बे-मौका इस्तिमाल किया।

अगर ज़रा भी अक्ल व समझ से काम लेते तो उस के कारखान-ए कुदरत में बेशुमार निशानियाँ मौजूद थीं जो स्पष्ट तौर पर अल्लाह तआला के एक होने की सदाक़त व हक्क़ानियत की तरफ़ रहबरी कर रही हैं, जिन में से कुछ निशानियों का ज़िक्र आगे की आयात में किया गया है।

46

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ۝

अगर अल्लाह तआला सूरज को निकलने न देता तो यही साया कायम रहता, मगर उस ने अपनी

कुदूरत से सूरज निकाला जिस से धूप फैलनी शुरू हुई और साया एक तरफ को सिमटने लगा। अगर धूप न आती तो साये को हम समझ भी न सकते क्योंकि एक बात के आने से ही दूसरी मुखालिफ़ चीज़ पहचानी जाती है।

(सूर: कसस रुकूअ-7) "قُلْ أَزَيْمٌ أَنْ يَحْمِلَ اللَّهُ عَنْكُمْ الْبَلَّ سَلَامًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِنَّكُمْ لَعِندَهُ بِمَنَاقِبِكُمْ شَرِيفُونَ"

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं कि पहली बात तो हर चीज़ का साया लम्बा होता है। फिर जिस तरह सूरज चलता है उस के मुक़ाबिले में साया हटता जाता है जब तक कि जड़ में न आ लगे। 'अपनी तरफ़ खींच लिया' का यह मतलब है कि अपनी अस्ल को जा लगता है। सब की अस्ल अल्लाह की ओर पलटना है, जिसकी ओर सब को जाना है।

**47-48** وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا لَبَّيْنُ يَدَيْهِ رَحْمَتُهُ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝

यानी रात का अंधेरा चादर की तरह सब पर हावी हो जाता है जिस में लोग कारोबार छोड़कर आराम करते हैं। फिर दिन का उजाला होता है तो नींद से उठ कर इधर-उधर चलने-फिरने लग जाते हैं। इसी तरह मौत की नींद के बाद क़ियामत की सुबह आएगी, जिस में सारा जहान दोबारा उठ खड़ा होगा और यही हालत उस वक़्त पेश आती है जब अम्बिया (अलै०) वस्य की रौशनी से दुनिया में उजाला करते हैं तो जहल व ग़फ़लत की नींद से सोई हुई मख़लूक आँखें मल कर उठ बैठती है।

हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) जब नींद का इरादा फ़रमाते तो यह पढ़ते:-

(بِسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا)

“ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम से ज़िन्दा होता हूँ और मरता हूँ।”

और जब नींद से उठते तो कहते:-

“الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ”

“सब तअरीफ़ उस जात की है जिस ने हमें मौत देने के बाद ज़िन्दगी दी और हमें उसकी ओर लौट कर जाना है।” (बुख़ारी)

**49** لَنَجْئَنَّ بِكَ بَلَدًا مَّيْنًا وَنُسْقِيكَ مِنْ حَلَقَتَا أَنْعَامًا وَأَنَا بَيْنُكُمْ شَرِيفُونَ ۝

यानी पहले बरसाती हवाएँ बारिश की खुशख़बरी लाती हैं, फिर आसमान की तरफ़ से पानी बरसता है जो खुद पाक और दूसरों को पाक करने वाला है। पानी पड़ते ही मुर्दा ज़मीनों में जान पड़ जाती है, खेतियाँ लहलहाने लगती हैं जहाँ ख़ाक उड़ रही थी वहाँ हरियाली छा जाती है और कितने जानवर और आदमी बारिश का पानी पीकर सैराब होते हैं।

इसी तरह क़ियामत के दिन एक ग़ैबी बारिश के ज़रिये मुर्दा जिस्मों को, जो ख़ाक में मिल चुके थे

ज़िन्दा कर दिया जाएगा और दुनिया में भी इसी तरह जो दिल जिहालत व गुनाहों की मौत मर चुके थे, वह्य इलाही की आसमानी बारिश उन को ज़िन्दा कर देती है। जो रुहें गंदगी में फँस गई थीं, रुहानी बारिश के पानी से धुलकर पाक व साफ़ हो जाती हैं।

**50-51**

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا ۚ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۖ وَلَوْ شَاءْنَا لَجَعَلْنَاهُ فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ۝

यानी बारिश का पानी तमाम ज़मीनों को यक़्साँ नहीं पहुँचता, बल्कि कहीं कम कहीं ज़्यादा, कहीं जल्द कहीं देर, जिस तरह अल्लाह की हिक़मत होती है पहुँचता रहता है ताकि लोग समझें कि इस किस्म की तक्सीम किसी कुदूरत रखने वाले हकीम के हाथ में है, लेकिन बहुत से लोग फिर भी नहीं समझते और नेअ़मत इलाही का शुक्र अदा नहीं करते, उल्टे कुफ़्र और नाशुकी पर उतर आते हैं। यही हाल रुहानी बारिश का है, जिस को अपनी योग्यता के मुवाफ़िक़ जितना हिस्सा मिलना था मिल गया और बहुत से तो इस नेअ़मत का इन्कार ही करते रहे।

**52**

فَلَا تَطْعَمُ الْكُفْرَانُ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ۝

यानी नबी का आना तअज़्जुब की चीज़ नहीं। अल्लाह चाहे तो अब भी नबियों की कसरत कर दे कि हर बस्ती में अलग नबी हो, मगर उस को मन्ज़ूर ही यह हुआ कि अब आख़िर में सारे जहान के लिए अकेले मुहम्मद (सल्ल०) को नबी बनाकर भेजा।

सो इन्कार करने वालों की बेवकूफी और नुक्ताचीनियों की तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाएँ आप पूरी कुव्वत के साथ अन्जाम देते रहें और इस कुर्आन के ज़रिये इन्कारियों का मुक़ाबिला ज़ोर व शोर के साथ करते रहें। अल्लाह तआला आप को कामियाब करने वाला है।





## आयत नं० 53 से 77 तक

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَجِجْرًا مَحْجُورًا ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۝ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۝ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْبَاقِ ۝ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَيَحْيِي عِبَادَهُ ۝ وَلَفِي بِهِ يَذُنُوبٌ عَبَادٌ خَيْرًا ۝ ۞ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۝ الرَّحْمَنُ فَسَلِّ بِهٖ خَيْرًا ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝ تَتَّبِعُ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝ وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَتَنَشَّطُونَ عَلَى الْأَرْضِ هُونَ ۝ وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۝ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝ وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۝ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۝ يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ۝ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۝ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۝ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّكْرَ ۝ وَإِذَا أُمِرُوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُقُبانًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ ۝ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝ أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۝ خُلِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ قُلْ مَا يَعْبُودُوا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۝ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۝

### अनुवाद-

(53) और 'वही' तो है जिसने दो समुद्रों को मिलाया- एक मीठा स्वादिष्ट, और दूसरा खारी कड़वा- और दोनों के बीच एक पर्दा (आड़) कर दिया, और एक रुकावट खड़ी कर दी। (54) और 'वही' है जिसने पानी से मनुष्य को पैदा किया, फिर उसको खानदान वाला, और ससुराली रिश्ते वाला बनाया, और आप का 'रब' बड़ी कुदरत (सामर्थ्य) वाला है। (55) और ये लोग अल्लाह के मुकाबले में उनकी इबादत करते हैं जो न उन्हें नफा पहुँचा सकते हैं और न नुकसान, और काफिर अपने रब की मुखालिफत में बड़ा जोर मारता है। (56) और 'हमने' तो आप को बस खुश-ख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है। (57) कह दीजिए, "मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं माँगता सिवाय इसके कि जिसका जी चाहे अपने रब की ओर (ले जाने वाली) राह अपना ले।" (58) और 'उस' (अल्लाह) पर भरोसा करो जो ज़िन्दा और कभी मरने वाला नहीं, और उसकी तज़रीफ़ बयान करो, 'वह' अपने बन्दों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफी है; (59) 'जिसने' आसमानों और ज़मीन को, और उन तमाम चीज़ों को, जो कुछ इन दोनों के बीच है छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर जा ठहरा, रहमान है 'वह'! तो उसकी शान, उससे पूछो जो उसकी ख़बर रखता हो। (60) और इन (इन्कारियों) से जब कहा जाता है कि "रहमान को सज्द: करो," तो कहते हैं, "रहमान क्या है? क्या हम उसको सज्द: करें जिसका तुम हमें हुक्म देते हो?"

और यह चीज़ उनकी घृणा को और बढ़ा देती है। (61) बड़ी बरकत वाला है 'वह' 'जिसने' आसमान में बुर्ज (नक्षत्र) बनाए, और उसमें एक चिराग और एक चमकता हुआ चाँद भी बनाया। (62) और 'वही' है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, हर उस व्यक्ति के लिए (निशानी है) जो विचार करना चाहे या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। (63) और रहमान के बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (विनम्रता) के साथ चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे (जाहिलाना) बातें करने लगते हैं, तो वह "सलाम कहते हैं!" (64) और वे जो अपने रब के आगे सज्दः करने और खड़े रहने में रातें गुज़ारते हैं; (65) और वे जो कहते हैं कि, "ऐ रब! जहन्नम के अज़ाब को हमसे दूर रख," उसका अज़ाब बड़ी तकलीफ़ की चीज़ है। (66) वह बहुत बुरा ठिकाना है और बुरी ठहरने की जगह है। (67) और वे जब खर्च करते हैं, तो न फुज़ूल खर्ची करते हैं और न कन्ज़ूसी, बल्कि उनका खर्च दोनों के बीच सन्तुलित रहता है; (68) और वे जो अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद को नहीं पुकारते, और किसी जान को- जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है, क़त्ल नहीं करते- मगर हक़ के बिना पर, और बदकारी नहीं करते- और जो इस काम को करे, वह सख़्त गुनाह में पड़ेगा। (69) उसको दोहरा अज़ाब दिया जाएगा क़ियामत के दिन, और वह उसमें अपमान के साथ हमेशा पड़ा रहेगा; (70) सिवाय उसके- जिसने तौबः की, और ईमान लाया, और भले काम किये; तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है; (71) और जो तौबः करके नेक अमल करता है, तो बेशक वह अल्लाह की ओर पलटता है (जैसा कि पलटने का हक़ है) (72) और वे जो झूठी गवाही नहीं देते, और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रते हैं, तो अच्छे अन्दाज़ से गुज़र जाते हैं; (73) और जब उनके रब की आयतों के ज़रिये नसीहत की जाती है, तो वह उन पर बहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते; (74) और वे जो कहते हैं, "ऐ 'हमारे' 'रब'! हम को हमारी पत्नियों और हमारी सन्तान की ओर से आँखों की टंडक दे और हमको परहेज़गारों का इमाम (नायक) बना।" (75) यही वे लोग हैं जिनको, उनके सब्र के बदले में ऊँचे महल मिलेंगे, और वहाँ (फ़रिश्ते उन से) दुआ और सलाम के साथ उनका इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे। (76) उसमें वे हमेशा रहेंगे, और वह बहुत अच्छा ठिकाना और वह बहुत ही अच्छी रहने की जगह है। (77) कह दीजिए, "मेरे रब को तुम्हारी क्या परवाह, अगर तुम 'उसको' न पुकारो; अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो जल्द ही उसकी सज़ा लाज़िम (ज़रूरी) होगी।

### आयत नं० 53 से 77 तक की व्याख्या

**53-56**

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذَابٌ فَارَاتٌ وَهَذَا مَلْحٌ اِحَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ۝  
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَنَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۝ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

आयत का मतलब बिल्कुल स्पष्ट है यानी अल्लाह की कुद़रत देखो कि खारे और मीठे दोनों दरियाओं के पानी कहीं न कहीं मिल जाने के बावजूद एक दूसरे से अलग रहते हैं या यह मतलब हो कि अल्लाह तआला ने दोनों दरिया अलग-अलग अपने हुक्म से चलाए और दोनों के बीच में जगह रख

दी, यूँ ही आज़ाद नहीं छोड़ा कि दोनों ज़ोर लगाकर धर्मियान से ज़मीन को हटा देते और उस की हस्ती को तबाह कर देते। फिर दोनों में हर एक का जो मज़ा है वह उसी के लिए ज़रूरी है, यह नहीं कि मीठा दरिया खारी या खारी मीठा बन जाए। हर एक दूसरे से बिल्कुल अलग रहता है।

देख लो! किस तरह अपनी कुदूरत से एक कतूरा पानी से एक अक्लमन्द आदमी को बना दिया। फिर आगे उस से नस्लें चलाई, दामादी और ससुराल के तअल्लुकात कायम किये। एक नाचीज़ कतूरे को क्या से क्या कर दिया और कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया, लेकिन यह थोड़ी ही देर में अपनी अस्ल को भूल गए और उस रब को छोड़कर आजिज़ मख़्लूक को खुदा कहने लगे। अपने परवरदिगार का इक़ तो क्या पहचानते उस-से मुँह मोड़ कर और पीठ फेरकर शैतान की फ़ौज में शामिल हो गए ताकि गुमराही के मिशन में उस की मदद करें और मख़्लूक को गुमराह करने में उस का हाथ बटाएँ।

57

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

यानी आप का काम अल्लाह तआला की वफ़ादारी पर बशारत सुनाना और नाफ़रमानों को ख़राब नतीजों से आगाह कर देना है। चाहे कोई माने या न माने, आप का कुछ नुक़सान नहीं। आप इन से कुछ फ़ीस या मज़दूरी तो नहीं तलब कर रहे थे कि इन के न मानने से घाटे का अन्देशा हो। आप तो इनसे सिर्फ़ इतना ही चाहते हैं कि जो कोई चाहे खुदा की तौफ़ीक़ पाकर अपने रब का रास्ता अपना ले।

58

وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ وَكَفَىٰ بِهِ بُدْءَ عِبَادٍ ذِكْرًا ۝

यानी आप अकेले अल्लाह पर भरोसा कर के अपना फ़र्ज़ (तब्लीग़ व दअवत वगैरह) अदा करें, किसी के मुख़ालिफ़त की परवाह न करें, फ़ानी चीज़ों को क्या सहारा। सहारा तो उसी का है जो हमेशा ज़िन्दा रहे कभी न मरे।

यानी उसी पर तवक्कुल रखिए और उसी की अ़िबादत और हम्द व सना करते रहिए। इन मुजरिमों से हम खुद निपट लेंगे।

59

الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَنُ فَسَلِّ عَلَيْهِ تَحِيَّاتًا ۝

इस का बयान सूर: अअराफ़ में गुज़र चुका है यानी अल्लाह तआला की शान व रहमतों को किसी जानने वाले से पूछो, यह जाहिल मुशिरक उसे क्या जानें।

”وَمَا تَقْدِرُ إِلَّا عَلَىٰ أَنْ تَقُولَ سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ“ कमालात का पूरी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है।

”أَنْتَ كَمَا أَنْتَ عَلَىٰ نَفْسِكَ“ लेकिन मख़्लूक में सब से बड़े जानने वाले हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं, जिन की ज़ाते गिरामी में अल्लाह तआला ने पहले और बाद के तमाम उलूम जमा कर दिये, अल्लाह तआला की शान को कोई उन से पूछे।

60

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنْسَجِدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝

सब्दः

यानी यह जाहिल मुशिरक रहमान की अज़मत-ए-शान को क्या समझ सकते हैं, जिन को इस नाम से भी चिढ़ है। जब यह नाम सुनते हैं तो जिहालत या बेहयाई और नावाकिफ़ बनकर कहते हैं कि रहमान कौन है? जिस को हम से सज्दः कराता है। क्या केवल तेरे कह देने से ऐसी बात मान लें? बस तुम ने एक नाम ले लिया और हम सज्दः में गिर पड़ें यानी जिस तरह उन्हें रहमान की इताअत की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं उसी तरह यह बिदकते और भागते हैं।

61

تَبَرَّكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝

यानी बड़े-बड़े सितारे या आसमानी किले जिन में फ़रिश्ता पहरा देते हैं या मुम्किन है सूरज की बारह मन्ज़िलें मुराद हों, जो लोगों ने बयान की हैं।

62

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنۢ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝

यानी चाँद सूरज वगैरह का उलट-फेर और रात-दिन का अदल-बदल इसलिए है कि इस में ध्यान कर के लोग अल्लाह तआला को पहचानने का सुराग लगाएँ कि यह सब तब्दीलियाँ उसी के कुदरत की कारसाज़ियाँ हैं, रात और दिन के फ़ायदे को देखकर उस की शुक्रगुज़ारी की तरफ़ मुतवज्जेह हों। रहमान के मुख़्तलस बन्दे जिन का ज़िक्र आगे आ रहा है, ऐसा ही करते हैं।

63

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَتَشَوَّنُ عَلَى الرِّضَىٰ هُونًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝

यानी मुशिरकीन की तरह रहमान का नाम सुनकर मुँह नहीं बनाते, बल्कि हर काम से बन्दगी का इज़हार करते हैं, उन की चाल ढाल से खाकसारी और सज्जनता टपकती है, घमण्डियों की तरह ज़मीन पर अकड़ कर नहीं चलते। यह मतलब नहीं कि दिखावा करके बीमारों की तरह क़दम उठाते हैं क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की जो रफ़्तार हृदीसों में ज़िक्र है उस की पुष्टि नहीं करती।

यानी कम अक्ल और बे-अदब लोगों की बात का जवाब दर गुज़र से देते हैं। जब कोई जिहालत की बात करता है तो नर्म बात कहकर अलग हो जाते हैं, ऐसों से मुँह नहीं लगते।

64-66

وَالَّذِينَ يَبَيِّنُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا

كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝

रात को जब नादान बन्दे नींद और आराम से मजे लूटते हैं, तब यह अल्लाह के सामने खड़े होकर और सज्दः की हालत में गुज़ारते हैं। रुकूअ चूँकि क़ियाम और सज्दे के दर्मियान है शायद इसीलिए इस को अलग से ज़िक्र नहीं किया गया।

67

وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝

यानी मौक़ा देख कर दर्मियानी तरीके से खर्च करते हैं। न माल की मुहब्बत, न उस को ज़ाया करना। जैसे अल्लाह तआला का इर्शाद है:-



”وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسِطِ“ (बनी इस्राईल, रुकूअ 3)

**68** وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۖ

जैसे जान बूझकर कत्ल करने के बदले कत्ल करना या बदकारी की सज़ा में ज़ानी मोहसिन को संगसार करना या जो शख्स दीन छोड़कर जमाअत से अलग हो जाए उस को मार डालना यह सब सूरतें “الْأَنفُسِ” में शामिल हैं।

यानी बड़ा सख्त गुनाह किया जिस की सज़ा मिल कर रहेगी। कुछ रिवायात में आया है कि ‘साअत’ जहन्नम की एक वादी का नाम है, जिस में बहुत ही हौलनाक अज़ाब बयान किये गये हैं।

— ‘हज़रत इब्ने मसऊद’ (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा कि “अल्लाह के करीब कौन सा गुनाह बड़ा है? तो आप (सल्ल०) ने फरमाया कि तू अल्लाह के साथ शरीक ठहराए हालाँकि उस ने तुझे पैदा किया है। मैंने पूछा कि फिर कौन सा? फरमाया कि तू अपनी औलाद को इस ख़तरे से कत्ल करे कि वह तेरे साथ खाएगी। मैंने पूछा कि फिर कौन सा? फरमाया कि तू अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे”। (बुख़ारी)

**69** يُضَاعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ۖ

यानी और गुनाहों से यह गुनाह बड़े हैं। अज़ाब भी इन पर बड़ा होगा और रोज़-ब-रोज़ बढ़ता भी रहेगा।

**70** إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

यानी गुनाहों की जगह नेकियों की तौफीक देगा और कुफ़्र से गुनाह माफ़ करेगा या यह कि बुराइयों को मिटा कर तौब: और नेक अ़ामाल की बरकत से उन की तअदाद के मुनासिब नेकियाँ लिख देगा।

‘हज़रत हकीम बिन हिजाम’ (रज़ि०) कहते हैं कि “मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा या रसूलुल्लाह! मैंने जाहिलियत में जो अच्छे काम किये थे, जैसे रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, गुलाम आज़ाद करना या सद्क: व ख़ैरात देना, क्या मुझे उस में से अज़्र मिलेगा? आप (सल्ल०) ने फरमाया क्यों नहीं, तुम जो इस्लाम लाए हो-पिछली नेकियों को बहाल रखते हुए लाए हो। (बुख़ारी)

**71** وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۖ

पहले ज़िक्र था गुनाहगार काफ़िर का जो ईमान ले आया, यहाँ ज़िक्र है इस्लाम में गुनाह करने का। वह भी जब तौब: करे यानी बुरे काम छोड़ दे तो अल्लाह के यहाँ जगह पाएगा। मालूम हुआ कि सूर: निसा में जो फरमाया “وَمَنْ يَفْسُقْ فَمَنْ تَبَوَّأَتْ مِنْهُ خَالَةً أُولَٰئِكَ فِيهَا عَظِيمٌ ۚ وَاللَّهُ عَالِمُ غُيُوبِ قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَالِمُ غُيُوبِ قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَالِمُ غُيُوبِ قُلُوبِهِمْ ۚ”

(सूर: निसा रुकूअ-13)

**72** وَالَّذِينَ لَا يَشْعُرُونَ الزُّلْمَ وَلَا إِذْمًا وَلَا بِالْغُلُومِ مَرْؤًا ۖ

यानी न झूठ बोलें, न झूठी शहादत दें, न बान्ताल कामों और गुनाह की मजलिसों में हाज़िर हों।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं “यानी गुनाह में शामिल न हों और खेल की बातों की तरफ ध्यान न दें, न उस में शामिल हो, न उन से लड़ें”।

**73**

وَالَّذِينَ إِذَا دُكِرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ۝

बल्कि निहायत फ़िक्र व ध्यान से सुने और सुनकर मुतास्सिर हो, मुशिरकीन की तरह पत्थर की मूर्ती बन जाए।

**74**

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْ لَنَا لِمَتَّيْنِ إِمَامًا ۝

यानी बीवी बच्चे ऐसे अता फ़रमा जिन्हें देखकर आँखें ठंडी और दिल खुश हो और ज़ाहिर है मोमिन कामिल का दिल उसी वक़्त ठंडा होगा जब अपने घर वालों को अल्लाह के हुक्मों का पाबन्द पाए और सही इल्म हासिल करने में मशगूल पाए तो यह सबसे बड़ी नेअमत है दुनिया की, सब नेअमतें और खुशियाँ इस के बाद हैं।

यानी ऐसा बना दे कि लोग हमारी पैरवी कर के परहेज़गार बन जाया करें। हासिल यह कि हम न सिर्फ़ खुद सही रास्ते पर चलने वाले बने, बल्कि दूसरों के लिए भी सही रास्ता चलाने वाले हों और हमारा ख़ानदान तक्वा व तहारत में हमारी पैरवी करे।

**75**

أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۝

यानी जन्नत में ऊपर के दर्जे मिलेंगे और फ़रिश्ते दुआ व सलाम कहते हुए उनका स्वागत करेंगे और आपस की मुलाकातों में यही कलिमात सलाम व दुआ उनकी इज़्ज़त के लिए इस्तेमाल होंगे।

**76**

خَالِدِينَ فِيهَا حَسَنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝

यानी ऐसी जगह थोड़ी देर ठहरना मिले तो भी ठीक है, उन का तो वह घर होगा।

**77**

قُلْ مَا يَعْبُؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزِمَامًا ۝

यानी तुम्हारे नफ़ा व नुक़सान की बातें सुझा दें। बन्दे को चाहिए कि घमण्डी और बेबाक न हो, अल्लाह को उसकी क्या परवाह। हाँ उसकी दुआ पर रहम करता है, न दुआ करोगे और बड़े बने रहोगे तो मुक़ाबिले के लिए तैयार हो जाओ, जो अन्करीब होने वाला है।

यानी काफ़िर जो हक़ को झुठला चुके यह झुठलाना अन्करीब उनके गले का हार बनेगी, उसकी सज़ा से किसी तरह छुटकारा न होगा। आख़िरत की हमेशा हलाकत तो है ही दुनिया में भी अब जल्द मुठभेड़ होने वाली है यानी लड़ाई जिहाद। चुनौचे ‘ग़ज्व-ए-बद्र’ में इस मुठभेड़ का नतीजा देख लिया।





(भाग-26)

सूर-ए-शुअरा

(सूर: नं.26)

## तफ़सीर सूर: शुअरा

### नाम-

यह नाम आयत नं० (224) وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ से लिया गया है। 'साहिबे मुहासिनुत्तन्ज़ील' ने लिखा है कि इस आयत में रसूलों और शुअरा (कवियों) के दर्मियान फ़र्क़ बयान कर के नबी करीम (सल्ल०) के मक़ाम को शायरों (कवियों) से बुलंद साबित किया है। इसी मुनासिबत से इस सूर: का नाम 'अल् शुअरा' रख दिया गया है।

### ज़माना नुज़ूल-

आयात नं० (224) से लेकर (227) तक और आयत नं० (197) के अलावा बाकी पूरी सूर: मक्की दौर में नाज़िल हुई थी। ज़माने जाहिलियत में दो शायरों ने एक दूसरे की मुख़ालिफ़त की तो यह आयत नाज़िल हुई। कुछ रिवायतों के मुताबिक़ पूरी सूर: मक्की है।



## आयत नं० 1 से 33 तक

طَسَمَ ۚ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۚ لَعَلَّكَ بَاحِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۚ إِن نَّشَأْ نُزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۚ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۚ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ أَخْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ وَإِذْ كَادَىٰ رَبُّكَ مَوْسَىٰ أَنْ أَنْتَ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۚ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ۚ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۚ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ۚ وَلَهُمْ عَلَىٰ ذُنُوبٍ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۚ قَالَ كَلَّا ۚ فَادْهَبْ بِآلِيَّتِنَا ۚ إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَعِينُونَ ۚ فَاتَّبَعَ فِرْعَوْنُ قَوْلَهُ ۚ إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ قَالَ أَلَمْ تُكْرِتْكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ۚ وَفَعَلْتَ فَعَلَتِكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ قَالَ فَعَلْتُهَا إِذَا وَأَنَا مِنَ الصَّادِقِينَ ۚ فَقَدَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۚ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَدَدْتُ بِبَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ قَالَ رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۚ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ۚ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۚ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۚ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۚ قَالَ لِمَنِ اتَّخَذَتِ الْهَٰؤُلَاءِ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَعَلَّكَ أَنْتَ الْغَافِلُونَ ۚ قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُبِينٍ ۚ قَالَ فَأْتِ بِهِ ۚ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۚ فَاتْلُ عَصَا ۚ فَإِذَا هِيَ بَعَابٌ مُبِينٌ ۚ وَنَزَعُ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظِيرِينَ ۚ

### अनुवाद-

① ता- सीन्- मीम्; ② यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं। ③ शायद, आप अपने आप को हलाक कर देंगे, इस पर कि यह लोग ईमान नहीं लाते। ④ अगर 'हम' चाहें तो इन पर आसमान से ऐसी निशानी उतार दें, कि इनकी गर्दन उनके आगे झुक जाएँ। ⑤ और उनके रहमान के पास से जो भी ताज़ा नसीहत आती है, वे उससे मुँह फेर ही लेते हैं। ⑥ अब जबकि वे झुठला चुके हैं, तो जल्द ही उन्हें उसकी हकीकत मालूम हो जाएगी, जिसका वे मज़ाक उड़ाते रहे हैं। ⑦ क्या उन्होंने ज़मीन पर निगाह नहीं डाली! कि 'हमने' उसमें कितने ही किस्म की उम्दा चीज़ें उगार्यीं? ⑧ बेशक इसमें निशानी है, मगर इनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। ⑨ और तुम्हारा 'रब' ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), रहम करने वाला है। ⑩ और जब तुम्हारे 'रब' ने मूसा को पुकारा कि "ज़ालिम कौम के पास जाओ। ⑪ फिरऔन की कौम के पास- क्या यह डरते नहीं?" ⑫ (मूसा ने) कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे डर है कि वह मुझे झूठा समझें, ⑬ और मेरा सीना घुटता है, और मेरी ज़बान नहीं चलती, तो हारून की ओर भी सन्देश (रिसालत) भेज; ⑭ और मुझ पर उन लोगों का एक गुनाह भी है, इसलिए मुझे डर है कि मुझे क़त्ल कर देंगे।" ⑮ कहा, "हरगिज़ नहीं! तुम दोनों 'हमारी' निशानियाँ लेकर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे।" ⑯ तो तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और कहो, "हम सारे संसार के 'रब' के भेजे हुए हैं; ⑰ कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे।" ⑱ (फिरऔन ने) कहा, "क्या हमने तुझे जबकि 'तू' बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं? और तूने अपनी उम्र के बरसहा-बरस हमारे यहाँ (नहीं) गुज़ारे; ⑲ और 'तूने' वह जो हरकत की थी, वह तो की,

और तू बड़ा ही नाशुक्रा है।” (20) (मूसा ने) कहा, “ऐसा तो उस समय हो गया था जबकि मैं ख़ताकारों में था; (21) तो जब मुझे तुम्हारा डर हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया, फिर मेरे ‘रब’ ने मुझे हुक्म किया, और मुझे रसूलों में शामिल कर लिया; (22) और यही एहसान है जो तू मुझ पर रखता है कि ‘तूने’ बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है।” (23) फिरऔन ने कहा, “और यह सारे संसार का ‘रब’ क्या होता है?” (24) कहा, “आसमानों और ज़मीन का रब और उनके बीच की तमाम चीज़ों का, अगर तुम्हें यकीन हो।” (25) (फिरऔन ने) अपने आस-पास वालों से कहा, “क्या तुम सुनते नहीं हो?” (26) कहा, “तुम्हारा ‘रब’ और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब।” (27) (फिरऔन ने) कहा, तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिल्कुल पागल है।” (28) (मूसा ने) कहा, “पूरब और पश्चिम का ‘रब’ और जो कुछ इन दोनों के बीच में है उनका भी, अगर तुम कुछ अक्ल रखते हो।” (29) (फिरऔन) बोला, “अगर तूने मेरे सिवा किसी और को मअबूद (उपास्य) बनाया तो मैं तुझे बन्दी बना कर रहूँगा।” (30) (मूसा ने) कहा, “क्या अगर मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ लाऊँ तब भी?” (31) बोला, “अच्छा तो वह ले आ, अगर तू सच्चा है।” (32) फिर उन्होंने अपना असा (लाठी) डाल दिया, तो उसी वक़्त एक खुला हुआ साँप बन गया। (33) और उन्होंने अपना हाथ बाहर खींचा, तो (क्या देखते हैं कि) वह देखने वालों को सफ़ेद नज़र आने लगा।

## आयत नं० 1 से 33 तक की व्याख्या

1-2

طَسَمَ ۖ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝

सूरतों के शुरुआत में जो शब्द मुक़्तआत आए हैं उन का मअना व मतलब अल्लाह को ही बेहतर मालूम है, जिस का ज़िक्र पिछली आयतों में आ चुका है। आयत नं० (2) में कुर्आन करीम की अज़मत की तरफ़ इशारा किया गया है, इसलिए इशारा करीब ‘हाज़ा’ के बजाए इशारा बअ़ीद ‘तिलूक’ इस्तेमाल किया गया है और इस किताब अज़ीम (कुर्आन) की तअ़रीफ़ बयान की गई है कि यह हक़ व बातिल और हिदायत व गुमराही के दर्मियान फ़र्क पैदा करती है।

3-4

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ إِن شَأْنُنَا إِلَهُ عَالَمِينَ ۝ فَوَلَّكَ اللَّهُ لَهَا خُضُعِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को नसीहत की गई है कि अगर मुशिरकीने मक्का आप पर और कुर्आन करीम पर ईमान नहीं लाते हैं तो इस ग़म में अपने आप को हलाक न कीजिए। आप का काम तब्तीग़ करना है जिसे आप ने अन्जाम दे दिया, हिदायत देना आप का काम नहीं है।

अगर हम चाहते कि उन्हें ईमान पर मजबूर कर दें तो हमारे लिए यह कोई बड़ी बात न थी, हम आसमान से कोई ऐसी निशानी भेज देते जिसे देखकर वह ईमान लाने पर मजबूर हो जाते।

जैसे किसी पहाड़ या किसी बड़े सितारे या किसी फ़रिश्ते को उन के सिरों के ऊपर ले आते और मारे ख़ौफ़ व दहशत के उन की गर्दनें झुक जातीं कि कब उन के सिरों पर गिरकर उन्हें हलाक कर दे और अपने को इस हाल में पाकर मजबूरन ईमान ले आते, ऐसा ईमान उन के किसी काम का नहीं होगा।

### 5-6 وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرِ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدِّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۖ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْزِلٌ مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

इस में कुफ़ारे मक्का के इन्कार व हठधर्मी को बयान किया जा रहा है कि कुर्आन करीम नाज़िल होता रहा। एक आयत के बाद दूसरी आयत और एक सूरः के बाद दूसरी सूरः लेकिन वह लोग कुर्आन करीम और नबी (सल्ल०) को झुठलाते ही रहे, उन की हालत में कोई तब्दीली नहीं आई।

सूरः अम्बिया आयत नं० (3) में भी लगभग इन्हीं शब्दों में अल्लाह तआला ने मुशिरकीने मक्का की कुर्आन करीम से नफ़रत और दूरी बयान की है। आयत नं० (6) में उन के इस काफ़िराना रवैये पर धमकी दी गई है कि चूंकि उन्होंने कुर्आन को झुठला दिया है इसलिए उन पर वह अज़ाब आकर रहेगा, जिस का यह मज़ाक़ उड़ाते थे।

### 7-8 أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنتَبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَتَرُفَهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

अगर मुशिरकीने मक्का अल्लाह तआला की कुद़रत पर ग़ौर करते तो उन्हें यकीन हो जाता कि उस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं है। मिसाल के तौर पर ज़मीन और उस में पैदा होने वाले पौधों को लीजिए कि अल्लाह तआला ने अपनी कुद़रत से विभिन्न किस्म के बेशुमार मुफ़ीद पौधे और फल पैदा किये हैं जो उस के कमाले कुद़रत की दलील हैं, लेकिन अल्लाह पर ईमान वह अज़ीम नेअमत है जिस की तौफ़ीक़ अल्लाह उन लोगों को नहीं देता जो उस की निशानियों में ग़ौर नहीं करते और जो अपने अख़्तियार से कुफ़ को ईमान पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) देते हैं।

### 9 وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के कहा गया है कि आप सब्र के साथ अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करते रहें और परेशान न हों, अल्लाह उन काफ़िरों से बदला लेने पर पूरी तरह क़ादिर है क्योंकि वह हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभावी) है और वह अपने नेक बन्दों पर बड़ा मेहरबान है।

### 10 وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तसल्ली और मुशिरकीने मक्का की तम्बीह के लिए सात नबियों और उन की क़ौमों के वाकिआत बयान किये हैं। यह किस्से आप (सल्ल०) की तसल्ली के लिए थे कि जिस तरह कुरैश ने आप को झुठला दिया था, उसी तरह पिछली क़ौमों ने भी अपने नबियों को झुठला दिया था और उन्होंने दअ़वत की राह में तक्लीफ़ों पर सब्र किया था।

आख़िर में अल्लाह तआला ने उन ज़ालिम क़ौमों को हलाक कर दिया और मुशिरकीन के लिए तम्बीह इस तौर पर की कि कहीं फिरऔनियों और दूसरी काफ़िर क़ौमों की तरह तुम्हें भी हलाक न कर दिया जाए।

### 11-13 قَوْمٌ فَرَعُونَ ۚ إِلَّا يَخْتَفُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْظِلُّ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ۝

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि आप के रब ने मूसा को

कोहेतूर के पास आवाज़ दी (जिस की तफ़सील सूर: ताहा आयत नं० (11) और इसके बाद आने वाली आयतों में गुज़र चुकी है) और कहा कि आप फिरऔन की ज़ालिम कौम के पास जाइये और उन से कहिये, क्या तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ़ नहीं है कि जो कुफ़्र व सरकशी पर इस्सार कर रहे हैं और 'बनी इस्राईल' पर जुल्म व सितम ढा रहे हैं? तो हज़रत मूसा (अलै०) ने इस अज़ीम ज़िम्मेदारी को सामने रखते हुए अपनी कमज़ोरी का इज़हार किया और अल्लाह से दुआ की कि ऐ मेरे रब! मुझे डर है कि वह लोग मुझे झुठला देंगे जिस के नतीजे में मैं तंग दिल हो जाऊँगा और मेरी ज़बान में जो लुक्नत है उस की वजह से पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी नहीं पूरा कर सकूँगा, इसलिए मेरे रब! तू जिब्रईल को मेरे भाई हारून के पास वह्य देकर भेज दे, ताकि वह भी तेरा रसूल हो जाए और मेरी मदद करे।

सूर: ताहा आयत नं० (29/30) में है **وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اٰهْلِ بَيْتِيْ** “मेरे घराने में से मेरा एक सिक्रेट्री मुक़र्रर कर दीजिए अर्थात मेरे भाई हारून को मुक़र्रर कर दीजिए। “मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि हज़रत मूसा (अलै०) जब नबी बनाये गये तो वह शाम में थे और हज़रत हारून (अलै०) मिस्र में थे।

**14-16**

**وَلَهُمْ عَلٰى ذَنْبٍ فَاَعَاَفَ اَنْ يَقْتُلُوْنَ ۚ قَالَ كَلَّا فَاَذْمٰ بِاٰيٰتِنَا اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۚ فَاتٰنِيْا فِرْعَوْنَ فَقُوْلُوْا اِنَّا رُسُلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝**

हज़रत मूसा (अलै०) ने यह भी कहा, ऐ मेरे रब! मैंने किब्तियों के हक़ में पहले एक गुनाह भी किया है यानी जब मैं मिस्र में था तो ग़लती से एक किबती मेरे हाथों मारा गया, तो मुझे डर है कि वह लोग मुझे कहीं क़त्ल न कर दें और पैग़ाम पहुँचाने का काम न कर सकूँ। अल्लाह तआला ने कहा, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि वह लोग आप को क़त्ल कर दें। आप दोनों हमारे 'मोअज़िज़ात' (चमत्कार) लेकर जाइये हम आप के साथ हैं और फिरऔन को तौहीद (अद्वैतवाद) की दअवत देते वक़्त आप दोनों की जो बात होगी उसे हम सुनते रहेंगे।

सूर: ताहा आयत नं० (46) में आया है **اِنِّىْ مَعَكُمْ اَسْمِعُ وَاَرٰى** “बेशक मैं तुम दोनों के साथ हूँ सब कुछ सुनता और देखता हूँ”।

इस तरह बात करने का मक़सद हज़रत मूसा (अलै०) को हिम्मत दिलाना और अल्लाह की ओर से उन्हें यकीन करवाना था कि वह उन दोनों की हिफ़ाज़त करता रहेगा।

**17**

**اَنْ اَرْسِلَ مَعَنَا بَنٰى اِسْرٰءِيْلَ ۝**

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, आप दोनों फिरऔन के पास जाइये और उस से कहिये कि हम दोनों रब्बुल् आलमीन के पैग़म्बर हैं। 'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि दोनों लोग फिरऔन से मिलने के लिए रवाना हो गए लेकिन एक साल तक उन्हें उस के दरबार तक जाने की इजाज़त नहीं मिली। अल्लाह ने फ़रमाया, आप दोनों उस से यह भी कहिए कि 'बनी इस्राईल' को हमारे साथ मुल्क शाम जाने की इजाज़त दे दो।

'मुफ़स्सिरीन' लिखते हैं कि 'बनी इस्राईल' का मिस्र में क़याम चार सौ (400) साल तक था।



फिरऔन और फिरऔनियों ने उन्हें गुलाम बना रखा था और जब वहाँ से हज़रत मूसा (अलै०) के साथ रवाना हुए तो उन की तज़्वाद कई लाख थी।

**18-19**

قَالَ الْمَلِكُ رَبِّكَ فِينَا وَلَيْدًا وَلَيْدًا فِينَا مِنْ غَيْرِكَ سَيِّئِينَ ۖ وَفَعَلْتَ فَعَلْتَنكَ الْبَنَى فَعَلْتَ  
وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۖ

घमण्डी और अपने आप को मअबूद (उपास्य) समझने वाला फिरऔन यह कब गवारा कर सकता था कि उसी के घर में परवरिश पाया हुआ एक मामूली इस्राईली बच्चा बड़ा होकर उस के सामने खड़ा हो, रसूल होने का दावा करे और बनी इस्राईल की आज़ादी की माँग करे। इसीलिए उस ने बड़े हिकारत के अन्दाज़ में कहा कि क्या तू वही नहीं है जो मेरे घर में पला बढ़ा था और एक मुद्दत तक मेरे साथ रहता था हमारी रोटी खाता रहा और तूने हमारे दरबार के एक आदमी को भी क़त्ल कर दिया था? हकीकत यह है कि तू बड़ा एहसान फ़रामोश है।

**20-22**

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذْ أَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ۖ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ  
وَبِتِلْكَ نِعْمَةُ تِلْكَ عَلَى أَنْ عَبَّدْتَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ

हज़रत मूसा (अलै०) ने इस के जवाब में कहा, मैं नहीं समझता था कि ठोकर लगने या घूँसा मारने से आदमी मर जाएगा, मेरा मक्सद उसे क़त्ल करना हरगिज़ न था। मैं तुम्हारे इलाके से भागकर मद्यन चला गया था इस डर से कि कहीं तुम लोग मुझे क़त्ल न कर दो।

सूर: क़सस आयत नं० (20) में आया है कि फिरऔन के ही एक मर्द मोमिन ने हज़रत मूसा (अलै०) को ख़बर दी थी कि फिरऔन के दरबार में उन के क़त्ल की साज़िश हो रही है, इसलिए बेहतर यह है कि वह यहाँ से निकल कर कहीं और चले जाएँ। चुनाँचे हज़रत मूसा (अलै०) वहाँ से निकल कर मद्यन चले गये।

हज़रत मूसा (अलै०) ने कहा, मुझे अल्लाह ने हिक्मत व नुबूव्वत से नवाज़ा है और अपना रसूल बनाया है और मुझ पर अपने जिस एहसान का तुम ज़िक्र कर रहे हो तो वह ज़िक्र के लायक नहीं है, इसलिए कि तुम ने तो मेरी कौम यानी बनी इस्राईल को अपना गुलाम बना रखा है। मुझे तो तुम ने इसलिए छोड़ दिया था कि तुम ने अपने गुमान के मुताबिक़ मुझे अपना बेटा बनाना चाहा था, यह भी तुम्हारी ज़रूरत और गर्ज़ थी।

आयत का एक मतलब यह भी है कि जिस एहसान का तुम ज़िक्र कर रहे हो उस का मोहताज मैं इसलिए हो गया था कि तुम ने बनी इस्राईल को अपना गुलाम बना रखा है, इन दिनों तुम उन के लड़कों को क़त्ल कर देते थे। अगर तुम यह जुल्म न करते तो मेरी माँ मुझे दरिया-ए-नील में डाल देने पर मजबूर न होती और मैं तुम्हारे घर न पहुँचता और आज तुम्हारे यह तअने न सुनने पड़ते।

**23-28**

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۚ قَالَ لَنْ  
حَوْلَةَ إِلَّا سَتْمِئُونَ ۚ قَالَ رَبِّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۚ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ

لَسْجُونٌ ۝ قَالَ رَبُّ الشَّرِيقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

### फिरऔन और हज़रत मूसा (अलै०) की बातचीत-

फिरऔन ने पूछा, वह रब्बुल् आलमीन जिसका तुम दोनों रसूल होने का दावा कर रहे हो वह कौन है और उस की क्या हकीकत है? मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि फिरऔन ने इस अंदाज़ से घमण्ड और अल्लाह तआला की शान में गुस्ताखी ज़ाहिर की थी।

हज़रत मूसा (अलै०) ने जवाब दिया कि 'रब्बुल् आलमीन' वही है जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान की हर चीज़ का रब है और अगर तुम किसी चीज़ पर यकीन करना चाहते हो तो यह बात और ज़्यादा यकीन करने की है, इसलिए कि उस के दलायल सूरज की तरह रौशन है।

फिरऔन ने उन का यह जवाब सुनकर अपने सरदाराने कौम और हुक्मत की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और घमण्ड के साथ कहने लगा कि ज़रा तुम लोग इस की बात तो सुनो, मैं इस से इस के रब की हकीकत पूछ रहा हूँ और इस के काम बना रहा हूँ? यानी मेरे अलावा कोई रब्बुल् आलमीन है ही नहीं, तो वह कैसे अपने किसी दूसरे रब की हकीकत बता सकता है?

हज़रत मूसा (अलै०) ने जब देखा कि यह जानबूझ कर अपने आप को और अपनी पूरी कौम को धोका दे रहा है और हकीकत का एतिराफ़ करने से कतूरा रहा है, तो उस की और हाज़िरीन-ए-मजलिस की आँखें खोल देने के लिए उन्होंने कहा कि वही जो तुम्हारा रब है और तुम्हारे पिछले बाप व दादा का रब है। हज़रत मूसा (अलै०) ने साफ़ कह दिया कि ऐ फिरऔन! तुम रब्बुल् आलमीन के एक हकीर (तुच्छ) बन्दे हो, रब नहीं और ऐ फिरऔन के मानने वालो! तुम रब्बुल् आलमीन को छोड़कर उस के एक घटिया बन्दे यानी फिरऔन की अ़िबादत (उपासना) क्यों करते हो? फिरऔन जब बिल्कुल लाजवाब हो गया तो अपनी कौम को मुतमईन (संतुष्ट) करने के लिए कहने लगा कि मूसा पागल हो गया है और उस की बात पागलों की सी है।

हज़रत मूसा (अलै०) ने अपनी बात मुकम्मल करते हुए कहा कि 'रब्बुल् आलमीन' वह है जो पूरब व पश्चिम और इन दोनों के दर्मियान की हर चीज़ का रब है और यह बात इतनी स्पष्ट है कि थोड़ी सी अक्ल वाला आदमी भी इसे समझता है, यानी ऐ फिरऔन! केवल तुम्हारी अक्ल मारी गई है कि इतनी साफ़ सुथरी बात तुम्हें समझ में नहीं आती है।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि हज़रत मूसा (अलै०) ने पूरब व पश्चिम का रब होने की बात इसलिए की ताकि फिरऔन के दिमाग़ में यह बात आ सके कि सूरज को पूरब से निकालने और पश्चिम में डुबोने पर उन का उपास्य फिरऔन ताक़त नहीं रखता है तो फिर वह उपास्य कैसे हो सकता है? और ताकि फिरऔन को बता सकें कि तुम केवल एक मुल्क के बादशाह हो, दूसरे मुल्कों पर तुम्हारा कोई अख़्तियार नहीं है और रब्बुल् आलमीन तो वह है जिस की बादशाही पूरब से लेकर पश्चिम तक सारे आलम पर है।

29-31

قَالَ لَيْنَ اتَّخَذَتِ الْإِثْمَانِي لَجْعَلْتُكَ مِنَ السَّجُونِينَ ۝ قَالَ أَوْلَوْجُتُكَ بِئْسَ مَبِينٌ ۝ قَالَ قَاتِ

### يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن كُنتُمْ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ

फ़िरऔन जब हज़रत मूसा (अलै०) की इस बात से बिल्कुल लाजवाब हो गया और उसे यकीन हो गया कि हज़रत मूसा अपनी दअवत को फैलाने के लिए सच्चे दिल के साथ आगे बढ़ रहे हैं तो डराने और धमकाने वाला तरीका अख़्तियार किया, जो हमेशा घमण्डियों का तरीका रहा है जिन के पास अपने दावे की सच्चाई के लिए दलायल नहीं होते।

उस ने कहा कि अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को अपना मअबूद (उपास्य) बनाया तो मैं तुम्हें जेल के अन्धेरी कोठरी में डाल दूँगा जहाँ मर कर सड़ गल जाओगे।

कहते हैं कि फ़िरऔन की जेल क़त्ल से बदतर थी, जहाँ हर आदमी को ज़मीन के नीचे एक तंग और गहरी खाई में डालकर छोड़ दिया जाता था, यहाँ तक कि उसी में वह मर जाता था।

हज़रत मूसा (अलै०) ने इस का जवाब सुनकर समझ लिया कि फ़िरऔन उन की दलीलों के सामने बिल्कुल लाजवाब हो गया है और उस में कमज़ोरी आ गई है, इसलिए उन्होंने नर्म कलाम अख़्तियार करते हुए कहा कि मैं तुम्हारे सामने अल्लाह तआला का मोअजिज़ा (चमत्कार) पेश करूँ जो साबित कर देगा कि मैं अपने दावे में सच्चा हूँ? तो फ़िरऔन ने कहा हाँ, अगर सच्चे हो तो पेश करो।

### 32-33

### فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۖ وَنَزَعُ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظَرِ ۚ

हज़रत मूसा (अलै०) ने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी तो एक सचमुच साँप बनकर दौड़ने लगा। कहते हैं कि वह साँप कुछ देर के बाद फ़िरऔन की तरफ बढ़ने लगा तो उस ने डर के मारे हज़रत मूसा (अलै०) से कहा कि तुम्हारे उस रब की क़सम जिस ने तुम्हें भेजा है इसे पकड़ लो, हज़रत मूसा (अलै०) ने उसे पकड़ लिया तो वह लाठी बन गया और उन्होंने अपने गिरेबान से अपना हाथ निकाला तो वह बग़ैर किसी बीमारी के ख़ूबसूरत चमकता हुआ नज़र आने लगा।



## आयत नं० 34 से 68 तक

قَالَ لِلْمَلَاحِظَةِ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ عَلَيْهِمْ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۚ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ خَشِيرِينَ ۖ يَأْتُواكَ بِكُلِّ سَحَابٍ عَلَيْهِمْ ۖ فَجَمِيعَ السَّحَرَةِ لِيَمِيقَاتِ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ۖ وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَبِعُونَ ۚ لَعَنَّا نَجِيعَ السَّحَرَةِ ۖ إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَهِنَ لَنَا لَبَجْنَا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۖ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا أَتَيْنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوَامَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۖ فَالْقَوْا جِبَالَهُمْ وَعَصِيَّتَهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۖ فَالْقَى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۖ فَالْقَى السَّحَرَةُ سِحْرَ مُوسَى ۖ وَقَالَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۖ قَالَ أَمْنُكُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَا تَقْطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خَلْفٍ ۖ وَلَا وَصَلَتْكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ قَالُوا لَهْزِيمٌ ۖ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۖ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا ۖ إِنَّ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي ۖ إِنَّكُمْ مُتَّبَعُونَ ۖ فَارْسَلْ فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ خَشِيرِينَ ۖ إِنْ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۖ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ۖ وَإِنَّا لَجَبِيْعٌ خَذِرُونَ ۖ فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَدَّتِ وَعُيُوبٍ ۖ وَكُنُوزٍ وَمَقَامِرَ كَرِيمٍ ۖ كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۖ فَلَمَّا تَرَاءَى الْجَمْعَيْنِ قَالَ اضْطَبُّ مُوسَى إِنَّا لَنَذْكُرُونَ ۖ قَالَ كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۖ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْيَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالظَّوْدِ الْعَظِيمِ ۖ وَأَلْقَيْنَا الْفُخْرَيْنِ ۖ وَأَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۖ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

### अनुवाद-

(34) (फिरऔन ने) अपने आस-पास के सरदारों से कहा, यह कोई बड़े इल्म वाला जादूगर है; (35) यह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल बाहर करे, तो तुम्हारी क्या राय है? (36) उन्होंने कहा, “इसको और इसके भाई को अभी मोहलत दीजिए, और तमाम शहरों में बुलाने वालों को भेज दीजिए, (37) कि वह तमाम माहिर जादूगरों को तुम्हारे पास ले आए।” (38) तो जादूगर निश्चित दिन, निश्चित समय पर जमा कर लिए गये; (39) और लोगों से कहा गया, “तुम (सब) भी इकट्ठा होगे?” (40) ताकि हम जादूगरों के पीछे चलें, अगर वह विजयी हों। (41) तो जब जादूगर आए, उन्होंने फिरऔन से कहा, “क्या हमें कोई इनआम भी मिलेगा, अगर हम विजयी हुए?” (42) (फिरऔन ने) कहा, “हाँ, और तुम तो उस समय करीबी लोगों में से हो जाओगे।” (43) (मूसा ने) उनसे कहा, “डाल दो जो कुछ तुम्हें डालना है।” (44) तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं और बोले, “फिरऔन के इज्जत की कसम! हम ही विजयी रहेंगे।” (45) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीजों को, जो जादूगरों ने बनाई थीं, निगलने लगी; (46) तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े। (47) वे कहने लगे, “हम सारे संसार के ‘रब’ पर ईमान ले आए; (48) मूसा और हारून के रब पर!” (49) (फिरऔन ने) कहा, “तुमने उसको मान लिया, इससे पहले कि मैं इजाज़त देता! बेशक यह तुम सब का बड़ा है, जिसने तुम सबको जादू सिखाया है, तो अभी तुम सब को मालूम हो जाएगा! मैं तुम्हारे हाथ और पैर, विपरीत (मुखालिफ) दिशाओं के, कटवा दूँगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा।” (50) उन लोगों ने कहा, “कुछ हरज नहीं, हम तो अपने ‘रब’ ही

की ओर पलट कर जाने वाले हैं; (51) बेशक हमें तो उम्मीद है कि हमारा 'रब' हमारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, क्योंकि कि हम सबसे पहले ईमान ले आए।" (52) और 'हमने' मूसा की ओर वृह्य की, "हमारे बन्दों को रातों-रात लेकर निकल जाओ, निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।" (53) तो फिरऔन ने बुलाने वालों को शहरों में भेजा, (54) कि "यह गिरे-पड़े थोड़े लोगों का एक गिरोह है; (55) और यह हमें गुस्सा दिला रहे हैं, (56) और हम सब साज़ और सामान के साथ हैं।" (57) तो 'हमने' उनको बागों, और चशमों (स्रोतों) से निकाला; (58) और खज़ानों और बेहतरीन मकानों से; (59) ऐसा ही 'हम' करते हैं और इनका वारिस, 'हमने' बनी इस्राईल को बना दिया। (60) तो उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त पीछा किया। (61) फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़े गये।" (62) (मूसा ने) कहा, "हरगिज़ नहीं! मेरे साथ मेरा 'रब' है, 'वह' ज़रूर मुझे राह दिखाएगा।" (63) तो 'हमने' मूसा की ओर वृह्य की, "कि अपना अ़सा (लाठी) समुद्र पर मारो," तो वह फट गया और हर टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की तरह हो गया। (64) और 'हम ने' वहाँ दूसरों को करीब कर दिया। (65) और 'हमने' मूसा और उन सब को जो उनके साथ थे, बचा लिया। (66) फिर दूसरों को गर्क (डुबो) कर दिया। (67) बेशक इसमें निशानी है, मगर इस में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (68) और आप का 'रब' ही है जो बड़ी ताक़त वाला, रहम वाला है।

### आयत नं० 34 से 68 तक की व्याख्या

34-40

قَالَ لِلْمَلَاحِقَةِ إِنَّ هَذَا السَّحْرَ عَلَيْكُمْ ۖ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسُحْرِهِ ۖ فَإِذَا تَأَمَّرُوا ۖ  
قَالُوا أُنْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۖ يَا تَوَكُّ بِكُلِّ شَعَرٍ عَلِيمٌ ۖ فَمَجِيعَ السَّحَرَةِ لِبَيْقَاتِ  
يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۖ وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَبِعُونَ ۖ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا هُمْ الْعَالِمِينَ ۖ

फ़िरऔन ने दोनों निशानी देखकर महसूस किया कि यह कोई चमत्कार है, लेकिन उस ने अपने आस-पास फ़िरऔनियों को धोखे में डालने के लिए कहा, यह तो कोई बहुत बड़ा जादूगर है और इस का मक्सद यह है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हारी ज़मीन पर कब्ज़ा जमा ले और तुम्हें उस से बेदख़ल कर दे। उस ने यह बात हज़रत मूसा (अलै०) के ख़िलाफ़ उन के दिलों में नफ़रत फैलाने के लिए कही ताकि लोग उन की बात न मानें। फ़िरऔन ने कहा कि इस के बारे में तुम लोगों की क्या राय है?

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि यही वह फ़िरऔन था जो किसी को ख़ातिर में नहीं लाता था और अब जबकि उस की रुबूबियत ख़त्म होने को थी और उस की किस्मत का सितारा गर्दिश में था तो वह लोगों की ताईद हासिल करने और उन्हें अपनी तरफ़ मायल करने के लिए एहसास दिला रहा था कि वह लोग इस लायक हैं कि उन से मशवरह किया जाए।

फ़िरऔनियों ने उस से कहा कि आप इन दोनों भाईयों के बारे में फैसला करने में जल्दी न कीजिए और अपना आर्डर दे दीजिए कि मुल्क के तमाम माहिर जादूगरों को इकट्ठा किया जाए चुनाँचे ऐसा ही हुआ और उस के हुक्म के मुताबिक़ फ़िरऔनियों की ईद के दिन सुबह के वक़्त सारे जादूगर जमा हो



गए और तमाम लोगों को वक़्त पर जमा हो जाने की ख़ूब तर्गीब दिलाई गई, ताकि हज़रत मूसा और जादूगरों का मुक़ाबिला अपनी आँखों से देखें और हज़रत मूसा की हार का नज़ारा करें और उस पर ईमान ले आएँ लेकिन उन की इस कोशिश से हज़रत मूसा (अलै०) की ख़्वाहिश पूरी हुई कि जब अल्लाह का मोअज़िज़ा ज़ाहिर हो तो सब लोग उसे देखें ताकि हक़ व बातिल उन की आँखों के सामने ज़ाहिर हो जाए।

**41-42** فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا لَمَعِبَدُونَ ۖ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ كُفْرًا كَبِيرًا ۚ قَالُوا نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَبِثَ الْبَقَرَبِينَ ۖ

जब तमाम जादूगर मुक़ाबिले के मैदान में इकट्ठा हो गए तो उन्होंने फिरऔन को अपनी हैसियत का एहसास दिलाने और मौके से फ़ायदा उठाने के लिए उस से पूछा कि अगर हम मूसा पर ग़ालिब आ गए तो क्या हमें इन्आम से नवाज़ा जाएगा? तो फिरऔन ने जवाब दिया कि तुम्हें तुम्हारी उज़ूरत मिलेगी और मज़ीद तुम्हें दरबार के ख़ास लोगों में शामिल कर लिया जाएगा।

**43-45** قَال لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَا أَنْتُمْ مُلْكُونَ ۖ قَالُوا جِبَالُهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۖ قَالَتْ لَهُمْ مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۖ

जादूगरों ने हज़रत मूसा (अलै०) से पूछा कि पहले तुम अपनी जादूगरी दिखाओगे या हम लोग दिखाएँ? हज़रत मूसा (अलै०) ने उन से कहा कि पहले तुम ही लोग जो करना चाहते हो करो, तो जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ मैदान में डाल दीं और डालते वक़्त फिरऔन के इज़ज़त की क़सम खाकर कहा कि यकीनन मैदान हमारे हाथ में रहेगा, चुनाँचे देखते ही देखते पूरा मैदान साँपों से भर गया और हज़रत मूसा (अलै०) यह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखकर दिल में डर गए तो अल्लाह तआला ने उन्हें वस्य के जरिये हुक्म दिया कि आप अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दीजिए। लाठी का ज़मीन पर डालना था कि वह एक डरावना साँप बनकर जादूगरों के तमाम झूठे साँपों को निगल गई।

**46-51** قَالَتْ السَّحَرَةُ لِمِثْلِهِ ۖ قَالُوا أَمَّا رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۖ قَالُوا أَمْنُكُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمْ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَهُ قِطْعَنٌ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلُكُمْ مِنْ خِلَافٍ ۖ وَلَا وَصْلَ بَيْنَكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ قَالُوا لَأَصْنُرَ ۖ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۖ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا ۖ إِنَّ كُفْرَ الْأَوَّلِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ

जादूगर यह मन्ज़र देखकर उसी वक़्त ईमान ले आए और सज्दे में गिर गए उन्हें यकीन हो गया कि यह कोई जादू नहीं बल्कि अल्लाह का अ़ता किया हुआ मोअज़िज़ है और मूसा जादूगर नहीं बल्कि अल्लाह के रसूल हैं।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि वहाँ जो कुछ हुआ वह इस बात की दलील थी कि जादू से चीज़ों की हकीकत नहीं बदल जाती बल्कि आँखों के सामने एक ख़याली चीज़ पेश की जाती है। जादूगरों ने जादू के फ़न में महारत रखने की वजह से फ़ौरन समझ लिया कि हज़रत मूसा (अलै०) ने जो कुछ पेश किया



है वह जादू नहीं बल्कि मोअजिज़ह है। जादूगरों ने कहा हम रब्बुल् आलमीन पर ईमान ले आए हैं, जो हज़रत मूसा और हारून का रब है।

फ़िरऔन जादूगरों के अचानक ईमान ले आने से डर गया कि कहीं पूरी कौम न ईमान ले आए और वह तन्हा रह जाए इसलिए उस ने धमकी देते हुए जादूगरों से कहा कि तुम लोग मेरी इजाज़त के बिना हज़रत मूसा पर कैसे ईमान ले आए हो। अब मुझे मालूम हुआ कि मूसा ही वह बड़ा जादूगर है जिस ने तुम को जादू सिखाया है।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि फ़िरऔन अगरचे किसी ऐसी बात का एतिराफ़ नहीं करना चाहता था जिस से हज़रत मूसा की बड़ाई साबित हो, लेकिन यहाँ उस का मक्सद आम लोगों को यह बताना था कि हज़रत मूसा भी एक जादूगर है और उसी ने दूसरों को जादू की तअलीम दी है यानी यह कोई मोअजिज़ह नहीं है जो हज़रत मूसा के रब ने उसे अता किया है।

फ़िरऔन ने कहा, तुम्हें जल्द ही अपने किये का अन्जाम मालूम हो जाएगा। मैं तुम में से हर एक का एक हाथ और दूसरी ओर का एक पाँव काट दूँगा और खजूर के दरख़्तों पर सूली देकर लट्का दूँगा।

कुछ मुफ़स्सरीन का ख़याल है कि फ़िरऔन ने उन मुसलमानों को सूली दे दी थी और कुछ लोग कहते हैं कि उस ने ऐसा नहीं किया था और कुआन में कोई ऐसी आयत नहीं है जिस से साबित हो कि उस ने अपनी बात पर अमल किया हो।

मुसलमान जादूगरों ने इस के जवाब में कहा कि दुनियावी सज़ा से हमारा कोई नुक़सान नहीं होगा, बल्कि अगर हम क़त्ल भी कर दिये जाएँगे तो अपने रब के पास अज़्र अज़ीम पाएँगे। हमें उम्मीद है कि हमारा रब कुफ़्र और जादूगरी के गुनाह को इस वजह से माफ़ कर देगा कि हक़ स्पष्ट हो जाने के बाद हम लोग पूरी कौम से पहले ईमान ले आए हैं।

**52-56**

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعَبِيدِي ۖ إِنَّكُمْ تَرْجِعُونَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝  
إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۝ وَإِنَّهُمْ لَفَآئِظُونَ ۝ وَإِنَّا لَجَبِيحٌ حَذِرُونَ ۝

इस अज़ीम कामियाबी के कई साल बाद अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै०) को हुक्म दिया कि वह बनी इस्राईल को लेकर रात के वक़्त खुशकी के बजाए समुद्र की तरफ़ चल पड़ें और उन्हें बता दिया कि फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ आप का पीछा करेगा, लेकिन आप बढ़ते चले जाइएगा, वह लोग आप लोगों को नहीं पकड़ सकेंगे।

फ़िरऔन को जब ख़बर हुई तो उस ने अपनी फौजों को इकट्ठा करने का हुक्म दे दिया और बनी इस्राईल को उन की निगाहों में कमज़ोर ज़ाहिर करने के लिए कहा कि उन की तअ़दाद ही क्या है, उन की हरकतों ने हमें नाराज़ कर दिया है।

कुछ मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि 'बनी इस्राईल' की तअ़दाद लगभग छः लाख थी और 'इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' के कौल के मुताबिक़ फ़िरऔनियों की तअ़दाद शुमार में नहीं आती थी और 'इब्ने

मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु' के कौल के मुताबिक़ छः लाख सत्तर हज़ार थी।

फ़िरऔन ने कहा कि हम मूसा और 'बनी इस्राईल' के मक़ से ख़ूब वाकिफ़ हैं और इन के शर से बचने के लिए चौकन्ना हैं, इसलिए ऐ मेरी फ़ौज के जवानो! इन्हें जल्द से जल्द गिरफ्तार कर लो और हमारे पास वापस ले आओ।

**57-59** فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَدَّتِ وَعِيُونٍ ۖ وَكَتُونٍ ۖ وَمَقَامِرَ كَرِيمٍ ۖ كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने उन्हें धीरे-धीरे सरज़मीने मिस्र, उस के बागात, नहरों, ख़ज़ानों और ऐश की जगहों से दूर कर के मूसा के पीछे लगा दिया और इस तरह हम ने उन्हें उन के घरों और माल और ज़ायदादों से अलग कर दिया और 'बनी इस्राईल' को उन तमाम चीज़ों का वारिस बना दिया।

'हसन बसरी' कहते हैं कि फ़िरऔनियों के डूब जाने के बाद 'बनी इस्राईल' वापस आए और मिस्र के मालिक बन गये। कुछ लोग कहते हैं कि 'बनी इस्राईल' वापस नहीं आए और यहाँ विरासत से मुराद फ़िरऔनियों के ज़ेवरात हैं जो 'बनी इस्राईल' ने अल्लाह के हुक्म से उन से उधार लिया था।

**60-62** فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۖ فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَانِ قَالَ أَضْحَبُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمَذْكُورُونَ ۖ قَالَ كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۖ

फ़िरऔन और उस की फ़ौज के लोग सूरज निकलने के वक़्त हज़रत मूसा (अलै०) और बनी इस्राईल के करीब पहुँच गये। जब दोनों गिरोह एक दूसरे के आमने-सामने हुए तो हज़रत मूसा (अलै०) के साथी मारे डर के कहने लगे कि अब तो हम पकड़ लिये गए तो उन्होंने पूरे ईमान व यकीन के साथ कहा कि हरगिज़ नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, मेरा रब मेरे साथ है और वह निजात की तरफ़ मेरी ज़रूर रहनुमाई करेगा।

**63-66** فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَخْرِبْ بَعْصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فَرَقٍ كَالظُّوْدِ الْعَظِيمِ ۖ وَاللَّفَنَ ثَمَّ الْاُخْرَيْنِ ۖ وَاتَّجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۖ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْاُخْرَيْنِ ۖ

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को वक़्त के ज़रिये हुक्म दिया कि आप अपनी लाठी समुद्र के पानी पर मारिये, उन्होंने ऐसा ही किया, आले याकूब के बारह गिरोहों के लिए समुद्र में बारह रास्ते बन गए और पानी ऊँचे पहाड़ की तरह दोनों किनारों पर खड़ा हो गया।

इस तरह अल्लाह तआला फ़िरऔन और उस की फ़ौजों को समुद्र के करीब लाता गया, हज़रत मूसा और उन के साथी समुद्र में बने रास्तों से गुज़र कर दूसरी तरफ़ चले गए। फ़िरऔन ने भी अपनी फ़ौज के साथ उन्हीं रास्तों से गुजरना चाहा और जब वह बीच समुद्र में पहुँचे तो अल्लाह तआला ने पहाड़ की तरह पानी को उन पर लौटा दिया, जिसमें सब के सब डूब गये।

**67** إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ

इस में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा और हारून का यह वाकिआ बहुत ही

इबरतनाक है और अल्लाह की अज़ीम कुदरत की दलील भी। फ़रमाया कि फ़िरऔनियों में से सिर्फ़ चन्द ही ईमान लाए। जैसे फ़िरऔन की बीवी आसिया और दूसरे चन्द लोग, बाकी सब फ़िरऔन ही की पैरवी करते रहे, यहाँ तक कि वह डूब गए।

**68**

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि आप का रब हर हाल में ग़ालिब (प्रभावी) है और अपने दुश्मनों से ज़रूर बदला लेता है और अपने नेक बन्दों पर रहम करता है और उन्हें तक्लीफ़ व मुसीबत से निजात देता है।



## आयत नं० 69 से 104 तक

وَإِذْ عَلِمْنَا نَبَاَ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۖ قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَّلُهَا غُرَفِينَ ۖ قَالَ هَلْ يَسْعَوْنَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۖ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۖ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۖ قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدُمُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۖ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۖ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۖ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۖ وَالَّذِي أَطْعَمُنِي أَنْ يَقْتُلَنِي فَخَبِّرَنِي يَوْمَ الدِّينِ ۖ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۖ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ۖ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ وَاعْفُ عَنِّي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ ۖ وَلَا تُخِزْنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۖ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۖ إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۖ وَأَزَلَّ النَّفْسَ الْمُنْتَفِرَةَ ۖ وَبَرَزَتْ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ۖ وَقِيلَ لَهُمْ إِنَّمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ هَلْ يَنْصَرُونَكُمْ أَوْ يَنْصَرُونَ ۖ فَكَيْفَ يُؤْفِقُهَا هُمْ وَالْعَاوُنُ ۖ وَجُنُودُ الْإِبْلِيسِ أَجْمَعُونَ ۖ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۖ تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لِنَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۖ إِذْ نُسَوِّدُكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَمَا أَصَلْنَا إِلَّا الْبُجُورَ ۖ قَالُوا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ۖ وَلَا صِدْقٍ حَقِيمٍ ۖ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنُكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

### अनुवाद-

(69) और इनको इब्राहीम की खबर पढ़ कर सुनाइए, (70) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम के लोगों से कहा, “तुम किन चीजों की इबादत करते हो।” (71) उन्होंने कहा, “हम बुतों की इबादत करते हैं, और हम इन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे।” (72) (इब्राहीम ने) कहा, “क्या वे तुम्हारी सुनते हैं, जब तुम उनको पुकारते हो, (73) या यह तुम्हें फायदा, या नुकसान पहुँचाते हैं?” (74) उन्होंने कहा, “(नहीं) बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।” (75) (इब्राहीम ने) कहा, “क्या तुमने उन पर विचार भी किया है जिन्हें तुम पूजते रहे हो; (76) तुम भी और तुम्हारे पहले के बाप-दादा भी?” (77) वह मेरे दुश्मन हैं, सिवाय रब्बुल-आलमीन (सारे संसार के पालनकर्ता) के, (78) ‘जिसने’ मुझे पैदा किया तो ‘वही’ मेरी रहनुमाई करता है, (79) और ‘वही’ है जो मुझे खिलाता और पिलाता है, (80) और जब मैं बीमार होता हूँ, तो ‘वही’ मुझको अच्छा करता है, (81) और ‘वही’ है जो मुझे मारेगा, फिर ज़िन्दा करेगा; (82) और ‘वही’ है, ‘जिससे’ मुझे इसकी उम्मीद है कि बदला दिये जाने के दिन वह मेरी खताएँ माफ़ कर देगा। (83) ऐ मेरे ‘रब’! मुझे हिकमत अता कर और मुझे अच्छे लोगों में शामिल कर, (84) और बाद के आने वालों में मुझे सच्ची ख्याति (शोहरत) दे, (85) और मुझे नेअमत के बागों (जन्नत) के वारिसों में (शामिल) कर, (86) और मेरे बाप को माफ़ कर दे, वह गुमराह लोगों में से है, (87) और मुझे उस दिन रूसवा न कर, जिस दिन लोग उठाये जाएँगे; (88) जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद, (89) सिवाय उसके जो व्यक्ति सलामती वाला दिल लेकर अल्लाह के सामने आया। (90) और जन्नत, परहेज़गारों के करीब लाई जाएगी; (91) और दोज़ख़ गुमराहों के सामने लाई जाएगी, (92) और उनसे कहा जाएगा, “कहाँ हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे; (93) अल्लाह को छोड़ कर, क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या अपना बचाव कर सकते हैं?” (94) तो वे और तमाम गुमराह लोग उस (जहन्नम) में औंधे झोंक दिये जाएँगे, (95) और इब्लीस

की सारी सेनाएँ भी, (96) वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे, (97) “अल्लाह की कसम! हम तो खुली हुई गुमराही में थे, (98) जबकि हम तुम्हें सारे संसार के ‘रब’ के बराबर ठहरा रहे थे; (99) और मुजरिमों ने ही हमें गुमराह किया था, (100) तो (आज) हमारा कोई सिफारशी नहीं; (101) और न कोई जिगरी दोस्त है; (102) अगर हमें एक बार और लौटने का मौका मिल जाए, तो हम ईमान वालों में से हो जाते।” (103) बेशक इसमें बड़ी निशानी है, इस पर भी इनमें से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं; (104) और आप का ‘रब’ ही बड़ी ताकत वाला, रहम वाला है।

## आयत नं० 69 से 104 तक की व्याख्या

**69-71**

وَإِنَّا عَلَيْهِمْ نَبَأٌ وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۖ قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَّلُهَا غُرُبِينَ

हज़रत मूसा (अलै०) के बाद अब हज़रत इब्राहीम (अलै०) और उन की कौम का वाकिआ पेश किया जा रहा है, ताकि कुरैश हज़रत इब्राहीम (अलै०) की दअवती ज़िन्दगी के हालात सुनकर नसीहत हासिल करें, इस्लाम ले आएँ और दुनिया व आखिरत की रुस्वाई से बचें।

अल्लाह तआला ने अपने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप कुरैश के मुशिरकों को इब्राहीम का किस्सा सुना दीजिए। जब उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम से पूछा कि तुम लोग किस चीज़ की अ़िबादत करते हो? हज़रत इब्राहीम जानते थे कि वह लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं, लेकिन उन का मक्सद उन के जवाब से यह साबित करना था कि यह मूर्तियाँ इस लायक नहीं हैं कि इन की अ़िबादत की जाए। हज़रत इब्राहीम के बाप आज़र और उन की कौम के दूसरे लोगों ने फ़ख़ के तौर पर कहा हम मूर्तियों की पूजा करते हैं और दिन भर इन की अ़िबादत में लगे रहते हैं, यानी रात के वक़्त सितारों की और दिन में इन्हीं सितारों के तस्वीरों की पूजा करते हैं।

**72-73**

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۖ أَوْ يَنْفَعُوكُمْ أَوْ يُضَرُّونَ

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने उन से पूछा कि जब तुम लोग इन मूर्तियों को पुकारते हो तो क्या यह सुनते हैं? या तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकते हैं? या अगर तुम इन की अ़िबादत करनी छोड़ दो तो क्या यह तुम्हें नुक़सान पहुँचा सकते हैं? इस सवाल का मक्सद उन के दीन का फ़साद साबित करना था। इसलिए कि इस का जवाब उन के पास इस के सिवा कुछ भी नहीं था कि वाकई यह मूर्तियाँ न हमारी पुकार का जवाब देती हैं और न हमें नफ़ा पहुँचा सकती हैं और न नुक़सान।

तो उन की अ़िबादत बेवकूफी के सिवा कुछ भी न थी। इसलिए मुशिरकीन ने अपने कुफ़्र व शिर्क पर इस्ार करते हुए यह जवाब दिया कि हमारे बाप दादे ऐसा ही करते आए हैं, इसलिए हम भी ऐसा ही करेंगे और इसी पर पूरी तरह कायम रहेंगे।

**74**

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ

‘ख़ाज़िन’ ने आयत नं० (74) की तफ़्सीर में लिखा है कि यह आयते करीमा दीनी कामों में पैरवी

के बातिल होने पर दलालत करती है और सिर्फ दलायल से साबित शुदा हुक्मों को कुबूल करने की दअवत देती है।

**75-77**

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ أَنْتُمْ وَإِبَادُكُمْ الْأَقْدَامُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने कहा तो फिर जान लो कि जिन मूर्तियों की तुम और तुम्हारे बाप दादे पूजा करते आ रहे हैं मुझे उन सब से दुश्मनी है सिवाय रब्बुल् आलमीन के जो दुनिया व आखिरत में मेरा आका व मौला है, इसलिए मैं सिर्फ उसी की अ़िबादत करता हूँ। हज़रत इब्राहीम (अलै०) यह कहना चाहते थे कि यह मूर्तियाँ तुम्हारी दुश्मन हैं, लेकिन उन्हें अपना दुश्मन बताया यानी जिस तरह यह मेरे दुश्मन हैं तुम्हारे भी दुश्मन हैं ताकि सामने वाला उन की नसीहत को कुबूल कर ले।

**78-82**

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يُهْدِينِي ۖ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِي ۖ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِي ۖ وَالَّذِي

يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِي ۖ وَالَّذِي أَطْعَمُنِي أَنْ يَقْبَلَنِي يَوْمَ الدِّينِ ۝

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने कहा, मैं केवल उस “रब्बुल् आलमीन” की अ़िबादत करता हूँ जिस ने मुझे पैदा किया और वह दीन व दुनिया की हर भलाई की तरफ़ मेरी रहनुमाई करता है और वही मुझे खिलाता और पिलाता है यानी उस ने मुझे रोज़ी देने के लिए तमाम आसमानी और ज़मीनी चीज़ें इकट्ठा कीं, बादल भेजा, पानी बरसाया, ज़मीन को ज़िन्दगी दी, तरह-तरह के फल और ग़िज़ाएँ पैदा कीं और पानी को साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और मीठा बनाया, जिसे जानवर और इन्सान सभी पीते हैं और जब मैं बीमार होता हूँ तो मुझे शिफ़ा देने पर उस के सिवा कोई क़ादिर नहीं होता है।

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने अल्लाह तआला के साथ अच्छे अदब के तौर पर बीमारी को अपनी तरफ़ और शिफ़ा को अल्लाह की तरफ़ मन्सूब किया वरना मालूम है कि बीमारी और शिफ़ा दोनों ही अल्लाह की ओर से होती है, इन में से कोई भी चीज़ अल्लाह के सिवा किसी के अख़्तियार में नहीं है। उस रब्बुल् आलमीन की सिफ़त यह भी है कि वही तमाम इन्सानों को मौत देता है और क़ियामत के वक़्त सब को दोबारा ज़िन्दा करेगा और उसी से उम्मीद की जाती है कि क़ियामत के दिन वह मेरे गुनाहों को माफ़ कर देगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत नं० (82) में "خطيئة" से मुराद वह तीन बातें हैं जिन्हें हज़रत इब्राहीम (अलै०) गुनाह समझते थे और जिन्हें याद कर के क़ियामत के दिन लोगों के लिए शफ़ाअत करने से इन्कार करेंगे।

पहली बात मूर्तियों को तोड़ने के बाद उन का यह कहना कि यह काम सब से बड़ी मूर्ति ने किया है।

दूसरी बात उन का यह कहना कि मैं बीमार हूँ ताकि अपनी क़ौम के साथ मेला में शरीक न हों और उन के चले जाने के बाद मूर्तियों का सफ़ाया कर दें।

तीसरी बात ज़ालिम बादशाह के सामने ‘सारह’ को अपनी बहन बताना है, ताकि वह ज़बरदस्ती उन्हें अपने पास न रख ले।



**83-89**

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقِّقْ بِالصَّالِحِينَ ۖ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْغَايِبِينَ ۖ وَاجْعَلْنِي  
مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ وَاعْفُ عَنِّي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۖ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۖ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ  
مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۖ إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝

हज़रत इब्राहीम (अलै०) जब अपने रब की तअरीफ़, उस की हम्द व सना और उस की नेअमतों को बयान कर चुके तो उन्होंने अपने दोनों हाथ दुआ के लिए उठा दिये और निहायत इन्किसारी के साथ कहा:

मेरे रब! मुझे इल्म व समझ में कमाल अता फ़रमा। अम्बिया की तरह अमल सालेह की तौफीक दे और जन्नत में उन का मुझे साथी बना और दूसरों के लिए मुझे खैर का नमूना बना और आइन्दा आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्र खैर बाकी रख।

अल्लाह तआला ने उन की दुआ कुबूल फ़रमा ली, जिस के नतीजे में तमाम मज़ाहिब वाले उन से मुहब्बत करते हैं और उन की तअरीफ़ बयान करते हैं। 'इमाम मालिक' ने इस आयत से और इसी जैसी दूसरी आयतों से दलील लिया है कि अगर अच्छे अमल से इन्सान की नियत अल्लाह की रज़ा हासिल करनी हो और यह भी चाहे कि दुनिया वाले उसे अच्छा कहें तो कोई हर्ज नहीं है।

उन्होंने अपनी दुआ में यह भी कहा, मेरे रब! मुझे बेशुमार नेअमतों वाली जन्नत का वारिस बना यानी उन में से बना जिन्हें तू बिना मेहनत व मशक्कत के जन्नत अता फ़रमाएगा। और मेरे रब! मेरे बाप की मफ़िरत फ़रमा दे, इसलिए कि उस ने जिहालत व नादानी की वजह से तेरे साथ ग़ैरों को शरीक बनाया।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने अपने बाप के लिए यह दुआ जो सूर: इब्राहीम आयत नं० (41) में ज़िक्र की हुई उस वक़्त की थी जब उन्हें मालूम नहीं था कि वह अल्लाह का दुश्मन है, जैसा कि सूर: तौब: आयत नं० (114) में गुज़र चुका है।

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने अपनी दुआ में यह भी कहा कि मेरे रब! जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे, उस दिन लोगों के सामने मुझे रुस्वा न करना या क़ियामत के दिन मुझे अज़ाब न देना। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद, सिर्फ़ वह आदमी जहन्नम के अज़ाब से बच सकेगा जिस का दिल दुनिया में कुफ़्र व शिर्क, निफ़ाक़ और दूसरे ग़लत अ़ादात से महफूज़ होगा, ऐसे ही आदमी का नेक अमल क़ियामत के दिन उस के काम आएगा।

**90-95**

وَأَرْسَلْنَا إِلَيْنَا الرِّسَالَاتِ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ وَبَرَزْنَا لِلْجَاهِلِينَ ۖ وَقِيلَ لَهُمْ إِنَّمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ  
مَلَائِكَةً أَوْ يَنْتَعِرُونَ ۖ فَكَيْبَرُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ۖ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝

क़ियामत के दिन जन्नत नेक लोगों के करीब कर दी जाएगी जिसे देखकर वह खुश होंगे और जहन्नम बद्बख़्तों के सामने कर दी जाएगी, जिसे देखकर ग़म व अफ़सोस से उन के दिल पारह-पारह हो जाएंगे और जहन्नमियों से कहा जाएगा कि जिन मअबूदों की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते थे वह कहाँ चले गये, उन्हें हमारे सामने लाओ। क्या आज वह तुम से या अपने आप से अज़ाब को टाल सकेंगे?

यहाँ 'मअबूद' से शयातीन और जिन्न व इन्स के वह मुजरमीन मुराद हैं जो दुनिया में अपने लिए शिर्क को गवारा करते थे।

आयात नं० (94/95) में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन को और उन की अ़िबादत करने वाले गुमराहों को मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा, जिस में लुढ़कते हुए उस की आख़िरी खाई तक पहुँच जाएँगे और उन के साथ इब्लीस के उन पैरोकारों और मदद्गारों को भी उस में डाल दिया जाएगा जो लोगों को शिर्क व गुनाह और ज़मीन में फ़साद और जरायम पर उभारते थे।

**96-101**

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَمُونَ ۖ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝ اِذْ نُسَوِّدُكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمَا اَصَلْنَا اِلَّا الْبُجُرْمُوْنَ ۖ قُلْ لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ۖ وَلَا صٰدِقٍ حَسْبِيَ ۝

मुशिरकीन अपने मअबूदों (उपास्यों) के साथ जहन्नम में झगड़ेंगे और कहेंगे, अल्लाह की कसम! हम तुम्हें रब्बुल् आलमीन के बराबर समझते थे और तुम्हारी अ़िबादत करते थे, तो हम खुली गुमराही में थे और हमारे गुमराही के ज़िम्मेदार तुम ही मुजरमीन हो। तुम ने ही हमें शिर्क व कुफ़्र और गुमराही व सरकशी पर उभारा, खुद भी डूबे और हमें भी ले डूबे।

सूर: अहज़ाब आयत नं० (67) में अल्लाह तआला ने अहले शिर्क जहन्नमियों का कौल नक़ल किया है

“ऐ हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और बड़ों की बात मानी जिन्होंने हमें राहे रास्त से भटका दिया” दुनिया में जिन्हें हम अपना सिफ़ारिशी और मुख़्लिस दोस्त समझते थे आज वह सब के सब ग़ायब हैं।

मुशिरकीन अपनी मूर्तियों के बारे में यह यकीन रखते थे कि वह अल्लाह के दरबार में उन के सिफ़ारिशी बनेंगे और इन्सानों के कुछ शयातीन दुनिया में उन के बड़े पक्के दोस्त थे, मैदाने महशर में कोई भी उन के काम नहीं आएगा। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: जुक्रुफ़ आयत नं० (67) में फ़रमाया है-

الرَّحْمٰنُ يَوْمَئِذٍ يُعْطِيهِمْ لِبَعْضِ عٰدُوْهِمُ الْاَلْوَانَ ۚ

“उस दिन गहरे दोस्त भी एक दूसरे के दुश्मन बन जाएँगे सिवाय परहेज़गारों के।”

**102**

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كُوْنًا فَنُكُوْنُ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

मुशिरकीन जहन्नम में अफ़सोस के साथ कहेंगे, काश! हम दोबारा दुनिया में लौटा दिये जाते तो अल्लाह तआला पर ईमान ले आते, उस के साथ किसी को शरीक न बनाते और रसूल के बताए हुए रास्ते पर चलते, लेकिन उन की यह ऐसी तमन्ना होगी जो कभी पूरी न होगी।

**103-104**

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهٗوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

हज़रत इब्राहीम (अलै०) और उन की कौम का जो वाकिअ अभी बयान किया गया उस में साहिबे बसीरत इन्सान के लिए बड़ी इब्रत की बातें हैं, उन्होंने किस खुश उस्तूबी के साथ लोगों के सामने अपनी दअवत पेश की और किस तरह बर्दाश्त से काम लिया और मस्ला तौहीद बारी तआला को कितने बेहतर

अन्दाज़ में बताया। यह और इन के अलावा बहुत सी मुफ़ीद नसीहतें इस वाक़िये से हासिल होती हैं, लेकिन दअवत इब्राहीमी की इन तमाम खूबियों के बावजूद उन की क़ौम के बहुत ही कम लोग ईमान लाए।

आयत नं० (104) में अल्लाह तअला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि आप का रब हर हाल में ग़ालिब (प्रभावी) है, जो चाहता करता है और जैसा चाहता है फ़ैसला देता है। उस के बन्दे अगर उस की तरफ़ आते हैं और उस की अ़िबादत करते हैं तो वह बड़ा मेहरबान है, वह उन्हें बेशुमार नेअमतों वाली जन्नत में दाख़िल करेगा।



## आयत नं० 105 से 140 तक

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ نُوحٌ ۖ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ اجْتَرَىٰ عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۖ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ۚ قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۚ إِنِ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ۚ وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ الْمُؤْمِنِينَ ۚ إِنَّ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۚ قَالُوا لَيْسَ لَكَ يَنْتُحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۚ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَوْمِي كَذَّبُونِ ۖ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَخُذْ بِنِيعَتِي ۖ وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَانْجِنِي ۖ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۚ ثُمَّ اغْرَقْنَا الْبَاقِينَ ۚ إِنِّي فِي ذَلِكَ لَا بِيَأْسَ ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ ۖ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ اجْتَرَىٰ عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَتَنْبُوْنَ بِكُلِّ رِيحٍ آتِيَةٍ تَعْبَثُونَ ۖ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلَدُونَ ۚ وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۖ قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۚ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ۚ فَكَذَّبُوا فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

### अनुवाद-

(105) नूह की कौम ने भी रसूलों को झुठलाया, (106) जबकि उनसे उनके भाई नूह ने कहा, “क्या तुम डरते नहीं? (107) मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, (108) तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो; (109) और मैं इस काम का तुमसे कोई बदला नहीं माँगता हूँ मेरा बदला तो बस सारे संसार के ‘रब’ के ज़िम्मे है; (110) तो अल्लाह से डरो और मेरी फरमाँबरदारी करो।” (111) उन्होंने कहा, “क्या हम तुम्हें मान लें, जबकि तुम्हारे पीछे तो बड़े नीच लोग चल रहे हैं?” (112) (नूह ने) कहा, “मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते रहे? (113) उनका हिसाब तो मेरे ‘रब’ के ज़िम्मे है, क्या ही अच्छा होता कि तुम समझते? (114) और मैं उन लोगों को धुत्कारने वाला नहीं, जो ईमान लाए; (115) मैं तो बस खुली हुई चेतावनी देने वाला हूँ।” (116) उन्होंने कहा, “अगर तुम बाज़ न आए तो, ‘ऐ नूह तुम ज़रूर संगसार (पत्थर द्वारा मार डालना) किये जाओगे’। (117) (नूह ने) कहा, “ऐ मेरे रब! मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया; (118) अब ‘तू’ मेरे और उनके बीच साफ़ फैसला कर दे, और मुझे और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं, उन्हें बचा ले।” (119) तो ‘हमने’ उसे और जो उसके साथ भरी हुई नौका में (सवार) थे, बचा लिया; (120) फिर इसके बाद बाकी लोगों को डुबो दिया। (121) बेशक इसमें बड़ी निशानियाँ हैं, और इनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं थे। (122) और तुम्हारा ‘रब’ बड़ी ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) रहम वाला है। (123) आद ने भी रसूलों को झुठलाया। (124) जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा, “क्या तुम डरते नहीं? (125) मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार हूँ। (126) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो; (127) और मैं इस पर तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है; (128) तुम हर ऊँची जगह पर बेकार निशान तामीर (निर्माण) करते हो? (129) और महल बनाते हो जैसा कि तुम्हें हमेशा रहना है; (130)

और जब (किसी को) पकड़ते हो तो बड़ी सख्ती से पकड़ते हो; (131) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो, (132) और डरो 'उससे' जिसने तुम्हारी उन चीजों से मदद की, जो तुम्हें मालूम हैं: (133) 'उसने' तुम्हारी मदद की, चौपायों और औलाद से; (134) और बागों, और स्रोतों से। (135) मुझे डर है एक ऐसे दिन के अज़ाब का जो बड़ा ही सख्त होगा।" (136) उन्होंने कहा, "हमारे लिए सब बराबर है तुम नसीहत करो या न करो। (137) यह बात तो अगलों से चली आ रही है; (138) और हमको अज़ाब नहीं दिया जाएगा।" (139) तो उन्होंने उसको (हूद) झुठलाया, तो 'हमने' उनको हलाक कर दिया, बेशक इसमें बड़ी निशानी है, और इनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं थे। (140) और आप का 'रब' बड़ी ताकत वाला, रहम वाला हैं।

## आयत नं० 105 से 140 तक की व्याख्या

**105-110**

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ اجْتَبَىٰ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ

हज़रत इब्राहीम (अलै०) के बाद अब हज़रत नूह (अलै०) और उन की कौम का वाकिआ बयान किया जा रहा है, ताकि कुरैश इस से नसीहत हासिल करें, ईमान ले आएँ और दुनिया व आखिरत की रुस्वाई से बचें।

अल्लाह तआला ने फरमाया कि हज़रत नूह (अलै०) की कौम ने रसूलों को झुठलाया इसलिए कि तमाम अम्बिया व रसूल की दअवत एक थी, सब ने शिर्क का इन्कार किया और लोगों को तौहीद (अद्वैतवाद) की तरफ बुलाया। इसलिए जिस ने एक नबी को झुठलाया उस ने मानो तमाम नबियों को झुठला दिया।

हज़रत नूह (अलै०) ने अपनी कौम से कहा, क्या तुम्हें अल्लाह का डर नहीं लगता, कि मूर्तियों की अिबादत करते हो और उस के रसूल को झुठलाते हो? अल्लाह ने मुझे तुम्हारे लिए पैगम्बर बनाकर भेजा है और जो कुछ मुझे वहत्य से बताया जाता है, पूरी अमानत के साथ तुम तक पहुँचाता हूँ। इसलिए अल्लाह के अज़ाब से डरो, इन्कार की राह न अपनाओ, मुझे न झुठलाओ जिन बातों का मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ उन पर अमल करो, अल्लाह पर ईमान ले आओ, शिर्क करना छोड़ दो, अल्लाह के नाज़िल किये हुए दीन के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारो और मैं जो तुम्हें अल्लाह के दीन की तब्लीग करता हूँ उस का तुम से कोई बदला नहीं चाहता हूँ मैं अपने अज़्र व सवाब की उम्मीद रब्बुल् आलमीन से रखता हूँ इसलिए अल्लाह के अज़ाब से डरो और मेरी बात मानो।

**111-115**

قَالُوا أَنْتُمْ مِنْ لَدُنْكَ وَالشَّيْعَكَ الْأَزْدَلُونَ ۚ قَالُوا وَمَا عَلَيْنَا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ إِن جَاءَهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّنَا لَوْ تَشْعُرُونَ ۚ وَمَا آتَا بِطَارِدِ الْبَاطِلِينَ ۚ إِن آتَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۚ

हज़रत नूह (अलै०) की कौम ने उन के इस दअवती खुत्बे का यह जवाब दिया कि हम तुम पर कैसे ईमान ले आएँ और कैसे तुम्हारी पैरवी करें? और हाल यह है कि तुम्हारी पैरवी केवल कमज़ोर और ग़रीब लोग कर रहे हैं।

उन के नज़्दीक इज़्ज़त व शर्फ़ का मेअयार माल और ओहदा था न कि बुलन्द किरदार और बुलन्द अख़्लाक़। यह हमेशा से होता आया है कि माल व दौलत वाले दुनियादारों ने अल्लाह के दीन और बुलन्द अख़्लाक़ व किरदार की परवाह नहीं की, ग़रीबों और कमज़ोरों को घटिया और ज़लील समझा और उन्हीं कमज़ोरों ने आगे बढ़ कर अल्लाह के दीन को गले से लगाया और ऊँचे किरदार और अच्छे अख़्लाक़ को माल व दौलत पर वरीयता दी।

तारीख़ गवाह है कि नबियों की पैरवी करने वाले अक्सर ग़रीब और कमज़ोर लोग होते थे और दौलतमन्द लोग अपने घमण्ड की वजह से पीछे रह जाते थे और कहते थे कि जिस दीन की पैरवी यह कमतर लोग कर रहे हैं वह सच्चा और बरहक़ दीन कैसे हो सकता है?

हज़रत नूह (अलै०) ने जवाब दिया कि मुझे लोगों के अमाल को जानने का पाबन्द नहीं बनाया गया है कि कौन क्या करता है, कौन मालदार है और कौन फ़कीर, किस के दिल में क्या है, इन बातों का इल्म अल्लाह को है और वही अपने बन्दों का हिसाब लेगा। मुझे तो सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया है कि लोगों को बिना किसी इम्तियाज़ के अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाऊँ।

ऐ मेरी कौम के लोगों! अगर तुम्हें इन बातों का शुऊर होता तो तुम लोगों की मालदारी और ग़रीबी को हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ का मेअयार न समझते और मैं तुम्हारी यह बात मानने को तैयार नहीं हूँ कि ग़रीब मुसलमानों को अपने पास से भगा दो, मैं तो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ।

**116**

قَالُوا لَيْن لَّمْ تَنْتَهُ يَنْفُخْ لَكَؤُنَّ مِنَ الْمَجْمُومِينَ ۝

जैसा कि हमेशा से काफ़िर व मुशिरक कौमों का तरीका रहा है कि जब उन्हें अपने दावे की सच्चाई के लिए कोई दलील व हुज्जत नहीं मिली, तो घमण्ड के अन्दाज़ में गुफ़्तगू और धमकी पर तुल गए। उन्होंने कहा ऐ नूह! अगर तुम ने हमारे दीन मे ऐब निकाला और हमारे मअबूदों (उपास्यों) को बुरा कहना बन्द न किया, तो हम तुम्हें पत्थर से मार-मारकर हलाक कर देंगे।

**117-118**

قَالَ رَبِّ إِنِّي كُذِّبْتُ ۖ فَأَفْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتًى وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

हज़रत नूह (अलै०) नौ सौ पचास साल तक अपनी कौम को एक अल्लाह की ओर बुलाते रहे, लेकिन ज़ालिम कौम अपने कुफ़्र व शिर्क पर अड़ी रही तो आख़िर में उन्होंने अपने रब से गिड़गिड़ाते हुए कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया है, उन के सुधार की कोई उम्मीद बाकी नहीं है, इसलिए मेरे और इनके दर्मियान फैसला कर दे, मुझे और मेरे अहले ईमान साथियों को उस अज़ाब से बचा ले जिस के ज़रिये तू ज़ालिमों को हलाक करेगा।



## 119-122

فَأَنجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفَلَاحِ الْمَشْحُونِ ۖ ثُمَّ اغْرَقْنَا الْبَاقِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ  
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

अल्लाह तआला ने उन की दुआ सुन ली, उन्हें और उन लोगों को निजात दे दी जो कश्ती में सवार हो गए थे और बाकी तमाम लोगों को हलाक कर दिया। हज़रत नूह और उन की कौम के इस वाकिये से बहुत सी नसीहतें हासिल होती हैं, जिन से कौमे नूह ने कोई फायदा हासिल नहीं किया इसीलिए उन में से अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

आयत नं० (122) में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मुख़ातब कर के कहा गया है कि आप का रब हर हाल में ग़ालिब (प्रभावी) है, वह अपने दुश्मनों से ज़रूर बदला लेता है और अपने नेक बन्दों पर मेहरबान होता है इसीलिए उन्हें अज़ाब नहीं देता है।

## 123-135

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ  
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَوْمَرَ ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتَبْنُونَ  
بِكُلِّ رِيحٍ آيَةً ۚ تَعْبَثُونَ ۚ وَتَتَّخِذُونَ مَصَالِحَ لَعَلَّكُمْ تَخْلَدُونَ ۚ وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ  
جِبَارِينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَوْمَرَ ۚ وَالَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَبُونَ ۚ أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامِهِ  
وَبَنِينَ ۚ وَجَنَّتْ وَعُيُونُ ۚ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

हज़रत नूह (अलै०) के बाद अब हज़रत हूद (अलै०) और उन की कौम का वाकिआ बयान किया जा रहा है, इसलिए कि इस में कुरैश के लिए नसीहत है। यह वाकिआ सूर: अअराफ़ में गुज़र चुका है और वहाँ बताया जा चुका है कि 'कबीले आद' के लोग 'उमान' और 'हज़रमूत' के दर्मियान रेतीले पहाड़ों के दामन में रहते थे, यह इलाका 'अहकाफ़' के नाम से जाना जाता है। उन का ज़माना कौमे नूह के बाद का था, अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ा मज़बूत डील-डौल वाला बनाया था और वह लोग बहुत ही ताक़तवर किस्म के थे।

यह इलाका बड़ा हरा-भरा था, हर किस्म के बागात पाये जाते थे और उन की ज़मीनों के दर्मियान नहरें जारी थीं, हर तरह के हरे-भरे पेड़ थे, लेकिन यह लोग अल्लाह के नाशुक्रगुज़ार बन्दे थे, जो मूर्तियों की पूजा करते थे। फिर भी अल्लाह तआला ने इन पर रहम करते हुए इन्हीं में से हज़रत हूद (अलै०) को नबी बनाकर भेजा, जिन्होंने बड़ी उम्र पाई थी। वह एक लम्बी मुद्दत तक कौमे आद को ईमान की दअवत देते रहे, लेकिन वह लोग अपने कुफ़्र व सरकशी पर अड़े रहे तो अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक कर दिया।

इसी वाकिये को अल्लाह तआला ने यहाँ संक्षेप में बयान किया है कि कौमे आद ने हज़रत हूद (अलै०) को झुठला कर मानो तमाम अम्बिया को झुठला दिया, इस लिए कि सब की दअवत एक थी। उन के भाई हूद ने उन से कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का डर नहीं लगता कि उस के साथ

दूसरों को शरीक बनाते हो और दूसरे बड़े गुनाह करते हो? मुझे अल्लाह ने तुम्हारे पास अपना रसूल बनाकर भेजा है ताकि उस का दीन तुम को पहुँचा दूँ और मैं इस बारे में पूरे तौर पर अमानतदार हूँ अपनी तरफ़ से कुछ घटाता-बढ़ाता नहीं हूँ।

इसलिए अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और देखो, मैं तब्लीग़ व दअवत के काम का तुम से कोई बदला नहीं माँगता हूँ। मुझे अपने अज़्र व सवाब की उम्मीद रब्बुल् अलमीन से है इसलिए कि उसी ने मुझे रसूल बनाकर भेजा है और उसी ने मुझे यह ज़िम्मेदारी सौंपी है।

हज़रत हूद (अलै०) ने आगे कहा, तुम आख़िरत से कितने गाफ़िल और दुनिया में कितना चिपके हुए हो कि आपस में फ़ख़ और खेल तमाशे की नियत से ऊँची जगहों पर ऊँचे-ऊँचे मकानात और महल्लात बनाते हो और अपना समय, जिस्मानी ताक़त और दौलत को ज़ाया करते हो और तुम्हारी कोताही का यह हाल है कि दुनिया ही को सब कुछ समझ बैठे हो, ज़मी तो ऊँचे-ऊँचे मकानात व महल्लात बनाते हो और दिल में हमेशगी की ज़िन्दगी की उम्मीद लगाए बैठे हो, आख़िरत की फ़िक्र और अपने अन्जाम से बिल्कुल गाफ़िल हो और तुम्हारे दिल की सख़्ती का यह हाल है कि दूसरों पर बेरहम ज़ालिमों और जाबिरों की तरह चढ़ बैठते हो, कमज़ोरों पर तुम्हें रहम करना नहीं आता है।

इसलिए अगर तुम दुनिया व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो इन बुरे गुणों से अपने आप को पाक करो। जुल्म व बर्बरियत, सरकशी और घमण्ड से तौब: करो, अल्लाह की गिरफ़्त से डरो और मेरी बात मानो। उस अल्लाह से डरो जिस ने तुम्हें वह सब कुछ दिया है जिस का तुम्हें इल्म है, उस ने तुम्हें ऊँट, गाय, बकरियाँ, औलाद, बागात और पानी के चश्मे दिये हैं जिन का पानी पीते हो, उस से पाकी हासिल करते और अपने खेतों को सैराब करते हो। ऐ मेरी कौम के लोगो! वाकिआ यह है कि तुम्हारे शिर्क व गुनाह की वजह से तुम्हारे बारे में दुनिया और आख़िरत के अज़ाब से डरता हूँ चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि दुनिया में वह लोग हलाक कर दिये गए और आख़िरत का अज़ाब उन का इन्तिज़ार कर रहा है।

### 136-138 قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۚ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ

हज़रत हूद (अलै०) की इस तक्रीर का उन की कौम पर कोई असर नहीं हुआ और जवाब में कहा कि तुम हमें चाहे नसीहत करो या न करो, हम अपने दीन व मज़हब से फिरने वाले नहीं हैं। मूर्तियों की पूजा करना और हमारी दूसरी आदतें हमें अपने बाप दादा से मिली हैं, उन की वजह से हम पर कोई अज़ाब नहीं उतरेगा और मरने के बाद दूसरी ज़िन्दगी का हम तसव्वुर करने से बेबस हैं।

### 139-140 فَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَبُورُ الْغَيْظِ الرَّحِيمِ

अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि कौमे आद ने हज़रत हूद (अलै०) को झुठला दिया और उन के सुधार की कोई उम्मीद बाकी नहीं रही तो अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उन की इस पूरी कहानी में मुशिरकीने कुरैश के लिए नसीहत है कि अगर वह भी अपने इन्कार पर अड़े रहे और नबी

को झुठलाते रहे तो उन का अन्जाम भी 'क़ौमे अ़ाद' जैसा न हो।

आयत नं० (140) में अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि अल्लाह हर हाल में ग़ालिब (प्रभावी) है, इसीलिए उस ने ज़ालिमों को पकड़ लिया और उन्हें दर्दनाक अज़ाब के ज़रिये हलाक कर दिया और वह बड़ा मेहरबान है, इसीलिए इस अज़ाब से उस ने अपने नेक बन्दों को निजात दे दी



## आयत नं० 141 से 175 तक

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ صَالِحٌ ۖ أَتَتَّقُونَ ۚ إِنَّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتُتْرَكُونَ ۚ فِي مَا هُمْ بِأُمِينٍ ۚ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۚ وَرُؤُوعٍ ۚ وَغُلٍّ ۚ طَلَعَهَا هُضَيْمٌ ۚ وَتَنْجُونَ مِنَ الْجِبَالِ ۖ يَبُوتًا ۖ فَرِيقًا ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۚ وَالَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۚ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَخَّرِينَ ۚ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۚ فَأَبَايَهُ ۖ إِنَّ كُنْتَ مِنَ الضَّالِّينَ ۚ قَالَ هَٰذِهِ نَارُ اللَّهِ ۖ لَهَا شَرِبٌ وَلَكُمْ شَرِبٌ يَوْمَ تَعْلَمُونَ ۚ وَلَا تَسْؤُوهَا ۖ يَسُوءُ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ يَوْمَ عَظِيمٍ ۚ فَعَقَرُوهَا ۖ فَاصْبَحُوا ذُرِيَةً ۚ فَآخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ لُوطٌ ۖ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنَّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتَأْتُونَ الذَّكَرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۚ وَتَذْذُلُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ ۖ دَيْلُكُمْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۚ قَالُوا لَيْنَ لَمْ تُنْكِهِ لَلْوَطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَارجِينَ ۚ قَالَ إِنِّي لِعَلَّيْكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۚ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۚ فَجَنَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۚ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۚ ثُمَّ دَمَرْنَا الْاِخْرِينَ ۚ وَامْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْبُنْدَرِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

### अनुवाद-

(141) समूद ने भी रसूलों को झुठलाया, (142) जबकि उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, “क्या तुम डरते नहीं? (143) मैं तो तुम्हारा एक अमानतदार रसूल हूँ, (144) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो, (145) और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के ‘रब’ के ज़िम्मे है; (146) क्या जो चीजें तुम्हारे पास हैं, उनमें चैन से छोड़ दिये जाओगे; (147) बागों और स्रोतों में, (148) और खेतों, और खजूरों के बागों में- जिनके गुच्छे बड़े मजेदार होते हैं; (149) और पहाड़ों को तराश कर तुम इमारतें बनाते हो, ताकि तुम उस पर गर्व करो, (150) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो; (151) और हृद से गुज़रने वालों के पीछे न चलो, (152) जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं, और सुधार पैदा नहीं करते।” (153) उन्होंने कहा, “तुम पर जादू का असर हो गया है; (154) कुछ नहीं, तुम हमारे ही जैसे आदमी हो, और अगर सच्चे हो तो लाओ कोई निशानी।” (155) (सालेह ने) कहा, “यह ऊँटनी है, एक दिन पानी पीने की बारी इसकी है, और एक निश्चित दिन पानी की बारी तुम्हारे लिए है; (156) और इसको कोई तकलीफ़ पहुँचाने के लिए हाथ न लगाना (वरना) एक सख्त दिन का अज़ाब तुम पर आ जाएगा।” (157) मगर उन्होंने उसकी कूँचें काट दीं, और फिर पछता के रह गये। (158) तो उन्हें अज़ाब ने आ दबोचा, बेशक इसमें बड़ी निशानी है, इस पर भी इनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं। (159) और तुम्हारा रब बड़ी ताकत वाला, रहम वाला है। (160) लूत की कौम ने भी रसूलों को झुठलाया। (161) जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा, “क्या तुम डरते नहीं? (162) मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ; (163) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो, (164) और मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के ‘रब’ के ज़िम्मे है। (165) क्या सारे संसार के लोगों में तुम्हीं ऐसे हो कि

(इच्छापूर्ति के लिए) मर्दों के पास जाते हो? (166) और अपनी पत्नियों को, जिन्हें तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए पैदा की हैं छोड़ देते हो (इतना ही नहीं) बल्कि तुम हृद से आगे बढ़े हुए लोग हो।" (167) उन्होंने कहा, "अगर तू बाज़ न आया, 'ऐ लूत! तो तू ज़रूर निकाल बाहर किया जाएगा।" (168) (लूत ने) कहा, "मैं तुम्हारे काम से बेज़ार (विरक्त) हूँ; (169) ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को, इनके कर्तूतों से छुटकारा दिला, जो वह करते हैं।" (170) तो 'हमने' उनको और उनके घर वालों को बचा लिया; (171) सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जाने वालों में थी। (172) फिर 'हमने' बाकी लोगों को हलाक कर दिया, (173) और उन पर (पत्थरों की) वर्षा की- क्या ही बुरा (पत्थराव) उन पर बरसा- जो सचेत किये जाने वालों पर बरसाया गया। (174) बेशक इसमें निशानी है, इस पर भी अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (175) और तुम्हारा 'रब' ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) रहम वाला है।

## आयत नं० 141 से 175 तक की व्याख्या

**141-145**

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ ۖ أَتَتَّقُونَ ۚ إِنَّ لَكُمْ رَسُولًا أَمِينًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ

हज़रत हूद (अलै०) के बाद अब हज़रत सालेह (अलै०) और उन की कौम समूद का वाकिआ बयान किया जा रहा है इसलिए कि इस में भी कुरैश के लिए नसीहत है। यह वाकिआ भी सूर: अअराफ़ में गुज़र चुका है।

'कौमे समूद' के लोग वादी-ए-कुरा और मुल्क शाम के दर्मियान 'हिज़्र' नामी जगह में रहते थे, जो अब 'मदायन सालेह' के नाम से जाना जाता है। उन का ज़माना कौमे आद के सौ साल बाद और हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अलै०) के पहले का है। हज़रत सालेह (अलै०) कई सौ साल ज़िन्दा रहे और एक लम्बी मुदत तक कौमे समूद को ईमान की दअवत देते रहे, लेकिन वह लोग अपने कुफ़्र व सरकशी पर अड़े रहे, तो अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया।

इसी वाकिये को यहाँ संक्षेप में बयान किया गया है कि कौमे समूद ने हज़रत सालेह (अलै०) को झुठला कर तमाम अम्बिया को झुठला दिया, इसलिए कि सब की दअवत एक ही थी। उन के भाई सालेह ने उन से कहा कि तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का डर नहीं लगता है कि उस के साथ गैरों को शरीक बनाते हो और गुनाह भी करते हो। मुझे अल्लाह ने तुम्हारे पास अपना रसूल बनाकर भेजा है, ताकि तुम उस का दीन पहुँचाऊँ और मैं इस बारे में पूरे तौर पर अमानतदार हूँ अपनी तरफ़ से कुछ घटाता बढ़ाता नहीं हूँ इसलिए अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और देखो, मैं तब्लीग़ व दअवत के काम का तुम से कोई बदला नहीं माँगता, मुझे अपने अज़्र व सवाब की उम्मीद रब्बुल् अलमीन से है इसलिए कि उसी ने मुझे रसूल बनाकर भेजा है।

**146-152**

أَتَتْرَكُونَ فِي مَا هُمْ بِأُمِينٍ ۖ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۖ وَرُؤُوسٍ ۖ وَغُلٍّ ۖ طَلَعَهَا هُضَيْنٌ ۖ وَمَنْجُونٌ ۖ مِنَ الْجِبَالِ ۖ يُؤْتَا فَرِهِينَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ۚ

### الَّذِينَ يَفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

हज़रत सालेह (अलै०) ने अपनी तक्रीर जारी रखते हुए कहा, क्या तुम्हारा गुमान है कि तुम हमेशा यूँ ही अमन व सुकून के साथ अल्लाह की दी हुई नेअमतों से मज़ाक करते रहोगे? बागात, चश्मों, खेतों और खजूरों से फायदा उठाते हो, पहाड़ों को काट कर मकानात बनाते और अपनी ताकत और फन पर नाज़ करते हो, यह तुम्हारी भूल है। हमेशा इस हाल में नहीं रहोगे, एक दिन आएगा कि मौत तुम्हें आ दबोचेगी और उस के बाद क़ियामत आएगी जिस दिन हर इन्सान की तरह तुम्हें अपने करतूतों का हिसाब चुकाना होगा।

इसलिए अल्लाह की गिरफ्त और उसके अज़ाब से डरो, मेरी बात मानो और उन लोगों की बात न मानो जो हृद से बढ़ गए हैं, ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और भलाई का कोई काम नहीं करते।

**153-156**

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَخَّرِينَ ﴿٣٦﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٧﴾ قَالَ هٰذَا نَارُهَا شَرِبَ وَلَٰكِنَّ يَوْمَ يَكُونُ لَهَا مِثْرٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٣٨﴾ وَلَا تَتَّبِعُوهُمَ يَسُوءُ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ يَوْمَ عَظِيمٍ ﴿٣٩﴾

हज़रत सालेह (अलै०) की इस लम्बी तक्रीर का उन की क़ौम पर कोई असर नहीं हुआ और जवाब में कहा कि तुम पर तो जादू कर दिया गया है जिस के असर से तुम्हारी अक्ल मारी गई है और ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हो, तुम हमारे ही जैसे एक इन्सान हो और दावा करते हो कि अल्लाह ने तुम्हें हमारे लिए रसूल बनाकर भेजा है। इसलिए ज़बानी दावे से काम नहीं चलेगा, अपनी सच्चाई पर कोई दलील पेश करो।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि हज़रत सालेह (अलै०) नमाज़ पढ़ते रहे और दुआ करते रहे और लोग देखते रहे कि अचानक पहाड़ फटा और उस से एक बड़ी सी ऊँटनी निकल पड़ी तो हज़रत सालेह (अलै०) ने लोगों से कहा कि यह ऊँटनी मेरे सच्चाई की दलील है और स्रोत (तालाब) से उस के पानी पीने का एक दिन मुक़र्रर है, उस दिन तुम लोग उस स्रोत से नहीं पियोगे और तुम्हारे पीने का एक दूसरा दिन मुक़र्रर है, उस दिन उस से सिर्फ़ तुम लोग पानी पियोगे ऊँटनी नहीं पियेगी और तुम लोग उसे कोई तक्लीफ़ न पहुँचाना, न मारना, न ज़ब्द करना और न उसे उस के मुक़र्रर दिन में पानी पीने से रोकना।

अगर इन बातों में से किसी एक की भी ख़िलाफ़वर्ज़ी करोगे तो तुम पर अल्लाह का बड़ा अज़ाब नाज़िल हो जाएगा।

**157**

فَعَقَرُوهَا فَاصْبِرُوا ذُرِّيَّتَيْنِ ﴿٤٠﴾

‘कौमे समूद’ ने हज़रत सालेह (अलै०) की बात नहीं मानी उन को झुठला दिया और उन की नाफ़रमानी करते हुए पहले ऊँटनी के पांव काट दिये और जब बैठ गई तो उसे हलाक कर दिया। तब हज़रत सालेह (अलै०) ने उन से कहा कि अब तुम्हारी हलाकत व बर्बादी यकीनी हो गई, तीन दिन तक अपने घरों में मजे उड़ा लो।

यह सुनकर और अज़ाब के आसार देखकर लोग अपनी नदामत का इज़हार करने लगे, लेकिन ऐसी



नदामत का अब कोई फ़ायदा नहीं था।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन्होंने ऊँटनी को बुधवार के दिन हलाक किया था। इस के बाद फ़ौरन ही उन के चेहरे पीले हो गए फिर जुमेरात (बृहस्पतिवार) के दिन लाल हो गए और फिर जुमअ (शुक्रवार) के दिन काले हो गए।

‘मक़तिल’ के कौल के मुताबिक़ उन के जिस्मों पर दाने निकल आए थे जो पहले दिन सुर्ख़ थे, फिर ज़र्द हो गए और तीसरे दिन काले हो गए और सनीचर या इतवार के दिन जब उन की हलाकत का वक़्त बिल्कुल करीब हुआ तो वह दाने फूट गए और एक तेज आवाज़ हुई जिस के असर से सब के सब मर गए।

### 158-159 فَآخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَبُالْغِزْرِ الرَّحِيمِ ۝

इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस वाक़िये से नसीहत मिलती है। कौमे समूद के अक्सर लोग ईमान नहीं लाए और आयत नं० (159) में फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! आप का रब हर हाल में ग़ालिब (प्रभावी) है, इसीलिए उस ने ज़ालिमों को पकड़ लिया और वह निहायत मेहरबान है इसीलिए इस अज़ाब से उस ने अपने नेक बन्दों को बचा लिया।

### 160-164 كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنِ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

हज़रत सालेह (अलै०) के बाद अब हज़रत लूत (अलै०) और उन की कौम का वाक़िआ बयान किया जा रहा है, जिन के लिए वह नबी बनाकर भेजे गए थे। यह वाक़िआ भी सूर: अअराफ़ में पूरी तफ़्सील के साथ गुज़र चुका है। हज़रत लूत (अलै०) ‘हारान बिन आज़र’ के बेटे और हज़रत इब्राहीम (अलै०) के भतीजे थे। अल्लाह तआला ने उन्हें हज़रत इब्राहीम (अलै०) की ज़िन्दगी में ही सुदूम, उमूरिया और इस इलाके की दूसरी बस्तियों के लिए नबी बनाकर भेजा था।

हज़रत लूत (अलै०) बाबुल के रहने वाले थे, लेकिन जब उन्हें वहाँ के लिए नबी बनाया गया तो वहाँ के रहने वालों की तरफ़ उन की निस्बत कर दी गई। हज़रत लूत (अलै०) उन लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे, लेकिन उन्हें उन की दअवत का कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा, बल्कि रोज़ बरोज़ उन की सरकशी बढ़ती ही गई और लवातत (Homosex) जैसे बुरे कामों पर उन का इस्सार बढ़ता रहा तो अल्लाह तआला ने उन्हें तबाह कर दिया।

### 165-166 أَتَأْتُونَ الذَّكَرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۖ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۝

हज़रत लूत (अलै०) ने सुदूम और उमूरिया वालों को पहले तो उन के शिर्क व गुनाह की वजह से डराया और अपने पैरवी की दअवत दी, फिर अपने बेलौस जज़्बे को स्पष्ट किया कि उन्हें किसी माली

नफे की लालच नहीं है।

उस के बाद उन्हें उन के निहायत घिनावने गुनाह लवातत (Homosex) की घिन दिलाई और कहा कि तुम इन्सानियत से कितने नीचे गिरे चुके हो, हैवानी शहवत ने किस तरह तुम्हारी अक्लों पर पर्दा डाल दिया है कि मर्दों के साथ बद्फ़ेअली (sex) करते हो और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो बीवियाँ पैदा की हैं उन में तुम्हारे अन्दर कोई चाहत बाकी नहीं है। तुम्हारी फ़ितरत भ्रष्ट हो गई है, अच्छा व बुरा, हलाल व हराम के दर्मियान पाये जाने वाले तमाम हदों को तुम फलांग चुके हैं।

**167-175**

قَالُوا لَيْنَ لَمْ تَنْتَهُ يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ۖ قَالَ إِنِّي لَعَلَّكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۚ رَبِّ هُجْنِي  
وَأَهْلِي مِمَّا يَعْبُونُ ۖ فَجَنَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۚ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَدِيرِينَ ۚ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۚ  
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ  
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

हज़रत लूत (अलै०) की इस बात का उन लोगों पर कोई असर नहीं हुआ और जवाब में कहा कि अगर तुम हमें बुरा कहने से बाज़ नहीं आओगे तो हम तुम्हें अपनी बस्ती से निकाल देंगे, इसलिए कि हमारा और तुम्हारा मिज़ाज मिलता नहीं है। हज़रत लूत (अलै०) ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारे इस बुरे काम को बहुत बुरा जानता हूँ इसलिए मैं खुद ही तुम्हारी बस्ती छोड़ देना चाहता हूँ क्योंकि तुम्हारी इस मुजरिमाना हरकत का नतीजा हलाकत व बर्बादी के सिवा कुछ नहीं होगा और चूँकि उन्हें यकीन था कि अल्लाह इस क़ौम पर अपना अज़ाब ज़रूर नाज़िल करेगा इसीलिए दुआ की कि ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घरवालों को इन के बुरे करतूतों के अन्जाम से निजात दे दे।

चुनाँचे अल्लाह ने उन की दुआ कुबूल फ़रमा ली, उन्हें और उन के घरवालों और दूसरे मुसलमानों को उस अज़ाब से बचा लिया जिस के ज़रिये वह लोग हलाक कर दिये गए मगर हज़रत लूत (अलै०) की बूढ़ी बीवी जो काफ़िरों के बुरे कामों की ताईद करती थी और काफ़िर थी वह भी दूसरे काफ़िरों के साथ हलाक कर दी गई।

अल्लाह तआला ने पहले तो उन बस्तियों को उलट दिया, फिर उन पर पत्थरों की बारिश कर दी।



## आयत नं० 176 से 212 तक

كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمِرْثَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ شُعَيْبٌ ۖ اَلَا تَتَّقُونَ ۖ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۖ فَاتَّقُوا اللهَ وَاطِيعُوْهُ ۖ وَمَا اَسْأَلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیْ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۖ اَوْفُوا الْكَيْلَ ۚ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ۖ وَنٰوُوا بِالْقِسْطِ اِیْسَ الْمُسْتَقِیْمِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوْا النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ ۚ وَلَا تَعْتَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ۖ وَاتَّقُوا الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَالْجِلَّةَ الْاَوَّلِیْنَ ۖ قَالُوْا اِنَّهَا اَنْتَ مِنَ الْمُسْحَرِیْنَ ۖ وَمَا اَنْتَ اِلَّا كِبْشُرٌ مِّثْلُنَا ۚ وَاِنْ نُّطَّاكَ لَهِنَ الْكٰذِبِیْنَ ۖ فَاسْقِطْ عَلَیْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ ۚ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۖ قَالَ رَبِّیُّ الصّٰدِقِیْنَ ۖ قَالَ رَبِّیُّ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۖ فَكَذَّبُوْهُ ۚ فَآخَذَهُمْ عَذَابُ یَوْمِ الظَّلٰمَةِ ۚ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابٌ یُّوْمٍ عَظِیْمٍ ۖ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ۚ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۖ وَاِنْ رَبَّكَ لَهٗوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۖ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِیْلٌ مِّنْ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۖ نَزَلَ بِهٖ الرُّوْحُ الْاَمِیْنُ ۖ عَلٰی قَلْبِكَ لِتَكُوْنُ مِنَ الْمُنْذِرِیْنَ ۖ بِلِسَانٍ عَرَبِیٍّ مُّبِیْنٍ ۖ وَاِنَّهٗ لَفِیْ زُبْرِ الْاَوَّلِیْنَ ۖ اَوَلَمْ یَكُنْ لَهُمْ اٰیَةٌ اَنْ یَّعْلَمَهُ عَلٰی بُنٰی اِسْرَآءِیْلَ ۖ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰی بَعْضِ الْاَعْجَمِیْنَ ۖ فَقَرَأَهُ عَلَیْهِمْ مَا كَانُوْا بِهٖ مُّؤْمِنِیْنَ ۖ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِی قُلُوْبِ الْمَجْرِمِیْنَ ۖ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰی یُرَوُّا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ۖ فَاِتٰیهِمْ بَغْتَةً ۚ وَهُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ۖ فَنَقُولُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۖ اَفَبِعَذَابِنَا یَسْتَعْجِلُوْنَ ۖ اَفَدْرِیْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِیْنَ ۖ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَا كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ ۖ مَا اَغْنٰی عَنْهُمْ مَا كَانُوْا یَسْتَعُوْنَ ۖ وَمَا اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْنٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۖ وَكُلِّیْ شَوْمًا ۚ كُنَّا ظٰلِمِیْنَ ۖ وَمَا نَزَّلَتْ بِهٖ الشَّیْطٰنُ ۖ وَمَا یَنْبَغِیْ لَهُمْ وَمَا یَسْتَطِیْعُوْنَ ۖ اِنَّهُمْ عَنْ السَّمِیْعِ لَمَعَرُوْلُوْنَ ۖ

### अनुवाद-

(176) अल-ऐका (जंगल के रहने) वालों ने रसूलों को झुठलाया; (177) जबकि शुऐब ने उनसे कहा, “क्या तुम डरते नहीं? (178) मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार हूँ, (179) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो, (180) मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के ‘रब’ के ज़िम्मे है। (181) नाप पूरा-पूरा भरा करो और घाटा न दिया करो। (182) और तराजू सीधा रख कर तौला करो; (183) और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फ़िरो; (184) और डरो उससे ‘जिसने’ तुम्हें और तुम से पहलों की नस्लों को पैदा किया।” (185) उन्होंने कहा, “तुम पर जादू का असर हो गया है, (186) और तुम तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो, और हम तो तुम्हें बिल्कुल झूठा समझते हैं; (187) अगर तुम सच्चे हो तो, हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो।” (188) (शुऐब ने) कहा, मेरा ‘रब’ ही जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।” (189) मगर उन्होंने उनको झुठला दिया, फिर छाया वाले दिन के अज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक वह एक बड़े दिन का अज़ाब था; (190) इसमें बड़ी निशानी है, और इनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं; (191) और तुम्हारा रब ताक़त वाला, रहम वाला है। (192) और (कुर्आन) यह सारे संसार के रब का नाज़िल किया हुआ है; (193) इसको रूहुल अमीन (विश्वसनीय आत्मा) लेकर नाज़िल हुए हैं; (194) आप के दिल पर, ताकि आप चेतावनी देने वाले बनें; (195) स्पष्ट अरबी भाषा में, (196) और इसकी ख़बर पहले लोगों के ग्रन्थों में भी मौजूद है। (197) क्या उन लोगों के लिए यह निशानी नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं? (198) और अगर हम इसे किसी अज़मी (ग़ैर जानने वाले) पर उतारते, (199) वह उनको पढ़ कर सुनाता तो भी यह उस पर ईमान

लाने वाले न थे। (200) इस तरह 'हमने' यह बात मुजरिमों के दिलों में दाखिल कर दी, (201) वे इस पर ईमान नहीं लाएँगे, जब तक दर्दनाक अज़ाब न देख लें; (202) तो वह उन पर अचानक आएगा और उससे वे बेख़बर होंगे। (203) तो उस समय वे कहेंगे, “क्या हमें मोहलत मिलेगी?” (204) तो क्या यह 'हमारे' अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं? (205) क्या तुम ने सोचा! अगर हम इन्हें कुछ साल तक सुख भोगने दें; (206) फिर उन पर वह चीज़ आ जाए, जिससे उन्हें डराया जा रहा है? (207) तो जो सुख उन्हें मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा। (208) और 'हमने' किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उसके लिए सचेत करने वाले (पहले) भेज देते थे; (209) (ताकि) नसीहत (करें) ! और 'हमारा' काम जुल्म करना नहीं है। (210) और इस (कुआन) को शैतान लेकर नहीं उतरा, (211) और न यह काम उनके बस का है, और न वह ताक़त रखते हैं; (212) वे इसके सुनने से भी दूर रखे गये हैं।

## आयत नं० 176 से 212 तक की व्याख्या

**176-180**

كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمَيْمَةِ الْمُسْلِمِينَ إِذْ قَالَ لَهُمُ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ اجْتَبَىٰ إِلًا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

हज़रत लूत (अलै०) के बाद अब हज़रत शुऐब (अलै०) और 'अस्हाबे मद्यन' का किस्सा बयान किया जा रहा है, जिन के लिए वह नबी बनाकर भेजे गए थे।

'हाफिज़ इब्ने कसीर' कहते हैं कि 'अस्हाबे ऐका' 'अहले मद्यन' ही हैं और हज़रत शुऐब (अलै०) उन्हीं लोगों में से थे, चूँकि वह लोग 'ऐका' नाम के एक घने दरख्त की पूजा करते थे इसीलिए अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब (अलै०) का ज़िक्र करते वक़्त **أَخُوهُمْ شُعَيْبٌ** 'अखूहुम शुऐबा' नहीं कहा, ताकि मूर्ति पूजकों की तरफ़ उन की निस्वत न हो।

सूर: हूद में **وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبٌ** कहा इसलिए कि वह उन्हीं लोगों में से थे। आयत नं० (177) से (180) तक की तफ़्सीर हूद, सालह और लूत (अलै०) के वाकिआत में गुज़र चुकी है।

'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु' रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) का इर्शाद है, “अल्लाह तआला उस मर्द की तरफ़ हरगिज़ (नज़रे रहमत से) न देखेगा जो किसी मर्द से या अपनी औरत से इस तरह का काम करे”।

**181-184**

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْخَالِفِينَ ۖ وَنُوا بِالْقِسْطِ ۖ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ وَلَا تَجْسُوا النَّاسَ ۖ أَشْيَاءَ هُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُمْسِكِينَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَالَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبَالَ الْأُولَىٰ ۖ

शिक के अलावा अस्हाबे मद्यन का एक बड़ा गुनाह यह भी था कि नाप-तौल में कमी-बेशी करते थे यानी किसी को देने के वक़्त कम और किसी से लेते वक़्त ज़्यादा तौलते थे और लोगों से उन का माल कर्ज़ या उधार लेते और जब वापस करते तो कम देने की कोशिश करते, उस के लिए हज़ार तरीक़े अपनाते मुसाफ़िरोँ और राह चलते लोगों का माल व सामान छीन लेते थे। उन का यह अमल उन की घटिया

ज़ेहनियत और दुनिया से सख्त दर्जे की मुहब्बत पर दलालत करती थी।

हज़रत शुऐब (अलै०) ने उन्हें शिर्क से मना किया, तौहीद की दअवत दी और उन के इन अ़ामाल की बुराई को बयान कर के अ़द्ल व इन्साफ़ की दअवत दी और उन्हें नसीहत की कि जब दूसरों के लिए नापो तो पूरा नापो, नाप-तौल में कमी न करो, अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ वज़न करो।

تَطَائِرِ الْمُسْتَقِيمِ की तफ़सीर सूर: बनी इस्राईल आयत नं० (35) में गुज़र चुकी है और लोगों के हुक्क व माल वापस करते वक़्त कटौती न करो, लूटमार और क़ल्ल व ग़ारतगरी के ज़रिये ज़मीन में फ़साद न फैलाओ और उस अल्लाह से डरते रहो जिस ने तुम्हें और तुम से पहले लोगों को पैदा किया।

असह्राबे मद्यन और हज़रत शुऐब (अलै०) का यह वाकिअ सूर: अअराफ़ आयत नं० (85) और सूर: हूद आयत नं० (84/85) में गुज़र चुका है।

### 185-188

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَخَّرِينَ ۖ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَذِبِينَ ۖ  
فَأَسِطْ عَلَيْنَا كَسَافًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ رَبِّیْۤ اعْلَمْ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

हज़रत शुऐब (अलै०) की इस लम्बी बात का उन की कौम पर कोई असर नहीं हुआ और जैसा कि कौमे समूद ने हज़रत सालेह (अलै०) से कहा था, असह्राबे मद्यन ने भी हज़रत शुऐब (अलै०) से कहा कि तुम पर तो जादू कर दिया गया है, जिस की वजह से तुम्हारी अक्ल मारी गई है और ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हो। तुम हमारे ही जैसे इन्सान हो और दावा कर बैठे हो कि अल्लाह ने तुम्हें हमारे लिए रसूल बनाकर भेजा है। हमें यकीन है कि तुम झूठे हो इसलिए ज़बानी दावे से काम नहीं चलेगा, अगर तुम्हें अपनी सच्चाई पर इस्सार है तो आसमान के टुकड़े हमारे सरो पर गिरा कर हलाक कर दो।

हज़रत शुऐब (अलै०) ने उन के इस इन्कार और हठधर्मी का यह जवाब दिया कि अल्लाह तआला तुम्हारे इन्कार और दूसरे गुनाह से ख़ूब बाख़बर है और उसे ख़ूब मालूम है कि तुम किस अज़ाब के हक्दार हो। जब तुम्हारा वक़्त आ जाएगा तो वह अपने इल्म के मुताबिक़ तुम्हारे अ़ामाल का तुम्हें बदला देगा।

### 189-191

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ الْظَّلَمَةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ  
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

जब उन्होंने अपने नबी की हर बात को झुठला दिया और अपने इन्कार व गुनाह पर उन का इस्सार बढ़ता ही गया तो अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लिया, जिसे यहाँ “साये वाले दिन के अज़ाब” से तअबीर (संज्ञा) दी और बहुत ही ख़तरनाक अज़ाब बताया गया।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि ‘असह्राबे मद्यन’ के हलाक किये जाने का वाकिअ कुर्आन करीम की तीन सूरतों में बयान किया गया है। सूरतुल अअराफ़ की आयत नं० (91) में बताया गया है कि ज़मीन उन के पैर के नीचे पूरी शिद्दत से हिलने लगी, उन के जिस्मों पर कपकपी तारी हो गई और सूर: हूद आयत नं० (94) में बताया गया है कि वह लोग एक चीख़ के ज़रिये हलाक कर दिये गए और यहाँ इस सूरत में है कि उन्होंने हज़रत शुऐब (अलै०) से यह मुताल्बा किया कि आसमान के टुकड़े उन के सरो



पर गिराकर हलाक कर दिये जाएँ तो अल्लाह ने ख़बर दी कि उन्हें “साये वाले दिन के अज़ाब” ने अपनी गिरफ्त में ले लिया।

चुनाँचे ऐसा हुआ कि अल्लाह ने जब उन्हें हलाक करना चाहा तो उन पर तीनों किस्म के अज़ाब मुसल्लत कर दिये। ‘हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा’ से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने जहन्नम की सख़्त गर्म हवा भेज दी जो सात दिन तक वहाँ चलती रही, जिस की गर्मी से उन के बदन पक गए उन के मकानात आग बन गए, कुंवों और पानी का चश्मा खौलने लगा तो अपने घरों से भाग पड़े, जब बाहर निकले तो सूरज की सख़्त गर्मी ने उन के दिमागों को खौला दिया और उन के क़दमों के नीचे की ज़मीन आग बन गई, यहाँ तक कि उन के पाँव झुलस गए। फिर एक स्याह बादल उन के सरो पर मण्डलाने लगा, उस से शुरु में ठंडक हो गई उससे तमाम अस्हाबे मद्यन, उस के नीचे आकर जमा हो गए तो अल्लाह तआला ने उन पर आग की बारिश और कपकपी कर दी जिससे चीख़ व पुकार करने लगे और सभी तबाह हो गए।

**192-196**

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝ عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ۝ وَإِنَّهُ لَفِي زُبْرِ الْوَيْلِينَ ۝

शुरु सूर: की आयत नं० (5) में कुर्आने करीम का ज़िक्र आ चुका है कि जब भी इस की कोई आयत या सूर: नाज़िल होती है तो मुशिरकीने मक्का इस का इन्कार कर देते हैं। उन्हीं मुशिरकीन की नसीहत के लिए पिछली कौमों की हलाकतों के वाकिआत बयान करने के बाद अब दोबारा रुख़ कुर्आन करीम की तरफ़ मोड़ दिया गया है कि यह रब्बुल आलमीन की नाज़िल की हुई किताब है, इस में किसी शुब्हा की गुन्जाइश नहीं है, जिसे जिब्रईल अमीन ने अल्लाह के हुक्म से निहायत फ़सीह व बलीग़ ज़बान में नबी करीम (सल्ल०) के दिल पर नाज़िल किया है, ताकि आप (सल्ल०) उसे पढ़कर अहले कुरैश को सुनाएँ और उन्हें जहन्नम के अज़ाब से डरा कर अल्लाह पर ईमान लाने की दअवत दें।

इस कुर्आन का ज़िक्र पिछली आसमानी किताबों में भी आया है। सूर: बकर: आयत नं० (97) में आया है:-

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلْجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ

“ऐ नबी! आप कह दीजिए कि अगर जिब्रईल का दुश्मन है (तो इस से कुछ नुक़सान नहीं)

इसलिए कि उस ने “कुर्आन आप के दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है जो पिछली आसमानी किताबों की तस्दीक़ करता है”।

‘हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा’ फ़रमाती हैं कि “मैंने आप से पूछा या रसूलल्लाह! आप पर व्ह्य कैसे आती है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि कभी तो ऐसे आती है जैसे घंटे की झन्कार और यह व्ह्य मुझ पर सख़्त भारी पड़ती है। जब फ़रिश्ते का बताया हुआ मुझे याद हो जाता है तो वह ठहर जाती है, कभी फ़रिश्ता मर्द की सूरत में मेरे पास आता है मुझ से बात करता है मैं उसका बताया हुआ याद कर लेता हूँ।



हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने आप को इसी हाल में देखा कि सख़्त सर्दी के दिन में आप पर वह्य नाज़िल होती और फिर रुक जाती और आप की पेशानी से पसीना निकलता”। (बुख़ारी)

‘तौरैत’ में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै०) से फ़रमाया, मैं ‘बनी इस्राईल’ के भाईयों के लिए यानी अरबों के लिए आप ही जैसा नबी भेजूंगा, जिस के मुँह में अपना कलाम डाल दूँगा। फिर वह उन्हें मेरी वसीयतें अपनी ज़बान से सुनाएँगे और इन्जील में है हज़रत ईसा (अलै०) ने कहा, मैं अल्लाह से तलब करूँगा कि वह तुम्हारे लिए एक दूसरा रसूल भेज दे जो तुम्हारे साथ हमेशा रहे और वह तुम्हें हर बात सिखाएगा।

**197**

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَأْتِيَهِمْ عَلَيْهَا بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّهِمْ إِسْرَءِيلَ ۖ

इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क्या तौरैत व इन्जील के ज़रिये उल्मा-ए-बनी इस्राईल का इन बातों से वाकिफ़ होना कि मुहम्मद अल्लाह के आखिरी नबी होंगे, अल्लाह अपना कलाम उन की ज़बान पर जारी करेगा और तौरैत व इन्जील में ज़िक्र किये गए तफ़्सीलात के मुताबिक़ नबी करीम (सल्ल०) का मब्अूस होना और कुर्आन का नाज़िल होना। क्या यह सब बातें कुफ़ारे मक्का के ईमान लाने के लिए काफी नहीं थी?

‘इब्ने जरीर’ और ‘इब्ने अबी हातिम’ ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि ‘अब्दुल्लाह बिन सलाम’ ईसाइयों के बहुत ही मशहूर और अच्छे आलिम थे, उन्होंने रसूल (सल्ल०) को देखते ही यकीन कर लिया कि यह वही नबी हैं जिन की बशारत तौरैत में दी गई है।

**198-199**

وَلَوْ كُنَّا عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْيَانِ ۖ فَقَرَأَ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۖ

अल्लाह तआला ने मक्का के इन्कारियों की हठधर्मी और उन के इन्कार की सख़्ती को बयान किया है कि अगर हम इस कुर्आन को किसी अनपढ़ रसूल पर उतार देते, जिस की ज़बान अरबी न होती और वह उसे पूरी फ़साहत के साथ उन्हें पढ़कर सुना लेता तो भी कुफ़ारे मक्का ईमान न लाते और अपने हठधर्मी की वजह से उस की कोई मनमानी तावील कर लेते।

**200-201**

كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۖ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۖ

इन आयात में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जिस तरह अनपढ़ रसूल के पढ़कर सुनाने की सूरत में इन्कार कर देते, उसी तरह यह मुजरिमीन मुहम्मद-ए-अरबी (सल्ल०) के पढ़कर सुनाने की सूरत में भी कुर्आन का इन्कार करते रहेंगे क्योंकि गुनाहों की वजह से इन के दिलों पर पर्दा पड़ गया है, यह किसी हाल में भी ईमान नहीं लाएँगे। सिर्फ़ एक सूरत में कुर्आन की सच्चाई का एतिराफ़ करेंगे कि जब अल्लाह का गुज़ब इन पर नाज़िल होगा और मौत को अपनी आँखों से देख लेंगे तो उस वक़्त अप्सोस करके कहेंगे, वाकई कुर्आन ने सच्ची बात कही थी कि अगर हम ईमान नहीं लाएँगे तो अल्लाह का अज़ाब

हम पर नाज़िल होगा।

कुछ मुफ़स्सरीन ने इस अज़ाब से क़ियामत के दिन का अज़ाब मुराद लिया है।

**202-203**

فِيَاتِهِمْ بُغْتَةٌ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ۚ

कुफ़ारे मक्का पर अल्लाह का अज़ाब ऐसे वक़्त अचानक आएगा कि उन्हें उस के आने की ख़बर भी नहीं होगी और उस वक़्त वह तमन्ना करेंगे कि काश! उन पर अज़ाब नाज़िल न होता और उन्हें ईमान और नेक अमल की मोहलत दे दी जाती।

जैसा कि फ़िरऔन ने जब मौत को अपनी आँखों से देख लिया, तो कहा मैं उस अल्लाह पर ईमान ले आया जिस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक नहीं और जिस पर 'बनी इस्राईल' के लोग ईमान ले आए हैं।

**204**

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۚ

मक्का के काफ़िर नबी करीम (सल्ल०) से कहते थे कि अगर तुम्हारी बात सही है कि हम तुम पर ईमान नहीं लाएँगे तो अल्लाह का अज़ाब हम पर नाज़िल हो जाएगा, तो फिर जल्द ही वह अज़ाब हम पर नाज़िल हो जाए।

सूर: अअराफ़ आयत नं० (70) में उन का कौल नक़ल किया गया है فَاتِنَا بِمَا كُودْنَا

“ऐ मुहम्मद! हम से जिस अज़ाब का वादा करते हो, उसे हम पर उतार दो।”

सूर: अन्फ़ाल आयत नं० (32) में है وَأَمْطَرْنَا عَلَيْكَ حِجَابًا مِّنَ السَّحَابِ ۖ أَوَلَيْسَ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

“हम पर आसमान से पथरों की बारिश कर दे या हम पर कोई और दर्दनाक अज़ाब भेज दे।”

अल्लाह तआला ने आयत नं० (204) में उन के इसी जल्दी पर नकीर की और उन्हें धमकी दी कि क्या तुम्हें हमारे अज़ाब की जल्दी है? तो इन्तिज़ार कर लो।

**205-207**

أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۖ ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۚ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْتَعْوُونَ ۚ

नबी करीम (सल्ल०) को सम्बोधित कर के कहा गया है कि हम ने दुनिया में उन्हें लम्बी उम्र दी और माल व अस्बाब से नवाज़ा, जिन से उन्होंने ख़ूब ऐश किया। फिर जिस अज़ाब का उन से वादा किया गया था उस ने उन्हें अचानक अपनी गिरफ़्त में ले लिया, तो इस लम्बी उम्र और उन की अय्याशियों का क्या फ़ायदा हुआ, न अल्लाह का अज़ाब टला और न हल्का हुआ।

**208-209**

وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۖ وَكَذَّبُوا شَوْمَاكَ ظَالِمِينَ ۖ

अल्लाह तआला ने अपने अद्ल व इन्साफ़ के मुताबिक़ हर क़ौम के पास अपना रसूल बना कर भेजा, जिस ने उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डराया और अल्लाह पर ईमान लाने की दअवत दी। फिर जब उन के ईमान की कोई उम्मीद बाक़ी न रही तो अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया। अल्लाह किसी क़ौम

पर जुल्म नहीं करता कि नबी भेजने से पहले उन्हें हलाक कर दे।

**210-212**

وَمَا تَزِلُّ بِهِ الشَّيَاطِينُ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعَزُونَ

मुशिरकीने मक्का कहते थे कि जिस तरह शयातीन जादूगरों को आसमान की झूठी ख़बरें सुनाते हैं, उसी तरह वह शयातीन एक मनगढ़त कलाम मुहम्मद की ज़बान पर जारी कर देते हैं, जिसे मुहम्मद कुर्आन का नाम देता है, इसी गलत गुमान को यहाँ रद्द किया गया है।

आयात नं० (192/193/194) में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह कुर्आन 'रब्बुल् आलमीन' का कलाम है। इसे जिब्रईल अमीन ने अल्लाह के हुक्म से फ़सीह व बलीग़ ज़बान में नबी करीम (सल्ल०) के दिल पर उतारा है और यहाँ यह बयान किया गया है कि इसे शयातीन ने नहीं उतारा है। कुर्आन अल्लाह का नूर और इन्सान के लिए हिदायत का ज़रिया है और शयातीन का काम तो अल्लाह के बन्दों को गुमराह करना है।

दूसरे यह कि शैतान इस के अहल नहीं बनाए गये हैं कि कुर्आन का बोझ बर्दाश्त कर सकें। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर हम इसे पहाड़ पर उतार देते तो वह अल्लाह के डर से चूर-चूर हो जाता।

तीसरे यह कि शयातीन की पहुँच इस कुर्आन तक नहीं हो सकती इसलिए कि जब अल्लाह तआला इसे रसूल (सल्ल०) के दिल पर नाज़िल करता है तो उस वक़्त फ़रिश्तों का पहरा होता है जो आग के अंगारों के ज़रिये हर उस शैतान को मार भगाते हैं जो सुनने की कोशिश करते हैं, ताकि कुर्आन पूरी हिफ़ाज़त के साथ रसूलुल्लाह (सल्ल०) तक पहुँच जाए।

अल्लाह तआला ने सूरतुल् जिन्न आयात नं० (8) में फ़रमाया है:-

وَأَنَّا كُنَّا الشَّامِتَاتُ فَوَجَدْنَاهَا مَلَكًا حَرِيصًا شَدِيدًا وَدَلِيلًا

“और हम ने आसमान को टटोल कर देखा तो उसे सख़्त चौकीदारों और जला देने वाले अंगारों से भरा पाया”।



## आयत नं० 213 से 227 तक

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونُ مِنَ الْبَعْدِينَ ۖ وَانذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۖ وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ  
فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ۚ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۚ الَّذِي يَرْبِكُ حِينَ تَقُومُ ۚ وَتَقْلِبُكَ فِي السُّجْدِينَ ۚ إِنَّهُ هُوَ  
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ هَلْ أَنْتُمْ عَلَىٰ مَن تَنْزَلُ الشَّيْطَانُ ۚ تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ آفَاقٍ أَثِيمٍ ۚ يُلْقُونَ السَّيْفَ وَأَكْثُرُهُمْ كَاذِبُونَ ۚ وَالشَّعْرَاءُ  
يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۚ أَلَمْ تَرَأَهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَبْتَغُونَ ۚ وَأَنْتُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۚ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا  
اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا ۚ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا ۚ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ۚ

### अनुवाद-

(213) तो अल्लाह के साथ किसी और मअबूद (उपास्य) को न पुकारिए वरना आप सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाएंगे; (214) और अपने करीबी रिश्तेदारों को भी सचेत कीजिए (215) और जो ईमान लाने वाले आपकी पैरवी करें, उनके लिए अपने बाजू (भुजाएँ) झुका दें। (216) तो अगर वे इन्कार करें तो उनसे कह दीजिए “जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।” (217) और भरोसा करो ‘उस’ पर, ‘जो’ बड़ी ताकत वाला, रहम वाला है; (218) ‘जो’ तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो; (219) और सच्चा करने वालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी, (वह देखता है) (220) बेशक ‘वह’ सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (221) क्या ‘मैं’ तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं? (222) हर ढोंग रचने वाले गुनहगार पर उतरते हैं; (223) वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर लोग झूठे होते हैं। (224) और रहे शायर (कवि), तो उनके पीछे बहके हुए लोग चला करते हैं; (225) क्या तुम देखते नहीं! कि वे हर घाटी में बहकते फिरते हैं, (226) और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं? (227) सिवाय उनके, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किये और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया, और इसके बाद भी उन पर जुल्म किया गया तो उन्होंने उसका बदला लिया, और जिन लोगों ने जुल्म किया, उन्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि वे किस जगह लौट कर जाते हैं।

## आयत नं० 213 से 227 तक की व्याख्या

**213**

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونُ مِنَ الْبَعْدِينَ ۖ

कुरआन की हकीकत साबित करने के बाद बन्दों को हुक्म दिया जा रहा है कि वह केवल एक अल्लाह की अ़िबादत करें और उस के साथ दूसरों को शरीक न बनाएँ।

आयत में सम्बोधन नबी करीम (सल्ल०) को है, हालांकि वह मासूम और शिर्क से बिल्कुल پاک थे। इसीलिए मुफ़सिरी ने इस को स्पष्ट किया है कि आप (सल्ल०) तो अल्लाह के सबसे बाइज़त बन्दे हैं, लेकिन बिल्फ़र्ज़ (काल्पनिक तौर पर) अगर आप से भी ऐसी ग़ल्ती हो जाए तो आप भी अज़ाब से नहीं बच सकते। इतने सख़्त हुक्म के बाद मालूम हुआ कि दूसरे लोग शिर्क कर के अल्लाह के अज़ाब

से हरगिज़ नहीं बच सकते?

**214-220**

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۖ وَاحْصِصْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَإِنْ عَصَوْكَ  
فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۚ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۚ الَّذِي يَرْزُقُكَ حِينَ تَقُومُ ۚ وَتَقْلُبُكَ  
فِي السُّجُودِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि वह सब से पहले अपने करीबी रिश्तेदारों को इस्लाम की दअवत दें, इसलिए कि क़ियामत के दिन सिर्फ़ अल्लाह पर ईमान ही किसी के निजात का ज़रिया बनेगा।

‘इमाम बुख़ारी’ ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, “ऐ फ़ातिमा बिनत मुहम्मद! ऐ ‘सफ़िया बिनत अब्दुल् मुत्तलिब’ और ऐ अब्दुल् मुत्तलिब के बेटों! मैं अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे लिए कोई अख़्तियार नहीं रखता हूँ। तुम लोग अपने आप को जहन्नम की आग से बचाओ।”

अल्लाह ने आप को यह भी हुक्म दिया कि आप मोमिनों के साथ शफ़क़त व रहम दिली का बर्ताव कीजिए ताकि उन के दिलों में ईमान दाख़िल हो जाए और अल्लाह के जो बन्दे आप की नाफ़रमानी करें उस से बराअत का ए़लान कर दीजिए और हर हाल में अपने अल्लाह पर भरोसा कीजिए जो हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभावी) अपने मोमिन बन्दों पर निहायत मेहरबान है और जो आप को हर हाल में देख रहा है। जब आप रात के वक़्त तहज्जुद के लिए उठते हैं तो वह आप को देख रहा होता है और जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते हुए क़याम, रुकूअ और सज्दः करते हैं तो भी वह आप को देख रहा होता है यानी अल्लाह की निगाह हर हाल में आप पर होती है, इसलिए कि वह बड़ा सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है।

मुफ़स़िरीन लिखते हैं कि जब आप को शिर्क और मुशिरकीन से ए़लान-ए-बराअत का हुक्म दिया गया तो लाज़िम था कि आप को अल्लाह पर भरोसा करने की नसीहत की जाती, क्योंकि ए़लाने बराअत के बाद तमाम मुशिरकीन ने आप से खुलकर दुश्मनी शुरु कर दी, ऐसी हालत में आप अकेले अल्लाह की मदद के बिना पूरी क़ौम का कैसे मुक़ाबिला कर सकते थे।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप खड़े होकर फ़रमाने लगे। ऐ कुरैश के लोगो! (या कुछ ऐसा ही कलिमा कहा) तुम अपनी-अपनी जानें बचा लो। मैं अल्लाह के सामने किसी के काम न आ सकूँगा। ऐ बनू अ़ब्द मनाफ़! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आ सकूँगा। ऐ मेरी फूफी सफ़िया! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे किसी काम न आ सकूँगा। ऐ मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी फ़ातिमा! मेरे माल से जो चाहो माँग लो, लेकिन अल्लाह के सामने मैं तुम्हारे किसी काम न आऊँगा।” (बुख़ारी)

**221-222**

هَلْ أَتَيْنَاكُمْ عَلَىٰ مَن تَرْتُلُّ الشَّيْطَانُ ۖ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝

आयत नं० (210) में कुर्आन करीम के बारे में कुफ़ारे मक्का के जिस ग़लत अक़ीदे को रद्द किया

गया था, उसी की ताकीद के तौर पर कहा जा रहा है कि कुर्आन शैतानों का कलाम नहीं, जिसे उन्होंने मुहम्मद की ज़बान पर जारी कर दिया है। यह बात अक्ली तौर पर मुहाल है इसलिए कि शैतान अपना कलाम उन काहिनों की ज़बान पर जारी कर देते हैं जो घटिया दर्जे के झूठे और बड़े ही गुनाहगार होते हैं और मुहम्मद (सल्ल०) की सदाक़त की शोहरत तो आ़म है, शयातीन उन के करीब भी फटक नहीं सकते हैं, उन पर तो अल्लाह का सच्चा और बरहक़ कलाम उतरता है जिस में कोई शैतान किसी तरह की भी दरख़ल अन्दाजी नहीं कर सकता है।

**223**

يُلْقُونَ السَّيْفَ وَأَكْثُرُهُم كَذِبُونَ

इस में कहा गया है कि शयातीन आसमान की बातें छुप कर सुनने की कोशिश करते हैं और फिर अपनी तरफ़ से बहुत सी झूठी बातें मिलाकर काहिनों को बताते हैं और इस का दूसरा मतलब यह है कि काहिन लोग शैतानों से जो कुछ सुनते हैं, उस में अपनी तरफ़ से बहुत सी झूठी बातें मिलाकर लोगों को बताते हैं।

पहले मतलब के मुताबिक़ **يُلْقُونَ السَّيْفَ وَأَكْثُرُهُم كَذِبُونَ** से मुराद शयातीन हैं कि उन की अक्सर बातें झूठी होती हैं और दूसरे मतलब के मुताबिक़ इस से मुराद काहिन हैं कि शयातीन उन्हें जो कुछ बताते हैं उन में बहुत सी झूठी बातें मिलाकर लोगों को सुनाया करते हैं।

‘बुख़ारी’ व ‘मुस्लिम’ और दूसरे मुहद्दिसीन ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि कुछ लोगों ने नबी करीम (सल्ल०) से काहिनों के बारे में दर्याफ़्त किया, तो आप ने फ़रमाया कि वह लोग कुछ भी नहीं हैं, लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह! कभी-कभी वह लोग सही बात बताते हैं तो आप ने फ़रमाया कि जिन्न छिप कर उसे सुन लेता है और अपने दोस्त काहिन के कान में डाल देता है, जिस में काहिन अपनी तरफ़ से सौ से ज़्यादा झूठ मिला देता है।

**224-226**

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۚ أَلَمْ تَرَأَهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَدْعُونَ ۚ وَاتَّبَعَهُمْ قَوْمٌ كَثِيرُونَ ۚ مَا يُفْعَلُونَ ۚ

कुछ मुशिरकीने मक्का नबी करीम (सल्ल०) को शायर कहते थे, उन के कौल को रद्द करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जिस तरह शयातीन और नबी करीम (सल्ल०) के मिज़ाज में इख़िलाफ़ है शयातीन उन के करीब भी नहीं फटक सकते हैं, उसी तरह नबी करीम (सल्ल०) का शायर होना भी अक्ली तौर पर नामुम्किन है, इसलिए कि उन के और आ़म शायरों के मिज़ाज में सख़्त इख़िलाफ़ है।

नबी करीम (सल्ल०) हक़ पसन्द, सादिक़ व अमीन, पाकीज़ा नफ़्स और पाकीज़ा नज़र हैं, झूठ, मुबालिगा और नंगेपन से हज़ारों कोस दूर हैं। जबकि शोअरा (कवियों) का हाल यह है कि उन की पैरवी वह लोग करते हैं जो हक़ से दूर होते हैं, इसलिए कि वह ख़यालात (काल्पनिक) की दुनिया में भटकते हैं, झूठ बोले बग़ैर उन की शायरी मुकम्मल नहीं होती, लोगों की इज़्ज़तों पर हमले करना, पाक-दामन औरतों से इज़्ज़ारे इश्क़, सच को झूठ और झूठ को सच साबित करना, लोगों को गुनाह पर उभारना, बिना-किये अच्छे आ़माल की अपनी तरफ़ निस्बत (Credit) करना और इसी तरह की जितनी



ग़लत बातें हो सकती हैं उन की शायरी का विषय होती हैं।

इसलिए साबित हुआ कि नबी करीम (सल्ल०) शायर (कवि) नहीं हैं और उन के लिए शायर (कवि) होना हरगिज़ मुनासिब नहीं है। वह तो अल्लाह के नबी और रसूल हैं, तमाम बुरे गुणों से पाक और तमाम अच्छे गुणों और अख़्लाक वाले हैं।

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि लोगों ने आप (सल्ल०) से जादूगरों के बारे में पूछा तो आप (सल्ल०) ने जवाब दिया यह किसी क़ाबिल नहीं होते। लोगों ने कहा कि ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वह कभी-कभी लोगों को ऐसी बातें बताते हैं जो सच्ची होती हैं, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जवाब दिया कि यह वह सच्ची बातें हैं जो कि (शयातीन) उचक लेते हैं और अपने साथी (जादूगर) के कान में फूँकता है और वह इस में सौ झूठ मिलाते हैं। (बुख़ारी)

227

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

शोअरा (कवि) ख़ास तौर से ऐसे ही होते हैं जैसे उन की इन आयतों में सिफ़ात बयान की गई हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो अहले इमान होते हैं और उन की ज़िन्दगी नेक अमल करते-करते गुज़र जाती है और अपने अशअर में अल्लाह, उस के रसूल, दीने इस्लाम और अच्छे अख़्लाक की बातें करते हैं और अगर कोई अल्लाह का दुश्मन या उस के नबी की बुराई बयान करता है तो उस का जवाब देते हैं।

ऐसे शोअरा को अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा में आ़ाम शायरों से अलग करार दिया है। जैसे- ‘अब्दुल्लाह बिन रवाहा’ ‘हस्सान बिन साबित’ ‘कअब बिन मालिक’ और ‘कअब बिन जुहैर’ आदि जिन्होंने नबी करीम (सल्ल०) और दीने इस्लाम के लिए अच्छे-अच्छे शोअर कहे और नबी करीम (सल्ल०) ने मुख़्तलिफ़ अवकात में उन की तअरीफ़ की और उन्हें दुआ दी।

‘हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा’ से कहा, अल्लाह की क़सम! तुम्हारे अशअर काफ़िरों पर तीर से ज़्यादा कारी ज़र्ब लगाते हैं। (मुस्नद अहमद)

और ‘हस्सान बिन साबित’ (रज़ि०) मुशिरकीन की बुराई बयान करो, जिब्रईल तुम्हारे साथ हैं।

(इब्ने सअद, इब्ने अबी शैबा)

ऐसे शुअरा की आप (सल्ल०) खुद हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाते। ‘उबई इब्ने कअब’ (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, ‘कुछ शोअरों में हिक्मत होती है’। (बुख़ारी)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, सच्ची बात जो किसी शायर ने कही है वह ‘लबीद’ का कलाम है। जो यह है:-

الْأَكْلُ شَيْءٌ مَا خَلَا اللَّهُ بَاطِلٌ

“अल्लाह के सिवा हर चीज़ तबाह होने वाली है”। (बुख़ारी)

एक मौक़ा पर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! हस्सान की जिब्रईल के ज़रिये मदद फ़रमा।

(मुस्नद अहमद, इब्ने सअद)

यह हुक्म कियामत तक बाकी रहेगा यानी जो शायर ईमान व नेक आमल को अपना शआर (चिन्ह) बनाएँगे, तौहीद की राह पर चलेगें, बिद्अत व खुराफात से दूर रहेंगे और उन शेअरों को रद्द करेंगे जो इस्लाम पर हमले के लिए हों, कुफ़ व बिद्अत को रिवाज देने के लिए हों या भलाई से रोकने के लिए हों और बुराई को दअवत देंगे तो वह 'हस्सान बिन साबित' और 'अब्दुल्लाह बिन रवाहा' जैसे शायरों के हिस्से में दाखिल होंगे।

आयत के आखिर में कुफ़ारे मक्का को धमकी दी गई है कि जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कभी जादूगर और कभी शायर (कवि) कहते थे और कुर्आन करीम को जादू और शायरी का नाम देते थे।



(भाग-27)

सूर-ए-नम्ल

(सूर: नं.27)

## तफ़्सीर सूर: नम्ल

**नाम-** आयत नं० (18) में 'अल् नम्ल' का शब्द आया है, जिस के माने 'चीटियाँ' हैं। यही शब्द इस सूर: का नाम रख दिया गया है। 'साहिबे मुहसिनुत्तन्ज़ील' मुफ़स्सिर के हवाले से लिखते हैं कि इस आयत में चीटियों की आपस की बातचीत नम्ल की गई है, जिस से साबित होता है कि हैवानात तक को भी यह बात मालूम है कि अम्बिया-ए-किराम और उन के साथी जानबूझकर किसी को तक्लीफ़ पहुँचाना गवारा नहीं करते हैं और जब वह इस दर्जे के आला इन्सान होते हैं तो उन पर ईमान लाना और उन पर एतिमाद करना अक्ली तौर पर वाजिब हो जाता है।

इसी मुनासिबत से इस सूर: का नाम 'अल् नम्ल' रख दिया गया है।

### नाज़िल होने का ज़माना-

'कुरुबी' लिखते हैं कि यह सूर: सब के नज़्दीक मक्की है और आम मक्की सूरतों की तरह इस में भी (मरने के बाद उठाए जाने के) अक्कीदे पर कई तरीकों से बहस की गई है और कुफ़ारे मक्का को आखिरत पर ईमान लाने की दअवत दी गई है जो तमाम दुनिया व आखिरत की भलाईयों का सरचश्मा (स्रोत) हैं। इस में कुछ और विषय भी हैं, जैसे कुरआन करीम की सच्चाई, तौहीद का साबित होना और नमाज़ व ज़कात वगैरह, लेकिन अस्ल विषय आखिरत पर ईमान लाना है।



## आयत नं० 1 से 14 तक

طَسَّ بِتِلْكَ الْفُتْرَانِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ۝ هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَسِرُونَ ۝ وَإِنَّكَ لَتَأْتِي الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنِّ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لَهْمِلَةَ إِنِّي أَنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ بَشِيرٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ مَا نُوَدِّي أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۝ وَسُبْحَنَ اللَّهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ يُؤْتِي أَمْرًا أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَأَلْقِ عَصَاكَ ۝ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّى مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۝ يَمُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدُنِّي الْمُرْسَلُونَ ۝ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ ۝ فَإِنِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۝ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ تَهُمْ أَيْتَانَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

### अनुवाद-

① ता- सीन। ये आयतें हैं कुर्आन और एक स्पष्ट किताब की। ② हिदायत और खुशख़बरी है ईमान वालों के लिए; ③ वे जो नमाज़ कायम करते, और ज़कात देते, और आखिरत पर यकीन रखते हैं। ④ जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, 'हमने' उनके काम उनके लिए खुशनुमा (सुन्दर) बना दिये हैं तो वे परेशान भटकते फिरते हैं; ⑤ ऐसे ही लोगों के लिए (दुनिया में) बुरा अज़ाब है, और आखिरत में भी, वे बड़े घाटे में होंगे। ⑥ और आप यह कुर्आन एक हिकमत वाले, बड़े जानने वाले की ओर से पा रहे हैं। ⑦ (और याद करो) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा, "मैंने एक आग देखी है, मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता हूँ या तुम्हारे पास कोई दहकता हुआ अंगारा लाता हूँ, ताकि तुम तापो।" ⑧ जब वह उसके पास पहुँचे तो आवाज़ आई, "मुबारक है 'वह' जो इस आग में है, और जो इसके आस-पास है, और पाक है अल्लाह, सारे संसार का 'रब'; ⑨ ऐ मूसा! वह तो, 'मैं अल्लाह हूँ,' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला! ⑩ और अपना अ़सा (लाठी) डाल दें।" जब उन्होंने देखा कि वह हरकत कर रहा है, जैसे वह कोई साँप है, तो पीठ फेर कर भागे और पलट कर भी न देखे। "ऐ मूसा! डरो नहीं, रसूल मेरे पास डरा नहीं करते; ⑪ सिवाय उसके कि जिसने जुल्म किया हो, फिर बुराई को भलाई से बदल दिया; तो 'मैं' बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला हूँ। ⑫ और आप अपना हाथ अपने गिरेबान में डलें, तो वह बिना किसी रोग के सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, यह नौ निशानियों में से है जिनके साथ आप फिरऔन और उसकी क़ौम के पास जाएँ वे बड़े फ़ासिक़ (दुराचारी) लोग हैं।" ⑬ तो जब उनके सामने 'हमारी' खुली निशानियाँ आयीं, तो उन्होंने कहा, "यह तो खुला जादू है।" ⑭ और जुल्म और घमंड की वजह से उनका इन्कार किया, जबकि उनको अपने दिल में यकीन हो चुका था, तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अंजाम हुआ?

## आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

**1-3**

طَسَّ سِتْلَكَ الْفُرَانِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ۚ هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۚ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ  
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝

ता, सीन, यह शब्द मुक़त्तात कहलाते हैं और जैसा कि पहले कई बार लिखा जा चुका है हुरूफ़ मुक़त्तात के माने और मतलब अल्लाह ही बेहतर जानते हैं, अल्बत्ता इन हुरूफ़ को मुख़लिफ़ सूरतों के शुरू में लाने से इस तरफ़ इशारा मिलता है कि यह कुर्आन उन्हीं हुरूफ़ (अक्षरों) से बने है जिन से तुम्हारी बातचीत होती है, लेकिन तुम इस जैसा कलाम लाने से बेबस हो। यह इस बात की दलील है कि कुर्आन अल्लाह का कलाम है, जो नबी करीम (सल्ल०) पर बतौर मोअज़िज़ा नाज़िल हुआ है।

इन आयात में (आयाते कुर्आनिया की) तीन सिफ़ात बयान की गई हैं:-

पहला गुण यह है कि लोग इन आयतों की तिलावत किया करेंगे।

दूसरा गुण यह है कि यह कुर्आन भी दूसरी आसमानी किताबों की तरह एक किताब है, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर नाज़िल फ़रमाया है।

तीसरा गुण यह है कि यह कुर्आन एक स्पष्ट किताब है जिसे अक़ीदा तौहीद, अ़िबादात और दूसरे अहक़ाम-ए-शरीअत को खोल कर बयान कर दिया गया है।

कुर्आन अपने इन गुणों के साथ उन मोमिनों के लिए किताबे हिदायत और बाइसे रहमत व रज़ा-ए-इलाही है जो ईमान लाने के बाद अच्छे आ़माल करते हैं, नमाज़ कायम करते हैं, ज़कात अदा करते हैं और आख़िरत पर पूरा यकीन रखते हैं। मालूम हुआ कि जो लोग ईमान व अ़मल की दौलत से मह़रूम हैं, उन्हें इस कुर्आन से फ़ायदा नहीं पहुँचता है।

**4**

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّاتٌ لَهُمْ أَعْيَالُهُمْ فَبِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

आख़िरत पर ईमान लाना ही तमाम भलाईयों की जड़ है। जो शख्स आख़िरत का इन्कारी होता है, अल्लाह तआला उस की बुराईयों को उस की निगाह में ख़ूबसूरत बना देते हैं, उस के दिल से जज़ा व सज़ा का ख़ौफ़ निकल जाता है और वह शहवतों और गुनाहों में डूब जाता है।

फिर उस की हालत ऐसी हो जाती है कि वह उन्हीं गुनाहों में डुबकी लगाता रहता है और उस के अन्दर भलाई व बुराई में फ़र्क़ करने की क्षमता बाकी नहीं रहती।

**5**

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْخَسِرُونَ ۝

इस में ऐसे लोगों का अन्जाम बताया गया है कि अल्लाह तआला उन्हें दुनिया में बद्तरीन अज़ाब में मुब्तिला करेगा, जैसा कि कुफ़ारे मक्का के साथ हुआ कि जंगे बद्र में क़त्ल किये गए और बाकी कैद कर लिये गए और आख़िरत में सब लोगों से ज़्यादा ख़सारा उठाने वाले होंगे यानी उन्हें आग का सख़्त अज़ाब दिया जाएगा।



6-7

وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ مُوسَى لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُمْ مِنْهَا خَبِيرٌ أَوْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَيْءٍ قَبِيسٍ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝

ऊपर की आयतों में कुर्आने करीम और उस के कुछ गुणों का जिक्र आया है, इसलिए इस आयत में आप (सल्ल०) को ख़बर दी जा रही है कि यह कुर्आन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उस अल्लाह की ओर से नाज़िल हुआ है जिस का कोई काम हिक्मत से खाली नहीं है और जो हर चीज़ से अच्छी तरह वाकिफ़ है, इसलिए इस कुर्आन की सच्चाई में कोई शुब्हा नहीं और यह आयत उन अजीब व ग़रीब वाकिफ़ात के लिए बतौर तम्हीद भी है जो इस के बाद की जाने वाली हैं यानी कुप्फ़ारे मक्का को यह बात बताई गई है कि अल्लाह तआला ने यह ख़बरें नबी करीम (सल्ल०) को वस्य के ज़रिये बताई हैं, वरना यह ख़बरें उन्हें कहाँ से मालूम होतीं और यह इस बात की दलील है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के नबी हैं और यह कुर्आन अल्लाह का क़लाम है।

8-10

فَلَمَّا جَاءَ مَا يُوعَدُونَ أَنْ يُؤْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۖ وَسُيْحَنَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ يُؤْمِنُ إِنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَأَلْقَى عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّى مُدْبِرًا ۖ وَلَمْ يُعَقِّبْ ۖ يَمُوسَىٰ لَا يَخَفْ ۖ إِنِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا ۖ فَخُذْ ۖ إِنِّي لَدَدِّي الْمُرْسَلُونَ ۝

इन अजीब व ग़रीब ख़बरों में से पहली ख़बर हज़रत मूसा (अलै०) से सम्बन्धित है। जब वह मद्यन से मिस्र जाने के लिए अपनी बीवी 'बिन्त शुऐब' के साथ रवाना हुए। जब रात के वक़्त 'कोहे सैना' के पास पहुँचे और ज़माना सर्दी का था, तो देखा कि पहाड़ की ओर से आग की रौशनी दिखाई दे रही है, उन्होंने अपनी बीवी से कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं वहाँ जाकर लोगों से रास्ते का पता लगाता हूँ (इसलिए कि वह रास्ता भूल गए थे) या थोड़ी सी आग ही ले आता हूँ ताकि तुम सर्दी की इस रात में कुछ गर्मी हासिल करो।

जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि यह तो आग नहीं बल्कि नूर है, जो एक बहुत ही हरे दरख़्त से फूट कर निकल रहा है, उस नूर की तेज़ी और उस दरख़्त का हरापन बढ़ता ही जा रहा है और सर उठाया तो देखा कि वह नूर आसमान की तरफ़ से आ रहा है और जहाँ तक निगाह जाए वहाँ तक उस का नूर कायम है। फिर आवाज़ आई कि ख़ैर व बरकत है उस शख्स के लिए जो इस आग में खड़ा है, जो हकीकत में अल्लाह का नूर है और उन लोगों के लिए जो नूर के आस-पास रहने वाले हैं यानी सरज़मीन शाम व बैतुल् मक्दिस् वालों के लिए।

अल्लाह तआला ने सूर: अम्बिया आयत नं० (71) में सरज़मीन-ए-शाम को बरकत वाली कहा है।

“और हम इब्राहीम और लूत को बचाकर उस ज़मीन की तरफ़ ले चले जिस में हम ने तमाम जहान वालों के लिए बरकत रखी थी”।

चूँकि इस मक़ाम का तकाज़ा था कि अल्लाह तआला की ज़ात को बन्दों के साथ हर मिसाल से पाक माना जाए और हज़रत मूसा (अलै०) को यह बताया जाए कि ऐसी बात नहीं कि अल्लाह रब्बुल् आलमीन

उस दरख्त पर बैठा है या उस के अन्दर मौजूद है या कोई ज़बान हरकत कर रही है जिस से यह आवाज़ निकल रही है, इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह रब्बुल् आलमीन जो चाहता है करता है, कोई मख़्लूक उस की तरह नहीं है, कोई चीज़ उस का घेरा किये हुए नहीं है, वह अकेला और बेनियाज़ है और तमाम मख़्लूक़ात की कल्पना से पाक है।

इस के बाद अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलै०) को ख़बर दी कि वह अल्लाह है जो उस से बात कर रहा है, कोई फ़रिश्ता या कोई और मख़्लूक़ नहीं है और जब हज़रत मूसा (अलै०) के दिल को सुकून हासिल हो गया तो अल्लाह तआला ने उन से कहा कि आप लाठी ज़मीन पर डाल दीजिए, डालते ही लाठी एक साँप की तरह तेज़ी के साथ दौड़ने लगी। हज़रत मूसा (अलै०) यह देखते ही डर कर भागे और पीछे मुड़कर भी नहीं देखना चाहा, तो अल्लाह ने पुकारा कि ऐ मूसा! आप डरिये नहीं, पैग़म्बर मेरे पास डरा नहीं करते हैं, इसलिए कि वह मेरी हिफ़ाज़त में होते हैं।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में हज़रत मूसा (अलै०) को बशारत दे दी गई कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपना नबी और रसूल चुन लिया है और उन के दिल से ख़ौफ़ को निकाल दिया गया, ताकि जिस के पास उन्हें दअवते इस्लाम लेकर जाना था, उस से पूरी हिम्मत के साथ बात कर सकें।

11

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلْ حَسَنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

हज़रत मूसा (अलै०) से ग़लती में एक किब्बी का क़त्ल हो गया था, जिस का एहसास उन्हें हमेशा रहता था चुनाँचे आप ने दुआ की थी رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرْتَهُ “मेरे रब! मैंने अपने आप पर जुल्म किया है, तू मुझे माफ़ कर दे तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया।” (सूर: अल् क़सस-16)

इसी तरह इस आयते करीमा में इशारा किया गया है कि आप से जो ग़लती हुई थी, अल्लाह ने आप के तौब: व इस्तिफ़ार और नेक आमाल की वजह से उसे माफ़ कर दिया है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि अगर किसी नबी से ऐसा हुआ भी तो उन्होंने फ़ौरन तौब: व इस्तिफ़ार किया और नेक आमाल किये, जिस के नतीजे में अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, उन के हाल पर रहम किया और हिफ़ाज़त की। जैसा कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै०) की हिफ़ाज़त की।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि इस आयते करीमा में इन्सानों के लिए बहुत बड़ी बशारत है कि एक आदमी अगर कोई गुनाह करता है, फिर उस से सच्चे दिल से तौब: कर लेता है तो अल्लाह का वादा है कि वह उसे माफ़ कर देगा और उस पर रहम फ़रमाएगा।

12

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرِجَ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ إِنِّي تُسِيعُ الْإِثْمَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوَّيْهِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै०) को दूसरा मोअज़िज़ा अता करने के लिए कहा कि आप अपना हाथ अपनी कमीज़ के गिरेबान में डालिए, वह बिना किसी बीमारी के चाँद की तरह चमकता हुआ निकलेगा। हज़रत मूसा (अलै०) ने ऐसा ही किया और उन का हाथ बिना किसी बीमारी के निहायत चमकदार बनकर आँखों को चकाचौंध करने लगा।

आगे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आप की सदाक़त साबित करने वाले और फिरऔन को राहे रास्त पर लाने के लिए हम आप को मोअज़िज़ात देंगे। सूर: बनी इस्राईल आयत नं० (101) में भी अल्लाह तआला ने कहा है कि हम ने मूसा को नौ निशानियाँ दी थीं

**13**

فَلَمَّا جَاءَهُمْ آيَاتُنَا مُبْهِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

अल्लाह तआला ने फिरऔन और फिरऔनियों का कुफ़्र व हठधर्मी बयान करते हुए फ़रमाया कि जब हमारी खुली और स्पष्ट निशानियाँ उन के सामने पेश कर दी गईं और उन के इन्कार के लिए उन से कुछ न बन पड़ा तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है और अपने दिलों में इस बात का यकीन रखते हुए कि यह अल्लाह के मोअज़िज़े हैं, जुल्म और घमण्ड की राह अख़्तियार की और उन का इन्कार कर दिया।

**14**

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

आख़िर में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के अल्लाह तआला ने फ़रमाया, आप देख लीजिए कि अल्लाह की ज़मीन में फ़साद फैलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ, अल्लाह ने उन सब को एक साथ समुद्र में डुबो दिया।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) को झुठलाने वालों से कहा जा रहा है कि अगर तुम भी अपने इन्कार व हठधर्मी पर अड़े रहे तो कहीं तुम्हारा अन्जाम भी फिरऔनियों जैसा न हो।



## आयत नं० 15 से 37 तक

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَ الْחَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلْنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَأَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنَاطِقَ الظِّيرِ وَأَوْتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۚ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْبَهِينُ ۝ وَخَشَرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِبِ وَالْإِنسِ وَالظِّيرِ فَهُمْ يُورَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّبْلِ ۖ قَالَتْ تَمَلُّهُ يَأَيُّهَا النَّبْلِ ۖ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطُبَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝ وَتَفَقَّدَ الظِّيرُ فَقَالَ مَالِيَ لَا أَرَىٰ الْهَدْيَ هَذَا ۖ أَمَرَكَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ۝ لَعَلَّيْنِي عَدَايَا شَدِيدًا ۖ أَوَّلًا أَذِيعَنَّهُ أَوْلِيَاءَ تَبَيَّنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ فَبَكَتْ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطَتْ بِمَا لَمْ حُطِّ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبِيلٍ يَبْكِلُ يَقِينٍ ۝ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَبْلُغُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيْنُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالُهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَمْتَدُونُ ۝ الْأَيْسَجُ دَاوُدَ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبَّ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ قَالَ سَتُنْظَرُ أَصْدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ إِذْ هَبَّ بَرَاقَتِي هَذَا فَالِقَهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَنْهُمْ فَأَنْظَرُ مَاذَا يَنْجِعُونَ ۝ قَالَتْ يَأَيُّهَا الْمَلَكُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ۝ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأَتَوْنِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَتْ يَأَيُّهَا الْمَلِكُ أَفَتُؤْتِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونُ ۝ قَالُوا نَحْنُ أَوْلَا قُوَّةٍ وَأُولُوا بَأْسٍ شَدِيدٍ ۖ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۝ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَافَ أَهْلِهَا آذِلَّةً ۖ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ ۖ فَنَظَرَنَّهُ يَوْمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ ۖ فِيمَا أَتَيْنَ ۖ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا أَتَيْتُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا إِذْ لَهُمْ فِيهَا ضِعْرُونَ ۝

### अनुवाद-

(15) और 'हमने' दाऊद और सुलेमान को इल्म दिया, और उन्होंने कहा, “शुक्र है अल्लाह का, जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।” (16) और दाऊद के वारिस सुलेमान हुए, और कहने लगे “लोگو! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गयी है, और हमें हर चीज़ दी गयी है, बेशक यह स्पष्ट मेहरबानी है।” (17) और सुलेमान के लिए जिननों, और इन्सानों और परिन्दों में से उसकी सेनाएँ जमा की गयीं, फिर उनकी दर्जाबन्दी (पंक्तिबद्धता) की गयी; (18) यहाँ तक कि जब चींटियों की घाटी में पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा, “ऐ चींटियो! अपने घरों में दाखिल हो जाओ, कहीं सुलेमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें और उनको एहसास भी न हो।” (19) तो वह उसकी बात पर खुश हो कर मुस्कुराये और कहा, “ऐ ‘रब’! मुझे संभाले रख, कि मैं तेरे उस एहसान का शुक्र अदा करता रहूँ जो ‘तूने’ मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किया है, और यह कि अच्छे काम करूँ जो ‘तुझे’ पसंद आएँ और अपनी रहमत से मुझे अपने भले बन्दों में दाखिल कर।” (20) और (जब) उन्होंने पक्षियों की जाँच पड़ताल की तो कहा, “क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह गायब हो गया?” (21) मैं उसे सख्त सज़ा दूँगा या उसे ज़ब्त कर डालूँगा, या फिर मेरे सामने कोई खुली दलील ले आए।” (22) फिर ज़्यादा देर नहीं लगी कि उसने

आकर कहा, “मैंने वह जानकारी हासिल की है, जो आप को मालूम नहीं, मैं ‘सबा’ से एक सच्ची ख़बर लेकर आया हूँ; (23) और मैंने एक औरत (सबा) को शासन करते हुए पाया है, उसे हर चीज़ हासिल है और उसका एक बड़ा सिंहासन है; (24) मैंने उसे और उसकी कौम को, अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दः करते हुए पाया है, और शैतान ने उसके आमाँल उसके लिए खुशनुमा (शोभायमान) बना दिये हैं और उनको सीधी राह से रोक दिया है इसलिए वे राह नहीं पा रहे हैं (25) कि अल्लाह को सज्दः क्यों न करें, जो आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ें निकालता है, और जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो, और जो दिखा कर करते हो; (26) अल्लाह, कि उसके सिवा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं, वह अर्श-अज़ीम (महान सिंहासन) का ‘रब’ है;” (27) (सुलेमान ने) कहा, “अभी हम देख लेते हैं कि ‘तूने’ सच कहा, या झूठ बोलने वालों में से है; (28) मेरा यह पत्र लेकर जा, और उनके पास डाल दे, फिर उनके पास से अलग हट कर देख कि वे क्या जवाब देते हैं?” (29) वह (रानी) बोली, “ऐ दरबार वालो! मेरे पास एक महत्वपूर्ण पत्र डाला गया है, (30) वह सुलेमान की ओर से है और वह यह है कि ‘बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम’ (शुरू अल्लाह के नाम से, जो बड़ा कृपालु महादयालु है); (31) यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो, और मुस्लिम (फरमाँबरदार) हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ।” (32) उसने कहा, “ऐ दरबार वालो! इस मामले में मुझे सुझाव दो, मैं किसी मामले का फैसला नहीं करती, जब तक कि तुम मेरे पास मौजूद न हो।” (33) उन्होंने कहा, “हम बड़ी ताक़त वाले और युद्ध क्षमता वाले लोग हैं, मगर फैसला आप के हाथ में है, अतः आप देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।” (34) उसने कहा, “बादशाह जब किसी आबादी में दाख़िल होते हैं, तो उसे तोड़-फोड़ देते हैं और वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित कर देते हैं, और इसी तरह यह भी करेंगे; (35) और मैं उनके पास कुछ उपहार (तोहफ़ा) भेजती हूँ; फिर देखती हूँ कि क़ासिद (दूत) क्या जवाब लेकर आते हैं।” (36) तो जब वह (दूत) सुलेमान के पास पहुँचा तो (सुलेमान ने) कहा, “क्या तुम माल से मेरी मदद करना चाहते हो, मुझे अल्लाह ने जो कुछ दिया है वह उससे कहीं बेहतर है, जो तुम्हें दिया है? बल्कि तुम ही हो, जो अपने उपहार से खुश होते हो! (37) उनके पास वापस जाओ, ‘हम’ उन पर ऐसी सेनाएँ लेकर आएँगे जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे, और ‘हम’ उन्हें अपमानित कर के वहाँ से निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे।”

## आयत नं० 15 से 37 तक की व्याख्या

**15** وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَ الْחَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلْنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने दाऊद, सुलेमान को इल्म कसीर दिया था। इल्म शरीअत और इल्म क़ज़ा के अलावा अल्लाह ने हज़रत दाऊद (अलै०) को ज़बूर अता किया, लोहा उन के हाथ में पिघल जाता था, दोनों बाप बेटे चिड़ियों की बोली भी समझते थे और हज़रत सुलेमान (अलै०) के लिए ज़िन्न व इन्स, चिड़ियाँ, हवा और जानवर वगैरह कब्ज़े में कर दिये गए थे और दोनों को अल्लाह ने बादशाही से नवाज़ा था।

इन नेअमतों का शुक्र अदा करते हुए दोनों ने कहा कि तमाम तअरीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस



ने अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर हमें फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है यानी यह इल्म व नुबूव्वत और यह बादशाही सब अल्लाह का फज़ल और उसी का दिया हुआ है। उस ने केवल अपने फज़ल व करम से हमें इन नेअमतों से नवाज़ा है, हम तो उस के नाचीज़ बन्दे हैं। हम इन नेअमतों को हासिल करने की अपने अन्दर कुदरत नहीं रखते थे।

16

وَوَرِثَ سُلَيْمَنُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عِلمَنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأَوْثَقْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَإِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْبَيِّنُ ۝

मुफ़ससरीन लिखते हैं कि हज़रत दाऊद (अलै०) के कई लड़के थे, उन में हज़रत सुलेमान (अलै०) सब से छोटे थे। यहाँ विरासत से मुराद मीरास, इल्म व नुबूव्वत है, दुनियावी माल व मताअ की विरासत नहीं यानी अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद (अलै०) के इल्म व नुबूव्वत का वारिस उन के बाद उन के छोटे बेटे हज़रत सुलेमान (अलै०) को बनाया था।

हज़रत सुलेमान (अलै०) ने अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्र बजा लाते हुए लोगों से कहा कि हमें परिन्दों की बोलियों का इल्म दिया गया है, हमें हमारे रब की ओर से हर चीज़ दी गई है किसी चीज़ की कमी नहीं है, बेशक अल्लाह का हम पर फज़ल व करम है। हज़रत सुलेमान (अलै०) ने यह बात फख़्र के तौर पर नहीं बल्कि शुक्र के तौर पर कही थी।

17-19

وَحِشْرَ لِسُلَيْمَنَ جُنُودَهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُؤْرَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّبْلِ ۖ قَالَتْ نَبْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّبْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ ۖ لَا يَحْطَبُكُمْ سُلَيْمَنٌ وَجُنُودُهُ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝

यहाँ हज़रत सुलेमान (अलै०) के एक सफ़र का ज़िक्र है। जब वह जिन्यों, इन्सानों और चिड़ियों से सम्बन्धित अपनी एक फौज के साथ रवाना हुए रास्ते में उन का गुज़र एक ऐसी वादी से हुआ जहाँ च्यूटियाँ रहती थीं। एक च्यूटी ने उस लश्कर को देखकर दूसरी च्यूटियों से कहा कि तुम सब जल्द से जल्द अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलेमान और उस की फौज अन्जाने में तुम्हें कुचल दे।

हज़रत सुलेमान (अलै०) उस की बात सुनकर मुस्कुराने लगे और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए दुआ करने लगे कि ऐ मेरे रब! मुझे इस बात की तौफ़ीक़ दे कि तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर जिन नेअमतों की बारिश की है उन का शुक्र अदा करूँ और ऐसे नेक काम करूँ जिन्हें तू पसन्द करता है और अपने रहम व करम से मुझे अपने नेक बन्दों में दाखिल कर दे।

माँ-बाप पर एहसान करना ऐसा ही है जैसे तमाम इन्सानों पर एहसान हो, इसलिए इस पर भी अल्लाह का शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ माँगी और चाहा कि दुनियावी नेअमतों के साथ अल्लाह तआला उन्हें दीनी नेअमत से भी नवाज़े, इसीलिए नेक अमल की तौफ़ीक़ माँगी और चूँकि मर्द मोमिन का मक्सूद



आखिरत की कामियाबी है, इसीलिए आखिर में दुआ की कि अल्लाह तआला उन्हें क़ियामत के दिन अपने नेक बन्दों में शामिल कर दे।

**नोट-** ऐ अल्लाह! मैं भी तुझ से वही माँगता हूँ जो तेरे नबी हज़रत सुलेमान (अलै०) ने तुझ से माँगा था, तू मेरी दुआ कुबूल कर ले, मुझ पर फ़ज़ल फ़रमा। अगरचे मैं अमल में बहुत कोताह हूँ लेकिन जन्मत के हुसूल का सबब केवल तेरा फ़ज़ल व करम है।

यह बन्दा आज़िज़ व ख़ताकार भी अपने दोनों हाथों को उठाकर 'अरहमुर्राहिमीन' के सामने दुआ करता है कि ऐ मेरे रब! मैं भी तेरे नबी सुलेमान की तरह तुझ से तेरी रज़ा और नेक अमल की तौफ़ीक़ माँगता हूँ। ऐ मेरे करीम रब! क़ियामत के दिन मुझे भी अपने रहम व करम से अपने नेक बन्दों में शामिल कर दे और मेरे दादा, दादी, नाना, नानी और वालिदैन्, मेरे भाई, बहन, बीवी और बच्चों के साथ तमाम तअल्लुक रखने वालों को भी अपने फ़ज़ल व करम के साथे में जगह दे। आमीन

**20-26**

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهَدْيَ ۚ أَمْ كَانِ مِنَ الْغَائِبِينَ ۚ لَعَلَّيْنِي عَذَابًا شَدِيدًا ۚ أَوَّلًا أُذَيِّعُهُ  
أَوَّلِيَّائِي سُلَاطِينَ مُبِينِينَ ۚ فَبَكَتْ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ يَحِطُ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بَنَاتٍ يَمِينِينَ ۚ  
إِنِّي وَجَدْتُ أَمْرًا كَأَنَّمَا تَبْلِكُهُمْ وَأَوْثَقْتُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۚ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّجَرِ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَّ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۚ أَلَا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ  
الْغَبَاءَ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۚ

हज़रत सुलेमान (अलै०) ने एक दिन सफ़र के दौरान चिड़ियों की हाज़िरी ली और ख़ासतौर पर हुद्हुद (पक्षी) के बारे में मालूम किया तो वह ग़ायब था।

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' (रह०) ने 'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' से नक़ल किया है कि हज़रत सुलेमान (अलै०) जब कभी चट्यल मैदान में होते और पानी की ज़रूरत होती तो 'हुद्हुद' (पक्षी) वह जगह बता देता जहाँ ज़मीन के नीचे पानी होता, फिर जिन्न उस जगह को खोदकर पानी निकाल लेते। ऐसे ही किसी ज़रूरत से हज़रत सुलेमान (अलै०) ने हुद्हुद (पक्षी) को तलब किया तो वह नहीं मिला, इस पर नाराज़ होकर कहा कि अगर उस ने विशेष उज़्र नहीं पेश किया तो मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा या ज़ब्द कर दूँगा, लेकिन कुछ ही देर के बाद वह हज़रत सुलेमान (अलै०) के सामने हाज़िर हो गया और अपना उज़्र पेश करते हुए उन्हें ख़बर दी कि मैं वह सब कुछ देख आया हूँ जिस की आप को ख़बर नहीं है, मैं यमन के शहर सबा (जो अब मआरिब कहलाता है) की एक बिल्कुल सच्ची ख़बर लेकर आया हूँ। मैंने वहाँ एक औरत को देखा है जो बादशाह है और जिसे अल्लाह ने हर चीज़ से नवाज़ रखा है और उस का एक बहुत अज़ीम तख़्त शाही है जिस पर वह बैठ कर हुक्मत करती है।

मुफ़स्सरीन ने उस औरत का नाम 'बिल्कीस' बताया है, उस की फौज़ और तख़्त शाही की तफ़सीलात बयान की हैं जिन से उस की अज़ीम बादशाहत का अन्दाज़ा होता है। हुद्हुद ने कहा, मैंने उसे और उस की कौम को अल्लाह के सिवा सूरज को सज्दः करते देखा है और शैतान ने उन के इन

शिक्रिया आमाल को उन की निगाहों में खूबसूरत बना दिया है और उन्हें राहे हक की पैरवी से रोक दिया है, इसलिए वह लोग भटक गए हैं और उस अल्लाह के लिए सज्दः नहीं करते हैं जो आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों को निकालता है।

आसमान से बारिश, ज़मीन के अन्दर से नबातात और मअदनियात (पदार्थों) को निकालता है और जो तमाम छुपी और खुली चीज़ों को जानता है। वह अल्लाह जिस के सिवा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं और जो उस अर्श अज़ीम का रब है जो सूरज, तमाम सितारों और हर चीज़ को घेरे मे लिए है, जिस की अज़मत के मुक़ाबिले में उस औरत के तख़्त शाही की कोई हैसियत नहीं है और जिस अल्लाह की कुदरत के मुक़ाबिले में उस का मअबूद (उपास्य) यानी सूरज कितना कमज़ोर है।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि चूँकि ‘हुद्हुद’ ने केवल एक अल्लाह की अ़िबादत करने की दअवत दी और ग़ैरुल्लाह को सज्दः करने से रोका इसीलिए उस का क़त्ल मना है।

**27-31**

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ إِذْ هَبْ بَكِيْنِي هَذَا فَالِقَهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ۝ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝

हज़रत सुलेमान (अलै०) ने ‘हुद्हुद’ की बात सुनकर कहा, मैं तुम्हारा इस्तिहान लेकर देखूँगा कि तुम ने सच बात कही या अपनी जान बचाने के लिए मेरे सामने एक झूठ गढ़ कर बयान कर दिया। मेरा यह ख़त लेकर जाओ और उन के सामने डाल दो और अलग हटकर छिप जाना, फिर देखना कि वह क्या करती हैं?

चुनाँचे ‘हुद्हुद’ ने ऐसा ही किया और मलिका की गोद में ख़त डाल दिया, मलिका ने ख़ौफ़ज़दह होकर उसे पढ़ा और अपने दरबार के ख़ास लोगों से मुख़ातब होकर कहा कि मेरे पास एक बहुत ही लायक़ एहतिराम ख़त भेजा गया है, यह ख़त ‘सुलेमान’ की ओर से है और इस की शुरुआत “उस अल्लाह के नाम से है जो बेहद रहम करने वाला और निहायत मेहरबान है” और इस का विषय यह है कि तुम लोग बादशाहों के आ़म तरीक़े के मुताबिक़ घमण्ड से काम न लो, अकड़ो नहीं और जो दीन देकर मैं भेजा गया हूँ उस पर ईमान लाओ और मेरे दरबार में हाज़िर हो जाओ।

**32-37**

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرَ أَحَقِّ شَيْءٍ هَذُونَ ۝ قَالُوا نَعْنُ أُولَٰئِكَ قُوَّةٌ وَأُولَٰئِكَ بِأَيْسَ شَيْءٍ هَذُونَ ۝ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَٰةَ أَهْلِهَا ۝ إِذْ لَوْ أَنَّ الْمُلُوكَ إِذْ دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَٰةَ أَهْلِهَا ۝ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ ۝ فَنَظَرُوا بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَ بِمَالِ أُنْثَىٰ ۝ ثُمَّ أَنشَأَ اللَّهُ خَيْرَ مِمَّا أُنْثَىٰ ۝ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارجع إِلَيْهِمْ ۝ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ بِجُودٍ لَا قَبْلَ لَهُمْ ۝ وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا ۝ إِذْ لَوْ أَنَّهُمْ ضُغِرُوا ۝

बिल्क़ीस ने जब ख़त पढ़ लिया तो दरबार में मौजूद ख़ास लोगों को इस का विषय सुनाया और

उन से कहा कि तुम लोग इस बारे में मुझे अपनी राय दो। जब तक तुम लोगों की राय न मालूम कर लूँ सिर्फ अपनी समझ पर भरोसा कर के कोई फैसला नहीं करना चाहती हूँ, तो उन लोगों ने कहा कि हम फौजी ताकत और जंग का अच्छा तजुर्बा रखते हैं और दुश्मनों के छक्के छुड़ा देते हैं, इसलिए हम अपनी जान व माल और मुल्क व वतन से लड़ाई की पूरी कुदरत रखते हैं, अब आप खुद ही फैसला कीजिए आप की दूर अन्देशी और अक्लमन्दी पर हमें पूरा भरोसा है। आप का जो हुक्म होगा उसे कर गुजरने के लिए हम तैयार हैं।

बिल्कीस ने तमाम हालात का जायज़ा लिया, हज़रत सुलेमान (अलै०) की कुव्वत और ताकत का अन्दाज़ा इस से लगाया कि चिड़िया तक उन की फरमाँबरदारी करती हैं और इस नतीजे पर फौरन पहुँच गई कि वह अपने दुश्मन के मुक़ाबिले में बिल्कुल कमज़ोर है और बेहतरी इसी में है कि हज़रत सुलेमान (अलै०) से सुलह कर ली जाए। इसीलिए उस ने कहा कि यह बादशाह हज़रात जब किसी मुल्क में कुव्वत के बलबूते पर दाख़िल होते हैं, तो उसे तहस-नहस कर देते हैं और वहाँ के इज्जतदार लोगों को ज़लील करते हैं, क़त्ल करते हैं, कैद कर लेते हैं और माल व मताअ लूट लेते हैं, इस तरह सुलेमान और उस की फौज के लोग भी करेंगे।

मैं सुलेमान और उस की कौम के लिए तोहफ़ा भेजती हूँ और देखती हूँ कि मेरे कासिद (दूत) क्या जवाब लेकर आते हैं। जब कासिद (दूत) हज़रत सुलेमान (अलै०) के पास बिल्कीस का कीमती तोहफ़ा लेकर पहुँचे और उन की ख़िद्मत में पेश किया, तो उन्होंने उसे कुबूल करने से इन्कार कर दिया और कहा कि तुम लोग मुझे माल देकर खुश करना चाहते हो, ताकि तुम्हारे कुफ़्र व शिर्क को नज़र अन्दाज़ कर दूँ और तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दूँ।

मुझे तो अल्लाह ने तुम लोगों से कहीं ज़्यादा और बेहतर चीज़ें अता की हैं, इल्म व नुबूव्वत से नवाज़ा है, बादशाही अता की है। जिन्नो, इन्सानों, परिन्दों, जानवरों और हवाओं तक को मेरे लिए मुख़्ख़र कर दिया है, तुम लोग तोहफ़ा वापस ले जाओ और दुनिया की इन नक्ली नेअमतों पर खुश होते रहो, मुझे तुम्हारा तोहफ़ा कुबूल नहीं और अगर वह लोग मुसलमान बनकर मेरे पास न आए तो एक ऐसी फौज लेकर उन पर हमला करूँगा जिन के मुक़ाबिले की उन के अन्दर ताकत नहीं है और सब को शहर 'सबा' से ज़लील व ख़्बार कर के निकाल दूँगा।

जब कासिदीन (दूत) हज़रत सुलेमान (अलै०) का यह पैग़ाम लेकर बिल्कीस के पास वापस पहुँचे और उसे यकीन हो गया कि 'सुलेमान' कोई दुनियावी बादशाह नहीं बल्कि अल्लाह के नबी हैं, तो ईमान लाने के इरादे से हज़रत सुलेमान (अलै०) के पास आने के लिए तैयार हो गई।



## आयत नं० 38 से 53 तक

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوا أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۖ قَالَ عَفْوَكَ عَنْ أَتِيكِ مِنْ الْأَيْتِ بِه قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٍّ أَمِينٌ ۖ قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَأَى مُسْتَقَرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيَ عَزِيزٌ كَرِيمٌ ۖ قَالَ تَزَكُّوا لَهُا عَرْشَهَا نَنْظُرُ أَتَهْتَدُونَ أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۖ فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكَ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۚ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۖ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۖ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُمَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ ۚ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَبْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ إِلَهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى شُعُودٍ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَيْنِ يَخْتَصِمُونَ ۖ قَالَ يَقُومُونَ لِمَ تَسْتَغِيثُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۖ قَالُوا أَظَلَمْنَا بِكَ وَبَيْنَ مَعَكَ ۚ قَالَ ظَلَمْنَا عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۖ وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّكَ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَنقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَطَّافُونَ ۖ وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَمَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مُكْرِهِمْ ۚ إِنَّا دَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ فَبِكَذَاكَ يُؤْمِنُ ۚ فَأَوِيَتْ بِهَا صَأْدُكُمُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۖ وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۖ

### अनुवाद-

(38) (सुलेमान ने) कहा, “ऐ दरबारियो! तुममें से कौन उसका तख्त (सिंहासन) लेकर मेरे पास आता है, इससे पहले कि वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएँ।” (39) जिनमें से एक अफरीत (बलिष्ठ निर्भीक) ने कहा, “मैं उसे आप के पास ले आऊँगा, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मुझे इसकी शक्ति है, और मैं अमानतदार हूँ।” (40) एक व्यक्ति जिसके पास किताब का इल्म था, कहने लगा, “मैं उसको आप के पलक झपकने से पहले हाज़िर किये देता हूँ।” तो जब (सुलेमान ने) तख्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो कहा, “यह मेरे ‘रब’ का फज़ल (अनुग्रह) है, ताकि मुझे आजमाए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्र, और जो शुक्र करता है, वह अपने ही फायदे के लिए करता है और जो नाशुक्र करता है, तो मेरा ‘रब’ बेनियाज़ (बेपरवाह), बड़ा करम वाला है।” (41) (सुलेमान ने) कहा, “उसके सिंहासन का रूप बदल दो, देखें वह हकीकत को पा लेती है या उन लोगों में से होकर रह जाती है, जो हकीकत को नहीं पाते।” (42) जब वह आई तो कहा गया, “क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है उसने कहा, “यह तो उसी जैसा है, और हमें तो इससे पहले ही इल्म हो चुका था; और हम मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) हो गये थे।” (43) और अल्लाह को छोड़ कर वह दूसरे को पूजती थी, (सुलेमान ने) उसको उससे मना किया, बेशक वह एक काफ़िर कौम में से थी; (44) उससे कहा गया कि, “महल में दाख़िल हो जाओ।” उसने जब देखा तो समझी कि गहरा पानी है और अपनी पिंडुलियाँ खोल दीं; (सुलेमान ने कहा,) “यह महल है शीशों से जुड़ा हुआ।” वह पुकार उठी, “ऐ रब! मैंने अपने आप पर जुल्म किया, और अब मैं सुलेमान के साथ अपने आप को अल्लाह

रख्बुलआलमीन के सामने ईमान लाती (समर्पित करती) हूँ।” (45) और ‘हमने’ समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा, “अल्लाह की इबादत करो।” तो वे दो गिरोह बन कर आपस में झगड़ने लगे। (46) (सालेह ने) कहा, “ऐ मेरी कौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? अल्लाह से माफी क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए?” (47) वे कहने लगे, “हम तुमको और तुम्हारे साथियों को अपशयुन (मन्हूस) समझते हैं।” तो (सालेह ने) कहा, “तुम्हारा शकुन या अपशकुन तो अल्लाह की ओर से है, बल्कि बात यह है कि तुम्हारी आजमाइश हो रही है।” (48) और शहर में नौ व्यक्ति थे, जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते थे, और सुधार का कोई काम न करते थे; (49) वे आपस में अल्लाह की कसम खा कर बोले, “हम ज़रूर उस पर और उसके घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उसके वारिसों से कह देंगे कि हम उसके घर वालों के हलाक होने के समय मौजूद न थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।” (50) और उन्होंने एक चाल-चली और ‘हमने’ भी एक उपाय किया कि उन्हें ख़बर भी न हुई। (51) तो देख लो! कि उनकी चाल का कैसा अंजाम हुआ! ‘हमने’ उनको और उनकी कौम, सब को हलाक कर दिया। (52) तो यह उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं, उस जुल्म की वजह से जो वे करते थे, इसमें बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं। (53) और ‘हमने’ उन लोगों को बचा लिया, जो ईमान लाये और डर रखते थे।

## आयत नं० 38 से 53 तक की व्याख्या

**38-40**

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوا أَتَيْتُنِي بِعَرْشِي قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۖ قَالَ عَفْوَ رَبِّي قَبْلَ أَنْ يَأْتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۖ قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ۖ أَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّا يَشْكُرُونَ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۖ

हज़रत सुलेमान (अलै०) जिन्नों के ज़रिये उस के आने की ख़बर लेते रहे और जब वह फिलिस्तीन से बिल्कुल करीब आ गई तो उन्होंने अपने लोगों से मुख़ातब होकर पूछा कि तुम में से कौन उस का तख़्त शाही मेरे पास उन सब के आने से पहले ला सकता है?

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि अगर बिल्कीस और उस की कौम के लोग उन के पास आकर इस्लाम का एलान कर देते तो उन के लिए उस तख़्त का लाना जायज़ न होता, इसलिए कहा कि कौन उन के आने से पहले उस का तख़्त ला सकता है?

एक दूसरी राय यह है कि उन का मक्सद बिल्कीस के सामने अपनी नुबूवत की दलील पेश करनी थी कि अल्लाह ने उन्हें यह कुद़रत नुबूवत की निशानी के तौर पर दी कि उस का तख़्त उस के सामने ला दिया गया है। बहुत से मुफ़स्सरीन ने इसी राय को तरजीह (प्राथमिकता) दी है।

उन की यह बात सुनकर एक ताक़तवर जिन्न ने कहा कि यह काम मैं अन्जाम दे सकता हूँ और आप की बैठक ख़त्म होने से पहले उसे ले आऊँगा। आप को यकीन दिलाता हूँ कि मैं इस की कुद़रत रखता हूँ और उसे बहिफ़ाज़त व अमानत आप तक ले आऊँगा।



जिन्न की यह बात सुनकर आसिफ़ नाम के एक शख्स ने जो 'बनी इस्राईल' में से था, उस ने कहा कि मैं पलक झपकने से पहले उसे आप की खिद्मत में हाज़िर करूँगा।

बहरहाल पलक झपकने से पहले वह अर्श हज़रत सुलेमान (अलै०) के सामने आ गया, तो उन्होंने कहा कि यह केवल अल्लाह का फ़ज़ल व करम है वरना मेरे अन्दर इस की ताक़त कहाँ थी। अल्लाह मुझे आजमाना चाहता है कि मैं फ़रमाँबरदारी व बन्दगी के ज़रिये उस का शुक्र अदा करता हूँ या गुनाह व नाफ़रमानी के ज़रिये उस की नाशुक्री करता हूँ और जो कोई अल्लाह का शुक्रगुज़ार होता है तो उस का फ़ायदा उसे ही पहुँचता है कि उस की नेअमत बाकी नहीं रहती और जो नाशुक्री करता है तो अल्लाह अपने बन्दों के शुक्र से अक्सर बेनियाज़ है, वह उस का मोहताज नहीं है और वह करीम है कि बन्दों के कुफ़्र के बावजूद अपनी नेअमतें उन से नहीं छीनता है।

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वह अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता।” (तिर्मिज़ी)

**41-43**

قَالَ تَكْبَرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرُ أَتَهْتَدُونَ أَمْ تَكُونُونَ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۖ فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكَ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۖ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۖ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝

हज़रत सुलेमान (अलै०) ने हुक्म दिया कि उस तख़्त की बाज़ चीज़ें बदल दी जाएँ ताकि देखें कि बिल्कीस उसे अपने सामने देखकर क्या जवाब देती है, जिससे उस की अक्ल व समझ का अन्दाज़ा हो जाएगा। चुनाँचे जब वह अपने तख़्त के करीब पहुँची तो उस से पूछा गया कि क्या तुम्हारा तख़्त शाही ऐसा ही है? तो उस ने कहा कि ठीक ऐसा ही है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उस ने यह नहीं कहा कि “यह मेरा ही तख़्त शाही है” और न यह कहा कि “नहीं मेरा तख़्त तो और है” और यह जवाब उस की अक्लमन्दी की दलील थी, ताकि पहले जवाब की सूरत में कोई उसे झुठलाए नहीं और दूसरे जवाब की सूरत में कोई उसे नादान न समझे।

हज़रत सुलेमान (अलै०) ने उस के अक्लमन्दी का एतिराफ़ किया और अपने रब का शुक्र अदा करते हुए कहा कि अल्लाह ने अगर इसे अक्ल व समझ से नवाज़ा है, तो हमें इस के पहले दीने इस्लाम की सदाक़त का इल्म दे रखा है, इसी वजह से हम मुसलमान होकर ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और उसे एक अल्लाह की अ़िबादत से अब तक इस बात ने रोक रखा है कि उस की पूरी क़ौम इन्कारी थी और ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत करती थी, तो यह भी उन्हीं की पैरवी करते हुए अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक करती थी।

आयत नं० (43) में हज़रत सुलेमान और बिल्कीस की बातचीत को बयान करने के बाद अल्लाह तआला ने उस के मुश्रिक होने की वजह बयान की है।

**44**

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً ۖ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا ۖ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ



مِنْ قَوَارِيرِهِ قَالَتْ رَبِّ اِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

हज़रत सुलेमान (अलै०) के पास एक ऐसा महल था जिस का फर्श चिकने शीशे का बना हुआ था और उस के नीचे एक बड़ा सा तालाब था जिस में बहुत सी मछलियाँ थीं, उन्होंने बिल्कीस और उस की कौम को अपनी नुबूवत और अज़ीम सल्तनत की एक और निशानी दिखानी चाही, चुनाँचे वह उस महल में जाकर बैठ गए और उन के इर्द-गिर्द इन्सानों और जिन्यों का एक बड़ा लश्कर जमा हो गया और फिर उस से कहा गया कि हज़रत सुलेमान (अलै०) उस से इस महल में मिलना चाहते हैं। जब महल के सहन में पहुँची तो उस ने पानी समझ कर अपने दोनों पिन्डुलियों से कपड़े ऊपर उठा लिए तो हज़रत सुलेमान (अलै०) ने उस से कहा यह पानी नहीं, बल्कि चिकने शीशे का फर्श है।

यह आखिरी चीज़ थी जिस ने बिल्कीस की आँखें खोल दीं। पहली चीज़ हज़रत सुलेमान (अलै०) का ख़त था, जिसे चिड़िया ने उस की गोद में डाल दिया था, दूसरी चीज़ उस का तोहफ़ा था जिसे उन्होंने रद्द कर दिया था, तीसरी चीज़ उस के कासिदों (दूतों) का फ़िलिस्तीन से वापस जाने के बाद हज़रत सुलेमान (अलै०) की पाकीज़ह जिन्दगी की गवाही थी और अब इस आखिरी चीज़ ने उन की नुबूवत पर ईमान लाने के लिए उसे मजबूर कर दिया कि तमाम दुनियावी आराम व आसाइश के बावजूद हज़रत सुलेमान (अलै०) का सर हर वक़्त अल्लाह के सामने झुका हुआ है।

इसीलिए पुकार उठी कि मैं अब तक अल्लाह के बजाए सूरज की पूजा कर के अपने आप पर जुल्म करती रही हूँ, मैं सुलेमान की पैरवी करते हुए अल्लाह रब्बुल् आलमीन पर ईमान लाती हूँ और अपने इस्लाम का एलान करती हूँ।

45-47

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى شُعُوْدٍ اَحَاهُمْ ضَلٰلًا اِنْ اَعْبَدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيقَيْنِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

قَالُوا اَظْلَمْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ قَالَ ظَلِمْنَا عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَفْتَنُوْنَ ۝

इस सूर: में ज़िक्र अम्बिया-ए-किराम और उन की कौमों के अजीब व ग़रीब वाकिआत में से तीसरा वाकिआ हज़रत सालेह (अलै०) का है। जैसा कि ऊपर हज़रत मूसा (अलै०) और फिरऔन के वाकिये में बताया गया है कि इन वाकिआत से मक्सूद नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली देनी और कुप्फारे मक्का के लिए आप (सल्ल०) की नुबूवत की दलील फ़राहम करनी है कि यह अजीब व ग़रीब वाकिआत आप को व्ह्य के ज़रिये बताए जा रहे हैं वरना एक अनपढ़ आदमी जिस का मक्का से बाहर की दुनिया से कोई सम्बन्ध नहीं उसे इन वाकिआत की कैसे ख़बर हो जाती, जो सैकड़ों साल पहले गुज़रे थे।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने कौमे समूद के पास उन के सगे भाई हज़रत सालेह को नबी बनाकर भेजा, जिन्होंने उन से कहा कि तुम लोग अल्लाह की अ़िबादत करो तो एक गिरोह ने उन की दअवत कुबूल कर ली और उन पर ईमान ले आया और दूसरे गिरोह ने उन की दअवत को ठुकरा दिया और मूर्तियों की पूजा पर जमा रहा।

जैसा कि सूरतुल् अअराफ़ आयात नं० (75/76) में इस मुख़ालिफ़त व अ़दावत की तफ़सील गुज़र चुकी है और हज़रत सालेह (अलै०) से कहा कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो, चूँकि निशानी आ जाने के बाद अगर ईमान न लाते तो हलाक कर दिये जाते इसीलिए उन्होंने उन के हाल पर रहम खाते हुए कहा तुम लोग अज़ाब तलब करने पर क्यों इस्सरार कर रहे हो? क्यों नहीं अल्लाह से मग़ि़रत तलब करते, ताकि वह तुम पर रहम फ़रमाए।

लेकिन हज़रत सालेह (अलै०) की इस बात का उन पर कोई असर न हुआ और जवाब में कहा कि ऐ सालेह! हम लोग तो तुम से और तुम्हारे मानने वालों से बद्शुगूनी ही लेते हैं यानी जब से तुम ने यह नई बात शुरू की है हमें नुक्सान ही पहुँचता आया है।

हज़रत सालेह (अलै०) ने जवाब में उन से कहा कि तुम्हें जो भी ख़ैर व शर पहुँचता है उसी की ओर से होता है, वह चाहता है तो तुम्हें रोज़ी मिलती है, नहीं चाहता तो मह़रूम रखता है।

हकीक़त यह है कि तुम पर तुम्हारे कुफ़्र और गुमराही का जादू चल गया है, जो बात तुम्हारी इच्छा के मुताबिक़ होती है उसे अपने लिए समझते हो और जो तुम्हारी मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं होती उसे अपने लिए बद्शुगूनी समझते हो।

**48-49**

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَدِيقُونَ ۝

कौमे समूद के शहर (हिज़्र) में कुछ लोग ऐसे थे जो पूरी कौम को ख़राब करते थे और हज़रत सालेह (अलै०) के झुठलाने पर लोगों को उभारते थे, उन्हीं की सिफ़ारिश के नतीजे में 'किदार बिन सालिफ़' ने (जो उन में से एक था) हज़रत सालेह (अलै०) की ऊँटनी को हलाक कर दिया और खुद उन्हें भी रात में क़त्ल कर देने की साज़िश की और अल्लाह के नाम की क़सम खाई कि हम सब मिलकर हज़रत सालेह और उन के मानने वालों को क़त्ल कर देंगे और उन के रिश्तेदारों से कहेंगे कि उन के क़त्ल किये जाने की हमें कोई ख़बर नहीं है और हम अपनी बात में सच्चे हैं।

**50-53**

وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَمَكْرًا مَكْرًا ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مُكْرِهِمْ ۖ إِنَّا وَفَرْنَاهُمْ ۖ وَقَوْمُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ فَبِئْسَ بَيُّوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِسَاطِطُهُمْ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۖ وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

इस में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्होंने हमारे नबी और उन के पैरोकारों के क़त्ल की नाकाम साज़िश की और हम उन्हें इस तरह धीरे-धीरे उन के मक़्तल की तरफ़ ले गए चुनाँचे उन की साज़िश उन के गले का फंदा बन गई और हम ने उन तमाम को उन के जुल्म व कुफ़्र की वजह से एक साथ हलाक कर दिया और अब उन के मकानात खाली और गिरे पड़े हैं, कोई नहीं जो उन्हें आबाद करे। बेशक समझदार लोगों के लिए उन के इस वाक़िये में बड़ी नसीहत की बातें हैं और जो लोग हज़रत सालेह (अलै०) पर ईमान ले आए थे और तक्वा (परहेज़गारी) की राह अख़्तियार की थी, हम ने उन्हें इस अज़ाब से बचा लिया। (यह वाक़िआ तफ़सील के साथ इस से पहले सूर: अअराफ़, सूर: हूद और सूर: शुअरा में गुज़र चुका है।)

## आयत नं० 54 से 59 तक

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ۖ أَيْتَكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَبَوهُ مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۝  
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُو آلَ لُوطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَجْبَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ قَدَّرْنَا فِيهَا  
مِنَ الْغَيْرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْبُنْدَرِينَ ۝ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۚ اللَّهُ  
خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

### अनुवाद-

(54) और लूत को (रसूल बना कर भेजा) जब उन्होंने अपनी कौम से कहा, “क्या तुम नज़रों के सामने बदकारी (कुर्म) करते हो? (55) क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास नफ़्सानी ख्वाहिश (काम तृप्ति) के लिए जाते हो? बल्कि बात यह है कि तुम बड़े जाहिल लोग हो।” (56) तो उनकी कौम के लोगों का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, “निकाल बाहर करो लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से, यह लोग बड़े पारसा बनते हैं।” (57) तो ‘हमने’ उनको और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उन की पत्नी के, कि ‘हमने’ तय कर दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। (58) और ‘हमने’ उन पर एक बारिश बरसाई, और वह बहुत ही बुरी बारिश थी उन लोगों के हक़ में, जिन्हें सचेत किया जा चुका था। (59) कह दीजिए, “तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए हैं, और सलाम है ‘उसके’ उन बन्दों पर जिनको ‘उसने’ चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है, या जिनको ये अल्लाह का साझी ठहराते हैं?”

## आयत नं० 54 से 59 तक की व्याख्या

**54-55**

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ۖ أَيْتَكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَبَوهُ مِنْ دُونِ  
النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۝

चौथा अजीब व गरीब वाकिआ हज़रत लूत (अलै०) ‘सुदूम’ और ‘उमूरिया’ नामी स्थान में रहने वाली कौम का है, जिस की हिदायत के लिए वह भेजे गये थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! आप लूत का वाकिआ भी लोगों से बयान कर दीजिए। उन्होंने अपनी कौम से कहा, तुम्हारी अख़्लाकी गिरावट आखिरी सीमा को पहुँच चुकी है कि आपस में बदकारी करते हुए एक दूसरे को देखते रहते हो।

एक दूसरा मतबल यह है कि इस बुरे काम की बुराई को जानते हुए करते हो, तुम कितने बुरे हो गए हो कि अपनी हैवानी शहवत पूरी करने के लिए औरतों के बजाए मर्दों के साथ बद्फ़ेअली करते हो, तुम हैवानों से भी बद्तर हो गए हो और तुम ऐसा इसलिए करते हो कि बिल्कुल जाहिल और नादान हो, तुम्हें मालूम ही नहीं कि तुम्हारे पैदा करने वाले का तुम पर क्या हक़ है और इन्कार व सरकशी का कैसा बुरा अन्जाम होता है।

**56-58**

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَجْبَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ قَدَّرْنَا فِيهَا  
مِنَ الْغَيْرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْبُنْدَرِينَ ۝ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۚ اللَّهُ  
خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

وَأَمَلْنَا إِلَّا أَمْرًا نَكْتُمُ قَدْ رَزَمْنَا مِنَ الْغَيْرِينَ ۖ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝

लेकिन हज़रत लूत (अलै०) की इस तक्रीर का उन पर कोई असर नहीं हुआ और सब ने मिलकर कहा कि लोगों! लूत और उस के मानने वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो और मज़ाक के तौर पर कहा कि यह बड़े नेक और पाकीज़ा लोग हैं और जब उन की सरकशी इस हद तक बढ़ गई तो अल्लाह तआला ने हज़रत लूत (अलै०) और वहाँ के मुसलमानों को वहाँ से निकल जाने का हुक्म दे दिया और तमाम अहले बस्ती को हलाक कर दिया, जिन में हज़रत लूत (अलै०) की बीवी भी शामिल थी। अल्लाह ने उन पर पत्थरों की बारिश कर दी।

59

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۚ اللَّهُ خَيْرُ مَا يَشْرِكُونَ ۝

मुजरिमों की तबाही और मोमिनों की निजात की ख़बर देने के बाद अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह इस नेअमत पर अपने रब का शुक्र अदा करें और उम्मत मुहम्मदिया को तअलीम दी कि जब भी उन्हें अल्लाह की कोई नेअमत हासिल हो तो वह अपने रब का शुक्र करें, जिस ने अपने फ़ज़ल से उन्हें नेअमत दी है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) और आप की उम्मत को यह तअलीम दी है कि दअवत के मैदान में जब किसी के सामने कोई बात करनी हो या कोई लेख पेश करना हो, तो अल्लाह की बरकत हासिल करने के लिए शुरुआत अल्लाह की हम्द व सना और अम्बिया-ए-किराम जो अल्लाह के नेक बन्दे हैं, उन पर दुरुद व सलाम से करें। इसीलिए नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने से अब तक हर दौर में उल्मा का यही तरीका रहा है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह अल्लाह की हम्द व सना और अम्बिया-ए-किराम पर दुरुद व सलाम के बाद मुश्रीकीने मक्का से पूछें कि अल्लाह बेहतर है या वह झूठे उपास्य जिन्हें वह अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। ज़ाहिर है कि उन झूठे उपास्य में कोई ख़ैर नहीं है और यह बात कुफ़ारे मक्का को मालूम है और फिर भी वह उन्हीं की अ़िबादत करते हैं। यह कैसी बेअक्ली और जिहालत है? यह जानते हुए कि उन में कोई भलाई नहीं है, फिर भी उन्हें अपना मअबूद (उपास्य) मानते हैं, उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं और उन के सामने सर टेकते हैं।



## आयत नं० 60 से 66 तक

\*

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَافَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ أَمَّنْ أَكْرَمَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيُعَلِّمُ الْغُلَامَ الْكِتَابَ وَالْإِلَهَ مَعَهُ اللَّهُ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيحَ بِشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَزُكُّكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝ بَلِ ادْرِكْ عِلْمَهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۝ بَلْ فِي شَكٍّ مِنْهَا بَلَلُ الْكُفْرَانِ ۝

### अनुवाद-

(60) या 'वह' जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया, और उसके ज़रिये सुन्दर बाग़ उगाए जिनके वृक्षों को तुम्हारे लिए उगाना सम्भव न था; क्या अल्लाह के साथ कोई और भी मअबूद (उपास्य) है? (नहीं,) बल्कि ये लोग राह से हटते चले जा रहे हैं; (61) या 'वह' जिसने धरती को ठहरने की जगह बनाई, और उसके बीच-बीच में नदियाँ बहाई, और उसके लिए मज़बूत पहाड़ बनाए, और दो समुद्रों के बीच एक रोक लगा दी, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअबूद है? (नहीं) बल्कि उनमें से अक्सर जानते ही नहीं; (62) या 'वह' जो बेकरार की फ़रियाद सुनता हो, जबकि वह उसको पुकारता है, और वह उसके कष्ट को दूर करता है, और तुम को धरती में नायब (अधिकारी) बनाता है, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअबूद है? तुम बहुत कम ध्यान देते हो; (63) भला कौन तुमको थल और जल के अन्धेरों में राह दिखाता है, और जो अपनी रहमत के आगे हवाओं को खुशख़बरी बना कर भेजता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और मअबूद है अल्लाह बहुत ऊँचा है उस शिर्क से जो यह लोग करते हैं; (64) भला कौन मज़्लूक (सृष्टि) को पैदा करता है, फिर उसी तरह दोबारा पैदा करेगा, और जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और मअबूद है? कह दीजिए, “अपना प्रमाण लाओ अगर तुम सच्चे हो।” (65) कह दीजिए, “आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हो, सिवाय अल्लाह के, और वे नहीं जानते कि कब उठाए जाएँगे।” (66) बल्कि आख़िरत के बारे में उन लोगों की जानकारी 'मुन्तही' (ख़त्म) हो गयी है बल्कि वे उसकी ओर से शक में हैं, बल्कि यह उससे अन्धे हो रहे हैं।

## आयत नं० 60 से 66 तक की व्याख्या

**60-65**

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَافَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ أَمَّنْ أَكْرَمَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيُعَلِّمُ الْغُلَامَ الْكِتَابَ وَالْإِلَهَ مَعَهُ اللَّهُ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيحَ بِشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَزُكُّكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْعَادِلِينَ ۝ قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝



يُخَيِّبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَا وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيُعَلِّمُ الْخَلْقَ الْأَرْضَ وَالْأَرْضُ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ  
فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيحَ بِشَرَاتٍ يَذُنْ رَحْمَتَهُ ۚ إِنَّ إِلَهَ مَعَ اللَّهِ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝  
أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ إِلَهَ مَعَ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝  
قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने कुदरत की मिसालें देकर मुशिरकीने मक्का से सवाल किया कि बताओ यह किस की कुदरत है? इन चीजों को किसने पैदा किया है? यह नेअमतें किस ने दीं? और जब हर सवाल का जवाब तुम्हारे पास सिवाए इस के कुछ नहीं कि यह सब अल्लाह की ओर से है, तो फिर तुम उसे छोड़कर दूसरों को अपना मअबूद क्यों बनाते हो?

अल्लाह तआला ने मुशिरकीने मक्का से **पहला सवाल** यह किया कि इन आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और आसमान से तुम्हारे लिए बारिश किस ने नाज़िल की? जिस के ज़रिये हम ने तुम्हारे लिए ख़ूबसूरत बाग़ात उगाये हैं, तुम उन दरख़्तों को उगाने की ताक़त नहीं रखते थे। ज़ाहिर है इस के सिवा कोई जवाब नहीं कि यह सारे काम अल्लाह के हैं, तो फिर तुम क्यों अल्लाह के सिवा किसी और की पूजा करते हो?

**दूसरा सवाल** यह किया कि इस ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह किस ने बनाई है कि वह उलटती नहीं है और तुम आराम से इस पर ज़िन्दगी गुज़ारते हो, फिर ज़मीन पर नहरें किस ने जारी की हैं और इस पर पहाड़ किस ने जमा दिये ताकि हरकत न करे, मीठे और खारे पानी के दर्मियान रुकावट किस ने खड़ी की है कि वह एक दूसरे से नहीं मिलते हैं। (सूर: फ़ुर्क़ान में इस की तफ़्सील गुज़र चुकी है)

इस के सिवा तुम्हारे पास कोई जवाब नहीं कि यह सब अल्लाह की कुदरत के करिशमे हैं तो फिर तुम क्यों उस के सिवा किसी और को अपना मअबूद (उपास्य) बनाते हो?

**तीसरा सवाल** यह किया कि जब इन्सान को कोई परेशानी होती है, किसी मर्ज़ में मुब्तिला होता है, किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाता है या किसी के जुल्म का शिकार हो जाता है, तो वह किसको पुकारता है और कौन है जो उस की फ़रियाद सुनता और उस की मुसीबत को दूर करता है? और कौन है जो मौत देता है और उन की नस्लों को ज़मीन का वारिस बनाता रहता है?

जवाब मालूम है कि वह अल्लाह है तो ऐ मुशिरकीने मक्का! फिर क्यों तुम उसे छोड़ कर दूसरों के सामने सर झुकाते हो? हकीक़त यह है कि तुम लोग बहुत ही कम नसीहत हासिल करते हो।

‘हाफ़िज़ इब्ने अल् क़य्यिम’ ने अपनी किताब ‘अल् जवाब अल्काफी’ में लिखा है कि अगर दुआ करते वक़्त पूरे तौर पर दिली इत्मिनान हासिल हो और अपनी हाज़त व ज़रूरत का सख़्त एहसास हो और रब्बुल् आलमीन के सामने आजिज़ी व इन्किसारी और खुशूअ व खुजूअ हासिल हो और दिल पर असर हो और इस हाल में बन्दा अपने रब के पाकीज़ा नामों और आला सिफ़ात को वसीला बनाकर दुआ करे, तो ऐसी दुआ शायद ही रद्द हो।



**चौथा सवाल** अल्लाह तआला ने मुशिरकीन से यह किया कि रेगिस्तान और समुद्र की अंधेरियों में तुम्हारी कौन रहनुमाई करता है और कौन बारिश बरसाने से पहले हवाओं को भेजता है, जिन से लोग समझ लेते हैं कि अब बारिश होगी। कौन इन बातों पर कादिर है?

जवाब मालूम है कि वही अल्लाह है, तो फिर क्यों तुम लोग उस के साथ दूसरों को शरीक बनाते हो? अल्लाह तुम्हारे उन झूठे मअबूदों से बहुत ही बुलन्द है।

**पाँचवा सवाल** यह किया कि वह कौन है जिस ने इन्सानों को पहली बार पैदा किया है और क़ियामत से पहले फिर से उन्हें दोबारा ज़िन्दा करेगा। उस का जवाब इस के सिवा कुछ भी नहीं (तुम चाहे मानो या न मानो) कि वह अल्लाह की ज़ात है जो उन्हें दोबारा ज़िन्दा करेगा और कौन है जो आसमान से बारिश बरसा कर और ज़मीन से पौधे उगाकर तुम्हें रोज़ी देता है?

जवाब मालूम है कि वह अल्लाह की ज़ात है जो इस की कुदूरत रखता है, तो फिर तुम जो उस के साथ ग़ैरों को शरीक बनाते हो और दावा करते हो कि तुम सच्चे हो तो अपने सच्चाई की कोई अक्ली या नक्ली दलील पेश कर के दिखाओ।

आख़िर में अल्लाह तआला ने मुशिरकीने मक्का से एक बात यह कही कि ग़ैबी मामलों का इल्म आसमानों और ज़मीन में रहने वाली मख़्लूक़ात में से किसी को नहीं है, उन का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: अन्आम आयत नं० (59) में फ़रमाया है:-

وَعِنْدَهُ مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ

“और अल्लाह ही के पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता”।

इसलिए उस की ज़ात मअबूद बरहक़ है और तुम्हारे मअबूद चूँकि ग़ैब का कोई इल्म नहीं रखते हैं, इसलिए वह मअबूद नहीं हो सकते क्योंकि मअबूद बरहक़ (उपास्य) को तमाम ग़ैबी बातों का इल्म होना चाहिए ताकि वह दोनों जहान और उन में पाई जाने वाली तमाम कायनात की देखभाल कर सके।

‘बुख़ारी’ व ‘मुस्लिम’ और ‘तिर्मिज़ी’ ने हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है, उन्होंने कहा जिस ने यह दावा किया कि वह लोगों को कल की ख़बर बताता है, उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा झूठ बाँधा। अल्लाह तो कहता है:-

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ

“आसमानों और ज़मीन में रहने वाली मख़्लूक़ात में से कोई भी ग़ैब की बातें नहीं जानता, उन्हें सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है।”

इस इल्ज़ामी बात की एक अहम कड़ी यह है कि क़ियामत कब आएगी और क़ब्रों से मुर्दे कब उठाए जाएँगे? इस का इल्म भी अल्लाह के सिवा किसी को नहीं है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: अअराफ़ आयत नं० (187) में फ़रमाया है:-

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِيهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجِيبُهَا بِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ

“यह लोग आप से क़ियामत के बारे में सवालात करते हैं कि वह कब आएगी, आप फ़रमा दीजिए

कि इस का इल्म सिर्फ मेरे रब ही के पास है उस के वक्त का सो अल्लाह उसे ज़ाहिर नहीं करेगा।”

और जिन उपास्यों की तुम पूजा करते हो, उन्हें तो कुछ भी ख़बर नहीं कि क़ियामत कब आएगी और कब वह अपने मालिक के सामने हिसाब के लिए खड़े होंगे। इसलिए वह मअबूद (उपास्य) कैसे हो सकते हैं, अगर वह मअबूद (उपास्य) होते तो उन्हें क़ियामत की ख़बर ज़रूर होती।

**66**

بَلْ أَذْرَكَ عَلِمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ سَبِيلَ فَمِنْ فِي شَاكٍ مِّنْهَا بَلْ فَمِنْهَا عَمُونَ

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ ने **بَلْ أَذْرَكَ عَلِمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ** का मतलब यह किया है कि लोगों का इल्म क़ियामत का वक्त जानने से बेबस हो गया। कुछ लोगों ने इसे **بَلْ أَذْرَكَ عَلِمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ** पढ़ा है, जिस का मतलब यह होगा कि क़ियामत के बारे में तमाम लोगों का इल्म बराबर हो गया यानी कोई भी उस का वक्त नहीं जानता है। इस के बाद बात का रुख़ क़ियामत के इन्कारियों की तरफ़ फेर दिया गया है कि यह मुशिरकीन क़ियामत के आने में शक़ करते हैं, बल्कि इन के दिल अन्धे हो गए हैं कि इस की तस्दीक़ करने के लिए तैयार नहीं है।

कुछ लोगों ने मतलब यह लिया है, कि मान लीजिए क़ियामत के दिन जब मुशिरकीन सब कुछ अपनी आँखों से देख लेंगे तो आख़िरत पर उन का यकीन हो जाएगा, लेकिन इस इल्म से उन्हें कोई फ़ायदा न होगा क्योंकि दुनिया में इस के बारे में शक़ में थे और मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में उस को झुठलाया करते थे।

कुछ लोगों ने इस का मतलब यह लिया है कि मुशिरकीन के इल्म ने आख़िरत का यकीन नहीं किया, बल्कि इस के बारे में हमेशा शक़ में रहे, जो दिल के अन्धे होने की वजह से उन्हें इस के बारे में कोई इल्म हासिल ही नहीं हुआ। बहुत से मुफ़स्सरीन ने इसी बात को अपनाया है।



## आयत नं० 67 से 81 तक

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا أَيْبَاءُ لَمْ نُخْرَجُونَ ۖ لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاءُنَا مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَلٰٓئِقٍ ۖ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَمِمَّنْ غَابَبَةٌ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنُ يَقُصُّ عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمَعُ الصَّمَّةَ الدَّاعِيَ إِذَا وَلُوا مَدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعَمَىٰ عَنِ صَلَاتِهِمْ ۖ إِنْ تَسْمَعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُونَ ۝

### अनुवाद-

(67) और जो लोग काफ़िर हैं कहते हैं, “जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएंगे, तो क्या हमें फिर (कब्रों) से निकाला जाएगा? (68) इसका वादा तो इससे पहले भी किया जा चुका है, हमसे भी और हमारे बाप-दादा से भी, यह तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं।” (69) कह दीजिए, “जमीन में चल फिर कर देख लो, कि मुजरिमों का क्या अंजाम हुआ?” (70) और (ऐ मुहम्मद) आप उन पर गुम न कीजिए, और न दिल को तंग कीजिए इनकी चालों पर, जो वे चल रहे हैं। (71) और कहते हैं, “यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।” (72) कह दीजिए, “जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, बहुत सम्भव है कि कोई हिस्सा तुम्हारे पीछे ही लगा हो।” (73) और तुम्हारा ‘रब’ तो लोगों पर बड़ा फज़ल (अनुग्रह) करने वाला है, मगर इनमें अक्सर लोग शुक्र नहीं करते; (74) और बेशक तुम्हारा ‘रब’ खूब जानता है, जो कुछ वे सीनों में छिपाए हुए हैं, और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं। (75) और आसमानों और ज़मीन में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है, जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो। (76) बेशक यह कुर्आन बनी इस्राईल पर उन बहुत सी बातों की हकीकत स्पष्ट कर रहा है जिनमें वे इख़िलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं। (77) और बेशक यह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। (78) तुम्हारा ‘रब’ अपने हुक्म से उनके बीच फैसला कर देगा, और ‘वह’ बड़ी ताक़त वाला, इल्म वाला है। (79) तो अल्लाह पर भरोसा रखो! तुम तो खुले हक़ पर हो। (80) बेशक तुम न मुर्दों को सुना सकते हो और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेर कर आगे जा रहे हों। (81) और तुम अन्धों को उनकी गुमराही से हटा कर राह पर नहीं ला सकते, तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो जो ‘हमारी’ आयतों पर ईमान लाते हैं, और वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन जाते हैं।

## आयत नं० 67 से 81 तक की व्याख्या

67-69

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا أَيْبَاءُ لَمْ نُخْرَجُونَ ۖ لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاءُنَا مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

दिल के अन्धे होने की वजह से ही मुशिरकीन ने आखिरत का अक्सर इन्कार कर दिया और कहा कि जब हम और हमारे बाप दादे मरने के बाद गल सड़कर मिट्टी हो जाएँगे, तो अपनी कब्रों से दोबारा ज़िन्दा कर के उठाए जाएँगे। यह अनहोनी बात है और मुहम्मद से पहले इसी तरह के दूसरे लोग भी पिछले ज़मानों में पैदा हुए और लोगों से यही बात कही, लेकिन अब तक तो ऐसा हुआ नहीं, इस बात की कोई हकीकत नहीं है, इस किस्म के लोग हमेशा झूठी बातें लोगों को सुनाते रहे हैं।

अल्लाह तआला ने उन के इस हठधर्मी और आखिरत के इन्कार का जवाब अपने नबी (सल्ल०) की ज़बानी यह दी कि तुम लोग ज़रा दुनिया में चल कर उन कौमों का अन्जाम देख लो, जिन्होंने हमारे अम्बिया और आखिरत को झुठलाया कि हम ने किस तरह उन्हें हलाक कर दिया और अपने अम्बिया और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया। अगर वह अम्बिया झूठे थे तो फिर उन कौमों को क्यों हलाक किया गया और जिस ज़ाते बरहक ने उन्हें पहले पैदा किया था और फिर उन्हें हलाक कर दिया, वह यकीनन उन्हें दोबारा ज़िन्दा करने पर कादिर है।

70

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝

इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि अगर मुशिरकीने मक्का आप को झुठलाते हैं और ईमान नहीं लाते तो ग़म न कीजिए, जल्द ही अल्लाह तआला ऐसे लोगों को ज़ाहिर करेगा जो आप पर ईमान लाएँगे और कुफ़ार तिन्के की तरह खत्म हो जाएँगे और यह इन्कारी आप के खिलाफ़ जो साज़िशें करते हैं उन से भी तंग दिल न हों, अल्लाह आप की हिफ़ाज़त करेगा।

71-72

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ عَلَىٰ أَن يَكُونَ رَدْفٌ لِّكَمَّ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝

इस का तअल्लुक़ मुशिरकीने मक्का की पिछली बात से है कि आखिरत के वादे की कोई हकीकत नहीं है। उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद और उस के मानने वालों! अगर तुम्हें अपने सच्चा होने का दावा है तो फिर बताओ तो सही कि वह वक़्त कब आएगा? मुशिरकीन यह बात नबी करीम (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाने के लिए कहते थे, तो अल्लाह ने अपने नबी (सल्ल०) की ज़बानी उन का जवाब दिया कि जिस अज़ाब की तुम्हें जल्दी है उस का कुछ हिस्सा जल्द ही तुम पर नाज़िल होने वाला है, चुनाँचे मैदाने बद्र में वह मारे गए और जो बाकी बच गए वह कैद कर लिये गए।

73

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर कितना बड़ा फ़ज़ल व करम है कि उन्हें उन के गुनाहों की वजह से हलाक नहीं करता, वह मोमिन व काफ़िर सब को रोज़ी देता रहता है और बन्दों का हाल यह है कि इन में से अक्सर लोग उस का शुक्र अदा नहीं करते बल्कि इन्कार करते हैं और आखिरत का इन्कार करते हुए अज़ाब आने की जल्दी मचाते हैं। इस के बावजूद अल्लाह उन्हें तौब: की मोहलत देता रहता है।

74-75

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَيَاْعْلَمُونَ ۝ وَتَمَٰنٍ غَٰيِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

इस में नबी करीम (सल्ल०) के लिए तसल्ली और मुशिरकीन के लिए ज़बरदस्त धमकी है कि अल्लाह तआला उन के दिलों में इस्लाम और अपने नबी के खिलाफ छुपी दुश्मनी और उन के ज़ाहिरी इन्कार व शिर्क को ख़ूब जानता है और आसमान व ज़मीन में कहीं भी कोई चीज़ या कोई अमल मख़्लूक़ात की निगाहों से छुपा हो तो वह भी 'लौहे महफूज़' में दर्ज हो जाता है और अल्लाह को इस का ख़ूब इल्म है।

जब क़ियामत आएगी तो अल्लाह उन्हें उन के तमाम इन्कार व हठधर्मी और हर बुरे अमल का बदला चुकाएगा।

76

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَقُضُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

अल्लाह तआला के आलिमुल् ग़ैब होने की एक दलील यह है कि बनी इस्राईल अपने जिन तारीख़ी वाकिआत की वजह से आपस में इख़िलाफ़ करते थे, उन के बारे में उस ने सही बात अपने नबी उम्मी की ज़बान से कुर्आन-ए-करीम में नाज़िल फ़रमा दिया है।

इस सूरत के शुरु में अम्बिया बनी इस्राईल और उन की कौमों के जो वाकिआत बयान किये हैं उन से इस बात की ताईद (पुष्टि) होती है और उन्हें ईमान की दअवत देते हैं।

77

وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

यह कुर्आन उन लोगों के लिए हिदायत का सरचश्मा और सरापा रहमत साबित हुआ जो इस पर ईमान ले आए। उन में अरब के बकरियों और ऊँटों के चरवाहे और यहूद व नसारा के वह लोग शामिल हैं जिन्होंने इस्लाम की दअवत को कुबूल किया।

कुर्आन करीम की दअवत को कुबूल कर लेना उन के लिए दुनिया और आख़िरत की कामियाबियों का सबब बना और वही अरब जो लुटेरों के नाम से जाने जाते थे, रोम और फ़ारस के बादशाह बन गए।

78-81

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْبَوَاتِ وَلَا تَسْمَعُ الدَّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِلَدَى الْعُغْيِ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۖ إِنَّ تَسْمَعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝

कुर्आन करीम की अज़मत बयान करने और उस की अहमियत बताने के लिए अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब (सम्बोधित) कर के फ़रमाया कि वह क़ियामत के दिन इस कुर्आन पर ईमान लाने वालों और इस का इन्कार करने वालों के दर्मियान अद्ल व हिक़मत के मुताबिक़ फैसला करेगा और वह ऐसा ग़ालिब (प्रभावी) है कि कोई बातिल परस्त उस के फैसले से भाग नहीं सकेगा और वह ऐसा अल्लामुल् गुयूब है कि हक़ व नाहक़ को ख़ूब जानता है, उस के फैसले में ग़ल्ती नहीं हो सकती।

इसीलिए आयत नं० (79) में आप (सल्ल०) से कहा गया है कि आप अल्लाह पर भरोसा कर के दअवत व तब्लीग़ का काम करते रहिए और इस यकीन के साथ अपना मिशन जारी रखिए कि आप ऐसे स्पष्ट हक़ पर हैं, जिस की सच्चाई में ज़र्रह बराबर कोई शुब्हा नहीं है।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा से यह नसीहत मिलती है कि हक़ परस्त को इस बात का यकीन रखना चाहिए कि अल्लाह उस की ज़रूर मदद करेगा और बातिल का सर झुक कर रहेगा।

नबी करीम (सल्ल०) को मज़ीद इत्मिनान दिलाने के लिए आयात नं० (80/81) में अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया कि दअवते इस्लामिया से वही लोग फायदा उठाएँगे जो कुर्आने करीम पर ईमान लाएँगे और अल्लाह के दीन को दिल से कुबूल करेंगे। आप इस फ़िक्र में हर वक्त परेशान न रहें कि सभी लोग आप की दअवत को क्यों नहीं कुबूल कर रहे हैं।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि कुफ़ारे मक्का कुर्आन करीम को अपने ज़ाहिरी कानों से सुनते थे, लेकिन उन पर उस का राई के दाने के बराबर भी कोई असर नहीं होता था, इसीलिए उन को मुदों और बहरों से मिसाल दी गई है और उन की गुमराही हमेशा की थी, उन के राहे रास्त पर आने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसीलिए उन्हें अन्धों से मिसाल दी गई और हर दौर में जिन के लिए गुमराही लिख दी जाती है और जिन के दिलों पर इन्कार की मुहर लगा दी जाती है उन का यही हाल होता है।





## आयत नं० 82 से 93 तक

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۚ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِطُوا بِهَا عَلِيمًا ۚ أَمَّا إِذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا كَلَّمُوا فِيهِمْ لَآيِنُطْقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَقَرَّبَ مِنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلُّ أَتَوَةٍ ذُخْرَيْنِ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَابِدًا ۚ وَهِيَ كَمُزْمَرٍ السَّحَابِ ۚ صُفَعَ اللَّهُ الَّذِي اتَّخَذَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ حَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۚ وَهُمْ مِنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ الْأُمُؤُونَ ۝ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَيْتٌ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ ۚ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَتُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَأَنْ أَتْلُوا الْقُرْآنَ ۚ فَمَنْ أَهْدَىٰ لِلْيَقِينِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيَّرَ بِكُمْ الْقُرْآنَ ۚ وَقُلْ لِلَّهِ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

### अनुवाद-

(82) और जब उन पर 'हमारी' बात पूरी हो जाएगी, तो 'हम' उनके लिए ज़मीन से एक प्राणी निकालेंगे जो उनसे बयान करेगा "इसलिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते थे।" (83) और जिस दिन, हम हर उम्मत (समुदाय) में से उन लोगों की एक फौज इकट्ठा करेंगे, जो 'हमारी' आयतों को झुठलाया करते थे, तो उनकी सफ़बन्दी (क़मबख़्दता) की जाएगी; (84) यहाँ तक कि जब (सब) हाज़िर हो जाएँगे, तो 'वह' कहेगा, "क्या तुमने 'मेरी' आयतों को झुठला दिया था और इल्म से तुम उन पर हावी न थे, फिर तुम क्या करते थे?" (85) और बात उन पर पूरी होकर रहेगी, उनके जुल्म की वजह से, तो वे कुछ न बोल सकेंगे। (86) क्या उन्होंने देखा नहीं! कि हमने रात को (इसलिए) बनाया कि वे उसमें सुकून हासिल करें, और दिन को रोशन बनाया? बेशक इसमें बड़ी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (87) और जिस दिन सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सब घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे, और सब आज़िज़ होकर (कान दबाए) उसके सामने हाज़िर हो जाएँगे। (88) और तुम पहाड़ों को देखते हो! तो समझते हो कि वे जमे हुए हैं, मगर वे बादलों की तरह उड़ रहे होंगे, (यह) अल्लाह की कारीगरी है 'जिसने' हर चीज़ को मज़बूत बनाया, बेशक 'वह' उसकी ख़बर रखता है, जो कुछ तुम करते हो। (89) जो व्यक्ति नेकी लेकर आएगा उसको उससे बेहतर बदला मिलेगा; और ऐसे लोग उस दिन की घबराहट से सुरक्षित रहेंगे। (90) और जो बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोग औंधे मुँह जहन्नम में झोंक दिये जाएँगे, तुम को उन्हीं आमाँल का बदला मिलेगा जो कुछ तुम करते रहे हो। (91) मुझे यही हुक्म दिया गया है कि इस (मक्का) शहर के 'रब' की इबादत करूँ, जिसने इसे हुर्मत वाला (प्रतिष्ठित) बनाया है, और जो हर चीज़ का मालिक है, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिम (आज़ाकारी) बन कर रहूँ; (92) और यह कि कुर्आन पढ़ा करूँ, तो जो व्यक्ति सीधी राह अपनाएगा, वह अपनी ही भलाई के लिए अपनाएगा, और जो गुमराह रहा, तो कह दीजिए कि "मैं तो बस नसीहत करने वाला हूँ।" (93) और कह दीजिए, "तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, 'वह' तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा और तुम उन्हें पहचान लोगे, और तुम जो कुछ कर रहे हो उससे तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।"

## आयत नं० 82 से 93 तक की व्याख्या

**82**

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝

इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम, हाकिम और इब्ने मरदूविया ने इस आयत की तफ़्सीर में 'इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा' का कौल नक़ल किया है कि जब क़ियामत का वक़्त करीब होगा और ज़मीन में कोई भलाई का हुक्म देने वाला और बुराई से रोकने वाला बाकी नहीं रहेगा, तो अल्लाह तआला ज़मीन से एक जानवर निकालेगा जो लोगों से कहेगा कि तुम लोग उन आयतों पर ईमान नहीं लाते थे जिन में क़ियामत की ख़बर दी गई है, तो मैं क़ियामत के करीब की निशानी हूँ। मुझे उस अल्लाह ने यह ताक़त दी है जो क़ियामत लाने पर कादिर है।

'सहीह मुस्लिम' में 'हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र' रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के शुरू की निशानियों में से यह है कि सूरज पश्चिम से निकलेगा और सुबह के वक़्त अचानक एक जानवर निकल कर लोगों के सामने आ जाएगा और दोनों निशानियाँ एक दूसरे के करीब होंगी"।

मुफ़स़िरीन लिखते हैं कि या तो वह जानवर सिर्फ़ एक होगा जो लोगों से यह बात करेगा या मक़सद जानवर की एक किस्म है जिस की एक बड़ी तअ़दाद अचानक ज़मीन के अलग-अलग हिस्सों में ज़ाहिर होगी और सभी अल्लाह के हुक्म से वही बात करेंगे जिस का ऊपर ज़िक्र आ चुका है।

वह जानवर कैसा होगा, कहाँ ज़ाहिर होगा और उस से मुतअल्लिक़ दूसरी बहुत सी तफ़्सीलात का ज़िक्र इस तरह आया है जो काबिले एतिबार नहीं और न ही अस्ल विषय को समझने के लिए उन की ज़रूरत है, इसीलिए उन के ज़िक्र से एहतियात करना ही बेहतर है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तीन बातें जब ज़ाहिर हो जाएँ उस वक़्त किसी को ईमान लाने का कुछ फ़ायदा न होगा यह कि वह पहले से ईमान ला चुका हो और नेक आ़माल करता रहा हो। एक सूरज का पश्चिम से निकलना, दूसरे 'दज्जाल' का निकलना और तीसरे 'दाब्बतुल् अर्ज़' का ज़ाहिर होना"। (मुस्लिम)

**83-85**

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ قَوْمًا مِّنْ يُّكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝  
وَلَمْ يَحِيطُوا بِأَعْلَامِهَا أَفَإِذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنْطِقُونَ ۝

जो लोग दुनिया में कुआने करीम को झुठलाते हैं, क़ियामत के दिन उन का क्या हाल होगा और अल्लाह उन से क्या कहेगा?

इसी को आयात नं० (83/84) में बयान किया गया है कि उन की तअ़दाद बड़ी होगी, उन सब को एक जगह घेर कर इकट्ठा किया जाएगा और अल्लाह तआला तमाम अहले महशर के सामने उन्हें ज़लील व रुस्वा करने के लिए उन से कहेगा कि तुम ही लोगों ने मेरी इन कुआनी आयात को झुठलाया था, जिन

में क़ियामत की ख़बर दी गई थी? और उन में ग़ौर व फ़िक्र करने की ज़हमत भी ग़वारा नहीं की। तुम ने सिवाय फ़साद बरपा करने और लोगों को राहे रास्त से रोकने के दुनिया में क्या किया था।

इसीलिए जैसा कि आयत नं० (85) में कहा गया उन के लिए अल्लाह का अज़ाब मुक़द्दर हो गया है और वह अपने दिफ़ाअ में एक कलिमा भी अपनी ज़बान से अदा न कर पाएँगे।

**86**

الْمَيِّتُونَ أَنَا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَ كُنُوفِهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

मुन्किरीने क़ियामत को ग़ौर व फ़िक्र की दअवत दी जा रही है कि अल्लाह तअ़ाला ने रात बनाई है जिस में लोग सुकून हासिल करने के लिए नींद की गोद में चले जाते हैं, जो मौत की ही एक किस्म है और दिन के वक़्त जाग उठते हैं और काम में लग जाते हैं। यह जागना मौत के बाद ज़िन्दगी की एक किस्म है और जब तक आदमी ज़िन्दा रहता है, नींद व बेदारी और मौत व ज़िन्दगी का सिलसिला जारी रहता है और यह सब अल्लाह की कुदरत से होता है।

अगर एक अक्लमन्द आदमी इस में ग़ौर करेगा तो वह यकीनन मौत के बाद दूसरी ज़िन्दगी पर ईमान ले आएगा क्योंकि जो अल्लाह नींद और बेदारी पर कादिर है, वह यकीनन मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा करने पर कादिर है।

आयत के आख़िर में कहा गया है कि इस ख़्वाब व बेदारी में ईमान वालों के लिए निशानियाँ हैं, क्योंकि उन्हीं के दिल ज़िन्दा होते हैं और वही इस में ग़ौर व फ़िक्र के बाद मौत के बाद उठाए जाने पर ईमान ले आते हैं और जिन के दिल कुफ़्र की वजह से मुर्दा हैं, उन्हें ग़ौर व फ़िक्र की तौफ़ीक़ ही नहीं होती।

**87**

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتُزْعَجُ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ ۖ وَكَانَ آتُوهُ دُخْرَيْنَ ۝

सूर के फूँके जाने के विषय में सूर: अन्आम आयत नं० (73) सूर: अल् कहफ़ आयत नं० (99) सूर: ताहा आयत नं० (102) और सूर: अल् मूमिनून आयत नं० (101) में लिखा जा चुका है।

कुछ उल्मा का ख़याल है कि इस्त्राफ़ील (अलै०) तीन बार सूर फूँकेंगे और कुछ का ख़याल है कि सूर दो बार ही फूँका जाएगा।

बाज़ लोगों ने कहा है कि इस आयत से वह सूर मुराद हैं जिस के बाद मुर्दे क़ब्रों से उठ कर मैदाने महशर की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे। जब यह सूर फूँका जाएगा तो आसमानों और ज़मीन में रहने वाले अल्लाह के तमाम बन्दे सूर की शदीद आवाज़ से घबरा जाएँगे और सब पर दहशत तारी हो जाएगी, मगर अल्लाह के कुछ ऐसे नेक बन्दे होंगे जिन्हें अल्लाह तअ़ाला इस ख़ौफ़ व दहशत से महफूज़ रखेगा।

अल्लाह के उन नेक बन्दों के बारे में उल्मा के कई कौल हैं:-

एक कौल यह है कि इन से मुराद तमाम अहले ईमान हैं, जैसा कि इस के बाद आने वाली आयत नं० (89) में है कि मोमिनीन उस दिन की घबराहट से महफूज़ रहेंगे।

**88-90**

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَابِدًا وَهِيَ كَمُزْمَرٍ السَّحَابِ ۚ صُغِرَ اللَّهُ الَّذِي أَتَقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا

تَفْعَلُونَ ۚ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ۝ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ  
فَكَبُتَتْ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब (सम्बोधित) कर के कहा जा रहा है कि सूर फूँके जाने के बाद पहाड़ बज़ाहिर जमे होंगे, लेकिन वह बादलों की सी तेज़ी के साथ चल रहे होंगे।

अक्सर मुफ़ससरीन ने इस आयत की यही तफ़सीर बयान की है कि ऐसा क़ियामत के दिन उस वक़्त होगा, जब अल्लाह तआला पूरी कायनात को हलाक कर देगा।

अल्लाह तआला ने सूर: तूर आयत नं० (10) में फ़रमाया है وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا और सूर: कहफ़ आयत नं० (47) में फ़रमाया है وَيَوْمَ تَسِيرُ الْجِبَالُ दोनों आयतों से साबित होता है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला पहाड़ों को बहुत तेज़ी के साथ चलाएगा और यह सब कुछ अल्लाह तआला की अज़ीम कुद़रत की वजह से होगा जिसने हर चीज़ को एक मख़सूस हिक़मत के मुताबिक़ पैदा किया है और जो बन्दों के तमाम अच्छे और बुरे आ़माल से बाख़बर है और क़ियामत के दिन उन्हें उन का बदला देगा।

इसी को मज़ीद ताकीद के तौर पर आयत नं० (89/90) में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि दुनिया में जो ईमान व अ़मल की ज़िन्दगी गुज़ारेगा उस दिन उसे कोई डर नहीं होगा। फिर अल्लाह तआला उसे जन्नत अ़ता करेगा और जो लोग शिर्क व गुनाह करेंगे उन्हें उन के मुँह के बल जहन्नम में ढ़केल दिया जाएगा।

फिर बन्दों से फ़रमाया कि उस दिन जो कुछ होगा वह तुम्हारे आ़माल का नतीजा होगा, किसी पर एक राई के दाने के बराबर भी जुल्म न होगा।

**91-93**

إِنَّا أَمَرْتُ أَنْ أُعْبِدَ رَبِّ هَذِهِ الْبِلَدِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۚ وَأَمَرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝  
وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝ وَقُلِ  
الْحَمْدُ لِلَّهِ سُبْحَانَكُمْ إِلَهُكُمْ فَتَعَرَّفُوا بِهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि वह उन काफ़िरों के सामने अपना अ़कीदा व अ़मल बयान कर दें और अपना रवय्या स्पष्ट कर दें। चुनाँचे आप ने कुआन की ज़बान में काफ़िरों से कहा कि मुझे तो यह हुक्म दिया गया है कि मैं सिर्फ़ अपने रब की अ़बादत करूँ, उस का किसी को शरीक न बनाऊँ, वह मक्का जिसे अल्लाह ने हरम और अमन की जगह बना दिया है, जहाँ न किसी को क़त्ल किया जाता है, न किसी पर जुल्म होता है, न वहाँ के जानवरों का शिकार किया जाता है और न वहाँ के दरख़्त काटे जाते हैं।

मुफ़ससरीन लिखते हैं कि शहर मक्का और उस के अमन व सुकून को ज़िक़र करने से मख़सूद कुफ़ारे कुरैश को एहसास दिलाना है कि इन नेअ़मतों का तकाज़ा तो यह था कि जिस अल्लाह ने तुम्हें यह नेअ़मतें दी हैं उन की बन्दगी में किसी को शरीक न करते, कुआन और उस के रसूल पर ईमान ले आते।

आप (सल्ल०) ने अपनी बात जारी रखते हुए फ़रमाया, वही अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिफ़ व मालिक है और मुझे तो यही हुक्म दिया गया है कि अपनी पेशानी (माथा) सिर्फ़ उसी के सामने झुकाऊँ और मुझे यह भी हुक्म दिया गया है कि तुम्हें क़ुर्आन पढ़कर सुनाऊँ और उस पर ईमान लाने की तुम्हें दअवत दूँ क्योंकि दोनों जहाँ की सज़ादत का राज़ इसी में है, तो जो शख्स मेरी दअवत को कुबूल करेगा और शिर्क से तौब: करेगा उस का नफ़ा उसे ही पहुँचेगा और जो शख्स गुमराह हो जाएगा उस का वबाल उसी के सर होगा। मेरा काम तो सिर्फ़ हक़ का पैग़ाम लोगों तक पूरी सराहत के साथ पहुँचा देना है।

आयत नं० (93) में अल्लाह तआला ने आप को हुक्म दिया है कि आप नेअमते इस्लाम पर कुफ़ारे कुरैश के सामने अपने शुक्र का इज़हार करें कि हम मुसलमान तो अल्लाह के दिल से शुक्रगुज़ार हैं कि उस ने हमें इस अज़ीम नेअमत से नवाज़ा है और आप उन से यह भी कह दीजिए कि भविष्य में हमारा रब तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा।

चुनाँचे अल्लाह ने उन्हें अपनी पहली निशानी मैदाने बद्र में दिखाई और दूसरी फ़तेह मक्का के दिन और आख़िरी निशानी मौत के बाद दिखाएगा, जब फ़रिश्ते उन के चेहरों और उन की पीठों पर मारेंगे और कहेंगे, कि अब चखो जहन्नम का अज़ाब।

आख़िर में फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! आप का रब लोगों के अमाल से ग़ाफ़िल नहीं है और वह हर एक को उस के अमल का बदला ज़रूर देगा। मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इस में अल्लाह तआला की ओर से तमाम इन्सानों के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है।



(भाग-28)

सूर-ए-कसस

(सूर: नं.28)



## तफ़सीर सूर: कसस

**नाम-** आयत नं० (25) में हज़रत शूऐब (अलै०) के पास हज़रत मूसा (अलै०) के आने का ज़िक्र इन शब्दों में आया है:-

فَلَمَّا جَاءَ دَاوُودُ عَلَى الْقَصَصِ قَالَ لَا تَخِفْ نَجُوتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

इसी आयत से यह नाम लिया गया है और चूँकि अल्लाह की तरफ द़ावत देने की तारीख़ में हज़रत मूसा (अलै०) फिरऔन और बनी इस्राईल के किस्सों की बड़ी अहमियत है, इसीलिए उन की अहमियत के पेशेनज़र इस सूर: का नाम 'अल् कसस' रख दिया गया है, यानी वह सूर: जिस में बहुत ही अहम तारीख़ी और द़ावती किस्से ज़िक्र हुए हैं।

**नाज़िल होने का ज़माना** - 'इब्ने मरदूविया' और 'बैहकी' ने 'किताब अल् दलायल' में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि सूर: कसस मक्का में नाज़िल हुई थी। 'तब्रानी' ने 'इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा' से रिवायत किया है कि आयात नं० (52/53) उन अस्हाबे नज्जाशी के बारे में नाज़िल हुई थीं जो उ़हद में शरीक हुए थे।

इसी तरह आयत नं० (85) के बारे में आता है कि वह मक़ामे 'जहफ़ा' में हिजरत के सफ़र में नाज़िल हुई थी।

कुफ़ारे मक्का के ज़ेहनों में नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत से सम्बन्धित जो शक पैदा हो गया था, मुख़्तलिफ़ तरीके से कुर्आन करीम ने उनका जवाब दिया है कि मुहम्मद अल्लाह के नबी हैं और दुनिया व दीन की हर भलाई उन की पैरवी में है।



## आयत नं० 1 से 13 तक

طَسَمَ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ تَتْلُوا عَلَيْهِ مِنْ بَابِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةً مِنْهُمْ يَتَّبِعُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَعْنِي نِسَاءَهُمْ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَرِيدُ أَنْ نَبُنِيَ عَلَى الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُم الْوَارِثِينَ ۝ وَنُتَبِّحَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَنَرَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَعَدُّونَ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۚ فَلَا إِخْفَ عَلَيْهِ ۚ فَالْقِيَةِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي ۚ إِنَّا رَآدُّوهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَالتَّقَطَّةُ ۚ أَلْ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَرَدًّا ۚ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قَرَّتْ عَيْنِي لِی وَلَکَ لَا تَقْتُلُوهُ ۚ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَشْجُدَهُ ۚ وَلَکَ ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَادًا ۚ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِئَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَتْ لِإِخْتِهِ قُضِيَّتْ بِهِ عَنْ جُلْبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلَ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَصْحُونَ ۝ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَرْضَعَ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَلِنَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

### अनुवाद-

① ता- सीन- मीम; ② ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं। ③ 'हम' आप को मूसा और फिरऔन की कुछ सच्ची ख़बर सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ। ④ कि फिरऔन धरती में सरकश हो गया था और उसने वहाँ के रहने वालों को विभिन्न गिरोहों में बाँट दिया था, उनमें से एक गिरोह को कमजोर बना रखा था, उनके बेटों को ज़ब्त (कत्ल) करता, और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने देता; बेशक वह फ़साद करने वालों में से था। ⑤ और 'हम' चाहते थे कि उन पर अपना फ़ज़ल (उपकार) करें जो लोग ज़मीन में कमजोर पड़े थे, और उनको पेशवा (नायक) बनाएँ; और उन्हीं को वारिस बनाएँ; ⑥ और उनको ज़मीन में सत्ता (हुकूमत) दें; और फिरऔन, और हामान और उनके लश्करों को उनके ज़रिये वह दिखाएँ, जिसका उन्हें डर था। ⑦ और 'हमने' मूसा की माँ को वह्य (संकेत) किया, "उन्हें दूध पिलाओ फिर जब तुमको इनके बारे में कुछ डर हो, तो उन्हें दरिया में डाल देना; और न डरना और न दुःखी होना, 'हम' उनको तुम्हारे पास वापस लाएँगे और उन्हें रसूल बना देंगे।" ⑧ तो फिरऔन के लोगों ने उन्हें उठा लिया, ताकि वह उनके लिए दुश्मनी और ग़म का ज़रिया बने; बेशक फिरऔन और हामान और उनकी सेनाएँ बड़ी ख़ताकार (दोषी) थीं। ⑨ और फिरऔन की पत्नी ने कहा, "यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है, इसको कत्ल न करो, शायद यह हमें फ़ायदा पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा ही बना लें," और वे (अंजाम से) बेख़बर थे। ⑩ और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया, अगर 'हम' उसका दिल मज़बूत न कर देते तो क़रीब था कि वह इस (गुस्से) को ज़ाहिर कर देती, ताकि वह ईमान वालों में रहे। ⑪ और उनकी बहन से कहा कि "तू उसके पीछे-पीछे चली जा।" तो वह उनको दूर से देखती रही और उन लोगों को कुछ ख़बर न थी। ⑫ और 'हमने' उन (मूसा) पर पहले ही से दूध पिलाने वालियों को ह़राम कर रखा था, उन (की बहन) ने कहा, "क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इस (बच्चे) के परवरिश का ज़िम्मा ले लें, और इसका भला चाहने वाले हों?" ⑬ इस तरह 'हमने' उनको उनकी माँ के पास लौटा दिया, ताकि

उनकी आखें ठंडी हों और वह ग़म न करें, और ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

## आयत नं० 1 से 13 तक की व्याख्या

1

طسّم

यह हुरूफ़ मुकत्ताआत हैं, इन का अर्थ व मतलब अल्लाह तआला ही बेहतर जानते हैं।

2

تِلْكَ الْكِتَابُ الْمُبِينُ

मुफ़ससरीन लिखते हैं कि “تِلْكَ” ‘इस्म इशारा बअ़ीद’ लाने का मक़सद कुआनि करीम की अज़मत की तरफ़ इशारा है कि यह एक बहुत ही अज़ीम किताब की आयतें हैं जो हक़ व बातिल, ख़ैर व शर और हिदायत व गुमराही को इन्सानों की ख़ैर ख़्वाही में स्पष्ट रूप से बयान करती है।

3

تَشْلُوا عَلَيْكَ مِنْ بَنِي مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

अल्लाह तआला अपने नबी (सल्ल०) से कह रहा है कि आइन्दा आयतों में हम आप को मूसा और फिरऔन का सच्चा वाकिआ सुनाते हैं जो ईमान वालों के लिए फ़ायदेमन्द होगा, उन के ईमान में मज़बूती आएगी और अल्लाह की मदद व ताईद के वादे से उन के दिलों को ताक़त मिलेगी।

4

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيْعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَدُلُّهُمُ آيَاتُهُمْ وَنِسَاءُهمُ  
إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسْلِفِينَ

फ़िस्से की शुरुआत इस तरह हो रही है कि मिस्र का बादशाह (वलीद बिन रय्यान) जो ‘फ़िरऔन’ के लक़ब (उपनाम) से जाना जाता था, अपनी हुकूमत व बादशाहत की दअ़वत में बहुत आगे बढ़ गया था यहाँ तक कि अपने आपको रब और मअ़बूद होने का दावा कर बैठा था और ‘बनी इस्राईल’ को मुख़्तलिफ़ टोलियों में बाँट कर उन से गुलामों की तरह ख़िद्मत लेता था, उन के लड़कों को क़त्ल कर देता था और उन की औरतों को ज़िन्दा रखता था, जिसकी वजह यह थी कि उस के किस्बी जाति के लोगों ने उस से कहा था कि ‘बनी इस्राईल’ में अगर यूँ ही नस्ल बढ़ती रही तो वह दिन ब-दिन मज़बूत होते जाएँगे, यहाँ तक कि एक दिन वह मिस्र की हुकूमत पर काबिज़ हो जाएँगे।

उन्होंने उस को अपने बाप दादाओं के हवाले से हज़रत इब्राहीम (अलै०) की यह पैग़म्बराना ख़बर भी सुनाई थी कि फ़िरऔन की हुकूमत का ख़ात्मा एक ऐसे लड़के के हाथों होगा जो इस्राईली नस्ल से होगा, इसीलिए उस ने ‘बनी इस्राईल’ की नस्ल को रोकने और उस बच्चे को ख़त्म करने के लिए जिस के हाथों तख़्त फ़िरऔन का जाना था उस ने ‘बनी इस्राईल’ के बच्चों को क़त्ल करवाना शुरू कर दिया और उन की औरतों को लौंडियाँ और ख़ादिमाएँ बना कर उन से ख़िद्मत लेने लगा।

5-6

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ۚ وَنُكَيِّنُ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَرُءِيَ

فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ

आखिरकार अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई, उसे अपने उन कमज़ोर बन्दों पर रहम आया जो उस के ख़लील हज़रत इब्राहीम (अलै०) की नस्ल से थे। उन्हें फिरऔन की गुलामी से आज़ाद कर के ईमान जैसी अज़ीम तरीन नेअमत से नवाज़ना चाहा, फिरऔन और उस के लश्कर को हलाक कर के उन्हें सरज़मीने मिस्र का वारिस व हाकिम बनाना चाहा। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूर: अअराफ़ आयत नं० (137) में फ़रमाया:-

وَأَوْثَقْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَظْعَمُونَ فَشَارِقَ لَأَرْضٍ وَمَعَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا ۖ إِنَّكَ كَرِيمٌ عَلَى  
بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ يَسْمَا صَبْرًا ۖ وَدَمَرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝

“हम ने उन लोगों को जो बिल्कुल कमज़ोर शुमार किये जाते थे, उस सरज़मीन के पूरब व पश्चिम का मालिक बना दिया जिस में हम ने बरकत रखी है और आप के रब का नेक वादा, बनी इस्राईल के हक़ में उन के सब्र की वजह से पूरा हो गया और हम ने फिरऔन और उस की कौम के लोगों को और जो कुछ वह इमारतें बनवाते थे, सब को तोड़-फोड़ कर बराबर कर दिया।”

अल्लाह तआला ने फिरऔन, हामान और उन दोनों की फौजों को अपनी हलाकत व बर्बादी का नज़ारा अपनी आँखों से कराना था, जिसका आइन्दा आयतों में अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है।

**7-10** وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خَفِيَ عَلَيْهِ ۖ فَالْقِيَهُ فِي الْيَمِّ وَلَا تَحْزَنِي ۚ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكَ  
وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَرًّا ۚ إِنَّا فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا  
خَاطِبِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي ۖ إِنَّكَ كَلِمَةٌ تَسُوءُ ۚ عَلَىٰ أَنْ يُلْقِيَ اللَّهُ الْأَوْثَانَ ۖ وَلَئِنْ لَمْ يَشْعُرُوا  
وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَا ۚ إِنَّ كَادَتْ لَتَشْدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِئَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

चूँकि फिरऔन ‘बनी इस्राईल’ के बच्चों को कल्ल करवा देता था, ताकि वह बच्चा जिन्दा न रहे जिस के हाथों उस की हुकूमत को खत्म होना था। इसीलिए हज़रत मूसा (अलै०) जब पैदा हुए तो उन की माँ बहुत परेशान हुई, अल्लाह तआला ने उन्हें फ़रिश्ता के ज़रिये इत्मिनान दिलाया कि इस की हिफाज़त अल्लाह करेगा। इसलिए वह बच्चे को दूध पिलाती रहें और जिस दिन वह समझ लें कि अब फिरऔन के जासूसों को उन के घर में लड़का होने की खबर हो गई है तो उसे बेखौफ़ व ख़तर दरिया-ए-नील में डाल दें और उन के बारे में न डरें और न परेशान हों, अल्लाह तआला उन का बच्चा उन के पास फिर पहुँचा देगा और उन्हें यह खुशख़बरी भी दी कि उन का बच्चा बड़ा होकर नबी व रसूल होगा। इस तरह हज़रत मूसा की माँ ने उन्हें एक मज़बूत व महफूज़ टोकरे में रख कर दरिया में डाल दिया।

**11** وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصَّرَتْ بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

उन्होंने अपनी दस बारह साल की बच्ची से कहा कि दूर से देखती रहे कि यह टोकरा कहाँ जाकर रुकता है। बच्ची ने ऐसा ही किया और देखा कि टोकरा अल्लाह के फैसले के मुताबिक़ बहता हुआ

फिरऔन के महल के करीब से गुज़रा और फिरऔन के खादिमों ने बच्चे को टोकरे से निकाल कर उस के महल में पहुँचा दिया।

फिरऔन की बीवी आसिया ने बच्चे को देखते ही कहा कि यह तो बहुत ही प्यारा बच्चा है। यह मेरी और फिरऔन की आँखों का ठंडक बनेगा, इसलिए दूसरे बच्चों की तरह इसे हरगिज़ न क़त्ल किया जाए। मुम्किन है कि हम दोनों इसे अपना बेटा बना लें, हो सकता है कि आइन्दा हमारे लिए यह बच्चा बेहतर हो। इस तरह अल्लाह का फ़ैसला तमाम फ़ैसलों पर ग़ालिब आ रहा था।

**12-13** وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ يَتِيمٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَصِيبٌ ۚ وَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ فَيُضْرَرُ عَلَيْهِمْ وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

हज़रत मूसा (अलै०) को दूध पिलाने के लिए फिरऔन की बीवी आसिया ने दूध पिलाने वाली को बुलवा भेजा, लेकिन उन्होंने उन का दूध नहीं पिया तो फिर और दूध पिलाने वालियों को बुलवाया, उस का दूध भी पीने से इन्कार कर दिया। इसी तरह बहुत सी दाईयों को बुलवाया, लेकिन बच्चे ने दूध पीने से इन्कार कर दिया और अल्लाह ने फिरऔन व आसिया और महल के दूसरे रहने वालों के दिलों में उन की ऐसी मुहब्बत डाल दी कि सभी परेशान व बेचैन हो गए और बात महल से बाहर निकल गई।

उन की बहन तो तमाम हालात का ख़ामोशी के साथ जायज़ा ले रही थीं, उन्होंने ने हिम्मत की और आगे बढ़कर महल वालों से कहा कि मुझे एक दाया के बारे में मालूम है, शायद बच्चा उस का दूध पीने पर राज़ी हो जाए और वह लोग इतने अच्छे हैं कि बच्चे की अच्छी देखभाल करेंगे। महल वालों ने फ़ौरन उस दाया को बुलवाया जो हज़रत मूसा (अलै०) की माँ थीं, बच्चा ने उन के गोद में जाते ही लपक कर उन का दूध पीना शुरू कर दिया।

इस तरह अल्लाह ने उन्हें दरिया-ए-नील से निकाल कर फिरऔन के ज़रिये उन की माँ के पास पहुँचा दिया जहाँ वह उन की मुहब्बत के साथ परवरिश पाने लगे और उन की आँखों को ठंडक पहुँचाने लगे। अल्लाह ने मूसा की माँ से जो वादा किया था वह पूरा हो गया और दूसरे लोगों को इस की ख़बर भी न हुई।





## आयत नं० 14 से 28 तक

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَةِ هَٰذَا وَمِنَ الْآخَرِ ۖ فَاسْتَعَاذَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَوَكَّرَهُ مُوسَىٰ وَقَطَعَتْ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ۖ فَغَفَرْنَا لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ ۝ فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ ۖ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَنِ ارَادَ أَن يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۖ قَالَ يُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَن تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۖ إِن تُرِيدُ إِلَّا أَن تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَن تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ ۖ قَالَ يُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَائِكَةَ لِيَأْتِيَنَّكَ بِكَ لِيُكَتِّبَنَّكَ ۖ فَخَرُجْ إِنَّا لَمِنَ الْبَاقِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تَلَقَّاهُ مَذْيَنٌ ۖ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْكُنُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمِ امْرَأَتَيْنِ تَذُودِينَ ۖ قَالَ مَا لِحَاطَتِكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ عَنْوَابُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۝ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۖ فَجَاءَهُ إِحْدَاهُمَا تَشْوِي عَلَىٰ اسْتِحْيَاءٍ ۖ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِیَجْزِيكَ أَجْرًا مَّا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَأْبَتِ اسْتِجَارَةٌ ۖ إِن خَيْرٌ مِّنْ اسْتِجَارَةِ الْقَوِيِّ الْأَمِينِ ۝ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَن اُنْكَحِكَ الْإِثْنَتَيْنِ ۖ هَتَيْنِ عَلَىٰ أَن تَأْجُرَنِي ثَلَاثَ حِجَجٍ ۖ فَإِنْ أَتَيْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ أَن أَشُقَّ عَلَيْكَ ۖ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتَ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝

### अनुवाद-

(14) और जब वह अपनी जवानी को पहुँच गये और उनमें गम्भीरता आ गई, तो 'हमने' उनको हिकमत और इल्म दिया, और 'हम' नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (15) और वह शहर में ऐसे समय दाखिल हुए जबकि वहाँ के रहने वाले बेखबर थे, तो देखा कि दो व्यक्ति लड़ रहे हैं, एक उनके अपने गिरोह का था और दूसरा उनके दुश्मन के गिरोह का था- जो व्यक्ति उनके गिरोह का था उसने उस व्यक्ति के मुकाबले में, जो दुश्मन के गिरोह से सम्बन्ध रखता था, उनको मदद के लिए पुकारा! तो मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया, कहने लगे, "यह शैतान की हरकत है, बेशक वह खुला गुमराह करने वाला दुश्मन है।" (16) बोले, "ऐ रब! मैंने अपने आप पर जुल्म किया है, अतः आप मुझे माफ़ कर दें।" तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक वह माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (17) उन्होंने कहा, "ऐ रब! तेरे इस एहसान के बाद जो 'तूने' मुझ पर किया है, मैं कभी अपराधियों का मददगार न बनूँ।" (18) फिर दूसरे दिन वह शहर में डरते, टोह लगाते हुए दाखिल हुए तो क्या देखते हैं, कि वही व्यक्ति जिसने कल मदद के लिए उनको पुकारा था, आज फिर उन्हें पुकार रहा है; मूसा ने कहा, "बेशक तू तो खुली हुई गुमराही में है।" (19) तो जब (मूसा ने) उस (किस्ती) व्यक्ति को, जो उन दोनों का दुश्मन था पकड़ने का इरादा किया, तो वह पुकार उठा, "ऐ मूसा, क्या तुम मुझे उसी तरह क़त्ल करना चाहते हो,



## आयत नं० 14 से 28 तक की व्याख्या

14

जब हज़रत मूसा (अलै०) पूरे जवानी को पहुँच गए और उन के अन्दर पुख्तगी आ गई, तो अल्लाह तआला ने उम्र के साथ-साथ उन्हें हिकमत व दानाई से भी नवाज़ा। अपने बाप-माँ के घर में रहकर अपने दादा इब्राहीम, इस्हाक़, याकूब और यूसुफ़ वगैरहम की तारीख़ दअवत व अज़ीमत सुन-सुन कर उन की रुह को मज़बूती मिलती गई और महल से जुड़े रहने की वजह से दुनियावी उलूम व हिकमत भी सीखते रहे। इस तरह एक नेक माँ के नेक बेटे को अल्लाह ने अपनी नेअमतों से नवाज़ा, अल्लाह अपने नेक बन्दों के साथ हमेशा ऐसा ही बर्ताव करता है।

**15-17**

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَى حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَةِ هَٰذَا وَمِنَ

عَدُوًّا ۖ فَاسْتَعَاذَهُ الَّذِي مِنْ شَيْعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَوَكَرَهُ مُوسَى فَقَضَى عَلَيْهِ ۚ قَالَ هَذَا مِنْ  
 عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُضِلٌّ مُبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ۖ فَاغْفِرْ لِي ۖ فَغَفَرْنَا لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ  
 الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ۝

एक दिन हज़रत मूसा (अलै०) सुबह के वक़्त या दोपहर के वक़्त जब लोग आराम कर रहे थे या मग़ि़ब व अ़िशा के दर्मियान महल (राजभवन) से निकल कर शहर में आए जहाँ आम लोग रहते थे। एक जगह एक इस्राईली और एक किब्ती आपस में झगड़ रहे थे, इस्राईली मज़लूम था, उस ने हज़रत मूसा (अलै०) को देखकर उन्हें ज़ालिम किब्ती से निजात दिलाने के लिए पुकारा, उन्होंने किब्ती को एक धूसा मारकर हटाना चाहा, अल्लाह की मर्जी कि उसी एक धूसा से उस की मौत हो गई।

हज़रत मूसा (अलै०) परेशान हो गए और फ़ौरन उन के दिमाग़ में यह बात आई कि जो कुछ हुआ, यकीनन उन के खिलाफ़ शैतान की साज़िश का नतीजा है, जो इन्सान का खुला दुश्मन है और अपनी इस ग़ल़्ती को 'ज़ुल्म' से तअबीर किया और अपने रब से मग़ि़रत तलब की, तो अल्लाह ने उन की इस ग़ल़्ती को माफ़ कर दिया और उन के दिल में किसी ख़ास वास्ते से यह बात डाल दी कि अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया है, तो उन्होंने दुआ की कि ऐ मेरे रब! तूने मुझ पर जो यह एहसान किया है तो मैं तुझ से अहद करता हूँ कि अब मैं फिरऔन और फिरऔनियों के साथ नहीं रहूँगा, जिन का ज़ालिमाना रवैया इस्राईलियों के खिलाफ़ तमाम हदों को पार कर गया है, न किसी और मुजरिम की कभी मदद करूँगा।

18-21

فَأَصْحٰ فِي الْبَيْتَةِ خَافِيًا يَتَرَقَّبُ ۚ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِجُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَغَوِيٌّ  
 مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۖ قَالَ يَبُوءُ لِي أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا  
 بِالْأَمْسِ ۚ إِنَّ تَرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ  
 أَقْصَا الْبَيْتَةِ يَسْعَى ۚ قَالَ يَبُوءُ لِي أَنَّ الْمَلَأَ يَأْتِيكَوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ ۖ فَاخْرُجْ إِلَىٰ أَلْكَ مِنَ الْيَهُودِيَّةِ ۖ فَخَرَجَ مِنْهَا  
 خَافِيًا يَتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

इस ग़ैर इरादी और अचानक क़त्ल के ह़ादसे के बाद हज़रत मूसा (अलै०) ख़ौफ़ज़दह हो गए कि मालूम नहीं फिरऔन को जब इस ह़ादसे का इल्म होगा तो वह उन के साथ क्या करेगा? अभी यह ख़ौफ़ था ही कि दूसरे दिन फिर वही इस्राईली एक दूसरे किब्ती के साथ लड़ रहा था और हज़रत मूसा (अलै०) को देखते ही उन्हें अपनी मदद के लिए पुकारने लगा। हज़रत मूसा (अलै०) ने उस से कहा कि तू बड़ा झगड़ालू मालूम होता है, ताक़त न रखते हुए भी सब से झगड़ता फिरता है और लोगों के लिए मुसीबत बनता है।

फिर किब्ती को पकड़ने के लिए दौड़े जो काफ़िर था, उन का और उस इस्राईली का दुश्मन था, तो उस ने उन से कहा कि कल तुम एक किब्ती को क़त्ल कर चुके हो और आज मुझे क़त्ल करना चाहते हो, तुम धरती पर ज़ालिम बन कर रहना चाहते हो, सुधार पसन्द नहीं बनना चाहते हो।

कुर्आन के ज़ाहिरी शब्द इसी पर दलालत करते हैं और इस की कोई दलील मौजूद नहीं है कि पिछले दिन के क़त्ल का वाकिआ किसी किस्ती को मालूम नहीं था, बल्कि मालूम था और इस की ख़बर फिरऔन को भी हो गई थी, जभी तो उस ने तुरन्त शूरा (सभा) बुला कर हज़रत मूसा (अलै०) को क़त्ल करवा देने का फैसला सादिर कर दिया था जिस की ख़बर लेकर वह इस्राईली हज़रत मूसा (अलै०) के पास आया था जो खुफ़िया तौर पर मुसलमान था और फिरऔन की सभा में शरीक था।

कहते हैं कि वह हज़रत मूसा (अलै०) का चचाज़ाद भाई था, उस ने उन से कहा कि फिरऔन की मजलिस में तुम्हारे क़त्ल की साज़िश हो रही है इसलिए तुम तुरन्त किसी तरह इस शहर से निकल जाओ, चुनाँचे हज़रत मूसा (अलै०) तुरन्त ही छुपते-छुपाते वहाँ से निकले ताकि कहीं पकड़ न लिये जाएँ और क़त्ल न कर दिये जाएँ। शहर से निकलते हुए उन्होंने दुआ की कि ऐ मेरे रब! मुझे फिरऔन, फिरऔनियों और हर ज़ालिम से निजात दे और उन्हें मुझ तक पहुँचने न दे।

**22-24**

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سُبُلَ السَّبِيلِ ۖ وَلَمَّا مَرَدَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْكُنُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ لَا خَاطِبَ لَكُمَا ۚ قَالَتَا لَهُ نَسْتَعِيذُكَ حَتَّىٰ يَصْطَرِّحَ الرَّعَاءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۖ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لَمَّا أَنزَلْتَ إِلَىٰ مِن خِلْفِ قَعِيرٍ ۖ

हज़रत मूसा (अलै०) मिस्र से निकलकर मद्यन की तरफ़ बढ़े जो फिरऔन के बादशाहत की सीमा से अलग था और अपने रब से दुआ करते रहे कि रास्ते में उन के दुश्मन उन्हें पकड़ न लें, चुनाँचे बहिफ़ाज़त मिस्र की सीमा से निकलकर मद्यन के इलाक़े में पहुँच गए और चलते-चलते एक कुंवा के पास पहुँचे तो देखा कि लोगों की भीड़ लगी हुई है और सब अपने-अपने जानवर को पानी पिला रहे हैं और दो लड़कियाँ अलग खड़ी हैं, उन के करीब गए और पूछा कि वह दूर क्यों खड़ी हैं? तो उन्होंने बताया कि जब सारे चरवाहे अपनी-अपनी बकरियों को पानी पिला कर हट जाएँगे तब हम पिला सकेंगे, इसलिए कि हमारे वालिद (पिता) बूढ़े हैं, अब उन से यह काम नहीं हो सकता है और हमारे घर में कोई दूसरा मर्द नहीं है और हम उन मर्दों के बीच में नहीं जाना चाहते हैं।

इन दोनों की बात सुनकर हज़रत मूसा (अलै०) आगे बढ़े और उन की बकरियों को पानी पिला दिया, फिर एक दरख्त के साये में जाकर बैठ गए और दुआ की कि ऐ मेरे रब! रोज़ी हासिल करने का जो ज़रिया अभी मेरे सामने ज़ाहिर हुआ है मैं उस का मोहताज हूँ यानी दोनों लड़कियों के बाप को एक मज़दूर की ज़रूरत है और मुझे रोज़ी की ज़रूरत है।

**25**

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي عَلَىٰ اسْتِحْيَاءٍ ۖ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِيجْزِيكَ أَجْرًا مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ

अक्सर मुफ़ससरीन की राय है कि वह दोनों हज़रत शुऐब (अलै०) की लड़कियाँ थीं। जब दोनों आदत के खिलाफ़ जल्दी ही बकरियों को पानी पिलाकर घर पहुँच गईं तो उन के बाप ने हैरत से वजह पूछी, उन्होंने वजह बताई तो बाप ने दोनों में से एक को वापस भेजा कि जाकर उस नौजवान से कहो

कि मेरे वालिद तुम्हें तुम्हारी मज़दूरी देने के लिए बुला रहे हैं। लड़की बड़ी शर्म व हया और घूँघट के साथ हज़रत मूसा (अलै०) के पास आई।

(जैसा कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से साबित है जिसे इब्ने मुन्ज़िर, इब्ने अबी हातिम और हाकिम ने रिवायत की है) और अपने बाप का पैगाम पहुँचाया, तो हज़रत मूसा (अलै०) ने अपनी बेसरो सामानी और शदीद ज़रूरत की वजह से मौके को बेहतर समझा और उस के साथ चल पड़े, खुद आगे और लड़की पीछे से उन्हें रास्ता बताती रही। हज़रत शुऐब (अलै०) के पास पहुँच कर जब उन्हें कुछ सुकून हुआ तो अपना पूरा किस्सा उन से बयान किया, उन्होंने इत्मिनान दिलाया और कहा कि तुम ज़ालिमों की हुकूमत की सीमा से बाहर निकल आए हो, अब यहाँ आराम से रहो।

**26-28**

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۝ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ آتُكَ  
إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمْنِي حُجْجٌ ۝ فَإِنْ أَتَيْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۝ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّى  
عَلَيْكَ ۝ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۝ أَيَّمَا الْإِكْبَالَيْنِ قَضَيْتَ  
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۝ وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝

जब हज़रत मूसा (अलै०) ने कुछ दिन वहाँ गुज़ार लिया, हज़रत शुऐब (अलै०) और उन के घर वाले उन के चाल चलन से वाकिफ़ हो गए तो एक दिन दोनों लड़कियों में से एक ने अपने बाप को मशवरा दिया कि वह हज़रत मूसा (अलै०) को तन्ज़ाह पर बकरियाँ चराने और घर के दूसरे काम काज के लिए मुलाज़िम रख लें, इसलिए कि बेहतर मुलाज़िम वह होता है जो ताक़तवर और अमानतदार हो और कुवां के पास पहली मुलाकात से अब तक उस का जो किरदार हमारे सामने आया है वह यही बताता है कि यह आदमी ताक़तवर और अमानतदार है कि अब तक इस ने हमारी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखा है।

हज़रत शुऐब (अलै०) भी उन के हालात, किरदार (Character) और चाल-चलन का जायज़ा लेते रहे और आयत नं० (14) में गुज़र चुका है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलै०) को हिक्मत व दानाई तीस साल की ही उम्र में दे दिया था, तो ज़ाहिर है कि उस हिक्मत व दानाई के आसार भी उन पर नुमायाँ रहे होंगे। इसीलिए जब हज़रत शुऐब (अलै०) को उन की तरफ़ से इत्मिनान हो गया तो एक दिन उन से कहा कि मैं अपनी इन दोनों बच्चियों में से एक की तुम से शादी कर देना चाहता हूँ इस बदले में कि आठ साल तक तुम मेरे मुलाज़िम (नौकर) रहो और बकरियाँ चराओ और अगर तुम अपनी तरफ़ से मज़ीद दो साल मेरा काम करोगे तो यह मेरे साथ तुम्हारा तआउन (सहयोग) होगा, यह कोई ज़रूरी नहीं है। तुम मुझे इन्शाअल्लाह वादे का पाबन्द और अच्छा बर्ताव करने वाला पाओगे।

हज़रत मूसा (अलै०) ने जवाब दिया कि जो बात मेरे और आप के दर्मियान तय हुई है इस के हम दोनों पाबन्द रहेंगे और दोनों मुद्दतों में से जिस पर भी मैं अमल करूँ मुझे अख़्तियार हासिल रहेगा, न मुझ से आठ साल से ज़्यादा का और न ही इस का मुताल्बा किया जाएगा कि (मेरी मर्जी

के ख़िलाफ़) दस साल से पहले ही अपनी बीवी को लेकर यहाँ से चला जाऊँ और हम दोनों अल्लाह को गवाह बनाते हैं।

यह आयते करीमा दलील है कि हज़रत शुऐब (अलै०) की शरीअत में उजरत पर मुलाज़िम रखना जायज़ था और यह कि बाप किसी नेक आदमी को अपनी लड़की से शादी कर लेने की पेशकश कर सकता था।

यही सहाबा-ए-किराम की सुन्नत रही है और 'हज़रत उमर बिन ख़त्ताब' (रज़ि०) का वाकिआ मशहूर है कि उन्होंने 'हज़रत अबू बक्र' और 'हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा' को, अपनी बेटी हफ़सा से शादी करने की पेशकश की थी और एक सहाबिया ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से शादी करने की पेशकश की थी, यह वाकिआत सहीह रिवायत से साबित हैं।





## आयत नं० 29 से 42 तक

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۖ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ  
أَوْ جَذْوَةٍ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُّوسَىٰ إِنِّي  
أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَآهَا تُهَكُّرُكًا يَهُزَّ عَنْهَا طَائِرُهَا وَغَرِبَ عَلَيْهَا الضُّلُوكُ ۖ فَفُتِحَتْ بَابُهَا فَلَمَّا بَلَغَ مِنْ ذَلِكَ  
مِنْ الْأَمْنَيْنِ ۖ أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۖ وَأَضْمَمَهُ إِلَىٰكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۖ فَذَكَرَكَ بِرَبِّكَ إِلَى  
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا فِيسِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝ وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي  
لِسَانًا فَأَرْسَلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ قَالَ سَنُنْشِئُ عُصْدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكَ كِبًا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ  
إِلَيْكَ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ الْأَعْيُنَ ۖ وَأَنْتُمْ كَاذِبُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرٍ وَمَا سَمِعْنَا  
بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِ رَبِّهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ  
الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرِي ۖ فَأَوْقِدْ لِي يَهْمَانُ عَلَى الطَّيْنِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا لَّعَلِّي  
أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ ۖ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَاسْتَكَبَرَ مُوسَىٰ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ إِلَىٰ اللَّهِ  
يُرْجَعُونَ ۝ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ  
الْقِيَامَةِ لَا يَنْصُرُونَ ۖ وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ۝

### अनुवाद-

- (29) जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर वालों को लेकर चले तो 'तूर' की ओर एक आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहा, "ठहरो, मुझे आग नज़र आयी है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ या आग का कोई अंगारा, ताकि तुम ताप सको; (30) जब वह उसके पास पहुँचे तो मुबारक क्षेत्र में घाटी के दाईं ओर के एक वृक्ष (पेड़) से आवाज़ आयी, "ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब!" (31) और यह कि "आप अपनी लाठी डाल दें।" फिर जब उसे देखा कि वह साँप की तरह हरकत कर रही है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर भी न देखा; "ऐ मूसा! आगे आइए और डरिए नहीं, आप बिल्कुल सुरक्षित हैं; (32) अपना हाथ गिरेबान में डालिए, बिना किसी ख़राबी के सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, और डर के समय अपने बाजू (भुजा) को अपने से मिलाए रखिए। यह दो निशानियाँ हैं आप के रब की ओर से फिरऔन और उसके दरबारियों के पास (जाएँ) कि वे फ़ासिक (अवज्ञाकारी) लोग हैं।" (33) (मूसा ने) कहा, "ऐ रब! मैंने उनके एक व्यक्ति की हत्या की थी, इस लिए मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे; (34) और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज़्यादा अच्छी (धारा प्रवाह) है, तो उनको मेरे साथ मदद्गार बना कर भेज दीजिए ताकि वह मेरी पुष्टि करे, मुझे डर है कि वे लोग मुझे झुठलाएँगे।" (35) (अल्लाह ने) कहा, "‘हम’ आप के भाई के ज़रिये आप के बाजू मज़बूत करेंगे, और आप दोनों को ग़लबा देंगे, तो ‘हमारी’ निशानियों की वजह से वे आप तक पहुँच न सकेंगे, और आप (और) जिन्होंने आप की पैरवी की ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे।" (36) तो जब मूसा उनके पास 'हमारी' खुली हुई निशानियाँ लेकर आए, तो उन लोगों ने



कहा, “यह तो बस एक जादू है, और हमने तो यह बात अपने अगले बाप-दादा में कभी सुनी ही नहीं।” (37) और मूसा ने कहा, “मेरा रब उस व्यक्ति को खूब जानता है जो ‘उसके’ यहाँ से हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और उसको भी जिसके लिए आकिबत का घर है, बेशक ज़ालिम कामियाब नहीं होते।” (38) और फिरऔन ने कहा, “ऐ दरबारियों! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी मअबूद (उपास्य) को नहीं जानता; अच्छा तो ऐ हामान! तू मेरे लिए ईंटें आग में पकवा, फिर मेरे लिए एक महल बना ताकि मैं मूसा के रब (उपास्य) को झाँक आऊँ, और मैं तो उसे झूठा समझता हूँ;” (39) और वह और उसकी सेनाओं ने धरती में नाहक़ घमंड किया, और समझा कि उन्हें ‘हमारी’ ओर लौटना ही नहीं है। (40) तो ‘हमने’ उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया, और गहरे पानी में फेंक दिया; अब देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ? (41) और ‘हमने’ उन्हें आग की ओर बुलाने वाला सरदार बना दिया और क़ियामत के दिन उन्हें कोई मदद न मिल सकेगी। (42) और ‘हमने’ इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन उनका बुरा हाल होगा।

## आयत नं० 29 से 42 तक की व्याख्या

**29-32** فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَىٰ الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا عَلَىٰ آتِيكُمْ قَبْلَهَا يُخَبِّرُ أَوْجَدُونَ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝ فَلَمَّا أَنهَا تَوَدَّىٰ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يَتُوسَىٰ إِلَىٰ أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَلْقِي عَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدَبِّرًا لَمْ يَعْقِبْ ۝ يُؤْمَلَىٰ أَقْبَلْ وَلَا تَخَفْ ۚ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ۝ أَسْأَلُكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ وَأَضْمُمُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۚ فَذَلِكِ بُرْهَانِي مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

हज़रत मूसा (अलै०) की शादी दोनों लड़कियों में से एक से हो गई और वादे के मुताबिक हज़रत शुऐब (अलै०) के घर में रहने लगे। ‘इब्ने अबी शैबा’ और ‘बुख़ारी’ वगैरह ‘इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा’ से रिवायत की है कि उन्होंने उन की ख़िद्मत दस साल तक की। ‘इब्ने जरीर’ ‘हाकिम’ और ‘इब्ने मरदूविया’ वगैरह ने यही बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रिवायत की है।

‘हज़रत इब्ने अब्बास’ (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मैंने हज़रत जिब्रईल से पूछा कि मूसा ने कौन सी मुदत पूरी की, उन्होंने कहा जो मुकम्मल और पूरी थी।”

(मुस्तदरक़ हाकिम)

समय पूरा करने के बाद जब अपने अहल व अयाल को लेकर मिस्र की तरफ़ रवाना हुए तो कोहेतूर के करीब रात के वक़्त रास्ता भटक गए और बिल्कुल पहाड़ के दामन में पहुँच गये। सख़्त सर्दी थी, अचानक देखा कि पहाड़ की ओर से रौशनी आ रही है, समझा कि वहाँ कुछ लोग हैं जिन्होंने आग जला रखी है। इसलिए अपने बाल बच्चों से कहा कि तुम सब यहीं ठहरो, मैं रास्ता पूछ कर आता हूँ या कम से कम तुम्हें गर्मी पहुँचाने के लिए आग लेकर आता हूँ। वहाँ जब पहुँचे तो बात ही कुछ और थी वह

जगह तो तजल्ली इलाही की वजह से एक मुबारक वादी बन चुकी थी, जिस के दाँई ओर मौजूद एक दरख्त के दर्मियान से आवाज़ आई कि “ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ जो सारे जहान का पालनहार है। आप के हाथ में जो लाठी है, उसे ज़मीन पर डालिए डालते ही एक डरावना साँप बनकर तेज़ी के साथ हरकत करने लगा।

हज़रत मूसा (अलै०) यह कैफ़ियत देखकर डर गए और पीछे मुड़कर भागने लगे तो आवाज़ आई कि ऐ मूसा! वापस आइए और ख़ौफ़ न खाइए आप हर शर व बला से मामून महफूज़ हैं, यह सब से बड़ा मोअज़िज़ा था जो उन्हें अता किया गया

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं, इस मोअज़िज़े के इज़हार का मक़सद यह भी था कि उन्हें यकीन हो जाए कि वह उस अल्लाह से हमकलाम हैं जो किसी चीज़ को कहता है कि हो जा, तो वह चीज़ वजूद में आ जाती है।

वापस आकर जब पहली जगह खड़े हुए तो फिर आवाज़ आई कि आप अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल कर निकालिए वह नूर की तरह ख़ूबसूरत चमकता हुआ ज़ाहिर होगा और अपने दिल से साँप का ख़ौफ़ दूर करने के लिए अपना बाजू अपने सीने से लगा लीजिए।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि बज़ाहिर यह ख़ूबी भी उन्हें हर वक़्त के लिए दी गई थी कि जब भी उन्हें फ़िरऔन की तरफ़ से ख़ौफ़ हो तो वह ऐसा करें, ताकि ख़ौफ़ ख़त्म हो जाए।

‘इब्ने कसीर’ कहते हैं कि अगर कोई दूसरा आदमी भी उन की पैरवी करते हुए ऐसा करेगा तो इन्शाअल्लाह उस के दिल से ख़ौफ़ जाता रहेगा।

फिर आवाज़ आई कि आप के रब की ओर से यह दो मोअज़िज़े हैं जो आप के रसूल होने की दलील हैं, उन्हें लेकर आप ‘फ़िरऔन’ और फ़िरऔनियों के पास जाइए जिन्होंने कुफ़्र व सरकशी की राह अख़्तियार कर ली है, मुझे छोड़कर दूसरों की अ़िबादत करते हैं और उन्होंने ‘बनी इस्राईल’ को अपना गुलाम बना रखा है।

**33-35**

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۖ وَإِنِّي مُرَوَّنُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسًا ۖ فَأَرْسَلَهُ  
مَعِيَ رِدْءًا يُصَلِّي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَيِّدُوا ۖ قَالَ سَنُنْشِئُ عُطْدَكَ بِأَيْدِيكَ وَنَجْعَلُ لَكَ سُلْطٰنًا  
فَلَا يَصْلَوْنَ إِلَيْكَ ۚ يَا أَيُّهَا أَنْتُمْ وَمَنِ اتَّبَعَكُمْ ۖ أَغْلِبُونَ ۖ

हज़रत मूसा (अलै०) ने अल्लाह का यह हुक्म सुनकर कहा कि मेरे रब! मैंने एक क़िस्ती को क़त्ल कर दिया था, इसलिए डरता हूँ कि वहाँ के लोग मुझे क़त्ल कर देंगे और मेरे भाई ‘हारून’ मुझ से ज़्यादा अच्छी बात करने की क्षमता रखते हैं, इसलिए उन्हें भी अपना रसूल और मेरा मदद्गार बना दीजिए। अगर मैं अकेला गया तो डर है कि वह लोग मुझे झुठला देंगे, वह मेरे साथ होंगे तो मैं जो कुछ फ़िरऔन से कहूँगा उसे वह अपनी फ़सीह (साहित्यिक) ज़बान में उस के सामने बयान करेंगे।

अल्लाह तआला ने उन की माँग को मन्ज़ूर कर लिया और कहा कि हम आप के भाई को आप

का मदद्गार बनाते हैं और आप दोनो हमारे मोअजिजात लेकर फिरऔन के पास जाइए बहरहाल गुल्बा आप को और आप के मानने वालों को ही हासिल होगा।

**36** فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝

हज़रत मूसा (अलै०) और उन के भाई मोअजिजात लेकर फिरऔन के पास पहुँचे। हज़रत मूसा (अलै०) ने उस से कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ रसूल (दूत) हूँ और यह मोअजिजे मेरी सच्चाई की निशानियाँ हैं और फिर दोनों मोअजिजात उस के सामने दिखाए तो फिरऔन कहने लगा कि यह मूसा तो कहीं से जादू सीख कर आया है, बड़ा जादूगर हो गया है और अपनी जादूगरी के ज़रिये हमारी आँखों पर जादू कर दिया है और लाठी को साँप, हाथ को रौशन और चमकता हुआ दिखा रहा है,

हम और हमारे बाप दादे ने आज तक ऐसा जादू नहीं देखा था या यह नहीं सुना था कि कोई इन्सान नुबूवत का दावा करता हो या यह कि इस दुनिया का हमारे सिवा कोई दूसरा मअबूद (उपास्य) हो जो इन्सानों को अपने पैग़म्बर बनाकर मोअजिजात के साथ उन्हीं जैसे इन्सानों के पास भेजता है।

मुफ़सिरीन लिखते हैं कि फिरऔन ने केवल घमण्ड की वजह से नुबूवतों का इन्कार किया और झूठ बोला इसलिए कि हज़रत यूसुफ़ (अलै०) तो अभी कुछ ही दिनों पहले गुज़रे थे और यह बात सब को मालूम थी कि वह नबी थे या यह कि वह उन की नुबूवत का इन्कारी था।

**37** وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا يُلَهِىَ مِنَ الْهَدَىٰ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

हज़रत मूसा (अलै०) ने उस की हठधर्मी वाली बात का जवाब (अल्लाह तआला की नसीहत के मुताबिक़ दिया कि वह फिरऔन को दअवत देते वक़्त नमी से बात करें) देते हुए यह नहीं कहा कि तुम गुमराह, काफ़िर और जहन्नमी हो, बल्कि निहायत नमी के साथ अपने बारे में कहा कि मेरा रब ज़्यादा जानता है कि उस ने किसे तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए रौशनी और हिदायत देकर भेजा है और किस का अन्जाम बेहतर होगा यानी किसे मौत के वक़्त फ़रिश्ते रहमत व रज़ा-ए-इलाही और जन्नत की बशारत देंगे और वह यह भी ख़ूब जानता है कि इन्कार व सरकशी के ज़रिये अपने आप पर जुल्म करने वाले कभी कामियाब नहीं होंगे और तारीख़ गवाह है कि हज़रत मूसा (अलै०) पर ईमान लाने वालों को अल्लाह ने दुनिया में इज़्ज़त दी और आख़िरत में भी उन का अन्जाम अच्छा होगा। फिरऔन और फिरऔनियों के हिस्से में ज़िल्लत व रुस्वाई और हलाकत व बर्बादी आई।

**38** وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَٰهَامُنُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

फ़िरऔन हज़रत मूसा (अलै०) की यह बात सुनकर डर गया कि लोग उस पर ईमान न ले आएँ, इसलिए जानते हुए कि उस का रब अल्लाह है केवल अपनी क़ौम को धोका देने के लिए कहने लगा कि लोगो! मुझे तो नहीं मालूम कि मेरे सिवा तुम्हारा कोई मअबूद (उपास्य) है जिस की बन्दगी व फरमाँबरदारी

की यह शख्स मुझे और तुम्हें दअवत दे रहा है और अपने घमण्ड को ज़ाहिर करते हुए और लोगों को अपने कमाले कुदरत का यकीन दिलाने के लिए अपने सिक्रेट्री 'हामान' से कहा कि मज़बूत ईंटों का एक बुलन्द महल बनाओ, जिस पर चढ़कर मैं मूसा के मअबूद (उपास्य) का सुराग लगाऊँ हालाँकि मैं तो उसे अभी भी झूठा समझता हूँ।

‘इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि वह अल्लाह तआला के वजूद का मुन्किर था, इसलिए उस ने अपनी कौम को बताना चाहा कि हज़रत मूसा अपने इस दावे में बिल्कुल झूठा है कि मेरे सिवा कोई और भी मअबूद (उपास्य) है, उस की यही बात सूर: शुअरा आयत नं० (29) में यूँ बयान की गई है:-

لَئِنْ اتَّخَذْتُ الْإِنْسَانَ مَعْبُودًا لَّيَكْفُرُنَّ بِهِ

“अगर तूने मेरे सिवा किसी और को मअबूद बनाया तो मैं तुझे जेल में डाल दूँगा” और सूर: नाज़िआत आयात (23/ 24/ 25/ 26) में आया है:-

فَحَسْرَتِي لِي أَنِّي كُنْتُ مِنَ الْكَاذِبِينَ

“फिर उस ने (यानी फिरऔन ने) सब को जमा कर के पुकारा, तुम सब का रब मैं ही हूँ तो अल्लाह ने उसे आखिरत और दुनिया के अज़ाब में गिरफ़्तार कर लिया, बेशक इस में उस शख्स के लिए नसीहत है जो डरे।”

फ़िरऔन की तरह रूस के साइन्टिस्ट जब ख़ला (Space) में चाँद से होकर आए तो कहने लगे कि हमें तो कहीं मुसलमानों का खुदा नहीं मिला। यह कायनात कितनी बड़ी है? अस्त हकीक़त तो ख़ालिके कायनात ही जानता है। नीचे दी गई मालूमात से अन्दाज़ा होने में मदद मिलेगी।

कायनात में दूरियों की पैमाईश के लिए जो चीज़ें इस्तेमाल की जाती हैं उसे नूरी साल (Light Year) कहते हैं। यह वह फ़ासला है जो रौशनी एक साल में तय करती है। इस की मिक्दार (9.46X10<sup>12</sup>Km) है।

जिस नक्षत्र में हमारा निज़ाम शम्सी (Solar System) है। उसे (Milky Way Galaxy) कहते हैं। उस का क़तर एक लाख नूरी साल (100000 Light years) है। इस में लगभग एक सौ बिलियन सितारे दर्याफ़्त हो चुके हैं। Milky way से अगली नक्षत्र 8 लाख नूरी साल (800000 Light years) के फ़ासले पर वाक़ेअ है। अभी तक बीसों मिलियन नक्षत्र (Tens of Millions Galaxies) दर्याफ़्त हो चुके हैं। इस से मालूम होता है कि कायनात में मौजूद सितारों (Stars) की तअदाद का अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता तो उन की तअदाद बिलियन-बिलियन (Billion Billion=10<sup>24</sup>) से ज़्यादा ही है।

The Guinness Encyclopedia of Science

यह नादान एक नूरी साल के भी कई हज़ारवें हिस्से का फ़ासला नहीं तय कर पाए हैं तो अल्लाह तआला की ज़ात को कहाँ से ढूँढ़ लेंगे।

यह घमण्डी बात करने वाले फ़िरऔन को अल्लाह तआला ने समुद्र में डुबो कर उस की लाश को दुनिया के लिए नसीहत बना दिया है।

**39-42**

وَاسْتَكَبَرُوا جُودُودًا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝ فَأَخَذْنَاهُ وَجُودًا  
 فَتَنَبَّأْنَاهُمْ فِي الْيَوْمِ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى السَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ  
 لَا يُنْصَرُونَ ۝ وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ۝

अल्लाह तआला ने फिरऔन और फिरऔनियों के बारे में फ़रमाया बजाए इस के कि वह अल्लाह के बन्दे बनकर रहते, उन्होंने सरज़मीने मिस्र में अपने आप को लोगों के सामने घमण्डी और बड़ा बनाकर पेश किया, जिस के वह किसी तरह अहल (योग्य) नहीं थे, इसलिए कि हर किस्म की बड़ाई तो सिर्फ अल्लाह ही के लिए है और उन्होंने मौत के बाद क़ियामत का इन्कार कर दिया और समझ बैठे कि इस ज़िन्दगी के बाद अब कोई ज़िन्दगी नहीं है। इसीलिए अल्लाह तआला ने उन सब को अपनी गिरफ्त में ले लिया, फिर समुद्र में डिबो दिया। कहते हैं कि डूबने वालों की तअ़दाद कई लाख थी।

आयत नं० (40) के आख़िर में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के कहा गया कि इन्कार करने वालों का अन्जाम क्या होता है आप देख लीजिए।

आयत नं० (41) में फ़रमाया गया कि अल्लाह तआला ने उन्हें रहती दुनिया तक के लिए इन्कार व सरकशी करने वालों का लीडर बना दिया कि ऐसे लोग हर दौर में और हर जगह उन्हीं के नक्शे क़दम पर चलते रहेंगे और कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों का काम कर के जहन्नम के हक़दार बनेंगे और क़ियामत के दिन उन का कोई मददगार नहीं होगा, बल्कि ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ जहन्नम में डाल दिये जाएंगे।

आयत नं० (42) में कहा गया है कि हम ने इस दुनिया में उन पर लअ़नत भेज दी और अपनी रहमत से दूर कर दिया और आख़िरत में भी वह हमारी हर ख़ैर व रहमत से दूर कर दिये जाएंगे और आग के अज़ाब के ज़रिये उन के चेहरे बिगाड़ दिये जाएंगे।



## आयत नं० 43 से 53 तक

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَى بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا عَلَيْهِمْ آلِتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مِمَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَلَوْلَا أَنْ تُصِيبَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مَوْسَى الْكِتَابَ ۝ وَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَى مِنْ قَبْلِ قَالُوا لَوْلَا يَكُنْ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَى مِنْهُمْ ۝ فَاتَّبَعَهُ أَنْتُمْ صَدِيقِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُسْتَجِيبُ لَكَ أَهْوَاءَهُمْ ۝ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِنَ اللَّهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذْ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝

### अनुवाद-

(43) और अगली उम्मतों को हलाक कर देने के बाद 'हमने' मूसा को किताब दी, जिससे लोगों को कुछ सूझ-बूझ हो, और (सीधे) राह पकड़ें, और रहमत हो, ताकि वे ध्यान दें। (44) और (ऐ मुहम्मद) आप तो पश्चिमी किनारे पर नहीं थे, जिस समय 'हमने' मूसा को हुक्म भेजा था, और न आप गवाहों में से थे। (45) और कितनी ही उम्मतों को 'हमने' पैदा किया और उन पर बहुत समय बीत गया, और न तुम मद्यन वालों में रहते थे कि उनको 'हमारी' आयतें सुना रहे होते, किन्तु रसूलों (सन्देशवाहकों) को भेजने वाले 'हम' ही थे। (46) और तुम 'तूर' के पास उस समय न थे जबकि 'हमने' (मूसा को) पुकारा था, बल्कि तुम्हारे रब की यह रहमत है कि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे ध्यान दें। (47) और अगर यह बात न होती कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उसकी वजह से जब उन पर कोई मुसीबत आती तो कहने लगते, "ऐ हमारे रब! 'तूने' क्यों न हमारी ओर कोई रसूल भेजा कि हम 'तेरी' आयतों का पालन करते और ईमान वाले होते।?" (48) तो जब 'हमारी' ओर से हक़ (सत्य) उनके पास आ पहुँचा तो कहने लगे, "जो चीज़ मूसा को मिली थी उसी तरह की चीज़ हम को क्यों नहीं मिली?" क्या वे उसका इन्कार नहीं कर चुके हैं, जो इससे पहले मूसा को दिया गया था? कहने लगे, "दोनों (तौरेत और कुर्आन) जादू हैं जो एक-दूसरे की मदद करते हैं," और कहा, 'हम' तो हर एक का इन्कार करते हैं।" (49) कह दीजिए, "अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई ऐसी किताब, जो इन दोनों से बढ़ कर राह दिखाने वाली हो ताकि मैं उसके अनुसार चलूँ, अगर तुम सच्चे हो।" (50) फिर अगर ये तुम्हारी माँग पूरी न करें, तो जान लो कि ये केवल अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं, और उससे बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी हिदायत (मार्गदर्शन) के बिना अपनी इच्छा पर चले? बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (51) और 'हम' उनके लिए बराबर आयतें (रहनुमाई) भेजते रहे, कि शायद वे ध्यान दें। (52) जिन लोगों को 'हमने' इससे पहले किताब दी थी, वे



इस पर ईमान लाते हैं। (53) और जब (कुर्आन) उनको पढ़ कर सुनाया जाता है तो कहते हैं, “हम इस पर ईमान लाए, बेशक वह हक़ (सत्य) है हमारे रब की ओर से, हम तो इसके पहले से ही मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।”

## आयत नं० 43 से 53 तक की व्याख्या

**43** وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

कुछ लोगों के नज़्दीक "قرون اولی" से मुराद नूह, आद, समूद और पहले की दूसरी कौम हैं और एक दूसरा कौल यह है कि इस से मुराद फिरऔन और उस की काफ़िर कौम है। आयत का मतलब यह है कि जब अल्लाह तआला ने काफ़िर कौमों को हलाक कर दिया या फिरऔन और फिरऔनियों को हलाक कर दिया, तो उस ने हज़रत मूसा (अलै०) पर तौरेत नाज़िल की।

‘इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि नुजूल तौरेत के बाद किसी कौम को आ़ाम तौर से हलाक नहीं किया गया, बल्कि मोमिनो को मुशिरको से जिहाद करने का हुक्म दिया गया।

‘इब्ने जरीर’ ने हज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) का कौल नक्ल किया है कि नुजूल तौरेत के बाद अल्लाह ने किसी कौम को आसमानी या ज़मीनी अज़ाब से बिल्कुल हलाक नहीं किया सिवाय उस बस्ती वालों के जिन की सूरतों को मस्ख़ कर के बन्दर बना दिया गया था।

अल्लाह तआला ने इस ‘तौरेत’ की सिफ़त यह बयान की है कि, वह लोगों के लिए नूर बसीरत है, राहे हक़ की तरफ़ हिदायत देती है और नेक अमल की तरफ़ रहनुमाई करती है और यह इसलिए नाज़िल की गई थी ताकि उस ज़माने के लोग इस से नसीहत हासिल करते और उस की तअलीमात पर अमल पैरा होते।

**44-45** وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۖ وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوَا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ

इन आयतों में अल्लाह तआला ने यह हकीकत बयान की है कि मुहम्मद (सल्ल०) उस के रसूल और कुर्आने करीम उस की नाज़िल की हुई किताब है, इसलिए कि हज़रत मूसा (अलै०) अहले मद्यन और कौमे फिरऔन के जो वाकिआत ऊपर बयान किये हैं उन का यह इल्म या तो देखने से हासिल हो सकता था या किताबों के पढ़ने से और नबी करीम (सल्ल०) को यह दोनों ही बातें हासिल नहीं थीं, न सैकड़ों साल पहले होने वाले इन वाकिआत के वक़्त आप मौजूद थे और न ही आप पढ़ना जानते थे कि तारीख़ की किताबों से हासिल कर लेते। इसलिए साबित हुआ कि आप को यह बातें अल्लाह ने व़ह्य के ज़रिये बताई हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि कोहेतूर के इस पश्चिमी इलाके या पश्चिमी वादी में आप (सल्ल०) मौजूद नहीं थे जहाँ अल्लाह तआला हज़रत मूसा (अलै०) से हम कलाम हुआ था (बात की थी) और

उन्हें रसूल होने की ख़बर दी थी। इस के बावजूद इस वाकिये की सही ख़बर देना इस बात की दलील है कि यह आयतें आप (सल्ल०) पर अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई हैं।

हज़रत मूसा (अलै०) के बाद बहुत सी कौमें पैदा हुई, इस लम्बी मुदत में व्ह्य इलाही का सिलसिला बन्द रहा, लोग अल्लाह से किये गये वादों को भूल गए हिदायत के रास्ते मिट गए और गुमराही आ़म हो गई, तो इन्सान पर अल्लाह की रहमत का तकाज़ा हुआ कि आप (सल्ल०) को नबी बनाकर भेजा जाए ताकि उन्हें कुफ़्र व शिर्क के अंधेरो से निकाल कर ईमान व यकीन की राह दिखाएँ।

हज़रत मूसा (अलै०) का मद्यन जाना, वहाँ दस साल तक क़याम करना और हज़रत शूऐब (अलै०) की बेटी से उन की शादी, यह वाकिआत जब हुए तो उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) वहाँ मौजूद नहीं थे, फिर यह बातें उन्हें कैसे मालूम हुई। अल्लाह तआला ने कुर्आने करीम में इन वाकिआत से सम्बन्धित आयतें नाज़िल कीं, जिन के ज़रिये आप को इन का इल्म हुआ। अगर आप नबी न होते तो यह बातें मालूम न होती।

कोहेतूर के पास जब अल्लाह तआला हज़रत मूसा (अलै०) से हम कलाम हुआ (बात की) और उन्हें उन के नबी होने की ख़बर दी और हुक्म दिया कि वह अपने भाई हारून के साथ फिरऔन के पास तौहीद का पैग़ाम ले कर जाएँ उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) वहाँ मौजूद नहीं थे, अगर वह नबी न होते तो यह बातें उन्हें कैसे मालूम होती।

**46-48**

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَئِنْ رَحِمَهُ مِنْ رَبِّكَ لَشَرُّ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِّنْ  
قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَلَوْ لَا أَن تُصِيبَهُمْ مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ  
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلُ  
مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُمْ لَكَافِرُونَ ۝

इसीलिए इस आयत के आखिर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह बातें आप को इस तरह मालूम हुई कि हम ने इन्सान पर रहम करते हुए आप को अपना रसूल बनाकर भेजा और आप पर कुर्आन नाज़िल किया, जिस में यह खबरें हैं और इन के अलावा दूसरी बहुत सी खबरें हैं, ताकि यह आयतें पढ़कर आप अहले मक्का और तमाम अरबों को अल्लाह के अज़ाब से डराएँ।

कुफ़ारे मक्का के बारे में कहा गया है कि उन का कुफ़्र व शिर्क और उन की सरकशी इतनी आगे जा चुकी है कि उन पर अज़ाब आ जाना चाहिए था, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअसत से पहले उन पर अज़ाब इसलिए नाज़िल नहीं हुआ, कि वह यह न कह सकें कि ऐ अल्लाह! तूने अज़ाब नाज़िल करने से पहले अपना रसूल क्यों नहीं भेजा था, कि हम तेरे हुक्मों की पैरवी करते और तुझ पर ईमान ले आते और इस अज़ाब से बच जाते।

इस तरह अल्लाह तआला ने अपना रसूल भेजकर हुज्जत पूरी कर दी और काफ़िरों के लिए कोई उज़्र बाकी नहीं छोड़ा, लेकिन रसूल के आने के बाद उन की हालत नहीं बदली बल्कि हठधर्मी शुरू कर

दी और कहने लगे कि जिस तरह हज़रत मूसा को मोअज़िज़ात दिये गये थे, अगर मुहम्मद भी रसूल है तो उन्हें भी उन्हीं जैसे मोअज़िज़ात क्यों नहीं दिये गये? जिन को देखने के बाद हम उस पर ईमान ले आते।

अल्लाह तआला ने उन की इस हठधर्मी का यह जवाब दिया कि अगर उन की यह बात सही होती कि कुप्फ़ार मोअज़िज़ात देखने के बाद ईमान ले आते, तो फिर फिरऔनियों ने मोअज़िज़ात देखने के बावजूद क्यों कुफ़ की राह अख़्तियार की? वह भी तो उन्हीं कुप्फ़ारे कुरैश जैसे इन्सान थे और अल्लाह की उलूहियत के मुन्किर और इन्कार व सरकशी में हृद से बड़े हुए थे।

हज़रत मूसा व हारून के बारे में कहा था कि यह दोनों जादूगर हैं और लोगों को गुमराह करने में एक दूसरे के मदद्गार हैं और हम लोग इन दोनों की नुबूवत का इन्कार करते हैं। एक दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि अगर कुप्फ़ारे कुरैश अपनी बात में सच्चे हैं तो फिर मुहम्मद (सल्ल०) से पहले हज़रत मूसा पर क्यों नहीं ईमान लाए थे।

मुफ़सिरीन ने लिखा है कि कुप्फ़ारे कुरैश ने यहूद मदीना के पास आदमी भेज कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सच्चाई के बारे में दर्याफ़्त किया, तो उन्होंने जवाब दिया कि हाँ, उस के गुण तौरेत में मौजूद हैं और वह झूठा व दज्जाल नहीं है तो कुप्फ़ारे कुरैश ने तौरेत का भी इन्कार कर दिया और कहा कि हज़रत मूसा और मुहम्मद दोनों ही जादूगर हैं और जादू के ज़रिये मूसा ने अपने ज़माने के लोगों को गुमराह किया और अब मुहम्मद भी वही काम कर रहा है। इसलिए हम दोनों की नुबूवत का इन्कार करते हैं।

**49-50** قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعُهُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَهُوَ يَغْيِيهِذَىٰ مِنَ اللَّهِ إِنْ لَّمْ يُهْدِ الْفُؤَادَ الظَّالِمِينَ ۚ

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी काफ़िरों से फ़रमाया कि अगर तौरेत व कुर्आन जादू हैं, अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबें नहीं हैं, तो फिर तुम लोग अपने इल्म के मुताबिक़ अल्लाह की नाज़िल की हुई उन दोनों से अच्छी कोई किताब ले आओ, ताकि मैं उस पर अमल करूँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर वह ऐसा न करें और न उन दोनों किताबों पर अमल करें, तो समझ लीजिए कि वह अपनी इच्छाओं के बन्दे हैं और उस आदमी से बढ़कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की नाज़िल की हुई हिदायत को छोड़कर अपनी इच्छाओं की पैरवी करें।

**51** وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने तो उन के और यहूद व नसारा के हाल पर रहम करते हुए कुर्आन नाज़िल कर दिया। एक दूसरे के बाद आयतें, जन्नत का वादा, जहन्नम का खौफ़, नसीहत वाले किस्से और नसीहतें नाज़िल होती रहीं, ताकि वह उन में ग़ौर व फ़िक्र कर के आप पर और इस कुर्आन पर ईमान ले आएँ।

**52-53**

الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۖ وَإِذْ آتَيْنَاهُمْ عَلَيْهَا مِثْقَالَ الْحَقِّ  
مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝

यहाँ अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि यहूद व नसारा का एक गिरोह ऐसा है जो कुर्आने करीम पर ईमान रखता है कि यह अल्लाह की किताब है और जब उन के सामने इस की तिलावत की जाती है तो वह कहते हैं हम तस्दीक करते हैं कि यह अल्लाह की किताब है, हम इस के नाज़िल होने के पहले से मुवह्हिद (एकेश्वर वादी) थे और इख़्लास के साथ अल्लाह की अ़िबादत करते थे।

एक दूसरा मतलब यह बयान किया है कि हम तो नुज़ूले कुर्आन से पहले ही मुहम्मद (सल्ल०) और उन पर नाज़िल होने वाली किताब और दीन-ए-इस्लाम पर ईमान रखते थे, क्योंकि उन का ज़िक्र तौरत व इन्जील में मौजूद है और उन के बारे में बताया गया है कि वह आखिरी नबी होंगे और उन पर अल्लाह अपना कुर्आन नाज़िल करेगा।

हज़रत अबू मूसा अश्शरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तीन शख्स ऐसे हैं जिन्हें दोहरा अज़्र दिया जाएगा उन में से एक वह यहूदी या नसरानी है जो पहले अपने नबी पर ईमान रखता था, फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान लाकर मुसलमान हो गया।” (बुख़ारी)



## आयत नं० 54 से 67 तक

أُولَٰئِكَ يُؤْتُونَ أَجْرَهُمْ مَّرْتَبَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۖ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ ۖ لَا تَتَّبِعِ الْجَاهِلِينَ ۚ إِنَّا لَنَهْدِيكُمْ أَلْهَدَىٰ مَعَكُمْ تَخْطَفُ مِنَ الْأَرْضِ مَا لَهُمْ حَرَمًا إِنَّمَا يَجْعَلُ الْيَدِ تَصَرُّتُ كُلِّ شَيْءٍ رَّزَقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِكَ مِن قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَمَلَكَ مَسْكَنُهُمْ لَمْ يُمْسِكْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۖ وَكَأَنَّا نَحْنُ الْوَارِثُونَ ۖ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ أَلَيْتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۖ وَمَا أَوْتَيْنَاهُمْ مِّن شَيْءٍ فَنَتَّاعِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَنُؤَيِّتُهَا ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ أَفَمَن أَعْدَدَهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَا فِئَةٍ لَهُ ۚ أَمْ مَن مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۖ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَاهُمْ أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِلَّا فِتْنَةً لَّنَا ۖ إِنَّا نَعْبُدُونَكَ ۖ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۖ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ۖ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۖ فَعَبَّيْتُ عَلَيْهِمُ الْآثَابَ ۖ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۖ فَأَمَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَن يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۖ

### अनुवाद-

(54) यही वे लोग हैं जिनको दोहरा बदला दिया जाएगा, क्योंकि सब्र करते रहे हैं और भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी 'हमने' उन्हें दी है, उसमें से खर्च करते हैं। (55) और जब व्यर्थ (बकवास) बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं "हमारे लिए हमारे आमाँल (कर्म) हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाँल हैं, तुम को सलाम हो, हम जाहिलों के चाहने वाले नहीं।" (56) (ऐ मुहम्मद) आप जिसे चाहें राह (हिदायत) पर नहीं ला सकते, मगर अल्लाह जिसे चाहता है, राह दिखाता है और 'वही' राह पाने वालों को खूब जानता है। (57) और कहते हैं "अगर हम तेरे दीन की पैरवी (अनुसरण) करें तो हम अपनी जगह से उचक लिए जाएँ।" क्या ख़त्रों से सुरक्षित हरम (क़अबः) में हमने ठिकाना नहीं दिया, जहाँ 'हमारी' ओर से रोज़ी के रूप में हर चीज़ की पैदावार खिंची चली आती हैं? मगर उनमें से अक्सर नहीं समझते। (58) और 'हमने' कितनी ही बस्तियों को हलाक (बरबाद) कर दिया, जो अपनी रोज़ी (दौलत) पर इतरा चली थीं; तो ये उनके घर हैं, जो उनके बाद आबाद नहीं हुए सिवाय थोड़े से लोगों के, और (अन्त में) 'हम' ही वारिस हुए। (59) और आप का 'रब' तो उस समय तक बस्तियों को तबाह करने वाला नहीं, जब तक कि उनकी केन्द्रीय बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, जो उन्हें 'हमारी' आयतें सुनाए। और हम बस्तियों को तबाह करने वाले नहीं, सिवाय इस हालत में कि वहाँ के रहने वाले ज़ालिम हों। (60) और जो चीज़ें भी तुम को दी गई हैं, वह तो दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा और उसकी ज़ीनत (शोभा) है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाली है, तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते? (61) क्या वह व्यक्ति जिससे 'हमने' अच्छा वादा किया है और वह उसे पाने वाला भी हो, वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसे 'हमने' दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा दिया, फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों

में हो जो पकड़ कर पेश किये जाएंगे? (62) और जिस दिन 'वह' उन (काफ़िरों) को पुकारेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन पर तुम्हें गर्व था?" (63) जिन लोगों पर हक़ साबित हो चुका होगा, वे बोल उठेंगे कि "ऐ हमारे रब! यह वे लोग हैं जिनको 'हमने' बहकाया था, जिस तरह हम खुद बहके थे उसी तरह हमने इनको भी बहकाया, हमने 'तेरे' सामने स्पष्ट कर दिया कि इनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, ये हमारी इबादत (उपासना) नहीं करते थे?" (64) और कहा जाएगा, "बुलाओ, अपने साझीदारों को!" वे उनको पुकारेंगे, तो वे उनको जवाब भी न दे सकेंगे; और अज़ाब देख कर रहेंगे, काश, वे सीधी राह पर होते! (65) और जिस दिन (अल्लाह) उनको पुकार कर कहेगा, "तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया था;" (66) तो वे उस दिन ख़बरों से अन्धे हो जाएंगे और वे आपस में एक-दूसरे से पूछताछ भी न कर सकेंगे। (67) तो जो तौब: कर ले और ईमान ले आए, और नेक अमल करे; तो उम्मीद है कि वह कामियाब होने वालों में से होगा।

### आयत नं० 54 से 67 तक की व्याख्या

**54-55**

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۖ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ ۖ لَا تَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ۖ

यह ग़िरोह अर्थात् यहूद व नसारा से मुराद वह अहले किताब हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़माना पाया और उन पर और कुर्आन करीम पर ईमान लाए। जैसे 'अब्दुल्लाह बिन सलाम' और 'सलमान फ़ारसी' रज़ियल्लाहु अन्हुमा वग़ैरह। उन के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्हें दो गुना अज़्र मिलेगा, एक अज़्र इस्लाम से पहले तौरत व इन्जील पर ईमान लाने और उन पर अमल करने का और दूसरा अज़्र कुर्आन और नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाने और इस्लाम पर अमल पैरा होने का।

'बुख़ारी व मुस्लिम' ने 'हज़रत अबू मूसा अश्शरी' (रज़ि०) से रिवायत की है, नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तीन किस्म के लोगों को दो गुना अज़्र मिलेगा, उन में से एक अहले किताब का वह शख्स होगा जो अपनी पहली किताब पर और फिर कुर्आन पर ईमान लाया।

उन मोमिनीन अहले किताब की सिफ़ात यह भी हैं कि वह बुराई का जवाब भलाई से देते हैं या गुनाह के बाद तौब: व इस्तिफ़ार और नेक अमल करते हैं और अल्लाह ने उन्हें जो रोज़ी दी है उस का एक हिस्सा भलाई की राह में खर्च करते हैं, मोहताजों की मदद करते हैं और जब किसी जाहिल व नादान की ज़बान से कोई बेहूदा और बकवास बात सुनते हैं तो उस से न उलझते हैं और न उस की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं, बल्कि ख़ामोशी के साथ वहाँ से अपने दिल में यह कहते हुए गुज़र जाते हैं कि हमें हमारे अमल का और उन्हें उन के अमल का बदला मिलेगा, हम न उन्हें छेड़ेंगे और न उन की बात का जवाब देंगे इसलिए कि हम नादानों के साथ उलझना नहीं चाहते हैं।

'हज़रत सईद बिन जुबैर' और 'जुहरी' आदि से मरवी है कि यह आयतें 'हब्शा' के उन नसारा



के बारे में नाज़िल हुई थी जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास मक्का में आकर इस्लाम कुबूल कर लिया था और काफ़िरो की बुरी बातों का जवाब नहीं दिया था।

**56**

إِنَّكَ لَهْتَدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَئِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

‘बुख़ारी व मुस्लिम’ ने ‘हज़रत मुसय्यिब बिन हुज़्ज मख़ज़ूमी’ और हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि यह आयत रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चचा अबू तालिब के बारे में नाज़िल हुई थी। जब वह आप (सल्ल०) के बेहद इस्सरा के बावजूद इस्लाम नहीं लाए और कुफ़ की हालत में मर गए तो उस वक़्त आप ने फ़रमाया कि जब तक मुझे मना नहीं किया जाएगा मैं उन के लिए मफ़िरत की दुआ करता रहूँगा, तो सूरतुल् तौब: की आयत नं० (113) नाज़िल हुई, जिस में आप को मुशिरकीन के लिए मफ़िरत की दुआ करने से रोक दिया गया।

सूर: अल् क़सस की यह आयत नाज़िल हुई कि आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि०) के वालिद मुसय्यिब बिन हर्ब कहते हैं कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त आया तो आप (सल्ल०) उनके घर तशरीफ़ ले गए वहाँ देखा कि अबू जेहल और ‘अब्दुल्लाह बिन अबू उमय्या’ पहले ही से वहाँ बैठे हैं। आप (सल्ल०) ने अबू तालिब से फ़रमाया, “चचा जान अगर आप ‘लाइलाहा इल्लल्लाह’ कह लें तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के यहाँ दलील पेश कर सकूँगा।”

अबू जेहल और अब्दुल्लाह बिन अबू रबीअ कहने लगा अबू तालिब, क्या तुम अब्दुल् मुत्तलिब का दीन छोड़ दोगे? आख़िर अबू तालिब ने आख़िरी बात जो की वह यह थी कि मैं अब्दुल् मुत्तलिब के दीन पर मरता हूँ।

और ‘लाइलाहा इल्लल्लाह’ कहना कुबूल न किया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम मैं उस वक़्त तक आप के लिए दुआ करता रहूँगा जब तक इस से मना न किया जाऊँ तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की।

(सूर: तौब: आयत नं० 113) مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ

“नबी और ईमान लाने वालों के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह मुशिरकीन के लिए बख़्शिश माँगे”।

और अबू तालिब के बारे में यह आयत उतारी إِنَّكَ لَهْتَدِي مَنْ أَحْبَبْتَ (ऐ मुहम्मद!) आप जिसे चाहें उसे हिदायत नहीं दे सकते।” (सूर: क़सस आयत नं० 56)

हरम की बरकत की वजह से ही कुरैश को इज़ज़त और एहतिराम हासिल था और उनकी तिजारत ख़ूब चमकती थी। अब क्या अल्लाह तआला ईमान लाने के बाद इन नेअमतों में इज़ाफ़ा करेगा या छीन लेगा?

**57**

وَقَالُوا إِنَّا تَتَّبِعُ الْهُدَىٰ مَعَكَ نَتَّخِظُ مِنْ آذِينَا ۖ أَوْ لَمْ نَكُنْ لَهُمْ حَرَمًا إِنَّمَا يَجْعَلُ آلِيهِ شُرَكَاتٌ

كُلِّ شَيْءٍ وَزَرْقًا ۚ مِّنْ لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

मुशिरकीने कुरैश नबी करीम (सल्ल०) के सामने अपने इस्लाम न लाने का उज़्र पेश करते थे कि अगर हम तुम्हारी बात मान लें और तुम पर ईमान ले आएँ तो पूरी दुनिया-ए-अरब हमारे खिलाफ़ हो जाएगी और सब मिलकर हम पर हमला करके हमें हलाक कर देंगे।

इस का जवाब अल्लाह तआला ने यह दिया कि उन के जिस ख़ालिफ़ व मालिक ने उन की सरज़मीन को अमन का गहवारा बना रखा है और उन की रोज़ी के लिए तरह-तरह के फल पहुँचते रहते हैं, क्या वह इस पर कादिर नहीं है कि उन के इस्लाम लाने के बाद भी उन की हिफ़ाज़त करे? लेकिन बात यह है कि वह अपनी जिहालत व नादानी की वजह से ग़ौर व फ़िक्र की योग्यता खो चुके हैं।

**58** وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِشَتَهَا فَنِكَاسُكَ مُسْكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝

मुशिरकीने कुरैश को धमकी दी जा रही है कि उन से पहले उन्हीं की तरह बहुत सी कौमों को अल्लाह ने नेअमतों से नवाज़ा था, लेकिन उन्होंने जब अल्लाह की नाशुक्री की तो उन्हें हलाक कर दिया गया और उन के मकानात अब तक खाली पड़े हैं, उन के बाद कोई उन में रहने वाला नहीं हुआ।

अगर अहले कुरैश का भी यही हाल रहा और अल्लाह की दी हुई नेअमतों की नाशुक्री करते रहे, तो क्या तअज्जुब कि उन का अन्जाम भी वैसा ही हो और वह भी मिटा दिये जाएँ।

**59-61** وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقَرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمَمٍ رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقَرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝ وَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَا فِئَةٍ بِهٖ ۖ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

अल्लाह तआला किसी कौम को उस के पास अपना पैग़म्बर भेजने से पहले कभी हलाक नहीं करता, जो उन्हें हक़ व बातिल और ख़ैर व शर के दर्मियान फ़र्क़ न बता दे और अल्लाह के अज़ाब से न डरा दे, उस के बाद भी अगर लोग राहे रास्त पर नहीं आते तो अज़ाब के हक़दार बन जाते हैं और कुरैश के लोग जो कहते हैं कि अगर हम ईमान ले आएँ तो क़बायल अरब हमें उचक लेंगे। हकीकत में यह दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर तर्ज़ीह देने वाली बात है, हालाँकि दुनियावी माल व मताअ बिल्कुल वक़्ती चीज़ है और ईमान वालों को आख़िरत में जो नेअमत मिलने वाली है, वह तमाम दुनियावी नेअमतों से बेहतर और हमेशा रहने वाली है।

अल्लाह ने अपने नेक बन्दों से जिस नेअमत का वादा कर रखा है वह उन्हें मरने के बाद मिलेगी, उस का मुकाबिला दुनिया की वक़्ती नेअमतों के साथ नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह नेअमतें तो मौत के साथ ही ख़त्म हो जाएँगी और फिर ईमान व इस्लाम पर उन्हें तर्ज़ीह देने वालों का ठिकाना जहन्नम होगा।

**62-63** وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۖ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ۝

क़ियामत के दिन अल्लाह तआला मुशिरकों को डाँट और फट्कार के साथ पुकारेगा, कि कहाँ हैं तुम्हारे वह झूठे उपास्य जिन्हें तुम मेरा साझीदार बनाते थे? तो उन के बजाए वह सरदाराने कुफ़ व ज़लालत जो दुनिया में अल्लाह के साथ मअबूद (उपास्य) बनाये गए थे, कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम ने इन्हें गुमराह करना चाहा तो इन्होंने तुरन्त हमारी दअवत कुबूल कर ली और गुमराही की राह पर चल पड़े, यह भी गुमराह हुए और हम भी गुमराह हुए। हम इन से अपने बरी होने का एलान करते हैं, इसलिए कि यह हमारी नहीं बल्कि अपनी ख़्वाहिशात की अ़िबादत करते थे।

64

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝

मुशिरकीन से अल्लाह तआला दोबारा कहेगा कि बुलाओ अपने झूठे उपास्यों को ताकि वह ज़िल्लत व रुस्वाई वाले अज़ाब से तुम्हें बचा लें, तो वह अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ उन्हें पुकारेंगे, लेकिन वह उन की पुकार का जवाब नहीं देंगे इसलिए कि इन्सान व जिन्नात में से कोई शख्स उस दिन ऐसी बात की हिम्मत न कर सकेगा और जब जहन्नम को अपनी आँखों से देख लेंगे और उन्हें यकीन हो जाएगा कि यही उन का ठिकाना है, तो उस वक़्त उन का ग़म व अफ़सोस आख़िरी दर्जे को पहुँच जाएगा और कहेंगे, ऐ काश! हम ने दुनिया में अल्लाह की भेजी हुई हिदायत कुबूल कर ली होती।

65-66

وَيَوْمَ يُنَادِرُهُمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۝

अल्लाह तआला उन मुशिरकीन से यह भी पूछेगा कि जब हमारे रसूलों ने तुम्हें सही रास्ते की तरफ़ बुलाया और नेक आ़माल और अच्छे अख़लाक़ की दअवत दी, तो तुम ने क्या तरीक़ा अपनाया? उन पर ईमान लाए या उन को झुठला दिया? तो उन सब की ज़बानें बंद हो जाएँगी और मारे ख़ौफ़ व दहशत के आपस में भी कोई बात नहीं करेंगे, इसलिए कि उन्हें यकीन हो जाएगा कि अब उन का ठिकाना जहन्नम के सिवा कोई दूसरी जगह नहीं है।

67

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَقَعَلَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝

जो मुशिरकीन इस दुनिया में शिर्क से तौब: कर लेंगे, अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आएँगे, नेक अ़मल करेंगे, फ़रायज़ व वाजिबात को अदा करेंगे, गुनाहों से बचेंगे, तो उन्हें अल्लाह तआला जहन्नम से बचा लेगा और अपने फ़ज़ल से जन्नत में दाख़िल कर देगा।



## आयत नं० 68 से 88 तक

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَى وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاؤِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُزْعِمُونَ ۚ وَنُوعِنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۖ فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مِصْرَ ۖ فَتَبِعُوا عَلَيْهِمْ ۖ وَأَتَيْنَهُ مِنَ الْكَوْنِزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَشْوُوا بِالْعُصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ ۖ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۖ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ قُوَّةً وَ أَكْثَرُ جَمْعًا ۖ وَلَا يَسْأَلُ عَنْ دُونِهِمْ الْمُجْرِمُونَ ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلْبَسَنَّ كُنَّا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونَ ۖ إِنَّهُ لَنَدُوْحَظُّ عَظِيمٌ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الضَّالُّونَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبَدَارِهِ الْأَرْضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُوْنَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُتَنَصِّرِينَ ۝ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَبَتَّوْا مَكَانَهُ بِأَرْبَابٍ يَتَّبِعُونَ وَيَقُولُونَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيَكَاذِبُ الْكَافِرُونَ ۝ تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ ۖ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۖ قُلْ رَّبِّ أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ أَنْزِلَ إِلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِلْكَافِرِينَ ۝ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أَنْزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

### अनुवाद-

(67) तो जो तौब: कर ले और ईमान ले आए, और नेक अमल करे; तो उम्मीद है कि वह कामियाब होने वालों में से होगा। (68) और आपका रब पैदा करता है जो कुछ चाहता है और चुन लेता है जिसे चाहता है, उनको कोई अधिकार नहीं अल्लाह पाक और ऊँचा है उस शिर्क से, जो वे करते हैं। (69) और आपका 'रब' जानता है जो कुछ यह अपने सीने में छिपाए हुए हैं और जो ये ज़ाहिर करते हैं। (70) और 'वही'

अल्लाह है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, 'उसी' के लिए तअरीफें हैं दुनिया, और आखिरत में और हुक्म भी 'उसी' का, और 'उसी' की ओर तुम लौट कर जाओगे। (71) कह दीजिए, "क्या तुमने विचार किया! कि अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक हमेशा के लिए तुम पर रात कर दे, तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन मअबूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी लाए? तो क्या तुम सुनते नहीं?" (72) कह दीजिए, "क्या तुमने विचार किया! अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक हमेशा के लिए तुम पर दिन कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन मअबूद है जो तुम्हारे लिए रात लाए, जिसमें तुम आराम पाते हो? तो क्या तुम देखते नहीं?" (73) और 'उसी' ने 'अपनी' रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम उसमें आराम पाओ और उसका फज़ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो।" (74) और उस दिन जब वह आपको पुकारेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिन पर तुम्हें गर्व था?" (75) और 'हम' हर उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह निकाल लाएँगे और (लोगों से) कहेंगे, "लाओ अपना प्रमाण," उस समय मालूम हो जाएगा कि हक़ (सत्य) अल्लाह ही की ओर से है और जो कुछ वे गढ़ते थे, वह सब उनसे गुम हो कर रह जाएगा। (76) क़ारून मूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके ख़िलाफ़ सर उठाया और हमने उसे इतने खज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ एक शक्तिशाली गिरोह मुश्किल से उठा सकता था, जब उससे उसकी क़ौम के लोगों ने कहा, "इतराओ नहीं, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता; (77) और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसके ज़रिये आखिरत का घर बना, और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है; और धरती में फ़साद पर न तुल, क्योंकि अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता।" (78) (उसने) कहा, "यह तो मुझे अपनी क़ाबलियत (व्यक्तिगत ज्ञान) की वजह से मिला है।" क्या वह यह नहीं जानता कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही ज़ातियों को हलाक कर चुका है जो शक्ति में उससे बढ़-चढ़ कर और ज़त्थे में उससे अधिक थीं? और अपराधियों से तो उनके गुनाहों के विषय में पूछा भी नहीं जाएगा। (79) फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने ठाठ-बाट से निकला, तो जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के चाहने वाले थे, कहने लगे, "जो कुछ क़ारून को मिला है, काश! हमको भी मिलता, वह तो बड़ा भाग्यशाली है।" (80) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे, "तुम पर अफ़सोस हो! अल्लाह का सवाब (इनाम) बहुत बेहतर है, उसके लिए जो ईमान लाए और भले काम करे, और वह केवल सब्र करने वालों ही को मिलेगा।" (81) तो 'हमने' उस (क़ारून) को और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया, और कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता, और न वह खुद भी अपना बचाओ कर सका; (82) और वही लोग, जो कल तक उस (क़ारून) जैसे होने की तमन्ना करते थे, सुबह उठ कर कहने लगे, हाय अफ़सोस! "अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिस को चाहता है) तंग कर देता है, अगर अल्लाह की मेहरबानी न होती तो हमें भी धंसा देता, अफ़सोस (हम भूल ही गये थे!) कि इन्कार करने वाले कामियाब नहीं होते।" (83) आखिरत का घर 'हम' उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो न तो ज़मीन पर अपनी बड़ाई चाहते हैं और न फ़साद। और परहेज़गारों का आखिरी अंजाम भला है। (84) जो व्यक्ति नेक काम करके आएगा उसे उससे बढ़ कर (बदला) मिलेगा, और जो बुरे काम कर के आएगा तो बुराईयाँ करने वालों को तो बस वही मिलेगा जो बुराईयाँ करते थे। (85) 'जिसने' आप पर कुर्आन फर्ज़ किया है (अर्थात् ज़िम्मेदारी डाली है), 'वह' आप



को एक बेहतरीन अंजाम तक पहुँचाएगा, कह दीजिए, “मेरा रब उस व्यक्ति को खूब जानता है कि कौन हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और कौन खुली गुमराही में है?” (86) और आप को क्या उम्मीद थी कि आप पर किताब उतारी जाएगी, सिवाय इसके कि आप के रब की मेहरबानी से दी गयी, तो आप काफ़िरो के मदद्गार (समर्थक) न बनिए। (87) और वे आप को अल्लाह की आयतों से रोकने न पाएँ, इसके बाद कि वह आप पर उतारी जा चुकी है। और अपने रब की ओर बुलाइए और हरगिज़ मुशिरकों (बहुदेववादियों) में शामिल न होइए; (88) और अल्लाह के साथ किसी और मअबूद (उपास्य) को न पुकारना ‘उसके’ सिवा कोई मअबूद नहीं, हर चीज़ फ़ना (विनष्ट) हो जाने वाली है, सिवाय ‘उसकी’ ज़ात (स्वरूप) के, उसी की हुक्मत है और ‘उसी’ की ओर तुम सब लौट कर जाओगे।

## आयत नं० 68 से 88 तक की व्याख्या

68

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ٥

इस आयते करीमा में बन्दों से कहा गया है कि न वह किसी चीज़ को पैदा कर सकते हैं और न उन्हें यह अख़्तियार है कि अल्लाह का नबी बनने के लिए वह जिसे चाहें अख़्तियार करें और जिस का चाहें इन्कार कर दें, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है अपना नबी बनाता है और न बन्दों को यह अख़्तियार हासिल है कि वह जिस चीज़ की चाहें और जैसे चाहें अ़िबादत करें। यह हक़ अल्लाह का है कि वह सिर्फ़ अपनी बन्दगी का हुक्म देता है, शिर्क से मना करता है और अपनी बन्दगी का शरअी तरीका बताता है। बन्दों का काम सिर्फ़ बन्दगी है, इसीलिए आयत के आख़िर में कहा गया है कि अल्लाह की ज़ात मुशिरकों के शिर्क से पाक और बुलन्द व बाला है।

मुफ़स्सिरिन ने लिखा है कि यह आयत ‘वलीद बिन मुगीरा’ की रद्द में नाज़िल हुई थी। जब उस ने कहा था कि दोनों बस्ती वालों में से किसी बड़े आदमी को क्यों न अल्लाह ने अपना नबी बनाया? मुशिरकों की तर्दीद में यह आयत नाज़िल हुई थी, जिन्होंने अपनी मर्जी से अल्लाह के लिए साझीदार बना लिए और गुमान कर बैठे कि यह बातिल उपास्य क़ियामत के दिन सिफ़ारिशी बनेंगे।

69

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ٥

लोगों के दिलों में जो कुछ छिपा होता है और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं उन सब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को होता है, इसलिए सिर्फ़ वही मअबूद (उपास्य) हकीकी है और किसी को नबी बनाने का हक़ भी सिर्फ़ उसी को हासिल है।

इन्सान को तो कुछ भी मालूम नहीं यहाँ तक कि उस के साथ रहने वाला दूसरा आदमी अपने सीने में क्या छिपाए हुए है उसे मालूम नहीं, फिर उसे यह हक़ कैसे हासिल हो सकता है कि वह जिसे चाहे अपना मअबूद (उपास्य) बना ले और अल्लाह तअ़ाला को मश्वरा दे कि उस ने फ़लाँ को अपना नबी क्यों नहीं बनाया है।



**70-73** وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا ۖ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا ۖ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ ۖ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

हकीकत यह है कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद हकीकी (उपास्य) नहीं है, हर किस्म की हम्द व सना का दुनिया व आखिरत में वही तन्हा हक्दार है, इसलिए कि दोनों जहान की नेअमतों का मालिक वही है, उस के सिवा कोई एक ज़र्रे का भी मालिक नहीं है। हर चीज़ में उस की मर्जी और उसी का फैसला होता है और सब को मरने के बाद उसी के पास लौट कर जाना है।

इस बात की स्पष्ट दलील यह है कि अगर अल्लाह तआला क़ियामत तक रात ही कर दे और दिन को गायब कर दे, तो क्या कोई और मअबूद (उपास्य) है जो इन्सानों के लिए दिन की रौशनी को वापस ला सके या अगर वह क़ियामत तक के लिए दिन कर दे और रात को गायब कर दे तो क्या कोई और उपास्य है जो रात को वापस ला सके, जिस में लोग सुकून हासिल कर सकें।

इस का जवाब यही है कि कोई नहीं जो इस की कुदरत रखता हो, तो फिर इन्सान इस में ग़ौर व फ़िक्र कर के सिर्फ अपने पैदा करने वाले और एक अल्लाह की अ़िबादत पर क्यों नहीं जम जाता? क्यों उस के साथ ग़ैरों को शरीक ठहराता है? यकीनन वह अल्लाह है जिस ने अपनी रहमत से रात और दिन बनाए ताकि आदमी रात में आराम करे और दिन में अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोज़ी हासिलकरे।

**74-75** وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُزْعِمُونَ ۖ وَنُرْعَمَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۖ وَنُرْعَمَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۖ فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मुशिरकों को पुकारेगा और कहेगा कि कहाँ हैं तुम्हारे वह उपास्य जिन्हें तुम मेरा शरीक बनाते थे और बार-बार उन्हें इस तरह पुकारने का मक्सद इस बुरे अमल पर उन्हें डाँटना फट्कारना होगा।

हर उम्मत के नबी को अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उन के सामने लाएगा, जो गवाही देंगे कि इन्होंने ने अल्लाह का पैगाम हम तक पहुँचा दिया था, तब अल्लाह तआला मुशिरकों से कहेगा कि तुम जो मेरे सिवा ग़ैरों की पूजा करते थे और उन्हें पुकारते थे, तुम्हारे पास इस की क्या दलील थी? तो वह लाजवाब हो जाएँगे और उन्हें मालूम हो जाएगा कि बन्दगी तो केवल अल्लाह का हक़ है और यह यकीन रखना कि अल्लाह के कुछ साझीदार हैं जो उसी की तरह बन्दगी के हक्दार हैं, यह झूठ और अल्लाह के खिलाफ़ आरोप है।

**76-77** إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُتُوبِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ ۖ

يَا عَصْبَةَ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۖ وَابْتَغْ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ  
الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝

मुफ़सिरीन लिखते हैं कि कारून हज़रत मूसा (अलै०) का चचाज़ाद भाई था। दूसरी राय यह है कि वह उन का चचा था और तीसरी राय यह है कि उन का ख़ालाज़ाद भाई था, बहरहाल वह था 'बनी इस्राईल' का एक शख्स, लेकिन कुफ़ व सरकशी की वजह से फिरऔन से जा मिला था और अल्लाह तआला ने कुफ़ के खास तौर से जिन तीन सरगनों की तरफ़ हज़रत मूसा (अलै०) को नबी बनाकर भेजा था उन में से एक था।

दूसरा हामान था, जो फिरऔन का क़िस्ती वज़ीर (सिक्रेट्री) था और तीसरा काफ़िरों का सरदार फिरऔन था।

इस कारून को अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा मालदार बनाया था और यही उस के कुफ़ व सरकशी की वजह थी और घमण्ड की इन्तेहा को पहुँच चुका था और कहता था कि मैंने यह दौलत अपनी ताक़त से हासिल किया है। कहते हैं कि यह घमण्ड की वजह से तमाम लोगों के मुक़ाबिले में अपना कपड़ा एक बालिशत लम्बा रखता था।

कुफ़ व सरकशी के लिए इस का ज़िक्र यहाँ अहले कुरैश की तम्बीह के लिए किया गया है जिन्होंने मक्का में अपनी सरदारी, माल व दौलत और दुनियावी माल व मताअ के ज़ाया होने के ख़ौफ़ से नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया था और कहते थे कि अगर हम ने मुहम्मद की पैरवी की तो दुनिया-ए-अरब हमें उचक ले जाएगी और हमारा वजूद ख़त्म हो जाएगा, हमारी तिजारात ख़तरे में पड़ जाएगी यानी कुफ़ व घमण्ड में उन की हालत 'कारून' जैसी थी, इसलिए इस का वाकिआ और अन्जाम बयान करके उन्हें तम्बीह की गई है कि वह अपनी दौलत के नशे में मुहम्मद (सल्ल०) की दअवत को न ठुकराएँ जिस तरह कारून ने हज़रत मूसा (अलै०) की दअवत को ठुकरा दिया था, वरना उन का अन्जाम उसी जैसा होगा।

उस 'कारून' को उस की कौम यानी बनी इस्राईल के मुसलमानों ने नसीहत की कि दुनिया की चमक दमक पर इतना ज़्यादा न इतराओ कि अल्लाह की याद से गाफ़िल हो जाओ। अल्लाह तआला ऐसी खुशी को पसन्द नहीं करता जिस की वजह से इन्सान आख़िरत से गाफ़िल हो जाए और दुनिया को ही सब कुछ समझ बैठे, क्योंकि हर बुराई और हर फ़साद की जड़ यही है और अल्लाह ने तुम्हें जो दौलत दी है, उसे ख़ैर के कामों में खर्च कर के आख़िरत की कामियाबी तलब करो और इस दौलत से (बिना फुजूलखर्ची और बिना घमण्ड) अपनी ज़ात को फ़ायदा पहुँचाना न भूलें और जिस तरह अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, तुम भी अल्लाह के बन्दों के साथ भलाई करना न भूलो और इस माल के ज़रिये ज़मीन में फ़साद न फैलाओ, इसलिए कि अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता है।

78

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۖ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَن هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۖ وَلَا يَسْأَلُ عَنْ دُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

इस नसीहत से उस सरकश व नाफरमान काखून को कोई फायदा नहीं हुआ और कहने लगा कि अल्लाह ने मुझे यह माल उस इल्म की बदौलत दिया है जो मेरे पास है और मुझे इस का हक्दार समझ कर दिया है या मतलब यह है कि तिजारत में महारत की वजह से मैंने यह माल हासिल किया है, मुझ पर किसी का एहसान नहीं है कि मैं लोगों पर इसे खर्च करता रहूँ।

अल्लाह तआला ने उस की इस जालिमाना बात का यह जवाब दिया है कि अगर ताकत और माल अल्लाह के नज़्दीक फज़ीलत का सबब होता तो पिछले ज़मानों में बहुत सी कौमों को अल्लाह हलाक न करता, जो काखून से ज़्यादा ताकतवर और उस से ज़्यादा मालदार थीं। गुनाह की कसूरत और कसूरते जरायम की वजह से जब किसी कौम को हलाक किये जाने का फैसला हो जाता है तो उन्हें मोहलत दी जाती है और उन से पूछा नहीं जाता कि उन्होंने वह गुनाह क्यों किये थे और उन के पास क्या उज़्र है।

79-80

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلَيَنَّ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۖ إِنَّهُ لَذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَيْسَ لَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَن آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٧٩﴾

एक दिन 'काखून' अपनी शान व शौकत और झूठी नुमाईश के लिए खूबसूरत लिबास पहन कर रोड शो पर निकला। जब लोगों ने उस का यह हाल देखा तो उन की आँखें चकाचौंध हो गई और दुनियावी ज़िन्दगी के चाहने वाले उस का यह ठाठ-बाट देखकर कहने लगे कि काश! हमारे पास भी काखून जैसी दौलत होती और हम भी उस की तरह ऐश व इशरत की ज़िन्दगी बसर करते, यह तो बड़ी किस्मत का मालिक है।

बनी इस्राईल के उलमा-ए-सालिहीन ने उन की इस बात को सुनकर कहा कि तुम्हारी निगाहों से आखिरत ओझल हो गई है और दुनिया ही को सब कुछ समझ बैठे हो, हालांकि अल्लाह की जन्नत के मुकाबिले में दुनिया की इन वक्ती नेअमत्तों की कोई हैसियत नहीं है और यह जन्नत उसे मिलेगी जो ईमान लाएगा और अच्छे अमाल करेगा और इस नसीहत से वही लोग फायदा उठाएँगे जो सब्र के साथ अल्लाह के दीन पर कायम रहेंगे।

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “दो किस्म के लोगों के अलावा किसी पर हसद करना जायज़ नहीं, जिसे अल्लाह तआला ने कुर्आन का इल्म दिया और सुबह शाम उसे पढ़ता है। दूसरे जिस को अल्लाह तआला ने माल दिया और वह उसे सुबह व शाम (अल्लाह की राह में) खर्च करता। (बुखारी व मुस्लिम)

81-82

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِن فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَتَّوْا مَكَائِدَ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيَكَآفُ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّمْقَ

لَمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادٍ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بَنَاءُ وَيَكُنَّ لَهُ الْكَافِرُونَ

अल्लाह तआला ने 'कारून' को उस के घमण्ड की वजह से उस के घर-बार के साथ ज़मीन में धँसा दिया। उस वक़्त अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई गिरोह उस की मदद के लिए नहीं आया और न वह खुद अपनी मदद आप कर सका।

'इमाम बुख़ारी' ने सालिम से और उन्होंने अपने बाप से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक आदमी (घमण्ड की वजह से) अपनी चादर ज़मीन पर घसीट रहा था, तो अल्लाह ने उसे ज़मीन में धँसा दिया, वह क़ियामत तक ज़मीन में धँसता चला जाएगा"।

जिन लोगों ने कारून को देखकर उस जैसी दौलत की तमन्ना की थी, जब उन्होंने उसे उस के घर-बार के साथ ज़मीन में धँसते देखा तो अपनी तमन्ना पर नादिम हुए और कहने लगे कि अब हमें मालूम हो गया कि अल्लाह तआला अपनी हिक्मत के मुताबिक़ लोगों में रोज़ी तक्सीम करता है, किसी को ख़ूब रोज़ी देता है और किसी पर उस के दरवाज़े तंग कर देता है।

रोज़ी में वुस्अत और तंगी नेकबख़्ती या बद्बख़्ती की दलील नहीं है वरना आज 'कारून' अपने माल व अस्बाब के साथ ज़मीन में धँसा दिया जाता। अगर अल्लाह का हम पर एहसान न होता और हम भी 'कारून' की तरह घमण्ड में मुब्तिला होते, तो हमें भी उसी की तरह ज़मीन में धँसा दिया जाता।

हमें यह भी मालूम हो गया कि जो लोग अल्लाह की दी हुई नेअमतों की नाशुक्री करते हैं, घमण्ड में मुब्तिला हो जाते हैं और अल्लाह के दीन और उस के रसूल का इन्कार करते हैं, दुनिया व आख़िरत में नाकामी उन की किस्मत बन जाती है।

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि, "एक शख्स घमण्ड से अपना इज़ारबन्द ज़मीन पर घसीटते हुए चल रहा था कि वह ज़मीन में धँस गया, वह क़ियामत तक ऐसे ही धँसता चला जाएगा"।  
(बुख़ारी)

**83** تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝

कारून और उन्हीं जैसे काफ़िरों और अल्लाह की इबादत का इन्कार करने वालों की बद्बख़्ती बयान करने के बाद कुर्आन करीम अब उन लोगों का अन्जाम बयान कर रहा है जो ज़मीन में घमण्ड की ज़िन्दगी अख़्तियार नहीं करते और न कुफ़्र व शिर्क के ज़रिये फ़साद फैलाते हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जन्नत और उस की हमेशा की नेअमतें उन्हीं लोगों को मिलेंगी।

**84** مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِمَّنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

अल्लाह तआला का करम और उस की रहमतों का फैज़ान देखिए कि अगर कोई बन्दा एक नेकी करेगा तो क़ियामत के दिन उस के बदले उसे दस नेकियाँ मिलेंगी और कभी सात सौ तक बढ़ा दी जाएँगी

और अगर कोई गुनाह करेगा तो उस के नाम-ए-आमाल में एक की जगह एक ही गुनाह लिखा जाएगा। हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “इब्ने आदम की नेकियाँ दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ा दी जाती हैं यहाँ तक कि जितनी अल्लाह चाहे”। (मुस्लिम)

**85**

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى مَعَادٍ ۚ قُلْ رَبِّ اعْلَمْ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ  
وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

इस आयते करीमा में शब्द ‘मआद’ مَعَاد की तफ़सीर में उलूमा के कई अक्वाल (कथन) हैं। अक्सर मुफ़स्सिरीन की राय है कि इस से मुराद ‘मक्का मुकर्रमा’ है।

**मआद-** लौटने की जगह, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं ‘लराद्दका इला मआद’ का मतलब यह है कि अल्लाह फिर आप को मक्का ले जाएगा”। (बुख़ारी)

‘इमाम बुख़ारी’ ने ‘हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा’ से भी यही रिवायत की है। इस की ताईद ‘इब्ने मरदूविया’ की उस रिवायत से होती है जो उन्होंने ‘अली बिन हुसैन बिन वाकिद’ से की है कि यह आयत हिजरत के वक़्त जहफ़ा के मक़ाम पर नाज़िल हुई थी।

यानी अल्लाह ने अपने नबी (सल्ल०) को हिजरत के वक़्त ही खुशख़बरी दे दी थी कि आज आप को अपने दीन और अपनी जान की हिफ़ाज़त के लिए मक्का छोड़ना पड़ा है, लेकिन एक दिन आएगा कि आप उसे फ़तेह करेंगे।

कुछ लोगों ने इस से मुराद ‘जन्नत’ और कुछ ने ‘क़ियामत का दिन’ मुराद लिया है। ‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ ने यही तफ़सीर बयान की है, ‘साहिबे मुहासिनुल्लतज़ील’ ने इस से मुराद ‘मक़ामे महमूद’ लिया है, जिस का अल्लाह तआला ने अपने नबी से वादा किया है कि क़ियामत के दिन उन्हें वह मक़ाम अता करेगा।

आयत के दूसरे हिस्से में मुशिरकीने मक्का की तदीद की गई है, जो नबी करीम (सल्ल०) को गुमराह कहते थे और कहते थे कि मुहम्मद अपने बाप-दादा का दीन छोड़कर एक नये दीन का दाअी बन गया है। अल्लाह ने अपने नबी की ज़बानी फ़रमाया, अल्लाह को ख़ूब मालूम है कि कौन अल्लाह का सही दीन ले कर आया है और कौन खुली गुमराही में मुब्तिला हैं यानी मुशिरकीने मक्का ही गुमराह हैं और उन की गुमराही एक खुली इकीक़त है।

**86-87**

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ۚ  
وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُتِرْتَ بِهَا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَذْتُ بِالْعُدْوَانِ ۚ

अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्ल०) और पूरी इन्सानियत पर अपने एहसान अज़ीम का ज़िक्र किया है कि उस ने आप (सल्ल०) को नबी बनाकर दुनिया में भेजा। बेअसत से पहले आप को मालूम नहीं था कि अल्लाह आपको अपना नबी बनाएगा और अपनी आख़िरी किताब आप पर नाज़िल

फ़रमाएगा, यह उस की रहमत और उस का फ़ज़ल व करम है कि उस ने इस नेअमत के लिए आप को चुन लिया, इसलिए अब आप अपने दिल में काफ़िरों के लिए कोई हमदर्दी न रखिए।

इस नेअमत का यह भी तकाज़ा है कि आप कुर्आन-ए-करीम की तिलावत, उस पर अमल और उस की तब्लीग़ किसी हाल में न छोड़िए और लोगों को अपने रब की तौहीद और उस की शरीअत पर अमल करने की दअवत देते रहिए, मुशिरकों में न शामिल हो जाइए और अल्लाह के साथ किसी को किसी हैसियत से भी शरीक न बनाइए क्योंकि उस के सिवा कोई दूसरा उपास्य (मअबूद) नहीं है।

‘काज़ी बैज़ावी’ लिखते हैं कि चूंकि आप (सल्ल०) के बारे में शिर्क का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता ताकि उन्हें इस से रोका जाए इसलिए इस से मुराद मुशिरकीन को क़तई तौर पर नाउम्मीद करना है कि नबी करीम (सल्ल०) उन के मुशिरकाना अ़माल में उन का किसी भी हाल में साथ देंगे।

**88** وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

आयत नं० (88) के दूसरे हिस्से में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फ़ना हो जाएगी।

‘मुजाहिद’ ‘सूरी’ और ‘इमाम बुख़ारी’ ने इस की तफ़सीर यह बयान की है कि हर वह अमल जिस से मक्सूद अल्लाह की रज़ा न होगी वह बेकार हो जाएगा, अल्लाह के नज़्दीक उस की कोई कीमत नहीं होगी और तमाम मख़्लूक़ात में अल्लाह का ही हुक्म नाफ़िज़ व जारी है। उस के फैसलों को कोई बदल नहीं सकता और सब को दोबारा उस के पास लौट कर जाना है, जहाँ हिसाब व किताब होगा, नेकी और बुराई का बदला चुकाया जाएगा यानी क़ियामत यकीनन आएगी, इस में कोई शुब्हा नहीं है।





(भाग-29)

सूर-ए-अनुकबूत

(सूर: नं.29)

## तफ़सीर सूर: अनकबूत

**नाम-** यह नाम इसी सूर: की आयत नं० (41) **سَمِيعُ السَّمْعِ** से लिया गया है।

**नाज़िल होने का ज़माना-** इस के नाज़िल होने के सिलसिले में उल्मा के तीन कौल (कथन) हैं। एक यह कि पूरी सूर: मक्की है, दूसरा यह है कि पूरी सूर: मदीनी है और तीसरा यह है कि शुरु की दस आयतों के सिवा बाकी पूरी सूर: मक्की है। अक्सर लोगों की राय यही है कि पूरी सूर: मक्की है और शुरु सूर: में निफ़ाक और मुनाफ़ि़न का जो ज़िक्र आया है तो इस से मुराद मक्की दौर के कुछ कमज़ोर ईमान वाले मुसलमान हैं, जो कुफ़ारे मक्का के डर से मुनाफ़िक़ाना रवैया अख़्तियार करते थे।

कुछ उल्मा की तफ़सीर में लिखा है कि यह सूर: हब्शा की हिजरत से पहले नाज़िल हुई थी जिस वक़्त कुफ़ार ने मुसलमानों पर जीना दूभर कर दिया था, इसीलिए अल्लाह तआला ने इस सूर: में मुसलमानों को सब्र करने पर उभारा है और जो कमज़ोर ईमान वाले तक्लीफ़ों और मुसीबतों की वजह से ज़िल्लत का शिकार थे, उस की नुक्ता चीनी की है और काफ़िरों को धमकी दी गई है कि अगर वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ ज़ालिमाना हरकत से बाज़ न आए तो पहले हलाक की जाने वाली कौमों की तरह बुरे अन्जाम का इन्तिज़ार करें।



## आयत नं० 1 से 16 तक

الَّذِينَ أَحْسَبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۖ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ۚ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنْ أَجَلَ اللَّهُ لَكَ مُدَّةً أَوْ قُتِلَ ۖ فَمِنْ حَتَمٍ ۚ وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُنَّ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۚ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۚ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ۚ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ ۚ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ قَدْ شَأْنٌ ۚ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۚ وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَنْتَا لَا مَعَاذَ لِيَهُمْ ۚ وَلَيَسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَنَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا ۚ فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۚ فَانْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۚ وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ

### अनुवाद-

① अलिफ्- लाम्- मीम् ② क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे यह कह दिये जाने पर छोड़ दिये जाएँगे कि “हम ईमान लाए” और उनको आजमाया न जाएगा? ③ और जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं ‘हमने’ उन लोगों को भी आजमाया था, अल्लाह तो उन लोगों को मालूम कर के रहेगा, जो सच्चे हैं और उन को भी मालूम कर के रहेगा जो झूठे हैं। ④ क्या जो लोग बुरे काम करते हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि ये ‘हमारे’ काबू से बाहर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो फैसला ये कर रहे हैं। ⑤ जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो (जान ले कि) अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय ज़रूर आने वाला है, और ‘वह’ सब कुछ सुनने, जानने वाला है। ⑥ और जो व्यक्ति जिहाद (संघर्ष) करता है वह अपने ही (फ़ायदे के) लिए जिहाद करता है, अल्लाह सारी दुनिया वालों से बेपरवाह (निस्पृह) है। ⑦ और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अमल करते रहे, तो ‘हम’ उनसे उनकी बुराइयों को दूर कर देंगे और उनको उनके अ़ामाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। ⑧ और ‘हमने’ इन्सान को ताकीद की है कि अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे, और अगर वे तुम पर जोर डालें कि तुम किसी ऐसी चीज़ को ‘मेरा’ साझी ठहराओ जिसकी हकीकत तुम्हें नहीं मालूम, तो उनकी बात न मानना, ‘मेरी’ ही ओर तुम सबको पलट कर आना है, फिर तुम को ‘मैं’ बता दूँगा जो कुछ तुम किया करते थे। ⑨ और जो लोग ईमान लाए, और अच्छे अमल करते रहे, ‘हम’ उन्हें ज़रूर अच्छे लोगों में शामिल करेंगे। ⑩ और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि “हम अल्लाह पर ईमान लाए” फिर जब वह अल्लाह की राह में सताए गये, तो लोगों की ओर से आई हुई आजमाइश को अल्लाह का अज़ाब जैसा समझ लिया, और अगर आप के ‘रब’ की ओर से मदद पहुँच गयी तो कहेंगे, “हम तो तुम्हारे साथ थे क्या जो कुछ दुनिया वालों के सीने में है, अल्लाह उसे नहीं जानता? ⑪ और

अल्लाह तो उनको मालूम कर के रहेगा जो ईमान लाए, और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) को भी मालूम कर के रहेगा! (12) और जो काफ़िर हैं वे ईमान वालों से कहते हैं, “तुम हमारी राह पर चलो, हम तुम्हारी ख़ताओं का बोझ उठा लेंगे।” हालाँकि वे उनकी ख़ताओं में से कुछ भी उठाने वाले नहीं, बेशक वे ही झूठे हैं। (13) और यह अपने बोझ भी उठाएँगे और अपने बोझों के साथ और बहुत से बोझ भी, और क़ियामत के दिन ज़रूर उनसे उनके बारे में पूछा जाएगा, जो कुछ यह गढ़ते रहते थे। (14) और ‘हमने’ नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा, तो वह पचास वर्ष कम एक हज़ार वर्ष उनमें रहे, फिर उनको तूफ़ान ने पकड़ लिया, (ऐसे हाल में) कि वे ज़ालिम थे। (15) तो ‘हमने’ उनको और नाव वालों को बचा लिया और ‘हमने’ नाव को तमाम दुनिया वालों के लिए निशानी बना दी। (16) और इब्राहीम को (भेजा) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, “अल्लाह की इबादत करो और ‘उसी’ से डरो, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, अगर तुम कुछ जानो।

## आयत नं० 1 से 16 तक की व्याख्या

1

الَّذِينَ

अलिफ-लाम-मीम यह हुरूफ़ मुक़त्ताआत हैं, इन का मअना अल्लाह तआला ही बेहतर जानते हैं।

2-3

أَحْسِبِ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۚ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ۝

हज़्शा की हिजरत से पहले मक्का मुकर्रमा में मुसलमान बहुत सख़्त हालात से गुज़र रहे थे, कुफ़र-ए-मक्का ने उन का जीना दूभर कर रखा था और इन्सानी कमज़ोरी की ताब न लाकर कभी घबरा जाते और आपस में बातें करते कि अल्लाह तआला हमारी मदद कब करेगा? इन मुसीबतों का दौर कब ख़त्म होगा?

‘इमाम बुख़ारी’ ने हज़रत ख़ब्बाब बिन अल् अरत (रज़ि०) से रिवायत किया है कि परेशानियों की ताब न लाकर एक बार वह यही सवाल रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कर बैठे। जब आप कअबः की दीवार के साये में टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे, तो आप (सल्ल०) ने उन से कहा कि तुम से पहले दूसरी उम्मतों के मोमिनो को इस से ज़्यादा तक्लीफ़ें दी गईं, उन्हें आरे से चीरा गया, लोहे की कंधियों से उन के गोश्त उतार लिये गए लेकिन वह अपने दीन से नहीं फिरे। फिर आप ने क़सम खाकर फ़रमाया, दीन इस्लाम ग़ालिब होकर रहेगा यहाँ तक कि एक मुसाफ़िर ‘सनआ’ से ‘हज़्रमूत’ जाएगा और अल्लाह के सिवा उसे किसी का ख़ौफ़ नहीं होगा, लेकिन तुम लोग जल्दी कर रहे हो।

अल्लाह तआला ने इस आयत में मक्का के ख़ास मुसलमानों से और इसी तरह के क़ियामत तक आने वाले उन मुसलमानों से जिन के साथ ऐसे हालात पेश आएँगे, कहा कि अगर तुम मुसलमान हो तो तुम्हारी आज़्माइश होगी और तुम्हें सब्र के साथ उन से गुज़र कर अपनी कुव्वते ईमानी का सुबूत देना होगा। अल्लाह तआला का हमेशा से अपने मोमिन बन्दों के साथ यही दस्तूर रहा है कि उन्हें आज़्माता

है, ताकि अमली तौर पर साबित हो जाए कि उन में कौन सच्चे ईमान वाला, कौन झूठा और मुनाफ़ि़क़ है।

कुर्आन करीम में इस तरह की बहुत सी आयतें आई हैं। सूर: आले इमरान आयत नं० (142) में आया है

أَمْحِيبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَكِنَّا يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِهِ وَيَعْلَمُ الظَّالِمِينَ

“क्या तुम ने यह समझ लिया है कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अब तक अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने सब्र से काम लिया”। सूर: बकर: आयत नं० (214) में आया है:-

أَمْحِيبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَكِنَّا يَأْتِكُم مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَاءُ

وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ أَلاَ إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ

“क्या तुम समझते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि तुम पर वह हालात नहीं गुज़रे जो तुम से पहले वाले लोगों को पेश आए, उन्हें सख़्तियाँ और तकलीफें हुईं और इस तरह झिंझोड़ दिये गए कि अल्लाह के रसूल और मोमिनीन पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी? जान लो कि अल्लाह की मदद करीब है”।

4

أَمْحِيبُ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

मोमिनों का उन के ईमान के दर्जे के मुताबिक़ इम्तिहान होगा और जो लोग इस इम्तिहान में कामियाब होंगे उन का मक़ाम जन्नत होगा और जो लोग इस दुनिया में कुफ़्र व गुनाह की ज़िन्दगी अख़्तियार करेंगे वह इस ख़याल में न मुब्तिला हों कि वह अल्लाह के अज़ाब से बच कर निकल जाएँगे, अल्लाह उन की बद् आमा़लियों की उन्हें सज़ा देने पर पूरी कुद़रत रखता है और जहन्नम में ऐसा तकलीफ़देह अज़ाब होगा जिस से सख़्त अज़ाब का तसव्वुर नहीं किया जा सकता।

5

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنْ أَجَلَ اللَّهُ لَهٍ وَهُوَ السَّيِّئُ الْعَلِيمُ

इसलिए जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं और यकीन रखते हैं कि अल्लाह के सामने उन्हें खड़े होकर अपने आ़माल का हिसाब देना होगा वह अपने ज़बानी दावे पर भरोसा न करें, बल्कि शिर्क और गुनाहों से बचें और अच्छे अ़मल करते रहें, ताकि उस दिन ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना न करना पड़े और जन्नत उन का मक़ाम बने।

6

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो शख़्स भी इस दुनिया में अच्छे काम करेगा तो उस का अच्छा बदला उसे ही मिलेगा, अल्लाह अपने बन्दों की अ़िबादतों से पूरे तौर पर बेनियाज़ है।

7

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ

इस आयत में इस की पुष्टि है कि जो लोग ईमान और अच्छे अ़मल की ज़िन्दगी अपनाएँगे, अल्लाह उन के गुनाहों को माफ़ कर देगा और उन के नेक आ़माल का उन्हें बेहतर से बेहतर बदला देगा।

8

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ  
إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

‘इमाम अहमद’ ‘मुस्लिम’ ‘अबू दाऊद’ ‘नसई’ और ‘तिर्मिजी’ आदि ने रिवायत की है कि यह आयत हज़रत सअद बिन अबी वकास (रज़ि०) के बारे में नाज़िल हुई थी। वह नौजवान सहाबा-ए-किराम में से थे जिन्होंने शुरु में ही इस्लाम कुबूल कर लिया था, उस वक़्त उन की उम्र सत्रह या अठारह साल की थी। जब उन की माँ ‘हम्ना बिनत सुफ़ियान बिन उमय्या’ को मालूम हुआ तो उन्होंने कसम खा ली कि जब तक वह इस्लाम से फिर नहीं जाएँगे, वह खाना नहीं खाएँगी।

“हज़रत सअद (रज़ि०) ने जब उन की यह हालत देखी तो कहा कि अगर आप के पास सौ रुहें होतीं और एक-एक कर के सब निकल जाएँ तो भी मैं अपना दीन नहीं छोड़ता, आप चाहे खाइये या न खाइए। उन की माँ यह बात सुनकर इन्कार की तरफ़, उन के लौटने से नाउम्मीद हो गई और आख़िर में इस्लाम ले आई और खाने पीने लगीं”।

अल्लाह तआला ने इसी वाक़िये के बाद यहाँ फ़रमाया कि हम ने इन्सान को अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने की ताकीद की है। इस के बावजूद अगर माँ-बाप उसे अल्लाह के साथ शिर्क करने पर मजबूर करें तो उन की बात नहीं मानी जाएगी, जैसा कि हज़रत सअद बिन अबी वकास (रज़ि०) ने नहीं मानी थी।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि सब को उसी के पास लौट कर जाना है और वह सब का हिसाब लेगा और उन के आ़माल का बदला देगा, इसलिए उस की फरमाँबरदारी वालिदैन की फरमाँबरदारी से पहले है।

‘हज़रत सअद बिन अबी वकास’ (रज़ि०) के बेटे ‘हज़रत मुसअब बिन सअद’ (रज़ि०) कहते हैं, “सअद की माँ ने कसम खाई कि वह सअद से कभी बात भी न करेगी जब तक कि वह अपना दीन (इस्लाम) न छोड़ेगा, न ही कुछ खाएगी और न पियेगी। वह सअद से कहने लगी कि अल्लाह तआला ने तुझे वालिदैन की इताअत का हुक्म दिया है और मैं तेरी माँ हूँ और तुझे इस बात का हुक्म दे रही हूँ। फिर तीन दिन तक उस ने कुछ न खाया न पिया और न ही सअद से बात की, तीन दिन बाद उसे बेहोशी आ गई तो उस के दूसरे बेटे ‘अम्मारा’ ने उसे पानी पिलाया। जब उसे होश आया तो सअद के हक़ में बददुआ करने लगी, तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।” (मुस्लिम)

9

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝

जो लोग अल्लाह तआला के साथ शिर्क न करने के लिए माँ और बाप जैसे क़रीबी रिश्तेदारों की बात नहीं मानेंगे और ईमान और अच्छे आ़माल की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उन्हें अम्बिया-ए-किराम और औलिया के साथ उस जन्नत में जगह देगा, जिस की दुआ अम्बिया-ए-किराम अपने लिए करते रहे हैं।



हज़रत सुलेमान (अलै०) ने दुआ की **وَادْخُلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ** “मेरे रब! मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में शामिल कर देना”। (सूर: नम्ल-19)

और अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अलै०) के बारे में कहा **وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ** “आखिरत में वह नेक लोगों में शामिल होंगे यानी उन के साथ जन्नत में होंगे।” (सूर: नहल-122)

**10-11**

**وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللّٰهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةً النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ وَلَئِنْ جَاء نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۖ أَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِيْنَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنْفِقِيْنَ ۝**

मुफ़स्सिरीन ने ‘ज़िहाक’ का कौल नक्ल किया है कि यह आयते करीमा मक्का मुकर्रमा में उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई थी जो दिल से मुसलमान नहीं हुए थे। जब उन्हें मुशिरकीन की ओर से तक्लीफ़ पहुँची तो दोबारा मुशिरक बन गए।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन के दिलों में इस्लाम नहीं होता, इसलिए जब उन्हें अल्लाह की राह में तक्लीफ़ पहुँचती है तो दीन से अलग हो जाते हैं और इन्सानों की तरफ़ से उन्हें जो तक्लीफ़ पहुँचती है उसे अज़ाब जैसा समझ लेते हैं और जब मुसलमानों को अल्लाह की ओर से मदद हासिल होती है तो उन के पास जाकर कहते हैं कि हम भी तुम्हारे ही जैसे मुसलमान हैं, लेकिन काफ़ि़रों के साथ रहने पर या इन्कार करने पर हम अपनी जान और औलाद की जान बचाने के लिए मजबूर थे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यह बात उन लोगों के बारे में कही गई है जो ग़ज़्व-ए-बद्र के मौके पर कुफ़ारे मक्का के साथ गए थे, लेकिन जब काफ़ि़रों को हार हुई और मारे गए और जो बाक़ी बचे गिरफ़्तार कर लिये गए तो उन मुनाफ़ि़कीन ने मुसलमानों से कहा कि हकीकत में हम भी मुसलमान हैं, लेकिन अपना ईमान छिपाने पर मजबूर थे।

अल्लाह तआला ने उन के दावे को रद्द करते हुए कहा कि इन्सानों के दिलों में जो कुछ छुपा होता है वह उस से ख़ूब वाफ़ि़ है, इसलिए तुम्हारा झूठा उज़्र अब तुम्हारे काम नहीं आएगा।

इस आयत में इसी बात की ताईद है कि अल्लाह तआला मोमिन व मुनाफ़ि़क़ सब को जानता है और हर एक को उन की नियत व अमल का बदला चुकाएगा, मोमिनों को जन्नत में और मुनाफ़ि़कों को जहन्नम में दाख़िल कर देगा।

**12**

**وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِيْنَ ۚ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝**

यानी मुसलमानों को चाहिए कि वह ईमान पर जमे रहें, न कोई तक्लीफ़ उन को इस्लाम से हटा सके और न काफ़ि़रों की बेवकूफी से प्रभावित हों। जैसे वह मुसलमानों से कहते हैं कि तुम इस्लाम छोड़कर फिर अपनी बिरादरी के धर्म पर आ जाओ और हमारी राह पर चलो, तमाम तक्लीफ़ों से बच जाओगे,

मुफ्त में क्यों मुसीबतें झेल रहे हो और अगर ऐसा करने में गुनाह समझते हो और खुदा की पकड़ का अन्देशा हो तो खुदा के यहाँ भी हमारा नाम ले लेना कि दुनिया में उन्होंने हम को यह मश्वरा दिया था।

अगर ऐसी सूरत पेश आई तो सारी ज़िम्मेदारी हम उठा लेंगे और तुम्हारे गुनाह का बोझ अपने सर रख लेंगे।

**13**

وَلِيَجْلِسَ أَثْقَالُهُمْ وَأَثْقَالُ مَعَ أَثْقَالِهِمْ وَلَيْسَ لَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

यानी यह लोग झूठे हैं, तुम्हारा बोझ रत्ती बराबर भी हल्का नहीं कर सकते। हाँ, यह केवल अपना बोझ भारी कर रहे हैं, एक तो उन के ज़ाती गुनाहों का बोझ था, अब दूसरों के गुमराह करने का बोझ और बढ़ा दिया गया है।

जैसा कि हदीस में आया है कि दुनिया में जो कोई किसी को (नाहक) क़त्ल करे, उसके गुनाह का हिस्सा आदम के पहले बेटे (काबील) को पहुँचता है, जिस ने पहली बार यह बुरी राह निकली।

यानी जो झूठी बातें बताते हैं कि हम तुम्हारा बोझ उठा लेंगे यह खुद एक गुनाह है, जिस पर पकड़ होगी कि सच्च्यों के मुकाबिले में हमेशा से झूठे शरारत करते आए हैं और सच्च्यों को मुद्दतों तक इम्तिहान व आज्माइश के दौर से गुज़रना पड़ा है, मगर आखिर नतीजा उन्हीं के हक़ में बेहतर हुआ। इन्कारी और बुरे लोग खसारे में रहे, सच्चे लोग कामियाब व सरबुलन्द हुए।

**14**

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

‘हज़रत इब्ने अब्बास’ (रज़ि०) से नक़ल किया गया है कि हज़रत नूह (अलै०) चालीस साल की उम्र में मब्भूस हुए और लगभग साढ़े नौ सौ साल तक दअवत व तब्लीग़ व सुधार के कामों में लगे रहे। फिर तूफ़ान आया, तूफ़ान के बाद साठ साल ज़िन्दा रहे, इस तरह कुल उम्र एक हज़ार पचास साल हुई, लेकिन इस का सही इल्म अल्लाह ही को है।

यानी जब गुनाहों और शरारतों से बाज़ न आए तो तूफ़ान ने सब को घेर लिया सिवाय चन्द लोगों के सब हलाक हो गए।

**15-16**

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۝ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

यानी जो आदमी या जानवर नाव पर सवार थे, उन को हज़रत नूह (अलै०) के साथ हम ने महफूज़ (सुरक्षित) रखा। सूर: ‘हूद’ में यह किस्सा गुज़र चुका है।

बाज़ मुफ़स्सरीन ने ज़िक्र किया है कि हज़रत नूह (अलै०) की नाव बहुत दिनों तक ‘जोदी’ पर लगी रही, ताकि देखने वालों के लिए नसीहत हो और इस वक़्त भी जो जहाज़ और कश्तियाँ मौजूद हैं यह भी एक निशानी हैं जिसे देख कर सफ़ीना-ए-नूह (अलै०) की याद ताज़ा होती और कुद्रत इलाही का नमूना नज़र आता है या शायद यह मुराद हो कि कश्ती के इस किस्से को हम ने हमेशा के लिए

नसीहत बना दिया।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं, “जिस वक़्त यह सूर: उतरी है रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बहुत से अस्थाब काफ़िरों की तक्लीफों से तंग आकर नाव पर सवार होकर मुल्क हब्शा की तरफ़ रवाना हो गए थे।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना हिज़रत करके आए तब वह नाव वाले सहाबा भी सलामती से आ मिले।” इस तरह हज़रत नूह (अलै०) के सफ़ीना-ए-नूह (अलै०) की तारीख़ इस रंग में दोहराई गई।



## आयत नं० 17 से 27 तक

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِشْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَكَذَّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أَمْرٌ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْبَيِّنُ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ الشَّجَاةَ الْخَرَّةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَئِكَ يَكُونُونَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَلَيَعَنَّ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَأُولَئِكَ هُمُ السَّارِقُونَ ﴿٢٤﴾ قُلْ إِنَّمَا أَمْرٌ لِلَّهِ يُفْعَلُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٥﴾ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا إِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٦﴾

### अनुवाद-

(17) तुम तो अल्लाह के सिवा मूर्तियों की पूजा करते हो, और झूठी बातें बनाते हो तो तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पूजते हो, वे तुम्हारे लिए रोजी का भी अधिकार नहीं रखते, तो तुम अल्लाह ही के यहाँ से रोजी तलाश करो और 'उसी' की इबादत करो और उसी के शुक्र गुजार बनो, तुम्हें 'उसी' की ओर लौट कर जाना है। (18) और अगर तुम झुठलाते हो तो तुमसे पहले भी बहुत सी उम्मतें झुठला चुकी हैं, और रसूल के! जिम्मे तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है। (19) क्या लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह किस तरह सृष्टि (कायनात) को पहली बार पैदा करता है? फिर उसको दोहराएगा, यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। (20) कह दीजिए, ज़मीन में चलो-फिरो और देखो! कि उसने किस तरह पैदाइश शुरू की, फिर अल्लाह ही दोबारा उठा खड़ा करेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है। (21) 'वह' जिसे चाहे अज़ाब दे, और जिस पर चाहे रहम करे, और 'उसी' की ओर तुम्हें पलट कर जाना है। (22) और तुम न तो धरती में उसके काबू से बाहर निकल सकते हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला है और न मदद्गार। (23) और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और 'उसके' मिलने का इन्कार किया, वे 'मेरी' रहमत से मायूस (निराश) हो गये हैं, और वे वही हैं जिनके लिए दुःख देने वाला अज़ाब होगा। (24) फिर उनकी कौम के लोगों का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, "मार डालो उसे या जला दो!" फिर अल्लाह ने उनको आग से बचा लिया, बेशक उन के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान रखते हैं। (25) और (इब्राहीम ने) कहा, "अल्लाह के सिवा तुमने जो मूर्तियों को केवल दुनिया की आपसी ज़िन्दगी में मुहब्बत के लिए, (उपास्य) ठहरा रखा है, फिर कियामत के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे, और एक-दूसरे पर लानत करोगे, और तुम्हारा ठिकाना आग होगी और कोई

भी तुम्हारा मदद्गार न होगा।” (26) फिर लूत ने उनकी बात मानी और (इब्राहीम ने) कहा, “मैं अपने रब की ओर हिजरत (अर्थात् अल्लाह के लिए घर बार छोड़ना) करता हूँ, बेशक वह ग़ालिब, हिकमत वाला है।” (27) और ‘हमने’ उसे इस्हाक और याकूब दिये और उसके वंश में नुबूवत और किताब का सिलसिला जारी किया, और ‘हमने’ उसे दुनिया में भी उसका अच्छा बदला दिया, और आखिरत में भी वह अच्छे लोगों में होंगे।

## आयत नं० 17 से 27 तक की व्याख्या

17

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

यानी झूठे अक़ीदे तराशे हो और झूठे खयालात व अवहाम की पैरवी करते हो, चुनाँचे अपने हाथों से यह मूर्तियाँ बनाकर खड़ी कर ली हैं जिन्हें झूठ-मूठ के खुदा के अवतार कहने लगे।

हकीकत में उस अल्लाह के शुक्रगुज़ार बनो और उसी की बन्दगी करो, वहीं तुम को लौट कर जाना है, आखिर उस वक़्त क्या मुँह दिखाओगे।

18

وَإِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْبَيِّنُ

यानी झुठलाने से मेरा कुछ नहीं बिगड़ता, मैं साफ़-साफ़ तबलीग़ व नसीहत कर के अपना फ़र्ज़ अदा कर चुका, भला-बुरा समझा चुका, न मानोगे तो नुक़सान उठाओगे। जैसे ‘आद व समूद’ वग़ैरह तुम से पहले नुक़सान उठा चुके हैं।

19

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ

यानी खुद अपने ही ऊपर ग़ौर करो, पहले तुम कुछ न थे, अल्लाह ने तुम को पैदा किया, इसी तरह मरने के बाद दोबारा पैदा कर देगा।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं, “शुरु तो देखते हो, दोहराना इसी से समझ लो।”

यानी अल्लाह के नज़्दीक तो कोई चीज़ भी मुश्किल नहीं। अल्बत्ता तुम्हारे समझने की बात है कि जिस ने बिना नमूने के पहले एक चीज़ को बनाया, नमूना कायम होने के बाद बनाना तो और ज़्यादा आसान होना चाहिए।

20

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

यानी अपनी ज़ात को छोड़कर दूसरी चीज़ों की पैदाइश में भी ग़ौर करो और चल फिर कर देखो कि कैसी-कैसी मख़लूक अल्लाह ने पैदा की हैं। इसी पर दूसरी ज़िन्दगी को समझ लो, उस की कुदरत अब कुछ सीमित तो नहीं हो गई।

21

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ

यानी दोबारा पैदा कर के जिसे अपनी हिक्मत के मुताबिक चाहेगा सज़ा देगा और जिस पर चाहेगा अपने फ़ज़ल व करम से मेहरबानी फ़रमाएगा।

**22**

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

यानी जिस को अल्लाह तआला सज़ा देना चाहे वह न ज़मीन के सुराखों में घुस कर सज़ा से बच सकता है, न आसमान में उड़कर और कोई चीज़ भी अल्लाह के मुजरिम को पनाह नहीं दे सकती, न कोई ताक़त उस की हिमायत और मदद को पहुँच सकती है।

**23**

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَكُونُونَ لَكُمْ رَحِمَةً وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

जिन्होंने अल्लाह की बातों का इन्कार किया और उससे मिलने की उम्मीद नहीं रखी (क्योंकि वह मरने के बाद उठाए जाने के कायल ही न हुए) उन्हें रहमते इलाही की उम्मीद क्योंकि हो सकती है, लिहाज़ा वह आखिरत में भी महसूस व मायूस ही रहेंगे।

**24**

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

हज़रत इब्राहीम (अलै०) की तमाम बातें और दलायल सुनकर जब उन की कौम जवाब देने से बेबस हुई तो ताक़त के इस्तेमाल पर उतर आए और आपस में मशवरा किया कि या तो क़त्ल कर के इन का क़िस्सा ही ख़त्म कर दिया जाए या आग में जला दिया जाए, शायद तकलीफ़ महसूस कर के अपनी बातों से बाज़ आ जाए तो आग से निकाल लेंगे, वरना जल कर राख हो जाएगा।

**25**

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَمْدُودًا بَيْنَكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَأُولَٰئِكَ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

फिर उन्होंने मशवरा कर के आग में डाल दिया, मगर अल्लाह तआला ने आग को गुलज़ार (बाग़) बना दिया। जैसा कि 'सूर: अम्बिया' में गुज़र चुका है।

यानी इस वाक़िये ने समझा दिया कि अल्लाह तआला अपने सच्चे बन्दों को किस तरह बचा लेता है और मुख़ालिफ़ीने हक़ को किस तरह ख़ौफज़दह कर देता है। मालूम यह हुआ कि हर चीज़ में असर उसी के हुक्म से होता है, जब हुक्म न हो तो आग जैसी चीज़ भी जला नहीं सकती।

यानी आग से निकल कर हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने फिर नसीहत शुरु कर दी।

इस तरह मूर्तिपूजा को कौन अक्लमन्द जायज़ कर सकता है, मूर्ति पूजक भी दिल में जानते हैं कि यह निहायत ग़लत हरकत है, मगर कौम को बाकी रखने के लिए एक तरीका बना लिया है कि उस के नाम पर तमाम कौम मुत्तफ़िक़ रहे और एक दूसरे के दोस्त बने रहें, जैसा कि आज कल हम योरोप की कौमों का हाल देखते हैं। मतलब यह है कि मूर्ति पूजा का तरीका व रिवाज इस बिना पर नहीं हुआ कि वह कोई अच्छी चीज़ है, बल्कि अन्धी पैरवी, कौमी मुरव्वत व लिहाज़ और तअल्लुकात का दबाव इस की बड़ी वजह है या यह हो कि मूर्ति पूजा की अस्ल जड़ आपस की मुहब्बत और दोस्ती थी।



एक कौम में कुछ नेक लोग थे जिन्हें लोग महबूब रखते थे, जब वह इन्तिकाल कर गये तो लोगों ने जोशे मुहब्बत में उन की तस्वीरें बनाकर बतौर यादगार रख लीं, फिर उन्हीं तस्वीरों की तअज़ीम (पूजा) करने लगे, वही तअज़ीम बढ़ते-बढ़ते अ़िबादत बन गई। यह सब बातें इस आयत में मुफ़स्सिरीन ने बयान की हैं और मुम्किन है **مَوَدَّةَ بَيْنِكُمْ** से मूर्ति पूजकों की अपनी मूर्तियों से जो मुहब्बत है वह मुराद हो। जैसा कि दूसरी जगह **«أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُكْفَرُونَ بِاللَّهِ»** फ़रमाया है।

यानी यह सब दोस्तियाँ और मोहब्बतें चन्द दिनों की हैं, यह क़ियामत के दिन एक दूसरे के दुश्मन बनेंगे और एक दूसरे पर लअनत करेंगे।

**26**

**فَأَمِّنْ لَّكَ لُوطُ ۖ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝**

हज़रत लूत (अलै०) हज़रत इब्राहीम (अलै०) के भतीजे थे। हज़रत इब्राहीम (अलै०) को उन की कौम में से किसी मर्द ने न माना सिवाय हज़रत लूत (अलै०) के कि उन्होंने तस्दीक की। दोनों का वतन 'ईराक' में शहर बाबुल था, मगर यह दोनों अल्लाह के भरोसे पर देश से निकल गए और मुल्क शाम में जाकर आबाद हुए।

**وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ** में दोनों बातें हैं। कहने वाले हज़रत इब्राहीम हो या हज़रत लूत (अलै०)।

**27**

**وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝**

यानी इस्हाक़ बेटा और याकूब पोता दिया, जिन की नस्ल 'बनी इस्राईल' कहलाती है। हज़रत इब्राहीम (अलै०) के बाद सिवाय उन की औलाद के किसी को किताब आसमानी और पैगम्बरी न दी जाएगी, चुनाँचे जितने अम्बिया उन के बाद तशरीफ़ लाए उन्हीं की औलादों में से थे, इसीलिए उन को "अबुल् अम्बिया" कहा जाता है।

यानी दुनिया में अल्लाह तआला ने माल, औलाद, इज़्ज़त और हमेशा का नेक नाम दिया और मुल्क 'शाम' हमेशा के लिए उन की औलाद के हवाले किया।

आख़िरत में आला दर्जे के नेक लोगों की जमाअत में (जो अम्बिया-ए-ऊलुल् अज़्म) की जमाअत है, शामिल रखा।



## आयत नं० 28 से 44 तक

وَلَوْظًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَأَتَاتُوكَ الْفَاحِشَةَ مِمَّا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۖ أَيْتَكُمْ لَأَتَاتُوكَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۚ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ ۚ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّبِتْنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ۖ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ أَهْلَهَا كَانَُوا ظَالِمِينَ ۖ قَالَ إِنْ فِيهَا لُوطًا ۖ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۖ وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيقًا إِلَيْهِمْ ۖ وَصَاقَ بِهِمْ ذُرْعًا ۖ وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنْقِضُونَكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۖ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا ۖ مِنَ السَّيِّئَاتِ ۖ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۖ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ يَقُومُوا عِبَادُوا اللَّهَ ۖ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ ۖ فَاعْتَدَاهُمُ الرَّحْمَةُ ۖ فَاصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَيَيْنَ ۖ وَعَادًا وَثَمُودًا ۖ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسْكِنِهِمْ ۖ وَرَكِبَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ ۖ أَعْمَالَهُمْ ۖ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَكَانُوا مُسْتَبْجِرِينَ ۖ وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۖ فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَن أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَن أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَن حَسَفْنَا فِيهِ الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَن أَعْرَفْنَا ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۖ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۖ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنْ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُدْعَوْنَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لَضَرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ۖ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ

### अनुवाद-

(28) और 'हमने' लूत को भेजा, जब उन्होंने अपनी कौम से कहा, "तुम बेहयाई का काम करते हो?" जो तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। (29) क्या तुम पुरुषों से काम इच्छा पूरी करते हो, और रहज़नी (लूट-मार) करते हो, और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो?" तो उस कौम के पास इसके सिवा कोई जवाब न था कि उन्होंने कहा, "ले आओ अल्लाह का अज़ाब, अगर तुम सच्चे हो।" (30) (लूत ने) कहा, "ऐ मेरे रब! फ़साद पैदा करने वाले लोगों के मुकाबले में मेरी मदद कर।" (31) और जब 'हमारे' रसूल (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए तो उन्होंने कहा, "हम इस बस्ती के रहने वालों को हलाक (नाश) करने आए हैं, उसके रहने वाले ज़ालिम हैं।" (32) (इब्राहीम ने) कहा, "वहाँ तो लूत भी है;" वे बोले जो कोई भी वहाँ है, हम ख़ूब जानते हैं, हम उनको और उनके घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय उनकी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।" (33) और जब हमारे रसूल (फ़रिश्ते) लूत के पास आए, तो उनको देख कर परेशान और दुखी हुए और (फ़रिश्तों ने) कहा, "डरो नहीं, न ग़म करो हम तुमको और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी पत्नी के वह पीछे रह जाने वालों में होगी।" (34) हम इस बस्ती के रहने वालों पर आसमान से एक अज़ाब उतारने वाले हैं, इसलिए कि यह नाफ़रमान हैं।" (35) और

‘हमने’ उसकी एक स्पष्ट निशानी छोड़ दी है, उन लोगों के लिए जो कुछ अक्ल रखते हों। (36) और मद्यन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्होंने कहा, “ऐ मेरी कौम के लोगो, अल्लाह ही की इबादत करो, और आखिरत के दिन की उम्मीद रखो; और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फ़िरो।” (37) फिर उन्होंने उसे झुठला दिया, तो भूकम्प ने उनको आ पकड़ा, तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (38) और आद और समूद को भी (हलाक किया) और तुम्हारे लिए उनकी बस्तियाँ (आँखों के सामने) स्पष्ट हैं, और शैतान ने उनके काम अच्छे कर के दिखाए, (जो वे करते थे) और उनको (सीधी) राह से रोक रखा, जब कि वे बड़े सूझ-बूझ वाले थे। (39) और कारून और फ़िरऔन और हामान को, (हमने हलाक किया) और मूसा उनके पास खुली निशानियाँ ले कर आए थे, मगर उन्होंने ज़मीन में अपनी बड़ाई का दम भरा, हालाँकि वे ज़मीन में ‘हमारे’ काबू से निकल जाने वाले न थे। (40) तो ‘हमने’ हर एक को उनके अपने गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, फिर उनमें से किसी पर तो पत्थराव करने वाली आँधी भेजी, और किसी को बड़े जोर की चिंघाड़ (धमाके) ने आ पकड़ा, और किसी को ‘हमने’ ज़मीन में धंसा दिया, और किसी को डुबो दिया, और अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था, बल्कि वे खुद ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। (41) जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने दूसरे संरक्षक बना लिए हैं, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जिसने अपना घर बनाया, और बेशक सब घरों से कमजोर मकड़ी का घर होता है, काश! यह जानते। (42) अल्लाह उन चीज़ों को खूब जानता है जिन्हें यह ‘उससे’ हट कर पुकारते हैं, और ‘वह’ बड़ी ताक़त वाला, हिकमत वाला है। (43) और यह मिसालें ‘हम’ लोगों के लिए बयान करते हैं, और इसको वही लोग जानते हैं, जो इल्म वाले हैं। (44) अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया, निश्चय ही इसमें ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है।

## आयत नं० 28 से 44 तक की व्याख्या

28

وَلَوْظًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَأَنْتَوْنَ الْفَاجِئَةُ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ

यानी यह बुरा काम तुम से पहले किसी ने नहीं किया था। यही इस की दलील है कि फितूरत-ए-इन्सानी इस से नफरत करती है। ऐसे ख़िलाफ़े फितूरत व शरीअत काम की बुनियाद तुम ने डाली है।

29

أَيُّكُمْ لَأَنْتَوْنَ الرِّجَالُ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَأَنْتَوْنَ فِي نَادِيكُمْ الْبُنْكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ

إِلَّا أَنْ قَالُوا اتَّبِعْنَا يُعَذِّبُ اللَّهُ إِنْ كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِينَ

राह काटने से मुराद मुम्किन है डाकाज़नी हो, यह भी उन में रायज हो गई थी या इसी बदकारी की वजह से मुसाफ़ि़रों की राह मारते थे कि डर के मारे उस तरफ़ होकर न निकलें या تَقْطَعُونَ السَّبِيلَ का मतलब यह हो कि फितूरी और सही रास्ते को छोड़कर पैदाइश और नस्ल के बढ़ने का सिलसिला काट रहे थे।

शायद यह बदकारी एलानिया लोगों के सामने करते होंगे, इस बात की शर्म भी न थी या कुछ और ठठ्ठे और बेशर्मी की बातें करते होंगे।

यानी अगर तुम सच्चे नबी हो और वाकई सच कहते हो कि हमारा यह काम ख़राब और अज़ाब लाने वाला है तो देर क्या है वह अज़ाब ले आइए। दूसरी जगह फ़रमाया:-

(सूर: अज़राफ़-82) وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ: إِنَّهُمْ أَنْفُسٌ يَكْفُرُونَ

यानी उन की कौम का जवाब यही था कि लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। यह बड़े पाक बनना चाहते हैं, शायद कौम ने दो जवाब दिया होगा या एक वक़्त में एक बात और दूसरे में दूसरी कही होगी। जैसे-

पहले अज़ाब की धमकियों का मज़ाक उड़ाया, फिर आखिरी फैसला यह किया होगा कि इन्हें बस्ती से निकाल दिया जाए बहरहाल इससे यह साबित हो गया कि यह कौम न सिर्फ़ इस बुरे काम के करने वाली थी, बल्कि उस के जारी रखने पर इस क़दर इस्तेमाल था कि नसीहत करने वाले पैग़म्बर को ही अपनी बस्ती से निकालने पर तैयार हो गए। उन की फ़ितूरत इतनी ख़राब हो चुकी थी कि ख़ौफ़े खुदा का कोई निशान दिलों में बाक़ी न रहा।

अज़ाब की धमकियों का मज़ाक उड़ाते और पैग़म्बर के मुकाबिले पर आमादा थे, जुर्म की यही बात उन के हलाक करने के लिए काफ़ी थी और इस के साथ तौहीद (एकेश्वरवाद) के भी कायल न थे। मालूम होता है कि तौहीद की दअवत हज़रत इब्राहीम (अलै०) की तरफ़ से फैल चुकी होगी इसलिए हज़रत लूत (अलै०) ख़ास इसी बुरे काम से रोकने पर ज़ोर देते रहे और मुम्किन है उन्होंने तौहीद वग़ैरह की भी दअवत दी हो, मगर उस को यहाँ ज़िक्र न किया गया हो। वल्लाहु अ़ालम।

30

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُسِيءِينَ

हज़रत लूत (अलै०) ने उन की तरफ़ से मायूस होकर फ़रमाया, शायद समझ गये होंगे कि उन की आइन्दा नस्लें भी दुरुस्त होने वाली नहीं, वह भी उन्हीं के नक्शे क़दम पर चलेंगी। इसलिए ऐ अल्लाह! इस फ़ासिद कौम के मुकाबिले में मेरी मदद फ़रमाइए।

जैसे- हज़रत नूह (अलै०) ने फ़रमाया था إِنَّكَ إِن تَذَرْنَهُمْ يَفْسُدُوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا فَاكِرًا (सूर: नूह-27)

31

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبَشَرِ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ

हज़रत लूत (अलै०) की दुआ पर फ़रिश्तों को उस बस्ती के तबाह करने का हुक्म हुआ। फ़रिश्ते पहले तो हज़रत इब्राहीम (अलै०) के पास पहुँचे, उन को बुढ़ापे में बेटे की बशारत सुनाई और ख़बर दी कि हम उस बस्ती (सुदूम) को तबाह व बर्बाद करने के लिए जा रहे हैं क्योंकि वहाँ के लोग किसी तरह अपनी हरकात से बाज़ नहीं आते। इन वाकिआत की तफ़सील सूर: अज़राफ़, सूर: हूद और सूर: हिज़्र वग़ैरह में गुज़र चुकी है।

शायद हलाकत की ख़बर के साथ बेटे की बशारत देने का मतलब यह हो कि एक कौम से अगर अल्लाह की ज़मीन खाली की जाने वाली है तो दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने एक अज़ीमुशान कौम

“बनी इस्राईल” की बुनियाद डालने वाला है।

यानी क्या हज़रत लूत की मौजूदगी में बस्ती को तबाह किया जाएगा? या उन्हें वहाँ से अलग कर के अज़ाब की कार्रवाई अमल में लाई जाएगी? शायद हज़रत इब्राहीम (अलै०) को खयाल आया हो कि अगर ‘लूत’ की आँखों के सामने यह आफ़त नाज़िल हुई तो अज़ब नहीं कि अज़ाब का हौलनाक मन्ज़र देखने से घबराहट हो, फ़रिश्तों ने अपने कलाम में कोई और बात न की थी, उस से उन के ज़ेहन में यही शक़ आया होगा कि लूत की मौजूदगी में कार्रवाई करेंगे।

**32** قَالُوا إِنَّا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَائِبِينَ ۝

यानी फ़रिश्तों ने इत्मिनान दिलाया कि हम सब को जानते हैं जो वहाँ रहते हैं और जो उन में खुदा के मुजरिम हैं। केवल लूत को ही नहीं, बल्कि उस के घरवालों को भी कोई नुकसान न पहुँचेगा, सब को अज़ाब के मौके से अलग करेंगे सिर्फ़ उस की एक औरत वहाँ रह जाएगी क्योंकि उस पर भी अज़ाब आना है।

**33** وَلَمَّا أَن جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجُونَكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَائِبِينَ ۝

फ़रिश्ते निहायत हसीन व जमील नौजवान लड़कों की शक़ल में वहाँ पहुँचे। हज़रत लूत ने पहले पहचाना नहीं, बहुत तंगदिल और नाखुश हुए कि अब इन मेहमानों की इज़्ज़त कौम के हाथ से किस तरह बचाऊँगा, अगर अपने यहाँ न ठहराऊँ तो इस बदकार कौम से इज़्ज़त किस तरह सुरक्षित रहेगी।

**34** إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

यानी अपनी कौम की शरारत से न डरें, यह कुछ नहीं कर सकती और हमारे बचाव के लिए ग़मगीन न हों हम इन्सान नहीं फ़रिश्ते हैं, जो तुम को और तुम्हारे घरवालों को बचा कर इस कौम को तबाह करने के लिए आए हैं।

**35** وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

यानी उन की उल्टी हुई बस्तियों के निशान मक्का वालों को मुल्क शाम के सफ़र में दिखाई देते हैं।

**36-37** وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مَقْسِدِينَ ۝ فَكَلِّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَثًا ۝

यानी आख़िरत की तरफ़ से गाफ़िल न हों, अकेले एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करो।

ख़राबी मचाने का मतलब है लेन-देन में दगाबाज़ी करना, सूद बढ़ा लगाना। जैसा कि उन की आदत थी और मुम्किन है रहज़नी व डाकाज़नी भी करते हों।

**38** وَعَادًا وَثَمُودَ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ ۝ وَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ ۝



فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝

यानी उन की बस्तियों के खण्डर तुम देख चुके हो, उन से नसीहत हासिल करो।  
यानी दुनिया के काम में तो बड़े होशियार थे और अपने नज़्दीक अक्लमन्द थे, लेकिन शैतान के बहकावे से न बच सके।

39

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ  
وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۝

यानी खुली निशानियाँ देखकर भी हक के सामने न झुके और घमण्ड की वजह से उनकी गर्दन नीचे न होने दीं। फिर नतीजा क्या हुआ? क्या बड़े बनकर सज़ा से बच गए?

40

فَكَرًّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِمْ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا  
بِهِ الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَعْرَفْنَا ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

यानी उन में से हर एक को उस के जुर्म के मुताबिक सज़ा दी गई। यह कौम-ए-लूत हैं और बाज़ ने 'आद' को भी इस में दाखिल किया है कि यह 'समूद' थे और 'अहले मद्यन' भी यानी कारून को।  
जैसा कि 'सूर: कसस' में गुज़रा कि यह फिरऔन व हामान और बाज़ ने कौम-ए-नूह को भी इस में दाखिल किया है।

यानी अल्लाह तआला की शान यह नहीं है कि कोई नाइन्साफी या बे-मौका काम करे, जुल्म तो वहाँ सोचा ही नहीं जा सकता। हाँ, बन्दे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते हैं यानी ऐसे काम करते हैं जिन का नतीजा उन के हक में बुरा हो।

41

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۖ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنْ أَوْهَنَ الْبُيُوتُ  
لَبِيتُ الْعَنْكَبُوتُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

घर इसलिए होता है कि जान व माल का बचाव हो, न कि मकड़ी के जाला जैसा कि दामन के झिड़कने से टूट पड़े। यही मिसाल उस की है जो अल्लाह के सिवा किसी को अपना बचाने वाला और रक्षा करने वाला समझते हैं, जबकि अल्लाह की मर्जी के बिना कोई बचाव नहीं कर सकता।

42-43

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝  
وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝

यानी मुम्किन था सुनने वाला तअज्जुब करे कि सब को एक ही लाईन में खड़ा कर दिया, किसी को अलग न रखा। कुछ लोग मूर्तियों को पूजते हैं, कुछ लोग आग को, पानी को, कुछ औलिया अम्बिया या फरिश्तों को, सो अल्लाह ने फरमा दिया कि अल्लाह को सब मालूम हैं।

यानी अल्लाह को न किसी के दोस्ती की परवाह है (इसलिए कि वह ज़बरदस्त है) और न मश्वरा



की परवाह है (क्योंकि वह हकीम है।)

मुशिरकीने मक्का कहते थे कि अल्लाह तआला 'मकड़ी' और 'मक्खी' जैसी कमतर हकीर चीजों की मिसालें बयान करता है जो उस की अज़मत (प्रतिष्ठा) के खिलाफ हैं। इस का जवाब दिया गया है कि मिसालें अपने मौके के लिहाज़ से ठीक हैं, मगर अक्लमन्द ही इसका मतलब समझते हैं, जाहिल बेवकूफ़ क्या जानें। मिसाल को मिसाल देने वाले की हैसियत के हिसाब से नहीं दिया जाता, बल्कि जिस की मिसाल है उस की हैसियत को देखकर दिया जाता है। अगर वह कमज़ोर है तो मिसाल भी वैसी ही कमज़ोर चीजों की होगी, मिसाल देने वाले की अज़मत का इस से क्या सम्बन्ध।

44

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

यानी जब आसमान व ज़मीन उस अकेले ने बना दिया तो छोटे-छोटे कामों में उसे किसी शरीक या मदद्गार की क्या ज़रूरत होगी, अगर होती तो इन बड़े कामों में यानी ज़मीन व आसमान के बनाने में होती।



## आयत नं० 45 से 60 तक

\*

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٥﴾  
 وَلَا تَجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا أَمَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَإِلَيْكُمْ وَالْهِنَا وَالْهَيْكُم  
 وَاحِدٌ وَذُنُّ لَهٗ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۖ وَمَا يَجْحَدُ  
 بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُو مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّ بِمِثْلِكَ إِذَا لَزَمَكُمُ الْبُطْلَانُ ﴿٤٨﴾ بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ  
 الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ ۖ  
 وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ  
 كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيِّنَاتٍ وَبَيِّنَاتُكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٥٢﴾  
 وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُسَمًّى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۖ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْضَةٌ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ وَإِنْ  
 جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشَاهُمْ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾ يُعْبَادِي  
 الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا آخِزُونَ ۖ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
 لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا يُجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ بِغَمٍّ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿٥٨﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾ وَكَانَ  
 مِنْ دَآبِئِهِ أَلَّا تَجِدَ رِزْقَهَا ۚ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِنَّهَا لَكَلَّمٌ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

### अनुवाद-

(45) (ऐ मुहम्मद) तिलावत (पढ़ा) कीजिए उस किताब की जो आप की ओर वही की गई है, और नमाज़ कायम कीजिए, निश्चय ही नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है, और अल्लाह का जिक्र (ध्यान) बहुत बड़ी चीज़ है, और जो कुछ तुम रचते बनाते हो अल्लाह उसे जानता है। (46) और किताब वालों से बहस कीजिए मगर बेहतर तरीके से, सिवाय उनके जो उनमें से ज़ालिम हैं! और कह दीजिए, “हम ईमान लाए हैं उस चीज़ पर जो हमारी ओर भेजी गई है, और उस चीज़ पर भी, जो तुम्हारी ओर भेजी गई थी, और हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है, और हम ‘उसी’ के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हैं। (47) और इसी तरह ‘हमने’ आप की ओर किताब उतारी है, तो जिन लोगों को ‘हमने’ किताबें दी थीं वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन लोगों में से ऐसे भी हैं, कि वह भी इस पर ईमान ले आते हैं, और जो नाफ़रमान हैं ‘वही’ हमारी आयतों को नहीं मानते। (48) और इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे, और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले (झूठा ठहराने वाले) ज़रूर शक करते। (49) बल्कि यह खुली निशानियाँ हैं उन लोगों के सीनों में, जिन्हें कुछ इल्म मिला है, और ‘हमारी’ आयतों का इन्कार तो ज़ालिम ही करते हैं। (50) और कहते हैं कि इस पर इनके ‘रब’ की ओर से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गईं, कह दीजिए, “निशानियाँ तो अल्लाह ही के अधिकार में हैं, और मैं तो खुली हुई नसीहत करने वाला हूँ।” (51) क्या इन लोगों के लिए यह काफी नहीं कि ‘हमने’ आप पर किताब उतारी; जिसे पढ़कर सुनाया जाता है, निश्चय ही इसमें रहमत और नसीहत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ। (52) कह दीजिए,

“अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफी है, ‘वह’ जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर यकीन रखते हैं और अल्लाह से इन्कार करते हैं, वही तबाह होने वाले हैं। (53) और यह लोग आप से अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं अगर इसका एक निर्धारित समय न होता तो उन पर ज़रूर अज़ाब आ जाता, और वह तो अचानक उन पर ज़रूर आकर रहेगा, और उनको ख़बर भी न होगी। (54) यह आप से अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, और जहन्नम तो इन्कार करने वालों को घेरे में लिए हुए है। (55) जिस दिन अज़ाब उन्हें उनके ऊपर से ढाँक लेगा, और उनके पैर के नीचे से भी और (अल्लाह) कहेगा, “चखो उसका मज़ा जो कुछ तुम करते रहे।” (56) ऐ ‘मेरे’ बन्दो! जो ईमान लाए हो, ‘मेरी’ ज़मीन विशाल है तो तुम ‘मेरी’ ही इबादत करो। (57) हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम हमारी ही ओर लौट कर आओगे। (58) और जो लोग ईमान लाए, और अच्छे अमल करते रहे, उनको ‘हम’ जन्नत के ऊँचे-ऊँचे महलों (ऊपरी मन्ज़िल) में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा बदला है (नेक) अमल करने वालों का? (59) जिन्होंने सब्र किया और अपने ‘रब’ पर भरोसा रखा; (60) और कितने ही जानदार हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते, अल्लाह ही उनको रोज़ी देता है, और तुम को भी, और ‘वह’ सुनने वाला, जानने वाला है।

## आयत नं० 45 से 60 तक की व्याख्या

45

أَتْلَمَ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ \*

यानी कुर्आन की तिलावत करते रहिए ताकि दिल मज़बूत और क़वी रहे, तिलावत का अज़्र व सवाब अलग हासिल हो। दूसरे लोग भी सुनकर उसके इल्म व बरकात से फायदा उठाएँ जो न मानें उन पर अल्लाह की हुज्जत मुकम्मल हो और दअवत व इस्लाह का फ़र्ज अदा होता रहे।

नमाज़ का बुराईयों से रोकना दो तरह से हो सकता है। एक नमाज़ में अल्लाह तआला ने ख़ासियत व तासीर यह रखी है कि नमाज़ी को गुनाहों और बुराईयों से रोक दे। जैसे किसी दवा का इस्तेमाल करने से बुखार वगैरह रुक जाता है। ऐसी सूरत में याद रखना चाहिए कि दवा के लिए ज़रूरी नहीं कि उस की एक ही खुराक बीमारी को रोकने के लिए काफी हो, कुछ दवाएँ ख़ास मिक्दार में एक मुद्दत तक खानी पड़ती हैं, तब उन का ख़ास असर ज़ाहिर होता है जबकि मरीज़ किसी ऐसी चीज़ का इस्तेमाल न करे जो उस दवा की ख़ासियत के खिलाफ हो, तो नमाज़ भी बिलाशुब्हा बड़ी क़वी तासीर दवा है जो रूहानी बीमारियों को रोकने में बड़ी अहम है। हाँ, ज़रूरत इस की है कि ठीक मिक्दार में उस एहतिyत के साथ हो, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बताया हो, एक मुद्दत तक उस पर अमल किया जाए।

उस के बाद मरीज़ खुद महसूस करेगा कि नमाज़ किस तरह उस की पुरानी बीमारियों और बरसों के रोग को दूर करती है।

दूसरे यह कि नमाज़ का बुराईयों से रोकना यानी नमाज़ की हर हालत और उस का हर ज़िक्र ऐसा

है कि जो इन्सान बारगाहे इलाही से अपनी बन्दगी, फरमाँबरदारी, खुजूअ और अल्लाह तआला की रुबूबियत, उलूहियत और हुक्मत व शहन्शाही का इज्हार व इक़्रार कर के आया हो, वह मस्जिद से बाहर आकर भी वादा ख़िलाफी और शरारत न करेगा और उस शहन्शाह के हुक्म की नाफरमानी न करेगा।

यानी नमाज़ की हर अदा नमाज़ी को पाँच वक़्त हुक्म देती है कि ऐ बन्दगी! और गुलामी का दावा करने वाले वाकई बन्दों और गुलामों की तरह रहो और नमाज़ माँग करती है कि बेहयाई और शरारत व सरकशी से बाज़ आ जाए। अब कोई रुके या न रुके, मगर नमाज़ बिलाशुब्हा उसे रोकती और मना करती है, जैसे अल्लाह तआला खुद रोकता और मना फ़रमाता है।

कमा काल तआला **إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ**

(सूर: नहल-90)

कुछ बद्बख़्त अल्लाह तआला के रोकने और मना करने पर बुराई से नहीं रुकते, नमाज़ के रोकने पर भी उन का न रुकना तअज़्जुब से खाली नहीं। हाँ, यह स्पष्ट रहे कि हर नमाज़ का रोकना और मना करना उसी दर्जे तक होगा जहाँ तक उस के अदा करने में खुदा की याद से ग़फ़लत न हो, क्योंकि नमाज़ केवल उठने-बैठने का नाम नहीं, सब से बड़ी चीज़ उस में अल्लाह की याद है।

नमाज़ी नमाज़ अदा करते वक़्त और क़िरात कुर्आन या दुआ व तस्बीह की हालत में जितना अल्लाह तआला की अज़मत व जलाल को ज़बान व दिल से मिलाता रहेगा उतना ही उस का दिल नमाज़ के मना करने की आवाज़ को सुनेगा और उसी क़दर उस की नमाज़ बुराईयों को छुड़ाने में असरदार साबित होगी, वरना जो नमाज़ दिल की ग़फ़लत से अदा हो, वह नमाज़ मुनाफ़िक़ की तरह है। जिसे हदीस में इस तरह फ़रमाया:-

**”لَمْ يَزِدْهَا مِنْ اللَّهِ إِلَّا بُعْدًا“** ऐसी ही नमाज़ के **”لَا يَذْكُرُ اللَّهَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا“**

वज़ीद आई है।

यानी नमाज़ बुराई से क्यों न रोके, जबकि वह अल्लाह तआला के याद करने की बेहतरीन सूरत है। **وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِلذِّكْرِ** (सूर: ताहा-14)

अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। यह वह चीज़ है जिसे नमाज़ और जिहाद वग़ैरह तमाम अ़िबादात की रुह कह सकते हैं। यह न हो तो अ़िबादात क्या, एक बिना रुह वाला जिस्म और बे अर्थ वाला शब्द है।

‘हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु’ वग़ैरह की अहदीस को देखकर उल्मा ने यही फैसला किया है कि ज़िक्रुल्लाह (अल्लाह की याद) से बढ़कर कोई अ़िबादात नहीं, अस्ली फ़ज़ीलत उसी को है, यूँ वक़्ती तौर पर कोई अ़मल ज़िक्रुल्लाह से बढ़ जाए तो वह दूसरी बात है, लेकिन ग़ौर किया जाए तो मानना पड़ेगा कि इस अ़मल में भी जान उसी ज़िक्रुल्लाह की वजह से आई है, बहरहाल ज़िक्रुल्लाह तमाम अ़माल से अफ़ज़ल है और जब वह नमाज़ में हो तो वह भी बेहतर होगा, बस बन्दे को चाहिए कि किसी वक़्त खुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न हो, ख़ास तौर से जिस वक़्त किसी बुराई की तरफ़ मैलान हो फ़ौरन अल्लाह तआला की अज़मत व जलाल को याद कर के उस से रुक जाए।

कुर्आन व हदीस में है कि बन्दा जब अल्लाह तआला को याद करता है, तो अल्लाह तआला उस को याद फरमाता है। कुछ लोगों ने आयत का यही मतलब लिया है कि नमाज़ में बन्दा अल्लाह को याद करता है इसलिए नमाज़ बड़ी चीज़ हुई, लेकिन इस के जवाब में जो उधर से अल्लाह तआला अपने बन्दे को याद फरमाता है यह उस से बड़ी चीज़ है, जिस की बड़ी कद्र करनी चाहिए और यह शर्फ व करामत महसूस कर के और ज़्यादा ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ राग़िब होना चाहिए। किसी शख्स ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि इस्लाम के अहक़ाम बहुत हैं, मुझे कोई एक जामेअ चीज़ बतला दीजिए, फरमाया:-

«لَا تَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ» (तेरी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहनी चाहिए।)

यानी जो आदमी जितना अल्लाह को याद रखता है या नहीं रखता अल्लाह सब को जानता है, इसी तरह ज़ाकिर और ग़ाफ़िल के साथ उस का मामला अलग होगा।

46

وَلَهُ تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالْبَيِّنَاتِ ۖ أَحْسَنُ ۚ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَإِنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَالْهِنَا وَالْهِنَا وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝

यानी मुशिरकों का दीन शुरु से ग़लत है और अहले किताब का दीन शुरु से सच्चा है, तो इन से उन की तरह मत झगड़ो कि उन की बात काटने लगो बल्कि नमी, खैर ख़्वाही और सब्र से बात समझाओ। अलबत्ता जो उन में खुली बेइन्साफी और हठधर्मी पर तुल जाएँ उन के साथ मुनासिब सख़्ती का बर्ताव कर सकते हैं।

पहले कुर्आन की तिलावत का हुक्म था, हो सकता है कि इन्कारी उसे सुनकर उलझने लगे हों तो कहा गया है कि इन्हें बतला दीजिए कि बहस के वक़्त अगले की इल्मी व दीनी हैसियत का ख़याल रखो, जोश में सदाक़त व अख़्लाक की हद से न निकलो, जितनी सच्चाई हो उस का एतिराफ़ करो।

यानी हमारा जैसा कि कुर्आन पर ईमान है इस पर भी ईमान है कि अल्लाह ने तुम्हारी हिदायत के लिए हज़रत मूसा व हज़रत ईसा (अलै०) और दूसरे अम्बिया पर जो किताबें उतारीं बेशक वह सच्ची थीं, एक अक्षर उन का ग़लत न था। (यानी तुम्हारे हाथ में वह आसमानी किताबें अपनी अस्ली सूरत व हकीकत में बाकी न रहीं।)

यानी असली मअबूद हमारा तुम्हारा एक है। फ़र्क केवल इतना है कि हम तन्हा उसी के हुक्म पर चलते हैं, तुम ने उस से हटकर दूसरों को भी खुदाई के हुक्म व अख़्तियारात दे दिये। जैसे- हज़रत मसीह या हज़रत उज़ैर (अलै०) को। हम ने उन के तमाम अहक़ाम को माना, सब पैग़म्बरों की तस्दीक़ की, सब किताबों को बरहक़ समझा उस के आख़िरी हुक्म के सामने सर झुका दिया, तुम ने कुछ न माना और आख़िरी सच्चाई से इन्कारी हो गए।

47

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۖ وَلَا يَجِدُ إِلَّا الْكَافِرُونَ ۝

यानी इस किताब में आखिर तुम्हारी किताबों से कौन सी बात कम है जिसे कुबूल करने में शक करते हो। जिस तरह पिछले अम्बिया पर किताबें और सहीफे एक दूसरे के बाद उतारते रहे, आखिरी पैगम्बर पर यह किताब लाजवाब उतरी, तो इस के मानने से इतना इन्कार क्यों है?

यानी जिन अहले किताब ने अपनी किताब ठीक समझी वह इस किताब को भी माँनेंगे और इन्साफ़ से मानना भी चाहिए। चुनाँचे इन में के जो अच्छे लोग हैं वह इस की सदाक़त दिल से तस्लीम करते हैं और न सिर्फ़ अहले किताब बल्कि कुछ अरब के लोग भी जो पिछली किताबों का कुछ इल्म नहीं रखते, इस कुर्आन को मानते जा रहे हैं। हकीक़त में कुर्आन करीम की सच्चाई के दलायल इतने रौशन हैं कि कोई इस को कुबूल करने से इन्कार नहीं कर सकता।

48

وَمَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكُمْ إِذَا لَقْتُمُ الْكِتَابَ الْمُبِينُ

नुज़ूले कुर्आन से पहले आप की उम्र के चालीस साल इन्हीं मक्का वालों के बीच गुज़रे। सब जानते हैं कि इस मुद्दत में न आप किसी उस्ताद के पास बैठे, न कोई किताब पढ़ी, न कभी हाथ में क़लम पकड़ा, ऐसा होता तो यह कहते कि मुहम्मद ने शायद अगली किताबें पढ़कर यह बातें नोट कर ली होंगी, उन्हीं को अब अपनी जबान में ढाल कर सुना देते हैं।

यानी उस वक़्त भी यह कहना ग़लत होता, क्योंकि कोई पढ़ा-लिखा इन्सान बल्कि दुनिया के तमाम पढ़े लिखे लोग मिलकर और दूसरी मख़्लूक की ताक़त को अपने साथ मिलाकर भी ऐसी बेनज़ीर किताब तैयार नहीं कर सकते, लेकिन झूठों को बात बनाने का एक मौक़ा हाथ लग जाता, जबकि आप का उम्मी (अनूपढ़) होना सामने था, तो इस सरसरी शुब्हे की जड़ कट गई।

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا (सूर: फ़ुर्कान: 5)

49

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ

यानी पैगम्बर ने किसी से लिखा पढ़ा नहीं, बल्कि यह वक़्त जो उन पर आई हमेशा बिना लिखे भी सीना बसीना जारी रहेगी। अल्लाह के फ़ज़ल से उल्मा और हुपफ़ाज़ के सीने उस के शब्दों की हिफ़ाज़त कर रहे हैं और जो आसमानी किताबें थी, वह पूरी तरह हिफ़ज़ (याद) न होती थीं। यह किताब हिफ़ज़ (याद करने) ही से बाकी है, लिखना उस पर अलग से है।

यानी नाइन्साफ़ी का क्या इलाज। एक शख़्स यही ठान ले कि मैं कभी सच्ची बात न मानूँगा, वह रौशन से रौशन चीज़ का भी इन्कार कर देगा।

50

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ

यानी मेरे कब्जे में नहीं कि जो निशान तुम तलब किया करो वही दिखला दिया करूँ, न किसी नबी की तस्दीक़ इस बात पर हो सकती है। मेरा काम तो यह है कि बुराई के नतायज से तुम को साफ़ शब्दों में आगाह करता रहूँ बाकी अल्लाह तआला मेरी तस्दीक़ के लिए जो निशान चाहे दिखला दे, यह उस के



अख्तियार में है।

**51** **أُولَٰئِكَ يَكْفِيهِمْ أَنَّا أُنْزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُثْلِي عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝**

यानी क्या यह निशानी काफी नहीं जो किताब उन को रात-दिन पढ़कर सुनाई जाती है उस से बड़ी निशानी कौन सी होगी। देखते नहीं कि इस किताब के मानने वाले किस तरह समझ हासिल करते जाते हैं और अल्लाह की रहमत हासिल कर रहे हैं।

**52** **قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَٰهِيدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللّٰهِ اُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝**

यानी अल्लाह की ज़मीन पर उस के आसमान के नीचे मैं एलानिया दअवत दे रहा हूँ जिसे वह सुनता और देखता है, फिर मुझे और मेरे साथियों को ग़ैर मामूली तरीके से बढ़ा रहा है, बराबर लोग मेरे दावे की तस्दीक करते हैं, मेरी ज़बान पर और हाथों से वह चमत्कार ज़ाहिर किये जाते हैं जिन की मिसाल पेश करने से तमाम जिन्न व इन्स बेबस हैं। क्या मेरी सच्चाई पर अल्लाह की यह गवाही काफी नहीं?

**53** **وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَا اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝**

कहते हैं कि अगर हम ग़लती पर हैं तो हम पर दुनिया में कोई आफ़त क्यों नहीं आती?  
यानी हर चीज़ अपने वक़्त पर आती है घबराओ नहीं, वह आफ़त भी आकर रहेगी।

**54** **يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝**

यहाँ अज़ाब से शायद आख़िरत का अज़ाब मुराद हो, जैसा कि जवाब से ज़ाहिर है। यानी आख़िरत का अज़ाब तो बेवकूफी की वजह से माँगते हैं, उस अज़ाब में तो पड़ेंगे ही। यह कुफ़्र और बुरे काम दोज़ख़ नहीं तो और क्या हैं जिस ने हर तरफ़ से उन्हें घेर रखा है, मौत के बाद हकीकत खुल जाएगी कि दोज़ख़ किस तरह जलाती है, जब यही अमाल जहन्नम की आग और साँप बिच्छू बनकर लिपटेंगे।

**55** **يَوْمَ يَغْشَاهُمْ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝**

उस दिन वह अज़ाब ही बोलेगा, जैसे-ज़कात न देने वाले का माल। हदीस में आया है कि साँप बनकर गले में लिपटेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ तेरा ख़ज़ाना हूँ।

**56** **يُعَادَى الدِّينَ اٰمَنُوْا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةً لِّاَيّٰى فَاَعْبُدُوْا ۝**

यानी यह मक्का के काफ़िर अगर तुम को तंग करते हैं तो अल्लाह की ज़मीन तंग नहीं, दूसरी जगह जाकर अल्लाह की अ़िबादत करो।

**57-58** **كُلُّ نَفْسٍ ذَٰئِقَةُ الْمَوْتِ ۚ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّلَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ نِعَمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝**

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं, “जब काफ़िरो ने मक्का में बहुत परेशान किया तो मुसलमानों को हिज़रत का हुक्म हुआ, चुनौचे अस्सी तिरासी लोग ‘हब्शा’ चले गए। इस में मुहाजिरीन को तसल्ली दी गई है कि वतन छोड़ना दिल पर भारी न गुज़रे यानी वतन अज़ीज छोटे बड़े आज नहीं, कल छूटेंगे।

फ़र्ज़ करो इस वक़्त मक्का से हिज़रत न की तो एक रोज़ दुनिया से हिज़रत करना ज़रूरी है, मगर वह बेअख़्तियार होगा। बन्दगी इस का नाम है कि अपनी खुशी और अख़्तियार से उन चीज़ों को छोड़ दे जो परवरदिगार हकीकी की बन्दगी में रुकावट बनते हैं।

**59**

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

यानी जो सब्र व ईमान की राह पर जमे रहे और अल्लाह पर भरोसा कर के घर-बार छोड़कर वतन से निकल खड़े हुए उन को इस वतन के बदले वह वतन मिलेगा और यहाँ के घरों से बेहतर घर दिये जाएंगे।

**60**

وَكَايْنِ مِنَ دَابَّةٍ لَا تَجِدُ رِزْقَهَا ۖ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

“जानवरों के पास अगले दिन की रोजी नहीं होती, मगर सब को रोजी मिलती है”।

फिर जो अल्लाह जानवरों को रोजी पहुँचाता है, क्या अपने वफ़ादार आशिकों को न पहुँचाएगा? ख़ूब समझ लो हकीकी रिज़्क देने वाला वही है, जो सब की बातें सुनता और दिलों के इख़लास को जानता है। हर एक का ज़ाहिर व बातिन उस के सामने है, किसी की मेहनत बेकार नहीं हो सकती। जो लोग उस के रास्ते में वतन छोड़कर निकले हैं उन्हें ज़ाया नहीं करेगा। रोजी की बहुत ज़्यादा फ़िक्र न करें, कितने जानवर हैं जो अपनी रोजी अपनी कमर पर लादे नहीं फिरते, फिर भी राज़िके हकीकी उन को हर रोज़ रिज़्क पहुँचाता है।

हज़रत उमर (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अगर तुम अल्लाह पर ऐसा तवक्कुल करते जैसा कि करने का हक़ है तो तुम्हें भी उसी तरह रिज़्क दिया जाता जैसे परिन्दों को दिया जाता है, वह सुबह भूखे निकलते हैं और शाम को पेट भर कर आते हैं।” (तिर्मिज़ी)



## आयत नं० 61 से 69 तक

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝  
 عِبَادِ ۖ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنْ أَرَادَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمٌ ۝ وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ  
 اللَّهُ ۖ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ لَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانِ ۚ  
 لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِ دَعَاؤُا اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۝ لَيَكْفُرُوا بِمَا  
 آتَيْنَهُمْ ۚ وَلَيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُحِطُّ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبَالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ  
 اللَّهِ يَكْفُرُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝  
 وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ۝

### अनुवाद-

(61) और अगर तुम इनसे पूछो कि किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और सूरज और चाँद को काम से लगाया, तो कह देंगे, “अल्लाह ने,” तो ये किधर फिरे जाते हैं। (62) अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है, और जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (63) और अगर आप उनसे पूछें कि किसने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो कहेंगे “अल्लाह ने,” कह दीजिए, “तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए हैं, मगर अक्सर लोग समझते नहीं।” (64) और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो केवल दिल का बहलावा और खेल है, और आखिरत का घर ही अस्ल ज़िन्दगी है, क्या ही अच्छा होता कि यह लोग जान लेते? (65) फिर जब यह नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह को उसके दीन के लिए ख़ालिस (निष्ठावान) हो कर पुकारते हैं, फिर ‘वह’ जब उनको छुटकारा देकर खुशकी (थल) की ओर पहुँचा देता है, तो (छुटकारा पाते ही) वह ‘उसका’ साझीदार ठहराने लगते हैं। (66) ताकि जो ‘हमने’ उन्हें दिया है, उससे नाशुक्री करें और मज़े उड़ाएँ, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा। (67) क्या उन्होंने देखा नहीं! कि ‘हमने’ हरम (कअब:) को अमन वाला बनाया, और लोग उनके आस-पास से उचक लिए जाते हैं तो क्या फिर भी बातिल (असत्य) को मानते हैं, और अल्लाह के नेअमत की नाशुक्री करते हैं; (68) और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या हक़ को झुठलाए, जबकि वह उसके पास आ चुका हो? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा? (69) और जो लोग ‘हमारी’ राह में जिहाद (कोशिश) करेंगे ‘हम’ ज़रूर उन पर अपनी राहें खोल देंगे, और अल्लाह भले काम करने वालों के साथ है।

## आयत नं० 61 से 69 तक की व्याख्या

**61**

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝

यानी रिज़क़ के तमाम अस्बाब (माध्यम) उसी ने पैदा किये सब जानते हैं। फिर उस पर भरोसा नहीं

करते कि वही पहुँचा भी देगा मगर जितना वह चाहे, न कि जितना तुम चाहो। यह अगली आयत में समझा दिया गया है।

**62**

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

वह नाप कर देता है, यह नहीं कि बिल्कुल न दे यानी यह ख़बर उसी को है कि किस को कितना देना चाहिए।

हज़रत अम्र (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मैं उस शख्स को माल देता हूँ जिसके दिल में बेचैनी पाता हूँ, हालाँकि जिन को नहीं देता वह मुझे उन से ज़्यादा महबूब हैं जिन्हें मैं देता हूँ”। (बुख़ारी)

**63**

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ تَزَلَّ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَالْحَيَاءُ بِهِ الرِّضَىٰ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

यानी बारिश भी हर एक के लिए बराबर नहीं बरसती और इसी तरह हालात बदलते देर नहीं लगती, वह अचानक फ़कीरी से दौलतमन्द कर देता है।

**64-65**

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ لَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِیَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝  
فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِ دَعَاؤُ اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ

इस आयत में बताया गया है कि यहाँ की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी से ज़्यादा आख़िरत के ज़िन्दगी की फ़िक्र करे कि अस्ली व हमेशा की ज़िन्दगी वही है। दुनिया के खेल तमाशे में डूब कर आख़िरत को भूल न जाए बल्कि यहाँ रहकर वहाँ की तैयारी और आख़िरत के सफ़र के लिए अच्छे अ़माल करे।

**66**

لِيُفَرِّقُوا بَيْنَ الَّذِينَ هُمْ يُشْرِكُونَ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَا يَفْعَلُونَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

यानी चाहिए तो यह था कि इन्सान दुनिया के मज़ों में पड़ कर आख़िरत को न भुलाए, लेकिन लोगों का हाल यह है कि जब कशती तूफ़ान में घिर जाती है तो दिल से अल्लाह को पुकारते हैं, फिर जहाँ आफ़त सर से टली और समन्दर से बाहर क़दम रखा, अल्लाह के एहसानों के इन्कारी हो कर झूठे देवताओं को पुकारना शुरू कर देते हैं।

अल्लाह की नेअ़मतों की नाकद्री करते रहें और दुनिया के मज़े उड़ाते रहें अ़नक़रीब पता लग जाएगा कि इस बगावत, शरारत और एहसान फ़रामोशी का नतीजा क्या हुआ।

**67**

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مِمَّا وَنَحْفُظُ النَّاسَ مِنْ حَوْلِهِمْ أَفَبَالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ

मक्का के लोग क़अ़ब: की वजह से दुश्मनों से बचे हुए थे, हालाँकि सारे मुल्क अ़रब में फ़साद और ख़ून बहाने का बाज़ार गर्म था, मूर्तियों के झूठे एहसान मानते हैं, अल्लाह का यह सच्चा एहसान नहीं मानते।

**68** وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۚ

यानी सब से बड़ी नाइन्साफी यह है कि अल्लाह का शरीक किसी को ठहराए या उस की तरफ वह बातें करे जो उस की शान के लायक नहीं या पैग़म्बर जो सच्चाई लेकर आए हैं उसे सुनते ही झुठलाना शुरू कर दे। क्या इन ज़ालिमों को मालूम नहीं कि इन्कार करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ है? जो ऐसी बेबाकी और बेहयाई से अक्ल व इन्साफ़ के गले पर छुरी फेरने पर आमादा हो गए हैं।

यानी जो लोग अल्लाह के वास्ते मेहनत करते और सख़्तियाँ झेलते हैं और तरह-तरह के मुजाहिदात करते रहते हैं अल्लाह तआला उनको एक खास नूर अता फ़रमाता है और अपने रज़ा की जन्नत की राहें समझाता है। जैसे-जैसे वह मेहनत करते हैं उसी क़दर उन का दर्जा बुलन्द होता जाता है और ऐसी बातें सूझने लगती हैं कि दूसरों को उन का एहसास तक नहीं होता।

**69** وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ۝

यानी अल्लाह की हिमायत व मदद नेकी करने वालों के साथ है।



(भाग-30)

सूर-ए-रूम

(सूर: नं.30)



## आयत नं० 1 से 19 तक

الْمَرَّةَ غَلَبَتِ الرُّومَ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ ۖ فِي بَضْعِ سِنِينَ ۖ يَدِي الْأَمْرِ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدِ ۚ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ۖ بَنَصَرَ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غٰفِلُونَ ۖ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُونَ ۖ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۖ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آسَءُوا السَّوْءَ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ وَكَانُوا بِمَا يَسْتَعْجِلُونَ ۖ اللَّهُ يُبَدِّلُ الْخَلْقَ شَمَّ يَعْصِدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْبِئُ الْمُجْرِمُونَ ۖ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شَمْعَةٌ ۚ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كٰفِرِينَ ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُؤْمِدُ يُتَفَرَّقُونَ ۖ فَآمَنَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَائِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۖ فَسُبْحٰنَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ۖ يُخْرِجُ الْغَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْغَيِّ وَيُخْرِجُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۖ

### अनुवाद-

① अलिफ्- लाम्- मीम् ② रूम (वाले) पराजित हो गये, ③ करीब के इलाके में, और वे अपनी पराजय के बाद बहुत जल्द विजयी हो जाएँगे, ④ कुछ ही साल में, हुक्म तो अल्लाह ही का है पहले भी और बाद में भी, और उस दिन ईमान वाले खुश हो जाएँगे। ⑤ अल्लाह की मदद से, 'वह' जिसकी चाहता है मदद करता है, और 'वही' शक्तिशाली, रहम वाला है। ⑥ और यह अल्लाह का वादा है, और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते; ⑦ यह तो दुनिया की ज़िन्दगी के बाहरी रूप को ही जानते हैं, और आखिरत से ग़ाफ़िल (बेपरवाह) हैं। ⑧ क्या इन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की तमाम चीज़ों को, हक़ के साथ और एक निश्चित समय तक के लिए पैदा किया, और बहुत से लोग तो अपने रब से मिलने का इन्कार ही करते हैं। ⑨ क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं, कि देख लेते कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ, जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे इनसे अधिक शक्तिशाली थे, और उन्होंने ज़मीन को जोता था और इनसे ज़्यादा अधिक आबाद किया था, जैसा इन्होंने आबाद किया उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियाँ लेकर आते रहे, तो अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था, बल्कि खुद ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। ⑩ तो जिन लोगों ने बुरा किया था उनका अंजाम भी बुरा हुआ, क्योंकि अल्लाह की आयतों को झुठलाते, और उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे। ⑪ अल्लाह ही (सृष्टि को) पहली बार पैदा करता है, 'वही' उसको फिर पैदा करेगा, फिर तुम 'उसी' की ओर लौट जाओगे। ⑫ और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी, उस दिन मुजरिम मायूस (निराश) हो जाएँगे; ⑬ और उनके ठहराए हुए साझीदारों में से कोई उनका सिफ़ारिश करने वाला

न होगा, और वे अपने ठहराए हुए साझीदारों का इन्कार करेंगे। (14) और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी, उस दिन वे सब अलग-अलग गिरोह हो जाएंगे। (15) तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे बाग में खुशहाल होंगे; (16) और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और आखिरत की मुलाकात को झुठलाया होगा, तो ऐसे ही लोग अज़ाब के लिए हाज़िर किये जाएंगे। (17) तो अल्लाह की तस्बीह करो, शाम के वक्त भी और सुबह के वक्त भी। (18) और उसी के लिए तमाम तअरीफें हैं आसमानों और ज़मीन में, और पिछले पहर और जब तुम पर दोपहर हो। (19) 'वह' ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से, और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, और इसी तरह तुम निकाले जाओगे।

## आयत नं० 1 से 19 तक की व्याख्या

1-7

الْقَوْمِ الْغَالِبِ الْيَوْمِ فِي الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَلَيْهِمْ سَيَغْلِبُونَ فِي بَضْعِ سِنِينَ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ بَصُرَ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ  
وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ قُمْ غَفُلُونَ

### उबई बिन ख़लफ़ से हार-जीत की बाज़ी

मुफ़स्सिरान ने इन आयात का सबबे नुज़ूल ज़िक्र करते हुए लिखा है कि 'फ़ारस' और 'रोम' के दर्मियान जंग होने की सूरत बन गई थी। अहले 'फ़ारस' जिन का बादशाह 'किसरा' था, यह लोग मुशिरक थे और रूमियों का बादशाह 'कैसर' था, यह लोग अहले किताब थे। अहले इस्लाम की ख्वाहिश थी कि 'रोम' वाले 'फ़ारस' पर ग़ालिब (प्रभावी) हो जाएंगे क्योंकि 'अहले रोम' अहले किताब थे।

मुशिरकीन की ख्वाहिश थी कि फ़ारस वाले अहले रोम पर ग़ालिब आ जाएँ क्योंकि वह मुशिरक थे और कुरैशे मक्का के हम मज़हब थे। 'किसरा' ने भी अपनी फौज भेजी और 'कैसर' ने भी और 'इज़रआत' और 'बुसरा' नामी स्थान पर दोनों लश्करो की मुठभेड़ हुई। यह शाम का इलाका है, जो अरब से करीब है जिस में मुसलमान रहते थे।

जंग के नतीजे में अहले फ़ारस रूमियों पर प्रभावी आ गए। जब यह ख़बर फैली तो मुसलमानों को दुःख हुआ और कुफ़ारे मक्का न सिर्फ़ यह कि खुश हुए बल्कि उन्होंने मुसलमानों से यह भी कहा कि तुम अहले किताब हो और नसारा (ईसाई) यानी रोम भी अहले किताब हैं और हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे रूमी भाईयों पर प्रभावी आ गए। इस से मालूम हुआ कि अगर तुम ने हम से जंग की तो हम भी तुम पर प्रभावी हो जाएंगे।

उस वक्त अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई जिस में यह बता दिया गया कि जल्द ही रूमी लोग फ़ारस के लोगों पर चन्द साल में प्रभावी हो जाएंगे।

यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) फ़रमाते हुए शब्द **يَضَعُ سِنِينَ** फ़रमाया है। शब्द **يَضَعُ** अरबी ज़बान में तीन से लेकर नौ तक की संख्या के लिए प्रयोग होता है। अल्लाह तआला ने बता दिया कि जिस दिन अहले रोम अहले फ़ारस पर ग़ालिब होंगे उस दिन अहले ईमान खुश होंगे।

जब यह आयात नाज़िल हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने मक्का के इन्कारियों से कहा कि तुम आज इस बात पर खुश हो रहे हो कि तुम्हारे हम मज़हब प्रभावी हो गए तुम खुशी न मनाओ। अल्लाह की क़सम हम फ़ारस पर प्रभावी होंगे, जैसा कि हमारे नबी (सल्ल०) ने हमें ख़बर दी है। इस पर 'उबई बिन ख़लफ़' ने कहा कि तुम झूठ कहते हो। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने जवाब में फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! तू झूठा है, चल तू साझेदारी कर ले यानी हम और तुम अपने दर्मियान एक समय मुक़र्रर कर लें और दस-दस ऊँट लेने-देने की ज़िम्मेदारी कुबूल कर लें। अगर इस मुद्दत में रूमी, फ़ारस पर ग़ालिब (प्रभावी) हो गए तो तू मुझे दस ऊँट देगा और अगर अहले फ़ारस ग़ालिब हो गए तो मैं दस ऊँट दूँगा, आपस में इस का मुआहिदा कर लिया गया और तीन साल की मुद्दत (अवधि) तय कर ली गई। (इस वक़्त तक किमार यानी जुआ हराम नहीं था)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) भी नबी अकरम (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और जो मामला और मुआहिदा (प्रतिज्ञा) किया था वह पेश कर दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इश्राद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तो **يَضَعُ سِنِينَ** फ़रमाया है, जिस में तीन से लेकर नौ साल के दर्मियान रूमियों के ग़ालिब होने की ख़बर दी गई है, लिहाज़ा तुम मुद्दत बढ़ा लो और जो आपस में लेन देन तय हुआ है उस में इज़ाफ़ा कर लो।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने फिर 'उबई बिन ख़लफ़' से मुलाक़ात की। 'उबई' ने देखते ही कहा कि तुम ने जो शर्त बांधी है उस पर शर्मिन्दा हो रहे हो। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने फ़रमाया मैं शर्मिन्दा नहीं हूँ अपनी बात पर कायम हूँ बल्कि मुझे मुद्दत और ऊँटों की तअ़दाद में इज़ाफ़ा करना है। इस के बाद आपस में तय कर के नौ साल कर दिया गया और बजाए दस-दस ऊँट देने के हर तरफ़ से सौ-सौ ऊँट देने की बात तय हो गई।

कुछ हज़रात ने फ़रमाया है कि सात साल के अन्दर हार जीत होने पर मामला तय किया गया था। उबई बिन ख़लफ़ को यह ख़ौफ़ हुआ कि कहीं अबू बक्र (रज़ि०) मक्का से बाहर न चले जाएँ, वह उन से आकर कहने लगा कि मुझे तुम ज़मानत दे दो, अगर शर्त में तुम हारे तो तुम्हारे ज़मानत से मुक़र्ररह तअ़दाद में से ऊँट ले लूँगा। इस पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने अपने बेटे अब्दुल्लाह (मुआलिमुल् तन्ज़ील में अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और रुहुल् मअ़ानी में अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु) को जमानतदार बना दिया।

(कुछ अरसे के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) हिज़रत कर के मदीना तय्यिब: तशरीफ़ ले आए) इस के बाद उबई बिन ख़लफ़ को मक्का से निकलने की ज़रूरत पेश आई, वह कुरैशे मक्का के साथ जंगे उहद के मौक़े पर मक्का से रवाना होने लगा। इस पर अब्दुल्लाह बिन बक्र (रज़ि०) ने उस से कहा

तू मुझे ज़मानत दे दे, अगर तेरी हार हो जाए तो तेरे ज़मानत लेने वाले से सौ ऊँट ले लूँ। इसलिए उस ने एक शख्स को ज़मानत लेने वाला बना दिया, उस के बाद यह हुआ कि वाकिआ हुदैबिया के पहले साल, अहले रोम अहले फ़ारस पर ग़ालिब (प्रभावी) आ गए जबकि साझेदारी और अहद (प्रतिज्ञा) को छः साल गुज़र चुके थे और सातवाँ साल शुरू हो चुका था।

(उबई बिन ख़लफ़ इस से पहले ही क़त्ल किया जा चुका था) रूमियों ने जो अहले फ़ारस पर ग़ल्बा पाया तो उस से हज़रत अबू बक्र सिदीक़ (रज़ि०) की जीत हो गई और 'उबई बिन ख़लफ़' के वारिसों से सौ ऊँट वसूल कर लिये गए। हज़रत अबू बक्र सिदीक़ (रज़ि०) यह माल लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस माल को सद्क़ः कर दो।

(मुआलिमुल् तन्ज़ील भाग 3 पेज नं० 475)

इस सिलसिले में और भी बहुत सी रिवायात हैं जिन्हें हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) ने अपनी तफ़सीर में ज़िक्र किया है। रुहुल् मअानी में सुनन तिर्मिज़ी से नक़ल किया गया है कि ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर रूमियों ने अहले फ़ारस पर ग़ल्बा पाया”।

इमाम तिर्मिज़ी (रह०) ने इस की सनद को हसन बताया है। ग़ज़्व-ए-बद्र 2 हिज़्री में हुआ था, इस बात को सामने रखते हुए यूँ कहा जाएगा कि हज़रत अबू बक्र सिदीक़ (रज़ि०) ने 'उबई बिन ख़लफ़' ही से सौ ऊँट वसूल किये क्योंकि 'उबई बिन ख़लफ़' की मौत रसूलुल्लाह (सल्ल०) के नेज़ा (भाला) मारने से हुई थी। यह वाकिआ 'ग़ज़्व-ए-उहद' का है जो 3 हि० में पेश आया था।

चूँकि ऊपर ज़िक्र की गई बातें जुआ हैं, इसलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस को सद्क़ः करने का हुक्म फ़रमाया है। जिस वक़्त मुआहिदा किया था उस वक़्त किमार यानी जुआ ह़राम न था, जिस वक़्त माल वसूल हुआ उस वक़्त किमार जुआ की हुरमत नाज़िल हो चुकी थी, यह वजह सद्क़ः का हुक्म फ़रमाने की समझ में आती है और यह भी मुम्किन है कि उस वक़्त तक हुरमत नाज़िल न हुई हो यूँ ही मुसलमानों की आम ज़रूरतों में खर्च करने का हुक्म फ़रमाया हो और बाज़ रिवायात में इस के लिए जो शब्द ह़राम आया है अगर सही हो तो मकरुह और नापसन्दीदह के अर्थ में लिया जाएगा। (साहिबे रुह)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ

अल्लाह ही के लिए अख़्तियार है पहले भी और बाद में भी) यानी जो कुछ पहले हुआ कि अहले फ़ारस प्रभावी हुए और रूमी हार गए और जो उस के बाद होगा कि रूमी ग़ालिब (प्रभावी) होंगे और इस के अलावा जो कुछ भी वजूद में आएगा वह सब अल्लाह तआला ही के अख़्तियार से होगा और उसी की कुदरत का मुज़ाहि़रा होगा।

وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ بِبَصْرِ اللَّهِ

(और जिस दिन रूमी अहले फ़ारस पर प्रभावी होंगे, मोमिन (अल्लाह पर आस्था रखने वाले) बन्दे अल्लाह की मदद के साथ खुश होंगे) मोमिनीन की खुशी एक तो इस एतिबार से होगी कि उन्होंने कुपफ़ारे मक्का को जो बताया था कि जल्द ही अहले रोम अहले फ़ारस पर ग़ालिब होंगे, इस बात की सच्चाई

सब के सामने आ जाएगी और यूँ भी खुशी होगी कि इन्हीं दिनों में बद्र (जगह का नाम है) का वाकिआ पेश आएगा।

शब्द **يُضَرِّقُ** का तअल्लुक इन सब बातों से हो सकता है क्योंकि इन सब में अल्लाह तआला की मदद हुई। **يُنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ** (वह जिस की चाहे मदद फ़रमाए) जिसे चाहे ग़ालिब (प्रभावी) करे जिसे चाहे हरा दे। इस में मुसलमानों की आइन्दा मदद होने की तरफ़ भी इशारा हो गया, इसलिए बाद में अल्लाह तआला की तरफ़ से बराबर मदद होती है।

**وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ** (अल्लाह ज़बरदस्त रहम फ़रमाने वाला है)

जिसे चाहे ग़ल्बा दे और जिस पर चाहे रहम फ़रमा दे, कोई उसे रोकने वाला नहीं।

**وَعَدَ اللَّهُ** (अल्लाह ने वादा फ़रमाया है)

**لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ** (अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाता।

**وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ** (लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते)

न उन को अल्लाह के कादिर होने का इल्म है और न अल्लाह तआला के वादों पर यकीन है, केवल ज़ाहिरी अस्बाब को देखते हैं। ख़ालिके कायनात की सिफ़ात कुदूरत, दअवत, रहमत और सच्चे वादे को नहीं जानते।

## दुनियावी इल्म और जिहालत

**يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا** (यह लोग दुनिया वाली ज़िन्दगी के ज़ाहिर को जानते हैं।)

**وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَافِلُونَ** (और वह आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं।)

यहाँ जिन लोगों के हक़ में **يَعْلَمُونَ** फ़रमाया, उन्हीं के हक़ में **يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا** भी फ़रमा दिया। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात (गुण) और उस की कुदूरत को न जानना और उस की मअरिफ़त हासिल न करना जिहालत है। अल्लाह तआला की ज़ात का इल्म हासिल न हो और दुनियावी ज़िन्दगी के अस्बाब को जानते हों, नई-नई चीज़ें ईजाद करते हों, दुनियावी तरक्की में आगे बढ़ गए हों और माल जमा करने के तरीकों से वाकिफ़ हों, लेकिन अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात (गुणों) को न जानते हों और आख़िरत से ग़ाफ़िल हों (जहाँ हमेशा ज़िन्दगी मिलेगी जिस की ख़बर अल्लाह तआला की किताबों और रसूलों ने दी है) तो ऐसे लोग अस्हाबे इल्म नहीं हैं।

इन्सान की अस्ल ज़रूरत अल्लाह की रज़ा हासिल करते हुए आख़िरत के अज़ाब से बचना और जन्नत की नेअमतों से मालामाल होना है। जो शख्स अल्लाह तआला की किताबों पर ईमान न लाया और अपनी आख़िरत के लिए फ़िक्रमन्द न हुआ, वह शख्स दुनिया के अस्बाब को कितना ही जानता और समझता हो साहिबे इल्म और साहिबे अक्ल नहीं है।

सूर: आले इमरान (आयत नं० 190/191) में फ़रमाया:-

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَالاختلافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقُوَّةً ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۖ وَتَتَنَبَّهُونَ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ

(बिलाशुब्हा आसमानों और ज़मीनों के पैदा फ़रमाने में ज़रूर निशानियाँ हैं अक्ल वालों के लिए। जो अल्लाह को याद करते हैं खड़े भी, बैठे भी और लेटे भी, वह आसमानों और ज़मीनों के बारे में फ़िक्र करते हैं।) इस आयते शरीफ़ा में उन लोगों को अक्ल वाला फ़रमाया है जो अल्लाह की याद में लगे रहते हैं और आसमान व ज़मीन की पैदाइश के बारे में फ़िक्र करते हैं यानी उन के वजूद को देखकर अल्लाह तआला की ज़ात और गुणों की जानकारी हासिल करते हैं। जो लोग दुनिया में दिल लगाए होते हैं चाहे वह कैसी ही मशीनें ईजाद करते हों और दुनिया को तरक्की देने में मशहूर हों, वह हकीकी तौर पर साहिबे अक्ल नहीं है। (सूर: जुमर आयत नं० 9) में फ़रमाया:-

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ

(आप फ़रमा दीजिए क्या वह लोग बराबर हैं जो जानते हैं और जो नहीं जानते, बस अक्ल वाले ही नसीहत हासिल करते हैं।)

जिस का इल्म अल्लाह तआला की पहचान न सिखाए, उस के रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाने पर आमादा न करे और आखिरत का फ़िक्रमन्द न बनाए उस का दुनियावी इल्म इस लायक नहीं है कि उसे इल्म कहा जाए।

8

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ سَمَّاخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَدَّدٍ وَأَجَلٍ مُّسَدَّدٍ وَإِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ بِرَبِّهِمْ لَكَاذِبُونَ

## आसमान व ज़मीन में फ़िक्र करने की दअवत

कुर्आन करीम के पहले मुखातब मुश्रिकीने अरब थे। इन आयात में उन को और उन के बाद आने वाले पूरी दुनिया के इन्सानों को ग़ौर व फ़िक्र की दअवत दी गई थी। पहले तो यह फ़रमाया कि उन लोगों को यह सोचना चाहिए कि यह जो आसमान व ज़मीन अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाए और उन के दर्मियान जो कायनात है उस को वजूद बख़्शा, यह सब यूँ ही नहीं है।

अल्लाह तआला ने उन को हक़ के साथ पैदा फ़रमाया यानी उनके पैदा फ़रमाने में बड़ी हिक्मतें हैं और बात यही है कि उन को एक तय की हुई मुद्दत तक के लिए वजूद बख़्शा है, यह सब चीज़ें दुनिया के मालिक को पहचानने के लिए हैं, इस की एक मुद्दत तय है।

जब क़ियामत आएगी तो आसमान फट जाएगा, ज़मीन फैला दी जाएगी और जो कुछ ज़मीन के अन्दर है वह उसे बाहर निकाल देगी, पहाड़ रुई के गालों की तरह उड़ते फिरेंगे, ज़िन्दे मर जाएँगे। फिर अल्लाह तआला के पास पेशी होगी और आमाद का इन्आम (Gift) या सज़ा सामने आएगी। जिस ने आसमानों व ज़मीन को और उन के दर्मियान की चीज़ों को पैदा फ़रमाया है जिस में इन्सान भी हैं उस ने पैदा फ़रमाया, उस ने ज़िन्दगी बख़्शी, फिर मौत देगा, फिर ज़िन्दा फ़रमाएगा।

अल्लाह तआला के जो मोमिन (अल्लाह पर आस्था रखने वाले) बन्दे हैं, वह उस पर ईमान लाते



हैं और बहुत से लोग आखिरत को नहीं मानते और जो अपने रब की मुलाकात का इन्कार करने वाले हैं।

इन इन्कारियों में वह भी हैं जो क़ियामत के कायल नहीं और वह लोग भी हैं जिन के नज़्दीक इन्आम (Gift) व सज़ा का थोड़ा सा तसव्वुर है। कुछ लोगों ने जज़ा व सज़ा के लिए अपने तौर पर आवागमन का अक़ीदा बना रखा है और कुछ लोग कहते हैं कि यह दुनिया यूँ ही रहेगी। इन सब लोगों को नसीहत कर दी गई है, मानें या न मानें यह दुनिया एक वक़्त मुक़र्ररह (निश्चित अवधि) तक बाक़ी रहेगी, फिर इस का ख़ात्मा कर दिया जाएगा और अल्लाह तआला के यहाँ पेशी होगी, लिहाज़ा हर शख़्स फ़िक्रमन्द हो और अपनी जान की सलामती और क़ियामत के दिन निजात (कामियाबी) के लिए सोचे।

**9** **أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَمِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ**

### ज़मीन पर चल फिर कर देखें

इस के बाद फ़रमाया **أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ** क्या इन लोगों ने ज़मीन में चल फिर कर नहीं देखा, ताकि पुराने लोगों के हालात से नसीहत हासिल करते। इन से पहले जो लोग थे वह इन से ज़्यादा ताक़त वाले थे, उन्होंने ज़मीन को जोता और बोया, बीज डाला और उस की पैदावार को अपने काम में लाए। खेती-बाड़ी के अलावा भी उन्होंने ज़मीन को आबाद किया, अपने मकानात बनाए क़िला तअमीर किया, बागात लगाए नहरें जारी कीं और बहुत कुछ किया, लेकिन वह सब को छोड़कर चले गए।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल (सन्देश) भेजे जो उन के पास हक़ की दअवत ले कर आए लेकिन उन लोगों ने नहीं माना, आख़िर में फ़ना के घाट उतर गए। उन के क़िलों और महल्लात के खण्डरात अभी तक दुनिया में मौजूद हैं, देखने वाले उन्हें देखकर नसीहत हासिल कर सकते हैं।

अल्लाह तआला ने जो उन को हलाक फ़रमाया उस का सबब उनका अपना जुल्म था, वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे, उन्होंने अपने पैदा करने वाले को नहीं माना, उसके रसूलों को झुठलाया, मोअजिज़ात सामने आने पर भी कुफ़्र पर अड़े रहे, उन के अमल ही उनकी बर्बादी का सबब बने।

**10** **ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ اسَاءُوا السَّوْأَىٰ أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَكْبِرُونَ**

**ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ** फिर दुनियावी हलाकत के बाद मौत के बाद भी बुरे कामों में लगने वालों का बुरा अन्जाम होगा क्योंकि उन लोगों ने अल्लाह तआला की आयात को झुठलाया ही नहीं उन का मज़ाक़ भी उड़ाया, उन के अपने अमाल ही मौत के बाद सज़ा का सबब बन गये।

**11-19** **اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْبِئُ الْمُجْرِمُونَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ ۝ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُؤْمِرُ بِكُمْ يَتَفَرَّقُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ**

كُفِّرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۝ فَسَبِّحْ لِلَّهِ جَمِيعَ  
 ثَمْسُونَ ۝ وَجَمِيعَ ثَمْسُونَ ۝ وَلَهُ الْحُكْمُ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَجَمِيعَ ثَمْسُونَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ  
 مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُخْرِجُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

## क़ियामत के दिन

इन आयात में पहले तो यह बयान फरमाया कि अल्लाह तआला मख्लूक (सृष्टि) को पैदा फरमाता है, फिर जब सब मर जाएँगे तो दोबारा ज़िन्दा फरमा देगा और यह दोबारा ज़िन्दा होना क़ियामत के दिन होगा, मरने वाले ज़िन्दा होकर उस दिन हिसाब-किताब के लिए अल्लाह तआला ही की तरफ लौट जाएँगे।

इस के बाद मुजरिमीन की हालत, कि जब क़ियामत कायम होगी तो वह नाउम्मीद हो जाएँगे, उन मुजरिमों में मुशिरक भी होंगे जिन्होंने दुनिया में मख्लूक को अ़िबादत में अल्लाह का शरीक बना रखा था और यह समझते थे कि यह हमारे लिए सिफ़ारिश करेंगे, उन में से कोई भी उन की सिफ़ारिश नहीं कर सकेगा बल्कि सिफ़ारिश के उम्मीदवार खुद ही इन्कारी हो जाएँगे और यूँ कहेंगे कि हम तो मुशिरक थे ही नहीं।

इस के बाद फरमाया कि जिस दिन क़ियामत कायम होगी उस दिन हाज़िर होने वाले मुख़्तलिफ़ हालतों में होंगे, अहले ईमान की हालत अहले कुफ़्र की हालत से मुख़्तलिफ़ (भिन्न) होगी, जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किये वह तो बहिश्त (जन्नत) के बाग़ों में खुश व खुर्रम होंगे और जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह तआला की आयात को झुठलाया, क़ियामत के दिन की मुलाक़ात को न माना, यह लोग अज़ाब की हालत में हाज़िर कर दिये जाएँगे।

## अल्लाह तआला की तस्बीह का हुक्म

इस के बाद अल्लाह तआला की पाकी बयान करने का हुक्म दिया गया, कि शाम और सुबह के वक्त दिन के पिछले वक्तों में और जुह के वक्त अल्लाह की पाकी बयान करो। इन वक्तों में अल्लाह की तस्बीह बयान करने का हुक्म देते हुए दर्मियान में यह भी फरमा दिया कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह तआला ही की हम्द (तअरीफ़) है यानी आसमानों में फ़रिश्ते और ज़मीन में अहले ईमान, अल्लाह तआला की तअरीफ़ बयान करते हैं और जो लोग कुफ़्र वाले यानी इन्कारी हैं उन का अपना वजूद ही अल्लाह तआला की हम्द (तअरीफ़) बयान करने के लिए काफ़ी है यानी ज़बान से उस की हम्द बयान करते हों।

जैसा कि सूर: नूर में फरमाया:-

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَالْظَّالِمُ طَغَىٰ ۚ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۚ

(क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं परिन्दे भी जो पर फैलाए हुए हैं, हर एक ने अपनी नमाज़ और तस्बीह को जान लिया है) यूँ तो हर वक्त ही अल्लाह तआला की तस्बीह और तम्हीद में मशगूल रहना चाहिए लेकिन चूँकि तहज़ुद खास वक्त

में है, इसलिए उसमें तस्बीह का हुक्म दिया गया है।

‘साहिबे रुहुल् मअानी’ फरमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से सवाल किया गया कि कुर्आन मजीद में पाँच नमाज़ों का किस जगह ज़िक्र है? तो उन्होंने यह आयत पढ़ कर बताया कि **तूमसूना** से मग़िब की नमाज़, **तुस्बिहूना** से सुबह की नमाज़, **अशिय्यन** से अस्म की नमाज़ और **तुज़ाहिरूना** से जुह की नमाज़ मुराद है।

इस तरह आयते शरीफ़ा में चार नमाज़ों का ज़िक्र आ गया और पाँचों नमाज़ साबित करने के लिए उन्होंने सूर: नूर की एक आयत का यह हिस्सा पढ़ दिया **‘वमिम बअदि सलातिल् अ़िश़ा’** और एक रिवायत में यूँ है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फरमाया कि लफ़ज़ **‘तूमसूना’** ही से मग़िब और अ़िश़ा दोनों मुराद हैं और इसी आयत से पाँचों नमाज़ों को साबित कर दिया।

नमाज़ चूँकि अफ़ज़ल अमाल है और इस में अल्लाह का ज़िक्र है, इसलिए इन अवक़ात में आम ज़िक्र के अलावह फ़र्ज़ नमाज़ों का एहतिमाम करने का भी खुसूसियात के साथ हुक्म फरमाया।

हज़रत उबादह बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया कि पाँच नमाज़ें हैं जो अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ फरमाई हैं। जिस ने इन नमाज़ों को अच्छी तरह अदा किया और उन को वक़्त पर पढ़ा और उन का रुकूअ और सज्द: पूरा किया, ऐसे शख्स के लिए अल्लाह तआला का वादा है कि वह उसकी मग़ि़रत फरमा देगा और जिस ने ऐसा न किया तो उस के लिए अल्लाह तआला का कोई वादा नहीं, अगर चाहे तो वह उस की मग़ि़रत फरमा दे और चाहे तो उसे अज़ाब दे।

(रवाहु अहमद व अबू दाऊद कमा फ़िल् मिश्कात)

शब्द **‘अ़शी’** अरबी भाषा में ज़वाल से लेकर सूरज के डूबने तक के लिए बोला जाता है, जिस का अर्थ हम ने ‘दिन के पिछले अवक़ात’ से किया है। आयते शरीफ़ा में यह शब्द **وَحِينَ ظَهَرُوا** से पहले आया है और इस से अस्म का वक़्त मुराद लिया है।

कुछ ने इस में यह नुक्ता बताया है कि नमाज़े अस्म चूँकि सलाते वुस्ता है और इस की अदायगी के लिए ख़ास ताकीद आई है और चूँकि यह वक़्त आमतौर से कारोबार का होता है और इस में मशगूलियत की वजह से नमाज़ से गाफ़िल हो जाते हैं। (जैसा कि बाज़ारों में देखा जाता है कि आम हालात में नमाज़ों का एहतिमाम करने वाले भी नमाज़ छोड़ बैठते हैं) इसलिए इस का ज़िक्र पहले फरमाया।

**يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ** (अल्लाह तआला मुर्दा को ज़िन्दा से और ज़िन्दा को मुर्दा से पैदा करता है) इस आयत में अल्लाह तआला की कुदरत को बयान फरमाया गया है कि वह जानदार को मुर्दा से और मुर्दा को जानदार से निकालता है।

मुफ़स्सिरीन ने फरमाया है, मुर्दा से नुत्फ़ा (वीर्य) मुराद है जो बेजान है और कुछ हज़रात ने इस की मिसाल बच्चे और अण्डे से दी है, बच्चे को अण्डे से और अण्डे से परिन्दे को निकालता है।

**وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا** (और ज़मीन को उस के मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा फरमाता है) यानी जब ज़मीन खुश्क होकर मुर्दा हो जाती है तो उस में जान ही नहीं रहती जिस से खेती और घास वगैरह पैदा हो तो

अल्लाह तअला उस को ज़िन्दा फरमाता है वह तरोताज़ा हो जाती है, उस में से खेतियाँ निकलकर लहलहाने लगती हैं।

आखिर में फरमाया **وَكَذَلِكَ نَخْرِجُونَ** (और तुम भी उसी तरह निकाले जाओगे)

यानी क़ियामत के दिन क़ब्रों से ज़िन्दा होकर उठोगे। मौत के बाद ज़िन्दा होने की यह निशानी तुम्हारे सामने है, फिर भी क़ियामत का इन्कार करते हो और क़ियामत के दिन ज़िन्दा उठने को नहीं मानते।

**नोट-** हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया कि जो शख्स सुबह को यह तीन आयात **فَسُبْحَانَ اللَّهِ** से **وَكَذَلِكَ نَخْرِجُونَ** तक पढ़ ले, उस का जो पढ़ने वाला अमल छूट जाएगा उस का सवाब भी मिल जाएगा और जो शख्स यह आयात शाम को पढ़ ले, उस रात को जो उस का पढ़ने वाला अमल छूट जाएगा उस का भी सवाब पा लेगा।



## आयत नं० 20 से 32 तक

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ  
 بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلَقَ السَّمُوتَ وَالْأَرْضَ وَاجْتَلَى السِّنِينَ وَالْوَالِدَاتِ ۚ إِنَّ فِي  
 ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِلْعَالَمِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَاجْتِاعُكُمْ مِنْ قُضِيِّهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُسَعِّونَ ۝ وَمِنْ  
 آيَاتِهِ يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝  
 وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرٍ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِنْ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۝ وَلَهُ مَنْ فِي  
 السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلُّ لَهٌ قَانِتُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمُوتِ  
 وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ صَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِنْ أَنْفُسِكُمْ ۚ هَلْ لَكُمْ مِنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْتُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ  
 سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۚ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَ هُمْ يَغْنِبُ عَنِ الْعِلْمِ ۚ فَهُمْ  
 يَهْدِي مِنَ أَضَلِّ الْأَقْيَامِ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ نُصْرَةٍ ۚ فَآقَمَ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فطَرَ اللَّهُ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ  
 اللَّهِ ۚ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوا ۚ وَالصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ مِنَ  
 الَّذِينَ قَرَعُوا دِيَارَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا ۚ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

### अनुवाद-

(20) और यह उसकी निशानियों में से है कि 'उसने' तुम्हें मिट्टी से पैदा किया; फिर अब तुम इन्सान होकर फैलते जा रहे हो। (21) और यह भी उसकी निशानियों में से है कि 'उसने' तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच जोड़े पैदा किये, ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो, और तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच विचार करते हैं; (22) और 'उसकी' निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं (बोलियों) और तुम्हारी रंगतों का भाँति-भाँति का होना, इसमें बड़ी निशानियाँ हैं इल्म वालों के लिए। (23) और 'उसकी' निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना, और उसके फ़ज़ल (रोज़ी) का तलाश करना, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (24) और 'उसकी' निशानियों में से यह भी है कि वह तुमको बिजली की चमक दिखाता है, जो डर पैदा करती है और उम्मीद भी, और आसमान से पानी बरसाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देता है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक्ल वालों के लिए। (25) और 'उसकी' निशानियों में से यह भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से कायम हैं, फिर जब 'वह' तुमको ज़मीन में से पुकारेगा, तो तुम अचानक निकल पड़ोगे। (26) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है 'उसी' का है, सब उसी के फरमाँबरदार हैं। (27) और 'वही' है जो ख़िल्कत (लोगों) को पहली बार पैदा करता है फिर उसको दोबारा पैदा करेगा, और यह उसके लिए बहुत आसान है आसमानों और ज़मीन में 'उसी' की शान सबसे ऊँची है। और 'वह' बड़ा शक्तिशाली, हिकमत वाला है। (28) 'वह' तुम्हारे लिए खुद तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल देता है कि क्या

रोज़ी हमने तुम्हें दी है, उसमें तुम्हारे बाँदी (अधीनस्थ) या गुलामों में से कोई तुम्हारे साझीदार हैं, और क्या तुम बराबर के हकदार समझते हो, और क्या तुम उनका डर रखते हो जैसा कि तुम अपनों का डर रखते हो, इस तरह 'हम' उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं जो अक्ल से काम लेते हैं; (29) (नहीं) बल्कि यह ज़ालिम बिना इल्म के अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं, तो अब कौन उन्हें राह दिखाएगा जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो? और उनका तो कोई मददगार नहीं; (30) तो तुम एक ओर के होकर अपने रूख को दीन (धर्म) पर जमा दो, वह स्वभाविक दीन जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा किया, अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती, यही दीन सीधा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (31) 'उसी' की ओर ध्यान रखो, और 'उसी' का डर रखो और नमाज़ कायम करो, और साझी ठहराने वालों में से न हो जाओ, (32) (और न) उन लोगों में, जिन्होंने अपने दीन (धर्मों) को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोहों में बट गये, हर गिरोह के पास जो कुछ है, वह उसी में खुश हैं।

## आयत नं० 20 से 32 तक की व्याख्या

20-27

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۝ وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنَ آيَاتِهِ خَلَقَ السَّمُوتَ وَالْأَرْضَ وَاجْتَلَىٰ فِي السَّمَاوَاتِ الْاَلْوَانِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَمِنَ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاءُكُمْ مِنْ قُضِيِّكُمْ مِنْ قُضِيِّكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُرِيدُ الْبَرَقَ حَقًّا ۝ وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَرْقًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرٍ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۝ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

## अल्लाह तआला की कुदरत

इन आठ आयत में अल्लाह तआला की कुदरत का बयान है। अल्लाह तआला की कुदरत बताते हुए जगह-जगह यूँ फरमाया कि इस में निशानियाँ हैं, यह बात चार जगह फरमाई है। पहली **إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ** और दूसरी **إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ** और तीसरी **إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُرِيدُ الْبَرَقَ حَقًّا** और चौथी **إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ** में फरमाया।

हकीकत में इन में जिस कुदरत को बयान फरमाया गया है उन में गौर व फिक्र करने से अल्लाह तआला (पालनकर्ता) का पूरी तरह कादिर होना समझ में आ जाता है। आखिरी तीन आयतों में क़ियामत के दिन दोबारा पैदा फरमाने का ज़िक्र फरमाया है और यह फरमाया कि जिस ने शुरु में पैदा फरमाया, वही दोबारा पैदा फरमाएगा।



पहले तो यह फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हें यानी तुम्हारे बाप हज़रत आदम (अलै०) को मिट्टी से पैदा फ़रमाया है, तुम लोग उन्हीं की नस्ल से हो। सूर: निसा में फ़रमाया है:-

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَكُمْ وَبَثَّ فِيهِمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَبَثًّا

(ऐ लोगों! अल्लाह से डरो, जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा फ़रमाया, उसी एक जान से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से ख़ूब ज़्यादा मर्द व औरत फैलाए।)

### एक जान का मतलब

الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ एक जान से हज़रत आदम (अलै०) मुराद हैं। उन की पैदाइश मिट्टी से हुई थी, लिहाज़ा सब इन्सानों की अस्ल मिट्टी ही हुई, इसीलिए यहाँ सूर: रूम में خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ फ़रमाया। हज़रत आदम (अलै०) की पसुली से उन का एक जोड़ा पैदा किया यानी हज़रत हव्वा (अलै०) वजूद में आई, फिर दोनों मियाँ-बीवी से नस्ल चली। जैसे बच्चे होश संभालते हैं जिस्म में कुव्वत आती है, फिर अपनी हाजात और ज़रूरियात के लिए ज़मीन में फैल जाते हैं। मिट्टी जो बिल्कुल बेजान चीज़ थी अल्लाह तआला ने उस से हज़रत आदम (अलै०) का पुत्रला बनाया, फिर उस में जान डाल दी, इस तरह सब से पहले इन्सान की पैदाइश हुई।

इसके बाद बराबर मनी (वीर्य) से पैदाइश हो रही है जिस ने बेजान मिट्टी में जान डाल दी और बेजान मादह से जानदार को पैदा फ़रमा दिया, उसे कुदरत है कि वह मौत देने के बाद दोबारह पैदा फ़रमा दे, जबकि मिट्टी में शरीर मिल चुके होंगे।

पहले रुकूअ के ख़त्म पर जो وَكَذَلِكَ نُخْرِجُكَ ف़रमाया था, इस आयत में स्पष्ट कर दिया गया है और दूसरे यह फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे जोड़े पैदा फ़रमा दिये जो तुम ही में से हैं यानी औरत और मर्द जो आपस में शरअी निकाह के ज़रिये पति-पत्नी बन जाते हैं, यह भी अल्लाह तआला की ओर से है। अगर वह बीवियाँ पैदा न फ़रमाता तो इन्सानों को ज़िन्दगी गुज़ारना दूभर हो जाता।

बीवियों के ज़िक्र में जो خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ फ़रमाया उस का मतलब यह है कि यह औरतें जो तुम्हारी बीवियाँ हैं यह तुम्हारी ही जिन्स हैं, अगर हम जिन्स न होती तो मुहब्बत व उत्फ़त के साथ ज़िन्दगी न गुज़ारती, इसीलिए لَتَسْكُنُوا إِلَيْهَا भी फ़रमाया।

मतलब यह है कि उन बीवियों की पैदाइश तुम्हारे लिए है ताकि तुम उन के पास जाओ और उन से तुम्हें सुकून हासिल हो। इस से मालूम हुआ कि बीवी ऐसी होनी चाहिए जिस के पास जाने, रहने और ज़िन्दगी गुज़ारने से सुकून और चैन नसीब हो।

मज़ीद फ़रमाया لَتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً

(और अल्लाह तआला ने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत पैदा फ़रमा दी।)

यह अल्लाह तआला का बड़ा इन्आम है कि मियाँ-बीवी में ऐसा तअल्लुक पैदा फ़रमा देता है जो सिर्फ़ शरअी कानूनी ही नहीं होता, बल्कि अल्लाह तआला एक दूसरे के दिल में मुहब्बत भी पैदा फ़रमा देता है

और रहमत भी, कि दोनों एक दूसरे के चाहने वाले, एक दूसरे के खैर ख्वाह और हमदर्द व रहमत का बर्ताव करने वाले बन जाते हैं। आमतौर से देखा जाता है कि शौहर कहीं का बीवी कहीं की, जब निकाह हो जाता है तो एक दूसरे में बेमिसाल मुहब्बत पैदा हो जाती है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया **لَمْ تَرَ لِمَتَعَابَيْنِ مِثْلَ النِّكَاحِ** (मिशकतुल मसाबीह) (कि ऐ मुख़ातब! दो मुहब्बत करने वालों में निकाह से बढ़कर तूने कोई चीज़ नहीं देखी।)

चूँकि निकाह वाली ज़िन्दगी शरअी ज़िन्दगी है और इस में जज़्बाते नफ़्सानिया की तसल्ली के अलावा एक दूसरे के साथ निभाने के जज़्बात भी होते हैं और आमतौर पर ज़िन्दगी भर साथ रहने की नियत होती है। इसलिए मोमिन मर्द और औरत आपस में मेल व मुहब्बत से रहने ही को तर्जीह देते हैं और आपस में ऊँच नीच को निभाते हुए ज़िन्दगी गुज़ारते रहते हैं।

### मुहब्बत व रहमत

कुछ मुफ़स्सिरीन ने यहाँ यह नुक्ता बयान फरमाया है कि **मुहब्बत** का तअल्लुक़ ज़वानी के ज़माने से है, जिस में दोनों की ख्वाहिशात आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने पर मजबूर करती हैं और **रहमत** का तअल्लुक़ बुढ़ापे से है। जब ख्वाहिश ख़त्म हो जाती है तो आपस में सिर्फ़ रहमत ही का तअल्लुक़ रह जाता है और नेचुरली तौर पर एक दूसरे पर रहम खाते हैं कि जिस के साथ इतनी लम्बी ज़िन्दगी गुज़ारी है अब उस के कमजोरी के ज़माने में खिदमत करना चाहिए और उस के काम आना चाहिए।

निकाह से पहले भी यह देखना चाहिए कि औरत मेल व मुहब्बत के साथ रहने वाली है या नहीं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया:-

**تَزَوُّجُوا لَوْدُ الْوُلُودِ فَإِنِّي مَكَاثِرُ بِكُمْ الْأَمَمَ**

(ऐसी औरत से निकाह करो जो मुहब्बत के साथ गुज़ारा करने वाली हो और जिस से औलाद ज़्यादा हों क्योंकि मैं दूसरी उम्मतों के मुक़ाबिले में तुम्हारी कसूरत पर फ़ख़्र करूँगा।

(रवाहु अबूदाऊद व नसई कमा फ़िल् मिशक़ात)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फरमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने फरमाया, “हर बच्चे फ़ितरत (यानी इस्लाम) पर पैदा होते हैं, फिर उसके वालिदेन उसको यहूदी व नसरानी या ईसाई व पारसी बना लेते हैं।

(बुख़ारी)

निकाह के बिना जो सम्बन्ध मर्दों और औरतों में पैदा हो जाता है यानी ज़िनाकारी की सूरत में होता है, उस से आपस में मुहब्बत पैदा नहीं होती, केवल नफ़्सानी ख्वाहिश और मतलब निकालना होता है। यह तअल्लुक़ कटता रहता है, जहाँ जिस से मतलब निकलता देखा उसी से जोड़ लगा लिया फिर जब जी चाहा तअल्लुक़ तोड़ दिया। जैसा कि योरोप में इस का आम मिज़ाज और रिवाज बन गया है, वहाँ ज़िनाकार मर्द और औरत जो आपस में दोस्त (फ़्रेंड) बनते हैं वह झूठी दोस्ती होती है, आपस में मुहब्बत और रहमत के वह जज़्बात नहीं होते जो शरई निकाह की वजह से दिलों में रच बस जाते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया कि मोमिन बन्दे को ख़ौफ़-ए-ख़ुदा की नेअमत हासिल होने के बाद

नेक बीवी से बढ़कर कोई नेअमत हासिल नहीं होती, अगर उस बीवी को हुक्म दे तो फरमाँबरदारी करे और उस की तरफ़ देखे तो उसे खुश करे और अगर वह उस के बारे में कोई क़सम खा बैठे तो उसे क़सम में सच्चा कर दे (ऐसा मामला न करे जिस से उस की क़सम टूट जाए) और अगर शौहर कहीं चला जाए तो अपनी जान में और उस के माल में उस की ख़ैर ख़्वाही करे। (मिशक़ातुल मसाबीह)

(यानी उस की ख़यानत न करे) मर्द को भी चाहिए कि निभाने और आराम पहुँचाने की फ़िक्र रखे। अगर कोई बात नागवार हो तो उसे बर्दाशत करे।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “कोई मोमिन मर्द अपनी बीवी से बुग़ज़ न रखे। अगर उस की कोई आदत नागवार होगी तो दूसरी आदत पसन्द आ जाएगी”। (मुस्लिम)

﴿فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ﴾ (बिलाशुब्हा इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो फ़िक्र करते हैं) यानी मियाँ-बीवी के इस तअल्लुक के मुख़लिफ़ पहलुओं पर और उन से हासिल होने वाले दीनी और दुनियावी मक़ासिद पर नज़र की जाए तो बहुत सी निशानियाँ समझ में आ सकती हैं।

## अल्लाह तअ़ाला की निशानियाँ

आसमान और ज़मीन की पैदाइश का और इन्सानों की बोलियों और रंगतों का भी यहाँ ज़िक्र फ़रमाया, इस में भी अल्लाह तअ़ाला की कुदरत की निशानियाँ हैं।

इन्सान आसमान के नीचे रहते हैं, ज़मीन के फ़र्श पर बसते हैं, इन्सानों की ज़बानों का मुख़लिफ़ होना भी अल्लाह तअ़ाला की कुदरत है। इन्सानों को बोलने की ताक़त, बोलना सिखाना और बात करने की ताक़त अ़ता फ़रमाना, यह अल्लाह तअ़ाला का बहुत बड़ा इन्अाम है और इस में कुदरते इलाहिया का मुज़ाहि़रा भी है। जिस व्यक्ति को गूंगा बना दिया वह बोल नहीं सकता और जिसको बोलने की ताक़त दी है वह शब्दों की अदायगी में पूरी कुदरत नहीं रखता है। हुरूफ़ के जो मख़ारिज अल्लाह तअ़ाला ने मुक़र्रर फ़रमा दिये हैं इन्सान उन्हीं तरीकों से हुरूफ़ अदा करने पर मजबूर है।

दोनों होंठों के मिलने से बोलता है जैसे- मीम है, लेकिन एक को दूसरे की जगह से अदा नहीं कर सकते। जब ब और मीम का यह हाल है।

(दोनों का मख़रज एक ही बताया जाता है तो ब- को जीम के मख़रज से और जीम को ह के मख़रज से कैसे अदा कर सकते हैं।)

## भाषाएँ

अल्लाह तअ़ाला ने जो बोलने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है यह मुख़लिफ़ भाषाओं में और बेशुमार बोलियों में बटी हुई हैं, पूरब से पश्चिम तक अल्लाह तअ़ाला ही जानता है। कितनी ज़बानें हैं, हर ज़बान के शब्द अलग हैं, बात करने का अन्दाज़ अलग है, किसी ज़बान में पहले कुछ बोला जाता, फिर किसी ज़बान में बाद में कुछ बोला जाता है।

कुछ ज़बानों में वह अक्षर हैं जो दूसरी ज़बानों में नहीं है। जैसे- स्वाद, ज़वाद, काफ़ और ज़ाल अरबी ज़बान में हैं जबकि ख और घ हिन्दी ज़बान में जो अरबी में नहीं है, इसी तरह बरमी ज़बान में रा नहीं है और साथ ही यह बात भी है कि जो अक्षर जिस ज़बान का है उस के अलावा दूसरी ज़बान वाले इन्सान को उस का बोलना मुश्किल हो जाता है, बल्कि बहुत से लोग मेहनत करने पर भी नहीं बोल पाते। इन बातों का बराबर देखे जाता है, यह सब अल्लाह तआला की तख़लीक़ (पैदाइश) है, इस में अल्लाह तआला की कुदरत का भी मुज़ाहिरा है और उस की नेअमत का भी और इन्सानों के बेबस होने का भी।

फिर यह बात भी है कि शब्द और अक्षर तो अलग हैं ही उच्चारण भी अलग है, आवाज़ें भी मुख़्तलिफ़ हैं, मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के लोग मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बात करते हैं, बात सुनने से ही मालूम हो जाता है कि फ़लॉ शख़्स फ़लॉ इलाक़े का आदमी है या फ़लॉ खानदान व नस्ल से तअल्लुक़ रखता है। फिर मर्दों की आवाज़ अलग और औरतों की आवाज़ अलग, बच्चों की आवाज़ अलग। फिर हर शख़्स की आवाज़ अलग है, यह सब अल्लाह तआला के कुदरत की निशानियाँ हैं।

### इन्सानों के रंग

ज़बानों का इख़्तिलाफ़ बयान फ़रमाने के बाद रंगतों का इख़्तिलाफ़ बयान फ़रमाया। सारे इन्सानों की सूरतें इस एतिबार से तो एक ही हैं कि हर शख़्स के चेहरे पर नाक है और नाक के ऊपर दो आँखें हैं और नाक के नीचे मुँह है और उस के अन्दर दाँत हैं जो होंठों के खोलने से नज़र आते हैं, लेकिन सूरतों में इतना ज़्यादा इख़्तिलाफ़ है।

नसब व नस्ल के एतिबार से भी सूरतें मुख़्तलिफ़ हैं और इलाक़ों के एतिबार से भी, मर्दाना सूरतें अलग हैं, ज़नाना सूरतें अलग और आपसी फ़र्क़ भी है, हर शख़्स और हर फ़र्द की सूरत अलग है। यह तो हुआ सूरतों का इख़्तिलाफ़, फिर इन सूरतों का मज़ीद इख़्तिलाफ़ रंगों के एतिबार से भी है, किसी का रंग काला है, किसी का गोरा फिर उन में भी फ़र्क़ है। यह फ़र्क़ सिर्फ़ अल्लाह तआला की तख़लीक़ से है। आयत के ख़त्म पर फ़रमाया **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** (बिलाशुब्का इस में जानने वालों के लिए निशानियाँ हैं।)

### रिज्क की तलाश-

बात यह है कि इन्सानों का सोना, सोने के लिए मजबूर होना, नींद का आ जाना और आराम पाना जो आम तौर से हर इन्सान के साथ होता है। बहुत से लोग दिन में भी सो जाते हैं खासतौर से जिन्हें कैलूला की आदत होती है। यह सोना और आराम पाना सब अल्लाह तआला की नेअमत और उस के कुदरत की निशानी भी।

इन्सान बाज़ मर्तब: सोना नहीं चाहता लेकिन नींद का ग़ल्बा उसे सुला ही देता है और अक्सर ऐसा भी होता है कि सोने की नियत से लेटा दिमाग़ थका हुआ था जिस्म थकन से बेजान हो रहा है, आँखें मीचता है, करवटें बदलता है, पूरी रात गुज़र जाती है लेकिन नींद नहीं आती। अल्लाह तआला ही चाहता है तो सुला देता है और वही चाहता है तो जगा देता है।

इसीलिए सोकर उठने की दुआ में दोनों नेअमतों की याद दहानी कराई गई है और नींद चूँकि मौत की बहन है इसलिए उसे मौत से संज्ञा दी गई है। सोकर उठने की दुआ यह है:-

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ

(सब तअरीफें अल्लाह के लिए है जिस ने हमें मौत देकर ज़िन्दगी बख्शी और उसी की तरफ ज़िन्दा होकर क़ब्रों से निकल कर जाना है, क्योंकि बहुत से लोग रात में भी कमाते हैं और रोज़ी तलाश करते हैं। इसलिए **مَّا أَتَيْنَا بِالنَّارِ وَالنَّارِ وَابْتَغَاوْكُمْ مِنْ فَضْلِهِ** फ़रमाया।

जिस तरह दिन में सोना होता है यानी आमतौर पर रात ही में सोया जाता है उसी तरह रात में भी रोज़ी तलाश करने की सूरतें बन जाती हैं। इस में दोनों बातें हैं।

दिन का निकलना भी अल्लाह तआला की नेअमत है और रिज़्क तलाश करने के काबिल होना भी उस का इन्आम है और इन सब चीज़ों में अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं। आदमी को न सोने में कुदरत है न जागने में, न रिज़्क कमाने के लिए घर से बाहर निकलने में, अल्लाह तआला ही की मर्जी और इरादा हो तो यह सब चीज़ें वजूद में आ जाती हैं। आखिर में फ़रमाया:-

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ (बिलाशुब्हा इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं।)

इसी तरह बिजली के चमकने, आसमान से पानी नाज़िल होने और उस के ज़रिये ज़मीन को ज़िन्दा करने का ज़िक्र फ़रमाया। जब बिजली चमकती है तो इन्सान डरते भी हैं और बारिश होने की उम्मीद भी रखते हैं, क्योंकि आमतौर पर बिजली चमकने के बाद बारिश हो जाती है और जब बारिश हो जाती है तो उस से मुर्दा ज़मीन में ज़िन्दगी आ जाती है, ज़मीन हरी भरी हो जाती है और खेतियाँ लहलहाने लगती हैं, इन सब चीज़ों में अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं। अक्लमन्दों को चाहिए कि इस में ग़ौर करें और सोचें, बिजली चमकी, ख़ौफ़ व हिरास तारी हुआ, बारिश की उम्मीद बंधी, पानी बरसा, ज़मीन हरी भरी हुई, यह सब कैसे हुआ? किस की कुदरत से हुआ?

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ (बिलाशुब्हा इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक्ल से काम लेते हैं।)

अगर ग़ौर करेंगे तो यही समझ में आ जाएगा कि यह सब अल्लाह तआला की कुदरत से हुआ।

## आसमान व ज़मीन-

यह फ़रमाया कि आसमान और ज़मीन उसी के हुक्म से कायम हैं। तीन आयात में पहले आसमान व ज़मीन के पैदा फ़रमाने का ज़िक्र था और इस आयते करीमा में आसमान व ज़मीन के बाकी रहने का ज़िक्र है। जब तक उन के बाकी रखने का अल्लाह तआला का इरादा है उस वक़्त तक बाकी रहेंगे और जब क़ियामत के दिन उन के बदलने का इरादा होगा तो उस वक़्त उन की हालत बदल जाएगी, आसमान फट पड़ेंगे और ज़मीन में ज़लज़ला आ जाएगा, आसमान को अपनी मुक़र्रह जगह पर और मौजूदा हालत पर कायम रखना और ज़मीन को उस की मुक़र्रह जगह पर और मौजूदा हालत पर बाकी रखना यह सब अल्लाह तआला ही के हुक्म से है, इस में किसी का कुछ भी दखल नहीं।

अल्लाह तआला का इर्शाद है:-

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ عِبَادِهِ

(बिलाशुब्हा अल्लाह आसमान और ज़मीन को इस से रोके हुए है कि वह अपनी जगह से हटें और अगर वह अपनी जगह से हटें तो उस के अलावा कोई भी उन्हें रोकने वाला नहीं है।) (सूर: फ़ातिर)

यह आसमान कायम है इस के नीचे लोग जीते हैं, ज़मीन के ऊपर बसते हैं, इसके बाकी रखने की अल्लाह तआला के इल्म में एक मुद्दत तय है। वह जब तक इस दुनिया को बाकी रखेगा बाकी रहेगी, जब फना करना चाहेगा फना हो जाएगी। जब सूर फूँका जाएगा और अल्लाह तआला का बुलावा होगा तो लोग कब्रों से निकल खड़े होंगे और हिसाब के मैदान में जमा हो जाएँगे। इसी को फरमाया:-

ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخِرُّونَ

(फिर जब वह तुम्हें बुलाएगा ज़मीन से अचानक तुम आओगे।)

फिर फरमाया (وَلَمَّا مِّنَ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَّهِ خَاشِعُونَ) (आसमानों और ज़मीन में जो भी कुछ है सब अल्लाह तआला ही की मख़्लूक है और सब उस के हुक्म के ताबेअ (अधीन) हैं, वह जो चाहता है वही होता है।)

आखिरी आयत में फरमाया:-

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ يُعِيدُهُ (और वही है जो पहली बार पैदा फरमाता है, फिर वही दोबारा ज़िन्दा फरमाएगा।)

(और उसे दोबारा पैदा करना पहली बार पैदा करने की बनिस्बत ज़्यादा आसान है) यह लोगों की समझ के एतिबार से फरमाया क्योंकि लोग इस आयत को जानते हैं और मानते हैं कि किसी चीज़ का दोबारा वजूद में लाने के एतिबार से आसान होता है।

इसीलिए हूदीसे कुदूसी में फरमाया:-

فَمَا تَكْذِبُهُ إِيَّاي فَقَوْلُهُ لَنْ يُعِيدَنِي كَمَا بَدَأَنِي وَلَيْسَ أَوَّلُ الْخَلْقِ بِأَهْوَنَ عَلَيَّ مِنْ أَعَادَتِهِ

(इब्ने आदम यूँ कहकर मुझे झुठलाता है कि अल्लाह ने जो पहली बार मुझे पैदा किया था उस के बाद मुझे दोबारा हरगिज़ पैदा न फरमाएगा, हालांकि मेरे लिए पहली बार पैदा करना दूसरी बार पैदा करने से ज़्यादा आसान है) यानी जो कुदुरत शुरू में पैदा करने पर है वही दोबारा पैदा करने पर है। इस के लिए दोनों बराबर हैं। (रवाहुल बुख़ारी)

هَذَا إِذَا رِيدَ بِأَهْوَنَ مَا يَدُلُّ عَلَيْهِ اسْمُ التَّفْضِيلِ. قَالَ صَاحِبُ الرُّوحِ وَرَوَى الرَّجَاجُ

عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ وَكَثِيرٍ مِنْ أَهْلِ اللُّغَةِ أَنَّ (أَهْوَنَ) هُنَا بِمَعْنَى هَيْئًا وَرَوَى ذَلِكَ

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ وَالرَّبِيعِ وَكَذَا هُوَ فِي مَصْحَفِ عَبْدِ اللَّهِ

फिर फरमाया:-

وَلَمَّا الْبُكُلُ الْوَعْدِ (और आसमानों और ज़मीन में उस की शान आला है यानी आसमान और ज़मीन के रहने वाले जानते हैं और उस का यह गुण बयान करते हैं कि उस की शान सब से आला बुलन्द है,



उस की सिफते कुदरत भी आम है और हिकमत भी पूरी है।

قال صاحب الروح في السموات والارض متعلق بمضمون الجملة المتقدمة على معنى انه سبحانه وقد وصف بذلك وعرف به فيهما على السنة الخلاق والسنة الدلائل: وهو العزيز الحكيم

(और वह इज्जत और गुल्बा वाला है उस की बड़ी कुदरत है और वह हिकमत वाला भी है) कियामत वाक़ेअ करने और दोबारा पैदा फरमाने में जो देरी है वह उस की हिकमत के मुवाफ़िक है।

**28-29**

كَوَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ تُصْرِيَةٍ ﴿٢٩﴾

## शिरक और तौहीद की मिसाल

इन्कारी जो अल्लाह तआला की अ़िबादत में मख़्लूक को शरीक करते हैं, उन से अल्लाह तआला ने मिसाल के तौर पर एक सवाल किया है कि तुम लोगों को हम ने माल दिया है, उस माल में तुम्हारे गुलाम और बांदियाँ भी हैं, तुम उन के मालिक हो। माल तो तुम्हारे पास गुलाम बांदियों के अ़लावा भी है लेकिन गुलामों और बांदियों के पास समझ है क्योंकि वह इन्सान हैं, उन से तुम ख़िद्मत लेते हो, दूसरे माल के उठाने, रखने और खर्च करने में उन्हें इस्तेमाल करते हो।

उन गुलामों और बांदियों से काम तो लेते हो, लेकिन तुम ने उन्हें अपने मालों में शरीक नहीं किया? अगर तुम उन्हें अपने मालों में शरीक कर लेते तो यह भी अख़्तियारात में तुम्हारे बराबर हो जाते और तुम से पूछे बग़ैर खर्च करते और जब वह शरीक हो जाते तो तुम उन से उसी तरह ख़ौफ़ खाते जैसे अपने साझीदारों से एतिराज़ का अन्देशा रखते हो और उन्हें खुश कर के चलते हो और बावजूद अपनी ज़ाती शिरकत के अपने साझीदारों से दर्याफ़्त कर के और मश्वरह लेकर करते हो।

जब तुम्हारे गुलाम तुम्हारे मालों में और माल खर्च करने के अख़्तियार में शरीक नहीं, जो तुम्हारी तरह की मख़्लूक हैं तो वह जो तुम ने अल्लाह के सिवा मअबूद (उपास्य) बना रखे हैं उन को तुम अल्लाह तआला के साथ कैसी साझीदारी बनाते हो? वह तो अल्लाह की मख़्लूक हैं, अपने मालों में तो तुम अपने गुलामों को शरीक करने को तैयार नहीं और अ़िबादात (पूजा) में तुम ने मख़्लूक (सृष्टि) को ख़ालिक सृष्टि के साथ शरीक कर दिया, यह कैसी उल्टी समझ है।

كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ (जो लोग समझते हैं और अपनी अ़क्ल को काम में लाते हैं हम इसी तरह उन के लिए स्पष्ट तौर पर आयात बयान करते हैं।)

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ جिन लोगों ने अपनी जानों पर जुल्म किया, आयात में ग़ौर किया यह लोग बग़ैर इल्म के जिहालत के साथी अपनी नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गये, जो जी में आया उसी को मअबूद (उपास्य) बना लिया, हक़ और हक़ीक़त की तरफ़ मुतवज्जेह न हुए। जब गुमराही को जानबूझकर और इरादे से

अख्तियार कर लिया तो अल्लाह तआला ने भी उन्हें गुमराही में छोड़ दिया। सो वह कौन है जो उसे हिदायत (सत्य मार्ग) दे जिसे अल्लाह ने गुमराह कर दिया, जब इस गुमराही पर अज़ाब होने लगेगा तो कोई भी मदद्गार और अज़ाब से छुड़वाने वाला न मिलेगा।

### 30-32

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ مِّنْهُمْ مَّنْ يَّهْدِي اللَّهُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّبِينٍ ۚ وَإِلَيْهِ تُقْبَلُونَ ۚ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا ۚ كُلٌّ حِزْبٍ ۚ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

इस में बज़ाहिर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को खिताब (सम्बोधन) है, लेकिन मुख़ातब सब ही इन्सान हैं। मतलब यह है कि जब शिर्क की बुराई सामने आ गई तो जो लोग एक अल्लाह को मानते हैं सही रास्ते पर हैं, वह सीधे रास्ते पर ही कायम रहें और अपना रुख़ दीन-ए-क़य्यिम की तरफ़ रखें और बराबर उसी पर जमे रहें और तमाम दीनों से हटकर एकसू होकर उसी दीन में लगे रहें जो दीन अल्लाह तआला ने भेजा है यानी दीन तौहीद (एकेश्वरवाद) जिस पर उस ने अपने बन्दों को पैदा फ़रमाया और जो लोग इन्कारी व साझीदार हैं वह भी इसी दीन पर आ जाएँ।

فِطْرَتِ اللَّهِ से क्या मुराद है? कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से दीने इस्लाम मुराद है और कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से दीने इस्लाम कुबूल करने की क़ाबिलियत मुराद है। अनुवाद में इसी को अख्तियार किया गया है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि हर बच्चा फ़ितुरत पर पैदा होता है, फिर उस के माँ-बाप उस को यहूदी या नसरानी (ईसाई) या मजूसी (आतिश परस्त) बना देते हैं। जैसा कि चौपाये का बच्चा बिल्कुल सही सालिम पैदा होता है क्या तुम इस में देखते हो कि उस का कोई हिस्सा कटा हुआ है? इस के बाद आप (सल्ल०) ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। (रवाहुल बुख़ारी व मुस्लिम)

मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने इन्सानों में कुबूले हक़ की सलाहियत और क़ाबिलियत रखी है, यह क़ाबिलियत होश संभालने से लेकर बूढ़ा होकर मरने तक रहती है।

अगर इन्सान अपने माँ-बाप या मुआशरे (Society) के माहौल में काफ़िर व मुशिरक हो गया हो और अपनी अक्ल को काम में लाए और किसी दुनियावी रुकावट से प्रभावित न हो तो वह ज़रूर हक़ को कुबूल कर लेगा और दीने हक़ पर आ जाएगा।

इस से لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ का मतलब भी समझ में आ गया कि अल्लाह तआला ने फ़ित्री तौर (Naturally) पर जो इन्सानों में दीने हक़ पर ग़ौर करने की क्षमता रखी है वह नहीं बदलती। कैसा ही काफ़िर या मुशिरक हो, अगर अपनी अक्ल से ग़ौर व फ़िक्र करेगा तो उसे दीने इस्लाम कुबूल करने की तरफ़ तवज्जोह हो ही जाएगी, अगर ग़ौर व फ़िक्र की तरफ़ मुतवज्जेह न हो और हक़ से इन्कार करता रहे तो यह दूसरी बात है।

(और लेकिन अक्सर وَلَئِنْ أَتَىكَ الْفِتْنَةُ فَتَلَاَبْأَسْ (यह दीन कय्मिम है सीधा रास्ता है) ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ لَا लोग नहीं जानते) ग़ौर व फ़िक्र न करने की वजह से दूर भागते हैं।

(और अल्लाह से وَأَتَّقُوا (और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करते हुए फ़ित्तरत का इत्तिबअ करो) مُنِيبِينَ إِلَيْهِ (और नमाज़ कायम करो) وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ और अल्लाह के साथ साझीदार ठहराने डरो) وَالَّذِينَ كَفَرُوا (और नमाज़ कायम करो) وَالَّذِينَ كَفَرُوا (और नमाज़ कायम करो) وَالَّذِينَ كَفَرُوا (और नमाज़ कायम करो) जिन्होंने अपने दीन में फूट डाली और जो दीन अख़्तियार किया उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।)

दीने हक़ तो हमेशा से एक ही है उस के टुकड़े नहीं हो सकते, जो लोग उसे छोड़ते हैं उन के सामने बहुत सी राहें होती हैं। उन पादरियों में से किसी की राह को अपना लेते हैं, अगर हक़ पर रहते तो सब एक राह पर होते।

كُلٌّ فِيهِمَا كَرْهُ لَكُمْ فَغَارَ الْمُشْرِكُونَ (हर गिरोह उस से खुश है जो उस के पास है।)

हालांकि उन बातिल वालों में से किसी की राह भी हक़ नहीं है और अगर अल्लाह के भेजे हुए दीन पर होते तो अलगाव भी न होता और अल्लाह के दीन पर ही खुश रहते।



## आयत नं० 33 से 45 तक

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِنْهُ رَحْمَةٌ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَسْتَعْتَبُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ أُنْزِلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا آذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۚ وَإِنْ تُصِيبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ قَاتِلْ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسِيرَ ۚ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ رِبَا لِيَرْبُوا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ مَرْكُوبٍ تَرْبُدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُصْغَفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ هَلْ مِنْ شَرِكٍ لَكُمْ ۚ مَنْ يَفْعَلْ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ يَوْمَئِذٍ يُصْدَعُونَ ۚ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نَفْسٍ بِهِمْ يَهْدُونَ ﴿٤٣﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٤﴾

### अनुवाद-

(33) और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अपने 'रब' को पुकारते हैं उसी की ओर रुजू होते हैं, फिर जब वह अपनी रहमत का मज़ा चखाता है, तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का साझी ठहरा लेता है; (34) ताकि जो कुछ 'हमने' उसको दिया है उसकी नाशुकी करें, "अच्छा तुम मजे उड़ा लो बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा।" (35) क्या हमने कोई प्रमाण उतारा है कि वह उसके हक़ में बोलता हो, जो वे उसके साथ साझी ठहराते हैं। (36) और जब 'हम' लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे इतराने लगते हैं; और जब उनके करतूतों की वजह से उन पर कोई मुसीबत आ जाती है, तो तुरन्त निराश हो जाते हैं (37) क्या देखते नहीं! कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं, उनके लिए जो ईमान लाते हैं। (38) तो रिश्तेदारों को उनका हक़ दो, और मुहताजों व मुसाफ़ि़रों को भी, यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) के चाहने वाले हों और यही कामियाब होने वाले हैं। (39) और तुम जो कुछ ब्याज (सूद) पर देते हो, ताकि वह लोगों के मालों में मिलकर बढ़ जाए तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता और जो तुम ज़कात अल्लाह की खुशी के लिए देते हो, तो ऐसे ही लोग अपना माल बढ़ाते हैं। (40) अल्लाह 'वह' है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोज़ी दी; फिर तुम को मौत देता है; फिर तुमको ज़िन्दा करेगा, तो क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में से कोई ऐसा है, जो इनमें से कोई काम भी कर सकता हो? 'वह' पाक है और ऊँचा है उससे, जिसे ये साझी ठहराते हैं। (41) थल और जल में फ़साद बरपा हो गया है खुद लोगों के ही हाथों के करतूतों से, ताकि उनको उनके करतूतों का मज़ा चखाए, शायद वे (सच्चाई की ओर) लौट आएँ। (42) कह दीजिए, "ज़मीन में चल-फिर कर देख लो, कि उनका कैसा अंजाम हुआ, जो पहले गुज़र चुके हैं, उनमें

अक्सर मुशिरक (बहुदेववादी) ही थे।” (43) तो तुम अपना रुख उस सीधे दीन की ओर किये रहो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं, उस दिन लोग अलग-अलग हो जाएँगे; (44) जिस व्यक्ति ने इन्कार किया तो उसका इन्कार (का वबाल) उसी पर है, और जिसने अच्छे अमल किये, वे अपने ही लिए राह आसान कर रहे हैं; (45) ताकि ‘वह’ अपने फज़ल (अनुग्रह) से उन लोगों को अच्छा बदला दे, जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे, बेशक वह काफ़िरो को पसंद नहीं करता।

## आयत नं० 33 से 45 तक की व्याख्या

**33-36**

وَإِذَا مَسَّ النَّاسُ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِمْ وَإِذَا فُتِنَتْ مِنْهُمْ رَحْمَةً مِنْهُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۚ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ أَمْ أَنْزَلْنَاهُمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۝ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ تُضِلُّهُمْ سَبِيلًا بِمَا قَدْ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝

### इन्सानों की आदत

इन आयात में पहले तो इन्सानों की एक आदत का जिक्र फ़रमाया और वह यह कि उन पर जब कोई मुसीबत आती है और कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह तआला की तरफ़ झुकता है और पूरी तवज्जोह के साथ उसे पुकारता है कि यह मुसीबत दूर हो जाए। यह तो मुसीबत के वक़्त उन का अमल होता है, फिर जब अल्लाह तआला अपनी तरफ़ से कुछ रहमत से नवाज़ता है तो अचानक उन में से एक गिरोह अपने रब के साथ शिर्क करने लगता है, जिस का ह्रासिल यह होता है कि अल्लाह तआला की दी हुई नेअमतों की नाशुक्रि करते हैं। उन लोगों से ख़िताब फ़रमाया,

فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ (कि तुम मज़े उड़ा लो अन्करीब कुफ़्र व शिर्क और नाशुक्रि का अन्जाम देख लोगे।)

यह विषय सूर: अन्कबूत के ख़त्म के करीब भी गुज़र चुका है।

यह लोग जो शिर्क करते हैं खुद उन के नज़्दीक भी उन के बातिल मअबूद (उपास्य) किसी नफ़ा व नुक़सान के मालिक नहीं है। अगर इन बातिल मअबूदों से उन्हें कोई नफ़ा होता या दुःख दर्द में काम आने वाले होते तो मुसीबत के वक़्त में उन्हें क्यों छोड़ देते और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की तरफ़ क्यों मुतवज्जेह होते। उन की अक्ल खुद यह बताती है कि ग़ैरुल्लाह की पूजा बिल्कुल बेवकूफी है, अक्ली तौर पर बातिल मअबूदों (उपास्यों) का बातिल होना उन की समझ में आ चुका है और इस एतिबार से भी यह लोग बातिल पर हैं कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उन के पास कोई सनद नहीं आई यानी कोई किताब नाज़िल नहीं हुई, जिस ने शिर्क करना बताया हो उन के शिर्क करने की तअरीफ़ की हो? यह लोग हर एतिबार से गुमराही में हैं। शिर्क के दुरुस्त होने की न इन के पास अक्ली दलील है और न कायनात के मालिक की तरफ़ से उन्हें सनद मिली है। इसी को फ़रमाया



फिर फ़रमाया **وَإِذَا أَقْتَنَّا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا** कि जब हम लोगों को अपनी रहमत चखा देते हैं तो उस पर खुश होते हैं और फूले नहीं समाते, उन की यह खुशी गफ़लत और मस्ती की हद तक पहुँच जाती है और नेअमत देने वाले को भूल जाते हैं और उस की नाफ़रमानियों में लग जाते हैं, इसी खुशी और मस्ती के बारे में **‘इन्ल्लाहा ला युहिबुल् फ़रिहीन’** फ़रमाया। (बिलाशुब्हा अल्लाह तआला इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता।)

यह तो हुआ रहमते इलाही के साथ इन्सान का मामला, अब इस के मिज़ाज का दूसरा रुख़ यह है कि जब उन्हें उन के अपने करतूतों की वजह से कोई मुसीबत पहुँच जाती है तो नाउम्मीद होकर उसे तोड़ कर बैठ जाते हैं यानी कि अब उन को न कोई नेअमत मिलेगी और न कोई ख़ैर पहुँचेगी।

**37**

**أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝**

### अल्लाह की रज़ा में खर्च

यह चार आयत हैं। पहली आयत में तो बताया गया कि अल्लाह तआला अपने बन्दों को रिज़्क देता है और रिज़्क देने में वह जिस को चाहता है ज़्यादा रिज़्क देता है और जिस के लिए चाहता है रिज़्क में कमी कर देता है और खुली हुई बात जो सब के सामने है अहले ईमान इस से नसीहत हासिल करते हैं।

देखा जाता है कि कुछ लोगों को थोड़ी सी मेहनत से और कुछ लोगों को बिला मेहनत ही मीरास या हिबा (Gift) के ज़रिये बहुत ज़्यादा माल मिल जाता है और कुछ लोग बहुत ज़्यादा मेहनत करते रहते हैं, तरह-तरह की तिजारत में हाथ डालते हैं, बड़ी-बड़ी स्कीमें सोचते हैं लेकिन उन का अस्ल माल भी ख़त्म हो जाता है।

एक शख्स तिजारत करता है, थोड़ा सा माल लगाता है उस का माल ख़ूब ज़्यादा हो जाता है, यह सब कुछ अल्लाह की मर्जी और इरादा से होता है, वह अपनी हिक्मत से जिस के लिए चाहता है रिज़्क बढ़ा देता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है। उस में दोनों फ़रीक़ (ग्रुपों) का इम्तिहान भी होता है, माल वाला माल की कसूरत की वजह से अल्लाह के हुक्मों से ग़ाफ़िल है और गुनाहों में लग गया तो इम्तिहान में फ़ेल हो गया और नाशुक्रों में शुमार हो गया और जिस पर रिज़्क में तंगी की गई उस पर सब्र लाज़िम है, शिकायत न करे, ज़बान से बुरे कलिमात न निकाले, तंगदस्ती की वजह से अहक़ामे शरअिया की ख़िलाफ़वर्जी न करे जो इस से सम्बन्धित हैं, माल कमाने के लिए हराम तरीक़े अख़्तियार न करे।

**38**

**فَاتِذَا الْقَرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسِيرَ وَأَبْنِ السَّبِيلِ ذَلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝**

आयत में इर्शाद फ़रमाया कि **فَاتِذَا الْقَرْبَىٰ** यानी रिश्तेदारों को उन का हक़ दे, मिसकीनों को भी दे और मुसाफ़ि़रों को भी।

उलम-ए-तफ़सीर ने फ़रमाया कि इस से सिलह़ रहमी के तौर पर खर्च करना और नफ़ली सद्क़: देना



मुराद है क्योंकि सूर: रूम मक्की है और ज़कात की फ़र्जियत मदीना मुनव्वरह में हुई थी, उन लोगों पर अल्लाह की रज़ा के लिए खर्च किया जाए। अल्लाह के लिए खर्च करेंगे तो यह बेहतर होगा, दिखावे के लिए खर्च न करें और जिस को माल दें उसे अमल या बात से तक्लीफ़ न पहुँचाए और उस पर एहसान न धरें केवल अल्लाह की रज़ा के लिए दें, अल्लाह से बदला लेने की नियत रखें। इसी को फ़रमाया:-

ذَلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ (यह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं) وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتْلِفُونَ (और यही लोग कामियाब हैं।)

ज़विल कुरबा, यतामा, मसाकीन और मुसाफ़िरीन पर खर्च करने का सवाब तफ़सील से सूर: बक़र: की आयत नं० (177) لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قَبْلَ الشَّرْقِ وَالْمَغْرِبِ में और सूर: बनी इस्राईल की आयत नं० (126) وَإِذَا الْغَزَىٰ حَقًّا وَالسَّيِّئِينَ وَابْنِ السَّبِيلِ में भी बयान हो चुका है।

माल के अहकाम व आदाब के बारे में सूर: बक़र: के रूक़अ (36) और (37) की तफ़सीर भी देखा जा सकता है।

**39-40**

وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبَا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا آتَيْتُم مِّن مَّرْكُوفٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ ثُمَّ يُخَيِّدُكُمْ ۚ هَلْ مِن شُرَكَائِكُمْ مَن يَفْعَلُ مِن ذَلِكُم مِّن شَيْءٍ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

(तुम जो कुछ बढ़ने वाली चीज़ दोगे ताकि वह लोगों के मालों में शामिल होकर बढ़ जाए सो वह अल्लाह के नज़्दीक नहीं बढ़ेगी।)

पहले यह समझना चाहिए कि शब्द रिबा अस्ल में रिबू है, जिस का मअना ज़ायद चीज़ का है यानी बढ़ने वाली चीज़। फिर यह शब्द आमतौर से सूद के लिए इस्तेमाल होने लगा। जैसा कि सूर: बक़र: (रूक़अ-38) में कई जगह यह शब्द इसी अर्थ में इस्तेमाल हुआ है।

माल चूँकि बढ़ने वाली चीज़ है, सलीके से उसे कारोबार में लगाया जाए और शरअी तरीके के मुताबिक़ खर्च किया जाए तो उस में बढ़ौतरी होती रहती है। इसीलिए आयत में 'रिबा' फ़रमाया। कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि इस आयत में सूद लेने की मुमानिअत बयान फ़रमाई गई है और इस की बेबरकती को स्पष्ट फ़रमाया है और मतलब यह है कि जब तुम किसी को कर्ज़ के तौर पर माल दोगे ताकि वह दूसरों के माल शामिल होकर ज़ायद माल लेकर आए तो अगरचे तुम्हारे ख़याल में इस से माल में इज़ाफ़ा हुआ, लेकिन अल्लाह के नज़्दीक इस में कोई बढ़ौतरी नहीं।

पहले तो सूद लेने की नियत से देना ही ह़राम है, फिर जो ज़्यादा माल मिल गया वह भी ह़राम है और जो बज़ाहिर ज़्यादा हुआ है वह तुम्हारी नज़रों में ज़्यादा हुआ है। चूँकि यह माल ह़लाल नहीं है इसलिए क़ानूने शरई में तुम्हारे लिए कोई इज़ाफ़ा नहीं हुआ। इस ज़ायद माल का वापस करना वाजिब है फिर अगर तुम ने वापस न किया तो वह बेबरकत होगा और ह़रामख़ोरी का गुनाह अपनी जगह पर रहा। यह तफ़सीर आयते करीमा يَخْلُقُ اللَّهُ الْإِبْرَاقَ وَالْزَيْتَ وَالصَّدَقَاتِ के मुताबिक़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा चाहे देखने में सूद बहुत हो जाए उस का अन्जाम कमी ही की तरफ़ होगा। (मिशकातुल मसाबीह)

सूद से जो माल जमा होता है उस से सामान तो जमा हो जाता है, लेकिन सुकून व इत्मिनान खत्म हो जाता है, माल बर्बाद हो जाता है, बैंको का दीवालिया हो जाता है, मालों से भरे हुए जहाज़ डूब जाते हैं। फिर अगर किसी सूदख़ोर का माल दुनिया में हलाक व बर्बाद न हुआ तो आख़िरत में तो पूरी तरह बर्बादी ही है, वहाँ तो यह माल बिल्कुल ही काम न देगा बल्कि दोज़ख़ में ले जाने का ज़रिया बनेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख्स ह़राम माल कमा कर सद्क़ः करेगा तो वह कुबूल न होगा और जो कुछ उस में से खर्च करेगा उस में बरकत न होगी और जो अपने पीछे छोड़ कर जाएगा तो वह उस के लिए दोज़ख़ की आग में ले जाने वाला बनेगा। (रवाहु अहमद कमा फ़िल् मिश्कात, 242)

विस्तार के लिए सूरः बक़रः रुकूअ नं० (38) देखा जा सकता है।

कुछ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि आयते करीमा में वह बख़्शिश और अतिआ (Gift) मुराद है जिस में देने वाले ने यह नियत की हो कि जिसे मैं दे रहा हूँ वह मुझे इस से ज़्यादा देगा। जैसे अपने किसी अज़ीज़ करीब को या किसी उस्ताद या शेख़ या किसी दोस्त को जो भी कुछ पेश किया जाए उस से सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा मक्सूद होनी चाहिए।

दूसरी ओर से माल मिलने की नियत न रखे, अगर दूसरी ओर से माल मिलने की नियत की तो यह अल्लाह को राज़ी करने के लिए खर्च करना न हुआ, लिहाज़ा यह माल अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ेगा और इस का सवाब नहीं मिलेगा क्योंकि खर्च किये हुए माल का बढ़ना उसी माल के साथ ख़ास है जो केवल अल्लाह की रज़ामंदी के लिए खर्च किया जाए।

आयत के एतिबार से यह अर्थ और मतलब मुराद लेना भी सही है, अल्बत्ता इतनी बात याद रखनी चाहिए कि हदिया देने वाले को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए देना चाहिए लेकिन जिसे हदिया दिया गया हो उसे चाहिए कि ज़ेहन में रखे कि मुझे फ़लौ शख्स ने हदिया दिया था, फिर जब मौक़ा देखे उस का बदला दे दे, लेकिन उसे न जताए कि यह तुम्हारे हदिया के बदले में और جَزَاكَ اللهُ की दुआ उसी वक़्त दे दे जब किसी ने कुछ दिया हो।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया:-

شَكَرٌ وَمَنْ كَفَرَ فَقَدْ كَفَرَ مَنْ أَعْطِيَ عَطَاءً فَوَجَدَ فليجزيه ومن لم يجذفليش فان من ائى فَقَدْ

(यानी जिसे बतौर तोहफ़ा कुछ दिया जाए और उस के पास इतना माल हो कि उस का बदला दे दे तो दे दे और जिसे बदला देने की गुन्जाइश न हो वह लोगों के सामने बयान कर दे कि फ़लौ शख्स ने हमारे साथ यह सुलूक किया है, जिस ने उस के एहसान को बयान किया उस ने शुक्रिया अदा कर दिया और जिस ने छुपाए रखा उस ने नाशुक्र की की।) (मिशकातुल मसाबीह पेज नं० 261)

यह तो हदिया लेने वाले की तरफ़ से होना चाहिए और जो शख्स हदिया दे उसे माल ज़्यादा मिलने

की उम्मीद तो क्या शुक्रिया तक की उम्मीद से बेफिक्र हो जाना चाहिए। जैसा कि सूर: दहर में फरमाया:-

إِنَّمَا نُنْطِقُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا

(हम तुम्हें सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं हम तुम से कोई बदला या शुक्रिया नहीं चाहते।) रसूलुल्लाह (सल्ल०) हदिया (तोहफा) कुबूल फरमाते थे, फिर उस के बदले में उस से ज़्यादा देते थे। एक देहाती ने आप (सल्ल०) को एक जवान ऊँट हदिया में दिया था तो आप ने उसे छः जवान ऊँट अता फरमाए। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 261)

आयत के ख़त्म पर फरमाया:-

وَمَا يَكْفُرِينَ لِرَبِّهِمْ إِذْ وَجَّهَ إِلَيْهِمُ الْقَبُولَ (और जो भी तुम ज़कात दोगे जिस से अल्लाह की रज़ा मक्सूद हो तो ऐसा अमल करने वाले ही बढ़ाने वाले हैं।)

इस में मुफ़सिरीन ने शब्द ज़कात से नफ़ल सद्क़: मुराद लिया है।

(क्योंकि सूर: रूम मक्किया है और ज़कात मदीना में फर्ज हुई थी) चूँकि अल्लाह तआला के लिए माल का खर्च करना नफ़स को बुख़ल से पाक करने के लिए भी है इसलिए आम सद्क़ात को भी ज़कात कह दिया जाता है। जैसा कि नेक काम होने की वजह से फर्ज ज़कात को भी सद्क़: फरमाया है।

إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ आयते करीमा में यह बताया गया है कि तुम जो कुछ भी सद्क़: अल्लाह को राज़ी करने की नियत से दोगे उस में बढ़ा कर दिया जाएगा।

जो शख्स अल्लाह की रज़ा के लिए कोई सद्क़: देता है तो उस का यह सद्क़: अल्लाह तआला के यहाँ मक्बूल हो जाता है और उस का सवाब बढ़ कर मिलता है। अल्लाह तआला का यह तो आम क़ानून है।

## दस गुना बदला

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ مَثَلٍ

(जो शख्स एक नेकी करे उस के लिए दस गुना है) यह क़ानून तो हर नेकी को शामिल है और इस से ज़ायद जितना भी अल्लाह तआला चाहे बढ़ा कर सवाब अता फरमाता है, जिसे सूर: बकर: की आयत नं० (261) وَاللَّهُ يُضَعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ में बयान फरमा दिया।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया कि जिस ने हलाल कमाई से एक खजूर के बराबर सद्क़: किया तो अल्लाह तआला उसे कुबूल फरमा लेता है, फिर उसे सद्क़: देने वाले के लिए बढ़ाता रहता है। जैसा कि तुम में से कोई शख्स अपने घोड़े के बच्चे की तर्बियत (पालन) करता रहता है, यह सद्क़: जो खजूर के बराबर किया था बढ़ते-बढ़ते पहाड़ के बराबर हो जाता है।

(रवाहुल् बुख़ारी)

जब सद्क़: देने वाले को क़ियामत के रोज़ सवाब दिया जाने लगेगा तो उसे उस थोड़े से सद्क़े का इतना बड़ा सवाब मिलेगा जैसे उस ने पहाड़ के बराबर सद्क़: किया हो।

चौथी आयत में फिर तौहीद की तरफ़ मुतवज्जेह फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हें पैदा फरमाया

है, फिर तुम्हें रिज्क दिया, उस रिज्क को खाते पीते हो और ज़िन्दा रहते हो, फिर उस ज़िन्दगी के बाद तुम्हें मौत देगा, फिर ज़िन्दा फ़रमाएगा, उसी की कुदरत के यह सब मज़ाहिर हैं और वही अ़िबादत का हक्कदार है, वहदहु लाशरीक है तुम लोगों ने जो उस के लिए शरीक (साझी) बना रखे हैं, क्या उन में से कोई ऐसा है जिसे इन चीज़ों पर कुदरत हो?

ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई भी यह काम नहीं कर सकता, जब उस के अ़लावह कोई भी कुदरत रखने वाला नहीं है तो फिर अ़िबादत में दूसरों को शरीक क्यों करते हो **سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ** (वह उन के शिर्क से पाक है और बरतर है।)

**41**

**ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ مِمَّا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي ظَلَمُوا لَعَنَهُمُ الرَّحْمَنُ رَبُّهُمْ ۖ**

अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनिया में भेजा और इसे ईमान और अ़ामाले सालिहा अख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाया, इम्तिहान के लिए इस में ख़ैर व शर अपनाने की कुव्वत रख दी। उस के अन्दर ऐसे ज़ब्बात हैं जो इसे अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों की तरफ़ खींचते हैं और शैतान भी साथ लगा हुआ है वह लोगों को ईमान से और अ़ामाले सालिहा से हटाता है, कुफ़्र और शिर्क की राह पर डालता है।

अल्लाह तआला ने अपने रसूलों के ज़रिये यह बता दिया कि कुफ़्र, शिर्क और बुरे अ़ामाल का नतीजा बुरा है, कुफ़्र और शिर्क की सज़ा दुनिया में भी मिल जाती है और आख़िरत में भी मिलेगी और कुफ़्र व शिर्क के अ़लावा जो बुरे अ़ामाल हैं उन की सज़ा भी दोनों ज़हॉ में मिल सकती है। इन्सानों का मिज़ाज कुछ ऐसा है कि अ़ामतौर से बुराईयों की तरफ़ ज़्यादा होता है और यह बुराईयाँ तरह-तरह की मुसीबतों का ज़रिया बन जाती हैं, दुनिया में अम्न व अमान कायम नहीं रहता और ऐसे-ऐसे इन्क़िलाब आते रहते हैं जिन की वजह से दुनिया मुसीबतों का मैदान बन जाती है।

आयते करीमा **ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ** में इसी को बयान फ़रमाया है कि खुश्की (जिस में आबादियाँ और जंगल सब शामिल हैं) और समुद्र में फ़साद ज़ाहिर हो गया, आपस में क़त्ल व ख़ून होता और क़हत आता है, हलाक करने वाले मर्जों का अ़ाम हो जाना, नये-नये मर्ज का पैदा हो जाना, आँधियों का चलना, खेतों में कीड़ों का खा जाना और ज़लज़लों का आना और सख़्त सर्दी से तबाह हो जाना (जिसे बाज़ इलाकों में बाला कहते हैं) और इस तरह की बहुत सी मुसीबतों का जुहूर होना। अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सज़ाएँ दी जाती हैं ताकि बन्दे होश में आएँ कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों को छोड़ें, अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करें और यह इन्सानों के पूरे अ़ामाल की सज़ा नहीं है बल्कि बाज़ अ़ामाल की सज़ा है।

इसीलिए फ़रमाया है **لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي ظَلَمُوا لَعَنَهُمُ الرَّحْمَنُ رَبُّهُمْ** (ताकि अल्लाह उन्हें उन के बाज़ अ़ामाल का मज़ा चखाए) अगर तमाम अ़ामाल पर गिरफ़्त की जाए तो ज़मीन पर कोई भी चलने-फिरने वाला ज़िन्दा न बचे।

सूर: फ़ातिर (आयत नं० 45) में फ़रमाया:-

**وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكُوا عَلَى ظُهُرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ**

(और अगर अल्लाह लोगों की पकड़ फरमाए तो उन के आमाल की वजह से ज़मीन पर किसी भी चलने-फिरने वाले को न छोड़े, लेकिन वह उन्हें मुकर्रर वक़्त तक मुवख़्ख़र फ़रमाता है) और सूर: शूरा (आयत नं० 30) में फ़रमाया **وَمَا آصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ** (और जो कुछ तुम्हें कोई मुसीबत पहुँच जाए तो वह तुम्हारे आमाल की वजह से है और अल्लाह बहुत से आमाल को माफ़ कर देता है।)

## समुद्रों का फ़साद

ज़मीन के खुश्क हिस्से में जो फ़साद और बिगाड़ है वह तो नज़रों के सामने है, समुद्र में जो फ़साद है उस से क्या मुराद है?

इस के बारे में 'तफ़सीर कुर्तुबी' में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से नक़ल किया गया है कि जब बारिश होती है तो समुद्र में जो सीपियाँ हैं उन का मुँह खुल जाता है और जिस सीपी में बारिश का क़त्रा गिर जाए वह मोती बन जाता है और बारिशें इन्सानों के गुनाहों की वजह से रुक जाती हैं, लिहाज़ा मोतियों की पैदाइश भी कम हो जाती है और यह मोती जो इन्सानों के काम आते हैं उन से इन्सान महरूम हो जाते हैं।

'साहिबे रूहुल् मआनी' ने हज़रत मुजाहिद (रह०) ताबई से यूँ नक़ल किया है कि ज़ालिम लोग ग़रीब क़श्ती वालों की क़श्तियाँ छीन लेते थे। आयत में इस को बयान फ़रमाया है (और यह क़श्ती छीनना बतौर मिसाल के है, समुद्र की सतह पर क़श्तियों और जहाज़ों में जो लोगों पर जुल्म होते हैं, टैक्स लिये जाते हैं और मुल्कों की आपस की लड़ाईयों की वजह से जो गोलाबारी होती है, जहाज़ तबाह होते हैं, हर तरफ़ के आदमी मरते हैं और सामानों से भरे हुए जहाज़ डुबो दिये जाते हैं, यह सब फ़साद फ़िल् बहर में आता है।)

याद रहे कि आयते करीमा में उमूमी फ़साद का ज़िक्र है। जब गुनाहों की वजह से उमूमी मुसीबतें आती हैं तो उन की वजह से मोमिन और काफ़िर, नेक और बुरा यहाँ तक कि जानवर भी प्रभावित होते हैं।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने सुना कि एक शख्स यूँ कह रहा है कि ज़ालिम शख्स सिर्फ़ अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाता है। इस पर हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया कि यह बात नहीं है बल्कि दूसरी मख़लूक भी उस से प्रभावित होती है यहाँ तक कि हबारी (एक परिन्दा का नाम है) भी अपने घोंसले में ज़ालिम के जुल्म की वजह से दुबली होकर मर जाती है। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 436)

जब बारिश न होगी तो ज़मीन में पानी की भी कमी होगी, बारिश का पानी जो जगह-जगह ठहर जाता है जिस से इन्सान और जानवर सब ही पीते हैं वह न होगा तो प्यासे मरेंगे और बारिश न होने की वजह से जब खेतों में पैदावार न होगी, तो इन्सान और जानवर सब ही मुसीबत में पड़ जाएंगे।

याद रहे कि आयते करीमा में उन तकलीफ़ों का ज़िक्र नहीं है जो नेक बन्दों को उन के गुनाह माफ़ करने या दर्जात बुलन्द करने के लिए पेश आती हैं। इन हज़रात को मर्ज़ से तकलीफ़ तो होती है, लेकिन यह उन के हक़ में मुफ़ीद होती है, इसलिए मुसीबत नहीं रहती। फिर यह लोग सब्र करते हैं उस का सवाब भी पाते हैं और गुनाहों से तौब: इस्तिग़फ़ार की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं, लिहाज़ा यह तकलीफ़ें उन पर बतौर क़र्ज़ नहीं होती, उन के हक़ में अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत और मेहरबानी होती है, सब्र और

तौब: व इस्तिफ़ार का सवाब मिलता है।

42

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ۝

फिर फ़रमाया قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ कि आप मुशिरकीने मक्का से फ़रमा दीजिए कि तुम ज़मीन में चल फिर कर देख लो, तुम से पहले जो कौमें थीं उन का क्या अन्जाम हुआ? उन लोगों में अक्सर मुशिरक थे, उन लोगों के कुफ़्र और शिर्क की वजह से आम अज़ाब आया और हलाक व बर्बाद हुए उन के घरों के निशानात तुम्हारे सामने हैं, चलो, फिरो, देखो और इब्रत हासिल करो।

इस आयत में जो كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ फ़रमाया उस में यह बता दिया कि उन बर्बाद होने वालों में अक्सर तो मुशिरकीन थे और कुछ ऐसे भी थे जो कुफ़्र की दूसरी किस्म में शामिल थे और इस में इस तरफ़ भी इशारा फ़रमा दिया कि शिर्क कुफ़्र की बदतरिनी किस्म से है, इस का ववाल बहुत बड़ा है।

43-44

فَاقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدِّعُونَ  
مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَلِمَ صَالِحًا فَلَا نَفْسَ لَهُمْ يَهْدُونَهُ ۝

इस के बाद फ़रमाया कि فَاقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ ऐ मुख़ातब! अपना रुख़ दीने क़य़िम की तरफ़ रख यानी तौहीद पर जमे रहो। इस से पहले कि ऐसा दिन आ जाए यानी अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब वाला दिन आ जाए और उस अज़ाब को हटाया न जाएगा (इस से क़ियामत का दिन मुराद है) उस दिन लोग अलग हो जाएँगे, नेक आ़माल वाले अलग और बुरे आ़माल वाले अलग होंगे।

फिर फ़रमाया مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ (कि जो शख़्स कुफ़्र करे उस का ववाल उसी पर पड़ेगा।) और जो शख़्स नेक काम करे सो ऐसे लोग अपनी-अपनी जानों के लिए राह हमवार कर रहे हैं) यानी पेशगी सामान कर रहे हैं।

45

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ (ताकि अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अपने फ़ज़ल से जज़ा दे जो ईमान लाए और नेक अ़मल किये) अल्लाह तआ़ला के इस फ़ज़ल से काफ़िर मह़रूम रहेंगे।

لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ (बिलाशुब्हा अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता) जब दुनिया में काफ़िर अल्लाह की ज़ात पर ईमान न लाए उस के इन्आमात का शुक्रिया अदा न किया और मज़ीद यह किया कि दूसरों को उस की अ़िबादत में शरीक कर लिया तो क़ियामत के दिन उस की सज़ा पाएँगे, ईमान लाते तो अल्लाह के मह़बूब होते, अब उन्हें कुफ़्र की सज़ा दी जाएगी और दोज़ख़ में दाख़िल होंगे।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “किसी शख़्स को उसका अ़मल जन्नत में नहीं ले जाएगा। सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि क्या आप के आ़माल भी? (आप को जन्नत में न ले जाएँगे?) फ़रमाया हाँ, मेरे आ़माल भी मुझे जन्नत में न ले जाएँगे सिवाय यह कि अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़ल व करम और अपनी रहमत से मुझे ढांप ले”। (बुख़ारी)



## आयत नं० 46 से 60 तक

وَمِنَ الْيَتَةِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيَذِّقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِيَجْزِيَ الْفُلَاكَ بِأَمْرِهِ وَلِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنْتَقَبْنَا مِنَ الَّذِينَ اجْرَمُوا ۝ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۝ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنَ قَبْلِهِ لُمُسِينَ ۝ فَانْظُرْ إِلَى أَشْرَ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُنْزِلُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۝ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَجَبِ الْغُيُوبِ ۝ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝ فَإِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْوَيْتَ وَلَا تَسْمَعُ الضَّمَّةَ الدَّعَاءَ إِذَا وَلَوْ مَذْبُورِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُيَيْنِ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۝ إِنَّ تَسْمِعَ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۝ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۝ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُغْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَا يَشْعُرُونَ ۝ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مُعَذِّبَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۝ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۝ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ فَاصْبِرْ إِنْ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَلَا يَسْتَعْجِلَنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝

### अनुवाद-

(46) और 'उसकी' निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है जो खुशखबरी देती हैं, ताकि "वह अपनी रहमत का मजा चखाए और ताकि उसके हुक्म से नौकाएँ चले, ताकि तुम उसका फज़ल (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम उसके शुक्रगुज़ार बनो। (47) और 'हमने' आप से पहले भी रसूल इनकी ओर भेजे थे और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए थे, फिर हमने उन लोगों को सज़ा दी, जिन्होंने अपराध किया, और 'हम' पर तो हक़ है कि ईमान वालों की मदद करें। (48) अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है, फिर वे बादलों को उठाती हैं; फिर जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है, और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप देता है, फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से वर्षा की बूँदें टपकी चली आती हैं, फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है उसे बरसा देता है, तो वे खुश हो उठते हैं; (49) और इससे पहले तो वे इसके बरसाए जाने के बारे में मायूस थे। (50) तो अल्लाह की रहमत की निशानियों की ओर देखो! कि वह किस तरह ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है। (51) और अगर 'हम' एक-दूसरी हवा भेज दें, जिसके प्रभाव से वे उस (खेती) को पीली पड़ी हुई देखें, तो इसके बाद वे इन्कार करने लग जाएँ। (52) तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेरे चले जा रहे हों; (53) और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से निकाल कर सीधी राह पर ला सकते हो, तुम तो उन्हीं लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो 'वही' मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं। (54)

अल्लाह ही तो है, जिसने तुम्हें कमजोर हालत में पैदा किया, फिर कमजोरी के बाद ताकत दी; फिर ताकत के बाद कमजोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है वह जानने वाला, कुदरत वाला (सामर्थ्यवान) है। (55) और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी मुजरिम कसम खाकर कहेंगे कि वे घड़ी भर से ज्यादा नहीं रहे, इस तरह वे (रास्ते से) उल्टे जाते थे। (56) और जिन लोगों को इल्म और ईमान मिला था वे कहेंगे कि, “अल्लाह के रिकार्ड में तो तुम ज़िन्दा होकर उठने के दिन तक ठहरे रहे हो, तो यही ज़िन्दा होकर उठने का दिन है और तुमको इसका इल्म न था।” (57) तो उस दिन ज़ालिमों के लिए कोई उज्र (सफाई) काम न आएगा, और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वह तौब: करें। (58) और ‘हमने’ इस कुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल पेश की है, चाहे आप कोई भी निशानी उनके पास ले आएँ, जिन लोगों ने इन्कार किया, वे तो यही कहेंगे, “तुम तो बस झूठ बोलते हो। (59) इसी तरह अल्लाह मुहर (ठप्पा) लगा देता है उन लोगों के दिलों पर जो इल्म नहीं रखते। (60) तो आप सन्न करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और आप कों हरगिज़ बेवज़न (हल्का) न पाएँ, जो लोग यकीन नहीं रखते।

## आयत नं० 46 से 60 तक की व्याख्या

46

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ لِّبُرُوقٍ مِّنْ ذَحْنِهِ وَيَخْرِقَ الْفُلُكَ بِأَمْرِهِ  
وَلِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

### हवा, बारिश और मुर्दों को ज़िन्दा करना

इन आयत में पहले तो हवाओं का ज़िक्र फरमाया, जिन के चलने से यह अन्दाज़ा हो जाता है कि बारिश आने वाली है, यह हवाएँ बारिश आने से पहले बारिश की खुशख़बरी दे देती हैं। फिर जब बारिश हो जाती है, इन्सान उन के नफेअ से फायदा उठाता है, उन के फायदे में यह भी है कि उन के ज़रिये नाव चलती हैं। जब वह नाव में सवार होकर सफ़र करते हैं तो उन सफ़रों में अल्लाह तआला का रिज़्क भी तलाश करते और व्यापार के लिए भी माल लाते हैं और औलाद के खाने-पीने के लिए भी। इन सब चीज़ों में अल्लाह तआला के इन्आमात भी हैं और उस की कुदरत के दलायल भी हैं, इन दलायल के ज़रिये उसे पहचानें और उस की जो नेअमते हैं उन का शुक्र अदा करें।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली देते हुए इर्शाद फरमाया कि हम ने आप से पहले बहुत से रसूल भेजे जिन्होंने अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचाया, स्पष्ट दलायल पेश किये, लेकिन जिन्हें मानना न था उन्होंने न माना, उन्होंने रसूलों को झुठलाया और इन्कार पर जमे रहे उन के जुर्म की वजह से हम ने बदला लिया, वह बदला यह था कि यह मुजरिमीन हलाक हुए और अहले ईमान अज़ाब से महफूज़ (सुरक्षित) रहे।

जो लोग आप (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं वह भी मुजरिम हैं उन से भी इन्तिक़ाम लिया जाएगा।

47-51

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنكَرْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۚ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنَ قَبْلِهِ لُمِبَلِّسِينَ ۝ فَأَنظُرْ إِلَى آثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُغِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ أَمْعَى الْغَوِيِّ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِجَالًا قَرِائِمًا مَضْفَرًا لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝

وَأَنَّ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ (और अहले ईमान की मदद करना हमारे ज़िम्मे है) इस में अल्लाह तआला ने एक क़ानून बयान फ़रमा दिया और यह वादा फ़रमाया कि जिस तरह हम ने पिछले ज़मानों में मोमिनीन की मदद की है, उसी तरह आइन्दा भी मोमिनीन की मदद होती रहेगी।

अल्बत्ता मदद में हिक्मत के मुवाफ़िक़ देर भी लग जाती है जैसा कि पिछले अम्बिया अलैहिमुस्सलाम वस्सलाम की उम्मतों के साथ हुआ है, लिहाज़ा अहले ईमान को नाउम्मीद और उदास न होना चाहिए और यह भी समझना चाहिए कि यह ज़रूरी नहीं है कि दुनिया ही में मदद हो जाए। सब से बड़ी मदद यह है कि मौत के बाद इन्सान दोज़ख़ से बच जाए और जन्नत में चला जाए। दुनिया में जो शुक्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी और नेक आमाँल किये यह जन्नत में दाख़िल होने का ज़रिया बनेंगे।

हज़रत अबूदुर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “जिस किसी मुसलमान ने अपने भाई की इज़्ज़त का दिफ़ाउ किया (यानी बेइज़्ज़ती करने वाले को जवाब दिया) तो यह बात अल्लाह तआला के ज़िम्मे है कि इस दिफ़ाउ करने वाले से क़ियामत के दिन अल्लाह तआला जहन्नम की आग को दूर रखेंगे”। इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह आयत وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ तिलावत फ़रमाई। (मिशक़ातुल् मसाबीह-424)

### नाउम्मीदी के बाद उम्मीद

अब फिर हवाओं के भेजने और उन के बाज़ नफ़े का जिक्र फ़रमाया। इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह वही है जो हवाओं को भेजता है। यह हवाएँ बादलों को उठा कर लाती हैं, फिर अल्लाह तआला उन बादलों को जैसे चाहे फैला देता है और कभी उस के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर उन बादलों से बारिश को निकालता है, बारिश आती है तो देखने वाले देखते हैं कि बादल के अन्दर से बारिश आ रही है। इसी को फ़रमाया

مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ

(फिर अल्लाह इस बारिश को अपने बन्दों में से जिसे चाहे पहुँचा देता है, जिन्हें बारिश पहुँच गई वह खुश होते हैं।)

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنَ قَبْلِهِ لُمِبَلِّسِينَ ۝

(और यह बात सच है कि वह लोग इस से पहले नाउम्मीद हो चुके थे) नाउम्मीदों को उम्मीदें दिलाना

यह अल्लाह तआला का इन्आम है, बारिश आने पर खुशी भी मनाये और शुक्रिया भी अदा करें। (क़ुर्तुबी)

फिर फ़रमाया **فَإِنظَرِ إِلَىٰ الظُّرُوبِ رَبِّكَ** कि ऐ मुखातब! तू अल्लाह की निशानियों को देख ले कि वह ज़मीन को उस की मौत के बाद कैसे ज़िन्दा करता है) उस ज़मीन को बार-बार ज़िन्दा फ़रमाता है, बिलाशुब्हा वही मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाने वाला है। ज़मीन की मिसाल सब के सामने है, फिर मुर्दों को ज़िन्दा किये जाने में संदेह और शक क्यों है? अल्लाह तआला ही ने ज़मीन को बार-बार ज़िन्दा फ़रमाया, वही मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा। इस में इन्कार करने वालों को मौत के बाद उठाये जाने की तम्बीह है कि बार-बार अल्लाह तआला के कुदरत की निशानियाँ देखते हो, फिर क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा होकर क़ब्रों से निकलने को क्यों इन्कार करते हो?

इस के बाद फ़रमाया **وَلَيْنَ أَسْأَلَنِي** और अगर हम ख़ास किस्म की हवा चला दें जिस से उन की खेतियाँ ज़र्द नज़र आने लगें यानी उन की हरियाली जाती रहे और पत्ते पीले पड़ जाएँ तो वह उस के बाद नाशुक्री करने लगेंगे यानी पिछली नेअमतों को भूल जाएँगे और नई सूरतेहाल देखकर नाशुक्री पर उतर आएँगे।

**52-53**

**فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الظُّلُمَ الدَّاعِيَةً إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۚ وَمَا أَنتَ بِبَلَدٍ الْعَمَىٰ  
عَنْ صَلَاتِهِمْ ۚ إِنَّ تَسْمِعَ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝**

## मुर्दों, बहरों और अन्धों को हिदायत

यानी आप के सामने जो लोग हैं आप उन के सामने अल्लाह की आयात तिलावत करते हैं, उन के सामने दलायल पेश करते हैं, यह सुनने का इरादा ही नहीं करते।

जिस तरह आप मुर्दों को और बहरों को नहीं सुना सकते जबकि यह बहरें पीठ फेर कर चल दें और इशारा को भी न देखें, उसी तरह यह लोग हैं इन का सुनने का इरादा ही नहीं है, मुर्दों की तरह बने हुए हैं, फिर यह लोग अन्धे भी हैं, राह पर आने को तैयार ही नहीं लिहाज़ा आप की हिदायत देने से हिदायत पर न आएँगे। **صُمُّكُمْ عَنْهُمْ لَا يَرْجِعُونَ**

आप तो बस उन्हीं लोगों को सुना सकते हैं जो अल्लाह की आयात पर यकीन रखते हैं और इस यकीन की वजह से वह फ़रमाँबरदार बने हुए हैं।

इस में इमामुल् अम्बिया मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली है कि जो लोग आप की बातें सुनकर अनुसुनी कर देते हैं और गूँगे बहरे बने हुए हैं आप उन की हालत पर ग़म न करें और उन से ईमान की उम्मीद न रखें, आप का काम दअवत देना और हक़ को ज़ाहिर कर देना है, जो लोग दअवते हक़ कुबूल न करें वह उन की अपनी गुमराही है।

आयते करीमा में जो **فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الظُّلُمَ الدَّاعِيَةً** फ़रमाया है। इस के बारे में सूर: नम्ल की आयत **إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الظُّلُمَ الدَّاعِيَةً** में ज़रूरी बहस गुज़र चुकी है।

54

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝

## इन्सान की कमजोरी

इस आयत में इन्सान की पैदाईश और उस की कुव्वत व कमजोरी की हालत बयान फरमाई गई है। इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम लोगों को ऐसी हालत में पैदा फरमाया कि तुम कमजोर थे यानी बच्चे थे, फिर कमजोरी के बाद कुव्वत से नवाज़ दिया।

इन्सान पहले दूध पीता बच्चा होता है, हरकत के काबिल भी नहीं होता, फिर हाथ पैर चलाता है, नज़रें घुमाता है, अपने घरवालों को पहचानता है, फिर लेटे-लेटे पलटें खाना शुरु कर देता है, फिर टेक लगाकर बैठने लगता है, फिर बगैर सहारे के बैठने लगता है, फिर घुटनों के बल चलना शुरु करता है, फिर सहारे से खड़ा होता है, एक दो कदम चलना शुरु करता है और बिना सहारे चलना शुरु कर देता है।

कमजोरी के हालात से गुज़रता हुआ जवानी में दाखिल होता है, जवानी का ज़माना कुव्वत और ताक़त का होता है, जिस्मानी ताक़त भी अच्छी होती है, बचपन और बुढ़ापे के मुक़ाबिले में अक़ल व समझ भी जवानी में ज़्यादा होती है।

(यानी बाज़ मर्तब: बुढ़ापे में अर्ज़लिल् उमुर आने से पहले सोच समझ की कुव्वत ज़्यादा होती है)

जब बुढ़ापा आ जाता है तो फिर कमजोरी आ जाती है, बाल सफ़ेद हो जाते हैं और जैसे-जैसे बुढ़ापा बढ़ता जाता है कमजोरी भी बढ़ती जाती है, फिर बुढ़ापे को पहुँच जाता है और बचपन वाली कमजोरी आ जाती है, होश व हवास भी बाकी नहीं रहता, वापस होकर फिर उसी कमजोरी पर पहुँच जाता है जैसे बचपन में था।

इसी को सूर: यासीन में फरमाया (وَمَنْ يُعْرِضْ لِنُذْرِنَاكَ فِي الْخَالِقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ) (और हम जिस को ज़्यादा उग्र देते हैं उस को पहले की हालत में वापस कर देते हैं, क्या यह नहीं समझते?)

(अल्लाह जो चाहता है पैदा फरमाता है।)

(और वह ख़ूब जानने वाला और बड़ी कुदरत वाला है) उसे सब के हालात और आमाल का इल्म है और उसे पूरी तरह कुदरत है जिस तरह चाहे पैदा फरमाए और जिस हालत में रखे उसे पूरा अख़्तियार है।

55-57

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَبِمَا كُنْتُمْ كُفَرًا تَعْمَلُونَ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مُعَذِّبَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

## क़ियामत के दिन मुजरिमों की हालत

यह तीन आयत हैं। पहली आयत में बताया गया है कि जब क़ियामत कायम होगी और ज़िन्दा होकर



लोग कब्रों से निकलेंगे तो उस वक़्त मुजरिमीन यानी काफ़िर लोग कसमें खाकर कहेंगे कि हम तो मौत के बाद कब्रों में थोड़ी ही देर रहे हैं।

बाज़ मुफ़स्सरीन ने बताया कि इस से दुनिया की ज़िन्दगी मुराद है और उन के कहने का मतलब यह होगा कि दुनिया में हम थोड़ी ही देर रहे थे, उम्रें तो अच्छी खासी गुज़ारीं लेकिन ईमान (आस्था) न लाए और नेक अमल न किये, इतनी बड़ी ज़िन्दगी बेकार ही चली गई, जो चीज़ें ज़्यादा हों और उस से नफ़ा न उठाया जाए तो वह कम मानी जाती है। जैसा कि कम चीज़ नफ़ा देने वाली हो तो उसे ज़्यादा कहा जाता है। (साहिबे रुह)

इन लोगों का यह कहना कि हम दुनिया में या बरज़ख़ (मौत से क़ियामत का ज़माना) में सिर्फ़ ज़रा देर ही रहे झूठ ही होगा और यह उन का पहला झूठ नहीं होगा, बल्कि दुनिया में जब उन के सामने हक़ आता था तो उस से इन्कार करते थे और उस को झुठलाते और उल्टी ही चाल चलते थे, शैतान और नफ़्स उन्हें नाहक़ पर आमादा करते थे।

जिन लोगों को अल्लाह ने इल्म दिया और ईमान दिया (उन में फ़रिश्ते भी हैं और बनी आदम में से वह लोग भी हैं जिन्हें इल्म और ईमान के लिए चुन लिया) यह हज़रात उन से यूँ कहेंगे कि तुम अल्लाह के हुक्म से क़ियामत के दिन तक ठहरे रहे हो। अल्लाह तआला ने जो लौहे महफूज़ में लिख दिया था और अपनी किताब में जो **وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمُ الْمُرْسَلُونَ إِلَىٰ يُومِ الْبَعْثِ** फ़रमा दिया था, उसी के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक ठहरे रहे हो। **يَوْمِ الْبَعْثِ** से कब्रों से उठाए जाने का दिन मुराद है।

अहले इल्म व ईमान मुजरिमीन से ख़िताब करते हुए यूँ कहेंगे कि यह **يَوْمِ الْبَعْثِ** है कब्रों से ज़िन्दा होकर उठाए जाने का दिन। तुम जिस के इन्कारी थे वह सामने आ गया और आज स्पष्ट हो गया कि तुम्हारा इन्कार करना झूठ था, लेकिन तुम नहीं जानते थे जो हज़रात क़ियामत वाक़ेअ होने और वहाँ की पेशी होने की बातें करते थे तुम उन को झुठलाते थे और मज़ाक़ उड़ाते थे, उन की बात मानते तो तुम्हें आज के दिन का और आज के दिन के हालात का इल्म होता।

तीसरी आयत में फ़रमाया कि जिन लोगों ने अपनी जानों पर जुल्म किया, कुफ़्र अख़्तियार किया, क़ियामत के दिन पर ईमान न लाए अब जो भी कोई माफ़ी माँगे वह कुबूल नहीं होगी और माफ़ी उन्हें कोई नफ़ा न देगी और न उन को इस का मौक़ा दिया जाएगा कि अल्लाह तआला को राज़ी कर लें, क्योंकि इन्कार पर मरने के बाद तौबः करने का कोई मौक़ा नहीं और ऐसे लोगों से अल्लाह तआला कभी राज़ी न होगा।

**58-60**

وَلَقَدْ مَرْبَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا  
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۖ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ فَاصْبِرْ إِنْ  
وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَلَا يَسْخِفُكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝

### अल्लाह का वादा

यह तीन आयत का अनुवाद है। पहले तो यह बताया कि हम ने इस कुर्आन में हर तरह की उम्दह



बातें बता दी हैं, इन में जो कोई ग़ौर व फ़िक्र करेगा तो उस के ज़ेहन में यह बात आ जाएगी कि कुर्आन हक़ है और कुर्आन का हर बयान हक़ है, कुर्आन और साहिबे कुर्आन की दअवत हक़ है, लेकिन जो लोग इन्कार पर तुले हुए हैं और ज़िद व हठधर्मी पर कमर बाँध रखी है वह बात मानने वाले नहीं हैं।

यह कुर्आन खुद एक मोअज़िज़ह (चमत्कार) है, इस के अलावह जितने मोअज़िज़े और आयात आप पेश फ़रमा दें इन्कारी लोग आप के और आप के साथियों के बारे में यूँ ही कहेंगे कि तुम लोग झूठे हो।

झूठों का यह तरीका है कि खुद भी हक़ कुबूल नहीं करते और अहले हक़ को गलत बताते हैं, उन लोगों के बारे में फ़रमाया कि जैसे इन लोगों के दिलों पर मुहर लगा दी गई है, उसी तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो नहीं चाहते और हक़ कुबूल करने के बजाए अपनी खुराफ़ात पर ही जमे रहते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को झूठों व हठधर्मियों की बातों से तकलीफ़ होती थी, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आप सब्र कीजिए बिलाशुब्हा अल्लाह का वादा हक़ है, उस ने जो आप से मदद का और देने इस्लाम को प्रभावी करने और कलिम-ए-हक़ को बुलन्द करने का वादा फ़रमाया है वह ज़रूर पूरा होगा। आप के सब्र में फ़र्क़ न आए, पूरी तरह साबित क़दम रहें, यह लोग जो यकीन नहीं करते, आप की दअवत को नहीं मानते, उन के इस अमल से कहीं ऐसा न हो कि आप के मज़बूत इरादों में कमज़ोरी आ जाए।

यह लोग आप को बेसब्री पर न उकसाएँ, इसलिए आप इन की बिल्कुल परवाह न करें।



(भाग-31)

सूर-ए-लुकमान

(सूरः नं.31)

## आयत नं० 1 से 19 तक

الْمَرَّ بِكَ آيَاتِ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝ هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ  
هُمْ يُوقِنُونَ ۝ أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ  
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ قَهِيمٌ ۝ وَإِذْ اتَّخَذْنَا عَلَيْهِ إِثْمًا وَلَّى مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ  
يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ خَلَقَ السَّمَوَاتِ يَغْفِرُ عَمَدٍ تَرْوَنَهَا وَأَلْفَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِنْ  
كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ  
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ  
عَزِيزٌ حَمِيدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يُعْطِيهِ يَبْنِئْ لَكَ تَشْرِكًا بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ  
حَسَنَةً إِنَّهُ وَهْنٌ عَلَى وَهْنٍ وَفِضْلُهُ فِي عَاصِمٍ ۚ إِنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَى الْمَصِيرِ ۝ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ  
لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝  
يُنَبِّئُكُمْ إِن تَكُن مِمَّنْ خَرَجَ مِنْ خَرْجٍ فَتَكُنْ فِي صَحْرَةٍ أَوْ فِي الزَّمَانِ يَأْتِيهَا اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ  
خَبِيرٌ ۝ يُلَبِّئُ أَهْلَ الصَّلَاةِ وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ ۚ إِنَّهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصِيرٌ ۚ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ مِنْ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا  
تُصْعِقْ حَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَتَّبِعْ فِي الزَّمَانِ مَرَكًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَرَجِبٌ كَلٌّ مُحْتَالٌ فَخُورٌ ۝ وَأَقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ  
صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝

### अनुवाद-

① अलिफू-लाम्-मीम् । ② यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं; ③ हिदायत और रहमत है भले काम करने वालों के लिए; ④ जो नमाज़ कायम करते और ज़कात देते और आखिरत पर यकीन रखते हैं; ⑤ यही अपने 'रब' की ओर से राह पर हैं, और यही हैं कामियाब होने वाले । ⑥ और लोगों में कुछ ऐसे हैं, जो दिल को लुभाने वाली बातों को खरीदते हैं, ताकि बिना किसी इल्म के अल्लाह की राह से भटकाएँ और उनका मज़ाक उड़ाएँ, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला (अपमान जनक) अज़ाब है । ⑦ और जब उसे 'हमारी' आयतें सुनाई जाती हैं तो वह अपने आप को बड़ा समझता हुआ पीठ फेर कर चल देता है, जैसे उसने उसे सुना ही न हो, मानो उसके कान बहरे हैं तो उसे दुःख देने वाले अज़ाब की खुशख़बरी सुना दीजिए । ⑧ जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे उनके लिए नेअमतों के बाग़ हैं; ⑨ उनमें वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह का पक्का वादा है, और वह बड़ी ताक़त वाला, हिकमत वाला है ⑩ 'उसने' आसमानों को पैदा किया, बिना खम्बों के, जैसा कि तुम देखते हो, 'उसी ने' ज़मीन में पहाड़ डाल दिये कि तुम को लेकर लुढ़क न जाए, और उसमें हर तरह के जानवर फैला दिये, और हम ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसमें हर तरह की अच्छी चीज़ें उगाईं । ⑪ यह है अल्लाह की पैदाइश, तो मुझे दिखाओ कि उन्होंने क्या पैदा किया है, जो उसके सिवा (पूज्य) हैं बल्कि यह ज़ालिम तो खुली गुमराही में पड़े हैं । ⑫

और 'हमने' लुकमान को हिकमत (तत्वदर्शिता) दी कि अल्लाह का शुक्र करो और जो व्यक्ति शुक्र करता है, उसका शुक्र करना उसके अपने ही फायदे के लिए है, और जो नाशुक्री करता है, तो भी अल्लाह बेपरवाह हम्द (खूबियों) वाला है। (13) और जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा, "ऐ मेरे बेटे! अल्लाह का साझी न ठहराना, शिर्क तो बड़ा (भारी) जुल्म है।" (14) और 'हमने' इन्सान को ताकीद की है उसके माँ-बाप के बारे में, उसकी माँ ने तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ उठा कर, उसे अपने पेट में रखा, और दो साल उसके दूध छुड़ाने में लगे कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ-बाप का भी, आखिरकार मेरी ही ओर लौट कर आना है। (15) और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा साझीदार ठहरा, कि जिसका तुझे इल्म नहीं है, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार रखना, और पैरवी उनके रास्ते की करना जो व्यक्ति मेरी ओर रुजूअ किया, फिर मेरी ही ओर तुमको लौट कर आना है; उस समय मैं तुम्हें बताऊँगा जो कुछ तुम करते रहे।" (16) (लुकमान ने कहा), "ऐ मेरे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो, फिर वह किसी चट्टान के बीच या आसमान में या ज़मीन में हो, अल्लाह उसको (क़ियामत में) निकाल लाएगा, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) की ख़बर रखने वाला है। (17) ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ायम कर और भली बात का हुक्म दे, और बुरी बातों से रोक और जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र से काम ले, बेशक यह हौसले (साहस) के कामों में से है। (18) और लोगों से बरुख़ी न कर और न ज़मीन पर अकड़ कर चल, बेशक अल्लाह इतराने वाले, बड़ाई हाँकने वाले को पसंद नहीं करता। (19) और अपनी चाल में दर्मियानी (सन्तुलन) चाल अपनाओ और अपनी आवाज़ नीची रखो, इसलिए कि सब से बुरी आवाज़ गधे की है।"

## आयत नं० 1 से 19 तक की व्याख्या

**1-5** الْقَدْ تِلْكَ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝ هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

‘हज़रत इब्ने अब्बास’ (रज़ि०) का इर्शाद है कि सूर: लुकमान मक्का में नाज़िल हुई और उन का एक क़ौल यह भी है कि पूरी सूर: में से तीन आयत **أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ** से लेकर **وَلَوْ أَنَّ سَائِلِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ** तक मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई।

❏ यह हुरूफ़ मुक़त्ताआत में से है, जिस का मअना अल्लाह तआला ही को मालूम है।

**تِلْكَ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ** यह किताब हकीम यानी कुर्आन की आयत हैं जो हिकमत वाली हैं। **هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ** यह कुर्आन अच्छा काम करने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। हिदायत और रहमत तो सारे इन्सानों के लिए है, लेकिन सब इसे कुबूल नहीं करते, कुबूल करने वाले वही लोग हैं जिनके अन्दर मानने की योग्यता है, उन के दिल नर्म हैं, नियतों में इख़्लास (निस्वार्थता) है। इसलिए कुर्आन को सुनकर उस की बात को कुबूल कर लेते हैं, फिर उस के हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और यह कुर्आन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना उन के लिए रहमत का ज़रिया बन जाता है। उन के गुण बयान करते

हुए फरमाया **الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ** कि यह लोग नमाज़ कायम करते हैं **وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ** ज़कात अदा करते हैं **وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ** और आखिरत पर यकीन रखते हैं।

हकीकत में नमाज़ और ज़कात दोनों इस्लाम की अहम इबादात में से हैं जिन का दर्जा तौहीद और रिसालत पर ईमान लाने के बाद है, बाकी दो रोज़ा और हज़ इस्लाम के स्तम्भ तो हैं लेकिन उन का दर्जा नमाज़ और ज़कात के बाद है। नमाज़ और ज़कात की पाबन्दी रहे और आखिरत पर मज़बूत यकीन हो तो इन्सान इस्लाम के दूसरे अहकाम पर ब-आसानी चल सकता है और उन की अदायगी के लिए अपने नफ़्स को आमामा कर सकता है। ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाया कि **أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ** यह हज़रात अपने रब की तरफ़ से हिदायत (सच्चे मार्ग) पर हैं।

**وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ** और यह वह लोग हैं जो कामियाब हैं।

(अस्ल कामियाबी आखिरत की कामियाबी है यानी दोज़ख़ से बच जाना और जन्नत में दाख़िल होना।)

जिन्हें दुनिया ही में इस की खुशख़बरी दे दी गई उन का अज़ीम मर्तबः है। यह विषय सूरः बकरः के शुरु में भी गुज़र चुका है।

चूँकि इन आयात में ज़कात देने का भी ज़िक्र है, इसलिए कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि यह आयात मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई और इस बात की बुनियाद इस पर है कि ज़कात मदीना मुनव्वरह में फ़र्ज हुई और जिन हज़रात ने इन आयात को मक्की कहा है उन्होंने फ़रमाया कि ज़कात भी मक्का में फ़र्ज हो गई थी, अल्बत्ता उस के तफ़सीली अहकाम, मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुए लेकिन अगर ज़कात से आम सदक़ः मुराद ले लिया जाए जैसा कि इससे पहले सूरः रूम की आयत **وَمَا أَتَيْنَكُمْ مِنْ مَّكُولٍ ثَرِيًّا أَلَيْسَ بِجَهَنَّمَ** में गुज़र चुका है तो फिर इन आयात को भी मक्की कहने में कोई हर्ज नहीं रहता।

**6-9** **وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلِيَ مُسْتَكْبِرًا ۚ كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَيَسْتَرْهٖ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ فِيهَا ۖ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝**

कुर्आन पर ईमान लाने वालों के अ़माल, उन के हिदायत पर होने और आखिरत पर कामियाब होने की खुशख़बरी देने के बाद कुर्आन का इन्कार करने वालों के अज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया है। जो कुर्आन के मुख़ालिफ़ रवय्या अपनाते हैं, कुर्आन से खुद भी दूर रहते हैं और दूसरों को भी दूर रखने की कोशिश करते हैं।

لهو الحديث हर वह बात जो अल्लाह की याद से गाफ़िल करे और खेल में लगाये।

हज़रात हसन बसरी (रह०) ने لهو الحديث की तफ़सीर करते हुए फ़रमाया:-

“تعالى وذكره هوكل ما شغلك عن عبادته الله”  
“वह لهو الحديث है”।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से ग़िना यानी गाना बजाना मुराद है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से भी यह बात नक्ल की गई है।

हज़रत मकहूल ताबई (रह०) ने फ़रमाया कि **لَهُوَ الْحَدِيثُ** से गाने बजाने वाली लड़कियाँ मुराद हैं।  
(रुहुल्ल मअानी)

इस आयत का सबवे नुज़ूल बयान करते हुए कई बातें नक्ल की जाती हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बयान फ़रमाया कि 'नज़र बिन हारिस' (जो मुशिरकीने मक्का में से इस्लाम के कट्टर दुश्मनों में से था) ने एक गाने वाली बाँदी ख़रीद ली थी, उसे जिस किसी के बारे में यह ख़बर मिलती थी कि वह इस्लाम कुबूल करने का इरादा कर रहा है तो वह उसे उस लौंडी के पास ले जाता था और उस लौंडी से कहता था कि इस शख़्स को खिला पिला और गाना सुना, फिर जिस शख़्स के साथ ले जाता था उस से कहता था कि यह उस से बेहतर है जिस की तरफ़ तुझे मुहम्मद (सल्ल०) दअवत देते हैं, वह तो कहते हैं कि नमाज़ पढ़, रोज़े रख और उन के साथ मिलकर दुश्मनों से जंग कर।

इस पर आयते करीमा **وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لِبَؤَالِحَدِيثٍ** नाज़िल हुई और एक रिवायत में यूँ है कि 'नज़र बिन हारिस' तिजारात के लिए फ़ारस जाता था, वहाँ से अज़मियों की किताबें ख़रीदता था, फिर उन्हें मक्का में लाकर कुरैश को सुनाता था और कहता था कि मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हें आद और समूद की बातें सुनाते हैं और मैं तुम्हें रुस्तम और फ़ारस के बादशाहों की ख़बरें सुनाता हूँ।

लोगों को यह बातें पसन्द आती थीं जिससे वह उन की तरफ़ मुतवज्जेह होते थे।

इस पर यह आयते नाज़िल हुई और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि 'इब्ने ख़तल' ने यह हरकत की थी कि उस ने गाने वाली बाँदी ख़रीदी जो ऐसे गाने सुनाती थी जो मुसलमानों और इस्लाम के ख़िलाफ़ होते थे।

हज़रत हसन बसरी (रह०) ने यह जो फ़रमाया कि **لَهُوَ الْحَدِيثُ** से हर वह चीज़ मुराद है जो अल्लाह तआला की अ़िबादत और उस के ज़िक्र से हटाये। यह बिल्कुल सही अर्थ है और हदीस शरीफ़ से भी इस की ताईद (पुष्टि) होती है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया:-

**كُلُّ شَيْءٍ يَلْهُو بِهِ الرَّجُلُ بَاطِلٌ إِلَّا رَمِيَهُ بِقَوْسِهِ وَتَأْدِيَهُ فَرَسَهُ وَمَلَاعِبَتَهُ امْرَأَتُهُ فَانْهَنَّا مِنَ الْحَقِّ**

(तिर्मिज़ी व इब्ने माजा कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 337)

मतलब यह है कि तीन चीज़ों के अलावा जो भी कोई बेकार काम करता है तो वह ग़लत है। हाँ, तीन खेल ऐसे हैं जो दुरुस्त हैं:-

- (1) अपनी कमान से तीर फेंकने की मशक़ करना।
- (2) घोड़े को सुधारना (यह दोनों जिहाद के काम में आते हैं जो दीनी ज़रूरत है)
- (3) अपनी बीवी के साथ दिल्लगी करना (जो नफ़्स व नज़र को पाक रखने का ज़रिया है)

### गाने बजाने की हकीकत-

लह्व व लअ़िब में हर तरह का जुआ, ताश खेलना और हर वह काम आ जाता है जो शरीअत में



मना हो, जो नमाज़ और अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करता हो। किसी शख्स को अल्लाह तआला ने अच्छी आवाज़ दी हो और कुर्आन मजीद की तिलावत करे या नज़्द पढ़े (जिस में बजाने का सामान बिल्कुल न हो) या नसीहत के लिए कुछ अशआर पढ़े तो यह जायज़ है। गन्दे गाने, इश्किया गज़लें चाहे उन के साथ बजाने का सामान न हो यह सब मना हैं। इस किस्म के गानों को बाज़ लोगों ने رُقِيَةُ الزَّانَاءِ (ज़िना का मन्त्र) कहा है।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया:- गिना निफ़ाक़ को उगाता है जैसे- पानी खेती को उगाता है। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 411)

अगर इश्किया गज़लें न हों, लेकिन अशआर पढ़ने वाला अच्छी आवाज़ से पढ़े तब भी उसे यह देख लेना चाहिए कि मेरे आस-पास कौन है। अगर औरतें आवाज़ सुन रही हों तो फिर शेअर न पढ़े।

‘सहीह बुख़ारी’ में है कि हज़रत अन्जशा (रज़ि०) एक सद्दाबी थे, वह सफ़र में जा रहे थे। अरब का तरीक़ा था कि सफ़र में ऊँटों को मस्त करने और अच्छी रफ़्तार से चलाने के लिए बुलन्द आवाज़ से शेअर पढ़ते हुए जाते थे। हज़रत अन्जशा (रज़ि०) खुश आवाज़ आदमी थे उन्होंने ऊँटों की रफ़्तारी जारी रखने के लिए अशआर पढ़ना शुरू किये जिसे حُدَى पढ़ना कहते हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन की आवाज़ सुन ली और फ़रमाया कि ऐ अन्जशा! ठहर जाओ शीशों को न तोड़ो। रावी क़तादा (रज़ि०) ने शरह करते हुए बताया कि शीशों से औरतें मुराद हैं जो जल्दी मुतास्सिर हो जाती हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अन्जशा (रज़ि०) ऊँटों को सुनाने के लिए अशआर पढ़ रहे थे चूँकि वहाँ औरतें भी थीं इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन को टोक दिया।

आजकल तो गाना बजाना ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुका है, हलक़ से लुक़्मा तब ही उतरता है जब गाने की आवाज़ सुने और आजकल तो हर घर नाचघर और गाना घर बन गया है, छोटे बड़े मिलकर सब गाना सुनते हैं जिस की वजह से फ़र्ज़ नमाज़ें तक छूट जाती हैं और अल्लाह की याद में मशगूल होने का तो ज़िक्र ही क्या है! जिन घरों को कभी शरीफ़ घराना समझा जाता था आज उन घरानों की बच्चियों को नाच गाना सिखाया जाता है, उन की हिम्मत अफ़ज़ाई की जाती है और उन्हें फन्कार के अल्फ़ाब दिये जाते हैं, फिर ऊपर से ग़ज़ब यह है कि उसे इस्लामी तहज़ीब बताया जाता है।

### गाने से सम्बन्धित रसूलुल्लाह (सल्ल०) का फ़रमान-

हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अल्लाह तआला ने मुझे रहम तुल लिलुआलमीन बनाकर भेजा है और मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं बाजा, गाजा, साज़ व बुतों, सलीबों और जाहिलियत वाले कामों को ख़त्म करूँ।” (अहमद)

हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि गाने वाली लौंडियों की ख़रीद व फ़रोख़्त न करो, उन्हें (गाना) न सिखाओ और उन की कीमत ह़राम है और फ़रमाया इसी जैसे मामले के बारे में आयते करीमा وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ नाज़िल हुई।

हज़रत अबू अल् यहया ने बयान किया कि मैंने इस आयत के बारे में हज़रत इब्ने मस्कूद (रज़ि०) से सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया कि क़सम अल्लाह की जिस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक नहीं। इस आयत में ग़िना यानी गाने की मज़म्मत (बुराई) की गई है। (मुअलिमुल् तन्ज़ील भाग 30 पेज नं० 490)

गाने बजाने के काम ने लोगों को बर्बादी के गढ़े पर लाकर खड़ा कर दिया है और अज़ीब बात यह है कि जो मुसीबतें आती हैं उन्हें अपनी बद्अमली का नतीजा नहीं समझते और अगर समझते हैं तो झूठी ज़बान से कह देते हैं कि यह सब कुछ हमारे आ़माल का नतीजा हैं, लेकिन उन आ़माल को छोड़ने पर आमादा नहीं होते, गुनाहों में जैसे लतपत थे, ऐसे ही मुसीबतों के आने पर उन में मशगूल रहते हैं। बात यह है कि हम ने नफ़्स ही को आगे रख कर इसी को इमाम बना लिया है, उसे नाराज़ करने के लिए तैयार नहीं होते।

हज़रत अबू आमिर अशअरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में ज़रूर ऐसे लोग होंगे जो ज़िना को, रेशम को, शराब को और गाने बजाने के सामान को हलाल कर लेंगे और बहुत से ऐसे लोग होंगे जो एक पहाड़ के करीब क़याम करेंगे और उन के जानवर शाम को उन के पास पहुँचा करेंगे, उन के पास एक शख्स किसी ज़रूरत से आएगा तो उस से कहेंगे कि कल आना, फिर कल आने से पहले ही अल्लाह तआ़ला उन को हलाक कर देगा और उन पर पहाड़ गिर पड़ेगा और उन में से कुछ लोगों को क़ियामत के दिन तक के लिए बन्दर खिन्ज़ीर बना देगा।

(मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 456 सहीह बुख़ारी)

### गाना बजाने वाली चीज़ों को मिटाने का हुक्म

हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने मुझे पूरी दुनिया के लिए रहमत और हिदायत बना कर भेजा है और मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि गाने बजाने के आलात (माध्यम) को, मूर्तियों को, सलीब को (जिसे ईसाई पूजते हैं) और जाहिलियत के कामों को मिटा दूँ। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 318)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) जिन चीज़ों को मिटाने के लिए तशरीफ़ लाए उन्ही चीज़ों को मिला कर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की नज़्द सुनते हैं और गाने के रंग इस्तेमाल करते हैं, फिर ऊपर से सवाब की उम्मीद भी रखते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है الْجَرَسُ مَزَامِيرُ الشَّيْطَانِ (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 338)

(घंटियाँ शैतानों के बाजे हैं और यह भी इर्शाद फ़रमाया है कि لَا تَصْحَبِ الْمَلِئِكَةَ رَفَقَةً فِيهَا كُلبٌ وَلَا جَرَسٌ (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 338)

जिन लोगों के साथ कुत्ता या घंटी हो रहमत के फ़रिश्ते उन के साथ नहीं रहते। एक और हदीस में इर्शाद है कि مَعَ كُلِّ جَرَسٍ شَيْطَانٌ (मुस्लिम) (हर घंटी के साथ शैतान होता है।)

हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िद्मत में एक लड़की दाख़िल होने लगी तो उस के

पैर में बजने वाला ज़ेवर था। हज़रत आइशा सिदीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि उस लड़की को मेरे पास हरगिज़ न मिलाएँ जब तक उस के पैर की घंटी न काट दी जाएँ। मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है कि जिस घर में घंटी हो उस में रहमत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते।

बात यह है कि गाने बजाने का धंधा शैतानी धंधा है, जो लोग शैतानी आ़माल करते हैं उन्हें बजने बजाने वाली चीज़ों से मुहब्बत और रग़बत होती है। इसीलिए देखा जाता है कि मन्दिरों में, गिरजों में और उन तमाम मौकों में जहाँ शैतान की हुकूमत हो गाने बजाने का एहतिमाम होता है। शैतान उन से गाने गवांता है और बाजे बजवाता है, जिसे खुद भी सुनता और मजे लेता है।

### जाहिल पीरों की बद्अमली-

कुछ लोग जो पीरी मुरीदी का पेशा करते हैं, वह अपनी ख़ानकाहों में और क़ब्रों पर साज़ सारंगी, हारमोनियम और तब्ला बजाने का ख़ास एहतिमाम करते हैं और अजीब बात यह है कि इस को ख़ैर समझते हैं और बुजुर्गों का तरीका बताते हैं, हालांकि जिन बुजुर्गों से नअतिया अशआर सुनना बताया जाता है उन्होंने यह फ़रमाया कि ऐसी महफ़िलों में शरीक होने की शर्त यह है कि “बजाने का सामान न हो और बग़ैर दाढ़ी मोछ वाले लड़के और औरतें न हों”।

अगर किसी शख्स ने साज़ और सारंगी के साथ क़व्वाली सुन ली (चाहे पीर ही क्यों न हो) तो उस का यह अमल कैसे दलील बन सकता है, जबकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमा दिया कि मैं गाने-बजाने के सामान को मिटाने के लिए आया हूँ।

इस्लाम में जब बजता हुआ ज़ेवर पसन्द नहीं और जानवरों के गले में जो घंटी डाल दी जाती है वह भी बर्दाश्त नहीं तो गाने बजाने का एहतिमाम करना और उस के लिए जमा होना कैसे ग़वारा हो सकता है?

हज़रत नाफ़ेअ (रज़ि०) ने बयान किया है कि मैं हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ जा रहा था, उन्होंने ‘मज़ामीर’ की आवाज़ सुनी (जो बजाने की चीज़ थी) यह आवाज़ सुनकर उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं और एक ओर रास्ता से दूर हो गये, फिर दूर चले जाने के बाद दर्याफ़्त फ़रमाया कि नाफ़ेअ क्या आवाज़ आ रही है? मैंने अर्ज़ किया कि अब आवाज़ नहीं आ रही। इस पर उन्होंने अपने कानों से उंगलियाँ हटा दीं।

और फ़रमाया मैं एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ जा रहा था कि आप ने एक बांसुरी की आवाज़ सुनी और यही अमल किया जो मैंने किया। वाकिआ बयान कर के हज़रत नाफ़ेअ (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जिस वक़्त का यह वाकिआ है मैं उस वक़्त कम उम्र था।

(मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 411 अहमद, अबूदाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि बिलाशुब्हा रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने शराब और जुवे से, तबले और ग़बीरा से मना फ़रमाया। यह अहले हब्श की एक शराब थी और फ़रमाया कि हर नशे वाली चीज़ हराम है। (अबूदाऊद, मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 318)

## लहवल् हदीस (जो चीज़ खेल में उलझाये)

इस में हर चीज़ आ जाती है, चूंकि सबवे नुजूल में गाना बजाने की चीज़ों का भी ज़िक्र है और यह अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ से बेपरवाही करने में सब से ज़्यादा बढ़कर है और बाज़ लोग कुछ साज़ और सारंगी के साथ क़व्वाली सुनने को सवाब समझते हैं। इसलिए इस विषय को हम ने एहतिमाम से बयान किया है और गाना बजाने के सिलसिले में जो रिवायात सरसरी तौर पर सामने आई हैं, उन को जमा कर दिया है, जो लोग किसी भी ऐसे काम में मशगूल हों जो अल्लाह की याद से हटाए यह सब لَهُوَ الْحَدِيث है।

याद रहे कि लायअनी (फुजूल) बातों में मशगूल होने में यह नुक्सान बहरहाल है कि जितनी देर यह बातें की जाएँगी, तिलावते कुर्आन और ज़िक्रुल्लाह से मह्रूम रहेगा जो बहुत बड़ा नुक्सान है। मुबाह होना दूसरी बात है और सवाब से मह्रूम होना दूसरी चीज़ है, गीबत और चुगली, झूठ तो बहरहाल हराम है।

لَهُوَ الْحَدِيث में बाज़ चीज़ें हराम हैं जिन में किमार यानी जुवां खेलना भी शामिल है और बाज़ चीज़ें मकरुह हैं जिन में गुनाह तो नहीं मगर वक़्त जाया होता है। अगर दिमाग़ की तफ़रीह के लिए शेअर पढ़ा जाए और वह गुन्दा न हो तो यह मुबाह है।

## शतरंज वगैरह का ज़िक्र -

शतरंज के बारे में हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) ने फ़रमाया कि शतरंज से वही शख्स खेलेगा जो गुनाहगार होगा और उन्होंने यह भी फ़रमाया कि यह बातिल चीज़ है और अल्लाह तआला को बातिल चीज़ पसन्द नहीं। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 387)

हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) ही से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख्स नर्द से खेला (जो शतरंज की तरह खेलने की एक चीज़ थी) सो उस ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की। (बैहकी, मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 386)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक शख्स को जो कबूतर के पीछे लगा हुआ था, उसे देख कर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह शैतान के पीछे लगा है।

(मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 386)

हदीस में ताश खेलने का ज़िक्र नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि उस ज़माने में नहीं था, अगर हार जीत की शर्त के साथ हो तो किमार यानी जुवां है, इस के हराम होने में कोई शक नहीं और अगर किमार के बगैर हो तो बहरहाल अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करने वाला तो है ही, जैसा कि ताश खेलने वालों को देखा जाता है।

कुर्आन मजीद में وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لِبَؤَالْعَدِيثِ फ़रमाया है। اِشْتَرَى के मअना ख़रीदने के हैं और एक काम के बदले दूसरे काम को अख़्तियार करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल होता है, जैसा कि اُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُ الضَّلَالَةَ में इस्तेमाल हुआ है।

यहाँ आयते करीमा में जो يَشْتَرَى फ़रमाया इस में इस तरफ़ इशारा है कि बाज़ लोग कुर्आन को छोड़कर उस के बदले لهو الحديث को अख़्तियार कर लेते हैं यानी खेलने की चीज़ों में लग जाते हैं और कुर्आन करीम की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होते, जिस की फ़ज़ीलत सूर: के शुरु की दो आयतों में बयान फ़रमाई।

قَالَ الْبَغَوَى فِي مَعَالِمِ التَّنْزِيلِ أَيْ يَسْتِيدِلُّ وَيَخْتَارُ الْغِنَاءَ وَالْمِزَامِيرَ وَالْمَعَارِفَ عَلَى الْقُرْآنِ. (भाग 3 पेज 490)

**10-11**

خَلَقَ السَّمَوَاتِ يَغْنِمُ غَنِمَهَا وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

यह दो आयतें हैं। पहली आयत में आसमान की पैदाइश और ज़मीन के कुछ हालात बयान फ़रमाए। पहले तो यह फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आसमानों को बग़ैर खम्भों के पैदा फ़रमाया है, तुम आसमानों को देख रहे हो कहीं भी कोई खम्भा नहीं है, इतने बड़े और भारी सातों आसमान केवल अल्लाह तआला की कुदूरत से कायम हैं, इन्हें कायम रखने के लिए उसे खम्भा लगाने और उन पर कायम रखने की कोई ज़रूरत नहीं है।

इस के बाद पहाड़ों की पैदाइश का ज़िक्र फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन में बड़े भारी-भारी पहाड़ डाल दिये ताकि वह तुम्हें लेकर हरकत न करें। अगर यह पहाड़ न होते तो समुद्रों के पानी की वजह से जो उसे घेरे हुए हैं और सख्त तेज़ हवाओं की वजह से ज़मीन हरकत करती रहती है। जब वह हरकत करती है तो बनी आदम भी उस के साथ गिरते पड़ते और कोई काम न कर पाते।

यूँ तो अल्लाह तआला को कुदूरत है कि पहाड़ों के बग़ैर भी ज़मीन को मिलने जुलने से महफूज़ रखे, लेकिन उस ने अस्बाब के तौर पर इस से पहाड़ पैदा फ़रमा दिये, इसीलिए जब अल्लाह तआला की मर्जी होती है तो पहाड़ों के होते हुए भी ज़मीन में ज़लज़ला आ जाता है और क़ियामत के दिन तो ज़मीन में पूरी तरह भूचाल आना ही है, जिसे ۝ رَبِّهِ الْأَرْضِ ۝ में बयान फ़रमाया है।

याद रहे कि आयते करीमा में जिस हरकत का इन्कार किया गया है उस से ज़लज़ला जैसी हरकत मुराद है, अगर ज़मीन की हरकत गोल हो जैसा कि अहले साइंस कहने लगे हैं तो आयते करीमा में इस का इन्कार नहीं है।

फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन में हर तरह के चौपाये पैदा फ़रमा दिये, यह चौपाये ज़मीन पर फैले हुए हैं, चरते-फिरते और खाते-पीते हैं, इन्सानों और इन्सानों की ज़रूरत में काम आते हैं। अल्लाह तआला ने आसमान से ज़मीन पर पानी बरसाया जो बार-बार बरसता है और बरसता रहता है, उस पानी की वजह से बहुत सी किस्म की चीज़ें पैदा होती हैं जो इन्सानों के भी काम आती हैं और उन के चौपायों को भी उन में से चारह मिलता है।

दूसरी आयत में फ़रमाया कि जो ऊपर ज़िक्र हुआ कि यह सब अल्लाह तआला की बनावट है। जो इन चीज़ों का ख़ालिफ़ है सिर्फ़ वही अ़िबादत के लायक़ है। मुशिरकीन ने अल्लाह तआला के सिवा जो मअ़बूद

(उपास्य) बना रखे हैं वह तो बेबस हैं, अगर उन्होंने कोई चीज़ पैदा की हो तो दिखाओ वह क्या है? जब कायनात का ज़र्रह-ज़र्रह अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया और तुम्हारे तय किये हुए बातिल मअबूद (उपास्य) भी उसी की मख़्लूक हैं और उन के बेबस होने का यह हाल है कि यह सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ तो उन्हें अल्लाह तआला का शरीक क्यों ठहराते हो? अल्लाह तआला के सिवा मअबूद बनाना खुली गुमराही है।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए आयते करीमा بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ पर ख़त्म फ़रमाया।

12-15

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ  
حَمِيدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَبْنَىٰ لَا تَشْرِكْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝ وَصَدَقْنَا  
الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۚ وَهُمَا عَلَىٰ وَجْهِ فَضْلَةٍ ۚ فِي غَمَمِينَ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ۚ إِلَيَّ  
الْبَصِيرُ ۝ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا  
مَعْرُوفًا ۚ وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

इस रुकूअ में हज़रत लुक़मान (रह०) का और उन की नसीहतों का ज़िक्र है जो उन्होंने अपने बेटे को की थीं, दर्मियान में यह भी इर्शाद फ़रमाया कि हम ने इन्सान को वसीयत की है कि वह अपने माँ-बाप के साथ अच्छी तरह पेश आए।

## हज़रत हकीम लुक़मान (रह०) का परिचय

हज़रत हकीम लुक़मान (रह०) कौन थे और किस ज़माने में थे? इस बारे में इतिहासकार और उलम-ए-तफ़सीर ने कई बातें लिखी हैं। यह सब बातें इस्राईलियात में से हैं (यानी प्रमाण कोई अहम नहीं है।) 'साहिबे रुहुल् मअानी' में लिखा है कि वह हज़रत अय्यूब (अलै०) की बहन के बेटे थे और एक कौल यह है कि उन की ख़ाला के बेटे थे, वालिद का नाम 'बाअवा' और 'अन्का' लिखा है और एक कौल यह है कि यह 'आज़र' की औलाद में से थे, यह लगभग एक हज़ार साल तक ज़िन्दा रहे, फिर हज़रत दाऊद (अलै०) का ज़माना पाया और उन से इल्म भी हासिल किया।

'वाक़दी' से नक्ल किया गया है कि यह हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) के दर्मियान जो ज़माना था उस में गुज़रे हैं, फिर इस में भी यह इख़िलाफ़ है कि वह नबी थे या नहीं।

हज़रत इक्रिमा और शअबी से नक्ल किया गया है कि वह नबी थे। बाज़ लोगों ने उन्हें हब्शी बताया है, उन के आज़ाद और गुलाम होने में भी इख़िलाफ़ है। واللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ بِاَصْوَابِ

उन का पेशा क्या था? इस बारे में भी बहुत से कौल हैं। पहला यह कि वह नज्जार थे यानी बढ़ई का काम करते थे और दूसरा यह कि गद्दे और तकिये बनाते थे। तीसरा यह कि दर्जी का काम करते थे और एक कौल यह है कि बकरियाँ चराते थे। यह सब बातें लिखने के बाद 'साहिबे रुहुल् मअानी' भाग-1 पेज नं० 83 में फ़रमाते हैं وَلَا وَثُوقَ لِي بِشَيْءٍ مِنْ هَذِهِ الْأَخْبَارِ غَيْرَائِي اخْتَارَانَهُ كَانَ رَجُلًا صَالِحًا حَكِيمًا وَلَمْ يَكُنْ نَبِيًّا



(यानी इन बातों में से किसी बात पर भी यकीन नहीं किया जा सकता और मैं यह मानता हूँ कि वह नेक इंसान नेक आदमी थे, हकीम थे और नबी नहीं थे।) जब नबी नहीं थे तो उन को खिताब कैसे किया गया? वह बज़रिये इल्हाम था या उन के ज़माने के नबी के ज़रिये था। बाज़ रिवायात में है कि वह बनी इस्राईल के काज़ी थे।

### हिक्मतें-

हज़रत लुक़मान (रह०) से बहुत सी बातें हिक्मत की हैं। 'मुवत्ता इमाम मालिक' में है कि हज़रत लुक़मान हकीम से पूछा गया कि यह जो आप को इल्म और फज़ल मिला है उस का क्या ज़रिया है? उन्होंने फ़रमाया कि तीन बातों पर अमल करने से यह मक़ाम हासिल हुआ:-

- (1) सच्ची बात करना
- (2) अमानत अदा करना
- (3) फुजूल बात और बेकार काम को छोड़ देना। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 445)

यह जो फ़रमाया कि हम ने लुक़मान को हिक्मत दी, इस हिक्मत की तशरीह में भी बहुत सी बातें हैं। 'हज़रत इब्ने अब्बास' (रज़ि०) से नक्ल किया गया है कि हिक्मत से अक्ल व समझ और समझदारी मुराद है और 'अल्लामा राग़िब अस्फ़हानी' (रह०) ने फ़रमाया कि इस से अच्छे काम करना मुराद है।

इमाम राज़ी (रह०) ने फ़रमाया कि इल्म के मुताबिक़ अमल करना मुराद है और बाज़ रिवायात में फ़रमाया कि इस से इल्म व अमल दोनों की पुख्तगी मुराद है। (रुहुल मअानी)

لَا تَكْفُرْ بِاللَّهِ (कि तू अल्लाह का शुक्र अदा कर) जो नेअमतें तुम्हें दी हैं उन सब का और खासतौर से हिक्मत जो अता फ़रमाई है उस का शुक्र अदा करो। وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّا نُكَفِّرْ نَفْسَهُ (और जो शख्स अल्लाह का शुक्र अदा करता है वह अपनी ही जान के लिए शुक्र करता है।)

क्योंकि इस शुक्र का नफ़ा खुद उसी को पहुँचेगा, अल्लाह तआला सवाब भी अता फ़रमाएगा और मज़ीद नेअमतें भी देगा। जैसा कि لَيْسَ شُكْرُكُمْ لِيْذِكُمْ में स्पष्ट फ़रमाया है।

وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيْرٌ حَمِيْدٌ और जो शख्स नाशुक्र करेगा तो उस में उस का अपना ही नुक़सान है और अल्लाह तआला को किसी के शुक्रगुज़ार होने की ज़रूरत नहीं, वह सारी मख़्लूक और सारी मख़्लूक के आमाँल से बेनियाज़ है, वह हमीद यानी तमाम खूबियों वाला है, उस की ज़ात कामिल है, सिफ़ाते आलिया भरी है, कोई शख्स उस की हम्द व सना बयान करने में मशगूल हो या न हो वह बहरहाल हमीद है।

### शिक़ बहूत बड़ा जुल्म है-

इस के बाद हज़रत लुक़मान हकीम (रह०) की एक अहम नसीहत का ज़िक्र फ़रमाया और वह यह कि तू किसी को अल्लाह का शरीक न बनाना। न यकीन में, न अ़िबादात में اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ (बिलाशुब्हा शिक़ अज़ीम है) जिस किसी चीज़ को बे मौके इस्तेमाल किया जाए उसे जुल्म कहते हैं और इस से बड़ा क्या जुल्म होगा कि अपने जन्मदाता और मालिक को छोड़कर ही अपने जैसी मख़्लूक की अ़िबादत की जाए।

## वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ (और हम ने इन्सानों को ताकीद की कि अपने वालिदैन के साथ अच्छी तरह पेश आते रहें, उन की खिद्मत करें, अच्छे सुलूक का रवैया अख्तियार करे, इन्सान को समझना चाहिए कि कभी वह ज़रूरतमन्द था उस वक़्त उस के माँ-बाप ने उस की खिद्मत की, उस की ज़रूरतों का खयाल रखा और उस के लिए तक्लीफें बर्दाश्त कीं, एक माँ ही की मुसीबत को देख लें उस ने गर्भ के ज़माने में पेट में रखा, तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ को बर्दाश्त किया क्योंकि जैसे-जैसे गर्भ की मुद्दत बढ़ती चली जाती है उस के साथ-साथ औरत की कमज़ोरी भी बढ़ती चली जाती है। सूर: बनी इस्राईल में जो दुआ बताई गई है उस में माँ-बाप दोनों की मेहनत व मशक्क़त का ज़िक्र है। इर्शाद है:-

وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا (ऐ इन्सान तू यूँ दुआ कर कि ऐ रब! इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपने में पाला है।)

## दूध पिलाने का समय

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ (और इन्सान का दूध छोड़ना दो साल में है) बच्चे की पैदाइश के बाद दूध पिलाने का सिलसिला चलता है। उस ज़माने में भी माँ-बाप को तक्लीफ़ उठानी पड़ती है, बच्चा दूध पीता जाता है, जिस्म बढ़ता रहता है, तन्दुरुस्ती आती रहती है, माँ दूध पिलाने का एहतिमाम करती है, बाप भी कमाई करता है, बच्चा सोते-सोते डर जाता है, कभी बुखार आ जाता है, कभी किसी और तक्लीफ़ में मुब्तिला हो जाता है, माँ-बाप मेहनत के साथ उस की खिद्मत करते हैं, उसे आराम से सुलाते हैं, अपनी नींद खोते हैं और उसे सीने से लगाये रहते हैं। यह तो बचपने की बातें हैं और इस के बाद भी बालिग़ होने तक उस की परवरिश में लगे ही रहते हैं। उन की मेहनतों और मशक्क़तों को सामने रखा जाए तो एक शरीफ़ इन्सान का दिल यही चाहता है कि जब बड़ा हो गया तो अब उन्हें आराम पहुँचाए और उन की खिद्मत करे और उन की खिद्मत का शुक्रगुज़ार हो।

इन्सानियत यही है फिर अल्लाह तआला ने इस का हुक्म फ़रमाया है, सब से बड़ा शुक्र तो अल्लाह तआला का है जिस ने इन्सान को पैदा फ़रमाया और उस के माँ बाप को भी और माँ-बाप के दिल में मुहब्बत और मामता डाली जिन्होंने दुख-सुख में परवरिश की, उन की यह मेहनत और मशक्क़त शुक्र के काबिल है। इसलिए फ़रमाया اِنَّ الشُّكْرَ لِلّٰهِ وَالْوَالِدَيْنِ

(कि तू मेरा शुक्र अदा कर और अपने माँ-बाप का) साथ ही اِلَى الْوَالِدَيْنِ भी फ़रमाया (कि सब को मेरी तरफ़ लौटना है) कोई शख्स जो भी अमल करेगा उस का बदला पा लेगा।

इस के बाद फ़रमाया (और अगर तेरे वालिदैन तुझ पर इस बात का ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक ठहराए जिस की तेरे पास कोई दलील नहीं है तो उन की फ़रमाँबरदारी न करना)। दुनिया में अल्लाह के साथ लोग शरीक ठहराते हैं, यह एक अन्धी पैरवी के तौर पर है, माँ-बाप को शिर्क करते हुए देखते हैं तो खुद भी शिर्क में मुब्तिला हो जाते हैं।

**16-19** يَبْنِيْ اِيْهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبِيْبَةٍ مِّنْ حَرْدَلٍ فَمَنْ كُنْ فِيْ صُخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَآتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يَبْنِيْ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاذْكُرْ عَلٰى مَا اٰصٰبَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَوْ تَصَغَّرَ حَدُّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَشِشْ فِي الْمَرْغَبِ مَرِيْءًا

إِنَّ اللَّهَ لَا يَحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۚ وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْظُمْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَبِيرِ ۝

## हज़रत लुक़्मान की वसीयतें

इन्सानों को माँ-बाप के साथ अच्छे सुलूक के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म फ़रमाने के बाद फिर हज़रत लुक़्मान की वसीयतों का बयान शुरू होता है। हज़रत लुक़्मान ने अपने बेटे से फ़रमाया कि अल्लाह तआला का इल्म बहुत बड़ा है, वह अपनी मख़्लूक को और मख़्लूक के हर अमल को ख़ूब अच्छी तरह जानता है।

जब क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो वह छोटे-बड़े अमल का बदला देगा, अगर किसी शख्स ने कितना ही छुपा कर कोई अमल किया हो जो छोटा होने में राई के दाने के बराबर हो और उस के छुपाने की यह सूरत हो कि वह किसी पत्थर के अन्दर छुपा हुआ हो या आसमानों के अन्दर मौजूद हो या ज़मीन में हो तो अल्लाह तआला को उस का भी इल्म है, जो चीज़ें छिपी हुई हैं वह भी उस से छुपी नहीं हैं।

हज़रत लुक़्मान ने फ़रमाया कि देखो बेटा किसी का कोई भी अमल हो, किसी भी तरह और कहीं भी छुपा हो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस को ज़ाहिर फ़रमा देगा।

कोई शख्स यह न समझे कि मैं जो भी अमल छुप कर कर लूँगा उस की सज़ा से बच जाऊँगा, बिलाशुब्हा अल्लाह तआला लतीफ़ (गहरी निगाह रखने वाला) है, हर-हर चीज़ को जानता है और ख़बीर (ख़ूब खबर रखने वाला भी) है उसे हर शख्स, हर फ़र्द और हर अमल की ख़बर है।

## बेटों को नमाज़ का हुक्म-

हज़रत लुक़्मान ने अपने बेटे को नमाज़ कायम करने और (अच्छे कामों) अम्र बिल् मअरूफ़ और नहि अनिल् मुन्कर (बुरे काम) करने की भी वसीयत फ़रमाई, नमाज़ को कायम करना, अच्छी तरह पढ़ना, दुनियावी धंधों से दिल हटा कर नमाज़ में लगाना, नमाज़ ही की तरफ़ मुतवज्जेह रहना और नमाज़ को सही तरीके पर अदा करना और खुद नेकी पर कायम रहते हुए दूसरों को भी भलाई का हुक्म करना और बुराईयों से रोकना यह सब बहुत बड़ा और अहम काम है।

फिर जब कोई शख्स लोगों को फ़रायज़ व वाजिबात की तरफ़ मुतवज्जेह करे, नेक कामों को कहे और गुनाहों को रोके तो बाज़ मर्तबः लोग आड़े आ जाते हैं, बेटुके जवाब देते हैं, तरह-तरह की बातें सुनाते हैं जिस से दिली व रुहानी तक्लीफ़ होती है और बाज़ मर्तबः जाहिल लोग जिस्मानी तक्लीफ़ भी पहुँचा देते हैं, उस पर सब्र करने की ज़रूरत होती है। इसलिए साबित क़दमी के साथ काम करते रहने और जो तक्लीफ़ पहुँचे उसे सहने और उस पर सब्र करने की अहमियत बयान करते हुए **إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ** फ़रमाया कि बिलाशुब्हा यह सब हिम्मत के कामों में से हैं।

## सब्र करने की अहमियत व ज़रूरत

وَالصَّبْرُ عَلَى مَا آتَاكَ ۖ यानी यह 'अम्र बिल् मअस्सुफ़ और नहि अनिल् मुन्कर' के सियाक (context) में है, लेकिन यहाँ हर तरह की मुसीबत पर सब्र करने को कहा गया है। हकीकत में किसी भी तकलीफ़ पर सब्र करना उस वक़्त तो बड़ा मुश्किल मालूम होता है, लेकिन उस का फल मीठा और अच्छा ही सामने आता है जिसे إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ में बयान फ़रमाया है।

## अपनी बड़ाई न करो

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे से यह भी फ़रमाया कि लोगों से अपना रुख़ मत फ़ेरो यानी घमण्ड न करो और ऐसा अन्दाज़ रखो जिस से अपनी बड़ाई और लोगों की हिक़ारत ज़ाहिर न होती हो यानी लोगों के साथ खुशी के साथ पेश आओ, हक़ पर कायम रहते हुए घुल मिलकर रहो, उन की तरफ़ से अपना रुख़ फेर कर और चेहरा मोड़ कर न गुज़र जाओ।

हकीकत में यह बहुत बड़ी नसीहत है और उन लोगों को तम्बीह है जिन्हें कुछ इल्म या माल या ओहदा मिल जाता है तो वह दूसरों को इस काबिल नहीं समझते कि उन के साथ उठें बैठें या उन के साथ भाईचारागी और मेहरबानी के साथ पेश आएँ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इतनी बड़ाई दी गई कि जो किसी मख़्लूक को अता नहीं फ़रमाई। आप (सल्ल०) सादगी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते थे। शमायल तिमिज़ी में आप (सल्ल०) के अख़्लाक़े करीमा का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया है وَإِذَا التَّلَعَّتْ تَلَعْتَ مَعًا कि जब आप (सल्ल०) किसी की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे जिस्म के साथ तवज्जोह फ़रमाते थे, ऐसा नहीं कि जिस से बात हो रही हो उस के साथ लापरवाही और बेतवज्जोही का मामला फ़रमाते।

हज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का यह तरीक़ा था कि जब किसी से मुसाफ़ह करते तो उस के हाथ से अपना हाथ खुद नहीं छुड़ाते थे जब तक कि वही अपना हाथ न छुड़ा लेता और जिस से मुलाकात होती थी उस की तरफ़ से अपना चेहरा नहीं फेरते थे जब तक कि वह खुद न फेर लेता। (मिशक़ातुल् मसाबीह पेज नं० 520 तिमिज़ी)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन मुहब्बत वाला होता है और उस में कोई ख़ैर नहीं जो मुहब्बत नहीं रखता और जिस से लोग मुहब्बत नहीं रखते। (मिशक़ातुल् मसाबीह पेज नं० 425 अहमद व बैहकी व मजमज़ल् ज़वायद भाग 10 पेज नं० 273)

## घमण्ड-

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए यह भी फ़रमाया कि ज़मीन पर इतराते हुए अकड़ते-मकड़ते हुए न चलो क्योंकि यह घमण्ड की बात है और अल्लाह तआला घमण्ड करने वाले और फ़ख़्र करने वाले को दोस्त नहीं रखता।

सूर: बनी इस्राईल रुकूअ नम्बर-3 में यह भी गुज़र चुका है कि वहाँ यह भी फ़रमाया:-

إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طَوْرًا (बिलाशुब्हा तू ज़मीन को नहीं फाड़ सकता और लम्बाई के एतिबार से पहाड़ों तक नहीं पहुँच सकता) यानी तुझ से बड़ी-बड़ी मख़्लूक मौजूद है। तुझे अकड़ना, इतराना और शेखी बघारना कहाँ ज़ेबा देता है?

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे से यह भी कहा कि अपनी रफ़्तार में दरमियानापन अख़्तियार करो यानी इस तरह चलो कि दौड़भाग न हो क्योंकि यह एक अच्छे इन्सान की चाल के खिलाफ़ है और इस में खुद अपनी ज़ात को, ज़मीन पर रहने और बसने वालों और चलने फिरने वालों के लिए भी ख़तरा है और न बहुत आहिस्ता चलो जैसा कि घमण्डी और बनावटी चलते हैं ताकि लोगों पर अपनी योग्यता ज़ाहिर करें। हाँ, अगर कोई बीमार और कमज़ोर है तो वह दूसरी बात है।

### आवाज़ को पस्त करने का हुक्म-

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को यह नसीहत भी फ़रमाई कि अपनी आवाज़ को पस्त रखो यानी शोर न करो और ज़रूरत से ज़्यादा बुलन्द आवाज़ न निकालो, साथ ही यह भी फ़रमाया कि आवाज़ों में सब से ज़्यादा बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है, जिस तरह गधों की आवाज़ से तकलीफ़ होती है उसी तरह इन्सानों के चीखने और चिल्लाने से भी घबराहट और तकलीफ़ होती है।





## आयत नं० 20 से 34 तक

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنبِئٍ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْمِعُوا مَّا أُنزِلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۖ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۚ وَمَن يَسْلَمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۖ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۚ وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۖ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ ثُمَّ لِيَلْزَمَهُمْ وَلِئَلَّا يَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۚ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ اللَّهُ مَّا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَمِيدُ ۚ وَلَوْ أَنَّ مَّا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ آبِحُرَ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعْضَكُمْ إِلَّا كُنُفًى وَأَجْدَدٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الْفَوْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الْبَاطِلُ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۚ وَإِذَا غَشِيَهم مَّوْجٌ كَالظُّلُمِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۖ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۚ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۖ وَاحْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَن وَلَدِهِ ۖ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَارٌ عَن وَالِدِهِ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمُ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۖ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَنْتَوِي ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ

### अनुवाद-

- (20) क्या तुम देखते नहीं, कि अल्लाह ने उन तमाम चीजों को जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुम पर अपनी खुली और छिपी नेअमतेँ पूरी कर दी हैं? और इन्सानों में कुछ ऐसे लोग हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, बिना किसी इल्म, हिदायत और रोशन किताब के; (21) और जब उनसे कहा जाता है, “उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है” तो कहते हैं, “(नहीं) बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।” क्या उस हाल में भी कि अगर शैतान उन्हें भड़कती हुई आग की ओर बुला रहा हो? (22) और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे, और भला भी हो, तो उसने ही मज़बूत सहारा थाम लिया, और सारे मामलों का अंजाम तो अल्लाह ही की ओर है (23) और जिसने इन्कार किया उसका इन्कार आप के लिए ग़म का ज़रिया न बने, उनको तो पलट कर ‘हमारी’ ही ओर आना है, फिर हम बता देंगे कि उन्होंने क्या कुछ किया था? बेशक अल्लाह सीनों की बातों को जानता है। (24) हम उनको थोड़ा मज़ा उड़ाने देंगे, फिर उनको एक सख्त अज़ाब की ओर खींच कर ले जाएँगे। (25) और अगर तुम उनसे पूछो कि, “आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है?” तो ज़रूर कहेंगे, “अल्लाह ने, कह दीजिए, तमाम तअरीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं,” मगर उसमें

से अक्सर लोग नहीं जानते। (26) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है, बेशक अल्लाह बेपरवाह इम्द (तअरीफ़) के लायक है। (27) और अगर ज़मीन के जितने पेड़ हैं, कलम बन जाएँ और समुद्र उसकी स्याही हो जाए, इसके बाद सात और समुद्र हों तब भी अल्लाह की बातें खत्म न हों, बेशक अल्लाह बड़ा ताक़त वाला, हिकमत वाला है। (28) तुम सब का पैदा करना और (तुम सब का ज़िन्दा करके) दोबारा उठाना, तो बस ऐसा ही है जैसे एक जीव का, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है। (29) क्या तुम देखते नहीं, कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है, और दिन को रात में, और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है? हर एक अपने एक निर्धारित समय तक चले जा रहे हैं? और अल्लाह को ख़बर है, जो कुछ तुम करते हो। (30) यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक़ (सत्य) है और यह कि उसे छोड़ कर जिनको यह लोग पुकारते हैं, वे असत्य हैं, और यह कि अल्लाह ही सबसे ऊँचा (और) महान है। (31) क्या तुम देखते नहीं, कि नाव समुद्र में अल्लाह के फ़ज़ल (अनुग्रह) से चलती हैं, ताकि 'वह' तुम्हें कुछ निशानियाँ दिखाए? बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए, जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। (32) और जब मौजें (लहरें) उन पर बादलों की तरह ढाँप लेती हैं, तो अल्लाह ही को पुकारते हैं, दीन को उसके लिए ख़ालिस करते हुए, फिर जब वह उनको बचा कर थल की ओर ले आता है, तो उनमें से कुछ ही सही राह पर कायम रहते हैं, और 'हमारी' निशानियों का इन्कार तो बस वही करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले नाशुके हैं; (33) ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपनी औलाद की ओर से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की ओर से बदला देने वाली होगी, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोखे में न डाले, और न अल्लाह के बारे में वह धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें धोखे में डाले। (34) उस (क़ियामत की) घड़ी का इल्म अल्लाह ही के पास है, वही बारिश बरसाता है और जानता है जो कुछ (माओं के) रहिम (गर्भ) में है। और कोई नफ़्स (व्यक्ति) नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

## आयत नं० 20 से 34 तक की व्याख्या

20-24

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْمِعُوا مَّا أُنزِلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَسْمَعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۖ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝ وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۖ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝ وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۖ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ ثُمَّ نُظَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

## अल्लाह तआला की नेअमतेँ

हज़रत लुकमान की नसीहतों का ज़िक्र करने के बाद फरमाया, “क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह

तअाला ने वह सब कुछ तुम्हारे लिए पैदा फरमा दिया जो आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है।  
मतलब यह है कि जो चीज़ें आसमान व ज़मीन में पैदा फरमाई हैं उन्हें तुम्हारे काम में लगा दिया”।

## इन्सान के अधीन

उन में बाज़ चीज़ें तो वह हैं जो इन्सान के हुक्म के ताबेअ (अधीन) हैं और जो ताबेअ (अधीन) नहीं हैं वह भी इन्सानों के लिए फ़ायदेमन्द हैं, उन का वजूद किसी न किसी तरह से इन्सान के नफ़ेअ का ज़रिया हैं, इन्सान अगर ग़ौर करे और अपने नफ़ेअ व नुक़सान को पहचाने तो यह बात उस की समझ में आ जाएगी।

फिर फ़रमाया कि अल्लाह तअाला ने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें उंडेल दी हैं यानी भरपूर नेअमतें अता फरमाई हैं। अल्लाह तअाला ने इन्सान को इतनी ज़्यादा नेअमतें दी हैं जिन को शुमार नहीं कर सकता और यह नेअमतें जिस्मानी भी हैं और रूहानी भी, ज़ाहिरी भी और बातिनी भी, अहले ईमान के लिए तो ईमान बहुत बड़ी नेअमत है, बल्कि सब से बड़ी नेअमत है जो आख़िरत में नेअमतों के मिलने का ज़रिया है।

## अल्लाह तअाला की नेअमतें-

तमाम इन्सानों को अल्लाह तअाला ने जिस्म दिया, सेहत व आफ़ियत अता फरमाई, तरह-तरह की ग़िज़ाएँ दीं और यह पाँच चीज़ें (यानी सुनने, देखने, समझने, ज़ायका और छूने की) अता फरमाई। अक्ल व समझ से नवाज़ा, अच्छी सूरत दी, जिस्म में जोड़ रखे, जिन के ज़रिये उठता-बैठता, लेटता और चलता फिरता है, ज़रूरत की चीज़ों को पकड़ता और इस्तेमाल करता है, यह सब अल्लाह तअाला की नेअमतें हैं।

ज़ाहिरी नेअमतों से कौन सी नेअमतें मुराद हैं और बातिनी नेअमतों में से कौन सी हैं? इस के बारे में ‘साहिबे रुहुल् मअानी’ ने बहुत से क़ौल नक्ल किये हैं।

एक क़ौल यह है कि ज़ाहिरी नेअमतों से इस्लाम का प्रभावी होना और दुश्मनों के मुक़ाबिले में विजयी होना और बातिनी नेअमतों से फ़रिश्तों की मदद मुराद है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि ज़ाहिरी नेअमतों से दुनियावी नेअमतें और अन्दुरुनी नेअमतों से आख़िरत की नेअमतें मुराद हैं।

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि ज़ाहिरी नेअमतों से सुनना, देखना, ज़बान और तमाम जिस्म के हिस्से मुराद हैं और बातिनी नेअमतों से दिल और अक्ल व फ़हम मुराद हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि ज़ाहिरी नेअमतें वह हैं जो सब के सामने हैं और बातिनी नेअमतें वह हैं जो हर शख्स के साथ खास हैं।

नेअमतों का तकाज़ा यह है कि जिस ज़ाते पाक ने यह नेअमतें दी हैं सिर्फ़ उसी की अ़िबादत की जाए, लेकिन कुछ लोग तौहीद के बारे में झगड़ते हैं, अल्लाह तअाला को मअबूदे हकीकी मानने को तैयार नहीं, उन के पास न इल्म है, न हिदायत, न कोई अल्लाह तअाला की नाज़िल किताब है जिस की रौशनी में कोई बात करते, केवल बाप दादों की अन्धी पैरवी कर रखी है। जब उन्हें तौहीद (अद्वैतवाद) की दअवत

दी जाती है और कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने जो कुछ नाज़िल फ़रमाया है उस की पैरवी करो तो कह देते हैं कि हम ने जिस दीन पर अपने बाप-दादों को पाया है उसी की पैरवी करते रहेंगे, उन लोगों की जिहालत और बेवकूफी पर तम्बीह करते हुए फ़रमाया:

﴿أُولَٰئِكَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ﴾ (क्या यह लोग अपने बाप दादों की पैरवी करते रहेंगे, चाहे उन लोगों को शैतान दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो।)

वह इस की दअवत को कुबूल कर के (जो शिर्क और कुफ़्र की दअवत है) दोज़ख़ में जा चुके हों। मतलब यह है कि होश से काम लो, दुनियावी नुक्सान और घाटे के बारे में तो किसी की पैरवी करने को तैयार नहीं होते और साफ़ कह देते हैं कि फ़लां शख्स कुंवें में गिरने लगे तो हम क्यों गिरें, लेकिन बाप दादों की पैरवी कर के दोज़ख़ में हमेशा के अज़ाब में जाने को तैयार हैं।

अहले शिर्क और अहले कुफ़्र की बेवकूफी और गुमराही बताने के बाद अहले ईमान की तअरीफ़ फ़रमाई और फ़रमाया:

﴿وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ﴾

(और जो शख्स अपनी ज़ात को अल्लाह का फ़रमाँबरदार बना दे और वह मुख़्लिस भी हो तो उस ने मज़बूत कड़े को अच्छी तरह से पकड़ लिया।)

## इख़्लास

यानी जिस ने अपने जिस्म और जान को अल्लाह तआला का फ़रमाँबरदार बना दिया (अक़ायद में भी आ़माल में भी) और उस की यह फ़रमाँबरदारी इख़्लास के साथ है, फिर ज़ाहिर और बातिन दोनों यक़्साँ हैं तो उस ने बड़े मज़बूत कड़े को पकड़ लिया यानी ऐसे दीन को अपनाया जिसने नुक्सान व तबाही से पूरी तरह बचा लिया, जिस की वजह से दोज़ख़ में जाने से बच गया और दारुल् नईम यानी जन्नत में ले जाने का जरिया बन गया। दीन तौहीद मज़बूत कड़ा है जो तोड़ने वाला नहीं है। जैसा कि सूर: बक्र: में 'लन् फ़िसामा लहा' फ़रमाया है।

﴿وَالِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ﴾ (और उसी की तरफ़ सब कामों का अन्जाम है।)

यानी हक़ की इत्तिबअ (पैरवी) करने वाले और बातिल के मानने वाले दोनों के आ़माल उस के सामने पेश होंगे, वह सब को उन के अक़ीदे व आ़माल के मुताबिक़ बदला देगा।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली देने के लिए इर्शाद फ़रमाया कि:

﴿وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ﴾ (जो शख्स कुफ़्र करे उस का कुफ़्र आप को रंजीदा न करे।)

आप अपना काम करते रहें और स्पष्ट तौर पर हक़ को बताते रहें। आप की इतनी ही ज़िम्मेदारी है, फिर आप किसी के कुफ़्र से रंजीदा क्यों हों? जो शख्स कुफ़्र पर रहेगा अपना ही बुरा करेगा।

﴿إِنَّمَا رَجَعُهُمْ فَلْيَنْبَغْ لَهُمْ يَوْمَ عَمَلُوا﴾ (हमारी ही तरफ़ सब को लौटना है सो वह जो आ़माल करते थे हम उन को बता देंगे।)

हर एक का अमल सामने आ जाएगा, फिर उसी के मुताबिक बदला पायेगा।

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ﴾ (बिलाशुब्हा अल्लाह को दिलों की बातें खूब मालूम हैं)

उसे अहले ईमान के ईमान और अहले कुफ़ के कुफ़ का पता है, किसी का कोई अमल और अक़ीदा उस से ढका छुपा नहीं है।

दुनिया में काफ़ि़रों को जो कुछ माल मिला हुआ है उस की वजह से उन की दुनियावी ज़िन्दगी अच्छे हाल में गुज़र रही है। उन के बारे में फ़रमाया कि:

﴿فَتَجِدُنَهُمْ قِلَيلًا﴾ (हम उन्हें चन्द रोज़ा ऐश देंगे।)

﴿ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ﴾ (फिर उन्हें सख़्त अज़ाब की तरफ़ मजबूर करेंगे।)

जब क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो दुनिया का चन्द रोज़ा ऐश उन्हें वहाँ ज़रा भी फ़ायदा न देगा और उन्हें सख़्त अज़ाब में दाख़िल होने पर मजबूर किया जाएगा, जिस से बचने का कोई रास्ता न होगा।

**25-27**

﴿وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾  
﴿يَللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ ﴿وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ  
وَ الْبَحْرِ يَمْدٌ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ آبْحُرَ مَا تَبَدَّتْ كَلِمَتُ اللَّهِ إِنْ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾

### अल्लाह तअ़ाला की तख़लीक़

इन आयात में पहले तो यह फ़रमाया कि अगर आप मुशिरकीन से दर्याफ़्त फ़रमाएँ कि बताओ आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया? तो वह यही जवाब देंगे कि अल्लाह तअ़ाला ने पैदा फ़रमाया है। आप फ़रमा दीजिए कि सब तअ़रीफ़ अल्लाह तअ़ाला ही के लिए है। जब तुम्हारे नज़्दीक ख़ालिफ़ वही है, जिस ने इतने बड़े आसमानों और ज़मीन को पैदा किया तो यह भी समझ लेना चाहिए कि सब तअ़रीफ़ों का हक़दार भी वही है। जब यह बात है तो इस के साथ दूसरों की अ़िबादत क्यों करते हो और शिर्क क्यों होने देते हो?

﴿بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (बल्कि बात यह है कि उन में से अक्सर लोग नहीं जानते।)

माहौल से प्रभावित होकर और अपने बाप-दादों की पैरवी करके ऐसी जिहालत में शामिल हुए हैं कि तौहीद की तरफ़ आते ही नहीं।

﴿وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ﴾ (और जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है वह सब अल्लाह ही की मख़्लूक है।)

इस में वह चीज़ें भी हैं जिन की यह लोग अल्लाह तअ़ाला को छोड़कर अ़िबादत करते हैं, यह उन की बेवकूफी है।

﴿إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ यह भी समझ लें कि अल्लाह तअ़ाला को किसी के अ़िबादत की ज़रूरत नहीं है, वह हर हाल में हर एक से बेनियाज़ और वह तअ़रीफ़ के लायक भी है, तमाम सिफ़ाते कमाल का हक़दार



है। अगर कोई भी शख्स उस की हम्द व सना बयान न करे तब भी तअरीफ के लायक है, उस की तअरीफ में कोई फर्क नहीं।

## अल्लाह तआला की तअरीफ

इस के बाद फरमाया कि ज़मीन में जितने भी दरख्त हैं, अगर उन सब के कलम बन जाएँ (जो अन्गिनत तअदाद में होंगे) और समुद्र को रौशनाई की जगह इस्तेमाल किया जाए और एक समुद्र ख़त्म हो जाए और उस के बाद सात समुद्र और मिला दिये जाएँ यानी उन की भी रौशनाई बना दी जाए और उस रौशनाई से अल्लाह तआला के कलिमात को लिखा जाए तो अल्लाह तआला के कलिमात ख़त्म न होंगे, क्योंकि उस के कलिमात असीम हैं और सीमित चाहे कितना भी ज़्यादा हो बहरहाल वह असीम के मुक़ाबिले में कहीं पहुँच कर ख़त्म हो जाएगा और सात दरिया जो फरमाया यह भी बतौर कल्पना है। इन के अलावा जितने भी समुद्र रौशनाई की जगह इस्तेमाल होते रहेंगे ख़त्म होते जाएँगे और अल्लाह तआला के कलिमात ख़त्म न होंगे।

### कलिमात-

कलिमात से क्या मुराद है? बाज़ हज़रात ने फरमाया कि इस से अल्लाह तआला की सिफ़त बाक़ी रहने की है और बाज़ हज़रात ने इस से अल्लाह तआला की मअलूमात और कुदरत मुराद ली हैं। यानी अल्लाह तआला की मअलूमात और कुदरत असीम हैं, चाहे जितने भी कलम तैयार कर लिये जाएँ और चाहे जितने भी समुद्रों की रौशनाई बनाई जाए। फिर कलमों से अल्लाह तआला की मअलूमात और कुदरत को लिखा जाए तो यह मअलूमात व कुदरत ख़त्म नहीं हो सकते, उन की सीमा नहीं हो सकती यानी अल्लाह तआला के कमालात को लिखा जाए तो कभी ख़त्म नहीं हो सकते।

उन को लिखते-लिखते बेइन्तिहा ख़रबों कलम और ख़रबों बड़े-बड़े दरिया ख़त्म हो जाएँगे, लेकिन अल्लाह की सिफ़ात और कमालात नहीं ख़त्म हो सकती।

इस का कुछ बयान सूर: कहफ़ की आयत **إِنَّ اللَّهَ عَزِيزُحَكِيمٌ** में गुज़र चुका है (बिलाशुब्हा अल्लाह इज़ज़त वाला हिक़मत वाला है।)

**28-30** مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَعْثُبُكُمْ إِلَّا غَفْلَةً ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الْبَاطِلُ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۚ

(तुम्हारा पहली बार पैदा करना और मौत देकर दोबारा ज़िन्दा फरमाना यह ऐसा ही है जैसे एक जान को पैदा करना) यानी सारे इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करना। अल्लाह तआला के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है, जिस ने बड़ी तअदाद में जानें पैदा फरमा दीं वही दोबारा उन सब को ज़िन्दा कर देगा, शुरु में पैदा करना और एक जान को पैदा करना और बहुत सी जानों को पैदा करना और उन सब को पैदा करना और उन



सब को मौत देकर दोबारा ज़िन्दा फ़रमाना उस कादिर के लिए बराबर है, लिहाज़ा नुबूवत का इन्कार कर के अपनी जानों को हलाकत में न डालो।

إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला देखने वाला है।)

जो लोग अहले ईमान हैं वह उन के कौल को सुनता और आमाल को देखता है और जो लोग काफ़िर व मुन्किर हैं वह उन के आमाल से भी बाख़बर है, वह हर एक को उस के अक़ीदा और कौल के मुताबिक़ बदला देगा।

इस के बाद इर्शाद फ़रमाया **الْمُرْتَدَّانَ** ऐ मुख़ातब! क्या तू इस को नहीं देखता कि अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल फ़रमाता है (यह सब नज़रों के सामने है) और इस के अलावा किसी को भी इस पर कुद़रत नहीं है और उसी ने चाँद और सूरज को पैदा किया है, इन दोनों को जिस काम में लगाया है उस के करने पर मजबूर हैं। इन के लिए जो काम मुक़र्रर फ़रमाया वह उसी पर चलते रहते हैं, एक सेकेण्ड के लिए भी उस से हट नहीं सकते, उन के लिए जो अल्लाह तआला ने एक समय मुक़र्रर फ़रमा दिया है वह उसी समय तक चल रहे हैं, अपनी ज़ात में उन का कोई तसर्रुफ़ (Interfare) नहीं।

وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (और तुम जो कुछ अमल करते हो अल्लाह तआला उस से बाख़बर है) वह उसी के मुताबिक़ जज़ा व सज़ा देगा।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مُوَالٍحٌ यह इस वजह से है कि अल्लाह तआला ही हक़ है, उस का वजूद हकीक़ी है और उस का मअबूद होना भी बरहक़ है, इसलिए उसी की अ़िबादत करना ज़रूरी है।

وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِ الْبَاطِلِ (और मुशिरक लोग जो इस के अलावा दूसरों की अ़िबादत कर रहे हैं वह बातिल हैं, वह मअबूद (उपास्य) होने के काबिल नहीं।)

وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ (और बिलाशुब्हा अल्लाह अलीशान और बड़ा है) कोई उस के बराबर व हमसर नहीं, इसलिए उस के अलावा कोई भी अ़िबादत का हक़दार नहीं।

**31-32** **الْمُرْتَدَّانَ** إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوَاجٌ كَاطِلٌ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الدِّيرِ فَهِمُ الْمُقْتَصِدُ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ

## अल्लाह तआला की नेअमत

अल्लाह तआला ने अपना इन्आम बयान फ़रमाया कि समुद्र में जो नाव चलती हैं तो यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व इन्आम है, इस में अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं। अगर आधा तोला लोहा समुद्र में डालो तो उसी वक़्त डूब जाएगा और हज़ार किलो की लकड़ी जो कश्ती की सूरत में है वह नहीं डूबती, यह नाव एक शहर से दूसरे शहर और एक देश से दूसरे देश तक ले जाती हैं, सामान लाती हैं, ज़रूरत की चीज़ें उन के आने-जाने की वजह से आसान हो जाती हैं।

अल्लाह तआला जब चाहता है उन्हें हवाओं के थपेड़ों के ज़रिये इस हाल में कर देता है कि उन का चलना तैरना मुश्किल हो जाता है, फिर अल्लाह तआला हवाओं का रुख बदल देते हैं तो आराम से चलती हैं। यह सब नसीहत की चीज़ें हैं, इन के ज़रिये ख़ालिके कायनात का कुर्ब हासिल करना चाहिए। जो लोग सब्र और शुक्र का मिज़ाज रखते हैं, वही अल्लाह तआला की आयात से नसीहत हासिल करते हैं।

अक्सर ऐसा होता है कि चलती हुई नाव को पानी का तूफ़ान घेर लेता है, बड़ी-बड़ी मौज़ें जो सायबानों और बादलों की तरह होती हैं वह ढांप लेती हैं, ऐसी सूरत में इन्सान को अपने बचाव का कोई रास्ता समझ में नहीं आता। जो मोमिन बन्दे हैं वह तो अल्लाह तआला की तरफ़ इख़्लास के साथ पलटते हैं और उसी से दुआ माँगते हैं, लेकिन जो लोग ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत करते हैं उस वक़्त वह भी केवल अल्लाह तआला ही की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं, पूरी सच्चाई और पूरे यकीन से साथ अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं।

उन के बारे में फ़रमाया **فِيْنَهُمْ مُّقْتَصِدٌ** कि नाव से उतर कर खुशकी में आने वाले बाज़ लोग सुकून वाली राह अख़्तियार करने वाले होते हैं यानी तौहीद पर ही बरक़रार रहते हैं जो सीधा और संतुलन रास्ता है और जो लोग सूखे में आकर उस मुसीबत को भूल जाते हैं जो कश्ती में पेश आई थी यानी कश्ती डूबने के करीब थी यह लोग भी शिर्क अख़्तियार कर लेते हैं।

सूर: अन्कबूत (आयत नं० 65) में इसी को फ़रमाया **فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ** (सो जब वह उन्हें खुशकी की तरफ़ निजात दे देता है तो वह फ़ौरन ही शिर्क करने लगते हैं।

**وَمَا يَجِدُ إِلَّا كُلَّ خَلَّافٍ كَفُورٍ** (और हमारी आयतों का वही शख्स इन्कार करता है जो अहद का झूठा बहुत नाशुक्रा हो।)

उन झूठे अहद करने वालों में वह भी होते हैं जो कश्ती में इख़्लास के साथ तौहीद (अद्वैतवाद) का अहद करते हैं, फिर कश्ती से बाहर खुशकी में आकर तोड़ देते हैं। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो बड़े-बड़े दलायल और आयात को देखकर भी ईमान नहीं लाते, तौहीद की दअवत को कुबूल नहीं करते, झूठ बोलते हैं और अल्लाह तआला की नाशुक्रा भी करते हैं।

33

**يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاحْشُوا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوجًا عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَئِنَّ اللَّهَ يُغَرَّنُكُمْ بِاللَّهُ الْعُرُورُ**

## क़ियामत के दिन की हाज़िरी

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला से डरने का हुक्म फ़रमाया है और यह भी फ़रमाया कि क़ियामत के दिन से डरो यानी उस दिन की बेबसी और बेकसी का ध्यान करो और इस का इन्तिज़ाम यह करो कि ईमान लाओ और नेक अ़ामाल करो, उस दिन बेबसी का यह हाल होगा कि आपस में कोई किसी की तरफ़ से कोई बदला देने को तैयार न होगा। सब से बड़ा करीबी रिश्ता बाप और बेटे का है, लेकिन वह भी क़ियामत के दिन बड़ा हौलनाक होगा, सब को अपनी-अपनी फ़िक्र लगी होगी।

जब हिसाब होगा और कुफ़र पर और बुरे आमाँल पर सज़ा मिलने का फैसला होगा तो न बाप बेटे की तरफ़ से कोई बदला देगा और न बेटा बाप की तरफ़ से, किसी को भी यह ग़वारा न होगा कि यह अज़ाब से बच जाए और उस को जो अज़ाब होना है वह मुझ पर आ जाए।

क़ियामत के बारे में जो कुछ बयान किया जा रहा है कोई व्यक्ति उसे यूँ ही न समझे, अल्लाह तआला का वादा हक़ है, ज़रूर होगा। अब हर शख्स को अपने असली फायदे के लिए मुक़र्रर होना ज़रूरी है कि मेरा आख़िरत में क्या होगा?

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिन्हें दुनियावी ज़िन्दगी की मशगूलियत आख़िरत की तैयारी नहीं करने देती, इसी को फ़रमाया **فَلَا تُغْرِكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا** (सो तुम्हें हरगिज़ दुनिया वाली ज़िन्दगी धोके में न डाल दे)

इस में उन लोगों को भी कहा गया है जो दुनिया का जाह व माल छूट जाने के डर से इस्लाम कुबूल नहीं करते और उन को भी जो मुसलमान होने का तो दावा करते हैं, लेकिन दुनिया ही को उन्होंने मक्सद बना रखा है और उसी के लिए सोचते हैं, उसी के लिए जीते हैं उसी के लिए मरते हैं, उन्हें हरी भरी दुनिया पसन्द है, फ़रायज और वाजिबात को भी छोड़ देते हैं और दुनिया जमा करने के लिए ख़यानत, चोरी, डकैती, जुल्म, हराम कारोबार सब कुछ कर गुज़रते हैं।

नफ़्स और शैतान दोनों दोस्त है दोनों इन्सान को धोका देते रहते हैं और अल्लाह का नाम लेकर इन्सान को धोका देते और वरग़लाते हैं और यूँ कहते हैं कि इस वक़्त नमाज़ छोड़ दो, रोज़: तोड़ दो, अगले साल ज़कात दे देना, इस साल हज़ को न जाओ, अभी तो जवानी है गुनाह कर के मज़े उड़ा लो। अल्लाह तआला बड़ा मेहरबान है गुनाह कर लिया तो क्या है बाद में तौब: कर लेना, इस तरह की बातें नफ़्स, शैतान और गुमराही की ओर लाते हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया है कि धोका देने वाला तुम्हें धोके में न डाल दे, अपनी फ़िक्र करो, मोमिन बनो, अल्लाह की अ़िबादत में लगो, इस तरह की फ़रमाँबरदारी करो। होशियार बन्दा वही है जो नफ़्स व शैतान के कहने में न आए और किसी के भी बहलाने फुसलाने से अपनी आख़िरत तबाह न करे।

34

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَآ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْآرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّا  
ذَآ تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ

## पाँच चीज़ों का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है

कुर्आन मजीद में जगह-जगह यह फ़रमाया कि अल्लाह ग़ैब का जानने वाला है और यह भी फ़रमाया कि अल्लाह के सिवा कोई ग़ैब को नहीं जानता, जिस किसी को उस ने ग़ैब का कुछ इल्म दिया जितना अ़ता फ़रमाया, उसे उसी क़दर इल्म है। यहाँ पाँच ग़ैब की चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया है।

सहीह मुस्लिम में है कि जब हज़रत जिब्रईल (अलै०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से दर्याफ़्त किया कि क़ियामत कब आएगी तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि पूछने वाला और जिस से पूछा गया है इस बारे

में दोनों बराबर हैं और साथ ही आप ने यह भी फ़रमाया **फ़ी ख़मिसिन ला यअ़लमुहुन्ना इल्लल्लाह** (कि यह उन पाँच चीज़ों में से है जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता।) इस के बाद आप (सल्ल०) ने सूर: लुकमान की यही आख़िरी आयत तिलावत फ़रमाई। (सहीह मुस्लिम)

जिन पाँच चीज़ों का इस आयत में ज़िक्र है उन में एक तो क़ियामत क़ायम होने का इल्म है, यह ग़ैब का इल्म है जो अल्लाह तआला ने किसी को भी नहीं दिया। दूसरे यह फ़रमाया कि अल्लाह तआला बारिश को बरसाता है। तीसरे यह फ़रमाया कि माँओं के रहम (गर्भ) में क्या है? इस का भी अल्लाह ही को इल्म है। उसे सब पता है कि माँ के गर्भ में क्या है, लड़का है या लड़की और कुछ है या कुछ भी नहीं है।

इस के बाद और दो चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया वह यह कि किसी को यह मालूम नहीं कि कल क्या होगा और फ़रमाया कि किसी को यह भी पता नहीं कि उस की मौत कहाँ होगी और उसे किस ज़मीन में मौत आएगी। आयत के ख़त्म पर फ़रमाया **إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ** (बिलाशुब्हा अल्लाह इल्म वाला बाख़बर है।)

जब से दुनिया में साइंस ने तरक्की की है उस वक़्त से ईमानियात में फ़र्क़ आने लगा है और लोग यूँ कहते हैं कि साइंस के जरिये सब मालूम हो जाता है कि बारिश कब होगी और एकसरे के जरिये मालूम हो जाता है कि हामिला औरत के पेट में नर है या मादा। इन लोगों को यह पता नहीं कि आयते शरीफ़ा में जो किसी माध्यम से इल्म हासिल हो उस का ज़िक्र नहीं है।

अल्लाह तआला का जो इल्म है वह हमेशा से है, जब दुनिया में इन्सान नहीं आया था उस वक़्त भी अल्लाह तआला को मालूम था कि इन्सानों की कितनी नस्लें चलेगी और फ़लों-फ़लों औरत गर्भवती होगी और उस के पेट में नर होगा या मादा होगा, अधूरा पैदा होगा या पूरा।

कहाँ अल्लाह तआला का इल्म अज़्ली और कहाँ बनी आदम का इल्म जो माध्यम और अस्बाब तजुर्बात पर है, फिर इस बात को भी जानते हैं कि माध्यम से पता चलाने वालों की पेशनगोईयाँ ग़लत हो जाती हैं, लिहाज़ा यह कहना कि बन्दे भी बारिश के आने का वक़्त बता देते हैं और गर्भवती औरतों के पेटों में जो है उस से बाख़बर कर देते हैं यह उन लोगों की जाहिलाना बातें हैं, जो आयत का मतलब न जानने की वजह से कहते हैं।

मालूम रहे कि आयत में जो पाँच चीज़ों का ज़िक्र है उस का यह मतलब नहीं है कि इन चीज़ों के अलावा दूसरी ग़ैब की चीज़ों को बन्दे जानते हैं, ग़ैब की तमाम चीज़ें केवल अल्लाह तआला ही जानता है, हर ग़ैब का इल्म (परोक्ष ज्ञान) इल्म क़तई (वास्तविक ज्ञान) इल्म अज़्ली (सदैव सत्य ज्ञान) असीमित सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है।



(भाग-32)

सूर-ए-सज्दः

(सूरः नं.32)

## तप्सीर सूरः सज्दः

**नाम-** आयत नं० (15) **إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا غَرَّتْ لَهُمْ عَيْنٌ** से लिया गया है।

### नाज़िल होने का ज़माना-

बैहकी और इब्ने मरदूविया आदि ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि यह पूरी सूरः मक्की है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक दूसरी रिवायत के मुताबिक (18/16/20) तीन आयतें मदनी हैं।

‘बुख़ारी’ व ‘मुस्लिम’ ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जुमअ के दिन फ़ज्र की नमाज़ में ‘सूरतुल् सज्दः’ और ‘सूरतुल् दहर’ पढ़ा करते थे। ‘तिर्मिज़ी’ ‘नसई’ और ‘हाकिम’ आदि ने हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब तक ‘सूरतुल् सज्दः’ और ‘सूरः तबारकल्लज़ी’ नहीं पढ़ लेते थे, सोते नहीं थे।

जैसा कि मक्की सूरतों की विशेषता है इस में भी तौहीद, रिसालत और मौत के बाद उठाये जाने जैसे विषय बयान किये गये हैं और मक्का के इन्कारियों को उन पर ईमान लाने की दअवत दी गई है।





## आयत नं० 1 से 14 तक

الْمَرَّ تَنْزِيلِ الْكِتَابِ لَارْتَبِ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ مُوَالِحٌ مِنَ رَبِّكَ لِيَُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ ۚ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِمَّنْ مَهْنِينَ ۝ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَافِرُونَ ۝ قُلْ يَتَوَفَّكُم مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُبْرَمُونَ تَاكُسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَانْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هَدًى ۚ وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

### अनुवाद-

① अलिफ्- लाम्- मीम्, ② इस किताब (कुरआन) में कुछ शक नहीं कि सारे संसार के रब की ओर से नाज़िल हुई। ③ क्या यह लोग कहते हैं कि, “इस व्यक्ति ने इसे खुद गढ़ लिया है?” (नहीं,) बल्कि वह बर-हक़ (सत्य) है आप के रब की ओर से, ताकि आप उन लोगों को सचेत कर दें जिनके पास आप से पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि ये हिदायत पाएँ। ④ अल्लाह ही है ‘जिसने’ आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों को जो इन दोनों में है छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर कायम (विराजमान) हुआ, उसके सिवा न कोई तुम्हारा काम बनाने वाला है और न कोई सिफारिशी, तो क्या तुम समझते नहीं? ⑤ ‘वही’ ज़मीन से आसमान तक हर काम का इन्तिज़ाम करता है, फिर सारे मामले उसी की ओर लौटते हैं वह एक दिन जिस की मिक़दार तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार वर्ष की होगी। ⑥ ‘यही’ तो है ग़ैब (छिपे) और हाज़िर का जानने वाला और बड़ी ताक़त वाला, रहम वाला है। ⑦ ‘उसने’ जो चीज़ बनाई, अच्छी तरह बनाई और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया, ⑧ फिर उसका वंश हकीर पानी (वीर्य) से पैदा किया; ⑨ फिर उसको दुरुस्त किया और उसमें अपनी रुह फूँक दी और तुम्हारे कान, और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। ⑩ और यह लोग कहते हैं, “जब हम ज़मीन में धूल-मिल चुके होंगे तो क्या हम फिर नये सिरे से पैदा किये जाएँगे?” बल्कि यह लोग अपने रब ही के इन्कारी हैं। ⑪ कह दीजिए, “मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त है, वह तुम्हें पूरे तरीके से अपने कब्जे में ले लेता है, फिर तुम अपने रब की ओर वापस होगे।” ⑫ और अगर तुम उनको देख लेते जब वे मुजरिम अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे, “ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया, तो अब हमें वापस भेज दे कि हम नेक अमल करें, बेशक हमें यकीन हो गया है।” ⑬ और अगर ‘हम’ चाहते तो हर जानदार को इसकी हिदायत (सीधी राह) दे देते, लेकिन ‘मेरी’ वह बात पूरी हो चुकी है कि “मैं जहन्नम

को जिन्नों और इन्सानों सब से भर दूँगा।” (14) तो अब चखो मज़ा इसका, कि तुमने इस दिन के मिलने को भुला रखा था, तो ‘हमने’ भी तुम्हें भुला दिया अब तुम अपने करतूतों के बदले हमेशा-हमेश अज़ाब का मज़ा चखो।

## आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1

الْمُرَّة

यह हुरूफ़ मुक्ताअत (अलग-अलग अक्षर) हैं। इन का मतलब अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। अल्बत्ता उल्म-ए-तफ़सीर लिखते हैं कि यह हुरूफ़ उन्हीं सूरतों के शुरू में आये हैं जिन में अल्लाह तआला ने यह एलान किया है कि यह अल्लाह का कलाम है और उसी ने इसे अपने रसूल (सल्ल०) पर नाज़िल किया है और इस की दलील यह है कि यह उन्हीं हुरूफ़ से बने हैं जिन से अरबों का कलाम बनता है, लेकिन वह हरगिज़ ऐसा कलाम नहीं ला सकते हैं।

2

تَنْزِيلَ الْكِتَابِ لَارَبِّ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

‘किताब’ से मुराद कुर्आने करीम है और आयत का मतलब यह है कि यह किताब जिस की तिलावत की जा रही है इस में कोई शक व शुब्हा नहीं है और यह रब्बुल् आलमीन की तरफ़ से नाज़िल की हुई है। यह किसी इन्सान का कलाम नहीं जिसे अल्लाह की तरफ़ मन्सूब किया गया हो, न जादू है, न कहानत है और न पूर्वजों की कहानियाँ हैं।

3

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لَتُنَذِرَنَّهُمْ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया, कुफ़ारे मक्का कहते हैं कि इसे मुहम्मद ने अपनी तरफ़ से गढ़ लिया है, यह सरासर उन का आरोप है। यह तो आप के रब का बरहक़ कलाम है जिसे उस ने आप पर वह्य के ज़रिये नाज़िल किया है, ताकि आप इस के ज़रिये उन मुशिरकीने अरब को अल्लाह के अज़ाब से डराएँ जिन के पास आप से पहले कोई रसूल नहीं आया था, ताकि वह अल्लाह पर ईमान ले आएँ उस के एक होने का इक़्रार करें और दीने हक़ को कुबूल कर के जहन्नम की आग से निजात हासिल करें और जन्नत के हक़दार बनें।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि यहाँ ‘कौम’ से मुराद तमाम अरब हैं। बाज़ लोग कहते हैं कि इस से सिर्फ़ ‘अहले कुरैश’ मुराद हैं और कुछ लोगों का ख़याल है कि इस से वह लोग मुराद हैं जो हज़रत ईसा (अलै०) और नबी करीम (सल्ल०) के दर्मियान समय में आये।

4

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِّن دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ

इस आयत की तफ़सीर सूर: अअराफ़ आयत नं० (54) में गुज़र चुकी है। जिस का खुलासा यह है

कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और उन के दर्मियान की तमाम मख्लूक़ात को छः दिनों में पैदा किया, सिर्फ़ वही अ़िबादत के लायक़ है।

السَّائِي عَلَى الْعَرْشِ का मअना व मतलब बयान करने में उल्मा का मस्लक़ यह है कि अल्लाह तअ़ाला अ़र्श पर इस तरह मुस्तवी है जिस तरह उस के मक़ामे अ़ाला के वह लायक़ है, न उस का इन्कार किया जा सकता है, न उसे मख्लूक़ की सिफ़त के साथ तश्बीह (मिसाल) दी जा सकती है और न ही उस की कैफ़ियत बयान की जा सकती है।

مَا لَكُمْ مِّن دُونِهِ مِّن وَلِيٍّ وَلَا مُشَفِّعٍ “तमाम इन्सानों का अल्लाह के सिवा कोई हकीकी यार व मदद्गार नहीं है”। अगर वह किसी को रुस्वा करना चाहे तो कोई उसे इज़्ज़त नहीं दे सकता और अगर वह किसी को हलाक़ व बर्बाद करना चाहे तो कोई उसे बचा नहीं सकता और उस के सिवा उन का कोई सिफ़ारिशी नहीं है कि अगर वह उन के शिर्क व गुनाह का बदला लेना चाहे, तो उस के यहाँ सिफ़ारिश कर के उस के ग़ज़ब से उन्हें बचा ले।

जब अल्लाह के सिवा कोई ख़ालिफ़ नहीं, न उस के सिवा कोई यार व मदद्गार और सिफ़ारिशी है, तो फिर इन्सानों को यह बात क्यों नहीं समझ में आती कि उस ज़ाते बरहक़ के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं है?

**5** يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّن مَّا تَعُدُّونَ

अल्लाह तअ़ाला अपनी मख्लूक़ात के बारे में तमाम अहक़ाम आसमान से (जहाँ अ़र्श और लौहे महफूज़ है) ज़मीन की तरफ़ सादिर फ़रमाता है और फ़रिश्ते उसे लागू करते हैं।

ज़िन्दगी और मौत, सेहत व बीमारी, बख़्शिश व महरूमि, मालदारी व मुहताजी, जंग व सुलह, इज़्ज़त व ज़िल्लत और मख्लूक़ात से सम्बन्धित तमाम फैसले अल्लाह तअ़ाला अ़र्श के ऊपर करता है, वहीं से तमाम मख्लूक़ात की देखभाल करता है और कोई चीज़ उसे बेबस नहीं सकती।

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि अल्लाह तअ़ाला का हुक्म तमाम आसमानों के ऊपर से उतर कर ज़मीन की आख़िरी तह तक पहुँचता है। जैसा कि अल्लाह ने सूर: तलाक़ आयत नं० (12) में फ़रमाया है  
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ

“वह अल्लाह है जिस ने सात आसमान पैदा किये और उन्हीं की तरह ज़मीन भी पैदा की, उस का हुक्म उन के दर्मियान उतरता है” और बन्दों के अ़ामाल आसमाने दुनिया की तरफ़ उठाये जाते हैं, ज़मीन और उस के दर्मियान की दूरी पाँच सौ साल की है और आसमान के मोटाई की दूरी पाँच सौ साल की है।

‘मुजाहिद’ और ‘क़तादा’ वग़ैरह कहते हैं कि फ़रिश्तों के नुज़ूल की दूरी पाँच सौ साल की और उन के तुलूअ की दूरी पाँच सौ साल की होती है, जिसे फ़रिश्ते एक पलक झपकने में तय कर लेते हैं और जब क़ियामत आ जाएगी और हर चीज़ फ़ना हो जाएगी, तो ज़मीन की तरफ़ इन अहक़ाम के सादिर हो जाने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा इसलिए कि न ज़मीन रहेगी और न इस पर कोई चीज़, जिस में किसी

तद्बीर की कोई ज़रूरत हो।

कुछ मुफ़स्सरीन ने **ثُمَّ يُعْرَجُ إِلَيْهِ** का मतलब यह बयान किया है कि फ़रिश्ते अहले ज़मीन के तमाम आमाल सहीफ़ों (रजिस्टर) में लिखते जाते हैं यहाँ तक कि जब दुनिया अपने खात्मे को पहुँच जाएगी तो सारे सहायफ़ (रजिस्टर) अल्लाह के सामने पेश कर दिये जाएँगे और वह दिन अगरचे दुनिया का एक दिन होगा, लेकिन आसमान व ज़मीन के दर्मियान की दूरी के एतिबार से एक हजार साल के बराबर होगा।

**6**

**ذَٰلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ**

वह तमाम ग़ायब व हाज़िर का जानने वाला है, वह हर हाल में हर चीज़ पर ग़ालिब है, वह अपनी मख़्लूक़ात के बारे में जो चाहता है फैसले करता है, कोई आड़े नहीं आ सकता है और वह अपने बन्दों पर निहायत मेहरबान है, उस के फैसले बहरहाल उन के लिए भलाई और रहमत लिये होते हैं।

**7-9**

**الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۖ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ  
مَّهِينٍ ۖ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِهِ ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ**

उस ने जितनी चीज़ों को पैदा किया, उन की पैदाइश बेहतर और हिक्मत के तकाज़े के मुताबिक़ है और उस ने आदम का ढाँचा पहले मिट्टी से तैयार किया और उस की नस्ल की बुनियाद एक नुक्त-ए-हकीर के ज़रिये रखी, फिर एक मुकम्मल इन्सान की शकल देकर उस में रुह डाल दी और वह एक ज़िन्दा इन्सान बन गया और उस ने अपनी कमाले कुदरत के ज़रिये हकीर नुक्ते से बनी जिस्मों में सुनने और देखने की सलाहियत पैदा की और उन में धड़कते हुए दिल रख दिये, जिन के ज़रिये इन्सान सोचता और समझता है।

गोश्त का एक टुकड़ा सुनता है, दूसरा देखता है और तीसरा सब से अहम (यानी दिल) सोचता है, समझता है, फैसले करता है और इन्सान को कुव्वते इरादी देता है। यह सारी नेअमते तकाज़ा करती हैं कि बन्दा हर वक़्त अपने ख़ालिक का शुक्र अदा करता रहे, लेकिन वह अक्सर नाशुक्रगुज़ार ही होता है, बहुतों को इन बातों पर गौर करने की तौफ़ीक़ ही नहीं होती है।

**10**

**وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفُورُونَ**

मुशिरकीने मक्का जो मरने के बाद ज़िन्दा होने के इन्कारी थे, हैरत व तअज्जुब के साथ नबी करीम (सल्ल०) से पूछते थे कि जब हम गल सड़कर मिट्टी में मिल जाएँगे और हमारा वजूद ख़त्म हो जाएगा, तो क्या हम नये सिरे से दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे?

अल्लाह तआला ने उन की बात का जवाब देते हुए फ़रमाया कि यह इन्कार करने वाले हकीक़त में क़ियामत के दिन अपने रब के सामने हाज़िर होने का इन्कार कर रहे हैं।

**11**

**قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ**

अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्ल०) की ज़बानी उन क़ियामत का इन्कार करने वालों से कहा

कि जिन फ़रिश्तों को तुम्हारी रुहों के कब्ज़ करने का काम लगाया गया है, जब तुम्हारी मौत की मुक़र्रर घड़ी आ जाएगी तो वह तुम्हारी रुहों को निकाल लेगा और तुम दुनिया से रुख़सत हो जाओगे।

फिर जब क़ियामत आएगी तो अल्लाह तआला तुम सब को ज़िन्दा करेगा और मैदाने महशर में हिसाब के लिए ला खड़ा करेगा।

**12**

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُبْعُثُونَ تَاكُسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا  
لَعَمَلِنَا صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٢﴾

जब क़ियामत के इन्कारी अपने आप को मैदाने महशर में खड़ा पाएँगे, तो इन्तेहाई ज़िल्लत व रुस्वाई की वजह से अपने रब के सामने सर झुकाये खड़े होंगे और निदामत में डूबे होंगे कि दुनिया में आखिरत का इन्कार और अल्लाह के साथ शिर्क व दूसरे गुनाह न करते तो आज यह दिन न देखना पड़ता।

फिर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! जिन हकीकतों को हम दुनिया में झुटलाते थे, अब हम ने उन्हें अपनी आँखों से देख लिया और जिन बातों को हम वहाँ इन्कार करते थे अब हम ने उन्हें अपने कानों से सुन लिया, अब कोई बात हम से छुपी नहीं रही, हमें सारी बातों का यकीन हो गया है, इसीलिए तू हमें दोबारा दुनिया में भेज दे ताकि हम सही अमल कर के आएँ और नेक अमल कर के अपनी आखिरत सुधार लें।

**13**

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾

अल्लाह तआला ने उन की इस इल्तिजा का जवाब यह दिया कि हम ने तो दुनिया में अच्छाई व बुराई के दोनों रास्ते बताकर इन्सानों को अख़्तियार दे दिया था कि जो चाहे जन्नत की राह अख़्तियार करे और जो चाहे जहन्नम की राह और तुम ने अपनी मर्जी से जहन्नम की राह अख़्तियार कर ली। अब तमाम हकीकतों को अपनी आँखों से देख लेने के बाद ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं।

अगर ऐसा ईमान मेरे नज़्दीक क़ाबिले कुबूल होता तो मैं अपनी मर्जी से तमाम इन्सानों को राहे रास्त पर लाकर खड़ा कर देता। मेरे नज़्दीक ए़तिबार उसी ईमान का है जिसे बन्दा अपनी मर्जी से दुनिया में अख़्तियार करता है, जो ज़िन्न व इन्स दुनिया में अपनी मर्जी से ईमान नहीं लाएँगे उन से मैं जहन्नम को भर दूँगा।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “और वह सब सच्चों में से सच्चे हैं.....तुम में से कोई अहले जन्नत वाले अमल करता है यहाँ तक कि उसके और जन्नत के दर्मियान केवल एक बालिशत की दूरी रह जाती है तो इस पर यह लिखा हुआ ग़ालिब आ जाता है और वह अहले जहन्नम वाले अमल करने लगता है और जहन्नम का हक़दार हो जाता है और तुम में से कोई अहले जहन्नम के आ़माल करता रहता है यहाँ तक कि उसके दर्मियान और जहन्नम के दर्मियान बालिशत की दूरी रह जाती है तो उस पर लिखा हुआ ग़ालिब आ जाता है और वह अहले जन्नत के करने लगता है और जन्नत में दाख़िल हो जाता है”। (बुख़ारी)

14

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۖ إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

फिर अल्लाह तआला उन कियामत का इन्कार करने वालों से कहेगा कि तुम दुनिया में कियामत के दिन को झुठला रहे थे। मेरा नबी जब उस दिन की तुम्हें याद दिलाता था तो तुम उस का मज़ाक उड़ाते थे, अब चखो इस इन्कार का मज़ा, हम तुम्हें जहन्नम में डाल कर हमेशा के लिए भूल जाते हैं, तुम अपने कर्म के बदले जहन्नम में हमेशा का अज़ाब झेलते रहो।





## आयत नं० 15 से 30 तक

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا حَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَقِيلَ لَهُمْ سُجُّدُوا لِلرَّبِّ فَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ قَبْلَ الْغَدَاةِ وَإِذَا الْعِشَاءُ نَزَلَتْ فَسَبِّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ قَبْلَ الْغَدَاةِ وَإِذَا الْفَجْرُ طَلَعَ فَسَبِّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ قَبْلَ الْغَدَاةِ ﴿١٦﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٧﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿١٨﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٩﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿٢٠﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿٢١﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿٢٢﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿٢٣﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿٢٤﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿٢٥﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿٢٧﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿٢٨﴾ أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ كَانَ فَاسْقَاةً لَا يَسْتَوُونَ ﴿٢٩﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَمْلُوكِ ﴿٣٠﴾

### अनुवाद-

(15) 'हमारी' आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको उनसे नसीहत की जाती है, तो सज्दे में गिर जाते हैं और अपने रब के साथ पाकी बयान करते हैं और घमंड नहीं करते। (16) उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं कि वे अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ 'हमने' उनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं। (17) तो कोई नफ्स (व्यक्ति) नहीं जानता कि उनके लिए कैसी आँखों की ठंडक छिपा कर रखी गई है यह उनके आमाँल का बदला है जो वे करते थे। (18) क्या वह व्यक्ति जो मोमिन है उस व्यक्ति की तरह हो सकता है, जो फ़ासिक् (नाफ़रमान) हो, दोनों बराबर नहीं हो सकते। (19) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उनके रहने के लिए बाग़ हैं यह मेहमानदारी उनके कामों का बदला है, जो वे करते थे। (20) और जिन्होंने नाफ़रमानी की, उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब कभी वे उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में ढकेल दिये जाएँगे और उनसे कहा जाएगा चखो अब उस आग के अज़ाब का मज़ा, जिसको तुम झूठ समझते थे।" (21) और 'हम' उन्हें उस बड़े अज़ाब से पहले दुनिया के अज़ाब का मज़ा चखाएँगे, ताकि वे (हमारी ओर) लौट आएँ। (22) और उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिये नसीहत की जाए, तो वह उनसे मुँह फेर ले, हम गुनाहगारों से बदला लेकर रहेंगे। (23) और 'हमने' मूसा को किताब दी, तो तुम उसके मिलने के बारे में शक में न पड़ो, और 'हमने' उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। (24) और 'हमने' उनमें से पेशवा (नायक) बनाए थे, जो 'हमारे' हुक्म से हिदायत (मार्गदर्शन) किया करते थे, वह सब्र पर कायम रहे और 'हमारी' आयतों पर यकीन रखते रहे। (25) बेशक तुम्हारा रब ही क़ियामत के दिन उन बातों

का फैसला करेगा, जिनमें वे मतभेद करते रहे हैं। (26) क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत (मार्गदर्शक) का ज़रिया न हुई, कि इनसे पहले कितनी ही नस्लों को हम हलाक कर चुके हैं, जिनके रहने बसने की जगहों पर वे चलते-फिरते हैं? बेशक इसमें निशानियाँ हैं तो क्या यह सुनते नहीं? (27) क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम सूखी पड़ी हुई ज़मीन की ओर पानी ले जाते हैं, फिर उससे खेती उगाते हैं, जिसमें से इनके चौपाए भी खाते हैं और वे खुद भी? तो क्या यह इनको दिखाई नहीं देता। (28) और कहते हैं “यह फैसला कब होगा, अगर तुम सच्चे हो?” (29) कह दीजिए, “फैसले के दिन इन्कार करने वालों का ईमान लाना उनके लिए कुछ फ़ायदेमन्द न होगा और न उनको मोहलत दी जाएगी। (30) अच्छा तो उन्हें उनके हाल पर छोड़ दीजिए और इन्तिज़ार कीजिए यह भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।

## आयत नं० 15 से 30 तक की व्याख्या

15-16

سَجْدًا وَاسْجُدُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا رَوَّافَةً يَنْفِقُونَ

क़ियामत के इन्कारियों का बुरा अन्जाम बयान करने के बाद अल्लाह तआला ने यहाँ मोमिनीन मुख़्लसीन का ज़िक्र किया है कि हमारी आयतों पर हकीकी तौर से वही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें कुआन करीम की तिलावत कर के जब नसीहत की जाती है तो अपने दिल की पाकीज़गी और फ़ितरत की पाकीज़गी की वजह से उन नसीहतों को तुरन्त कुबूल कर लेते हैं और कुआन करीम का उन पर ऐसा असर होता है कि नेअमते इस्लाम पर शुक्र अदा करने के लिए सज्द: में गिर जाते हैं।

अपने रब की पाकी, उस की हम्द व सना बयान करते हैं।

अहले मक्का की तरह उस की अ़िबादत से मुँह नहीं मोड़ते हैं, बल्कि ज़िन्दगी भर बन्दगी के ज़ब्बे के साथ उस की अ़िबादत करते रहते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि यह आयत पाँचों नमाज़ों के बारे में नाज़िल हुई थी और **وَسَجْدُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ** से मुराद यह है कि वह सज्द: की हालत में “سبحان الله وبحمده” या “سبحان ربّي الأعلى وبحمده” कहते हैं।

**وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ** से मुराद यह है कि वह मोमिनीन दूसरे मुसलमानों के साथ बाजमाअत नमाज़ अदा करने में घमण्ड की वजह से गुरेज़ नहीं करते हैं।

इन मोमिनीन मुख़्लसीन की एक सिफ़त (गुण) यह है कि वह रातों को उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के आदी होते हैं। इसीलिए जब उस का वक़्त आता है तो उन के पहलुओं को बिस्तरों से दुश्मनी हो जाती है, फ़ौरन उठ कर बैठ जाते हैं, वुजू कर के नमाज़ के लिए खड़े हो जाते हैं और सज्द: में जाकर अपने रब से दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले और जन्नत में दाख़िल कर दे।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “तुम में से कोई शख्स इस हाल में न मरे कि वह अल्लाह से अच्छा गुमान न रखता हो।” (मुस्लिम)

कुछ लोगों का ख़याल है कि इस से मुराद अ़िशा की नमाज़ है। सहाब-ए-किराम अ़िशा की नमाज़ से पहले नहीं सोते थे, लेकिन मशहूर कौल यही है कि इस से मुराद तहज्जुद की नमाज़ है और उन मोमिनीन मुख़्लसीन की एक सिफ़त यह भी है कि अल्लाह उन्हें जो रोज़ी देता है उस में से भलाई के कामों में खर्च करते हैं।

**17**

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَاءُ لِّمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

जिन मोमिनीन की इन आयतों में सिफ़तें (गुण) बयान की गई हैं उन्हीं के बारे में कहा जा रहा है कि उन के रब ने उन के लिए क़ियामत के दिन जो नेअ़मतें छुपा रखी हैं, जिन्हें उस दिन पाकर उन की आँखें ठंडी होंगी, उन नेअ़मतों का इस दुनिया में वह तसव्वुर (कल्पना) भी नहीं कर सकते हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम और दूसरे मुहद्दिदीसीन ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, “मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेअ़मतें तैयार कर रखी हैं जिन्हें न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल ने इस का तसव्वुर हुआ।” हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया, अगर चाहो तो तुम लोग यह आयत पढ़ो-

لَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इन्सानी ख़यालात व तसव्वुरात से ऊपर उठकर यह नेअ़मतें उन्हें उन नेक अ़ामाल की वजह से मिलेंगी जो वह दुनिया की ज़िन्दगी में करते रहते थे।

**18**

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ۝

इस में क़ियामत का इन्कार करने वालों और मोमिनीन मुख़्लसीन का फ़र्क़ बयान करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क्या मोमिन व फ़ासिक् अल्लाह के नज़्दीक बराबर हो सकते हैं? ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता है। यह बात इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है।

**19-20**

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَأْثُورِ ۖ وَالَّذِينَ كَانُوا يُعْمَلُونَ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ دُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

इस में जो लोग ईमान लाएँगे और नेक अ़मल करेंगे, अल्लाह तआला उन्हें बतौर अज़्र व सवाब जन्नत अ़ता करेगा जिस में वह हमेशा के लिए रहेंगे और जो लोग इस दुनिया में फ़िस्क़ व गुनाह की ज़िन्दगी अख़्तियार करेंगे, उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

जब भी शिद्दते ग़म और इन्तिहाई ग़म की वजह से उस से निकल कर भागना चाहेंगे जहन्नम के फ़रिश्ते उन्हें मार-मार कर दोबारा उस में लौटा देंगे और उन की ज़िल्लत व रुस्वाई बढ़ाने के लिए उन

से कहेंगे कि अब चखो उस आग का मज़ा जिस को तुम दुनिया में झुटलाते थे।

**21**

وَلَنَذِقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأُولَىٰ ذُوقُوا الْعَذَابَ الْكَبِيرَ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

मक्का के इन्कारियों के बारे में कहा जा रहा है कि हम उन्हें आखिरत के अज़ाब का वक़्त आने से पहले कि (मौत उन्हें इन्कारी होने की हालत में) ही दबोच ले, मुख़लिफ़ दुनियावी तक्लीफ़ों में मुब्तिला करेंगे, कैद व बन्द, क़त्ल और क़हतसाली की मुसीबतों में डालेंगे शायद कि होश के नाखून लें, शिर्क और दूसरे गुनाहों से तौब: करके अपनी हालत का सुधार करें और मूर्तियों को छोड़कर अल्लाह पर ईमान ले आएँ।

**22**

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ۝

जिस इन्सान को कुर्आने करीम की आयतें पढ़कर नसीहत की जाये, जन्नत की खुशख़बरी दी जाये और जहन्नम से डराया जाये, लेकिन घमण्ड की वजह से ईमान लाने के बजाय इन आयतों से मुँह मोड़े, वह अल्लाह तआला की निगाह में बहुत बड़ा ज़ालिम व मुजरिम है और जो शख्स कुर्आन करीम की दअवते तौहीद पहुँचने के बावजूद अपने इन्कार व शिर्क पर अड़ा रहेगा, अल्लाह तआला ऐसे मुजरिमों से ज़रूर बदला लेगा, उन्हें अज़ाब में मुब्तिला करेगा और अपने मोमिन व मुत्तकी बन्दों को उन पर ग़ल्बा अता करेगा।

**23-24**

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ آيَةً يُهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَنَا صَبْرًا ۚ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ۝

इस में कहा जा रहा है कि ऐ मेरे नबी! अगर हम ने आप को कुर्आन करीम जैसी अज़ीम तरीन किताब दी है तो इस में अहले मक्का के लिए हैरत व तअज्जुब की क्या बात है? हम ने इस से पहले अपने बन्दे और रसूल मूसा को भी तो एक अज़ीम किताब दी थी, जिस का इल्म कुम्फ़ारे मक्का को है और उस किताब को हम ने बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था और उन में से ऐसे उलमा पैदा किये जो लोगों की हमारे दीन की तरफ़ रहनुमाई करते थे और इस राह में उन्हें जो तक्लीफ़ पहुँचती थी उसे बर्दाश्त करते थे और हमारी किताब की सच्चाई व हक्कानियत पर पूरा यकीन रखते थे, न उन में कोई फ़र्क़ आता था और न ही वह हमारी आयतों में शक व शुब्हा करते थे।

इसलिए आप के दौर के लोगों को भी चाहिए कि कुर्आन करीम के ईश्वरीय वाणी होने पर ईमान ले आएँ। इस में बयान की हुई बातों से फ़ायदा उठाएँ, दूसरों को ईमान व तौहीद (एकेश्वरवाद) की दअवत दें और इस राह में जो तक्लीफ़ भी उठानी पड़े उसे बर्दाश्त करें।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इस में अहले इस्लाम के लिए ज़बरदस्त धमकी है कि जिस तरह बनी इस्राईल के लोग तौरेत की तहरीफ़, सच्चे दीन से हटकर 'अम्र बिल् मअरूफ़' और 'नहि अनिल मुन्किर' छोड़ देने की वजह से अल्लाह के ग़ज़ब के हक्दार बन गये, उसी तरह इस उम्मत के जो लोग कुर्आन व सुन्नत से हट जाएँगे, भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना छोड़ देंगे, सब्र और ईमान व यकीन

की दौलत से महसूम हो जाएंगे तो अल्लाह तआला कौमे यहूद की तरह इन पर भी ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत कर देगा।

अल्लाह तआला ने सूर: रअद आयत नं० (11) में फरमाया है:-

إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ

“अल्लाह तआला किसी कौम की हालत को उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक कि वह कौम खुद अपनी हालत नहीं बदल लेती है।”

25

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يُفَصِّلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

अल्लाह तआला क़ियामत के दिन अम्बिया-ए-किराम, उन की उम्मतों के दर्मियान, मोमिनों और काफ़िरो के दर्मियान अपना फैसला फ़रमाएगा, तब हर एक को पता चल जाएगा कि दुनिया में हक़ पर कौन था और बातिल पर कौन और अब किस का क्या अन्जाम होगा, चुनाँचे अहले हक़ जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएंगे और अहले बातिल जहन्नम में ढकेल दिये जाएंगे।

26

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَسْتَأْذِنُونَ فِي مَسْكِئِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَتَمَعُّونَ

मक्का के इन्कारियों को दअवत दी जा रही है कि हम उन से पहले बहुत सी काफ़िर व मुशिरक कौमों को हलाक कर चुके हैं और यह लोग शाम का सफ़र करते हुए ‘मदायन सालेह’ इलाके ‘मदायन’ और ‘बहरे लूत’ के करीब से गुज़रते हैं और उन की निशानियों का अपनी आँखों से नज़ारा करते हैं, तो इन निशानियों पर ध्यान क्यों नहीं देते और वह खण्डरात उन्हें इन कौमों की बर्बादी के जो वाकिआत सुनाते हैं उन पर कान क्यों नहीं धरते? ताकि नसीहत हासिल करें और कुफ़्र व शिर्क से पलटकर कुर्आन और रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान ले आएँ।

27

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا سَوَّيْنَا الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرَىٰ فَخُجَّ بِهٖ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम आसमान से बारिश नाज़िल करते हैं और उसे सूखी ज़मीन तक पहुँचाते हैं, जो पानी के बिना मुर्दा हो चुकी होती है। फिर उस के ज़रिये मुख़्तलिफ़ किस्म के पौधे उगाते हैं जिन में से बाज़ को तो उन के जानवर खाते हैं और बाज़ पौधों के दाने खुद खाकर ज़िन्दा रहते हैं, तो मक्का के काफ़िर अक्ल के नाखून क्यों नहीं लेते?

क्यों नहीं सोचते कि जिस अल्लाह ने अपने कमाले कुद़रत से बारिश बरसाया, फिर उस ने पौधे उगाये और उन में से बाज़ को इन्सानों के लिए और बाज़ दूसरे जानवरों को उन के इस्तेमाल के काबिल बनाया, वही हकीकी उपास्य है, उसी के सामने सर झुकाना चाहिए?

28-29

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا

إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝

अहले ईमान जब कुफ़ारे मक्का के जुल्म व ज़ोर से तंग आकर कहते कि अल्लाह तआला ही हमारे और तुम्हारे दर्मियान क़ियामत के दिन फैसला करेगा और तुम्हारे कुफ़ व हठधर्मी का तुम्हें मज़ा चखाएगा, तो उन का मज़ाक़ उड़ाते थे, क्योंकि वह क़ियामत के इन्कारी थे और कहते थे कि अगर तुम वाकई सच्चे हो तो ज़रा जल्दी करो और अपने रब से कहो कि अब देर न करे और वह दिन आ ही जाएगा, तो अल्लाह तआला ने आयत नं० (29) में उन का जवाब यह दिया, कि उस के आने में कोई शुब्हा नहीं है, इसलिए तुम उस से पहले ईमान ले आओ क्योंकि जब वह दिन आ जाएगा तो फिर किसी इन्कारी का ईमान उस के काम न आएगा और न उसे मोहलत दी जाएगी कि वह अपने गुनाहों से तौब: कर के इस्लाम में दाख़िल हो जाए। अमल और तौब: का मौक़ा सिर्फ़ इसी दुनिया में दिया गया है।

**30**

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَأَنْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَظِرُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि आप कुफ़ारे मक्का की बेवकूफ़ाना बातों और उन की झूठी बातों का जवाब न दीजिए और दअवत व तब्लीग़ के काम में लगे रहिये और अल्लाह के फैसले का इन्तिज़ार कीजिए वह यकीनन आप को फ़तेह व नुस्रत देगा और आप के दुश्मनों को रुस्वा कर देगा, चाहे मक्का के काफ़िर भी आप के बारे में बुरी ख़बर सुनने का इन्तिज़ार कर रहे हो, ताकि उन के गुमान के मुताबिक़ आप से उन को छुट्टी मिल जाये, लेकिन अल्लाह के फैसले पर किस का फैसला प्रभावी हो सकता है।





(भाग-33)

सूर-ए-अहज़ाब

(सूर: नं.33)

## तफ़्सीर सूर: अहज़ाब

### नाम-

सूर: अहज़ाब का नाम अहज़ाब आयत नं० (20) **يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْاَحْزَابِ قُلْ يَوْمَ الْاَحْزَابِ يَكُونُ الْاَحْزَابُ يَوْمَ الْاَحْزَابِ** से लिया गया है। वाकिआ अहज़ाब (जिस की तफ़्सील आगे आएगी) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लिए एक मोअजिज़ा था कि अल्लाह ने हवा और फ़रिश्तों के ज़रिये आप की मदद फ़रमाई। मदीना के मुसलमानों को कुफ़ारे अरब के हमले से बचा लिया और मोमिनीन व मुनाफ़िकीन की पहचान हो गई।

### सूर: के नाज़िल होने का ज़माना-

यह पूरी सूर: मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई थी। हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम से यही मरवी है।



## आयत नं० 1 से 11 तक

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِيعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۖ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا ۖ مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِي جُوفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ اللَّائِي تُظَاهَرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۖ أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَلَاخِوَانَكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ ۚ وَلَٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۚ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۖ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ ۚ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۖ لَيْسَ لِلضَّالِّينَ عَن صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۖ إِذْ جَاءَ وَكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونًا ۚ هَٰذَا لِكَيْلَا تَرْوَا لَنَا شِدِيدًا ۖ

### अनुवाद-

① ऐ नबी! अल्लाह से डरिए और काफ़िरों (इन्कारियों) और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है। ② और पैरवी (अनुसरण) कीजिए उस व्ह्य की जो आप के रब की ओर से आप पर की जा रही है, बेशक अल्लाह जो तुम करते हो, उसकी ख़बर रखता है। ③ और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए 'वही' काम बनाने के लिए काफ़ी है। ④ अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और न तुम्हारी पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो, (अर्थात यह कह दे कि तू मेरी माँ की पीठ की तरह ह़राम है) तुम्हारी माँ बनाया और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे हकीकी बेटे बनाए, ये सब तुम्हारे मुँह की बातें हैं और अल्लाह तो हक़ बात कहता है और 'वही' सही राह की ओर रहनुमाई करता है। ⑤ (मोमिनो) उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारा करो, अल्लाह के नज़दीक यही इन्साफ़ की बात है, और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे दीनी भाई और साथी हैं, और इसमें जो ग़लती तुमसे हुई उसके लिए तुम पर कोई पकड़ नहीं, लेकिन जिसका इरादा तुमने दिल से कर लिया, (उसकी बात और है) और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। ⑥ नबी का हक़ ईमान वालों पर, खुद उनके अपनी जान से बढ़ कर है- और उनकी पत्नियाँ उनकी माएँ और अल्लाह की किताब के अनुसार, ईमान वालों और हिजरत करने वालों के मुकाबले में- नातेदार आपस में एक-दूसरे से ज़्यादा करीब हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो, यह बात किताब में लिखी हुई है। ⑦ और जब 'हमने' नबियों से अहद (प्रतिज्ञा) लिया, और तुमसे भी, और नूह, और इब्राहीम और मूसा और मरयम के बेटे, ईसा, से भी, और 'हमने' मज़बूत अहद (प्रतिज्ञा) लिया था; ⑧ ताकि उन सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछें, और इन्कार करने वालों के लिए दुःख देने वाला अज़ाब तैयार

कर रखा है। ⑨ ऐ ईमान वालो! अल्लाह के उस एहसान को याद करो जो 'उसने' तुम पर किया- जब तुम पर फौजें चढ़ आयी थीं, तो 'हमने' उन पर आँधी भेजी, और ऐसी फौजें, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा था; ⑩ जब वे तुम पर ऊपर की ओर से भी (चढ़) आए और नीचे की ओर से भी, और जब आँखें पथरा गयीं, और कलेजे मुँह को आने लगे, और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के खयाल करने लगे थे; ⑪ उस वक़्त ईमान वाले आजमाइश में डाल दिये गये, और बुरी तरह हिला दिये गये।

## आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِيعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا

इस आयते करीमा में 'काफ़िर' से मुराद 'अबू सुफ़यान' 'इकिरमा' 'अबू अल् आवर अस्लमी' हैं और 'मुनाफ़िकों' से मुराद 'अब्दुल्लाह बिन उबई' और 'अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह' हैं।

मुफ़ससरीन लिखते हैं कि ग़ज़-ए-उहद के बाद मुशिरकीने मक्का का एक गुप 'अबू सुफ़यान' की अगुवाई में मदीना आया और 'अब्दुल्लाह बिन उबई' 'कुसैर' और 'तअमा बिन उबैरिक्' के साथ मिलकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुताल्बा किया कि वह कुरैश के उपास्यों को बुरा कहना बन्द कर दें, तो यह आयत नाज़िल हुई।

अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) को 'नबी' के शब्द के साथ पुकारा है। इस में आप (सल्ल०) के लिए तअज़ीम और आप की नुबूवत का एतिराफ़ है। आप (सल्ल०) को, आप के पैरोकार मुसलमानों को नसीहत की गई है कि तक्वा की राह अख़्तियार करें, अल्लाह की बन्दगी करें और गुनाहों से दूर रहें, अल्लाह के हुक्मों को मानें, काफ़िरों और मुनाफ़िकों की बात मान कर तौहीद की दअवत से इन्कार न करें इसलिए कि वह लोग अल्लाह, उस के रसूल और मुसलमानों के दुश्मन हैं, उन की तो इच्छा होती है कि मुसलमान इस्लाम से दूर हो जाएँ और अपना मिशन छोड़कर उन्हीं की तरह मुशिरक व मुनाफ़िक बन जाएँ।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह बड़ा ही इल्म व हिक़मत वाला है, इसलिए ऐ नबी! उस के हुक्मों की पैरवी में ही भलाई है।

2-3

وَاتَّبِعْ مَا يَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۚ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا

आप (सल्ल०) और आप के साथी मोमिनों को यह भी नसीहत की जाती है कि आप पर वह्य के ज़रिये जो कुर्आन नाज़िल होता है और उस के ज़रिये आप को जो हुक्म मिलते हैं उन्हीं की पैरवी कीजिए, न मुशिरकों और मुनाफ़िकों के मश्वरों पर कान धरिये और न ही अपनी राय पर भरोसा कीजिए। आप और आप (सल्ल०) की उम्मत के लिए हर ख़ैर व बरकत का एक ही ज़रिया कुर्आन करीम की पैरवी है। आप हर हाल में अल्लाह पर भरोसा कीजिए इसलिए कि जो उस पर भरोसा करता है, वह उस के लिए काफ़ी और उस का मदद्गार होता है।

4-5

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ ۖ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ وَمَا  
 جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝  
 ادْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِن لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ  
 عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ ۚ وَلَٰكِن مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

## मुँह बोले बेटे

‘तफ़सीर कुतुबी’ भाग 14 पेज नं० 116 में लिखा है कि ‘जमील बिन मअमर फहरी’ एक आदमी था, उस की ज़िहानत और कुव्वते हाफ़िज़ा मशहूर था, कुरैश उस को बहुत मानते थे और कहते थे कि उस के सीने में दो दिल हैं और वह खुद भी यूँ कहता था कि मेरे दो दिल हैं, उन दोनों के जरिये जो कुछ समझता हूँ वह मुहम्मद (सल्ल०) की अक्ल से ज़्यादा है। अल्लाह तआला ने उन लोगों की बातों को रद्द फरमाया और फरमाया

“कि अल्लाह ने किसी बन्दे के सीने में दो दिल नहीं बनाये”।

जो शख्स यह दावा करता है उसे अपने दावे की सज़ा ज़रूर मिलनी है।

फ़िस्सा यह हुआ कि यह शख्स भी जंगे बद्र में शरीक था। जब मुशिरकीन को शिकस्त हो गई तो अबू सुफ़यान ने उस से पूछा कि लोगों का क्या हाल है? उस ने कहा वह तो हार गये। अबू सुफ़यान ने कहा कि यह क्या है कि तेरी एक चप्पल तेरे एक हाथ में और दूसरी तेरे पाँव में है। कहने लगा अच्छा मैं तो यही समझ रहा हूँ कि दोनों मेरे पाँव में हैं। उस वक़्त लोगों पर ज़ाहिर हो गया कि अगर उस के दो दिल होते तो अपने चप्पल को हाथ में लट्काए हुए यह न समझता कि वह मेरे पाँव में है।

हज़रत ज़ैद (रज़ि०) आप (सल्ल०) के आज़ाद किये हुए गुलाम थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि “जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैद (रज़ि०) को अपना मुँह बोला बेटा बना लिया तो हम लोग उन्हें ‘ज़ैद बिन मुहम्मद’ (सल्ल०) कह कर पुकारते थे। जब यह आयत नाज़िल हुई तो फिर ‘ज़ैद बिन हारिसा’ कहना शुरू कर दिया”। (बुख़ारी)

## ज़िहार

अहले अरब में ‘ज़िहार’ का तरीका था यानी मर्द अपनी बीवी से यूँ कह देता था, “तू मेरे लिए ऐसी है जैसी मेरी माँ की कमर” ऐसा कह देने से उस औरत को अपने ऊपर हमेशा के लिए हराम समझ लेते थे। इस्लाम में अगर कोई शख्स ऐसा कह दे तो उस के लिए कफ़ारा मुक़र्रर कर दिया गया है जो सूर: मुजादिला के पहले रुकूअ में मौजूद है।

अहले अरब जो अपनी औरत को हमेशा के लिए हराम समझ लेते थे उन को रद्द करते हुए फ़रमाया:-

وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ

“और अल्लाह तआला ने तुम्हारी बीवियों को जिन से तुम ज़िहार कर लेते हो तुम्हारी हकीकी और वाकई माँ नहीं बना दिया”।

अगर कोई शख्स ज़िहार कर ले तो उस की बीवी उस पर हमेशा के लिए हराम न होगी, बल्कि कफ़ारा दे दे तो फिर मियाँ-बीवी की तरह रह सकते हैं।

## बेटा बना लेना

अहले अरब का यह भी तरीका था कि जब किसी लड़के को मुँह बोला बेटा बना लेते थे तो उस लड़के को बेटा बनाने वाला शख्स अपनी ही तरफ़ मन्सूब करता था यानी हकीकी बेटे की तरह उसे मानता और समझता था और उस से बेटे जैसा मामला करता था, उस को मीरास भी देता था और उस की मौत या तलाक़ के बाद उस की बीवी से निकाह करने को भी हराम समझता था और आमतौर से दूसरे लोग भी उस लड़के को उसी शख्स की तरफ़ मन्सूब करते थे जिस ने बेटा बनाया है और इब्ने फ़ल्लाँ कहकर पुकारते थे। उस को रद्द करते हुए इर्शाद फ़रमाया **وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ**

(कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारा असली बेटा करार नहीं दिया।)

तुम जो उन्हें बेटा बनाने वाले का बेटा समझते हो और उस पर हकीकी बेटे का क़ानून जारी करते हो, यह ग़लत है।

हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जिस ने दूसरे शख्स को जानबूझ कर अपना बाप बनाया वह काफ़िर हो गया और जो शख्स खुद को दूसरी क़ौम का बतलाये वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।” (बुख़ारी)

**ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ** (यह तुम्हारी अपनी मुँह बोली बातें हैं, जो अल्लाह की शरीअत के खिलाफ़ हैं।)

**وَاللّٰهُ يَقُولُ الْحَقُّ وَهُوَ يَلَدِي السَّيِّئُ** (और अल्लाह हक़ बात फ़रमाता है और हक़ राह बताता है।)

इसी में से यह भी है कि मुँह बोले बेटों को हकीकी बेटा न समझा जाए।

**ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ**

तुम उन्हें उन के बापों की तरफ़ निस्वत कर के पुकारो, अल्लाह के नज़्दीक इन्साफ़ की चीज़ है।

**فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَلَاخَوَانَكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ**

(सो अगर तुम्हें उन के बापों का इल्म न हो, जैसे किसी लड़के को पाल लिया जिस का बाप मालूम न था या किसी लुक्ता (पड़ा हुआ बच्चा) को उठा लिया, उस के बाप का इल्म न बेटा बनाने वाले को है, न बस्ती वालों को, तो उसे **أَخِي** मेरा भाई कहकर बुलाओ क्योंकि वह तुम्हारा दीनी भाई है या दोस्त कहकर बुलाओ। **مَوْلَى-مَوْلَى** की जमअ है जिस के कई मअने हैं, उन में से एक **ابن العم** यानी चचा के बेटे के मअने में भी आता है। इसलिए साहिबे जलालैन ने **مَوَالِيكُمْ** का तर्जुम: **بنوعمكم** किया है यानी चचाज़ाद कहकर पुकारो।



وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ

“और जो कुछ तुम से ख़ता हो जाए उस के बारे में तुम पर कोई गुनाह नहीं”।

तुम से भूल चूक हो जाए और मुँह से बेटा बनाने वाले की तरफ़ निस्बत कर बैठो तो इस पर गुनाह नहीं है।

وَلَكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ

“लेकिन इस हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी दिल के इरादा के साथ जान-बूझ कर हो जाए तो यह पकड़ की बात है”।

وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

(अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है) गुनाह हो जाए तो मग़्फ़िरत तलब करो और तौब: करो।)

## ज़रूरी मसायल

- 1- कुर्आन मजीद में बता दिया कि ‘मुतबन्ना’ यानी ‘मुँह बोला बेटा’ हकीकी बेटा नहीं हो जाता, इसलिए उस को पालने वाले मर्द या औरत की मीरास नहीं मिलेगी। बाज़ मर्तब: किसी को बेटा-बेटी बना लेने के बाद औलाद पैदा हो जाती है और औलाद के अलावा दूसरे शरई वरसा भी होते हैं इसलिए मीरास उसी असली औलाद और दूसरे शरई वरसा को मिलेगी, मुँह बोले बेटे बेटी को इस में कोई हिस्सा नहीं। अल्बत्ता मुँह बोले बेटे के लिए वसीयत की जा सकती है जो तिहाये माल से ज़्यादा न हो और इस वसीयत करने में अस्ल वारिसों को महरूम करने या उन का हिस्सा कम करने की नियत न हो।
- 2- मुँह बोला बेटा-बेटी चूँकि हकीकी बेटा या बेटी नहीं बन जाते, इसलिए अगर वह महरम नहीं हैं तो उन से वही ग़ैर महरम वाला मामला किया जाएगा और समझदार हो जाने पर पर्दा करने के अहक़ाम लागू होंगे।  
हाँ, अगर किसी मर्द ने भाई की लड़की लेकर पाल ली तो उस से पर्दा न होगा या अगर किसी औरत ने बहन का लड़का लेकर पाल लिया तो उस से भी पर्दा न होगा क्योंकि दोनों सूरतों में महरम होने का रिश्ता है। हाँ, जिस का रिश्ता महरम वाला न हो उस से पर्दा करना होगा। जैसे किसी औरत ने अपने भाई या बहन की लड़की लेकर पाल ली जिस का औरत के शौहर से कोई रिश्ता महरम वाला नहीं है तो उस के मर्द के हक़ में वह ग़ैर होगी उस से पर्दा होगा।
- 3- किसी ने किसी को मुँह बोला बेटा बनाया और उस बेटा बनाने वाले की लड़की भी है तो उस लड़के और लड़की का आपस में निकाह हो सकता है बशर्ते कि हुरमते निकाह का कोई दूसरा सबब न हो।
- 4- अगर किसी ने किसी नामहरम को अपना बेटा बनाया और उस लड़के की किसी लड़की से शादी कर दी, फिर लड़का मर गया तो तलाक़ दे दी तो उस बेटा बनाने वाले शख्स से मरने वाले की बीवी का निकाह हो सकता है बशर्ते कि कोई दूसरी वजह हुरमत न हो।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा (रज़ि०) को अपना बेटा बना लिया था, फिर बड़े हो जाने पर अपनी फूफी की लड़की हज़रत ज़ैनब बिनत जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से उन का निकाह कर दिया था। जब उन्होंने तलाक़ दे दी तो आप (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह कर लिया। इस पर अरब के जाहिलों ने एतिराज़ किया कि देखो! बेटे की बीवी से निकाह कर लिया (जिस का जिक्र इस सूरः के पाँचवें रुकूअ में आ रहा है। इन्शा अल्लाह)

ऐसे लोगों की तर्दीद में अल्लाह तआला ने **وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ** फ़रमा दिया (कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारा हकीकी बेटा नहीं बना दिया था।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने बयान किया कि हम ज़ैद बिन हारसा को ज़ैद बिन मुहम्मद (सल्ल०) कहा करते थे। जब आयत **وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ** नाज़िल हुई तो हम ने ऐसा कहना छोड़ दिया।

5- दूसरों के बच्चों को शफ़क़त और प्यार से जो बेटा कहकर बुला लेते हैं जबकि उन का बाप मशहूर है तो यह जायज़ तो है, लेकिन बेहतर नहीं है।

6- जिस तरह किसी के मुँह बोले बेटे को बेटा बनाने वाले की तरफ़ मन्सूब करना जायज़ नहीं है उसी तरह इस की भी इजाज़त नहीं है कि कोई शख्स अपने बाप के अलावा किसी को अपना बाप बनाये या बताए या कागज़ात में लिखवाए।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिस शख्स ने अपने बाप के अलावा किसी दूसरे की तरफ़ निस्बत की हालांकि वह जानता है कि यह मेरा बाप नहीं है तो उस पर जन्नत ह़राम है।

(रवाहुल् बुख़ारी, सअद बिन अबी वकास)

आजकल जो लोगों में अपना नसब बदलने, झूठा सैय्यद बनने या अपनी क़ौम व क़बीले के अलावा किसी दूसरे क़बीले की तरफ़ मन्सूब होने का रिवाज हो गया है यह ह़राम है, ऐसा करने वाले इस हदीस के मुस्तहिक् हैं।

7- अगर किसी औरत ने ज़िना किया और उस का हमल (गर्भ) रह गया, फिर जल्दी से किसी से निकाह कर लिया और इस तरह से उस शौहर का बच्चा ज़ाहिर कर दिया जिस से निकाह किया है तो यह भी ह़राम है और अगर किसी शख्स का वाकई बच्चा है और वह इस का इन्कार करे तो यह भी ह़राम है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “जो भी कोई औरत किसी क़ौम में किसी ऐसे बच्चे को शामिल कर दे जो उन में से नहीं है तो अल्लाह से उस का कोई तअल्लुक नहीं है और अल्लाह उसे हरगिज़ अपनी जन्नत में दाख़िल न फ़रमाएगा और जिस किसी मर्द ने अपने बच्चे का इन्कार कर दिया हालांकि वह उस की तरफ़ देख रहा है तो अल्लाह तआला उस शख्स को अपनी रहमत से दूर फ़रमा देगा और उसे क़ियामत के दिन से पहले और आख़ीर वालों के सामने रुस्वा करेगा। (रवाहु अबूदाऊद)

6 النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أُولِيَ الْبَيْتِ مَعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

### आप (सल्ल०) की बीवियाँ

इस आयत में चार बातें बताई गई हैं। पहली यह कि नबी अकरम (सल्ल०) को मोमिनीन से जो तअल्लुक है वह उस तअल्लुक से भी ज़्यादा है जो मोमिनीन को अपनी जानों से है। इस में बहुत सी बातें आ जाती हैं। पहली यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ईमान वालों के साथ जो रहमत और शफ़क़त का तअल्लुक है वह इतना ज़्यादा है कि मोमिनीन को भी अपनी जानों से रहमत और शफ़क़त का इतना तअल्लुक नहीं है। इस का कुछ बयान सूर: तौब: की आयते करीमा **لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ** में गुज़र चुका है, वहाँ आप (सल्ल०) की रहमत और शफ़क़त के बारे में बाज़ अहदीस गुज़र चुकी हैं।

आप (सल्ल०) को यह पसन्द न था कि किसी मोमिन को कोई तकलीफ़ पहुँच जाए। आप (सल्ल०) ने कभी किसी को दीनी ज़रूरत से गुस्से में कुछ फ़रमा दिया तो उस को भी रहमत बना दिया।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अल्लाह तआला से यूँ दुआ की,  
**اللَّهُمَّ إِنِّي اتَّخَذْتُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَّنْ تُخَلِّفَنِي فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ فَأَيُّ الْمُؤْمِنِينَ أَذِيْتُهُ شَتَمْتُهُ لَعَنْتُهُ**

(मिशक़ातुल मसाबीह भाग-2 पेज नं० 324) **جَلَدْتُهُ فَاجْعَلْهَا لَهُ صَلَوةً تُقَرِّبُهُ بِهَا إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ**

(ऐ अल्लाह! मैं आप से एक दरख़्वास्त करता हूँ जिसे उम्मीद है कि आप ज़रूर कुबूल फ़रमाएँगे, वह यह कि मैं एक इन्सान हूँ बस जिस किसी मोमिन को मैंने तकलीफ़ दी, बुरा भला कहा, लअनत की या कोड़ा मारा तो मेरे इस अमल को आप उस के लिए रहमत, पाकीज़गी और अपनी नज़्दीकी का ज़रिया बना दें, जिस के ज़रिये आप क़ियामत के दिन उस को अपने करीबी होने से नवाज़ दें।)

### रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शफ़क़तें

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आदते शरीफ़ा थी कि जब किसी ऐसे शख्स का जनाज़ा पढ़ने के लिए लाया जाता जिस पर कर्ज़ होता तो आप (सल्ल०) दर्याफ़्त फ़रमाते थे कि इस ने अदायगी का इन्तिज़ाम छोड़ा है या नहीं? अगर जवाब में अर्ज़ किया जाता कि इस ने अदायगी का इन्तिज़ाम छोड़ा है तो आप उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा देते थे और अगर यह बताया जाता कि इस ने कर्ज़ की अदायगी का इन्तिज़ाम नहीं छोड़ा तो फ़रमाते थे कि तुम लोग अपने साथी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो।

(यह तरीक़ा आप (सल्ल०) ने इसलिए अख़्तियार फ़रमाया था कि लोगों पर कर्ज़दार होकर मरने की बुराई ज़ाहिर हो जाए कि देखो! रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उस की नमाज़े जनाज़ा तक नहीं पढ़ी) फिर जब अल्लाह ने आप पर फ़ुतूहात के दरवाज़े खोल दिये तो आप (सल्ल०) बतौर ख़तीब (Lecturer) के खड़े

हुए और फ़रमाया:-

أَنَا أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ (मुझे मोमिनीन से इस से ज़्यादा तअल्लुक है जितना उन्हें उन की जानों से है।)

लिहाज़ा मोमिनीन में से जिस किसी शख्स की वफ़ात हो जाए और वह अपने ऊपर क़र्ज़ा छोड़ जाए तो उस की अदायगी मेरे ज़िम्मे है और जो कोई माल छोड़ जाए वह उस के वारिसों के लिए है।

(रवाहुल बुख़ारी)

आप (सल्ल०) चाहते थे कि किसी मुसलमान को कोई भी तक्लीफ़ न हो, न दुनिया में, न आख़िरत में। आप (सल्ल०) ने जो कुछ इर्शाद फ़रमाया, बताया और तअलीम दी उस में मोमिनीन के लिए ख़ैर ही ख़ैर है जबकि खुद मोमिन बन्दे कभी अपनी राय की ग़ल्ती से और कभी किसी ख़्वाहिश से मुतास्सिर होकर दुनिया व आख़िरत में अपनी जानों को तक्लीफ़ पहुँचाने वाले काम भी कर गुज़रते हैं।

### हमदर्दी-

आप (सल्ल०) ने अपनी मुहब्बत को एक मिसाल देकर समझाया और फ़रमाया कि मेरी तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख्स ने आग जलाई, जब आग ने अपने आस-पास रौशनी कर दी तो परवाने और यह छोटे-छोटे कीड़े जो आग में गिरा करते हैं उस में गिरने लगे, आग जलाने वाला उन्हें रोकता है और वह उस पर प्रभावी हो जाते हैं और उस में दाख़िल हो जाते हैं, मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है मैं दोज़ख़ से बचाने के लिए तुम्हारी कमरों को पकड़ता हूँ कि आ जाओ आग से बचो, आ जाओ आग से बचो, फिर तुम मुझ पर ग़ल्बा पा जाते हो (यानी ऐसे काम करते हो जो दोज़ख़ में जाने का सबब होते हैं। (रवाहु मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 248)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की कोशिश तो यही रही है कि उम्मत मुस्लिमा का कोई शख्स दोज़ख़ में न जाए लेकिन दुनियादारी की वजह से और नफ़्स की ख़्वाहिशों के दबाव से लोग गुनाह कर के अज़ाब के हक्दार हो जाते हैं।

यहाँ तो आप (सल्ल०) ने अपनी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के लिए मेहनत की ही थी, आख़िरत में सिफ़ारिश भी करेंगे, आप (सल्ल०) की शफ़क़त में न यहाँ कमी रही न वहाँ होगी, अलबत्ता उम्मत को भी अपनी जानों को आख़िरत के अज़ाब से बचाने के लिए फ़िक्र करना चाहिए।

आप (सल्ल०) ने उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के लिए यकीनन मक्बूल होने वाली दुआ को आख़िरत में फ़ायदा पहुँचाने के लिए महफूज़ फ़रमा लिया। हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि हर नबी की दुआ कुबूल होती है।

(यूँ तो हज़रात अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम वस्सलाम बहुत सी दुआएँ करते थे जो मक्बूल हुआ करती थीं, लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से यह अख़्तियार दिया गया था कि कोई एक दुआ कर लो जो ज़रूर ही मक्बूल होगी।) इस तरह हर नबी ने अपनी इस दुआ को दुनिया ही में इस्तेमाल कर लिया और मैंने यह दुआ अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिए क़ियामत के दिन के लिए रख ली है, सो मेरी उम्मत

में से हर उस शख्स को पहुँच जाएगी जिस ने अल्लाह तआला के साथ किसी भी चीज़ को शरीक न किया हो। (रवाहु मुस्लिम)

### अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) का एहतिराम-

दूसरी बात बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया **وَأَزْوَاجَهُنَّ** (कि नबी (सल्ल०) की बीवियाँ ईमान वालों की माँ हैं) यानी उन का एहतिराम वाजिब है। आप (सल्ल०) की वफ़ात के बाद उम्मत के किसी शख्स के लिए यह हलाल नहीं कि आप (सल्ल०) की अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) में से किसी से निकाह कर सके। जैसा कि इसी सूर: के रुकूअ (7) में **وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُنَّ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا** फ़रमाया है, लेकिन पर्दा के एतिबार से वह हुक्म नहीं था जो अपनी माँओं से है। जैसा कि इसी सूरत में फ़रमाया है:-

**وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ** (और जब तुम उन से कोई सामान माँगना चाहो तो पर्दा के पीछे से न माँगो।

### रिश्तेदारी के उसूल

तीसरा हुक्म बयान फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया **وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ** (और रिश्तेदार अल्लाह की किताब में ब-निस्बत दूसरे मोमिनीन मुहाजिरीन के ज़्यादा करीबतर हैं।)

जब सहाबा (रज़ि०) मक्का से हिज़रत कर के मदीना आए तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ास मुहाजिरीन व अन्सार के दर्मियान भाई चारगी फ़रमा दी थी यानी बाज़ को बाज़ का भाई बना दिया था, भाई बन जाने की वजह से एक दूसरे की ख़ास रिआयत और ख़िद्मत के ज़ब्बे पैदा हो गये थे और यह तअल्लुक यहाँ तक था कि दोनों में से किसी एक के इन्तक़ाल हो जाने पर आपस में मीरास भी बटती थी।

इस आयत में और सूर: अन्फ़ाल की आख़िरी आयत ने पहली आयत को मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया और यह इर्शाद फ़रमाया कि आपस में रिश्तेदारियाँ हैं अब उन्हें उन की बुनियाद पर मीरास मिलेगी।

चौथी बात बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया:-

**إِذَا تَوَلَّىٰ سِتْرُكَ فَإِنَّكَ بِهِنَّ عَوْلَىٰ** (मगर यह कि तुम अपने दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करो।)

यानी ग़ैर रिश्तेदारों में मीरास तो जारी न होगी (बल्कि सब रिश्तेदारों में भी जारी नहीं होती)

अल्बत्ता जिस को भी शरई उसूल से मीरास न पहुँचती हो उस के साथ अच्छा सुलूक किया जाये, माली मदद कर दी जाये, उस की जरूरतें पूरी करने की कोशिश की जाये (जैसे- बतौर हिबा, सद्क़: या मीरास शरई उसूल के मुताबिक़ दे दिया जाए) तो यह दूसरी बात है। यह चीज़ न सिर्फ़ यह कि जायज़ बल्कि मुस्तहब, बेहतर और अज़्र व सवाब का ज़रिया है।

**كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا** (यह अल्लाह की किताब में लिखा हुआ है) कुछ हज़रात ने यहाँ किताब से लौहे महफूज़ मुराद लिया है और मतलब यह बताया है कि लौहे महफूज़ में लिखा है कि हिज़रत की वजह से जो वरासत होगी वह मन्सूख़ हो जाएगी और आख़िरी हुक्म रिश्तेदारियों के उसूल पर मीरास देने का हुक्म बाकी रहेगा।

बाज़ हज़रात ने किताब से आयत अल् मवारिस और बाज़ हज़रात ने यही आयत मुराद ली है। 'साहिबे रुहुल् मअानी' ने एक और बात निकाली है, वह फ़रमाते हैं **وَقَضَاهُ** यानी अल्लाह तआला ने फ़र्ज फ़रमा दिया और फ़ैसला फ़रमा दिया कि अब मीरास रिश्तेदारी के उसूल ही के अनुसार होगी, यह किताबुल्लाह है।

**7-8**

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَوَعَدْنَا إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝ لَيْسَ الضَّالِّينَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا

### अम्बिया-ए-किराम (अलै०) से अहद

अल्लाह तआला ने अम्बिया-ए-किराम (अलै०) से जो अहद (प्रतिज्ञा) लिया था, इस आयत में उस का जिक्र है। तमाम अम्बिया-ए-किराम (अलै०) का उम्मी और हज़रत मुहम्मदुरसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व हज़रत नूह व हज़रत इब्राहीम और हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै०) का खासतौर से नाम लिया है, इन हज़रात की मेहनतें अपनी-अपनी उम्मतों को तब्लीग़ करने में बहुत ज़्यादा थीं। साहिबे रुहुल् मअानी लिखते हैं कि इन हज़रात की फज़ीलत ज़्यादा ज़ाहिर फ़रमाने और यह बताने के लिए कि यह हज़रात पिछली शरीअत वाले अम्बिया (अलै०) में मशहूर हैं, इन हज़रात का खुसूसी जिक्र फ़रमाया है।

साहिबे रुहुल् मअानी (रह०) ने हज़रत रसूले अकरम (सल्ल०) का जिक्र करने की वजह बयान करते हुए लिखा है कि चूंकि आप (सल्ल०) की तख़लीक़ पहले हुई थी इसलिए जिक्र में आप (सल्ल०) को बाद में लाया और इस बारे में मरफूअ हदीस भी है:-

بدئى بى الخلق وكنت اخرهم فى البعث

और एक हदीस यूँ नक्ल की है **كنت أوّل النّبيين فى الخلق واخرهم فى البعث**

(यह हदीस अल्लामा सियोती (रह०) ने ख़सायस कुब्रा (3) में भी नक्ल की है) यह भी लिखा है कि चूंकि आप सब से पहले नुबूवत से सरफराज़ किये गये थे इसलिए भी आप (सल्ल०) का जिक्र पहले किया गया। इस बारे में बहुत सी रिवायात भी हैं जिन्हें 'अल्लामा सियोती' (रह०) ने 'ख़सायस कुब्रा' में मुख्तलिफ़ किताबों से जमा किया है। (मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 513)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से नक्ल किया गया है कि हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! आप की नुबूवत कब साबित हो गई थी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया **وَإِذْ بَيْنَ الرُّوحِ وَالْجَسَدِ** (यानी मेरे लिए उस वक़्त नुबूवत साबित हो गई थी जब आदम रुह व जिस्म के दर्मियान थे।) (तिर्मिजी)

'हज़रत अरबाज़ बिन सारिया' (रज़ि०) से रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद नक्ल किया गया है कि मैं उस वक़्त अल्लाह के नज़्दीक ख़ातिमुन्नबीय्यीन (अन्तिम सन्देशवाहक) लिखा हुआ था, जब आदम अपनी मिट्टी ही में थे।



अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम से क्या अहद लिया जिस का इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र है। इस के बारे में साहिबे रुहुल् मअानी (भाग 21 पेज 154) लिखते हैं:-

### नबियों से अहद (प्रतिज्ञा)

ای واذ کر وقت اخذنا من النبیین كافة عهدهم بتبلیغ الرّسالة والشرائع والدعاء الى الدّین الحق

“यानी उस वक़्त को याद कीजिए जब हम ने तमाम नबियों से यह अहद लिया कि रिसालत की तब्लीग़ करेंगे, अहकामे शरीअत पहुँचाएँगे और दीने हक़ की तरफ़ बुलाएँगे”। (मिशक़ातुल् मसाबीह पेज नं० 24)

मुस्नद से नक़ल किया गया है कि जो हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि०) से मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने बनी आदम को हज़रत आदम (अलै०) की पुश्त से निकाल कर **اَلَسْتُ بِرَبِّکُمْ** (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?) फ़रमाया तो सब ने **بَلٰی** कहा यानी इक़रार किया कि हाँ, वाकई आप हमारे रब हैं। इसी मौक़े पर हज़रत अम्बिया-ए-किराम (अलै०) से एक खुसूसी अहद लिया गया जो रिसालत और नुबूव्वत के बारे में था, जैसे **وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِیِّنَ مِثَاقَهُمْ** है।

सूर: आले इमरान रुकूअ 9 में भी अम्बिया-ए-किराम (अलै०) से अहद लेने का ज़िक्र है, इस को भी देख लिया जाए।

**وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْهُمُ مِثَاقًا عَلَیْهَا** (और हम ने उन से पुख़्ता अहद लिया।)

जिस अहद का शुरु आयत में ज़िक्र है, बतौर ताकीद उसी को दोबारा ज़िक्र फ़रमाया और बाज़ हज़रत ने फ़रमाया कि पहले इस अहद लेने के बाद फिर अल्लाह की क़सम दिलाकर दोबारा अहद लिया, जिसे **مِثَاقًا عَلَیْهَا** से तअबीर (संज्ञा दी) फ़रमाया। (रुहुल् मअानी)

### मीसाक़ की ह़िकमतें-

**لَیْسَ لِلْجَنّ الْفٰسِقِیْنَ عَنْ صٰدِقِیْهِمْ** (ताकि अल्लाह सच्च्यों से उन की सच्चाई के बारे में सवाल फ़रमाए।)

इस में मीसाक़ लेने की ह़िकमत बयान फ़रमाई और मतलब यह है कि यह मीसाक़ इसलिए ली गई कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन नबियों से दर्याफ़्त फ़रमाएगा जो अहद करने में सच्चे थे कि तुम ने अपने अहद के मुताबिक़ अपनी उम्मतों को तब्लीग़ की थी या नहीं?

‘सहीह बुख़ारी’ भाग 2 पेज नं० 465 में है कि क़ियामत के दिन हज़रत नूह (अलै०) को लाया जाएगा और उन से सवाल किया जाएगा कि क्या तुम ने तब्लीग़ की थी? तो वह अर्ज़ करेंगे कि ऐ रब! हाँ, मैंने तब्लीग़ की थी, फिर उन की उम्मत से सवाल होगा कि क्या इन्होंने मेरे अहक़ाम पहुँचाये थे? वह कहेंगे नहीं? हमारे पास तो कोई नज़ीर (डराने वाला) नहीं आया।

इस के बाद हज़रत नूह (अलै०) से पूछा जाएगा कि तुम्हारे दावे की तस्दीक़ के लिए गवाही देने वाले कौन हैं? वह जवाब देंगे कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उन के उम्मती हैं। यहाँ तक बयान फ़रमाने के बाद हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी उम्मत को ख़िताब करके फ़रमाया कि इस के बाद तुम को लाया

जाएगा और तुम गवाही दोगे कि बेशक हज़रत नूह (अलै०) ने अपनी कौम को तब्लीग़ की थी”।

## कौम का इन्कार

मुस्नद अहमद (रह०) वगैरह की रिवायात से ज़ाहिर होता है कि हज़रत नूह (अलै०) के अलावा दूसरे अम्बिया किराम (अलै०) की उम्मतें भी इन्कारी होंगी और कहेंगी कि हम को तब्लीग़ नहीं की गई थी, उन के नबियों से सवाल होगा कि तुम ने तब्लीग़ की थी? वह हाँ में जवाब देंगे कि वाकई हम ने तब्लीग़ की थी, इस पर उन से गवाह तलब किये जाएँगे तो वह भी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप की उम्मत की गवाही पेश करेंगे। (दुर्रे मन्सूर भाग 1 पेज नं० 144)

हज़रात अम्बिया किराम-ए-अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से यह सवाल उन की उम्मतों के सामने होगा, ताकि उन पर हुज्जत कायम हो जाये। अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम सच्चे थे और उन के मानने वाले अपने ईमान में सच्चे थे, उन के बारे में सूर: माइदा के आखिरी रुकूअ में फरमाया:-

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِينَ صِدْقُهُمْ

(यह वह दिन है जिस में सच्चों को उन की सच्चाई नफ़ा देगी) जिन लोगों ने सच को झुठलाया उन के बारे में फरमाया:-

وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا

(और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार फरमाना।)

सूर: जुमर में फरमाया لَمَّا أَتَاهُمْ مِنْ كَذِبٍ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالْحَقِّ إِذْ جَاءَهُمُ الْبُرْهَانُ بِالْكَافِرِينَ

(सो उस शख्स से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ बांधा और सच को झुठलाया जब उस के पास आया, क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं है?)

**9-11**

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا

وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا إِذْ جَاءَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونًا

مَنْ لَكَ الْإِبْتِلَى الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زَلَالًا شَدِيدًا

## ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौके पर अल्लाह की मदद

इस रुकूअ में ग़ज़्व-ए-अहज़ाब का ज़िक्र है, जिसे ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ भी कहा जाता है। यह 5 हिज़्री का वाकिआ है, थोड़ी सी तम्हीद के बाद इस ग़ज़्वे की तफ़सील नक़ल की जाती है।

मदीना मुनव्वरह में पुराने ज़माने से यहूदी रहते थे और दो कबीले यमन के आकर आबाद हो गये थे जिन में से एक का नाम औस और दूसरे का नाम खज़रज था, उन्हें ख़बर दी गई थी कि आखिरी नबी (सल्ल०) इस शहर में तशरीफ़ लाएँगे, यह लोग आप (सल्ल०) पर ईमान लाने और आप की इत्तिब़ा करने के लिए यहाँ आकर बस गये।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़ के मौके पर औस और खज़रज को मिना में ईमान लाने की दअवत दी तो औस और खज़रज के जो लोग वहाँ मौजूद थे, उन्होंने ईमान कुबूल कर लिया और मदीना मुनव्वरह आकर अपने-अपने कबीले को हक़ की दअवत दी तो वह भी मुसलमान हो गये।

यहूदियों के सामने हक़ ज़ाहिर हो गया तब भी ईमान न लाए **فَلَمَّا جَاءَهُمْ كَفَرُوا بِهِ**

यहूदियों के तीन कबीले मदीना मुनव्वरह में आबाद थे उन में से एक बनू कैनकाअ और दूसरा बनू नज़ीर और तीसरा बनी कुरैज़ा था। जब आप (सल्ल०) मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो इन तीनों से मदद और हिमायत का मुआहिदा फ़रमा लिया था।

### क़त्ल की साज़िश-

‘बनू नज़ीर’ का वाकिआ इस तरह हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) दो मक्तूलीन (क़त्ल किये हुए लोग) के बदला के सिलसिले में उन के पास तशरीफ़ ले गये, यहूदियों ने कहा कि आप तशरीफ़ रखिये हम इस विषय में माली मदद करेंगे, इधर तो आप (सल्ल०) से यह कहा और उधर यह मश्वरह किया कि कोई शख्स ऊपर चढ़कर उन के ऊपर भारी पत्थर गिरा दे। यहूद में से एक शख्स ने इस का इरादा और वादा कर लिया और पत्थर गिराने के लिए ऊपर चढ़ गया।

अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) को उन के मश्वरे की खबर दिया और आप (सल्ल०) जल्दी से वापस तशरीफ़ ले आये और आप (सल्ल०) ने मुहम्मद बिन मुसल्मा (रज़ि०) को यहूद के पास पैग़ाम देकर भेजा कि तुम लोग मदीना मुनव्वरह छोड़ दो और यहाँ से चले जाओ, मुनाफ़िक़ीन ने यहूदियों को भड़काया और कहा तुम यहीं रहो और हरगिज़ मत जाओ हम तुम्हारी मदद करेंगे, इस से उन को मज़बूती पहुँच गई और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में पेश किया कि हम मदीना से नहीं निकलेंगे, हमारे और आप के दर्मियान जो वादा है वह भी तोड़ते हैं।

जब उन की तरफ़ से यह पैग़ाम आया तो आप (सल्ल०) ने उन से जिहाद करने की तैयारी की और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि०) को नायब बनाकर दीगर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को साथ लेकर बनू नज़ीर के मुहल्ले की तरफ़ रवाना हो गये।

(यह मुहल्ला शहर से ज़रा दूर था) आप (सल्ल०) वहाँ पहुँचे तो वह लोग क़िला बन्द हो गये, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन का मुहासिरा फ़रमाया।

मुनाफ़िक़ीन ने यहूदियों को ख़बर भेजी कि तुम जमे रहना, हम तुम्हें बेयार व मदद्गार नहीं छोड़ेंगे, अगर तुम से जंग हुई तो हम भी साथ में लड़ेंगे और अगर तुम्हें निकलना पड़ा तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएँगे।

यहूदी मुनाफ़िक़ीन की मदद के इन्तिज़ार में रहे, चन्द रोज़ गुज़र गये मगर उन्होंने कुछ भी मदद न की, लिहाज़ा उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह पैग़ाम भेजा कि आप (सल्ल०) हमें जिलावतन (देश-त्याग) कर दें मगर क़त्ल न फ़रमाएँ और हम को हमारे हथियार भी न ले जाने दें। इस के अलावा जितना सामान

ऊँटों पर ले जा सकें उसे ले जाने की इजाज़त दे दें।

आप (सल्ल०) ने उन्हें जिलावतन करना मन्ज़ूर कर लिया और हुक्म फ़रमाया कि तीन दिन में मदीना मुनव्वरह से निकल जाओ, वह लोग मदीना मुनव्वरह से निकल कर ख़ैबर में आबाद हो गये और बाज़ लोग शाम चले गये। (बतौर तम्हीद यह वाकिआ हम ने अल् बिदाया वल् निहाया भाग 4 पेज नं० 75 से नक़ल किया है। पूरा किस्सा इन्शाअल्लाह सूर: हश्म की तफ़्सीर में बयान होगा) यहूद ने जो माल छोड़ा था उसे रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुसलमानों में तक्सीम फ़रमा दिये, यह 4 हिज़्री का वाकिआ है।

### ग़ज़्व-ए-अहज़ाब-

अब ग़ज़्व-ए-अहज़ाब की शुरुआत इस तरह हुई कि 'बनू नज़ीर' को जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मदीना से निकाल दिया तो वहाँ जाकर भी वह शरारतों से बाज़ न आए। उन के चौधरी मक्का पहुँचे और कुरैशे मक्का से कहा कि आओ! हम तुम मिलकर दाअी-ए-इस्लाम से जंग करें, उन को और उन के साथियों को ख़त्म कर दें।

कुरैशे मक्का ने कहा (जो मुशिरक थे) कि तुम तो अहले किताब हो, सच बताओ कि हमारा दीन बेहतर है या मुहम्मद (सल्ल०) का दीन बेहतर है? उन लोगों ने पूरी ढ़िट्टाई के साथ कह दिया कि तुम्हारा दीन मुहम्मद (सल्ल०) के दीन से बेहतर है, यह बात सुनकर कुरैश बहुत खुश हुए और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जंग करने के लिए तैयार हो गये। इस के बाद यहूदियों के सरदार कबीला 'बनू ग़त्फ़ान' के पास गये और उन्हें बताया कि देखो! मुहम्मद (सल्ल०) से जंग करना है। कुरैश-ए-मक्का ने हमारा साथ देने का वादा कर लिया है तुम लोग भी हमारे साथ जंग में शरीक हो जाओ, ताकि इस्लाम और मुसलमानों का किस्सा ही ख़त्म हो जाए। उन के अलावह दूसरी कबीलों की जमाअतें भी जंग करने के लिए तैयार हो गईं।

### दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए ख़न्दक

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उन लोगों के बुरे इरादे की ख़बर मिली तो आप (सल्ल०) ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से मश्वरा किया। हज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) ने मश्वरा दिया कि मदीना मुनव्वरह के बाहर ख़न्दक खोद ली जाए उन्होंने बताया कि अहले फ़ारस दुश्मन से महफूज़ रहने के लिए यह तरीका अख़्तियार करते हैं, चुनांचे ख़न्दक खोद दी गई जो मदीना मुनव्वरह के बाहर थी जिधर से दुश्मनों के आने का अन्देशा था।

इस ख़न्दक की खुदाई में रसूलुल्लाह (सल्ल०) खुद शरीक हुए, सर्दी का मौसम था और हर तरफ़ से ख़ौफ़ ही ख़ौफ़ था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने खुद ही लाइन खींच कर ख़न्दक की सीमाएँ मुक़र्रर फ़रमाई और हर दस आदमियों को चालीस हाथ का एरिया खोदने के लिए दिया। (बाज़ हज़रात ने इस ख़न्दक की लम्बाई साढ़े तीन मील बताई है।)

हज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) बड़े ताक़तवर और तन्दुरुस्त आदमी थे उन के बारे में मुहाजिरीन व अन्सार में इख़्तिलाफ़ हुआ, अन्सार ने कहा कि सल्मान हम में से हैं और मुहाजिरीन ने कहा कि हम

में से हैं इन को हमारे साथ खोदने के लिए दिया जाए। यह सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया **سَلْمَانٌ وَمِنْ أَهْلِ الْيَمِينِ** (यानी सल्मान न अन्सार में से हैं, न आम मुहाजिरीन में से बल्कि वह हमारे अहले बैत में से हैं)

जब दुश्मनों की फौज मदीना के करीब पहुँचीं जिन की संख्या दस बारह हजार थी, उन्होंने ख़न्दक खोदी हुई पाई तो कहने लगे यह तो अजीब तरीका है जिसे अहले अरब नहीं जानते थे, वह लोग ख़न्दक (गड्ढा) के किनारे पड़े रह गये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ख़न्दक के दूसरी तरफ़ तीन हजार मुसलमानों के साथ तैयार हो गये, औरतों और बच्चों को हिफ़ाज़त के लिए क़िलों में महफूज़ कर दिया।

### दुश्मनों का ख़न्दक पार करना-

ख़न्दक को देखकर मुशिरकीन मुसलमानों तक पहुँच तो न सके जिस से आमने-सामने होकर दोनों फौजों की जंग होती, लेकिन अपनी जगह से जल्दी वापस भी नहीं हुए और अपनी जगह लगभग एक महीने तक जमे रहे यानी वह ख़न्दक के पार नहीं आ सकते थे, लेकिन उस हाल में छोड़ना भी उन्हें ठीक नहीं था।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सहाबा के साथ अपनी जगह पर ठहरे रहे। इस मौके पर मुसलमानों को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ पहुँची इसलिए कि सख़्त सर्दी थी, खाने-पीने का इन्तिज़ाम भी न था और ख़न्दक भी इस हाल में खोदी कि भूक की वजह से पेटों पर पत्थर बँधे हुए थे, फिर दुश्मन के मुक़ाबिले में इतना लम्बा पड़ाव डालना पड़ा।

उस वक़्त जो सख़्त मुसीबत का सामना था उसे अल्लाह तआला ने इन आयात में बयान फरमाया कि दुश्मन तुम्हारे ऊपर से चढ़ आए और नीचे की ओर से भी आ गये, आँखें फटी रह गईं और दिल मुँह को पहुँच गये जिसे उर्दू के मुहावरे में कहते हैं “कलेजा मुँह को आ गया” उस वक़्त मुसलमान आज़माइश में डाले गये और सख़्ती के साथ झिंझोड़ दिये गये।

मुफ़स्सरीन ने फरमाया है कि **مِنْ فَوْقِكُمْ** से वादी का ऊपर का हिस्सा मुराद है, जो पूरब की ओर था। इस ओर से ‘बनू ग़त्फ़ान’ और उन के साथी आये थे जिन में अहले नज्द भी थे, बनू कुरैज़ा भी थे, बनू नज़ीर भी और **السَّالِیْنَ** से वादी का नीचे वाला हिस्सा मुराद है जो पश्चिम की ओर था। इस ओर से कुरैशे मक्का, बनी कनाना और ‘अहले तिहामा’ भी आये थे।

**وَالَّذِينَ يَدْعُونَ إِلَى الْفِتْنِ** इस के बारे में मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि तमाम लोगों को शामिल है जिस में मुख़्लिस अहले ईमान भी थे और मुनाफ़िकीन भी, मोमिनीन तो यही सोच रहे थे कि अल्लाह तआला अपना वादा पूरा फरमाएगा और नबी करीम (सल्ल०) की मदद फरमाएगा और मुनाफ़िकीन दूसरी किस्म का ख़याल कर रहे थे, वह समझ रहे थे कि अब तो इस्लाम और मुसलमानों का नाम व निशान ही मिट जाएगा और यूँ समझते थे कि इतने लोगों से जंग करना इन थोड़े से मुसलमानों के बस की बात नहीं है।

### कुछ काफ़िरों का कत्ल-

दुश्मन ने ख़न्दक को पार करने की हिम्मत तो न की अलबत्ता कुछ तीरन्दाज़ी होती रही, मुशिरकीन

में से चन्द आदमी अपने घोड़े लेकर ख़न्दक में कूद गये जिन्हें नाकामी का मुँह देखना पड़ा, उन में से एक शख्स 'उमर बिन अब्द वुद' भी था, जंगे बद्र में उस ने सख़्त चोट खाई थी इसलिए जंगे उहद में शरीक न हो सका था। ग़ज़-ए-ख़न्दक के मौके पर वह ख़न्दक में कूदा और उस ने अपनी बहादुरी दिखाने के लिए पुकार कर कहा कि **هَلْ مِنْ يَدٍ** यानी मुझ से कौन मुकाबिला करता है?

(उस वक़्त वह हथियारों से लैस था) उस को अहले अरब हज़ार सवारों के बराबर समझते थे।

हज़रत अली (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त लेकर उस के सामने आये, 'अम्र बिन अब्द' ने उन से कहा कि तुम कौन हो? आप ने जवाब में फ़रमाया कि मैं 'अली बिन अबी तालिब' हूँ। उस ने कहा कि तुम्हारी उम्र कम है मैं अच्छा नहीं समझता कि तुम्हारा खून बहाऊँ, तुम्हारे चचाओ में ऐसे लोग मौजूद हैं जो उम्र में तुझ से बड़े हैं उन में से किसी को सामने लाओ।

हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया कि, लेकिन मुझे तो यह पसन्द है कि तेरा खून बहाऊँ। यह बात सुनकर वह गुस्से में भर गया और तल्वार निकालकर हज़रत अली (रज़ि०) की तरफ़ बढ़ा और हज़रत अली (रज़ि०) ने उस से मुकाबिला किया और ढाल आगे बढ़ा दी, उस ने ऐसी ज़ोर से तल्वार मारी कि ढाल कट गई, फिर हज़रत अली (रज़ि०) ने उस के मोठे के करीब तल्वार मारी जिस से वह गिर गया। गुबार बुलन्द हुआ और हज़रत अली (रज़ि०) ने ज़ोर से 'अल्लाहु अकबर' कहा।

तक्वीर की आवाज़ से मुसलमानों ने समझ लिया कि हज़रत अली (रज़ि०) ने दुश्मन को ख़त्म कर दिया। मुश्रीकीन ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास पैग़ाम भेजा कि हमें उस की नअ़श दे दी जाए हम उस के बदले में बतौर दियत के दस हज़ार दिरहम दे देंगे। बाज़ रिवायात में है कि उन्होंने बारह हज़ार दिरहम की पेशकश की, आप (सल्ल०) ने जवाब में कहलवा दिया कि तुम उस की नअ़श (शव) को ले लो हम मुर्दों की कीमत नहीं खाते।

एक रिवायत में है कि आप (सल्ल०) ने यूँ फ़रमाया कि उस की नअ़श (शव) दे दो, उस की नअ़श (शव) भी ख़बीस है उस की दियत भी ख़बीस है। 'अम्र बिन अब्द' के अलावा दुश्मन के और भी तीन चार आदमी मारे गये जिन में से एक यहूदी को 'हज़रत सफ़िया बिनत अब्दुल् मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हा' ने क़त्ल किया, जो मुसलमान औरतों के किले के बाहर चक्कर लगा रहा था।

मुसलमानों में से 'हज़रत सअ़द बिन मअ़ज़ रज़ियल्लाहु अन्हु' को एक तीर लगा जिस ने उन की रग काट दी, उन्होंने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे इतनी ज़िन्दगी और नसीब फ़रमा कि बनू कुरैज़ा (कबीला यहूद) की ज़िल्लत और हलाकत देखकर अपनी आँखें टंडी कर लूँ। अल्लाह तआला ने उन की दुआ कुबूल फ़रमाई जिस का ज़िक्र ग़ज़-ए-अहज़ाब के ज़िक्र के बाद आएगा। इन्शाअल्लाह शहीद होने वालों में 'हज़रत अनस बिन औस' 'अब्दुल्लाह बिन सहल' 'तुफ़ैल बिन नोअमान सअ़ल्बा ग़न्मा' और कअ़ब बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम के नाम ज़िक्र किये गये हैं।

### जिहाद में नमाज़-

ग़ज़-ए-अहज़ाब के मौके पर इतनी मशगूलियत और परेशानी थी कि एक रोज़ रसूलुल्लाह (सल्ल०)



अस्र की नमाज़ भी न पढ़ सके। आप (सल्ल०) ने बददुआ देते हुए फ़रमाया:-

ملاء الله عليهم بيوتهم وقبورهم نارًا كما شغلونا عن الصلوة الوسطى حتى غابت الشمس

(अल्लाह उन दुश्मनों के घरों और कब्रों को आग से भरे जैसा कि उन्होंने हमें सलाते वुस्ता से ऐसा मशगूल रखा कि सूरज भी गायब हो गया।)

इस के बाद आप ने वुज़ू फ़रमाया, फिर आप ने अस्र की नमाज़ पढ़ी, उस के बाद मग़िब की नमाज़ पढ़ी। बाज़ रिवायात में है कि ग़च्च-ए-ख़न्दक़ के मौके पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की चार नमाज़ें क़ज़ा हो गई थीं। जुह, अस्र, मग़िब, अ़िशा, आप (सल्ल०) ने रात का एक हिस्सा गुज़र जाने पर उन को इसी तर्तीब से पढ़ा जिस तर्तीब से क़ज़ा हुई थीं (अ़िशा तो वक़्ते अ़िशा ही में पढ़ी गई क्योंकि रात बाक़ी थी अलूबत्ता जिस वक़्त पढ़ी जाती थी उस से देर हो चुकी थी।

### रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआ-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब कोई मुश्किल पेश आती तो नमाज़ में मशगूल (Busy) हो जाते थे, ग़च्च-ए-ख़न्दक़ के मौके पर भी आप (सल्ल०) दुआएँ करते रहे, दुश्मनों से पराजित होकर भागने से पहले तीन दिन तक ख़ूब दुआ का एहतिमाम किया।

‘सहीह बुख़ारी’ पेज नं० 590 में हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफ़ (रज़ि०) से नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुक़ाबिले में आने वाली जमाअतों की शिकस्त के बारे में यूँ दुआ की-

(ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल फ़रमाने वाले जल्दी हिसाब लेने वाले इन जमाअतों को शिकस्त दे।) اللَّهُمَّ مَن لَّنَ الْكِتَابَ لَسْرِيعِ الْحِسَابِ الْاَحْزَابِ اَللّٰهُمَّ اَهْزِمْهُمْ وَارْزُقْهُمْ  
दे और इन को दहला दे।)

सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमें भी कोई दुआ बताइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह दुआ पढ़ो اللَّهُمَّ اسْتَرْعُوزَانَا وَامِنْ رَّوْعَانَا (ऐ अल्लाह! हमारे इज़्ज़त की हिफ़ाज़त फ़रमा और हमारे ख़ौफ़ को हटा कर अम्न (शान्ति) अता फ़रमा।)

### दुआ की कुबूलियत-

अल्लाह तआला ने दुआ कुबूल फ़रमाई और सख़्त तेज़ हवा भेज दी जिस से दुश्मनों के खेमे उखड़ गये, चूल्हे बुझ गये, हांडियाँ उलट गई, हवा तेज़ और सख़्त सर्द थी जिस की वजह से दुश्मनों की जमाअतें इस से प्रभावित होकर भाग खड़ी हुई। ‘अबू सुफ़यान’ जो उस वक़्त कुरैशे मक्का का कायद बन कर आया था, उस ने कहा ऐ कुरैशियो! अब यहाँ ठहरने का मौका नहीं रहा, हथियार भी हलाक हो गये, जानवर भी ख़त्म हो चुके और बनू कुरैज़ा मुआहिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर चुके हैं, हवा के थपेड़ों को तुम देख रहे हो, अब यहाँ से चले जाओ, मैं जा रहा हूँ। इस के बाद अबू सुफ़यान अपने ऊँट पर बैठा और चल दिया, फिर कुरैश भी चले गये, कबीला बनू ग़त्फ़ान को कुरैश की यह हरकत मालूम हुई तो वह भी वापस हो गये।

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को अपना इन्आम याद दिलाया और फ़रमाया:-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَذْكُرُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا

(ऐ ईमान वालों! अल्लाह की नेअमत तुम्हें जो मिली है उसे याद करो जबकि तुम्हारे पास लश्कर आ गये सो हम ने उन पर हवा भेज दी और लश्कर भेज दिये जो तुम ने नहीं देखे।)

“जिन लश्करों को नहीं देखा उन से कुरैश मुराद हैं। इस मौके पर फ़रिश्ते नाज़िल तो हुए थे लेकिन उन्होंने क़िताल में हिस्सा नहीं लिया, अल्बत्ता दुश्मनों के दिलों में रोअब डालने का काम किया। जब हवा के थपेड़ों से परेशान होकर मुशिरकीन भाग रहे थे तो फ़रिश्ते तक्बीर बुलन्द कर रहे थे और यूँ कह रहे थे कि भाग चलो यहाँ ठहरने का मौका नहीं है।

अल्लाह तआला ने हवा के ज़रिये दुश्मनाने इस्लाम को वापस कर दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अब यह लोग हम से लड़ने के लिए न आएँगे और हम ही उन से लड़ने के लिए जाएँगे।

(अल् बिदाया, वल् निहाया, सीरत इब्ने हिशाम, मुआलिमुत्त तन्ज़ील)

इस तरह ‘ग़च्च-ए-ख़न्दक़’ के बाद दुश्मन मदीना मुनव्वरह पर चढ़ाई का इरादा नहीं कर सके। 8 हिज़्री में मक्का फ़तेह हो गया और इस के बाद अरब के लोग मुसलमान हो गये, झुण्ड के झुण्ड मदीना मुनव्वरह में उन के ग्रुप आते थे और इस्लाम कुबूल करते थे।

### सख़्त भूक और सर्दी-

जिस वक़्त दुश्मन चढ़कर आये, उस वक़्त सख़्त सर्दी का ज़माना था, खाने-पीने का भी अच्छा इन्तिज़ाम न था, भूख की मुसीबत भी थी, रसूलुल्लाह (सल्ल०) खुद ख़न्दक़ खोदने में शरीक थे। सहाबा किराम (रज़ि०) भी इस काम में मशगूल थे, पेटों पर पत्थर बाँध रखे थे, ख़न्दक़ खोदनी और फिर उस की मिट्टी बाहर फेंकनी पड़ी थी जिसे अपने कंधों और पीठों पर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाते थे, खाने के लिए एक मुट्ठी जौ होता, जिन्हें उबाल लिया जाता और यह उबले हुए जौ तेल या चर्बी के साथ खा लिये जाते थे, जिस में बू भी आ जाती थी जिसे खाना आसान न था, मुश्किल से गले से उतरता था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) इस मौके पर यह पढ़ते जाते थे:-

اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْاٰخِرَةِ فَاعْفِرِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ

(ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी आख़िरत ही की ज़िन्दगी है सो आप अन्सार और मुहाजिरीन को बख़्श दीजिए।) आप (सल्ल०) की यह बात सुनकर सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) जवाब में यूँ कहते थे:-

نَحْنُ الَّذِيْ بَايَعُوْا مُحَمَّدًا عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيَْنَا اَبَدًا

(हम वह हैं जिन्होंने ज़िहाद पर मुहम्मद से बैअत की है, हम जब तक ज़िन्दा हैं हमारी बैअत बाकी है।)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ख़न्दक़ खोदने में शरीक थे और मिट्टी निकालने की वजह से आप (सल्ल०) के पेट मुबारक पर इतनी मिट्टी लग गई थी कि खाल नज़र नहीं आ रही थी। इस मौके पर आप (सल्ल०) अशआर पढ़ते जाते थे, जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि०) के शेअर हैं।

(१) اَللّٰهُمَّ لَوْلَا اَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلِّينَا  
 (२) فَانْزِلْ سَكِينَةً عَلَيْنَا وَثَبِّتِ الْاَقْدَامَ اِنْ لَا قِيْنَا  
 (३) اِنْ اِلَّا لِيْ قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا وَانْ ارَادُوْا فِتْنَةً اَبْيُنَا

- (1) ऐ अल्लाह! अगर आप हिदायत न देते तो हम हिदायत न पाते, न सद्कः देते और न नमाज़ पढ़ते।
- (2) सो हम पर इत्मिनान नाज़िल फ़रमाइए और हमारे क़दमों को साबित रखिये अगर हमारी मुठभेड़ हो जाये।
- (3) बिलाशुब्हा उन लोगों ने हम पर ज़्यादती की है और अगर यह फ़ित्ने का इरादा करेंगे तो हम उन से इन्कार कर देंगे।

आख़िरी शब्द 'अबैना' को रसूलुल्लाह (सल्ल०) बुलन्द आवाज़ से पढ़ते थे।

(सहीह बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 588, 589)

और इस शब्द को दोहराते थे। (मिशकातुल मसाबीह ,बाबुल बयान वल् शेअर)

### रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई

ख़न्दक़ खोदते वक़्त एक ऐसी सख़्त चट्टान निकल आई जिस का तोड़ना सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए मुश्किल हो गया। सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को इस की खबर दी तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं इस के लिए तैयार हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़ावड़ा लेकर उस पर मारा जिस से वह रेत का ढेर बन गया।

बाज़ रिवायात में है कि जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उस चट्टान में फ़ावड़ा मारा तो चोट लगने की वजह से एक ऐसी तेज़ रौशनी ज़ाहिर हो गई जिस से मदीना के दोनों ओर रौशनी हो गई, ऐसा मालूम हो रहा था कि जैसे अंधेरी रात में चिराग़ जल गया हो। इस पर आप (सल्ल०) ने फ़तेहयाबी ज़ाहिर करने वाली तक्बीर कही और मुसलमानों ने भी 'अल्लाहु अक्बर' कहा।

हज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) और दूसरे सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! यह क्या रौशनी थी जो बार-बार ज़ाहिर हो रही थी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब पहली बार रौशनी हुई तो उस में मुझे 'हीरह' शहर के महल्लात और 'किसरा' के शहर दिखाई दिये।

मुझे हज़रत जिब्रईल ने बताया कि आप की उम्मत इन पर ग़ल्बा पाएगी और दूसरी बार जो चमक ज़ाहिर हुई उस से रूम की सरज़मीन के सुर्ख़ महल्लात दिखाई दिये। (जो यमन का मशहूर शहर है)

हज़रत जिब्रईल ने मुझे बताया कि मेरी उम्मत इस पर भी ग़ल्बा पाएगी और तीसरी बार जो रौशनी चमकी उस से मुझे 'सन्आ' के महल्लात दिखाई दिये (जो यमन का मशहूर शहर है)

हज़रत जिब्रईल ने मुझे बताया कि मेरी उम्मत उस पर भी ग़ल्बा पाएगी लिहाज़ा तुम खुश हो जाओ। इस पर मुसलमान बहुत खुश हुए और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और यकीन कर लिया कि यह सच्चा वादा है जो पूरा होकर रहेगा।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जब इन शहरों के फ़तेह होने की ख़बर दी तो मुनाफ़िक़ीन (कफ़ाचारी) कहने लगे कि इन को देख लो, यस्रब से इन को हीरह और 'किस्रा' के महल नज़र आ रहे हैं और यह ख़बर दी जा रही है कि तुम उन्हें फ़तेह करोगे और हाल यह है कि तुम लोग ख़न्दक़ खोद रहे हो यानी मुसीबत में गिरफ़्तार हो।

बाज़ रिवायात में यूँ है कि जब आप (सल्ल०) ने 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर पहली बार चोट मारी तो उस चट्टान का तिहाई हिस्सा टूट गया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, 'अल्लाहु अक्बर' मुझे मुल्के शाम के ख़ज़ाने दे दिये गये। फिर दोबारा चोट मारी तो उस का एक तिहाई हिस्सा और टूट गया और फ़रमाया 'अल्लाहु अक्बर' मुझे मुल्क फ़ारस की चाभियाँ दे दी गईं।

फिर तीसरी बार चोट मारी तो बाकी पत्थर भी टूट गया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया 'अल्लाहु अक्बर' मुझे मुल्के यमन की चाभियाँ दे दी गईं, साथ ही आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं शाम के सुर्ख़ महल और मदायन का सफ़ेद महल और सनआ के दरवाज़े अभी यहीं इसी वक़्त देख रहा हूँ।

हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ज़माने में जब यह शहर फ़तेह होते जाते थे तो हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाया करते थे कि जिस ज़ात के कब्ज़े में अबूहुरैरा की जान है उस की क़सम खाकर कहता हूँ कि तुम ने जिन शहरों को फ़तेह कर लिया और क़ियामत तक जिन शहरों को फ़तेह करोगे उन सब की चाभी मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पहले ही दे दी गई थीं यानी आप (सल्ल०) को अल्लाह तआला की तरफ़ से यह खुशख़बरी दे दी गई थी कि आप की उम्मत इन को फ़तेह करेगी।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) यह भी फ़रमाते थे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तो इस दुनिया से तशरीफ़ ले गये हैं अब तुम इन को हासिल कर रहे हो। (अल् बिदाया वल् निहाया भाग 4 पेज नं० 99 ता 102)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि जब कैसर हलाक हो जाएगा तो उस के बाद कोई कैसर न होगा और जब किसरा हलाक हो जाएगा तो उस के बाद कोई किसरा न होगा। क़सम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़े में मेरी जान है तुम कैसर व किसरा के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे।

आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन के पूरब और पश्चिम मुझे अज़ा फ़रमा दिये हैं और जो कुछ अल्लाह तआला ने मुझे अज़ा फ़रमाया है मेरी उम्मत का मुल्क वहाँ तक पहुँच जाएगा।

### हज़रत जाबिर (रज़ि०) के यहाँ मेहमानी-

हज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान किया कि ख़न्दक़ खोदते वक़्त जब एक सख़्त चट्टान आ गई तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम नबी अकरम (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐसी जगह निकल आई है जिस की मिट्टी बहुत सख़्त है (जो हमारे काबू में नहीं आ रही)। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मैं उतरता हूँ इस के बाद आप (सल्ल०) खड़े हुए और आप (सल्ल०) के पेट मुबारक पर पत्थर बाँधे हुए थे और भूख का यह आलम था कि हम ने तीन दिन से कुछ भी नहीं चखा था, आप

ने फावड़ा लिया और उस सख्त ज़मीन पर मारा जिस की वजह से वह ऐसा हो गया जैसे रेत का ढेर हो और वह खुद से फिसल रहा हो।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त ली कि घर थोड़ी देर के लिए चला जाऊँ, आप (सल्ल०) ने इजाज़त दे दी, मैं अपने घर गया और अपनी बीवी से कहा कि तुम्हारे पास खाने-पीने की कोई चीज़ है? मैंने महसूस किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) भूख की हालत में हैं। इस पर मेरी बीवी ने चमड़े का एक थैला निकाला जिस में एक साअ यानी तीन किलो के लगभग जौ थे, इस के अलावा हमारी एक छोटी सी पालतू बकरी भी थी मैंने उसे ज़ब्त किया और मेरी बीवी ने जौ पीसना शुरू किया जितनी देर में मैंने बकरी की बोटियाँ बनाकर हांडी में डालीं उतने समय में वह जौ पीस चुकी थी।

मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिद्मत में जाने लगा तो वह कहने लगी जा तो रहे हो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने मुझे रुस्वा मत करना (ऐसा न हो कि ज़्यादा लोग आ जाएँ) मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिद्मत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हम ने थोड़ा सा खाना तैयार किया है आप तशरीफ़ ले चलें और अपने साथ एक दो आदमी और ले लें। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, कितना खाना है? मैंने पूरी सूरतेहाल अर्ज़ कर दी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह तो बहुत है।

### ख़न्दक वालों की दअवत-

फिर आप ने ज़ोर से ए़लान फ़रमाया कि ऐ ख़न्दक वालो! आ जाओ, 'जाबिर' ने खाना तैयार किया है। आप (सल्ल०) मुहाजिरीन व अन्सार को साथ लेकर रवाना हो गये, आप आगे-आगे तशरीफ़ ला रहे थे और हज़रत सहाबा (रज़ि०) आप के पीछे चल रहे थे, मैं जल्दी से अपनी बीवी के पास पहुँचा और पूरी कैफ़ियत बयान कर दी (कि मजमअ बहुत आया है) इस पर वह नाराज़ हुई और कहा कि वही हुआ न जिस का मुझे अन्देशा था कि मैंने कहा था कि मुझे रुस्वा मत करना। फिर कहने लगी, अच्छा तुम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सब बात बता दी थी? मैंने कहा कि हाँ, मैंने सब कुछ बता दिया था।

(अल् बिदाया वल् निहाया भाग 4 पेज नं० 98 में बड़वाला दलायल लिल् बैहकी यह भी इज़ाफ़ा है कि यह सुनकर वह कहने लगी कि बस फिर तो अल्लाह और उस के रसूल ही जानें।)

आप तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया कि एक रोटी पकाने वाली और बुला लो और हांडी को चूल्हे से मत उतारो। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा (रज़ि०) से फ़रमाया कि तुम घर में आ जाओ छुप के मत बैठो, चुनाँचे सहाबा किराम (रज़ि०) बैठ गये और रोटी पकती रही और आप (सल्ल०) की खिद्मत में पेश होती रही। आप रोटी तोड़-तोड़ कर उस पर गोश्त की बोटियाँ रखकर और शोरबा भर कर हाज़िरीन को देते रहे, यहाँ तक की सब ने पेट भर कर खा लिया।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) बयान करते हैं कि खाने वाले हज़ार आदमी थे, मैं अल्लाह की कसम खाकर कहता हूँ कि उन्होंने ख़ूब खाया और पेट भर कर खाना खाकर वापस चले गये और हमारी हांडी का यह हाल था कि जैसी थी उसी तरह उबल रही थी और हमारा आटा जितना था उतना ही बाकी रहा (यानी

उस में से कुछ भी खर्च नहीं हुआ।) आप (सल्ल०) ने मेरी बीवी से फ़रमाया कि यह बचा हुआ खाना खुद खा लो और (पड़ोसियों को भी) हदिया दो क्योंकि लोग भूख की मुसीबत में मुब्तिला हैं।

(सहीह बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 588, 589)

### नोअमान बिन बशीर की बहन-

इसी तरह का एक वाकिआ हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) ने बहवाला मुहम्मद बिन इस्हाक़ बयान किया है कि हज़रत नोअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन ने बयान किया कि मेरी वालिदा ने मुझे लब भर कर खजूरें दीं जो मेरे कपड़े में डाल दीं और कहा कि ऐ मेरी बेटी! जाओ इसे अपने वालिद और अपने 'मामू अब्दुल्लाह बिन रवाहा' के पास ले जाओ ताकि वह सुबह के वक़्त इन को खा लें (यह दोनों हज़रात भी ख़न्दक़ खोदने में मशगूल थे) मैं यह खजूरें लेकर रवाना हुई, अपने वालिद और मामू की तलाश में थी कि इसी बीच रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर मेरा गुज़र हुआ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ बेटी! यह तुम्हारे पास क्या है? मैंने कहा कि यह कुछ खजूरें हैं जो मेरी वालिदा ने भेजी हैं ताकि अपने वालिद और अपने मामू को दे दूँ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि उन को यहाँ लाओ, मैंने वह खजूरें आप (सल्ल०) की हथेलियों में डाल दीं, वह इतनी कम थीं कि उन से आप की दोनों हथेलियाँ न भर सकीं। आप (सल्ल०) ने एक कपड़ा बिछाने का हुक्म दिया, फिर वह खजूरें उस पर फैला दीं और एक शख्स से फ़रमाया कि ऊँची आवाज़ से ख़न्दक़ वालों को पुकारो कि आ जाओ सुबह का खाना खा लो, ख़न्दक़ के काम में जो हज़रात मशगूल थे हाज़िर हुए और उन खजूरों में से खाते रहे यहाँ तक कि सब लोग खाकर फ़ारिग़ होकर वापस हो गये।

(इब्ने कसीर फ़िल् बिदाया वल् निहाया भाग 4 पेज नं० 99 रवाहु इब्ने इस्हाक़)





## आयत नं० 12 से 25 तक

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۖ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۖ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۖ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِنَّ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۖ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا شَمٌ سَبُلُوا الْمَنَّةَ لَأَنفَعَهُمَا وَمَا تَلَائَتْهُمَا إِلَّا يَأْسُرُوا ۖ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ مُسَوِّدًا ۖ قُلْ لَّنْ يُنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ ۖ وَإِذَا لَا تُؤْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ ۖ إِن أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۖ وَلَا يَجِدُونَ لَهْم مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۖ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ أَشَهِدَ عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يُنْظَرُونَ إِلَيْكَ تَتَوَارَعُهُمْ كَالَّذِي يَغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَفُوكُمْ بِالْأَيْسَةِ جِدَادٍ أَشْعَثَ عَلَى الْغَيْرِ ۖ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْيَالَهُمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۖ يَحْسَبُونَ الْغَزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ الْغَزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبِيَائِهِمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۖ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسُوءًا حَسَنَةً ۖ لَّيْسَ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهُ كَثِيرًا ۖ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْغَزَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۖ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَّن يَنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۖ لَيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ ۖ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۖ وَلَئِنِّي أَخَذْتُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيمًا ۖ

### अनुवाद-

① ऐ नबी! अल्लाह से डरिए और काफिरों (इन्कारियों) और मुनाफ़ि़कों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है। ② और पैरवी (अनुसरण) कीजिए उस वह्य की जो आप के रब की ओर से आप पर की जा रही है, बेशक अल्लाह जो तुम करते हो, उसकी खबर रखता है। ③ और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए 'वही' काम बनाने के लिए काफी है। ④ अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और न तुम्हारी पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो, (अर्थात यह कह दे कि तू मेरी माँ की पीठ की तरह हराम है) तुम्हारी माँ बनाया और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे हकीकी बेटे बनाए, ये सब तुम्हारे मुँह की बातें हैं और अल्लाह तो हक़ बात कहता है और 'वही' सही राह की ओर रहनुमाई करता है। ⑤ (मोमिनो) उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारा करो, अल्लाह के नज़दीक यही इन्साफ़ की बात है, और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे दीनी भाई और साथी हैं, और इसमें जो ग़लती तुमसे हुई उसके लिए तुम पर कोई पकड़ नहीं, लेकिन जिसका इरादा तुमने दिल से कर लिया, (उसकी बात और है) और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। ⑥ नबी का हक़ ईमान वालों पर, खुद उनके अपनी जान से बढ़ कर है- और उनकी पत्नियाँ उनकी माँ और अल्लाह की किताब के अनुसार, ईमान वालों और हिजरत करने वालों के मुक़ाबले में- नातेदार आपस में एक-दूसरे

से ज़्यादा करीब हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो, यह बात किताब में लिखी हुई है। (7) और जब 'हमने' नबियों से अहद (प्रतिज्ञा) लिया, और तुमसे भी, और नूह, और इब्राहीम और मूसा और मरयम के बेटे, ईसा, से भी, और 'हमने' मज़बूत अहद (प्रतिज्ञा) लिया था; (8) ताकि उन सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछें, और इन्कार करने वालों के लिए दुःख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (9) ऐ ईमान वाले! अल्लाह के उस एहसान को याद करो जो 'उसने' तुम पर किया- जब तुम पर फौजें चढ़ आयी थीं, तो 'हमने' उन पर आँधी भेजी, और ऐसी फौजें, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं, और जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उसे देख रहा था; (10) जब वे तुम पर ऊपर की ओर से भी (चढ़) आए और नीचे की ओर से भी, और जब आँखें पथरा गयीं, और कलेजे मुँह को आने लगे, और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के ख़याल करने लगे थे; (11) उस वक़्त ईमान वाले आजमाइश में डाल दिये गये, और बुरी तरह हिला दिये गये। (12) और जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी), और वे लोग जिनके दिलों में रोग था, कहने लगे, "अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादे हम से किये थे वह बिल्कुल धोखा था।" (13) और जब उनमें से एक गिरोह कहने लगा, "ऐ यसरिब (मदीना) वालो तुम्हारे लिए (ठहरने की) कोई जगह नहीं है, तो लौट चलो," और उनमें से एक गिरोह यह कह कर नबी से इजाज़त माँगने लगा कि "हमारे घर खुले पड़े हैं," हलाँकि वे खुले हुए (असुरक्षित) न थे, वे तो केवल भागना चाहते थे। (14) और अगर (फौजें) शहर के चारों ओर से उन पर चढ़ आतीं और उस समय उनसे फ़ित्ने (जंग) में पड़ने के लिए कहा जाता, तो वे (तुरन्त) उसमें जा पड़ते और इसके लिए बहुत कम ठहरते; (15) हालाँकि वे लोग इससे पहले अल्लाह से अहद (प्रतिज्ञा) कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किये गये अहद की ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (16) कह दीजिए, "अगर तुम मौत या क़त्ल से भागो, तो यह भागना तुम्हारे लिए कुछ भी लाभदायक न होगा, और (इसके बाद तुम ज़िन्दगी का) मज़ा थोड़ा ही उठा सकोगे।" (17) कह दीजिए, "कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर 'वह' तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे, या अगर 'वह' तुम पर मेहरबानी करना चाहे," तो अल्लाह के मुकाबले में न कोई दोस्त पाएँगे और न कोई मददगार। (18) अल्लाह तुम में से उन लोगों को भी जानता है जो रूकावटें डाल रहे हैं, और अपने भाइयों से यह कहते हैं कि "हमारे पास चले आओ।" और वे जंग में बहुत कम हिस्सा लेते हैं। (19) वह तुम्हारा साथ देने में तंग दिल हैं फिर जब ख़त्रा पेश आ जाता है, तो तुम उन्हें देखते हो, कि वे तुम्हें किस तरह ताकते हैं कि उनकी आँखें चक्कर खा रही हैं, जैसे किसी पर बेहोशी छा रही हो, फिर जब ख़त्रा ख़त्म हो जाता है तो तेज़ ज़बानों के साथ तुम्हारे बारे में ज़बानदराज़ी करें और माल में कंजूसी करें, यह लोग ईमान लाए ही न थे, तो अल्लाह ने इनके किये हुए कामों को बरबाद कर दिया और यह अल्लाह के लिए आसान था। (20) (डर की वजह से) समझ रहे हैं कि हमलाआवर गिरोह अभी गये नहीं हैं, और अगर हमलाआवर गिरोह फिर आ जाएँ तो यह चाहेंगे कि वे देहात में बद्दुओं (देहातियों) के बीच हों और वहाँ से तुम्हारी ख़बरें मालूम करते रहें, और अगर यह तुम्हारे बीच रहें भी तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेंगे। (21) तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मीदवार हो और वह अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे। (22) और जब ईमान वालों ने हमलाआवर गिरोहों को देखा तो पुकार उठे, "यह वही है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था, और अल्लाह और उसके रसूल ने सच

कहा था” और इस चीज़ ने उनके ईमान और फ़रमाँबरदारी को और बढ़ा दिया। (23) ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किये हुए अहद (प्रतिज्ञा) को सच कर दिखाया, उनमें से कुछ अपनी ज़िन्दगी पूरी कर चुके और कुछ इन्तिज़ार में हैं, और उन्होंने अपनी बात ज़रा भी नहीं बदली। (24) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) को चाहे तो सज़ा दे या उनकी तौब: कुबूल कर ले, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (25) और अल्लाह ने काफ़िरों को इस हाल में लौटा दिया कि वे अपने क्रोध में (भरे हुए) थे, और वे कोई भलाई हासिल न कर सके; और ईमान वालों की ओर से अल्लाह काफ़ी हो गया अल्लाह ज़बर्दस्त ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) है।

## आयत नं० 12 से 25 तक की व्याख्या

12-14

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۖ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۖ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۖ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۖ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَا تَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا فِيهَا إِلَّا بَسِيرًا ۖ

### मुनाफ़िकों की शरारतें

पहली आयत में यह बताया है कि मुनाफ़िकीन और वह लोग जिन के दिलों में मर्ज़ था (जो कमज़ोर एतिफ़ाद के थे) उन्होंने यूँ कहा कि अल्लाह और उस के रसूल ने हम से जो वादा किया है वह केवल एक धोखा है।

मुफ़स़िरीन ने लिखा है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़न्दक़ खोदते वक़्त खुशख़बरी दी कि तुम हीरह के महल, किसरा के शहर, यमन के शहर और रूम के महल फ़तेह करोगे, तो इस पर मुनाफ़िकीन (कप्टाचारी) ने कहा देख लो! यहाँ क्या मुसीबत पड़ी हुई है, ख़न्दक़ खोदी जा रही है ज़रा भी बाहर नहीं जा सकते, अगर यहाँ से जाएँ तो क़त्ल हो जाएँ। हाल तो यह है, लेकिन बशारतें यूँ दी जा रही हैं कि यूँ शहर फ़तेह होंगे और ऐसे महल्लात पर कब्ज़ा होगा, यह सब कुछ नहीं यह सब धोका ही धोका है। इस पर अल्लाह तअ़ाला ने आयते करीमा **وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ** नाज़िल फ़रमाई।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि वह तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दिल से मानते ही नहीं थे, फिर उन्होंने **مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ** कैसे कहा? इस का जवाब यह है कि मुनाफ़िक़ का कोई दीन नहीं होता वह मुँह देखी बातें करता है क्योंकि वह लोग बज़ाहिर इस्लाम के दावेदार थे और हज़रात सहाबा (रज़ि०) के सामने यह बात कह रहे थे, इसलिए इस के अलावा कोई चारा भी न था कि आप को रसूल मानने का दम भरें, लेकिन उन्होंने यह न समझा कि अल्लाह तअ़ाला और उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ धोका धड़ी की निस्वत करेंगे तो मुसलमान हमें कैसे मुसलमान मानेंगे।

दूसरी आयत में मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) की एक जमाअत की यह बात नक्ल फ़रमाई कि उन्होंने इस मौक़े पर यूँ कहा कि यस्रब वालों यानी मदीने में रहने वालो यहाँ ठहरने का मौक़ा नहीं है, इसलिए अपने-अपने घरों को वापस हो जाओ क्योंकि बज़ाहिर क़त्ल होने की सूरत बन रही है, अपने घरवालों को लौट जाओगे तो क़त्ल होने से बच जाओगे वरना तुम्हें भी यहीं मौत के मुँह में जाना पड़ेगा।

बाज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि यह बात रईसुल् मुनाफ़िकीन (कप्टाचारियों का सरदार) 'अब्दुल्लाह बिन उबई' और उस के साथियों ने कही थी। मुफ़स्सरीन ने **لَا مَقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا** का एक मतलब तो वही लिखा है जो हम ने ऊपर बयान किया और बाज़ हज़रात ने यह फ़रमाया है कि इस का मतलब यह है कि अब मुहम्मद (सल्ल०) के दीन में रहने का मौक़ा नहीं रहा, इसलिए तुम अपने पुराने दीन शिर्क पर वापस हो जाओ और एक मतलब यह लिखा है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से तुम ने जो बैअत (प्रतिज्ञा) की है उस से वापस हो जाओ और उन्हें दुश्मनों के हवाले कर दो।

'यस्रब' मदीना का पुराना नाम है। बाज़ अहले इल्म का कहना है कि अमाल्का में से एक शख्स का नाम 'यस्रब' था उसी के नाम पर नाम रखा गया। चूँकि यह **ثَرْبٌ يَثْرُبُ** मलामत करने वाले के मअने में आता है, इसलिए अब इस को इस नाम से याद करना मना है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है:-

**مَنْ سَمِيَ الْمَدِينَةَ يَثْرُبُ فَلْيَسْتَغْفِرِ اللَّهَ تَعَالَى هِيَ طَابَةُ هِيَ طَابَةُ هِيَ طَابَةُ**

(यानी जो शख्स मदीना को यस्रब के नाम से याद करे वह अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करे। यह ताबा है, यह ताबा है, यह ताबा है) यानी उम्दह है मुबारक है अच्छा शहर है।

(रवाहु अहमद फ़ी मुस्नद अनिल बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के तशरीफ़ लाने के बाद इस शहर का नाम मदीना मुनव्वरह ही मशहूर हो गया चाहे इस के अलावा इस के और भी नाम हों।

ऊपर की आयत में बाज़ मुनाफ़िकों से इजाज़त लेने का ज़िक्र है, उन लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि हमें वापस होने की इजाज़त दे दी जाए क्योंकि हमारे घर महफूज़ नहीं हैं, छोटी-छोटी दीवारें हैं, चोरों का ख़ौफ़ है। जब यहाँ आ गये तो वहाँ कोई हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम भी नहीं और वहाँ दुश्मनों के पहुँचने का डर है क्योंकि ख़न्दक की जगह से दूर हैं।

मुफ़स्सरीन ने बताया है कि जब मुनाफ़िकों ने यह कहा कि ऐ यस्रब वालों! यहाँ से चले जाओ, ठहरने का मौक़ा नहीं है तो उन की बातों में आकर कबीला बनू हारिसा और बनू सल्मा ने आप की ख़िद्मत में हाज़िर होकर वापस होने की इजाज़त तलब कर ली थी। अल्लाह तआला ने उन की तर्दीद फ़रमाई और फ़रमाया **وَمَا فِي بَعُورِهِمْ** (यह बात नहीं है कि उन के घर महफूज़ नहीं) **إِنْ يَرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا** (उन का मक्सद सिर्फ़ यह है कि भाग जाएँ)।

तीसरी आयत में उन लोगों के फिल्ला का ज़िक्र फ़रमाया **وَلَوْ دُحِبَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أُقْطَارِهَا**

(अगर मदीना के आस-पास से कोई लश्कर उन पर हमला कर दें, फिर उन से फिल्ले का सवाल किया जाए तो यह ज़ख़र फिल्ले को मन्ज़ूर कर लेंगे।) मतलब यह है कि यह लोग जो घरों के ग़ैर महफूज़

होने का बहाना कर के आप (सल्ल०) से इजाज़त लेकर राहें फ़रार अख़्तियार करना चाहते हैं उन का मक्सद मुसलमानों के साथ क़िताल करने से मुँह मोड़ना है। अगर काफ़िरों का कोई लश्कर उन के पास पहुँच जाए और वह उन से यह कहे कि चलो मुसलमानों से लड़ो तो यह ज़रूर उन की बात मान लेंगे और अपने घरों में बहुत ही कम ठहरेंगे, बस काफ़िरों के हुक्म से चल पड़ेंगे या इतनी देर लगाएँगे जितनी देर में हथियार लें, उस वक़्त उन्हें घरों की हिफ़ाज़त का बिल्कुल यकीन नहीं रहेगा, उन्हें मुसलमानों से दुश्मनी है और काफ़िरों से मुहब्बत।

قال صاحب الروح ان طلبهم الاذن في الرجوع ليس باختلال بيوتهم بل

لنفاقهم وكرهتهم نصرتك

आयते करीमा की दूसरी तरह भी तफ़सीर की गई है। साहिबे रुहुल् मअानी फ़रमाते हैं:-

والوجه المحتملة في الآيات كثيرة كما لا يخفى على من له ادنى تأمل وما

ذكرنا أولا هو الاظهر ما أرى

15-20

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْتُوا الْإِدْبَارَ ۖ وَكَانَ عِمْدُ اللَّهِ مُسَوِّدَةً ۖ قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ  
إِنْ قَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَمْ تَمُتُوا إِلَّا تَمُتُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ  
أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۖ وَلَا يَجِدُونَ لِنَبِيِّكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۖ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْعَوَاقِبِينَ  
مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلْ هُمْ إِيَّانَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَإِذَا  
جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ  
سَلَفُوا ۚ أَلَيْسَ جَدَادُ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا ۚ فَاحْصِ عَنْهُمْ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ  
يَسِيرًا ۖ يَحْسَبُونَ الْإِعْرَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۚ وَإِنْ يَأْتِ الْإِعْرَابُ يَودُّوا أَنْ أَتَتْهُمْ بِأَدُونٍ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ  
عَنْ أَنْبَاءِكُمْ ۚ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۖ

‘साहिबे रुहुल् मअानी’ फ़रमाते हैं कि इस आयत में ‘बनू हारिसा’ का ज़िक्र है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से ‘कबीला बनू सल्मा’ मुराद है। यह लोग ग़च्च-ए-उहद के मौक़े पर बुज्दिली दिखा चुके थे, फिर तौबः कर के शरीक हो गये और ख़न्दक़ का वाकिआ पेश आने से पहले अहद किया था कि राहें फ़रार अख़्तियार न करेंगे।

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि आयते करीमा में उन मुनाफ़िकीन का ज़िक्र है जो ग़च्च-ए-बद्र में शिरकत से रह गये थे, फिर जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को फतेह अता फ़रमाई और काफ़िरों को बुरी तरह शिकस्त दी तो यह कहने लगे अफ़सोस हम शरीक न हुए। अगर हम शरीक होते तो यूँ करतब दिखाते और ऐसा करते और वैसा करते। आइन्दा जब कोई जिहाद का मौक़ा होगा तो हम अपनी बहादुरी के जौहर दिखाएँगे। जब ग़च्च-ए-ख़न्दक़ का मौक़ा आया तो उन के सारे दावे और मुआहिदे रखे रह गये और फ़रार



(भागने) की राहें अख़्तियार करने लगें।

وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ عَلَيْهِ (और अल्लाह से जो अहद किया जाता है उस की बाज़ पुर्स होगी) अहद की ख़िलाफ़वर्ज़ी और अहद शिकनी कर के सज़ा के हक्दर हो चुके हैं।

पाँचवीं और छठी आयत में राह फ़रार अख़्तियार करने वालों को तम्बीह फ़रमाई कि अगर तुम मौत से या क़त्ल के डर से भाग गये तो तुम्हारा यह भागना तुम्हें नफ़ा न देगा, अगर भाग गये तो कितना जियोगे? एक निश्चित समय के मुताबिक़ मौत आ ही जाएगी और उम्र का जो बाकी हिस्सा है उस से भी ज़्यादा नफ़ा हासिल नहीं कर सकते, भाग कर उम्र नहीं बढ़ सकती क्योंकि उस का वक़्त मुक़र्रर है।

### फ़ैसला अल्लाह के हाथ में है-

फ़रमाया कि हर चीज़ का फ़ैसला अल्लाह के अख़्तियार में है। अगर तुम भाग गये और जहाँ पहुँचे वहाँ अल्लाह तआला ने तुम्हें हलाक़ फ़रमा दिया तो तुम्हें अल्लाह से कौन बचा सकता है? और अगर वह तुम पर अपना फ़ज़्ल फ़रमाए जैसे तुम्हें ज़िन्दा रखे, जोकि एक दुनियावी रहमत है तो उसे उस से कौन रोक सकता है?

सातवीं और आठवीं आयत में भी उन लोगों का ज़िक्र है जो दूसरों को जिहाद में शिर्कत से रोक रहे थे और मुसलमानों के हक़ में अपने कौल और अमल से बुरा किरदार अदा कर रहे थे। इश्राद फ़रमाया अल्लाह उन लोगों को जानता है जो दूसरों को जंग में शरीक होने से रोकते हैं और अपने भाईयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ।

‘साहिबे रुहुल् मअानी’ लिखते हैं कि एक मुख़्लिस मुसलमान ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर अपने सगे भाई के पास पहुँचा तो देखा कि वह भुना हुआ गोश्त खा रहा है और उस के पास नबीद (खज़ूरों का मीठा पानी) पड़ा है। यह शख्स मुनाफ़िक़ था, मुख़्लिस मुसलमान (उस का भाई) जो उस के पास से गुज़र रहा था उस से कहा तू यहाँ है? और रसूलुल्लाह (सल्ल०) नेज़ों और तल्वारों के दर्मियान में हैं। इस पर गोश्त खाने वाले शख्स ने कहा कि तू भी मेरे पास आ जा कि अब तो तुम लोग ऐसे घेरे में आ गये हो जिन का मुक़ाबिला नहीं कर सकते।

मुख़्लिस मुसलमान ने कहा कि तू झूठा है। अल्लाह की क़सम! तेरी बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बता दूँगा। यह साहब इमामुल् अम्बिया (रज़ि०) की ख़िद्मत आली में पहुँचे तो देखा कि हज़रत जिब्रईल (अलै०) आयत **قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ مِنْكُمْ** लेकर नाज़िल हो चुके हैं।

‘साहिबे मुआलिमुल् तन्ज़ील’ ने (भाग 3 पेज नं० 518) लिखा है कि यहूदियों ने मुनाफ़िक़ों को कहला भेजा कि तुम लोग अबू सुप्पयान, उस की जमाअत और दोस्तों के हाथों क्यों अपनी जान को तबाह कर रहे हो? अगर इस मर्तबः उन्होंने तुम पर क़ाबू पा लिया तो तुम में से एक को भी नहीं छोड़ेंगे हमें तुम पर तरस आ रहा है तुम हमारे भाई हो और पड़ोसी हो हमारे पास आ जाओ।

(इस सूरत में इख़्वांन से बिरादर नस्बी नहीं बल्कि बिरादरे वतनी मुराद होंगे) यहूद की बातों से



प्रभावित होकर मुनाफ़िकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई और उस के साथी मोमिनीन व मुख्तसीन की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और उन्हें जंग करने से रोकने और ख़ौफ़ज़दह करने लगे कि देखो! अगर अबू सुफ़यान और उस के साथियों ने तुम पर काबू पा लिया तो तुम में से किसी को न छोड़ेंगे, तुम्हें मुहम्मद (सल्ल०) से किस ख़ैर की उम्मीद है, उस की जंग का तो यह हासिल है कि हम सब यहीं कत्ल हो जाएँगे, चलो हम अपने यहूदी भाईयों के पास चलें, मुनाफ़िकों की यह बात सुनकर अहले ईमान का ईमान और मज्बूत हो गया और उन में सवाब की उम्मीद और ज़्यादा पक्की हो गई।

وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا

(और यह लोग यानी मुनाफ़िकीन लड़ाई के मौके पर जो हाज़िर हो जाते हैं उन का यह हाज़िर होना ज़रा सा नाम करने को है।)

أَشْرَأُ عَلَيْهِمْ (यानी उन का ज़रा सा नाम करने के लिए आना भी तुम्हारे बारे में बुख़ल अख़्तियार करने के लिए है।)

जिस का मतलब यह है कि अगर मुसलमान जीत गये और उन्हें ग़नीमत का माल मिल गया तो हम भी ग़नीमत के हक़ का दावा कर सकेंगे।

فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْنَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِينَ يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْغُيُوبِ

(सो जब कोई ख़ौफ़ का मौका पेश आ जाता तो आप उन को देखेंगे कि वह आप की तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उन की आँखें चकराई जाती हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो।)

فَإِذَا دَهَبَ الْخَوْفُ سَلَفُوكُمْ بِالْأَسْتَوِ حَادِدٍ (फिर जब ख़ौफ़ दूर हो जाता है तो तुम्हें तेज़ ज़बानों से तअने देते हैं।)

أَشْرَأُ عَلَى الْغَيْرِ (इन तअनों की वजह यह है कि वह माल की हिस्स के लिए आये होते हैं।)

यानी माले ग़नीमत लेने के लिए बातें करते हैं कि हमें माले ग़नीमत में क्यों शरीक नहीं करते? हम भी तो जंग में शरीक थे, हमारी वजह से तो तुम्हें यह विजय यानी जीत हुई है। मतलब यह है कि यह लोग बुज़्दिल भी हैं और लालची भी इन में दोनों चीज़ें इन्तिहा को पहुँची हुई हैं। 'साहिबे मुअलिमुल् तन्ज़ील' फ़रमाते हैं-

فَهُمْ عِنْدَ الْغَنِيمَةِ أَشْحُ قَوْمٌ وَعِنْدَ الْبُعْثِ اجْبَنُ قَوْمٌ

وَلَقَدْ كَفَرَ لَكَ رَبُّكَ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُنَافِقِينَ (सो अल्लाह ने उन के अमाल बेकार कर दिये) जिन का आख़िरत में कुछ भी सवाब न मिलेगा।

وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا (और यह अल्लाह के लिए बिल्कुल आसान है)

यानी उस से कोई शख्स झगड़ा कर के अपने अमाल का बदला नहीं ले सकता।

नवी आयत में मुनाफ़िकीन की बुज़्दिली को मज़ीद स्पष्ट किया गया है कि बावजूद यह कि कुरैशे मक्का, बनू ग़ि़तफ़ान और दूसरी जमाअतों के गिरोह वापस चले गये, लेकिन यह लोग डर रहे हैं और यूँ कह रहे हैं कि वह लोग अभी नहीं गये। यह गिरोह जा तो चुके हैं लेकिन अगर वापस आ जाएँ तो मुनाफ़िकीन ख़ौफ़ और बुज़्दिली की वजह से यूँ तमन्ना करने लगेंगे कि क्या ही अच्छा होता अगर हम देहात में चले

जाते और वहीं से मुसलमानों की ख़बरें मालूम करते रहते कि जंग का क्या अन्जाम हुआ।

وَلَوْ كُنَّا فِيكُمْ مَا فَتَنَّا إِلَّا الْقَلِيلَ ऐ मुसलमानों! यह मुनाफ़ि़क़ अगर तुम्हारे पास रह जाएँ तब भी तुम्हें फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते बस नाम के लिए ज़रा सी जंग कर लेंगे जिस से रियाकारी मक्सूद होगी, एक दो पत्थर फेंक कर कहेंगे कि हम ने भी तो जंग में शिरकत की थी।

21-22

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۖ وَلَبَّيَّا  
رَا الْمُؤْمِنُونَ الْإِحْرَابَ ۚ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَا زَادَهُمْ  
إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۚ

## मोमिनीन के लिए उस्वह

इन आयात में पहले तो अहले ईमान को तसल्ली दी गई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पैरवी करते रहें। ग़ज़्व-ए-अहज़ाब में भी सब को वही करना लाज़िम था जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किया, किसी को अपनी जान बचा कर चले जाना दुरुस्त नहीं था। इस में अहले ईमान को तअलीम फ़रमा दी कि जैसे अब रसूलुल्लाह (सल्ल०) का साथ दिया और पैरवी की उसी तरह आइन्दा भी आप की पैरवी करें और आप की ज़ाते गिरामी को अपने लिए उस्व-ए-हस्ना यानी अमली ज़िन्दगी का नमूना बनाएँ।

जो लोग अल्लाह से डरते हैं और आख़िरत के दिन की पेशी का यकीन रखते हैं उन्हें ऐसा ही होना चाहिए।

मोमिनीन की तअलीम के साथ ही मुनाफ़ि़कीन पर एतिराज़ भी है जिन्होंने ईमान का दावा करने के बावजूद राहे फ़रार को पसन्द किया और लोगों को ग़ज़्वा की शिरकत से रोका। बात यह है कि सिर्फ़ दावा कुछ काम नहीं देता, जब किसी काम का दावा करे तो उस को सच्चा कर दिखाये।

मुनाफ़ि़कीन दुनियावी फ़ायदे की बिना पर ईमान का दावा तो कर बैठे, जब आज़्माईश आई तो वादे को न निभा सके, उन के आ़माल व अक़्वाल से झूठा होना साफ़ तरीक़े पर स्पष्ट हो गया।

इस के बाद मोमिनीन सहाबा (रज़ि०) की तअरीफ़ फ़रमाई कि जब उन्होंने काफ़िरों के गिरोहों को देख लिया कि वह आपसी मश्वरा कर के आ गये हैं तो उन्होंने यूँ कहा:-

هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ (यह वह है जिस का अल्लाह ने और उस के रसूल ने वादा फ़रमाया था।)

यानी अहले ईमान की जाँच और इम्तिहान का जो कुर्आन करीम में कई जगह ज़िक्र है उसी में का एक यह भी इम्तिहान है।

दुश्मनों का आना ईमान वालों के लिए ईमान के बढ़ने और अल्लाह तअ़ाला के हुक्मों को ज़्यादा बशाशत के साथ तस्लीम करने का ज़रिया बन गई।

‘सूर: बकर:’ में इम्तिहान का ज़िक्र फ़रमाया है ‘वलानब्लुवन्नकुम बिशैइम् मिनल् खौफी वल् जूअी वनकूसिम मिनल् अम्वाल’ और सूर: आले इमरान में फ़रमाया है:-

أَمْحِبُّكُمْ أَنْ تُلَاحِظُوا الْجَنَّةَ وَلَبَّيَّا يَخْلُمُ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهِدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الظَّالِمِينَ और सूर: अन्कवूत में फ़रमाया है

الرَّحِيبِ النَّاسِ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا اللَّهُ وَهُوَ بَيْنَ يَدَيْهِمْ وَأَنْ بَيِّنُوا بَيْنَهُمْ أَوْ يَنْتَظِرُوا ۚ

आमनू मिन्कुम वलायअलमन्नल् मुनाफ़िक्कीन” इन आयत में स्पष्ट तौर पर बयान फ़रमा दिया कि अहले ईमान का इस्तिहान होगा और मोमिनीन व मुनाफ़िक्कीन अलग-अलग पहचान लिये जाएँगे।

इस के बाद उन मोमिनीन का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने ईमान वाले आ़म अहद और इक़्रार के अलावा भी कुछ अहद ज़ायद किया था, उन के लिए फ़रमाया कि बाज़ ने तो अपनी नज़र पूरी कर दी यानी मुआहिदा के मुताबिक़ जिहाद में शिरकत कर के शहीद हो गये। उन के बारे में قُضِيَ نَحْبُهُ फ़रमाया।

उन में से बाज़ वह हैं जो अभी इन्तिज़ार में हैं कि जब मौक़ा होगा अपनी जान को अल्लाह की राह में कुर्बान कर देंगे।

यहाँ मुफ़स्सिर-ए-किराम ने एक वाक़िआ नक़्ल किया है जो हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से मरवी है कि उन्होंने बयान किया कि मेरे चचा ने ‘हज़रत अनस बिन अल् नज़र’ (रज़ि०) ग़च्च-ए-बद्र में शिरकत से रह गये थे, उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह! आप का मुशिरकीन से जंग करने का यह पहला मौक़ा था जिस में मैं शरीक न हुआ। अब अगर अल्लाह तआला ने मुशिरकीन से जंग करने का मौक़ा दिया तो जान जोख़म में डालकर दिखा दूँगा।

जब ग़च्च-ए-उहद का मौक़ा आया तो यह उस में शरीक हो गये और मुसलमानों को जब ज़ाहिरी शिकस्त हो गई तो बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि ईमान वालों ने जो कुछ किया मैं उस से माफ़ी चाहता हूँ और मुशिरकीन ने जो कुछ किया मैं उस से माफ़ी चाहता हूँ। यह कहकर आगे बढ़े, मुशिरकीन की तरफ़ जा रहे थे कि रास्ते में हज़रत सअद बिन मआज़ (रज़ि०) से मुलाकात हो गई और उन से कहा मेरे रब की क़सम! मुझे उहद की ओर से जन्नत की खुशबू महसूस हो रही है, इसके बाद लड़ते-लड़ते शहीद हो गये।

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जब उन की नअश (शव) मिली चूँकि मुशिरकीन ने उन के नाक, कान काट दिये थे जिस से चेहरा बदल गया था, इसलिए उंगलियों के पोरों से उन की बहन ने उन्हें पहचाना। फिर देखा कि उन के जिस्म पर अस्सी से ज्यादा तलवार, नेज़ा और तीर के ज़ख़्म थे।

**23-25**

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رَجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّن قُضِيَ نَحْبُهُ وَمِنْهُمْ مَّن يَنْتَظِرُ ۚ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۚ لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصّٰدِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِينَ اِنْ شَاءَ اَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعٰثِمِ بْنِ أَبِيْهِمْ لَمَّا رَمَوْا خَيْْرًا ۚ وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝

यह आयत यानी مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رَجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ हज़रत अनस बिन नज़र और उन जैसे सहाबा के बारे में नाज़िल हुई। (अल् बग़वी फ़ी मुआलिमुल् तन्ज़ील भाग 3 पेज 520 व अल् बुख़ारी फ़ी किताबुल् तफ़सीर भाग 2 पेज 705 काला अनस बिन मालिक)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) ने जो यह फ़रमाया कि यह आयत अनस बिन नज़र और उन जैसे अस्हाब के बारे में नाज़िल हुई। उन अस्हाब के अस्मा-ए-गिरामी जो मुफ़स्सिर-ए-किराम ने लिखे हैं उन में

‘सय्यदुल् शोहदा हज़रत हम्ज़ह बिन अब्दुल् मुत्तलिब’ ‘हज़रत मुसअब बिन उमैर’ और ‘हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुम’ है और बाज़ रिवायात में यूँ है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो यह बात पसन्द करे कि किसी ऐसे शख्स को ज़मीन पर चलता फिरता देखे जिस ने अपनी नज़र पूरी कर दी तो वह तल्हा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि०) को देखे। (मुआलिमुल्लन्ज़ील)

हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि०) ग़ज़्व-ए-उहद और ग़ज़्व-ए-अहज़ाब में शहीद नहीं हुए थे, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें **مَنْ قُطِيَ نَجَبُهُ** का मिसदाक़ बताया, क्योंकि उन्होंने ग़ज़्व-ए-उहद के मौक़े पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दुश्मनों के तीरों से अपने हाथ के ज़रिये बचाया था यानी ढ़ाल की जगह अपने हाथों से काम लिया था जिस की वजह से उन का हाथ कट गया था और उन के जिस्म में सत्तर से कुछ ऊपर ज़ख़्म आ गये थे, अपनी तरफ़ से तो उन्होंने नज़र पूरी कर ही दी और शहीद होने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह दूसरी बात है कि अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दगी दी और जंगे जमल के मौक़े पर 30 हिज़्री में शहीद हुए।

सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) के दुश्मन ज़रा तो ग़ौर करें कि उन्होंने कैसी-कैसी कुर्बानियाँ दी हैं?

**وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا شَيْئًا**

और बाज़ वह हैं जो इन्तिज़ार कर रहे हैं और उन्होंने कुछ भी तब्दीली नहीं की।

यानी जो हज़रात अभी ज़िन्दा हैं और शहादत के मुन्तज़िर हैं वह अपने अहद पर कायम हैं अपने अज़्म को उन्होंने ज़रा भी नहीं बदला।

**يَجْزِي اللَّهُ الصّٰدِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبُ** (ताकि अल्लाह सच्चों को उन की सच्चाई का बदला दे) यानी ग़ज़्व-ए-अहज़ाब का वाकिआ इसलिए हुआ कि अल्लाह तआला सच्चे और मुख़्लिस मुसलमानों को उनके सच का बदला दे।

**وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ** (और चाहे तो मुनाफ़िक़ीन को सज़ा दे।)

**أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ** (या उन को तौब: की तौफ़ीक़ दे और वह तौब: कर के मुसलमान हो जाएँ और ज़माने कुफ़्र में जो उन्होंने हरकत की वह माफ़ हो जाए।)

**إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا** (बिलाशुब्हा अल्लाह ग़फ़ूर है रहीम है।)

**नोट-** **مَنْ قُطِيَ نَجَبُهُ** का एक तर्जुम: तो वही है जो ऊपर ज़िक्र किया कि अपनी नज़र पूरी कर दी और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि यह शब्द बतौर मिसाल के आता है और मतलब यह है कि अपने वादे के मुताबिक़ काम कर के दुनिया से चले गये। यह दूसरा मअना मुराद लेने में भी मतलब वही निकलता है कि वह अपना काम कर गुज़रे और दुनिया से चले गये।

फिर फ़रमाया:-

**وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَظِيمٍ** (कि काफ़िर लोग जो गुस्से में भरे हुए मदीना मुनव्वरह पर चढ़ कर आए थे, अल्लाह तआला ने उन्हें वापस लौटा दिया।)

لَمْ يَأْتِ الْخَبْرَ (उन्हें कोई ख़बर न मिली) यानी जिस फतेहयाबी (जीत) की उम्मीद पर गुस्सा में भरे हुए आये थे उस में भी कुछ भी न मिला और नाकाम व नामुराद वापस हुए।

وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ (और क़िताल की ओर से अल्लाह मोमिनीन के लिए काफी हो गया।) यानी मोमिनीन को जंग न करनी पड़ी, अल्लाह तआला ने सख्त तेज़ ठंडी हवा भेज दी जिस की वजह से दुश्मन भाग गये और मोमिनीन सही सालिम शहर मदीना में दाख़िल हो गये।

وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا (और अल्लाह कुव्वत वाला, ग़ालिब है) वह जिस तरह जिस की चाहे मदद फ़रमा दे, कोई उस का मुक़ाबिला नहीं कर सकता।



## आयत नं० 26 से 30 तक

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۖ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَّوُّهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۖ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَ أَمُرُّ بِالْحَبْلِ إِن كُنْتُمْ تُحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّغَتْهَا فَتَعَالَيْنِ أُمَتِّعْكُنَّ وَأَسْرِحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۖ وَإِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْآخِرَةَ فَلَا تَنْفِرُوا فِي اللَّهِ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنِينَ مِثْرًا عَظِيمًا ۖ لِيَسَاءَ النَّبِيُّ مَنْ يَأْتِ مِنْكُمْ بِفَاحِشَةٍ مُبِينَةٍ يُضَعَّفُ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۖ

### अनुवाद-

(26) और किताब वालों में से जिन लोगों ने उनकी मदद की थी, अल्लाह ने उनके किलों से उनको उतार दिया, और उनके दिलों में ऐसा रोअब (धाक) बिठा दिया, कि कितनों को तुम क़त्ल करते रहे और कितनों को तुम ने कैद कर लिया। (27) और 'उसने' तुम्हें उनकी ज़मीन, और उनके घरों, और उनके मालों का वारिस बना दिया, और उस ज़मीन का भी जिस पर तुमने अभी क़दम नहीं रखा, अल्लाह हर चीज़ पर कादिर (सामर्थ्यवान) है। (28) ऐ नबी! अपनी पत्नियों से कह दीजिए, "अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर अच्छे तरीके से विदा कर दूँ; (29) और अगर तुम अल्लाह और 'उसके' रसूल, और आखिरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से अच्छे काम करने वालियों के लिए बहुत बड़ा अज़्र (बदला) तैयार कर रखा है।" (30) ऐ नबी की पत्नियों! तुममें जो किसी खुली बेहयाई (अनुचित काम) में लगेगी उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा, और अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है;

## आयत नं० 26 से 30 तक की व्याख्या

26-27

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۖ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَّوُّهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۖ

### ग़दारी की सज़ा

जैसा कि पहले अज़्र किया गया कि मदीना मुनव्वरह में पहले से यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थे। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मक्का से हिज़रत कर के मदीना मुनव्वरह आये तो यहाँ के तमाम रहने वालों के दर्मियान एक मुआहिदा करवा दिया, जिस में खुद आप (सल्ल०) भी मुहाजिरीन व अन्सार के साथ शरीक थे और यहूदियों के तीनों क़बीलों को भी शरीक फ़रमा लिया था। इस मुआहिदे में जो बातें लिखी गई थीं उन में यह भी था कि आपस में जंग न करेंगे और यह कि मदीना मुनव्वरह पर कोई दुश्मन हमलाआवर होगा तो सब मिलकर मुकाबला करेंगे, उन में से बनू कैन्काअ ने तो ग़ज़्व-ए-बद्र के बाद ही इस अ़हद



को तोड़ दिया था जिस की सज़ा उन्हें मिल गई। इन के बाद कबीले बनू नज़ीर ने अहद तोड़ा जिन्हें 4 हिज़्री में मदीना मुनव्वरह से जिलावतन कर दिया गया और वह खैबर में जाकर आबाद हो गये और वहाँ बस जाने के बाद कुरैशे मक्का और बनू ग़ि़त्फ़ान वगैरहुम को मदीना मुनव्वरह पर हमला करने के लिए आमदा किया जिस के नतीजे में ग़ज़्व-ए-अहज़ाब पेश आया।

अब सिर्फ़ कबीला 'बनू कुरैज़ा' मदीना मुनव्वरह में बाकी रह गया जो अपने वादे पर कायम था।

जैसा कि पहले अर्ज़ किया गया 'बनू नज़ीर' को जब मदीना मुनव्वरह से जिलावतन कर दिया गया तो उन्होंने मक्का मुकर्रमा पहुँचकर कुरैशे मक्का और बनू ग़ि़त्फ़ान को रसूलुल्लाह (सल्ल०) के खिलाफ़ उभारा और मदीना मुनव्वरह पर हमला करने के लिए तैयार किया और यह अज़्म लेकर चले कि मुसलमानों को बिल्कुल ख़त्म ही कर देना है।

जिन यहूदियों ने कुरैशे मक्का और बनू ग़ि़त्फ़ान को इस के लिए तैयार किया था उन में 'हुवई बिन अख़्तब' भी था जो बनू नज़ीर का सरदार था, जब यह दुश्मनाने इस्लाम की जमाअतों को लेकर मदीना मुनव्वरह पहुँचा और ख़न्दक के बाहर पड़ाव डालना पड़ा तो वह मौक़ा पाकर बनू कुरैज़ा के सरदार 'कअब बिन अस्वद' के पास गया और उसे अहद शिकनी पर आमदा करने की कोशिश की।

### बनू कुरैज़ा का सरदार-

कअब बिन अस्वद ने पहले तो अपने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया और 'इब्ने अख़्तब' को अपने पास आने की इजाज़त न दी और यह कहकर अहद शिकनी से इन्कार कर दिया कि मुहम्मद (सल्ल०) से मेरा मुआहिदा है, मैंने उन की तरफ़ से वफ़ा-ए-अहद और सच्चाई के अलावा कुछ नहीं देखा, लिहाज़ा मैं अहद शिकनी नहीं करूँगा।

लेकिन इब्ने अख़्तब बराबर इस्सार करता रहा और बातें बनाता रहा, कअब बिन अस्वद ने कहा अच्छा अगर कुरैशे मक्का और 'बनू ग़ि़त्फ़ान' नामुराद होकर वापस हो गये और मुहम्मद (सल्ल०) सही सालिम मदीना मुनव्वरह में रह गये तो तेरा और हमारा क्या मामला बनेगा? इब्ने अख़्तब ने कहा कि मैं तेरे साथ तेरे क़िले में दाख़िल हो जाऊँगा फिर जो तेरा हाल बनेगा मैं भी उसी में तेरा साथी रहूँगा। यह बात सुनकर 'कअब बिन अस्वद' ने मुआहिदा तोड़ दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जो मुआहिदा किया था, उस से बरी हो गया।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस की ख़बर मिली तो आप ने हज़रत 'सअद बिन मआज़' सअद बिन उबादह, अब्दुल्लाह बिन रवाहा और इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को भेजा कि जाओ तहक़ीक़े हाल (जाँच पड़ताल) करो। यह हज़रात बनू कुरैज़ा पहुँचे तो देखा कि वह वाकई अहद तोड़ चुके हैं, उन हज़रात ने वापस आकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अस्ल सूरतेहाल की खबर दी। इस के बाद जब कुरैशे मक्का और बनू ग़ि़त्फ़ान वगैरहुम नाकाम वापस चले गये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) शहर मदीना मुनव्वरह में वापस तशरीफ़ ले आए और हथियार रखकर गुस्ल फ़रमा लिया तो हज़रत जिब्रईल (अलै०) हाज़िरे

खिद्मत हुए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप (सल्ल०) ने हथियार रख दिये? आप ने फरमाया हँ, हज़रत जिब्रैल (अलै०) ने अर्ज किया, अल्लाह की कसम हम ने तो हथियार नहीं रखे, अल्लाह तआला आप को हुक्म फरमाता है कि आप बनू कुरैज़ा की तरफ़ रवाना हो जाएँ मैं भी उन की तरफ़ जा रहा हूँ मैं उन के क़िलों में ज़लज़ला दूँगा।

### अस्र की नमाज़-

इस के बाद हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) बनू कुरैज़ा की तरफ़ रवाना हो गये और मुसलमानों के पास ख़बर भेज दी कि बनू कुरैज़ा की तरफ़ रवाना हो जाएँ और वहीं जाकर अस्र की नमाज़ पढ़ें। हज़रत सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) रवाना हुए। बाज़ ने यह समझकर रास्ते में अस्र की नमाज़ पढ़ी कि वक़्त ख़त्म हो रहा है, उन्होंने आप के इर्शाद का यह मतलब समझा कि नमाज़ पढ़ ली जाए ताकि नमाज़ क़ज़ा न हो और बाज़ हज़रत ने नमाज़ क़ज़ा कर दी और वहीं जाकर पढ़ी, उन हज़रत ने ज़ाहिर हुक्म को देखा और अपनी तरफ़ से इस का कोई मतलब बयान नहीं किया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दोनों जमाअतों में से किसी को भी मलामत नहीं की।

इस से उलमा ने यह लिया है कि मुजतहदीन (रिसर्च स्कालर) का इख़्तिलाफ़ (जो इज्तिहाद की सलाहियत रखते हों) इन्कारी नहीं है। हर मुजतहद (रिसर्च स्कालर) को अपने-अपने इज्तिहाद (रिसर्च) पर अमल करने में सवाब मिलता है।

### बनू कुरैज़ा का कबीला-

बनू कुरैज़ा का कबीला मदीना मुनव्वरह से बाहर तीन चार मील के फ़ासले पर रहता था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) और हज़रत सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन उन के इलाक़ों में पहुँच गये और वह लोग क़िला बन्द हो गये, आप (सल्ल०) ने पच्चीस दिन तक उन का मुहासिरा फरमाया, यह मुहासिरा उन के लिए मुसीबत बन गया उन से 'कअब बिन अस्वद' ने कहा कि देखो! मैं तुम पर तीन बातें पेश करता हूँ जिस को चाहो कुबूल कर लो।

### पहली बात-

पहली बात तो यह है कि हम सब मिलकर मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान ले आएँ और आप की तस्दीक़ कर लें। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तुम पर यह बात खुल चुकी है कि यह वाकई नबी और रसूल हैं और उन की शख्सियत वही है जिन का तुम अपनी किताब यानी तौरेत शरीफ़ में ज़िक्र पाते हो। अगर ऐसा कर लोगे तो तुम्हारी जानें, तुम्हारी औलाद, तुम्हारी औरतें और तुम्हारे माल सब महफूज़ हो जाएँगे, यह सुनकर वह लोग कहने लगे कि हम अपना दीन नहीं छोड़ सकते।

### दूसरी बात-

कअब बिन अस्वद ने कहा कि अगर तुम इस राय को कुबूल नहीं करते तो दूसरी राय यह है कि

सब अपने बीवी बच्चों को क़त्ल कर दें और मुहम्मद (सल्ल०) और उन के अस्हाब की तरफ़ नंगी तल्वारें निकाल कर निकल जाएँ, फिर अल्लाह का जो फैसला हो वह हो जाएगा।

अगर हम सब हलाक हो गये तो बाल बच्चों की तरफ़ से कोई फ़िक्र न रहेगी और अगर हम ने गुल्बा पा लिया तो औरतें मिल जाएँगी और औलाद भी पैदा हो जाएगी। यह बात सुनकर उस की कौम के लोग बोले कि इन मिस्कीनों को अगर हम क़त्ल कर दें तो उन के बाद ज़िन्दगी का क्या मज़ा है?

### तीसरी बात-

कअब बिन अस्वद ने कहा कि तीसरी सूरत यह है कि आज **ليلة السبت** यानी सनीचर की रात है, कितों से उतरकर हम मुहम्मद (सल्ल०) और उन के साथियों पर चुपके से हमला कर दें, हो सकता है कि यह समझ कर हमारे हमले से गाफ़िल हों कि आज 'लैलतुस्सब' (सनीचर की रात) है हम उन पर हमला न करेंगे। कअब बिन अस्वद की यह राय भी उन की कौम ने कुबूल नहीं की और कहने लगे कि हम सनीचर के दिन को क्यों ख़राब करें।

इस के बाद बनू कुरैज़ा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में पैग़ाम भेजा कि हमारे पास अबू लुबाबा (रज़ि०) को भेज दीजिए। यह अन्सारी सहाबी थे, उन का कबीला ज़माने जाहिलियत में बनू कुरैज़ा का हामी था। यहूद बनू कुरैज़ा ने उन्हें मश्वरह लेने के लिए तलब किया, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें भेज दिया। जब यहूद की उन पर नज़र पड़ी तो उनकी औरतें और बच्चे अबू लुबाबा के सामने रोने लगे,

यहूदियों ने उन से मश्वरह लिया कि आप की क्या राय है? क्या हम मुहम्मद (सल्ल०) के फैसले पर क़िले से नीचे उतर आएँ?

हज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०) ने राय दी कि हाँ, उतर आओ और साथ ही अपने हलक़ की तरफ़ इशारा कर दिया यानी यह बता दिया कि तुम ज़ब्र कर दिये जाओगे, इशारा तो कर दिया लेकिन उसी वक़्त दिल में यह बात आ गई कि मैंने अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्ल०) की ख़यानत की है, यह सोचा और सीधे मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए और मस्जिद के एक सुतून से अपने को बाँध लिया और कहने लगे कि मैं इस जगह से नहीं टलूँगा जब तक अल्लाह मेरी तौब: कुबूल न फ़रमाये।

### अबू लुबाबा का वाक़िया

मुफ़स्सिरिन ने फ़रमाया है कि सूर: अन्फ़ाल की आयत **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْمِلُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَكُلَّوْا أَمْوَالَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ** का सबबे नुज़ूल हज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०) ही का वाक़िआ है।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में पहुँचने में देर हुई और आप (सल्ल०) को मालूम हुआ कि ऐसा वाक़िआ पेश आया है तो आप ने फ़रमाया, अगर वह मेरे पास आ जाता तो मैं उस के लिए अल्लाह से इस्तिफ़ार कर देता, अब उस ने अपना मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दिया है तो अब मैं नहीं खोलूँगा जब तक अल्लाह तआला उस की तौब: कुबूल न फ़रमाए।

छ: दिन तक वह सुतून से बंधे रहे, हर नमाज़ के वक़्त उन की बीवी आती थी और नमाज़ के लिए

खोल देती थी। नमाज़ से फ़ारिग होकर वह फिर अपने आप को सुतून से बाँध लेते थे। अल्लाह तआला ने उन की तौबः के बारे में सूरः तौबः की आयत नं० (102) में फरमाया:-

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَأَصْلَحُوا وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَسْجِدٌ قَبْلَ ذَلِكَ وَلَهُمْ آيَاتُنَا عَظِيمَةٌ

जब उन के तौबः की कुबूलियत का एलान हो गया (जो सुबह के वक़्त हुआ था) तो लोग उन्हें खोलने के लिए दौड़े, उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे हाथों से नहीं खुलूँगा, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ही खोलेंगे तभी मैं खुलना मन्ज़ूर करूँगा। फिर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) नमाज़े फ़ज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए तो उन को खोल दिया।

बनू कुरैज़ा लम्बे मुहासिरा से बिलूबिला उठे और उन्होंने यकीन कर लिया कि अब मुक़ाबिला का कोई रास्ता नहीं, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के फैसले पर राज़ी हो गये यानी यह कहलवा भेजा कि आप जो भी फैसला फ़रमाएँ हमें मन्ज़ूर है।

जब वह लोग आप (सल्ल०) के फैसले पर राज़ी हो गये तो कबीले अवस के लोग आगे बढ़े (जो अन्सार में से थे) उन्होंने अर्ज किया, कि यह हमारे हामी थे उन का मुआहिदा हमारे सुपुर्द फ़रमा दीजिए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या इन का फैसला तुम ही में से एक शख्स के सुपुर्द न कर दूँ? कहने लगे कि जी ठीक है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मैं इन का फैसला सअद बिन मुआज़ (रज़ि०) के सुपुर्द करता हूँ। (हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कबीले बनू औस के सरदार थे।)

पहले गुज़र चुका है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) दुश्मनों के मुक़ाबिले में अपने सहाबा (रज़ि०) के साथ हब्ले सलअ (नामी जगह) के करीब थे और मुक़ाबिला लगभग एक माह तक था, उस वक़्त हज़रत सअद बिन मआज़ (रज़ि०) की एक रग में (जिसे अरबी में अकहल कहते हैं) एक तीर आकर लगा जिस की वजह से उन को तकलीफ़ हो गई, उन्होंने महसूस कर लिया था कि यह हुक्म जानलेवा साबित हो सकता है, लिहाज़ा उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! मुझे उस वक़्त तक मौत न दीजिए जब तक बनू कुरैज़ा का अन्जाम देखकर मेरी आँखें ठंडी न हो जाएँ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें 'रफीदह' नामी एक औरत के ख़ेमे में ठहरा दिया, जब आप ने उन को बनू कुरैज़ा का फैसला सुपुर्द फ़रमा दिया तो हज़रत सअद (रज़ि०) को बुलाया। जब वह हाज़िर हुए तो आप (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, उन को आता देखकर फ़रमाया कि अपने सरदार के लिए खड़े हो जाओ (चूँकि वह मरीज़ थे और उन्हें सवारी से उतारने की ज़रूरत थी, इसलिए आप (सल्ल०) ने खड़े होने का और उन की मदद करने का हुक्म फ़रमाया।) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन से फ़रमाया, कि यहूदी बनू कुरैज़ा तुम्हारे फैसले पर राज़ी हो गये हैं (राज़ी तो हुए थे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के फैसले पर, फिर जब अन्सार के कबीले बनू औस ने कहा कि उन का मामला हमारे सुपुर्द कर दीजिए तो आप (सल्ल०) ने सअद बिन मआज़ (रज़ि०) के सुपुर्द फ़रमा दिया। इस से यहूद भी खुश हुए क्योंकि यह उन के करीबी थे और खुद उन के अपने कबीले के लोग भी खुश हुए और इन से कहते रहे कि अपने लोगों के बारे में अच्छा फैसला करना।)

## फैसला-

हज़रत सअद बिन मआज़ (रज़ि०) ने अपना फैसला सुना दिया कि जो लोग जंग करने के लायक हैं उन सब को क़त्ल कर दिया जाए और माल तक्सीम कर दिया जाए और उन के बच्चों और औरतों को कैदी बना लिया जाए। जब उन्होंने अपना यह फैसला दे दिया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम ने वह फैसला किया है, जो अल्लाह तआला का फैसला है।

इस के बाद मदीना मुनव्वरह में ख़न्दकें खोदी गईं, बनू कुरैज़ा की जमाअतें वहाँ पहुँचाई जाती रहीं और उन की गर्दनें मारी जाती रहीं, उन मक्तूलीन में 'हुवई बिन अख़्तब' भी था और 'कअब बिन अस्वद' भी, जो बनू कुरैज़ा का सरदार था जिस ने बनू कुरैज़ा पर तीन बातें पेश की थीं, उस की पेशकश पर क़ौम मुसलमान न हुई तो उस ने भी इस्लाम कुबूल न किया।

याद रहे कि 'हुवई बिन अख़्तब' वही शख्स है जो अपने साथियों को लेकर मक्का पहुँचा था और कुरैशे मक्का और 'बनू ग़िफ़ान' को मदीना पर चढ़ाई करने पर आमादह किया था और उसी ने 'कअब बिन अस्वद' को अहद तोड़ने पर आमादह किया था और आख़िर में यूँ कहा था कि अगर इन लोगों को शिकस्त (पराजय) हुई तो मैं भी तेरे साथ क़िले में दाख़िल हो जाऊँगा और जो मुसीबत तुम लोगों को पहुँचेगी मैं भी उस में शरीक रहूँगा। इसी अहद (प्रतिज्ञा) की वजह से वह वापस ख़ैबर आ गया जहाँ बनू नज़ीर को जिलावतन कर दिया गया था और बनू कुरैज़ा के साथ यह भी मक्तूल हुआ। यह शख्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बीवी हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का बाप भी था, जिन्हें 7 हि० में ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर कैद कर के लाया गया था।

'बनू कुरैज़ा' की केवल एक औरत को क़त्ल किया गया और बाक़ी जो मक्तूलीन थे हज़रत 'सअद बिन मआज़' (रज़ि०) के फैसले के मुताबिक़ सब मर्द थे, जिस औरत को क़त्ल किया गया उस ने हज़रत 'ख़ालिद बिन स्वाद' (रज़ि०) पर चक्की का पाट गिरा दिया था जिस की वजह से वह शहीद हो गये थे। 'बनू कुरैज़ा' में से हज़रत 'अतिया क़र्ज़ी' को भी क़त्ल नहीं किया गया, क्योंकि वह उस वक़्त बालिग़ नहीं हुए थे।

फैसला यह हुआ कि जिस के ज़ेरे नाफ़ बाल निकल आये हों उसे बालिग़ समझा जाए और क़त्ल कर दिया जाए और जिस के बाल न निकले हों उसे क़त्ल न किया जाए। हज़रत अतिया क़र्ज़ी (रज़ि०) ने बताया कि मेरे बाल निकलने की जगह पर नज़र डाली गई तो देखा कि मेरे बाल नहीं निकले हैं, लिहाज़ा मुझे छोड़ दिया गया और कैदियों में शामिल कर दिया गया। यह बात उन्होंने इस्लाम कुबूल करने के बाद बताई थी। बनू कुरैज़ा के कितने लोग क़त्ल किये गये? इस में तीन क़ौल हैं। (1) छः सौ (2) सात सौ (3) आठ और नौ सौ के दर्मियान।

यहूद में से कुछ ऐसे लोगों ने भी इस्लाम कुबूल किया जो न 'बनू कुरैज़ा' में से थे और न 'बनू नज़ीर' में से थे। जिस रात 'बनू कुरैज़ा' ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के फैसले पर राज़ी होने का एलान किया उसी वक़्त यह लोग मुसलमान हुए। उन के नाम यह हैं सअल्बा बिन सअीद, असद बिन सईद, असद बिन उबैद, यह लोग बनू अद्ल में से थे।

## बनू कुरैज़ा का फैसला-

बनू कुरैज़ा के मर्दों को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़त्ल फ़रमा दिया, उन के माल, उन की औरतों और बच्चों को माले ग़नीमत बनाकर मुजाहिदीन में तक्सीम फ़रमा दिया और उन के माल से खुम्स यानी 1/5 हिस्सा निकाल दिया जैसा कि माले ग़नीमत तक्सीम करने का तरीका है। 'बनू कुरैज़ा' में से जिन बच्चों और औरतों को कैदी बनाया था उन में से बाज़ को नन्द की तरफ़ भेज दिया। हज़रत 'सअद बिन ज़ैद अन्सारी' (रज़ि०) आप (सल्ल०) के हुक्म से उन्हें ले गये और उन्हें बेच कर घोड़े और हथियार ख़रीद लिये, ताकि जिहाद में मुसलमानों के काम आएँ।

बनू कुरैज़ा का मामला ख़त्म हुआ यानी उन्हें क़त्ल कर दिया गया और हज़रत सअद बिन मअज़ (रज़ि०) का ज़ख़्म बढ़ता रहा और ख़ून बहता रहा जो उन की मौत का ज़ाहिरी सबब बन गया। चूँकि यह ज़ख़्म उन्हें जिहाद के मौके पर तीर लगने की वजह से आ गया था, इसलिए उन की यह मौत शहादत की मौत हुई।

हज़रत सअद (रज़ि०) का जिस्म भारी था, जब उन का जनाज़ा उठा कर ले जाने लगे तो हल्का महसूस हुआ। बाज़ लोगों ने कहा कि इस शख्स का बदन तो भारी था जनाज़ा इतना हल्का क्यों है? यह बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पहुँची तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, जनाज़े को उठाने वाले तुम्हारे अलावा दूसरी मख़्लूक भी थी। कसम है उस ज़ात की जिस के कब्जे में मेरी जान है, फ़रिश्तों को सअद (रज़ि०) की रुह पहुँचाने पर खुशी हुई और उन के लिए अर्श भी हिल गया।

## हज़रत सअद बिन मअज़ की वफ़ात-

हज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान किया है कि हम सअद बिन मअज़ (रज़ि०) की वफ़ात के मौके पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ ख़ाना हुए, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। फिर जब उन्हें दफ़न कर दिया गया तो आप (सल्ल०) ने देर तक तस्बीह कही, फिर तक्बीर कही, इस पर हम ने भी तक्बीर कही और अर्ज किया, कि आप ने पहले तस्बीह कही, फिर तक्बीर कही इस की क्या वजह थी?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, इस नेक बन्दे पर इस की क़ब्र तंग हो गई थी (मैं बराबर तस्बीह पढ़ता रहा यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने इस की मुश्किल दूर फ़रमा दी और हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह वह शख्स है जिस के लिए अर्श हरकत में आ गया और आसमान के दरवाज़े खोले गये और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाज़िर हुए, क़ब्र में उन को कुछ दबा दिया गया फिर तक्लीफ़ दूर कर दी गई। (जब हज़रत सअद बिन मअज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़मीन ने दबाया जो शहीद हो गये थे तो दूसरे लोग अपने बारे में क्या ख़याल करते हैं जो नमाज़ नहीं पढ़ते और गुनाहों में लतपत हैं।)

यह सीरत इब्ने हिशाम से लिया गया है।

मुम्किन है बाज़ लोगों को यह सवाल पैदा हो कि बनू कुरैज़ा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ जो



मुआहिदा कर रखा था उसे उन्होंने तोड़ दिया था जिस की सज़ा पाई, लेकिन अबू सुफ़यान ने फ़रार का रास्ता अख़्तियार करते हुए यह क्यों कहा कि कुरैश के साथ जो वादा किया था बनू कुरैज़ा उस वादे को तोड़ चुके हैं।

हालांकि **مِنْ قَوْمِكُمْ** की तफ़्सीर में यह बताया गया है कि ऊपर की ओर से बनू कुरैज़ा आ गये थे और उन लोगों को हुवई बिन अख़्तब ने अपने साथ मिलाने और मुसलमानों से जंग करने पर आमदा कर लिया था। इस से मालूम होता है कि बनू कुरैज़ा कुरैश के साथ थे।

इस का जवाब यह है कि बनू कुरैज़ा से कुरैशे मक्का के साथ जंग में शरीक होने का वादा तो कर लिया था, लेकिन नुऐम बिन मसऊद (रज़ि०) की एक तद्बीर से बनू कुरैज़ा मुशिरकीने मक्का और उन के साथियों की मदद से भी फिर गये थे।

हुआ यह कि नुऐम बिन मसऊद (रज़ि०) ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! मैंने इस्लाम कुबूल कर लिया है, लेकिन मेरी कौम को इस का पता नहीं है, आप मुझे जो हुक्म फ़रमाएँ मैं हाज़िर हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, कोई ऐसी सूरत निकालो जिस से यह जमाअतें एक दूसरे की मदद से अलग हो जाएँ।

हज़रत नुऐम बिन मसऊद (रज़ि०) बनू कुरैज़ा के पास गये, जाहिलियत में उन के साथ बैठना उठना था, उन से कहा कि तुम्हें मालूम है मेरी तुम्हारी कैसी दोस्ती है और कैसे खुसूसी तअल्लुकात हैं? बनू कुरैज़ा ने जवाब में कहा कि वाकई तुम हमारे दोस्त हो, हम इस बात को मानते हैं।

इस पर उन से फ़रमाया, देखो! कुरैश और बनू ग़त्फ़ान तुम्हारी तरह से नहीं हैं तुम शहर मदीना में रहते हो। इस में तुम्हारे अमवाल हैं, बच्चे हैं, औरतें हैं, इस शहर को छोड़कर तुम कहीं नहीं जा सकते, रहे कुरैश और बनू ग़त्फ़ान सो वह मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जंग करने आये हैं और तुम उन की मदद कर रहे हो।

अब देखो! बात यह है कि उन्हें अगर मौका मिल गया तो गुल्बा पा लेंगे और अगर शिकस्त हो गई तो चले जाएँगे। इस के बाद तुम बेयार व मदद्गार रह जाओगे और मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुकाबिला करने की तुम में ताक़त नहीं है, लिहाज़ा मेरी राय यह है कि तुम कुरैश मक्का से यूँ कहो कि तुम लोग अपने सरदारों को बतौर रहन हमारे साथ छोड़ दो।

इस का फ़ायदा यह होगा कि वह लोग तुम्हें छोड़कर भाग न सकेंगे, उन्हें अपने आदमियों की फ़िक्र होगी, यह बात सुनकर 'बनू कुरैज़ा' ने कहा वाकई तुम्हारी राय तो ठीक है।

इस के बाद 'नुऐम बिन मसऊद' (रज़ि०) कुरैश के पास गये और उन से कहा कि क्या तुम्हें पता है कि यहूदी इस बात पर पछता रहे हैं कि उन्होंने तुम्हारा साथ देने का वादा कर लिया है और मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ जो मुआहिदा था वह तोड़ दिया? अब उन्होंने मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास ख़बर भेजी है कि आप हम से इस बात पर राज़ी हो जाएँ कि हम 'कुरैश' और 'बनू ग़त्फ़ान' के सरदारों पर कब्ज़ा कर के आप के पास भेज दें और आप उन की गर्दनें मार दें। इस के बाद हम आप के साथ मिलकर उन लोगों को बिल्कुल ही ख़त्म कर देंगे

और साथ ही 'कुरैश' और 'बनू ग़ित्फ़ान' से यह भी कहा कि देखो! अगर यहूदी तुम से यह मुताल्बा करें कि बतौर रहन हमें अपने आदमी दे दो तो तुम बात मत मानना और उन्हें अपना एक आदमी भी न देना। फिर हज़रत नुऐम बिन मसऊद (रज़ि०) बनू ग़ित्फ़ान के पास आये और उन से भी यही कहा कि देखो! तुम्हारे सरदारों में से यहूदी बतौर रहन कुछ लोग तलब करेंगे, तुम अपना एक शख्स भी उन के हवाले न करना।

इस के बाद 'अबू सुफ़्यान' और 'बनू ग़ित्फ़ान' के चौधरियों ने 'बनू कुरैज़ा' के पास 'इकिरमा बिन अबी जहल' को कुरैश व ग़ित्फ़ान के चन्द लोगों के साथ पैग़ाम देकर भेजा, उन्होंने यहूद से कहा कि देखो! हमारे ठहरने का मौक़ा नहीं रहा, हमारे पास जो ऊँट और घोड़े थे वह हलाक हो चुके हैं, आओ सुबह सुबह सब मिलकर अचानक मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर हमला कर दें और मामले को निपटा दें। यहूदियों ने जवाब में कहा कि हम उस वक़्त तक तुम्हारा साथ नहीं देंगे जब तक तुम अपने कुछ आदमी बतौर रहन हमें न दे दो।

जब तुम्हारे आदमी हमारे साथ होंगे तो हमें भरोसा रहेगा, हमें डर है कि तुम लोग लड़ाई में शिकस्त खा गये तो हमें छोड़कर अपने शहरों को भाग जाओगे।

जब यह लोग 'बनू कुरैज़ा' का जवाब लेकर कुरैश और 'बनू ग़ित्फ़ान' के पास वापस पहुँचे तो कहने लगे कि वाकई तुम 'नुऐम बिन मसऊद' (रज़ि०) ने सच कहा था कि 'बनू कुरैज़ा' तुम से बतौर रहन आदमी तलब करेंगे, इस पर कुरैश और 'बनू ग़ित्फ़ान' ने बनू कुरैज़ा को जवाब भिजवा दिया कि हम अपना एक शख्स भी तुम्हें नहीं देंगे, लिहाज़ा 'बनू कुरैज़ा' ने जवाब दे दिया कि हम इस के बग़ैर मुहम्मदुरसूलुल्लाह से जंग नहीं कर सकते। इसलिए अब सूरतेहाल यह पैदा हो गई कि 'बनू कुरैज़ा' ने वह मुआहिदा भी तोड़ दिया जो रसूलुल्लाह से कर रखा था और 'कुरैश' व 'बनू ग़ित्फ़ान' की मदद से भी अलग हो गये और इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से भी न बच सके।

हज़रत 'नुऐम बिन मसऊद' (रज़ि०) की यह तद्बीर इब्ने हिशाम (रह०) ने लिखी है और हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) ने भी 'अल् बिदाया वल् निहाया' में इस को ज़िक्र किया है।

قوله تعالى (مِنْ صَيَاصِيهِمْ) اى من حصونهم جمع صيصية وهى كل ما يمتنع و يقال  
لقرن الثور والظباء ولشوك الديك التى فى رجله كالقرن الصغير، وتطلق  
الصياصى على الشوك الذى للنساجين من حديد (रुहुल् मअानि)

28-30

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُنَّ تُحِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنْتَهَا فَمَعَالَيْنَ أُمَتِّعَنَّ  
وَإَسْرَحَنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۚ وَإِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ  
أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ مَن يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُضَاعَفْ  
لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

## खर्चे की माँग

आयते करीमा **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ** से **أَجْرًا عَظِيمًا** तक का सबवे नुज़ूल मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने यह लिखा है कि एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज्वाज़े मुतहहरात (रज़ि०) ने आप (सल्ल०) से कुछ ज़्यादा खर्चा की दरखास्त की, उस वक़्त आप (सल्ल०) की नौ बीवियाँ थीं।

- (1) हज़रत आइशा बिनते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा
- (2) हज़रत हफ़सा बिनते उमर रज़ियल्लाहु अन्हा
- (3) हज़रत उम्मे हबीबा बिनते अबी सुफ़सान रज़ियल्लाहु अन्हा
- (4) हज़रत उम्मे सल्मा बिनते अबी उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हा
- (5) हज़रत सौदह बिनते ज़मअ रज़ियल्लाहु अन्हा
- (6) हज़रत ज़ैनब बिनते जुहश रज़ियल्लाहु अन्हा
- (7) हज़रत मैमूना बिनते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा
- (8) हज़रत सफ़िया बिनते हुर्द बिन अबी अख़्तब रज़ियल्लाहु अन्हा
- (9) हज़रत जुवैरिया बिनत हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं कि “हज़रत उमर (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के यहाँ आये और इजाज़त चाही। आप ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दे दी, हज़रत उमर (रज़ि०) ने देखा कि आप (सल्ल०) के पास आप की बीवियाँ ग़मगीन और ख़ामोश बैठी हुई हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह मेरे गिर्द बैठी खर्च का मुताल्बा कर रही है जैसा कि तुम देख रहे हो। फिर आप (सल्ल०) ने उन से (दो महीने के लिए) अलैहिदगी अख़्तियार कर ली।” (बुख़ारी)

## खर्चे का मुताल्बा (माँग)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उन का यह मुताल्बा अच्छा न लगा (वह सय्यदुल अव्वलीन वल् आख़िरीन (सल्ल०) की बीवियाँ थीं उन्हें आप (सल्ल०) के साथ सब्र व शुक्र तो था, मगर बाज़ मर्तबः फ़ाका की नौबत आ जाती और खर्चे का सवाल ज़बान पर आ जाता था।) जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) से उन्होंने खर्चे का सवाल किया तो आप ने क़सम खा ली कि एक महीने तक उन के पास नहीं जाऊँगा।

हज़रात सहाबा में यह मशहूर हो गया कि आप (सल्ल०) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है, इस पर हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मैं इस की ख़बर लाता हूँ, उन्होंने ख़िद्मते आली में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, कि या रसूलुल्लाह! मैं मस्जिद में गया तो देखा कि वहाँ मुसलमान मौजूद हैं और यूँ कह रहे हैं कि आप (सल्ल०) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मैंने तलाक़ नहीं दी।

## तलाक़ नहीं-

अर्ज़ किया तो क्या मैं मुसलमानों को यह बात बता दूँ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया चाहो तो बता दो। हज़रत उमर (रज़ि०) ने मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर पुकार कर ए़लान कर दिया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी बीवियों को तलाक़ नहीं दी।

जब उन्तीस दिन गुज़र गये तो यह आयत यानी **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّلزَّوَاجِ** नाज़िल हुई, जिस में अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप अपनी बीवियों से फ़रमा दीजिए कि अगर तुम दुनिया चाहती हो तो मैं तुम्हें दुनिया का सामान दे देता हूँ और साथ ही तुम्हें बेहतर तरीके से छोड़ दूँगा यानी अपने निकाह में नहीं रखूँगा।

और अगर तुम अल्लाह को और उस के रसूल को चाहती हो और आख़िरत की तलबगार हो तो समझ लो कि अल्लाह ने नेक काम करने वाली औरतों के लिए अज़्रे अज़ीम तैयार फ़रमाया है यानी नबी अकरम (सल्ल०) के साथ ज़िन्दगी गुज़ारती रहो, अच्छे आ़माल करती रहो तुम्हें अल्लाह तआला अज़्रे अज़ीम अता फ़रमाएगा। (इस सूरत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की जुदाई का कोई मस्ला नहीं)

जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप (सल्ल०) ने आयते शरीफ़ा के मुताबिक़ अपनी बीवियों को अख़्तियार दे दिया कि अगर चाहो तो दुनिया का सामान ले लो और साथ यह समझ लो कि मैं तुम्हें तलाक़ दे दूँगा और अगर चाहो तो मेरे ही पास रहो, लेकिन ऐसी सूरत में जितना खर्च माँग रही हो उस का कोई वादा नहीं। हाँ, यह वादा है कि नेक काम करती रहोगी तो अल्लाह तआला की तरफ़ से अज़्र अज़ीम दिया जाएगा।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पहले हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि मैं तुम्हारे सामने एक बात पेश करता हूँ, जब तक अपने माँ-बाप से मश्वरा न कर लो जवाब देने में जल्दी न करना। (आप (सल्ल०) को मालूम था कि उन के वालिद उन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जुदा होने का मश्वरा नहीं दे सकते थे) यह फ़रमाकर आप (सल्ल०) ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दोनों आयतें सुना दीं जिन में अख़्तियार देने की बात कही गई है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बहुत समझदार और मिज़ाज समझाने वाली थीं, फ़ौरन अर्ज़ किया, क्या मैं आप (सल्ल०) के बारे में अपने माँ बाप से मश्वरा लूँगी?

मैं अल्लाह और उस के रसूल को और आख़िरत को अख़्तियार करती हूँ और साथ ही यूँ भी अर्ज़ किया कि आप (सल्ल०) दूसरी बीवियों में से किसी को मेरे जवाब को न बताएँ।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया बिलाशुब्हा अल्लाह तआला ने मुझे तकलीफ़ में डालने वाला और तकलीफ़ में पड़ने वाला बनाकर नहीं भेजा, मुझे तो सिखाने वाला और सहूलत का तरीका बताने वाला बनाकर भेजा है। इस के बाद आप ने बाकी आठ अज़्वाजे मुतहहरात के सामने भी आयत का मज़मून पेश फ़रमाया उन सब ने भी यही जवाब दिया कि हम अल्लाह को, उस के रसूल को और आख़िरत को अख़्तियार करती हैं।

जब उन्तीस दिन गुज़र गये तो आप (सल्ल०) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले

गये, उन्होंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह! आप ने तो यह कसम खाई थी कि पूरे एक माह हमारे यहाँ तशरीफ़ नहीं लाएँगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह महीना उन्तीस दिन का था, उन्तीस दिन गुज़र गये नया महीना शुरू हो गया।

जब आप की तमाम बीवियों ने अल्लाह, उस के रसूल को और आख़िरत को अख़्तियार कर लिया तो आप के चेहरे पर खुशी के अनवर ज़ाहिर हो गये और आप (सल्ल०) ने उन की क़द्रदानी फ़रमाई।

(मुअलिमुल् तन्ज़ील भाग 3 पेज नं० 525, 526 सहीह बुख़ारी भाग 2 पेज 705, सहीह मुस्लिम पेज 480 ता 482)

**नोट-** बीवी को अगर तलाक़ का अख़्तियार दिया जाए तो उस की दो सूरतें हैं, एक यह कि तलाक़ का अख़्तियार औरत के सुपर्द कर दिया जाये, अगर वह चाहे तो अपने ऊपर तलाक़ दे कर आज़ाद हो जाये और दूसरी सूरत यह है कि मर्द तलाक़ को अपने ही हाथ में रखे और औरत से यूँ कहे कि अगर तू चाहे तो मैं तुझे तलाक़ दे दूँ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जो अपनी बीवियों को अख़्तियार दिया था वह यही दूसरी सूरत थी यानी बतौर मश्वरा एक बात पेश फ़रमाई थी। बाज़ लोगों ने फ़रमाया है कि आयत में दोनों बातें हैं, हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हमें अख़्तियार दिया था, हम ने आप (सल्ल०) के साथ रहना मन्ज़ूर कर लिया और आप की ज़ौजियत अख़्तियार कर ली और आप (सल्ल०) का अख़्तियार दे देना किसी भी तलाक़ में शुमार नहीं किया गया। चारों इमामा का यही मज़हब है कि केवल अख़्तियार दे देने से तलाक़ वाक़ेअ नहीं होती।

‘सहीह मुस्लिम’ में अख़्तियार को तलाक़ में शुमार नहीं किया है। इस में इमाम नब्वी (रह०) लिखते हैं:-

فی هذه الاحادیث دلالة لمذهب مالک والشافعی وابی حنیفة واحمد  
وجماهير العلما. زوجته فاخترته لم یکن ذلك طلاقاً ولا یقع به فرقة وروی  
عن علی وزید بن ثابت والحسن واللیث بن سعد ان نفس التخییر یقع به طلاق  
بائنة سواء اختارت زوجها ام لا وحکاه الخطابی والنقاش عن مالک قال  
القاضی لا یصح هذا عن مالک ثم هو مذهب ضعیف مرّدود بهذوالاحادیث  
الصّریحة وبعّل القائلین به لم تبلغهم هذه الاحادیث. واللّٰه اعلم

‘साहिबे हिदाया’ ने लिखा है कि कोई शख्स तलाक़ की नियत से अपनी बीवी से इख़्तारी (तू अख़्तियार कर ले) कह दे या यूँ कह दे कि तू अपने नफ़्स को तलाक़ दे दे तो जब तक वह अपनी मजलिस में रहेगी उसे तलाक़ देने का अख़्तियार रहेगा, अगर मजलिस से उठ गई या वहीं बैठे-बैठे किसी काम में लग गई (जिस से एराज़ समझा जाता हो) तो उस के हाथ से अख़्तियार जाता रहा। अगर इख़्तारी के जवाब में (जबकि शौहर ने तलाक़ की नियत से कहा हो) औरत ने यूँ कह दिया कि اخترت نفسي मैं अपनी जान को अख़्तियार करती हूँ तो एक ‘बाइना’ तलाक़ हो जाएगी। (बाब तफ़वीजुल् तलाक़)

## दोहरे अज़ाब व सवाब का हक़

अख़्तियार का विषय बयान करने के बाद इर्शाद फ़रमाया **يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ مَنْ يَّاتُ مِنْكَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيَّنَةٍ** (ऐ नबी की बीवी! तुम से जो औरत स्पष्ट तौर पर किसी गुनाह का इरतिकाब करेगी तो उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा और यह अल्लाह के लिए आसान है।)

स्पष्ट तौर पर किसी गुनाह का इरतिकाब करेगी तो उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा और यह अल्लाह के लिए आसान है।

‘स्पष्ट तौर पर गुनाह’ इस शब्द **بِفَاحِشَةٍ مُّبَيَّنَةٍ** का तर्जुमः है। बाज़ लोगों ने इस का तर्जुमः खुली हुई बेहूदगी किया है और फ़रमाया है कि इस से वह मामला मुराद है जिस से रसूलुल्लाह (सल्ल०) तंग और परेशान हों।

‘साहिबे मुआलिमुल् तन्ज़ील’ ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से इस का यही मतलब नक़ल किया है **فقال المراد بالفاحشة النشور وسوء الخلق** साहिबे रुहुल् मअानी ने भी बाज़ हज़रात से यही तफ़्सीर नक़ल की है।

**فقال وقيل، ذلك طلبهنّ ما يشق عليه عليه الصلوة والسلام او ما يضيق به ذرعه ويغتم صلى الله عليه وسلم لا جله**

यानी **فاحشة** से यह मुराद है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ऐसी चीज़ें तलब की जाएँ जिस से आप तंग दिल हों और आप को घुटन महसूस हो और बाज़ हज़रात ने **بِفَاحِشَةٍ مُّبَيَّنَةٍ** का तर्जुमः **مَعْصِيَةِ ظَاهِرَةٍ** किया है।

यह दोहरा अज़ाब दिये जाने की वज़ीह इसलिए है कि जिन के मर्तबे बुलन्द होते हैं, उन का मुवाख़िज़ा ज़्यादा होता है। इसी तरह हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) पर बाज़ उन चीज़ों पर पकड़ हुई जिन पर दूसरे मोमिनीन पर नहीं हुई। एक जाहिल शख्स एक अमल करे और कोई आलिम शख्स उस अमल को करे तो उसी आलिम की पकड़ जाहिल से ज़्यादा होती है।

‘साहिबे रुहुल् मअानी’ लिखते हैं कि एक शख्स ने हज़रत ‘जैनुल आबदीन’ (रह०) से कह दिया कि आप तो अहले बैत में से हैं जो बख़्शे बख़्शाएँ हैं। इस पर वह गुस्सा होने लगे और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने नबी अकरम (सल्ल०) की अज़ाज के बारे में जो कुछ फ़रमाया है हम अपने को उसी का हक़दार समझते हैं हम में से जो मोहसिन हैं उन के लिए दोहरे अज़ाब की उम्मीद रखते हैं और हम में से जो शख्स कोई गुनाह करे उस के लिए दोहरे अज़ाब का अन्देशा रखते हैं। इस के बाद उन्होंने आयते करीमा **يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ مَنْ يَّاتُ مِنْكَ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ** और इस के बाद वाली आयत **وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكَ** तिलावत फ़रमाई।

(रुहुल् मअानी भाग 21 पेज 184)



(31) और तुममें से जो अल्लाह और 'उसके' रसूल की फरमाँबरदार बन कर रहेगी और अच्छे काम करेगी, 'हम' उसको दोहरा बदला देंगे, और 'हमने' उनके लिए इज्जत की रोज़ी तैयार कर रखी है। (32) ऐ नबी की पत्नियो! तुम दूसरी औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी अपनाती हो, तो तुम दबी आवाज़ में बात न किया करो, ताकि वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है, वह लालसा (न) करने लगे, और भली बात कहा करो; (33) और अपने घरों में ठहरी रहो और पिछली जाहिलियत की तरह नुमाइश न करो, नमाज़ कायम करो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबदारी करो, अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे। (34) और याद रखो अल्लाह की आयतों और हिकमत की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) चीज़ों की ख़बर रखने वाला है। (35) मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औरतें, ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें फरमाँबरदार (आज्ञाकारी) मर्द और फरमाँबरदार औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और गिड़गिड़ाने वाले मर्द और गिड़गिड़ाने वाली औरतें, और सद्का (दान) करने वाले मर्द और सद्का करने वाली औरतें; और रोज़: रखने वाले मर्द और रोज़: रखने वाली औरतें, अपने शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाले मर्द और ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने इनके लिए बड़ी माफ़ी और बहुत बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (36)

और न किसी ईमान वाले मर्द और न किसी ईमान वाली औरत को यह अधिकार है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दे, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार बाकी रहे, और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करे, तो वह खुली हुई गुमराही में पड़ गया। (37) और जबकि तुम उस व्यक्ति (ज़ैद) से कह रहे थे, जिस पर अल्लाह ने एहसान किया, और तुमने भी किया कि “अपनी पत्नी (ज़ैनब) को अपने पास रखो (आर्थात तलाक़ न दो) और अल्लाह से डरो, और तुम अपने दिल की वह बात छिपा रहे थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था, और तुम लोगों से डर रहे थे, हाँलाकि अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरो।” फिर ज़ैद ने जब उससे हाजत (ज़रूरत) न रखी (उसको तलाक़ दे दी) तो ‘हमने’ तुमसे उसका निकाह कर दिया, ताकि ईमान वालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे जबकि वे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें, अल्लाह का हुक्म तो पूरा होकर ही रहता है। (38) नबी पर उस काम में कोई तंगी नहीं जो अल्लाह ने उनके लिए ठहराया हो, यही अल्लाह का तरीक़ा उन लोगों के मामले में भी रहा है, जो पहले गुज़र चुके हैं, और अल्लाह का हुक्म निश्चित हो चुका था। (39) जो अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचाते थे और ‘उसी’ से डरते थे, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे, और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है। (40) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, बल्कि वह अल्लाह के रसूल और आखिरी नबी (खातमुन्नबीन) हैं अल्लाह को तो हर चीज़ का पूरा इल्म है;

### आयत नं० 31 से 40 तक की व्याख्या

31

وَمَنْ يَّقْنُتْ إِلَهَ وَرَسُولِهِ وَتَعَمَلْ صَالِحًا نُوْتِبْهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا \*

इस के बाद फ़रमाया وَمَنْ يَّقْنُتْ إِلَهَ وَرَسُولِهِ وَتَعَمَلْ صَالِحًا (और तुम में से जो औरत अल्लाह, उस के रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी हम उसे उस का दोहरा सवाब देंगे और हम ने उस के लिए रिज़क़ करीम तैयार कर रखा है।

एक ही मर्तब: हज़रात अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) की तरफ़ से खर्चे में इज़ाफ़ा और खुशहाली की बात उठाई गई, इस पर ऊपर वाली आयात नाज़िल हो गई। इस के बाद कोई वाकिआ इस किस्म का पेश नहीं आया जिस में खर्चे की तंगी का सवाल उठाया गया हो।

अज़्वाजे मुतहहरात बराबर ज़िन्दगी भर अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी में और अ़िबादते इलाही में लगी रहीं और आप (सल्ल०) की वफ़ात के बाद आप (सल्ल०) की अह़ादीस को और आप की तअलीमात को आगे बढ़ाती रहीं।

32

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَحْضَعْنَ قُلُوبَكُمْ فِي قَلْبِهِ  
مَرَضٍ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا

### अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) की फ़ज़ीलत

इस के बाद फ़रमाया يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ

(ऐ नबी की बीवियों! तुम दूसरी औरतों की तरह से नहीं हो) अल्लाह तआला ने जो तुम्हें फज़ीलत दी है वह किसी भी औरत को हासिल नहीं है, अपने बुलन्द मक़ाम को समझो और अल्लाह तआला की खुशी के आ़माल में लगी रहो।

إِنْ أَتَيْتُمْ لِزَوْجِكُمْ غَضَبًا بِأَلْفٍ (अगर तुम तक्वा अख़्तियार करती हो) यानी तक्वा ही पर आइन्दा ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो इस बात का भी ध्यान रखो कि जब किसी नामहरम मर्द से किसी ज़रूरत से बात करनी पड़ जाए तो लब व लहजा में नज़ाकत का अन्दाज़ मत अख़्तियार करो, अगर ऐसा अन्दाज़ होगा तो बाज़ ऐसे लोग जिन के दिलों में निफ़ाक़ का मर्ज़ है लालच कर लेंगे यानी तुम से बार-बार और बिना ज़रूरत बात करेंगे और तुम्हारे लब व लहजे से अपने कानों को लज़्ज़त पहुँचाएँगे।

وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا (और मुनासिब तरीक़े पर बात करो) नामहरमों से बात करने का मुनासिब तरीक़ा यह है कि तेज़ी के साथ रुखापन अख़्तियार कर के जवाब दिया जाए। जब यह सूरत अख़्तियार की जाएगी तो जिन के दिलों में मर्ज़ यानी निफ़ाक़ है वह खुद बात करने से बचेंगे, बिना ज़रूरत तो परहेज़ करेंगे और बाज़ हज़रात ने قَوْلًا مَعْرُوفًا का मतलब यह बताया है कि अल्लाह के ज़िक्क़ में लगी रहो और जो बात करनी हो ज़रूरत के अनुसार बात कर लो।

### नामहरमों से बात करने का तरीक़ा-

इससे मालूम हुआ कि ज़रूरत के वक़्त नामहरम से बात करने की इजाज़त है क्योंकि कभी इस की ज़रूरत पेश आ ही जाती है, लेकिन ऐसे मौक़े पर ज़्यादा आवाज़ बुलन्द न करे, न आवाज़ को तेज़ करे, न नर्म करे, न आवाज़ के उतार चढ़ाव की सूरत अख़्तियार करे क्योंकि इससे नामहरमों के दिल मायल होंगे और नफ़सानी ख़्वाहिशों को ताक़त मिलेगी, इसीलिए औरत को अज़ान देना और हज़ के मौक़े पर ज़ोर से 'तल्बिया' पढ़ना मना है।

33

وَقُرْنِ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا

### घरों में ठहरे रहने का हुक्म

इस के बाद फ़रमाया وَقُرْنِ فِي بُيُوتِكُنَّ (और तुम अपने घरों में ठहरी रहो।)

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ (और पुराने जिहालत के दस्तूर के मुताबिक़ बन ठन कर न फिरो।) इस में पहले तो यह हुक्म फ़रमाया कि घरों में ठहरी रहो और दूसरे यह फ़रमाया कि जाहिलियत के तरीक़े पर बाहर न निकलो जिस से कि सर, सीना, चेहरा, गर्दन, कान, कानों की बालियाँ वग़ैरह ज़ाहिर हों।

जाहिलियत से रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पहले वाला ज़माना मुराद है। उस ज़माने में औरतें बिना पर्दा बाहर निकलती थीं, सीने खुले हुए रहते थे और मर्दों के दर्मियान से गुज़र जाती थीं, कुछ हज़रात ने फ़रमाया है कि ज़ाहिलियत के मुक़ाबिले में है।

मतलब यह है कि इस्लाम से पहले लोग जाहिलियत में मुक्बिला थे, ज़माना इस्लाम में फुसूक और फुजूर को अख़्तियार करेंगे तो यह दूसरी जाहिलियत होगी जो जाहिलियत ऊला की नक्ल होगी।

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़्वाजे मुतहहरात (पत्नियों) को हुक्म दिया कि घरों में ठहरी रहें और अगर किसी ज़रूरत से बाहर जाना ही हो तो पर्दे का ख़ास एहतिमाम किया करें, अपने अंगो, ज़ेवर और ज़ीनत को ज़ाहिर न होने दें।

यह ख़िताब अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) को है, लेकिन तमाम मुसलमान औरतों के लिए यही हुक्म है कि जहाँ तक हो सके घरों में रहें और अगर बाहर निकलना ज़रूरी हो तो शर्ई पर्दे का ख़ूब एहतिमाम करें।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया,

الْمَرْءَةُ عَوْرَةٌ فَإِذَا خَرَجَتْ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ

(कि औरत छुपा कर रखने की चीज़ है, जब बाहर निकलती है तो उसे शैतान तकने लगता है।)

(तिर्मिज़ी कमा फ़िल् मिश्कातुल् मसाबीह पेज नं० 269)

## औरत मर्द का जमा होना-

एक मर्तब: रसूलुल्लाह (सल्ल०) मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि औरत मर्द रास्ते में इकट्ठे चल रहे हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ औरतों! पीछे हटो तुम्हारे लिए यह जायज़ नहीं है कि रास्तों के दर्मियान में चलो, तुम रास्ते के किनारों पर चलो। आप (सल्ल०) के इस इर्शाद के बाद औरतों का यह हाल था कि बिल्कुल दीवार के साथ मिल कर चलती थीं यहाँ तक कि उन का कपड़ा दीवार से अटक जाता था। (रवाहु अबूदाऊद)

अगर किसी औरत को किसी मजबूरी से बाहर निकलना हो तो बन-ठन कर खुशबू लगाकर न निकले और मर्दों से दूर होकर गुज़र जाए।

हज़रत अबू मूसा अश़री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि हर आँख ज़िनाकार है (यानी बेजगह नज़र डालना, मर्द की नज़र हो या औरत की, ज़िना में शुमार है।)

बिलाशुब्हा जब कोई औरत झूत्र लगाए और मजलिस पर से गुज़रे तो ऐसी है वैसी है यानी ज़िनाकार है। (मिशकातुल् मसाबीह पेज 96)

फिर फ़रमाया وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتَيْنِ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ

(नमाज़ें कायम करती रहो, ज़कातें अदा करती रहो और इताअत करो अल्लाह और उस के रसूल की।) नमाज़ और ज़कात की अदायगी, अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की फ़रमाबंदारी का हुक्म तो हर मुसलमान मर्द व औरत को है, लेकिन खुसूसियत के साथ अज़्वाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुम को ख़िताब फ़रमाने में यह हिकमत है कि कहीं वह अपने रिश्ता-ए-ज़ौजियत पर फ़ख़र कर के बैठ जाएँ और दीनी आ़माल में कोताही न करने लगे।

फिर फ़रमाया إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا

(अल्लाह को यही मन्ज़ूर है कि ऐ अहले बैअत! तुम से ग़न्दगी को दूर रखे और तुम को अच्छी तरह पाक कर दे।)

आयते तत्हीर यानी **إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ** में अल्लाह तआला ने हज़रात अज़्वाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से ख़िताब कर के फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने तुम से ग़न्दगी को दूर करने और पाक करने का इरादा फ़रमाया है। ग़न्दगी से फ़िस्क और गुनाह के काम मुराद हैं और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से बुरे अख़्लाक़, कंज़ूसी, लालच, हसद (ईर्ष्या) आदि मुराद हैं और हकीकत में पहले कौल ही में यह सब चीज़ें दाख़िल हो जाती हैं।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि **لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ** से 'तख़्लिया अनिल् रज़ायल' और **وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا** से 'तख़्लिया बिल् फ़ज़ायल' मुराद है। जब अल्लाह तआला ने उन को **أَهْلَ الْبَيْتِ** यानी अहलियत अल् नबी (सल्ल०) का लक़ब दे दिया, उन्हें गुनाहों से और ग़न्दगियों से पाक करने का इरादा फ़रमा लिया तो इस के बाद कोई गुमराह और मुन्किरे कुर्आन ही अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) के ख़िलाफ़ कोई बात लिख सकता है और जिहालत की ज़बान से कोई नाज़ेबा कलिमा निकाल सकता है।

जिन को अपने ईमान की फ़िक्र नहीं और हज़रात सहाबा (रज़ि०) से अज़्वाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से दुश्मनी है, उन्हें इन हज़रात की दुश्मनी में कुर्आन को झुठलाने में कोई चीज़ रुकावट नहीं होती। ऐसे लोग कहते हैं कि तीन चार के अलावा सब सहाबा काफ़िर थे और (हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के अलावा) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सब बीवियाँ काफ़िरा थीं (अल् अयाजु बिल्लाह) यह कुर्आनी आयात के इन्कारी हैं।

बाज़ लोग कहते हैं कि **أَهْلَ الْبَيْتِ** से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के अहले क़राबत यानी हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रात हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम मुराद हैं। हमारे नज़्दीक यह हज़रात भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के घरवाले हैं। अल्बत्ता यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यहाँ अहले बैत से हज़रात अज़्वाजे मुतहहरात ही मुराद हैं और इस का इन्कार करना ज़बरदस्ती आँखें बन्द करने और अन्धा करने की तरह से है।

रवाफ़िज़ को अपनी बात आगे बढ़ाने के लिए यह नुक्ता निकाला कि आयते शरीफ़ा में ज़मीर जमअ मुजक्कर **عَنْكُمْ** और **وَيُطَهِّرَكُمْ** लाई गई है। अगर अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) मुराद होतीं तो **عَنْكُمْ** और **وَيُطَهِّرَكُمْ** होता।

डूबने वाले को जब कुछ नहीं मिलता तो तिनूके ही का सहारा ले लेता हैं, ऐसे लोगों को चूँकि अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) से बुज़्र है, हालांकि कुर्आन मजीद में हज़रत मूसा (अलै०) का मद्यन से वापस होने का किस्सा (सूर: क़सस-29) में बयान करते हुए इश्आद फ़रमाया है कि,

**قَالَ لَهُلْوَ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ مَا لَا** इस में **امْكُثُوا** सीगा जमअ मुजक्कर हाज़िर है, ख़िताब बीबी को है और सूर: हूद (आयत नं० 73) में है कि फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम (अलै०) की बीबी से ख़िताब करते हुए कहा

**اَلْعَجَبُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمْتَ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ**

इस में सिर्फ़ एक औरत को शब्द **عَلَيْكُمْ** के साथ ख़िताब फ़रमाया है, जो 'जमअ मुजक्कर' की ज़मीर



है और उसी औरत को **أَهْلُ الْبَيْتِ** के लकब से भी पुकारा है।

मालूम हुआ कि औरत को कभी-कभी मुज़क्कर के सीगा से भी ख़िताब किया जाता है और यह भी मालूम हुआ कि बीवी अहले बैत में भी शामिल है। फिर अज़्वाजे मुतद्हरात (रज़ि०) के पाकीज़ह होने का ज़िक्र सूर: नूर में भी है। वहाँ इर्शाद फ़रमाया है,

**وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبِينَ لِلطَّيِّبَاتِ** सूर: नूर (आयत नं० 26) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़्वाज तय्यिबात थीं और आप (सल्ल०) खुद तय्यिब थे, आप (सल्ल०) की अज़्वाज भी तय्यिबात थीं।

रवाफ़िज़ ने सिर्फ़ **عَنْكُمْ** और **وَيُطَهِّرُكُمْ** की ज़मीर जमअ मुज़क्कर को देखा और उन्हें यह नज़र न आया कि इस के बाद फिर 'जमअ मुअन्नस' का सीगा **وَأَذْكُرْنَ مَا يُتْلَى** आ रहा है और यह शब्द माक़बल पर मअतूफ़ है और जो हज़रात इस के मुख़ातब हैं वही इस से पहले की आयत में भी मुख़ातब हैं।

قال الحافظ ابن كثير ج ٢٨٦٣ ثم الذي لا شك فيه من تدبر القرآن أن نساء النبي صلى الله عليه وسلم داخلات في قوله تعالى: **إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا** فان سياق الكلام ولهذا قال تعالى بعد هذا كله **وَأَذْكُرْنَ مَا يُتْلَى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ**

सूर: अहज़ाब वाली आयत तहरीर के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते थे और हज़रत इकिरमा (रज़ि०) ने फ़रमाया,

من شاء باهله انها نزلت في ازواج النبي صلى الله عليه وسلم कि जो शख्स चाहे मैं उस से बहस कर सकता हूँ कि यह आयत नबी अकरम (सल्ल०) की अज़्वाज के बारे में नाज़िल हुई। हज़रत इकिरमा (रज़ि०) बाज़ार में पुकार-पुकार कर यह फ़रमाते थे कि यह आयते करीमा **إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ** रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़्वाज के बारे में नाज़िल हुई है।

हज़रत उरवह (रज़ि०) भी यही फ़रमाते थे कि आयते शरीफ़ा में अज़्वाजे मुतद्हरात (रज़ि०) ही मुराद हैं। (रुहुल्ल मअज़नी भाग 21 पेज नं० 140)

अल्बत्ता यहाँ एक सवाल पैदा होता है कि 'सुनन तिरमिज़ी' में हज़रत उमर बिन अबी सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत नक्ल की है कि जब आयते करीमा

**إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا** नाज़िल हुई तो उस वक़्त आप उम्मुल् मोमिनीन हज़रत उम्मे सल्मा (रज़ि०) के घर में तशरीफ़ फ़रमा थे।

आप ने हज़रत फ़ातिमा और हज़रात हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम को बुलाया उस वक़्त आप के पीछे हज़रत अली (रज़ि०) भी बैठे हुए थे। आप (सल्ल०) ने उन सब को अपनी चादर उढ़ा दी और बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया

**اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِيْ فَادْهَبِ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيرًا**

(ऐ अल्लाह! यह मेरे अहले बैत हैं, इन से रिज्स को यानी ग़न्दगी को दूर फ़रमा दे।)

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि या नबी अल्लाह! मैं भी उन में से



हूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया *انت على مكانك وانت على خير* कि तुम अपनी जगह पर हो और खैर पर हो।

इस से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को (जो अज़्वाजे मुतहहरात में से थीं) आप (सल्ल०) ने अहले बैत में शामिल नहीं फ़रमाया।

लेकिन हर मुसलमान के लिए यह ज़रूरी है कि तमाम आयत और अहदीस को सामने रखकर चले और किसी हदीस का ऐसा मतलब मुराद न ले जो किसी भी आयत से टकराता हो या उस से किसी भी आयत का इन्कार लाज़िम आता हो।

रवाफ़िज़ तो कुर्आन करीम में तहरीफ़ (संशोधन) के कायल हैं, उन्हें इस की कोई परवाह नहीं कि किसी आयत के ख़िलाफ़ क्या कह दिया और क्या अक़ीदा बना लिया? मुसलमान तो ऐसा नहीं कर सकते कि किसी आयत के विषय को रद्द कर दें।

इसलिए उलमा और मोहक़िकीन मुफ़रिसरीन ने यही फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) भी अहले बैत में शामिल हैं जिस की व्याख्या ऊपर की आयत में मौजूद है और जिन हज़रात को आप (सल्ल०) ने चादर ओढ़ा कर फ़रमाया कि मेरे अहले बैत हैं वह भी आप (सल्ल०) के अहले बैत हैं।

बाज़ रिवायात में यूँ भी है कि जब हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि मुझे भी चादर में दाख़िल फ़रमा लीजिए तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया *أَنْتِ مِنْ أَهْلِي* और एक रिवायत में है *فقلت وانا يا رسول الله؟ فقال صلى الله عليه وسلم وانت* (इब्ने कसीर भाग 3 पेज नं० 384 व 385)

इस से मालूम हुआ कि चादर ओढ़ने का वाक़िआ एक से ज़ायद मर्तबः पेश आया। बाज़ मर्तबः *فقلت وانا يا رسول الله؟ فقال صلى الله عليه وسلم وانت* फ़रमा दिया। बाज़ मर्तबः *أَنْتِ مِنْ أَهْلِي* और बाज़ मर्तबः *سِيفٌ وَأَنْتِ* फ़रमाया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बाज़ ऐसे लोगों को भी अपने अहले बैत में शुमार फ़रमाया जिन से कोई नसबी या इज़्दिवाजी रिश्ता न था, चुनाँचे हज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) के बारे में फ़रमाया कि:

﴿ذَكَرَهُ صَاحِبُ الرُّوحِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ وَعَنْ قَتَادَةَ قَالَ وَفَسَّرَتْ بِصَاحِبِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ﴾ (ج २० २२) سلمان من اهل البيت

और हज़रत 'वास्ता बिन अतूक़अ' (रज़ि०) के बारे में भी ऐसा ही फ़रमाया है, बस जब यह हज़रात अहले बैअत में शुमार हो सकते हैं तो आप (सल्ल०) के साथ घरों में रहने वाली बीवियाँ क्योंकर अहले बैअत में शामिल न होंगी?

इस में बात यह है कि आयत और हदीस में अहले बैअत का मतलब हज़रत उम्मे सल्मा (रज़ि०) का (चादर में) दाख़िल न करना इसलिए होगा कि तुम्हारी तो दलील में आयत का होना ज़ाहिरी है, जिन का जाहिर नहीं है उन को ज़ाहिर करता हूँ।

قال صاحب الرّوح (ج ١٥ ٢٢) وما اجاب به أم سلمة وعدم ادخالها في بعض

المرات تحت الكساء ليس لانها ليست من اهل البيت اصلاً بل لظهور أنها منهم

حيث كانت من الازواج اللاتى يقتضى سياق الآية وسبقها دخولهن فيهم

بخلاف من ادخلوا تحته رضى الله تعالى عنهم فانه عليه الصلوة والسلام لو لم  
يدخلهم ويقل ما قال لتوهم عدم دخولهم فى الآية لعدم اقتضاء سياقها وسبقها

ذلك

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि “मेरा नाम मेरे चचा ‘अनस बिन नस्र’ के नाम पर रखा गया था। वह जंगे बद्र में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ हज़िर न हो सके। यह बात उन पर बहुत सख्त गुज़री और कहा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ हज़िर होने का कोई मौका आया तो अल्लाह खुद देख लेगा कि मैं क्या कुछ करता हूँ।

रावी कहते हैं कि फिर वह डर गये कि इन शब्दों के अलावा कुछ और कहना मुनासिब था। फिर जब अगले साल उहद के दिन वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ हज़िर हुए तो उन्हें (राह में) सअद बिन मअज़ मिले। उन्होंने पूछा ‘अबू उमर’ कहाँ जाते हो? ‘अनस’ कहने लगे। वाह! मैं तो उहद पहाड़ के पार जन्नत की खुशबू महसूस करता हूँ चुनाँचे वह बड़ी ज़ुरत से लड़े यहाँ तक कि शहीद हो गये। उन के जिस्म पर ज़बों, तीरों और नेज़ों के अस्सी से ज़्यादा ज़ख़्म पाये गये। मेरी फूफी रबीअ बन्त नस्र कहने लगीं मैं अपने भाई की लाश को सिर्फ़ पोरों से पहचान सकी”। (तिर्मिज़ी)

34

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝

आयातिल्लाहि से कुर्आन हकीम और हिक्मत से रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअलीमात और सुन्नतें मुराद हैं। जैसा कि कुछ मुफ़स्सरीन ने तफ़सीर की है और **وَاذْكُرْنَ** के दो मतलब हो सकते हैं। एक यह कि उन चीज़ों को खुद याद रखना जिन पर अमल करना है और दूसरे यह कि जो कुछ कुर्आन उन के घरों में उन के सामने नाज़िल हुआ या जो तअलीमात रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन को दीं, उस का ज़िक्र उम्मत के दूसरे लोगों से करें और उन को पहुँचाएँ।

जिस तरह कुर्आन हकीम की तअलीम लाज़िम है, उसी तरह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के कौल और आमाल की तब्लीग़ भी ज़रूरी है क्योंकि कुर्आन मजीद के अहक़ाम की रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अह़दीस से तशरीह होती है। अगर अह़दीस शरीफ़ा को सामने न रखा जाए तो पाँचों नमाज़ों के अवक़ात और ज़कातों की मिक्दार, निसाब मालूम नहीं हो सकते और हदीस नबवी पर अमल किये बग़ैर कुर्आन करीम पर अमल नहीं हो सकता।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बीवियों की कस्रत में जहाँ दूसरी हिक्मतें हैं वहाँ एक हिक्मत यह भी है कि हज़रात अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु तअला अन्हुम के ज़रिये उन अहक़ामे शरअिया की तब्लीग़ हुई जो घर में रहते हुए सादिर होते थे और ख़ासतौर से वह अहक़ाम जिन का तअल्लुक इज्दिवाजी ज़िन्दगी (गृहस्थ जीवन) से था।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا यानी अल्लाह तअला मेहरबान है तुम्हें यह मर्तबः अता फ़रमाया कि अपने नबी

करीम (सल्ल०) की जौजियत का शर्फ बख्शा और उन घरों में तुम्हें रखा जिन में अल्लाह की किताब पढ़ी जाती है और वह हर चीज़ से बाख़बर भी है, तो तुम जो ख़ैर के काम करोगी अल्लाह तआला को उन सब का इल्म है और वह अज़्र व सवाब से नवाजेगा।

35

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ  
وَالضَّيِّقِينَ وَالضَّيِّقَاتِ وَالْخَشِيعِينَ وَالْخَشِيعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ  
وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

## मोमिन मर्दों और औरतों की सिफ़ात

उम्मे अम्मारा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि “वह नबी (सल्ल०) के पास आई और कहा कि मुझे हर चीज़ मर्दों के लिए मालूम होती है। औरतें तो किसी शुमार में ही मालूम नहीं होतीं तो यह आयत नाज़िल हुई”। (तिर्मिज़ी)

‘मुफ़स्सिर इब्ने कसीर’ ने (भाग 3 पेज नं० 487) कुतुब हदीस से बहुत सी रिवायात नक़ल की हैं, जिन से स्पष्ट होता है कि ऊपर की आयतें हज़रत ‘उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा’ के सवाल पर नाज़िल हुई। उन्होंने अज़्र किया कि या नबी अल्लाह! कुआन मजीद में मर्दों का ज़िक्र तो आता है औरतों का ज़िक्र नहीं आता (यानी जो अहकाम हैं वह मर्दों से ख़िताब में बयान किये जाते हैं औरतों से अलैहिदा से ख़िताब या मुअन्नस (female) के सीगे नहीं लाये जाते) इस पर अल्लाह तआला ने आयते करीमा **إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ** आख़िर तक नाज़िल फ़रमाई। (तिर्मिज़ी फ़ी तफ़सीर सूर: अहज़ाब)

और तानीस (female) के सीगे लाकर उन की भी दिलदारी फ़रमा दी।

इन आयात में मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की सिफ़ात बताई गई हैं जिन में यह बताया गया है कि मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को इन सिफ़ात का मालिक होना चाहिए और आयत के ख़त्म पर मोमिनीन व मोमिनात के लिए अज़्रे अज़ीम का वादा फ़रमाया है।

मुस्लिमीन और मुस्लिमात से अहकामे इस्लाम पर पूरे तौर पर अमल पैरा होना मुराद है, मोमिनीन व मोमिनात से दिल से साहिबे ईमान होना और अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) ने जो कुछ बताया और फ़रमाया दिल से उसकी तस्दीक करना और मानना मुराद है और फ़रमाँबरदारी में वह सिफ़ात भी दाख़िल हैं जो आगे बयान की गई और उन को अलग से भी ज़िक्र फ़रमा दिया। इस्लाम और ईमान बयान करने के बाद जो दूसरी सिफ़ात बयान फ़रमाई उन में से पहले **وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقَاتِ** फ़रमाया। यह शब्द ‘कुनूत’ से लिया गया है

‘साहिबे रुहुल् मआनी’ ने इन दोनों शब्दों का मतलब बताते हुए लिखा है कि **المداومين على الطاعات والقائمين بها** कि यह लोग पाबन्दी के साथ हमेशा अल्लाह तआला के हुक्मों पर लगे रहते हैं।

इस के बाद **وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ** फ़रमाया यानी यह हज़रात कौल व अमल में सच्चाई अख़्तियार करने

वाले हैं وَالطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبَاتِ और फरमाँबरदारी की अदायगी में हालात के आने पर सब्र करने वाले हैं।

وَالطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبَاتِ और यह हज़रात खुशूअ अख्तियार करने वाले हैं, खुशूअ दिल के झुकाव को कहा जाता है, अगर केवल खुशूअ मुराद लिया जाए तो खुशूअ फिल् अ़िबादात, खुशूअ फिल् अ़ामाल और खुशूअ फिल् मामलात सब को शामिल होगा और मतलब यह होगा कि यह लोग घमण्ड नहीं करते, दिल और जिस्म को हर ऐसी चीज़ से पाक और साफ़ रखते हैं जिस में कोई घमण्ड वाली चीज़ हो।

खुशूअ फिल् सलात की फ़ज़ीलत के लिए आयते करीमा وَإِنَّمَا لِكُلِّ فِرْقَةٍ إِغْلَابٌ (सूर: बकर:-45) और आयत قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ देख लिया जाए।

وَالْمُتَّقِينَ وَالْمُتَّقِينَ और यह हज़रात सद्क़: (दान) करने वाले हैं। इस में अल्लाह की राह में माल खर्च करने, कमज़ोर और मिस्कीनों की हाज़ात पूरी करने, फ़र्ज़, ज़कात, वाजिब और नफ़ल सद्क़ात के माल मुस्तहक़ीन को देने की फ़ज़ीलत आ जाती है।

وَالطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبَاتِ यानी यह हज़रात रोज़: रखने वाले हैं। इस में रोज़े रखने का एहतिमाम करने की फ़ज़ीलत बताई है। शब्द के उ़मूम में फ़र्ज़ और नफ़ल रोज़े सब ही दाख़िल हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जिन पाँच चीज़ों पर इस्लाम की बुनियाद बताई हैं उस में रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना भी है।

सूर: बकर: (आयत नं० 184) में रमज़ान के रोज़ों की फ़र्ज़ियत बताकर فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ फ़रमा दिया जिस में नफ़ल रोज़ों की तर्गीब भी दे दी है, रोज़े रखने से नफ़स के तकाज़ों पर बोझ पड़ता है और सिफ़ते तक्वा पैदा होता है, नफ़स का उभारना कम हो जाता है और शहवात व लज़ज़ात की उमंग कम हो जाती है। وَالْحَاطِطِينَ قُرُوجَهُمْ وَالْحَاطِطِينَ (और अपनी शर्म की जगहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें।)

इस में शर्म की जगहों को हराम जगह इस्तेमाल करने से मना फ़रमाया। इन्सान से जो गुनाह हो जाते हैं उन में सब से ज़्यादा गुनाह का ज़रिया दो चीज़ें होती हैं एक मुँह, दूसरे शर्मगाह (गुतांग)।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा (रज़ि०) से दर्याफ़्त फ़रमाया कि बताओ वह कौन सी चीज़ है जो सब से ज़्यादा दोज़ख़ में ले जाने का ज़रिया है, फिर खुद ही जवाब में फ़रमाया الْقَمُّ وَالْفَرْجُ यानी मुँह और शर्म की जगह। (मिशक़ातुल् मसाबीह पेज नं० 412)

## जन्नत की बशारत-

हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि कौन है जो मुझे इस की ज़मानत दे कि वह मुझे अपने जबड़ों के दर्मियान की चीज़ और अपनी दोनों रानों के दर्मियान की चीज़ की हिफ़ाज़त करेगा, मैं उस के लिए जन्नत का ज़मानतदार बनता हूँ। (बुख़ारी)

सूर: मआरिज (आयत नं० 29,30) में नेक लोगों की सिफ़ात बयान करते हुए फ़रमाया कि

وَالَّذِينَ هُمْ لِأُزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَلَهُمْ فِي ذَلِكَ مَا يُرِيدُونَ خَافِظُونَ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَلَهُمْ فِي ذَلِكَ مَا يُرِيدُونَ

(और जो लोग अपनी शर्म की जगहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं सिवाय अपनी बीवियों और बांदियों)

के क्योंकि बीवियों और बांदियों के बारे में उन पर मलामत नहीं है।)

وَالَّذِينَ اللَّهُ كَثِيرًا وَالذِّكْرُ

(और जो अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा करने वाले मर्द हैं और जो ज़्यादा ज़िक्र करने वाली औरतें हैं।)  
अल्लाह तआला का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है, नमाज़ जो इस्लाम का सब से बड़ा अमल है वह खुद ज़िक्र है।

सूर: ताहा (आयत नं० 14) में फ़रमाया कि لَقَدْ صَلَّوْا لِلذِّكْرِ (नमाज़ को मेरी याद के लिए कायम करो)  
और सूर: अन्कबूत (आयत नं० 45) में फ़रमाया,

وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ (और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है।)

कुर्आन मजीद में कसरते ज़िक्र का हुक्म दिया है يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا में फ़रमाया है  
और सूर: जुमअ (आयत नं० 10) में इर्शाद है:-

وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

(और अल्लाह को कसरत से याद करो, ताकि तुम कामियाब हो जाओ।)

हदीस शरीफ़ में भी ज़िक्रुल्लाह में कसरत के साथ मशगूल होने की तर्गीब दी गई है।

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया गया कि बन्दों में सब से ज़्यादा कौन अफ़ज़ल हैं और क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़्दीक कौन सब से ज़्यादा बुलन्द दर्जे वाला होगा?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया وَالَّذِينَ اللَّهُ كَثِيرًا وَالذِّكْرُ कि यह फ़ज़ीलत और मर्तब: उन लोगों को हासिल है जो (मर्द और औरत) अल्लाह को ज़्यादा याद करने वाले हैं। किसी ने अर्ज़ किया, क्या यह लोग अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों से भी अफ़ज़ल हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिहाद करने वाला अगर काफ़िरों और मुशिरकों में इतनी कसरत के साथ अपनी तल्वार मारे कि तल्वार टूट जाए और खुद यह शख्स खून में रंग जाये तब भी अल्लाह का ज़िक्र करने वाला दर्जे के एतिबार से अफ़ज़ल रहेगा।

(मिशक़ातुल मसाबीह, पेज 198)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिस्म (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख्स ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! इस्लाम के काम तो बहुत हैं मुझे कोई ऐसी चीज़ बता दीजिए जिस में मैं लगा रहूँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِمَّنْ ذَكَرَ اللَّهَ (तेरी ज़बान हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।)

(मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 198)

मोमिन बन्दों को चाहिए कि हर वक़्त अल्लाह की याद में लगे रहें, फुज़ूल बातों और फुज़ूल कामों से बचें, ज़िक्र व तिलावत की कसरत को अपने दर्जा को बुलन्द करने का ज़रिया बनाएँ, तिलावते कुर्आन मजीद, तस्बीह व तहलील, तक्बीर व तम्हीद और दुरुद शरीफ़ में लगे रहें।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर मैं यूँ कहूँ سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر तो यह मुझे उन सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब है, जिन पर

सूरज तुलूअ हुआ। (सहीह मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 345)

ज़िक्र के फ़ज़ायल हम आयते करीमा **فَذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ** में और दूसरी आयते करीमा **إِنَّ الظَّالِمِينَ لَكَفُّوا عَنْ رَحْمَةِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** में ज़िक्र कर चुके हैं।

ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ हालात व आमाल के वक़्त की जो दुआएँ हैं उन्हें पढ़ते रहा करें तो कस्रते ज़िक्र की नेअमत बाआसानी हासिल हो सकती है। अल्लाह का ज़िक्र तमाम अ़िबादात में सब से ज़्यादा सहल है। लेटे, बैठे, चलते-फिरते, वुजू बे-वुजू तिलावत करे, तस्बीह पढ़े, दुरुद शरीफ़ पढ़े सब दुरुस्त है।

अल्बत्ता कुर्आन मजीद को बेवुजू छू नहीं सकते और हालते जनाबत में पढ़ भी नहीं सकते, ऐसा सस्ता और आसान काम तो कभी किसी हालत में नहीं छोड़ना चाहिए। हर लम्हा की क़द्र करें और हर वक़्त अल्लाह तआला के ज़िक्र में लगा रहे।

**أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا** उन मर्दों और औरतों के लिए अल्लाह ने मग़्फ़िरत और अज़्र अज़ीम का वादा फ़रमाया है, बस मोमिनीन और मोमिनात का यही काम होना चाहिए कि इन कामों में लगे रहें।

**36-39**

**وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَىٰ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا مُّبِينًا ۖ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۖ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۗ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ۚ ۝ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝**

### अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्ल०) का हुक्म

अरब में यह रिवाज़ था कि दूसरों की औलाद को बेटा बना लिया करते थे और जो शख्स बेटा बनाता था उस की तरफ़ निस्बत कर के **ابْنُ فُلَانٍ** कहते थे और एक रिवाज़ यह भी था कि लोग चलते-फिरते किसी बच्चे को लेकर किसी ऐसे शहर में ले जाते जहाँ कोई पहचानता न होता, वहाँ उसे अपना गुलाम बताकर बेच देते थे।

### हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०)

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) अपनी वालिदा के साथ ननिहाल जा रहे थे कि कुछ लोगों ने उन पर कब्ज़ा कर लिया, जबकि उन की उम्र आठ साल की थी, उन्हें मक्का ले आये और अक्काज़ के बाज़ार में (जो मक्का मुअज़्ज़मा के करीब एक बाज़ार लगता था) में अपना गुलाम बताकर बेच दिया।

‘हकीम बिन हिज़ाम बिन खुवैलिद’ ने अपनी फूफी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के लिए



चार सौ दिरहम में खरीद लिया। जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से निकाह कर लिया तो ज़ैद बिन हारिसा को आप (सल्ल०) की ख़िद्मत में पेश कर दिया और आप को हिबा (gift) कर दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें अपना बेटा बना लिया और उन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद (सल्ल०) के नाम से बुलाया जाने लगा।

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के वालिद को पता चला कि मेरे बेटे को फ़लों कौम के लोगों ने मक्का में जाकर बेच दिया है और वह वहाँ मौजूद है तो वह हज़रत ज़ैद (रज़ि०) को छुड़ाने के लिए मक्का आये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि आप इस के बदले इतना-इतना माल ले लें और इसे छोड़ दें, ताकि हम इसे अपने साथ ले जाएँ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अगर वह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो मुफ्त में ही ले जाओ, हमें कोई पैसा देने की ज़रूरत नहीं।

ज़ैद के वालिद ने कहा *لقد زدتنا على النصفه*

यह बात तो आप ने इन्साफ़ से भी आगे बढ़कर फ़रमा दी। आप (सल्ल०) को रिवाज के मुताबिक न छोड़ने का भी हक़ था और पैसे लेकर छोड़ देना आप का करम था, लेकिन जब आप (सल्ल०) ने यह फ़रमा दिया कि मुफ्त में ही ले जाओ तो यह करम बाला-ए-करम और एहसान पर एहसान है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) से फ़रमाया कि जानते हो यह कौन है? अर्ज़ किया कि यह मेरे वालिदैन् और यह मेरे चचा हैं। आप ने फ़रमाया तुम मुझे भी जानते हो और इन्हें भी पहचानते हो, मेरे साथ मे रह भी चुके हो, अब तुम्हें अख़्तियार है कि चाहे मेरे पास रहो चाहे अपने घर चले जाओ।

इस पर उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास रहने को पसन्द किया और अपने बाप के साथ जाना ग़वारा न किया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बुलन्द अख़्लाक़, अच्छे बर्ताव और शफ़क़त व मुहब्बत के सामने उन्होंने अपने बाप के साथ जाना और कुन्बा व कबीला में रहना मन्ज़ूर न किया और अर्ज़ किया कि आप मेरे लिए बाप और चचा की जगह हैं, बाप और चचा ने कहा कि ऐ ज़ैद! अफ़सोस की बात है कि तुम ने आज़ादी के मुक़ाबिले में गुलामी को पसन्द किया, अपने बाप, चचा और सब घरवालों पर किसी दूसरे शख्स को तर्ज़िह (वरीयता) देते हो।

हज़रत ज़ैद (रज़ि०) ने कहा कि हाँ, मैंने इन में ऐसी सिफ़ात (गुण) देखी हैं कि उन को जानते हुए किसी दूसरे को तर्ज़िह (वरीयता) नहीं दे सकता।

यह पूरा वाकिआ रसूलुल्लाह (सल्ल०) के नुबूवत के मिलने से पहले का है। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को नुबूवत अता की गई तो जो हज़रात कुबूले इस्लाम की तरफ़ बढ़े की उन में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) भी थे। एक और कौल के मुताबिक़ मदीं में से वह सब से पहले शख्स थे, जिन्होंने कुबूले इस्लाम की तरफ़ पहल की।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी बांदी से उन का निकाह कर दिया था, जिन की कुन्नियत 'उम्मे ऐमन'

थी। यह आप (सल्ल०) को अपने वालिद की मीरास में (और एक कौल के मुताबिक़ वालिदा की मीरास में) मिली थी और यही वह ख़ातून हैं जो आप की वालिदा की वफ़ात के बाद अब्बा से आप को छोटी सी उम्र में मक्का लेकर आई थीं। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत उसामा बिन ज़ैद पैदा हुए जिन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) का प्यारा कहा जाता था।

बहुत दिनों तक हज़रत ज़ैद (रज़ि०) को ज़ैद बिन मुहम्मद (सल्ल०) ही कहा जाता रहा। फिर जब कुर्आन मजीद की आयत **ادْعُوهُمْ لِابْنَائِهِمْ هُوَ اقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ** नाज़िल हुई (जो कि इसी सूरत के पहले रुकूअ की आयत में से है) तो ज़ैद बिन हारिसा कहा जाने लगा, क्योंकि अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि जो मुँह बोले बेटे हैं उन की निस्बत उन के बापों की तरफ़ है।

(अलइस्तिअयाब वल् असाबा ज़िक्र उम्मे ऐमन व ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु)

### हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) का निकाह और तलाक़-

आप (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा का निकाह अपनी फूफी की बेटी 'ज़ैनब बन्ते जहश' रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ कर दिया था। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप (सल्ल०) के फ़रमाने पर इस निकाह को कुबूल तो कर लिया था, लेकिन आपसी मिज़ाज में मुवाफ़िक़त न हुई (पटरी न खायी)।

हज़रत ज़ैद (रज़ि०) चाहते थे कि उन को तलाक़ दे दें, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन्हें इस से रोकते थे और फ़रमाते थे कि अपनी बीवी को अपने निकाह में रोके रखो, लेकिन उन्होंने एक दिन तलाक़ दे दी। जब उन्होंने तलाक़ दे दी तो अल्लाह तआला ने 'ज़ैनब बन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा' का निकाह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ कर दिया। यहाँ इसी को फ़रमाया,

**فَإِنَّمَا أَقْضَىٰ رَبِّيَ بَيْنَهَا وَطَرًا وَوَجَّعَهَا**

(जब ज़ैद ने उन से अपनी हाज़त पूरी कर ली तो हम ने उस से आप का निकाह कर दिया।)

जब यह आयत नाज़िल हो गई तो आप बिना इजाज़त हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले गये, इस से पहले भी (ज़ैद के तलाक़ की इदत गुज़रने के बाद) आप ने हज़रत ज़ैद (रज़ि०) ही को अपना पैग़ाम देकर भेजा था, लेकिन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब में यूँ कह दिया था कि मैं इस्तिख़ारा कर के जवाब दूँगी।

अल्लाह ने आप (सल्ल०) से हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह कर दिया, इस पर वह फ़ख़्र किया करती थीं और दूसरी अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) से कहा करती थीं कि तुम्हारे निकाह तुम्हारे जिम्मेदारों ने किये और मेरा निकाह अल्लाह तआला ने किया है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि “अगर आप (सल्ल०) वह्य से कुछ छिपाने वाले होते तो इस आयत को ज़रूर छिपाते।” (तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि “उम्मुल् मोमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा आप की सब बीवियों पर फ़ख़्र किया करती थीं और कहती थीं कि तुम्हारा निकाह तो तुम्हारे अज़ीज़ों ने किया है और मेरा निकाह अल्लाह तआला ने सातवें आसमान पर किया है।” (तिर्मिज़ी)

## निकाह-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ज़ैद बिन हारिसा के निकाह का पैग़ाम लेकर हज़रत ज़ैनब बिनते जह़श रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले गये, उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं उन से निकाह नहीं करूँगी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम इन्कार न करो उन से निकाह कर लो, कहने लगीं कि अच्छा मैं फिर अपने आप से मश्वरा कर लूँ यानी मुझे सोच विचार का मौक़ा दिया जाये, अभी यह बातें हो ही रही थीं कि अल्लाह तआला ने आयते करीमा **وَمَا كَانَ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا الْمُؤْمِنَاتِ** (आख़िर तक) नाज़िल फ़रमा दी और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की नाफ़रमानी न करूँगी, मैंने ज़ैद से अपना निकाह कर दिया।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) ने अपनी तफ़सीर में यह सबबे नुज़ूल लिखा है। (भाग 3 पेज नं० 489)

‘तफ़सीर रुहुल मअानी’ में है कि जब आप (सल्ल०) ने ज़ैनब बिनते जह़श रज़ियल्लाहु अन्हा को ज़ैद बिन हारिसा के लिए पैग़ाम दिया तो उन्होंने कहा कि ज़ैद मेरे मेल के नहीं हैं, मैं कई एतिबार से उन से बेहतर हूँ और उन के भाई ‘अब्दुल्लाह बिन जह़श’ भी यही बात कहने लगे। यह उन्होंने इसलिए कहा कि हज़रत ज़ैद (रज़ि०) पर गुलामी का धब्बा लग गया था और कुरैशी भी न थे। फिर जब आयते करीमा नाज़िल हो गई तो दोनों बहन भाई राज़ी हो गये। (भाग 22, 23)

आयते शरीफ़ा का सबबे नुज़ूल ख़ास है, लेकिन इस का मतलब अ़ाम है। जैसा कि दूसरी आयात के अस्बाबे नुज़ूल के बारे में मुफ़स्सरीन यही फ़रमाते हैं। आयते करीमा से स्पष्ट तौर पर मालूम हो गया कि किसी भी मोमिन मर्द और औरत के लिए यह गुन्जाईश नहीं है कि अल्लाह तआला और उस के रसूल की तरफ़ से कोई हुक्म आ जाए तो उस के करने न करने का अख़्तियार बाक़ी रहे, जो हुक्म मिल जाए उस पर अमल करना ही है।

इस्लाम सरापा फ़रमाँबरदारी का नाम है। यह जो आजकल लोगों का तरीक़ा है कि मुसलमान होने के दावेदार भी हैं, लेकिन शरीअत पर अमल करने को तैयार नहीं, यह अहले ईमान का तरीक़ा नहीं। जब कुर्आन व हदीस की कोई बात सामने आती है तो कह देते हैं कि आजकल इस पर अमल नहीं हो सकता।

(अल् अयाज़ु बिल्लाह)

समाज, मामलात और ज़िन्दगी के दूसरे भाग में कुर्आन व हदीस के ख़िलाफ़ चलते हैं यह सरापा बेदीनी है। जैसा कि आयते करीमा के ख़त्म पर फ़रमाया:-

**وَمَنْ يُضِلّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ قُلُوبَهُمْ فَاتَّخِذْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ** (और जो शख्स अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करे सो वह खुली हुई गुमराही में जा पड़ा।

फ़रायज़ और वाजिबात को छोड़ने की तो कोई गुन्जाईश ही नहीं है, सुन्नत व नवाफ़िल की अदायगी की भी हिर्स करना चाहिए। जिस का फ़रमाँबरदारी का मिज़ाज नहीं होता वह पहले सुन्नतों से बचता है, फिर वाजिबात छोड़ने लगता है, फिर फ़रायज़ की अदायगी का एहतिमाम ख़त्म हो जाता है। यहाँ तक कि शैतान वस्वसे डालकर ईमान से भी हटाने की कोशिश करता है, इसलिए जो कुछ अल्लाह तआला और

उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ से हुक्म मिला है दिल व जान से कुबूल करे, मुसलमान भी हैं और नहीं भी, यह गुमराही का तरीका है।

### ज़ैनब बन्ते जहश (रज़ि०) का निकाह

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ

(और उस वक़्त को याद करो जब आप उस शख्स से (बतौर फ़हमाईश और मश्वरा) फ़रमा रहे थे जिस पर अल्लाह ने इन्आम किया और आप ने भी इन्आम किया कि तुम अपनी बीवी को रोके रखो और अल्लाह से डरो।)

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) पर अल्लाह तआला ने यह इन्आम फ़रमाया कि उन्हें अपने रसूल (सल्ल०) की ख़िदमत में पहुँचाया, गुलामी से छुड़ाया, इस्लाम की तौफ़ीक़ दी और आप (सल्ल०) ने उन पर इन्आम फ़रमाया कि मुहब्बतों और शफ़क़तों के साथ अपने पास रखा, दीन सिखाया और अपनी फूफीज़ाद बहन से निकाह कराया।

وَتَخْفَىٰ فِي ظَنِّكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ

(और आप अपने जी में उस चीज़ को छुपा रहे थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था)

وَتَخْفَىٰ النَّاسُ وَاللَّهُ أَعْلَىٰ أَنْ تُخْفَىٰ

(और आप लोगों से अन्देशा कर रहे थे और अल्लाह से डरना ही आप को ज़्यादा सज़ावार है) वह क्या चीज़ थी जिसे आप (सल्ल०) अपने दिल में छुपाये हुए थे?

मुफ़स्सिरिन ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने आप को बता दिया था कि ज़ैद तलाक़ दे देंगे तो हम ज़ैनब से आप का निकाह कर देंगे। यह बात आप (सल्ल०) के ज़ेहन में थी, आप इसे ज़ाहिर करना नहीं चाहते थे और ज़ैद से फ़रमा रहे थे कि तुम अपनी बीवी को अपनी ज़ौजियत में रखो। यह मालूम होते हुए कि ज़ैद ज़रूर तलाक़ दे देंगे और ज़ैनब मेरे निकाह में आएँगी ही फिर भी यह मश्वरा देना कि रोके रखो इस पर अल्लाह तआला ने हल्का सा फ़रमाया, आप ने तो अपने निकाह में आने वाली बात को छुपाया, लेकिन अल्लाह तआला ने زَوْجَكَ نज़िल फ़रमा कर ज़ैनब को आप के निकाह में दे ही दिया।

قال صاحب الروح (ج ٢٢٣) والمراد بالموصل على ما اخرج

الحكيم الترمذی وغيره عن علي بن حسين رضي الله تعالى عنهما ما

اوحى الله تعالى به اليه ان زينب سيطلقها زيد ويتزوجها بعده عليه الصلوة

والسلام، الى هذا اذهب اهل التحقيق من المفسرين كالزهري وبكر بن

العلاء والقشيري والقاضي ابي بكر بن العربي وغيرهم.

## मुँह बोले बेटे की तलाक़ शुदा बीवी से निकाह

मुफ़ससरीन ने यह बात भी लिखी है कि अहले अरब जिसे बेटा बना लेते थे, उस की बीवी से निकाह करने को (जबकि वह मर जाये या तलाक़ दे दे) वैसे ही हराम समझते थे जैसे अपने हकीकी बेटे की बीवी से निकाह करने को हराम जानते थे।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को यह ख़याल हो रहा था कि अगर मैंने ज़ैद की तलाक़ शुदा बीवी से निकाह कर लिया तो अरब के जाहिल एतिराज़ करेंगे और यूँ कहेंगे कि देखो अपने बेटे की बीवी से निकाह कर लिया।

जब अल्लाह तआला ने **وَمَا جَعَلَ أَدْعَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ** फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारा असली बेटा करार नहीं दिया तो अब ज़ैद की तलाक़ शुदा बीवी ज़ैनब से निकाह करने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए। जब अल्लाह तआला ने हलाल करार दिया तो जाहिलों के एतिराज़ का ख़याल करना और उन के तअन व तश्नीअ से डरना आप (सल्ल०) के मक़ामे बलन्दी के ख़िलाफ़ था।

अल्लाह तआला ने जिस चीज़ को हलाल करार दिया है उसे ख़ूब स्पष्ट तरीक़े पर हलाल बताना चाहिए अमल से भी और क़ौल से भी, ताकि हुक्म शरई पूरी तरह साफ़ हो जाये और अहले ईमान के दिलों में इस के हलाल होने के बारे में कोई शक व शुब्हा और कसक बाकी न रहे।

आप के दिल में जो लोगों के एतिराज़ का ख़याल आया, अल्लाह तआला ने उस पर पकड़ फ़रमाई और इश्राद फ़रमाया,

**وَلْيَخْشَ النَّاسُ اللَّهَ ذِي الْقُوَّةِ الْعَظِيمَةِ** (और आप लोगों से डर रहे थे और आप को यह हक़ है कि अल्लाह से डरें।)

**فَأَمَّا قُضِيَ زَيْدٌ وَمِنْهَا وَطَرًا وَجُنْكُهَا**

(फिर जब ज़ैद उस से अपनी हाज़त पूरी कर चुका तो हम ने उस औरत का निकाह आप से कर दिया।)

हाज़त पूरी करने का मतलब यह है कि ज़ैनब की तरफ़ से बिल्कुल ही दिल भर गया और उन्हें निकाह में रखने की ज़रा सी भी ख़्वाहिश नहीं रही और आख़िरकार अलैहिदगी के तकाज़े पर अमल कर ही लिया और तलाक़ दे दी।

**قال صاحب الروح فكانة قيل فلما قضى زيد حاجته من**

**نكاحها فطلقها وانقضت عدتها فلم يكن في قلبه ميل اليها ولا**

**وحشة من فراقها**

**لأن لا يكون على المؤمنين حرج في الزواج آدمياً منهم إن طلقوا ومنهن وطراً**

(ताकि मुसलमानों पर अपने मुँह बोले बेटों की बीवियों के बारे में कोई तंगी न रहे जब वह उन से

हाजत पूरी कर चुकें।)

यानी तलाक़ दे दें और इद्दत गुज़र जाए। इस में यह बताया कि मुँह बोले बेटों की तलाक़ शुदा बीवियों से निकाह जायज़ हो जाना आप (सल्ल०) के अमल से भी ज़ाहिर हो जाये और आप की उम्मत के लोग अपने मुँह बोले बेटों की बीवियों से निकाह करने के बारे में ज़रा भी दिल में तंगी महसूस न करें और अगर तलाक़ शुदा या बेवा औरतों से निकाह करने की चाहत हो और कोई दूसरी शरई रुकावट न हो तो बिला तकल्लुफ़ उन से निकाह कर सकते हैं।

وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مُتَعَوِّذًا (और अल्लाह का हुक्म पूरा होने वाला ही था) यानी अल्लाह तआला ने यह तय फ़रमा दिया था कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को आप (सल्ल०) के निकाह में ज़रूर आना है, चुनाँचे जो अल्लाह तआला का फैसला था वह पूरा होकर ही रहा और इस में जो शरअी हुक्म था, अपने नबी (सल्ल०) के अमल से उस के जायज़ होने का फैसला करा दिया।

‘सुन्नत तिमिज़ी’ में है कि हज़रत आईशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया कि अगर रसूलुल्लाह (सल्ल०) व्ह्य का कुछ भी हिस्सा छुपा सकते तो आयते करीमा **وَأَذِّنْ لِلْبَيْنِ الْعَمِّ لِلَّهِ عَلَيْهِ** (आख़िर तक) को ज़रूरी छुपा लेते (जिस में अल्लाह तआला की तरफ़ से आप को मुख़ातब फ़रमाकर **وَأَخْطَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ يَخْشَاهُ** फ़रमाया है।)

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ

(नबी पर इस बारे में कोई तंगी नहीं है जो अल्लाह ने उन के लिए मुकर्रर फ़रमा दिया।)

यानी अल्लाह तआला ने अपने नबी के लिए जो तय फ़रमा दिया और हलाल करार दे दिया उसके बारे में नबी पर कोई पकड़ नहीं। जब अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई इल्ज़ाम नहीं तो मख़्लूक को एतिराज़ करने और बुरा कहने का कोई हक़ नहीं।

سَلَّمَ اللَّهُ فِي الَّذِينَ خَلَقُوا مِنْ قَبْلُ

(जो लोग इन से पहले गुज़रे हैं अल्लाह तआला ने उन का यही तरीका रखा है) यानी पिछले अम्बिया-ए-किराम (अलै०) के साथ अल्लाह तआला का यही मामला रहा है कि उन के लिए बहुत सी चीज़ों को हलाल करार दिया उन पर उन्होंने बेतकल्लुफ़ अमल किया और मख़्लूक के बुरा भला कहने का बिल्कुल ख़याल नहीं किया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने भी इसी पर अमल किया और अल्लाह तआला की तरफ़ से जो औरत आप (सल्ल०) के लिए हलाल थी उसे अपने निकाह में ले लिया।

قال صاحب الروح: سنة الله اى سن الله تعالى ذلك سنة فهو مصدر

منصوب بفعل مقدر من لفظه، والجملة مؤكدة لما قبلها من نفى الحرج

فى الذين من قبل، اى من قبلك من الانبياء عليهم الصلوة والسلام من

حيث لم يخرج جل شأنه عليهم فى الاقدام على ما حللهم ووسع لهم فى

باب النكاح وغيره. (भाग 22 से 27)



وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ فَعْلًا مَّقْضِيًّا (और अल्लाह का हुक्म मुकर्रर किया हुआ है) यह पिछली बातों की ताकीद है और मतलब यह है कि जब अल्लाह तआला ने कोई बात तय कर दी है कि ऐसा होना ही है और फ़लाँ हुक्म देना है और इस पर अमल कराना है तो इस का वजूद भी ज़रूरी है और शरई उसूल के मुताबिक उस का हलाल होना और जायज़ होना भी ज़ाहिर करना है बस ऐसी सूरत में किसी को एतिराज़ करने का कोई हक़ नहीं है।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَلَأَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ يَخْشَوْنَ

(जो अल्लाह के पैग़ामों को पहुँचाते हैं और अल्लाह से डरते हैं।)

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَلَأَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ يَخْشَوْنَ (और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते) यह الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ की सिफ़त है यानी अल्लाह तआला ने जो हुक्म मुकर्रर फ़रमा दिया है उस पर बिना किसी झिझक के अमल कर लिया।

यह हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम वस्सलाम का तरीक़ा रहा है, उन हज़रात की शान यह थी कि अल्लाह तआला के पैग़ामों की तब्लीग़ करते थे और सिर्फ़ अल्लाह तआला से डरते थे, मख़्लूक की किसी किस्म की कोई मलामत उन्हें तब्लीग़े हक़ से नहीं रोकती थी, वह कौल से भी और अमल कर के भी दिखाते थे। وَالَّذِينَ يَخْشَوْنَ (और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला)

जो लोग आप पर आरोप लगा रहे हैं आप उन के आरोप से ग़मज़दा न हों, अल्लाह तआला को सब के आ़माल का इल्म है और वह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। वह जब हिसाब लेगा तो उन्हें उन के बुरे आ़माल की सज़ा देगा।

**नोट-** इस्लाम में कुप्व (बराबरी) की भी रिआयत रखी गई है जिस का मतलब बराबरी का है। हज़रात अली (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “ऐ अली! तीन चीज़ें ऐसी हैं जब उन का वक़्त आ जाये तो उन में देरी न की जाए”।

(i) जब नमाज़ का वक़्त हो जाये।

(ii) जब जनाज़ा हाज़िर हो जाये।

(iii) जब बेनिकाही औरत के लिए उस के बराबर का आदमी मिल जाए। (तिर्मिज़ी पेज नं० 52)

मतलब यह है कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाये तो उस की अदायगी में देर न करे और जब जनाज़ा हाज़िर हो जाये तो नमाज़ जनाज़ा अदा कर के उसे फ़ौरन दफ़्न कर दे और जब कोई औरत बे-शौहर की हो (चाहे कुंवारी हो, तलाक़ शुदा हो या उस का शौहर मर गया हो) जब उस के मेल का आदमी मिल जाये तो उस मर्द से उस का निकाह कर दे।

इस से मालूम हुआ कि मर्द औरत की बराबरी और आपसी मेल का देखना भी दीनी और शरई बात है। यह मेल और बराबरी आज़ाद होने में, मुसलमान होने में, दीनदार होने में, पेशों में और माल में देखी जाएगी। कुप्व का लिहाज़ इसलिए रखा गया है कि औरत और उस के औलिया को लोग आर न दिलाएँ

कि घटिया आदमी से उस का निकाह हो गया, तफ़सीलात फ़िक्र: की किताबों में मौजूद हैं।

यहाँ इस सवाल का जवाब देना नहीं है कि जब हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा और उन के भाई ने हज़रत ज़ैद (रज़ि०) से निकाह के बारे में यह उज़्र पेश कर दिया कि ज़ैद (रज़ि०) ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के मेल के नहीं हैं क्योंकि वह कुरैशी भी नहीं और उन में गुलामी का धब्बा भी लगा हुआ है, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन का उज़्र क्यों कुबूल नहीं फ़रमाया?

### कुफ़्व की पाबन्दी-

बात यह है कि शरीअत में कुफ़्व का एतिबार तो है, लेकिन बाज़ मर्तब: दूसरी मस्लिहत ऐसी होती हैं जिन की वजह से कुफ़्व का ख़याल छोड़ देना मुनासिब मालूम होता है। चूँकि यहाँ एक बात तय थी जो अल्लाह तआला के इल्म में थी, कि ज़ैद (रज़ि०) से ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हो जाने के बाद तलाक़ हो, फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह हो, जिस से क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों पर न सिर्फ़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) के कौल से बल्कि अमल से यह बात साफ़ हो जाये कि मुँह बोले बेटे की बीवी से उस की तलाक़ और इदत के बाद निकाह किया जा सकता है।

अमली तअलीम व तब्बीग़ के पेशेनज़र 'कुफ़्व' की मस्लिहत को छोड़ दिया गया और आप (सल्ल०) ने ज़ैनब और उन के भाई को हुक्म दिया कि ज़ैद का ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह हो जाने में कोई बहस न करें और आप ने जो पैग़ाम दिया है उसे कुबूल कर लें। चूँकि आप का यह हुक्म हुक्म था, बतौर मश्वरा एक राय नहीं थी इसलिए आयते करीमा में इस से इन्कार करने को गुनाह फ़रमाया और फ़रमाया,

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا

फिर यह बात भी काबिले ज़िक्र है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मर्तब: हर मोमिन के अपने नफ़्स से भी ज़्यादा है जिसे **النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ** में बता दिया है। इस सूरत में आप (सल्ल०) के हुक्म को मानना ही लाज़िम था।

अगर अमीरुल् मोमिनीन, कोई भी बादशाह, हाकिम, माँ या बाप रसूलुल्लाह (सल्ल०) के फ़रमान के खिलाफ़ हुक्म दें या खुद किसी औरत व मर्द का नफ़्स आप (सल्ल०) के हुक्म के खिलाफ़ करना चाहे तो आप के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी जायज़ नहीं।

आप (सल्ल०) ने जो हुक्म दे दिया और वह दर्जा वजूब में हो तो उस पर अमल करना ही करना है। अगर आप का कोई हुक्म आम मुसलमानों के लिए मुस्तहब हो और आप किसी मुसलमान को उस के बारे में बतौर वाजिब हुक्म दे दें तो उस मुसलमान को उस पर अमल करना ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब फ़रमाया,

وَيُخَوِّطُ النَّاسَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ أَنْ تُخْلَفَ

इस से मालूम हुआ कि हमेशा अल्लाह तआला के हुक्म पर नज़र रखना चाहिए। लोग क्या कहेंगे इस को न देखें। कुर्आन और हदीस में जो हुक्म हो उस पर नज़र रखे।

जो लोग उल्मा, मुबल्लिग़ और दाअी हों खुसूसियत के साथ इस का ख़याल रखना चाहिए। आजकल

लोगों का यह मिज़ाज बना हुआ है कि शर्ई अहकाम को इस डर से छोड़ देते हैं कि लोग क्या कहेंगे, लिबास में, शादी और मरने-जीने की रस्मों में अ़वाम ही को खुश करने के काम करते हैं और शरीअत की ख़िलाफ़वर्जी करते हैं।

अच्छे-अच्छे नेक और नमाज़ी शादी में ख़िलाफ़े शरअ़ बातें कर लेते हैं। जब तवज्जोह दिलाई जाती है तो कह देते हैं कि क्या करें जी! दौर ही ऐसा है, मख़्लूक को राज़ी रखना पड़ता है।

लोगों की बातों का ख़याल करना और अल्लाह तआला के हक्मों की ख़िलाफ़वर्जी करना दअ़वा-ए-ईमान के सरासर उलटा है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किसी हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी नहीं की थी, लेकिन लोगों के कहने सुनने का ख़याल आ गया था। इस पर अल्लाह तआला ने पकड़ फ़रमा दी क्योंकि ऐसा ख़याल करना भी आप की शान के ख़िलाफ़ था।

हाँ, बाज़ मर्तब: ऐसा होता है कि किसी अ़मल के करने से लोगों के ग़लतफ़हमी में मुब्तिला होने का और उस की वजह से उन के दीन व ईमान में नुक़सान का ख़तरा होता है, सो अगर वह अ़मल पसंदीदा हो, लेकिन शरीअत के हुक्म जैसा उस पर अ़मल करता हो तो उसे छोड़ देना चाहिए।

जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत आइशा सिदीका रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि अगर तुम्हारी क़ौम (कुरैश) नई-नई मुसलमान न हुई होती तो मैं कअ़ब: शरीफ़ को फिर से तअ़मीर कर देता और ह़तीम को तअ़मीर के अन्दर छत वाले हिस्से में शामिल कर लेता और कअ़ब: शरीफ़ के दरवाज़े से बता देता।

लेकिन आप ने उस को अच्छा अ़मल जानते हुए भी नहीं किया, ताकि कहने वाले यह न कहें कि देखो! यह कैसा नबी है कि कअ़ब: शरीफ़ को गिरा दिया।

चूँकि आप को नई तअ़मीर का हुक्म नहीं दिया गया था, इसलिए आप ने उस को छोड़ दिया और इस में यह ह़िक्मत थी कि जिन लोगों को कअ़ब: शरीफ़ के अन्दर दाख़िला मुयस्सर न हो वह ह़तीम में दाख़िल हो जाएँ। इस में दाख़िल होना भी कअ़ब: ही के हुक्म में है, क्योंकि ह़तीम भी कअ़ब: शरीफ़ का हिस्सा है।

### कुर्आन मजीद में नाम-

हज़रत ज़ैद बिन हारसा (रज़ि०) को यह शर्फ़ हासिल है कि उन का नाम कुर्आन मजीद में आया है, आप के अ़लावा किसी सहाबी का नाम कुर्आन मजीद में नाम नहीं। हुक्म कुर्आनी اُدْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ की वजह से मुसलमानों ने उन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद कहना छोड़ दिया और इस तरह से वह एक बहुत बड़े लक़ब से महरूम हो गये।

लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें दूसरी तरह से उन का नाम कुर्आन मजीद में नाज़िल फ़रमा दिया। जब भी कुर्आन की तिलावत की जाएगी जिस में शब्द قُرْआَنُ आया है तो कुर्आन ह़कीम के हर शब्द पर दस नेकियाँ मिलने के वादे के मुताबिक़ इस शब्द को पढ़ने पर तीस नेकियाँ मिल जाएँगी।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन की इस तरह भी दिलदारी फ़रमाई कि उन्हें जिस लश्कर में भेजते थे तो उन्हें उस लश्कर का अमीर बना देते थे। 8 हिज़्री में 55 साल की उम्र में ग़ज़्व-ए-मुवत्ता में उन्होंने शहादत पाई, उस वक़्त भी वह लश्कर के अमीर थे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बाज़ मर्तब: उन्हें अपने पीछे मदीना मुनव्वरह का अमीर भी बनाया और अपनी आख़िरी उम्र में उन के बेटे हज़रत उसामा (रज़ि०) को भी एक लश्कर का अमीर बनाया था, फिर उस लश्कर को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने रवाना फ़रमाया।

40

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

### खातिमुन्नबीय्यीन

इस आयते करीमा में पहले तो यह फ़रमाया कि तुम में जो मर्द हैं यानी बालिग़ लोग हैं, मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन में से किसी के नसबी (नसली) बाप नहीं हैं। इस में इस बात का इन्कार है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) किसी भी ऐसे शख्स के वालिद हों जो बुढ़ापे की आख़िरी सीमा में दाख़िल हो गया हो, उस में ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) के पिता होने का भी इन्कार हो गया।

आयत में यह बता दिया गया कि नसबी वालिद होने से जो बाप बेटे के दर्मियान शरअी हुक्म होते हैं, जैसे मीरास जारी होना और हुर्मते मुसाहिरत (शादी के बाद बीवी के घर वालों से) साबित होना, आप (सल्ल०) के और ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) या किसी भी सहाबी के दर्मियान उन में से कोई हुक्म भी जारी नहीं है।

इसलिए फ़रमाया कि आप (सल्ल०) चार बेटियों के बाप थे जो आप (सल्ल०) के सामने बालिग़ भी हुई और उन की शादियाँ भी हुई।

हज़रत सय्यदह फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के अलावा बाकी साहबज़ादियों की आप के सामने वफ़ात भी हो गई। आप (सल्ल०) की वफ़ात के छः माह बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की भी वफ़ात (देहान्त) हो गई।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की नस्ल हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नस्ल से चली, आप (सल्ल०) की औलाद में बेटे भी थे, लेकिन चूँकि वह सब बचपन ही में वफ़ात पा गये इसलिए इस बात में कोई सवाल ही नहीं रहा कि आप बालिग़ मर्दों में से किसी के बाप हैं।

दूसरी बात यह बताई कि यानी वह किसी बालिग़ मर्द के नसबी बाप नहीं हैं, लेकिन रूहानी बाप हैं यानी अल्लाह तआला के रसूल हैं। बहैसियत रसूल होने के सारी उम्मत पर फ़र्ज़ है कि आप पर ईमान लाएँ और आप की इज्जत का हमेशा लिहाज़ रखें और साथ ही आप (सल्ल०) को खातिमुन्नबीय्यीन (आख़िरी नबी) भी बताया और यह एलान फ़रमा दिया कि आप आख़िरी नबी हैं और आप के बाद कोई भी नबी क़ियामत तक आने वाला नहीं है।

इस बात से यह स्पष्ट हो गया कि आप की रूहानी नुबूव्वत नसबी नुबूव्वत से कहीं ज़्यादा अफ़ज़ल है और आप (सल्ल०) की मौजूदगी में जो सहाबा (रज़ि०) थे सिर्फ़ उन्हीं के लिए नहीं बल्कि आप

खातिमुन्नबीय्यीन (आखिरी नबी) हैं, क़ियामत तक आप के बाद कोई नबी आने वाला नहीं है लिहाज़ा मौजूदा लोग उन की आने वाली नस्लें और उन के अ़लावा जो भी कौमें और लोग मर्द और औरत आप पर ईमान लाएँगे आप सब के रूहानी बाप हैं। आप की यह फ़ज़ीलत इस से कहीं ज़्यादा है कि अपनी दुनिया वाली ज़िन्दगी में चन्द लोगों के नसबी बाप होते।

قال صاحب الروح فكانه قيل: (ما كان مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ) بحيث تثبت

بينه وبينه حرمة المصاهرة ولكن كان ابا كل واحد منكم و ابا ابناءكم وهذا الى يوم

القيامة بحيث يحب له عليكم وعلى من تناسل منكم احترامه وتوقيره ويجب عليه

لكم ولن تناسل منكم الشفقة والنصح الكامل

आप (सल्ल०) से पहले जो अम्बिया और रसूल अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाते थे वह ख़ास कौम के लिए और थोड़े वक़्त के लिए तशरीफ़ लाया करते थे, खातिमुन्नबीय्यीन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) क़ियामत तक तमाम जिन्नात, तमाम इन्सानों, तमाम कौमों, कबीलों (कुन्बों) तमाम ज़मानों और तमाम मकानों के बसने वालों के लिए रसूल हैं और नबी हैं क्योंकि नबी आम हैं और रसूल ख़ास हैं।

(जैसा कि पहले बयान किया गया कि रसूल कहते हैं नई साहिबे शरीअत वाले को और नबी हर पैग़म्बर को कहते हैं। नई साहिबे शरीअत हो या न हो) लिहाज़ा खातिमुन्नबीय्यीन (आखिरी नबी) फ़रमाने से आप के खातिमुर्सूल (आखिरी नबी) होने का भी ए़लान हो गया। सूर: सबा में फ़रमाया,

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا قُرْآنًا بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(और हम ने आप को नहीं भेजा, मगर तमाम इन्सानों के लिए बशीर (खुशख़बरी देने वाला) और नज़ीर (डराने वाला) बनाकर लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते।)

ख़ुलासा यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी पर नुबूव्वत के गुणों वाला होना भी नई नुबूव्वत दिया जाना ख़त्म हो गया और सिलसिल-ए-नुबूव्वत आप की ज़ाते गिरामी पर पूरा हो गया।

### ख़त्मे नुबूव्वत के मुन्किर (इन्कारी)

आप (सल्ल०) के बाद जो भी शख्स नुबूव्वत का दावा करे वह झूठा, गुमराह, काफ़िर और उस की तस्दीक़ करने वाले भी गुमराह और काफ़िर हैं और आयते कुर्आनिया के मुन्किर हैं। जिस में इस बात का ए़लान फ़रमा दिया कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) खातिमुन्नबीय्यीन (आखिरी नबी) है।

हदीस में स्पष्ट तौर पर यह बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर नुबूव्वत और रिसालत ख़त्म है। बाज़ लोगों ने कुर्आन व हदीस के बयान के बावजूद नुबूव्वत का दावा किया, वह खुद भी काफ़िर हुए और अपने मानने वालों को भी कुफ़्र पर डाला।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) (भाग 3 पेज नं० 494) बहुत सी अहदीस नक्ल करने के बाद लिखते हैं:-

فمن رحمة الله تعالى بالعباد ارسال محمد صلى الله عليه وسلم اليهم ثم من  
تشریفه لهم ختم الانبياء والمرسلين به واكمال الدين الحنيف له وقدا خير  
الله تبارك وتعالى في كتابه ورسوله صلى الله عليه وسلم في السنة  
المتواتره عنه انه لا نبي بعده ليعلموا ان كل من ادعى هذا المقام بعده فهو  
كذاب افاك دجال ضال مضل ولو تحرق وشعبذ واتى بانواع السحر  
والطلاسم والنير تحيات فكلها محال وضلال عند اولي الباب.

याद रहे कि ख़ातिमुन्नबीय्यीन ख़ातिम (त के ज़बर के साथ) मुहर के मअने में आता है और ख़ातिम (त के ज़ेर के साथ) सीगा इस्मे फ़ेअल है जिस का मअना है ख़त्म करने वाला।

दोनों क़िरातों का माना एक ही है यानी आख़िरी अम्बिया, बस सय्यदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) ख़ातिमुन्नबीय्यीन (आख़िरी नबी) हैं यानी आप (सल्ल०) के आने से सिलसिल-ए-नुबूव्वत ख़त्म हो गया और ख़ातिमुन्नबीय्यीन भी हैं यानी आप की ज़ाते गिरामी को नबियों के लिए मुहर बना दिया गया। जैसे मुहर आख़िर में लगाई जाती है, उसी तरह आप (सल्ल०) पर सिलसिल-ए-नुबूव्वत ख़त्म हो गया और अब आप के बाद कोई नबी आने वाला नहीं।

यह दूसरी क़िरात जो 'ता' के ज़ेर के साथ है क़िरात मुतवातिरह है, इस का इन्कार भी कुफ़्र है। हम ने खुसूसियत के साथ यह क़िरात इसलिए ज़िक्र की है कि बाज़ लोगों ने ख़ातिमुन्नबीय्यीन (बफ़तह त) का तर्जुमः अफ़ज़लुन्नबीय्यीन कर के हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ख़ातिमुल् अम्बिया होने का इन्कार किया।

### कादियानी-

पिछली सदी में पंजाब के एक आदमी (मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी) ने नुबूव्वत का दावा कर दिया था। नसारा को इस से अपना मक्सद निकालना मक्सूद था, उन्होंने इस से शरअी जिहाद मन्सूख़ (निरस्त) करने का एलान कराया, उसे और उस के मानने वालों को दुनियावी लालच देकर अपना हामी बना लिया, दुनिया के तालिब उस शख्स की झूठी नुबूव्वत का इक़्रार करते चले गये और जब उन के सामने आयते कुर्आनिया **وَلَكِنْ رَسُولُ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ** पेश की गई तो तरह-तरह की तावीलें कर के उस को रद्द कर दिया और आयत के मअानी और मतलब को अपनी तरफ़ से बना लिए और नुबूव्वत की किस्में बना लीं, हकीकी और ज़िल्ली व बरोज़ी की तक्सीम जारी कर दी, अब भी इन लोगों की जमाअत मौजूद है जो इस्लाम, कुर्आन और मुसलमानों की दुश्मनी में बराबर लगी हुई हैं।

अल्लाह तअाला उम्मत मुस्लिमा को उन के शर से बचाए। यह एक मोटी सी बात है कि जो शख्स कुर्आन करीम की किसी आयत का मुन्किर हो वह नबी तो क्या होगा कम दर्जे का मुसलमान भी नहीं, वह तो काफ़िर है। तमाम मुसलमानों को चाहिए कि इन से चौकन्ना रहें, यह लोग ईमान के डाकू होते हैं।



وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

(और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।)

इस में क़ुर्आनी एलान की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने वालों के लिए तम्बीह और नसीहत है। जो लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नुबूवत के बाद किसी दूसरे शख्स की नुबूवत के कायल हैं या इस्लाम के ख़िलाफ़ भी कोई अक़ीदा रखते हैं, ऐसे लोग यह न समझें कि यह दुनिया ही सब कुछ है, अल्लाह तआला को सब का हाल ज़ाहिर व बातिन, अक़ीदा व अमल मालूम हैं वह उस के मुताबिक़ सज़ा देगा। दुनिया के लिए ग़लत अक़ीदा अपनाने और इन्कार करने वाले अल्लाह तआला की पकड़ से ग़ाफ़िल न हों।

### हज़रत ईसा (अलै०) का आना-

وَإِنَّهُ لَعَلَّمُ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ أَوْ يَكُونُ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۝

से यह बात मालूम होती है कि हज़रत ईसा (अलै०) क़ियामत से पहले तशरीफ़ लाएँगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे, तमाम अहले सुन्नत वल् जमाअत का इस पर इज्माअ (सहमति) है। चूँकि वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शरीअत (कानून) के पाबन्द होंगे, आप (सल्ल०) ही की शरीअत पर अमल करेंगे, उम्मत मुहम्मदिया से भी इसी शरीअत पर अमल कराएँगे और वह आप (सल्ल०) के तशरीफ़ लाने से पहले ही नबी थे। ऐसा नहीं कि वह नई नुबूवत लेकर आएँगे, बल्कि वह पहले ही से नबी हैं जिन्हें ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया गया था।

दुनिया में आकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे और शादी कर के मुसलमानों के साथ रह कर वफ़ात (मौत) पा जाएँगे। इस से मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़ातिमुन्नबीय़ीन होने पर कोई असर नहीं पड़ता। शरीअते मुहम्मदिया में जिज़्या लेना दुरुस्त है, वह उसे मन्सूख़ (ख़त्म) कर देंगे। इस मन्सूख़ (ख़त्म) करने की ख़बर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ही दे दी, इसलिए यह भी आप (सल्ल०) ही का मन्सूख़ (ख़त्म) करना हुआ।

‘हाफ़िज़ जलालुद्दीन सियोती’ (रह०) ने ‘नुज़ूले ईसा बिन मरयम आख़िरुज़्ज़माँ’ के नाम से एक रिसाला लिखा है, इस में ‘मुअज़मुल् कबीर अल् तब्रानी’ और ‘किताबुल् बअस वल् नुशूर लिल् बैहकी’ से हदीस नक़ल की है और इस की सनद जय्यद बताई है, जिस में इस बात की तस्रीह है कि हज़रत ईसा (अलै०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मिल्लत पर होंगे। हदीस के अल्फ़ाज़ में है-

عن عبد الله بن مغفل رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه

وسلم يلبث الدجال ما شاء الله ثم ينزل عيسى بن مريم مصدقا بحمد

على ملته اماما مهديا وحكما عدلا فيقتل الدجال

‘सहीह बुख़ारी’ में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इश्आद फ़रमाया:-

{बाबु नुज़ूल ईसा (अलै०) पेज नं० 490} وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَيُوشِكُنْ أَنْ يَنْزَلَ فِيكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلًا

शब्द हक़्मन की तशरीह करते हुए हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ‘फ़तूहुल् बारी’ भाग 6 पेज नं० 491 में लिखते हैं:-

والمعنى انه ينزل حاكما بهذه الشريعة فان هذه الشريعة باقية لا  
تسخ بل يكون عيسى عليه السلام حاكماً وفيه رواية الليث عن ابن  
شهاب عند مسلم حاكماً مقسطاً للطبراني من حديث عند الله بن  
مغفل ينزل عيسى ابن مريم مصداً بمحمد على ملته.

**इमाम नव्वी (रह०) शरह मुस्लिम में लिखते हैं:-**

ای ينزل حاکماً بهذه الشريعة لا ينزل نبیاً برسالة مستقلة وشريعة

ناسخة بل هو حاکم من حکام هذه الامة (87 नं० पेज 1 भाग मुस्लिम सहीह)

मतलब यह है कि हज़रत ईसा (अलै०) नाज़िल होंगे और शरीअते इस्लामिया मुहम्मदिया के मुताबिक़ ही फैसला देंगे, मुस्तक़िल शरीअत लेकर नहीं आएँगे जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शरीअत को मन्सूख़ कर दे, वह इसी उम्मत में से एक होंगे।

कादियानी आयते करीमा की तस्रीह का इन्कार करने की वजह से काफ़िर है और इस वजह से भी काफ़िर है कि उन्होंने 'खातिमुन्नबीय्यीन' के मअना में उलट-फेर किया है और इस का मअना 'अफ़ज़लुन्नबीय्यीन' बताया है। उन जाहिलों को मालूम नहीं कि क़िराअत में एक क़िराअत 'ता' के ज़ेर के साथ भी है और इस का इन्कार करना भी कुफ़्र है।

### कादियानियों का झूठ-

कादियानियों ने ख़त्मे नुबूवत का इन्कार करने के लिए एक यह बात निकाली थी कि चूँकि हज़रत मसीह (अलै०) के तशरीफ़ लाने की ख़बर है, इसलिए नुबूवत का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ और हम जिसे नबी मानते हैं वही मसीह हैं। इन लोगों के लिए यही काफ़ी है कि कुर्आन मजीद में हज़रत ईसा (अलै०) को जगह-जगह मसीह इब्ने मरयम फ़रमाया है।

दुनिया जानती है और कादियानियों को भी इस का इल्म है कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी की माँ का नाम मरियम नहीं था।

यह लोग यूँ भी कहते हैं कि हज़रत ईसा (अलै०) के तशरीफ़ लाने का अक़ीदा इस बात को ज़ाहिर करता है कि सय्यदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) पर नुबूवत ख़त्म नहीं हुई। इन लोगों को इस बात की तर्दीद (इन्कार) हज़रात मुफ़स्सरीन-ए-किराम और उलमा पहले ही कर चुके और उन्होंने बता दिया कि हज़रत ईसा (अलै०) मुस्तक़िल रिसालत व नुबूवत के साथ नहीं आएँगे, वह इसी शरीअते मुहम्मदिया के मुताबिक़ अमल करेंगे, जबकि कादियानी सय्यदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) के दीन व शरीअत पर नहीं है। अगर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दीन व शरीअत पर होते तो जिहाद को क्यों मन्सूख़ (ख़त्म) करते, जिहाद को मन्सूख़ करना ही तो मिर्ज़ा कादियानी का अस्ल कारनामा है जो उस ने नुबूवत का दावा कराने वाली हुकूमतों को खुश करने के लिए अन्जाम दिया था।

## आयत नं० 41 से 50 तक

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۚ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝ تَجِيبُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَاعِدَ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَبِرَاجٍ مُّبِينٍ ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَثِيرًا ۝ وَلَا تَطْعَمُ الْكُفْرِينَ وَالنَّفَاقِينَ وَدَعِ أَذْهَبَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكُلِّي بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا ۚ فَمَشْهُوهُنَّ وَسَبْحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنْ أَقْوَائِهِ ۚ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَدَّتْ عَمْرُكَ وَبَدَّتْ خَالِكَ وَبَدَّتْ خَالَتِكَ الَّتِي هَاجَرَكَ مَعَكَ ۚ وَأَمْرًا ۚ مُؤْمِنَةً ۚ إِنْ وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

### अनुवाद-

(41) ऐ ईमान वालो! अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया करो। (42) और सुबह व शाम 'उसकी' तस्बीह (पाकी) बयान किया करो; (43) 'वही' तो है जो तुम पर रहमत भेजता है और 'उसके' फरिश्ते भी, ताकि 'वह' तुम्हें अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, और (अल्लाह) ईमान वालों पर बहुत मेहरबान है। (44) जिस दिन वह 'उससे' (अल्लाह) मिलेंगे उनका स्वागत सलाम से होगा और उनके लिए इज़्ज़त वाला बदला तैयार कर रखा है। (45) ऐ नबी! 'हमने' आप को गवाही और खुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है। (46) और अल्लाह की इजाज़त से 'उसकी' ओर बुलाने वाला और रोशन चिराग़ (बनाया है)। (47) और ईमान वालों को खुशख़बरी दे दीजिए, "उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ा फज़ल (अनुग्रह) है"। (48) और काफ़िरों और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, उनकी पहुँचायी हुई तकलीफ़ की परवाह न कीजिए। और अल्लाह पर भरोसा रखिए, अल्लाह इस बात के लिए काफ़ी है कि 'उसपर' भरोसा किया जाए। (49) ऐ ईमान लाने वालो! जब तुम ईमान लाने वाली औरतों से निकाह करो, और उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम को कुछ अख़्तियार नहीं कि उनसे इद्दत पूरी कराओ, उनको कुछ दे दिला कर अच्छे तरीके से विदा कर दो। (50) ऐ नबी! 'हमने' आप के लिए आप की पत्नियों को जायज़ कर दिया, जिनके महर आप अदा कर चुके हैं, और उन औरतों को भी जो अल्लाह के दिये हुए 'माल-ए-ग़नीमत' में से आप की मिल्कियत में आई, और आप के चचा की बेटियाँ और आपके फूफियों की बेटियाँ और आपके मामुओं की बेटियाँ और आपके ख़ालाओं की बेटियाँ, जिन्होंने आपके साथ हिजरत की, और वह ईमान वाली औरतें जो अपने आप को नबी के लिए (निकाह में) दे दें, बशर्त कि नबी उनको अपने निकाह में लाना चाहें, ईमान वालों से हट कर यह केवल आप ही के लिए है, 'हमको' मालूम है कि 'हमने' उनकी पत्नियों और उनकी मम्लूक औरतों (दासियों) के बारे में जो निश्चित किया है ताकि आप पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला रहम वाला है।

## आयत नं० 41 से 50 तक की व्याख्या

41-44

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوا بِحَمْدِهِ وَأَصْبِلُوا ۖ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَىكُمْ  
وَمَلَائِكَتُهُ يُخْرِجُكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۖ تَجِيبُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۗ  
وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۖ

### अल्लाह का ज़िक्र

यह चार आयत का तर्जुमः है। पहली और दूसरी आयत में अहले ईमान को हुक्म दिया गया है कि अल्लाह तआला का खूब ज़िक्र करें और सुबह व शाम उस की तस्बीह बयान करें। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि सुबह व शाम तस्बीह बयान करने का मतलब यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करें और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि सुबह से दिन की और शाम से रात की शुरुआत होती है, इसलिए खुसूसियत से रात और दिन के शुरु के वक्तों में ज़िक्र करने का हुक्म दिया, ताकि रात व दिन के बाकी अवकात में भी ज़िक्र के लिए ज़ेहन हज़िर रहे और दिल व ज़बान अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल रहें।

### अल्लाह के ज़िक्र के फ़ज़ायल-

हकीकत में अल्लाह तआला का ज़िक्र बहुत बड़ी अ़िबादत है और हर वक्त उस में मशगूल रहने की ज़रूरत है। सूरः निसा (आयत नं० 103) में फ़रमाया:-

فَإِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قَلِيلًا وَكَثِيرًا

सो जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे अपने पहलुओं पर यानी लेटे हुए। इन्सान की यही तीन हालतें हैं और इन तीनों हालतों में अल्लाह का ज़िक्र करने का हुक्म दिया गया है।

हकीकत में ज़िक्र ही इस दुनिया की जान और इस के बाकी रहने का ज़रिया है। 'सहीह मुस्लिम' भाग एक पेज नं० 24 में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत कायम न होगी जब तक ज़मीन में अल्लाह-अल्लाह कहा जाता रहेगा। दूसरी अ़िबादतों की रुह भी अल्लाह का ज़िक्र ही है।

सूरः ताहा (आयत नं० 14) में फ़रमाया है:-

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي नमाज़ को मेरी याद के लिए कायम करो। ज़िक्र ज़बान से भी होता है और दिल से भी और अल्लाह तआला के ज़िक्र से दिलों को इत्मिनान और चैन व सुकून मिलता है।

जैसा कि सूरः रअद (आयत नं० 28) में फ़रमाया:-

أَلَا يَذْكُرُ اللَّهُ تَظَنُّونَ الْفَالْسُ ख़बरदार अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मिनान नसीब होता है।

हज़रत अबू मूसा अश़अरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, مثل اللّٰهُ يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ كَمَثَلِ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ

है और जो याद नहीं करता ज़िन्दा और मुर्दा की सी मिसाल है। (रवाहुल् बुख़ारी)

मालूम हुआ कि खाते-पीते रहना और दुनियावी कामों में ज़िन्दगी गुज़ार लेना यह कोई ज़िन्दगी नहीं है। ज़िन्दा वह लोग हैं जो अल्लाह तआला की याद में लगे रहते हैं, जहाँ तक मुम्किन हो लेटे-बैटे और खड़े अल्लाह को याद करते रहें और ज़बान को ज़िक्रुल्लाह में लगाये रहें।

एक हदीस में फ़रमाया, कि जन्नत वालों को किसी भी चीज़ की हसूरत न होगी सिवाय उस एक घड़ी के जो दुनिया में अल्लाह की याद किये बग़ैर गुज़र गई होगी।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि चन्द लोग किसी जगह बैठे हों और उन्होंने अपनी मजलिस में अल्लाह का ज़िक्र न किया हो और अपने नबी पर दुरूद न भेजा हो तो यह मजलिस उन के लिए नुक्सान का ज़रिया होगी, फिर अगर अल्लाह चाहे तो उन को अज़ाब दे और अगर चाहे तो उन की मफ़िरत फ़रमा दे और अगर कोई शख्स किसी जगह लेटा और उसने लेटने में अल्लाह को याद न किया तो यह लेटना उस के लिए नुक्सान का ज़रिया होगा।

जो शख्स किसी जगह चला और इस चलने में उस ने अल्लाह को याद न किया तो अल्लाह की तरफ़ से उस का चलना नुक्सान का ज़रिया होगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग किसी जगह बैठे, जिस में उन्होंने अल्लाह को याद न किया और अपने नबी पर दुरूद न भेजा, तो क़ियामत के दिन उन का यह बैठना अफ़सोस का ज़रिया होगा। (अल् तर्गीब वल् तरहीब भाग 2 पेज नं० 409,410)

अक्लमन्द बन्दे वही हैं जो अपनी उम्र की एक घड़ी भी बेकार नहीं जाने देते, दुनिया में जीने के लिए जो थोड़े बहुत काम की ज़रूरत है उस में थोड़ा बहुत वक़्त लगाया और उस में भी अल्लाह का ज़िक्र करते रहे। इस के बाद सारे वक़्त को अल्लाह की याद, तिलावत, तस्बीह, तहलील, तम्हीद और दुरूद शरीफ़ में लगाते रहते हैं, लायअनी बातों में मशगूल होकर अपना वक़्त ज़ाया नहीं करते और अपने दिल का नास नहीं करते।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा न बोला करो, क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बोलना दिल की सख़्ती का ज़रिया है और बिलाशुब्हा लोगों में अल्लाह से सब से ज़्यादा दूर वही शख्स है जिस का दिल सख़्त हो। (तिर्मिज़ी)

उम्मुल् मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी का हर बोल उस के लिए वबाल है सिवाय इस बात के कि भलाई का हुक्म दे या किसी बुराई से रोके या अल्लाह का ज़िक्र करे। (रवाहु तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिस्म (रज़ि०) से रिवायत है कि एक अअराबी यानी देहात का रहने वाला रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और उस ने सवाल किया कि लोगों में सब से बेहतर कौन है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जिस की उम्र लम्बी हो और अमाल अच्छे हों। उस ने अर्ज किया, कि कौन सा अमल अफ़ज़ल है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, यह कि तू दुनिया से इस हाल में रुख़सत हो कि तेरी

ज़बान अल्लाह की याद में तर हो। (तिर्मिज़ी)

सूर: ताहा में फ़रमाया **اقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي** (नमाज़ कायम कर मेरे ज़िक्र के लिए।)

नमाज़ से पहले अज़ान भी ज़िक्र है और इक़ामत भी। इसी तरह अज़ान का जवाब, वुजू की दुआ, फ़र्ज़ों से पहले सुन्नतों, फिर तक्बीरे तहरीमा से लेकर सलाम फेरने तक नमाज़ी बराबर नमाज़ में मशगूल रहता है, कभी अल्लाह की हम्द व सना में मशगूल रहता है, कभी तक्बीर कहता है, कभी कुर्आन मजीद की तिलावत करता है, कभी अल्लाह की हम्द बयान करता है, कभी ज़िक्र के कलिमात अदा करता है और अपने रब को हर तरह के ऐब से पाक करता है। उस के बारे में अपना अक़ीदा ज़ाहिर करता और कभी दुआ माँगता है, नमाज़ी की ज़बान भी अल्लाह की याद में लगी हुई है और उस के साथ-साथ दिल भी अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल है, दिल हाज़िर है, कभी क़ियाम में क़िरात है तो कभी रुकूअ में तस्बीह, कभी तम्हीद है तो कभी सज्द: पेशानी ज़मीन पर रख दी और अल्लाह तआला की तस्बीह में मशगूल हो गया।

बन्दा के पास बन्दगी के लिए इस से ज़्यादा कुछ नहीं है कि अपने सर को मिट्टी पर रख दे और अपने करीम रब के सामने अपनी ज़ात को बिल्कुल ज़लील कर के पेश कर दे। फिर नमाज़ के बाद सुन्नत व नवाफ़िल भी ज़िक्र हैं और नमाज़ के बाद तस्बीहात भी, हकीकत में पाँचों नमाज़ों अल्लाह तआला की याद की तरफ़ खींचती हैं, मोमिन की ज़िन्दगी सरापा ज़िक्र है।

नमाज़े जुमअ से फ़ारिग होकर बाज़ार में जाने की इजाज़त दी और कसूरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र करने का हुक्म फ़रमाया। सूर: जुमअ: (आयत नं० 10) में इर्शाद फ़रमाया:-

**إِذَا قُمِيتِ الصَّلَاةُ فَانْتَبِهُوا إِلَى الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ**

(फिर जब नमाज़ पूरी कर चुको तो ज़मीन पर चलो फिरो, अल्लाह के फ़ज़ल को तलाश करो और अल्लाह को ख़ूब ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम फ़लाह (कामियाबी) पाओ।

**अल्लाह तआला ज़िक्र करने वालों को याद फ़रमाता है-**

सूर: बक़र: (आयत नं० 152) में फ़रमाया:-

**فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ** (सो तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूँगा।)

कितनी बड़ी सआदत है कि ज़मीन पर रहने वाला जिस के अन्दर खून वगैरह भरा हुआ है उसे साहिबे अर्श दरबार में याद फ़रमाए।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआला का फ़रमान है कि मैं अपने बन्दे के साथ हूँ जब वह मुझे याद करता है और मेरी याद में उस के होंठ मिलते हैं। (रवाहुल बुख़ारी)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ होता हूँ कि वह जब चाहे मुझे याद करे। सो अगर वह मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं उसे तन्हा याद करता हूँ और अगर वह मुझे किसी जमाअत में याद करता



है तो मैं उसे उस जमाअत में याद करता हूँ जो इस जमाअत से बेहतर होती है। जिस में उस ने मुझे याद किया। (रवाहुल् बुख़ारी)

हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से कैसी बेहतर बात नक्ल फ़रमाई:-  
उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर जो अ़िबादात फ़र्ज़ फ़रमाई हैं उन की हद मुक़र्रर और अस्हाबे उज़्र को माफ़ी या कमी की सूरत में मअज़ूर करार दिया है, मगर ज़िक्रुल्लाह ऐसी अ़िबादात है कि इस की न कोई हद और तअदाद है, न कोई ख़ास वक़्त और ज़माना मुक़र्रर है, न उस के लिए कोई ख़ास खड़े होने या बैठने की मुक़र्रर फ़रमाई है न इस के लिए बावुजू होना शर्त है, हर वक़्त और हर हाल में बक़सूरत अल्लाह तआला का ज़िक्र करने का हुक्म है।

सफ़र हो या हज़र, तन्दुरुस्ती हो या बीमारी, खुशकी में हो या दरिया में, रात हो या दिन हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करते रहें, इसीलिए इस के छोड़ने में इन्सान का कोई उज़्र नहीं, केवल इस के कि अक्ल व हवास ही न रहें और बेहोश हो जाए।

तीसरी आयत में फ़रमाया:-

﴿وَالَّذِينَ يُسَلِّطُونَ عَلَيْهِمُ الْأَشْيَاءَ﴾ कि अल्लाह तआला तुम पर अपनी रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए इस्तिफ़ार करते रहें) इस में जो शब्द يُسَلِّطُونَ आया है उस की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ भी है और फ़रिश्तों की तरफ़ भी। बाज़ लोगों ने फ़रमाया कि सलात की निस्बत जो अल्लाह तआला की तरफ़ है उस से रहमत मुराद है।

यानी ऐ मोमिनो! अल्लाह तुम पर रहमत भेजता है और फ़रिश्तों की तरफ़ जो सलात की निस्बत है उस से इस्तिफ़ार मुराद है। इस का यह मतलब होता है कि अल्लाह के फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआ करते हैं (कما فى سورة المومن: وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا) फ़रमाया ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا﴾ कि तुम पर अल्लाह की रहमत होना और तुम्हारे लिए फ़रिश्तों का इस्तिफ़ार करना इसलिए है कि अल्लाह तुम्हें अन्धेरो से रौशनियों की तरफ़ निकाले यानी जिहालत और गुमराही के अन्धेरो से निकाल कर हिदायत और यकीन के नूर से मुनव्वर फ़रमाए।

﴿وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا﴾

“और अल्लाह मोमिनीन पर रहम फ़रमाने वाला है”।

यानी वह अहले ईमान पर दुनिया में भी रहम फ़रमाता है और आख़िरत में भी रहम फ़रमाएगा, दुनिया में ईमान की दौलत से नवाज़ा, कुफ़्र और शिर्क से और बिद्अत से बचाया, खाने-पीने और पहनने और बरतने के लिए पाकीज़ह चीज़ें अता फ़रमाई और आख़िरत में उन्हें अम्न, चैन, इत्मिनान और निजात अता फ़रमाएगा, जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और फ़रिश्ते बशारत देते हुए उन से मुलाकात करेंगे।

चौथी आयत में फ़रमाया:-

﴿تَجِيئُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ سَالِمًا﴾

जिस दिन अल्लाह से मुलाकात करेंगे उन का तहिय्या सलाम होगा।

यानी अल्लाह की तरफ़ से उन पर सलाम भेजा जाएगा।

وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۖ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَعَرِّفُوا بَعْضَ آلَاءِ اللَّهِ

(और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि इस से रुह क़ब्ज़ होने के वक़्त का तहिय्या मुराद है, क्योंकि जब फ़रिश्ता मोमिन बन्दे की रुह क़ब्ज़ करने के लिए आता है तो सलाम कहकर ख़िताब करता है।  
(रुह उन इब्ने मसऊद रज़ि०)

وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا (और अल्लाह ने उन के लिए अज़्रे करीम तैयार फ़रमाया है) यानी उन के लिए इज़्ज़त वाला सवाब तैयार फ़रमाया है।

मुफ़ससरीन इब्ने कसीर (रह०) फ़रमाते हैं कि अज़्रे करीम से ज़न्त, वहाँ की नेअमतें और हर तरह की लज़्ज़तें मुराद हैं। पहले तो ज़न्त का दाख़िला ही बड़ा इकराम व इज़्ज़त का है, फिर उस में जो कुछ पेश किया जाएगा वह भी इज़्ज़त के साथ पेश होगा, वहाँ हमेशा इज़्ज़तदार ही रहेंगे।

**45-48** يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَهِيدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَيَسْرًا مُنِيرًا ۖ وَبَشِيرَ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذُنَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۖ

यह चार आयत का तर्जुमः है। पहली दो आयतों में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सिफ़ात बयान फ़रमाई गई हैं, तीसरी आयत में आप को बशारत देने का हुक्म दिया गया है, चौथी आयत में काफ़िरों और मुनाफ़िकों का कहा न मानने और उन से जो तकलीफ़ें पहुँचीं उन की तरफ़ ध्यान न देने का और अल्लाह पर भरोसा करने का हुक्म फ़रमाया है।

पहले तो यूँ फ़रमाया कि ऐ नबी! हम ने आप को गवाह बनाकर भेजा, शाहिद गवाह को कहते हैं। सूरः बकरः (आयत नं० 43) में फ़रमाया है:

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۖ

(और इसी तरह हम ने तुम को एक ऐसी जमाअत बना दिया जो एतितदाल वाली है ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाए) और सूरः निसा (आयत नं० 41) में फ़रमाया:

كَيْفَ إِذَا جَاءَ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ يَشْفِيهِمْ وَجُئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا

(सो क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएँगे और आप (सल्ल०) को उन पर गवाह बनाएँगे) और सूरः हज़ (आयत नं० 78) में फ़रमाया:

لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ

(ताकि रसूल तुम पर गवाह हो जाएँ और तुम लोगों के मुक़ाबिले में गवाह बन जाओ।)

इन आयतों से मालूम हुआ कि आप क़ियामत के दिन अपने से पहली उम्मतों के बारे में गवाही देंगे।

सूरः बकरः और सूरः निसा की आयत में जो कुछ लिखा है उस को देख लिया जाए।

फिर फ़रमाया **وَمُبَشِّرًا** कि आप को बशारत देने वाला बनाकर भेजा। अहले ईमान को ईमान का फ़ायदा और नेक आ़माल की खुशख़बरी देना आप के कामों में शामिल है। **وَنَذِيرًا** और आप को डराने वाला बनाकर भेजा।

जैसा कि अहले ईमान को बशारत देना आप के फ़रायज़ में से है, इसी तरह इन्कारी और गुनाहगारों को डराना भी अल्लाह तआला की तरफ़ से आप के ज़िम्मे किया गया है।

अरब व अजम के लिए तमाम दीन वालों के लिए अल्लाह तआला ने आप को बशीर व नज़ीर बनाकर भेजा। सूर: सबा (आयत नं० 28) में इर्शाद फ़रमाया:

**وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا قَدْرًا لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا**

(और हम ने तो आप को तमाम लोगों के वास्ते पैग़म्बर बनाकर भेजा है खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तमाम इन्सानों को और तमाम दीन वालों को ईमान कुबूल करने पर आख़िरत के भलाई की बशारत दी और ईमान से अलग होने पर आख़िरत के अज़ाब से बाख़बर फ़रमाया। यहूद व नसारा भी इसी में शामिल हैं, जो अपने पास आसमानी दीन होने का दावा करते हैं।

सूर: माइदा (आयत नं० 19) में फ़रमाया:

**يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى قُرْآنٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ  
قَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ**

(ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे यह रसूल आ पहुँचे जो तुम को साफ़-साफ़ बतलाते हैं, ऐसे वक़्त में कि रसूलों का सिल्सिला बन्द था, ताकि तुम यूँ न कहने लगे कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला, डराने वाला नहीं आया सो तुम्हारे पास बशीर और नज़ीर आ चुके हैं और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुद़रत रखते हैं।)

कुर्आन करीम में अल्लाह तआला ने नबी अकरम (सल्ल०) को बशीर और नज़ीर के गुण से मिला हुआ फ़रमाया है और आप (सल्ल०) को शाहिद (गवाह) भी बताया है, तौरैत शरीफ़ में भी आप (सल्ल०) की यह सिफ़ात बयान फ़रमाई गई है।

‘सहीह बुख़ारी’ भाग 1 पेज नं० 285 में हज़रत अता बिन यसार से मरवी है कि उन्होंने बयान किया मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर व बिन आ़स (रज़ि०) से मुलाक़ात की और अर्ज़ किया कि तौरैत में जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सिफ़ात बयान की गई है उस से मुझे बाख़बर फ़रमाइए। उन्होंने फ़रमाया जो आप की सिफ़ात कुर्आन शरीफ़ में बयान की गई हैं उन में से बाज़ सिफ़ात तौरैत में भी हैं।

**يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَهِيدًا وَ مُبَشِّرًا وَ نَذِيرًا** ऐ नबी! हम ने आप को गवाह बनाकर और खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा। (यह कुर्आन का तर्जुमः है) और तौरैत में यह बातें भी हैं कि आप (सल्ल०) को उम्मीय्यीन यानी अरब की हिफ़ाज़त करने वाला बनाकर भेजा, तू मेरा बन्दा है मैंने तेरा नाम ‘मुतवक्किल’ रखा जो नर्म तबीयत और सख़्त मिज़ाज नहीं है और बाज़ारों में शोर मचाने वाला नहीं और जो बुराई का बदला बुराई से नहीं देता, लेकिन माफ़ करता है और बख़्श देता है और अल्लाह उसे नहीं

उठाएगा जब तक कि उस के ज़रिये टेढ़ी मिल्लत को सीधी न कर दे इस तरह से कि वह लोग لا اله الا الله कहेंगे और उस के ज़रिये उन की अन्धी आँखों को खोल देगा और बहरे कानों को और गिलाफ़ चढ़े हुए दिलों को खोल देगा।

وَدَاعِيًا إِلَى الشَّرِّ

“और हम ने आप को अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला भेजा अल्लाह के हुक्म से”।

आप सारे इन्सानों और सारे जिन्नात को तौहीद की तरफ़ और अल्लाह तअ़ाला की अ़िबादत की तरफ़ बुलाने वाले हैं, आप ने बड़ी मेहनत से अल्लाह की तरफ़ बुलाया और अल्लाह का बोलबाला किया और इस बारे में बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें उठाईं।

इस में जो शब्द يَدْعِيًا आया है उस के बारे में साहिबे रुहुल् मअ़ानी लिखते हैं:

ای بتسهيله وتيسره تعالى يانی االله تاللا ने दअ़वत का काम आप के लिए आसान कर दिया, तकलीफ़ें बर्दाश्त करते हुए आप आगे बढ़ते रहे और आप (सल्ल०) के सामने ही उम्मत मुस्लिमा की भारी तअ़दाद वजूद में आ गई। दअ़वत का काम हमेशा जारी रखा जाए आप की उम्मत भी इस की मुख़ातब है। सूर: आले इमरान (आयत नं० 104) में फ़रमाया है:

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَالْأَمْرِ وَالنَّهْيِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْبَغْيِ

“और तुम में से ऐसी जमाअत हो जो ख़ैर की तरफ़ बुलाते हों और भलाई का हुक्म देते हो और बुराईयों से रोकते हैं”।

आप (सल्ल०) की सिफ़ात (गुण) बयान फ़रमाते हुए आयत के ख़त्म पर وَسِرَاجًا مُنِيرًا भी फ़रमाया यानी हम ने आप को रौशन चिराग़ बनाकर भेजा, उस चिराग़ की वजह से लोग जिहालत व गुमराही की तारीकियों (अन्धेरी) से निकलते हैं और हिदायत हासिल करते हैं।

आप को سِرَاجًا مُنِيرًا से तश्बीह देने में इस तरफ़ इशारा है कि आप (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी से सिर्फ़ आप के ज़माने में इन्सानों और जिन्नात ही ने रौशनी हासिल नहीं की, बल्कि आप के बाद भी यह रौशनी रहेगी और आप के उलूम और अ़ामाल को पहचानने वाले बराबर रहेंगे।

जिस तरह एक चिराग़ से बहुत से चिराग़ रौशन हो जाते हैं, फिर उन चिराग़ों से दूसरे चिराग़ों को रौशनी मिलती चली जाती है, उसी तरह आप का नूर हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को मिला, फिर उन्होंने उसे आगे बढ़ाया और आज तक हर उस्ताद से शार्गिद तक पहुँच रहा है और आप (सल्ल०) के जलाये हुए चिराग़ों से बराबर चिराग़ रौशन हैं।

यानी आप की रौशनी सूरज की रौशनी से कहीं ज़्यादा है, लेकिन चूँकि हमेशा से सूरज एक ही सूरज है फिर उसकी रौशनी सूरज नहीं, रात को अन्धेरा हो जाता है और उस से रौशनी हासिल करना बन्दों के अख़्तियार में भी नहीं, इसलिए आप की ज़ाते गिरामी को सिराजे मुनीर से तश्बीह (संज्ञा) देना मुनासिब हुआ, एक चिराग़ से बहुत से चिराग़ जल सकते हैं और जिस वक़्त चाहें उस से रौशनी हासिल कर सकते हैं।

फिर फ़रमाया कि आप अहले ईमान को खुशख़बरी सुना दें उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़ल है, वह फ़ज़ल दुनिया में ईमान की दौलत से और आख़िरत में ज़न्नत में दाख़िल होने और वहाँ की नेअमतों से नवाजना है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “पिछली कौमों (यहूद व नसारा) के मुक़ाबिले में तुम्हारा ज़माना ऐसा है जैसे- अस्त्र से गुरुब-ए-शम्स (सूरज के डूबने) का वक़्त। अहले तौरेत को तौरेत दी गई, उन्होंने (सुबह से) दोपहर तक मज़दूरी की फिर थक गये तो उन्हें एक-एक कीरात मिला अहले इन्जील को इन्जील दी गई। उन्होंने (दोपहर से) अस्त्र की नमाज़ तक मज़दूरी की फिर थक गये उन्हें भी एक-एक कीरात मिला। फिर हम मुसलमानों को कुर्आन दिया गया, हम ने सूरज के डूबने तक मज़दूरी की (और काम पूरा किया) तो हमें दो कीरात दिये गये”। (बुख़ारी)

फिर फ़रमाया **وَلَا تُطِيعُ الْكُفْرَ وَالنَّفَقَينِ** (और आप काफ़िरों और मुनाफ़िकों का कहा न मानिये।)

उन्हें यह ग़वारा नहीं है कि आप दअवत इलल्लाह का काम करें और जो काम आप के सुपर्द किया गया है यानी बशारत और डराने का आप उसे छोड़ दें। इस सिलसिले में आप उन की कोई बात न मानें और किसी तरह की परवाह न करें।

قال صاحب الروح: نهى عن مداراتهم فى امر الدعوة ولين الجانب فى التبليغ والمسامحة فى الانذار.

**وَدَّعَ أَذْيَهُمُ** (और उन की तक्लीफ़ों को छोड़िए) यानी उन की तरफ़ से जो तक्लीफ़ें आप को पहुँची हैं उन की परवाह न कीजिए और उन पर सब्र कीजिए।

**وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ** (और अल्लाह पर भरोसा कीजिए) वही मदद फ़रमाएगा।

**وَكُلِّىْ بِاللّٰهِ وَكِيلًا** (और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है) सब कुछ उसी के सुपर्द कीजिए, वही नफ़ा व नुक़सान का मालिक है, दुश्मनों की तक्लीफ़ों से भी बचाएगा और आप को ख़ैरियत और अफ़ियत से भी रखेगा।

49

**يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عَدَاةٍ تَعْتَدُونَهَا ۚ فَبَيِّعُوهُنَّ وَسِرَّوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝**

### इद्दत के कुछ मसाल

शरीअते इस्लामिया में निकाह, तलाक़, महेर, नफ़का और तलाक़ के बाद इद्दत गुज़ारने के बहुत से अहक़ाम हैं, जो कुर्आन मजीद में कई जगह आये हैं और फुक्हा-ए-किराम ने इन को अपनी किताबों में लिखा है। निकाह तो बहुत मुबारक और बेहतर क़दम है और कुछ सूरतों में वाजिब भी होता है और तलाक़ भी शरीअते इस्लामिया में है, लेकिन इसे नपसन्दीदा क़रार दिया है। अगर कोई शख़्स किसी औरत से निकाह कर ले जिस से निकाह हलाल हो तो निकाह हो जाता है, अब वह उस के निकाह से उसी वक़्त निकलेगी जब यह शख़्स मर जाए या ‘तलाक़ बायन’ या ‘मुबाहिला’ दे दे या ‘तलाक़ रजई’ देकर इद्दत गुज़रने तक रुजूअ न करे।

शब्द **इदत** **عَدَّتْ** से बना है जिस का मअना है शुमार करना, चूँकि तलाक़शुदा और बेवा को महीने और हैज़ शुमार करने होते हैं, ताकि उन के बाद किसी दूसरे मर्द से निकाह कर सके, इसलिए दूसरे निकाह के इन्तिज़ार के ज़माने को इदत कहा जाता है। जिस किसी मर्द ने निकाह कर के जिमाअ (सम्भोग) कर लिया, फिर किसी वजह से तलाक़ दे दी और औरत ऐसी है जिसे हैज़ आता है हामिला भी नहीं है तो उस की इदत तीन हैज़ है।

अगर औरत हैज़ वाली नहीं है, तो उस के इदत की मुदत तीन महीने है और जिस औरत की हालते हमल में तलाक़ हो जाए उस की इदत वज़अ हमल (बच्चे की पैदाइश) पर ख़त्म हो जाएगी और जिस मन्कूहा (जिसका निकाह हो गया हो) औरत का शौहर मर जाए जो हमल वाली न हो तो उस की इदत चार माह दस दिन है। शौहर ने उस से जिमाअ (सम्भोग) किया हो या न किया हो और अगर हमल वाली है तो उस की इदत हमल ख़त्म होने तक है।

अगर किसी औरत से निकाह किया और उस से जिमाअ (सम्भोग) करने से पहले ही तलाक़ दे दी तो कोई इदत वाजिब नहीं यानी ऐसी औरत तलाक़ होने के साथ ही किसी दूसरे मर्द से निकाह कर सकती है।

तलाक़ देने वाले शौहर को कोई हक़ नहीं कि उस को इदत गुज़ारने को कहे और दूसरी जगह निकाह करने से रोके, बल्कि उसे चाहिए कि कुछ माल भी दे दे। शब्द **مَّأْن** माल को कहते हैं, इस में कितना माल देना है? सूर: बकर: (आयत नं० 237) में इस को बयान फ़रमाया:

**وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَأَلَّا تَرْبِطُوا لَهُنَّ قَرْصَةً فَرْصَةٌ مِمَّا قَرَضْتُمْ**

यानी अगर तुम उन्हें इस से पहले तलाक़ दे दो कि उन्हें हाथ लगाओ और हाल यह है कि उन के लिए महेर मुक़र्रर कर चुके हो तो जो कुछ मुक़र्रर किया है उस का आधा दे दो और अगर हाथ लगाए बग़ैर तलाक़ दे दी और महेर मुक़र्रर नहीं किया था तो एक जोड़ा कपड़ा देना वाजिब है।

सूर: बकर: की इन आयात से पहले जो **وَمِمَّا يُغْتَنُّونَ** फ़रमाया है, इस से यही मुराद है।

फुक्हा की ज़बान में इस को 'मताअ' कहते हैं, यह जोड़ा तीन कपड़ों पर होगा एक ख़ूब बड़ी चादर जिस में सर से पांव तक लिपट सके। दूसरे दुपट्टा, तीसरा कुर्ता और यह मताअ मर्द की हैसियत के मुताबिक़ दिया जाएगा और अगर किसी औरत से निकाह के बाद जिमाअ कर लिया, लेकिन महेर मुक़र्रर नहीं किया गया तो ऐसी सूरत में 'महेर मिस्ल' वाजिब होता है।

अगर किसी औरत से निकाह किया भी हो और उस के साथ जिमाअ (सम्भोग) भी किया और फिर तलाक़ दे दी और हाल यह है कि महेर भी मुक़र्रर किया था, तो ऐसी सूरत में पूरा महेर देना वाजिब होगा।

'हन्फ़ी उल्मा' और 'हम्बली उल्मा' के नज़दीक जिमाअ (सम्भोग) और ख़िल्वते सहीहा (तन्हाई) का एक ही हुक्म है यानी निकाह शुदा औरत से ख़िल्वते सहीहा (तन्हाई) हो गई तो उस में भी इदत वाजिब हो गई और मुक़र्ररह महेर भी पूरा देना होगा।

आख़िर में फ़रमाया **وَسَرَّيْنَهُنَّ سَرَاجَيْنِ** (और उन्हें ख़ूबी के साथ छोड़ दो)

यानी उन्हें तंग न करो, उन का हक़ आधा महेर खुशदिली के साथ और कोई सख़्त बात न कहो और उस का जो हक़ दे चुके हो वह वापस न लो।



50

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنَّا أَفَاءَ اللَّهِ عَلَيْكَ وَبَنَاتُ عَمِكَ وَبَنَاتُ خَالَكَ وَبَنَاتُ خَالَتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً قُؤُومَتَهُ إِنْ وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

## निकाह से सम्बन्धित बातें

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कई औरतों से निकाह फ़रमाया, जिन के नाम आयते करीमा **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنِ أَرَزَوُا جُزْءَ الْخِيَارِ الْبَائِي** की व्याख्या में बयान किये जा चुके हैं।

उन बीवियों में अक्सर बीवियाँ मुहाजिरा थीं, अल्बत्ता हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा बिनत हुर्द बिन अख़्तब यहूद ख़ैबर के कैदियों में से और हज़रत ज़ैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा ग़ज़-ए-बनू मुस्तलिक के कैदियों में से थीं।

इन बीवियों को इस आयत **الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ** में बयान फ़रमाया और आप की कुछ बांदियाँ भी थीं, जिन्हें **وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنَّا أَفَاءَ اللَّهِ عَلَيْكَ** में बयान फ़रमाया, उन बाँदियों में से हज़रत मारिया किब्तिया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा थीं जिन से हज़रत इब्राहीम (रज़ि०) पैदा हुए और ज़माने रज़ाअत में ही वफ़ात पा गये।

इस में फ़रमाया कि ऐ नबी! हम ने आप के लिए आप की बीवियाँ हलाल कर दीं, यह वह बीवियाँ हैं जिन्हें आप उनके महेर अदा कर चुके हैं, महेर अदा करना बीवी वाले तअ़ल्लुकात हलाल होने की शर्त नहीं, लेकिन जितने जल्दी अदा कर सके बेहतर है। खासतौर से महेर मुअज़्जल (तुरन्त) तो बीवी वाले तअ़ल्लुक कायम करने से पहले ही दे दें।

قال صاحب الروح: وتقييد الاحلاله باطائها معجلة ليس لتوقف الحل عليه بل لا يشار

الافضل له صلى الله عليه وسلم فان في التعجيل براءة الذمة وطيب النفس ولذا كان سنة

السلف لا يعرف منهم غيره.

साथ ही यह भी फ़रमाया कि हम ने आप के लिए आप के चचा की लड़कियाँ, आप की फूफियों की लड़कियाँ, आप के मामू की लड़कियाँ और आप की खालाओं की लड़कियाँ हलाल कर दीं, जिन्होंने आप के साथ हिजरत की।

इस विषय को **وَبَنَاتُ عَمِكَ وَبَنَاتُ خَالَكَ وَبَنَاتُ خَالَتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ** में बयान फ़रमाया है। अल्लाह तअ़ाला ने आप के लिए उन रिश्तेदारों की बेटियाँ हलाल तो फ़रमा दीं, लेकिन उन में से आप के निकाह में सिर्फ़ हज़रत ज़ैनब बिनते जह़श रज़ियल्लाहु अन्हा आई जो आप की फूफी की बेटी थीं।

चचा की बेटियों में से आप (सल्ल०) के निकाह में कोई बीबी नहीं आई, उन में से हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं जो आप के चचा अबू तालिब की बेटी और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब

(रज़ि०) की बहन थीं, आप ने मक्का में उन को निकाह का पैगाम दिया था उस वक्त उन्होंने उज़्र पेश कर दिया, वह फ़रमाती हैं कि जब ऊपर वाली आयत नाज़िल हुई तो मैं आप के लिए हलाल न थी क्योंकि मैं हिजरत करने वाली औरतों में से न थी। (तिर्मिज़ी)

‘उम्मे हानी बिनत अबी तालिब’ कहती हैं, “रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मेरी ओर निकाह के लिए पैगाम भेजा। मैंने मअज़रत कर दी, आप (सल्ल०) ने मअज़रत कुबूल कर ली तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। मैं आप (सल्ल०) के लिए हलाल न थी क्योंकि मैंने हिजरत न की थी।” (तिर्मिज़ी)

### हज़रत उम्मे हानी-

हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा फ़तेह मक्का के दिन मुसलमान हुई थीं, वह उन औरतों में से न थीं जिन्होंने पहले से इस्लाम कुबूल कर के मदीना मुनव्वरह को हिजरत की थी।

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि किसी औरत का मुहाजिर होना हिल्लत की शर्त नहीं थी। हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह जो फ़रमाया कि मैं ऊपर वाली आयत नाज़िल होने के बाद आप (सल्ल०) के लिए हलाल न थी क्योंकि मैं मुहाजिरात में से न थी, यह उन्होंने इज्तिहाद से फ़रमाया, लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने हिजरत को शर्त हिल्लत करार दिया। (कमा रवाहु अबु तिमिज़ी फ़ी तफ़सीर)

और **أَلَيْسَ هَاجِرُنَ الْيَك** हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की वालिदा मदीना मुनव्वरह ही की थीं, इसलिए उन के भाईयों और बहनों की हिज़रत करने का सवाल ही पैदा नहीं होता, फिर सीरत की किताबों से आप (सल्ल०) के मामू, ख़ालाओं की बेटियों और उन की औलाद का पता नहीं चलता।

यानी ‘साहिबे रूहुल् मअानी’ ने बाज़ मामूओं और ख़ालाओं का ज़िक्र किया है, लेकिन उन में से किसी की बेटी से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का निकाह नहीं हुआ और हर हाल में आयत के विषय पर कोई शक नहीं क्योंकि आयत में तो चचा, फूफी, मामू और ख़ाला की बेटियों से निकाह करने की इजाज़त दी है कोई चीज़ वाजिब नहीं है और यूँ भी कहा जा सकता है कि आप (सल्ल०) को ख़िताब फ़रमाकर आप की उम्मत को बताया गया है।

तुम्हारे लिए चचा, फूफी, ख़ाला और मामू की लड़कियों से निकाह करना दुरुस्त है। जैसा कि **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّتُوهُنَّ لِحَدِّتِهِنَّ** में मुसलमानों को भी तलाक़ देने का सुन्नत तरीका बताया है बज़ाहिर ख़िताब आप (सल्ल०) को है।

फिर फ़रमाया **وَأَمَّا إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّتُوهُنَّ لِحَدِّتِهِنَّ**

(और वह औरत हलाल की जो बिना बदले के अपनी जान नबी को बख़्श दे अगर पैग़म्बर उस से निकाह करना चाहे न कि मोमिनों के लिए) इस आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह अख़्तियार दिया गया है कि अगर कोई मुसलमान औरत रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अपना नफ़्स हिबा कर दे यानी बिना महेर के आप से निकाह करना चाहें और आप उस से निकाह का इरादा करें तो आप के लिए यह निकाह हलाल है और यह ख़ास आप (सल्ल०) के लिए है, दूसरे मोमिनीन के लिए नहीं। अगर कोई दूसरा मुसलमान किसी औरत से निकाह करना चाहे और औरत यूँ कह दे कि मैं महेर नहीं लूँगी तब भी महेर

देना होगा और 'महेर मिस्ल' के बक्द्र होगा।

आयते करीमा में निकाह के जायज़ होने का ज़िक्र है यानी यह फ़रमाया कि नबी के लिए ऐसी औरत से निकाह करना हलाल है जो बिना महेर के निकाह करने पर राज़ी हो जाए। लेकिन उलूमा-ए-किराम का इस में इख़िलाफ़ है कि क्या ऐसा कोई वाकिआ पेश आया भी था या नहीं यानी क्या आप (सल्ल०) ने किसी ऐसी औरत से निकाह किया जिस ने अपने नफ़्स को बतौर हिबा पेश किया हो और आप ने निकाह फ़रमा लिया हो और महेर न दिया हो।

बाज़ उलूमा ने फ़रमाया कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से आप के लिए जायज़ होने का एलान है, लेकिन ऐसा कोई वाकिआ पेश नहीं आया।

दूसरा फ़रीक़ कहता है कि ऐसे वाकिआत भी पेश आये थे कि बाज़ औरतों को आप ने अपने निकाह में कुबूल फ़रमा लिया और बाज़ को कुबूल फ़रमाने से इन्कार फ़रमा दिया।

बाज़ हज़रात ने हज़रत मैमूना बिनते हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का नाम भी इस सिलसिले में ज़िक्र किया गया है और बाज़ हज़रात ने हज़रत ज़ैनब बिनते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम भी लिया है। 'साहिबे रूहुल् मअानी' ने इन के अलावा दूसरे नाम भी लिखे हैं।

शब्द **امْرَأَةٍ** के साथ जो शब्द **مُؤْمِنَةٍ** फ़रमाया है, उस से हज़रात मुफ़स्सरीन-ए-किराम ने यह समझा है कि किताबी औरतों से नबी अकरम (सल्ल०) को निकाह करना जायज़ नहीं था। दूसरे मुसलमानों के लिए यहूद और नसरानिया से निकाह करना जायज़ है (मगर बेहतर नहीं है) और अगर उन के मेलजोल से अपने ईमान और आमाल में कमी का अन्देशा हो तो बिल्कुल सही नहीं (यह भी असली अहले किताब के लिए नहीं)।

फिर फ़रमाया **قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ**

(हम ने जान लिया जो कुछ हम ने उन पर उन की बीवियों और बांदियों के बारे में अहकाम मुक़र्रर किये) यानी आप के अलावा बाकी मोमिनीन के लिए जो अहकाम हम ने मुक़र्रर किये हैं वह हम जानते हैं, आप के साथ जो खुसूसी अहकाम हैं वह उन में शरीक नहीं हैं। जैसे-

आम मुसलमानों का निकाह बतौर हिबा यानी बग़ैर महेर के नहीं हो सकता और किताबी औरतों से उन्हें निकाह करना जायज़ है। इसी तरह जो मम्लूका बाँदियाँ हैं उन से आम मोमिनीन का निकाह दुरुस्त है।

**لَيْسَ يَكُونُ عَلَيْكَ حَرَجٌ**

(यानी ऊपर जो आप के लिए खुसूसी अहकाम बयान किये गये यह इसलिए हैं कि आप पर कोई तंगी न हो।)

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि इस का तअल्लुक **ان وهبت نفسها** से है। मतलब यह है कि हम ने जो बिना महेर हिबा करने वाली औरत से निकाह करना आप के लिए जायज़ करार दिया यह इसलिए है कि आप पर कोई तंगी न हो।

बाज़ हज़रात ने इन हुक्मों से मुतअल्लिक़ किया है और मतलब यह है कि ऊपर जो अहकाम बयान हुए यह इसलिए हैं कि आप तंगी में न पड़ें।

**وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا** (और अल्लाह माफ़ करने वाला रहीम है) उस की मफ़िरत और रहमत बहुत बड़ी है।

## आयत नं० 51 से 54 तक

ثُرِيَّيْ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۚ وَمِنْ ابْتِغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُمْ وَلَا يَحْزَنَ  
وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ الْإِسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ  
أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ  
النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرِ نَظَرٍ ۚ إِنَّهُ ۖ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ  
لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَعِجِلُ مِنْكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَسْتَعِجِلُ مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ  
ذَلِكُمْ أَظْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ  
عَظِيمًا ۝ أَنْ تَبَدَّلُوا شَيْئًا أَوْ تُخْلَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

### अनुवाद-

(51) आप जिस (पत्नी) को चाहें अलग रखें और जिस को चाहें अपने पास रखें, और जिसको आप अलग रखें उनमें से किसी के इच्छुक हों तो आप के लिए कुछ हर्ज नहीं, यह इसलिए है कि उनकी आँखें ठंडी हों और वे ग़मगीन न हों और जो कुछ भी आप उनको दें वे राजी रहेंगी। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, हलीम (सहनशील) है। (52) इसके बाद आप के लिए दूसरी औरतें जायज़ नहीं और न यह जायज़ है कि उनकी जगह दूसरी पत्नियाँ कर लें, चाहे उनकी सुन्दरता आप को (कितनी ही) अच्छी लगे, सिवाय उनके जो आप की मिल्कियत में हों (अर्थात् दासी) आप को अख़्तियार है, और अल्लाह हर चीज़ का देखने वाला है। (53) ऐ ईमान वाले! नबी के घरों में दाखिल न हुआ करो, मगर यह कि तुम्हें खाने पर आने की इजाज़त दी जाए, वह भी इस तरह कि उसके तैयारी के इन्तिज़ार में न हो, लेकिन तुम्हें बुलाया जाए तो जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठ कर चले जाओ, और बातों में जी लगा कर न बैठे रहो, यह बात नबी को तकलीफ़ देती है। मगर वे तुम से कहने में लज्जा करते हैं, और अल्लाह हक़ बात कहने में लज्जा (संकोच) नहीं करता। और जब तुम्हें नबी की पत्नियों से कोई चीज़ मांगना हो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह तरीका तुम्हारे दिलों के लिए पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी पाकीज़ा है; और तुम्हारे लिए हरगिज़ जायज़ नहीं कि उनको तकलीफ़ पहुँचाओ, और न यह जायज़ है कि इसके बाद भी कभी तुम उनकी पत्नियों से निकाह करो बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी (गम्भीर) बात है। (54) अगर तुम किसी बात को ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ, अल्लाह को तो हर चीज़ का इल्म है।

## आयत नं० 51 से 54 तक की व्याख्या

**51** ثُرِيَّيْ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۚ وَمِنْ ابْتِغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُمْ وَلَا يَحْزَنَ  
وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝

### आप (सल्ल०) को अख़्तियार

ऊपर की आयतों में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब है और यह फ़रमाया गया है कि आप (सल्ल०)

के निकाह में जो औरतें हैं उन में बारी मुकर्रर करने या न करने का आप को अख़्तियार है कि जिस को चाहें बारी देने में शामिल फ़रमा दें और जिस को चाहें शामिल न फ़रमाएँ यानी बीवियों के दर्मियान बारी तक्सीम करना आप पर वाजिब नहीं है जैसा कि उम्मत के लोगों पर वाजिब है।

अगर आप ने किसी को बारी में शुमार नहीं फ़रमाया और उस के बाद फिर उस के लिए बारी मुकर्रर करना चाहें तो फिर से बारी में शामिल फ़रमा सकते हैं।

अल्लाह तआला ने जब आप को यह अख़्तियार दे दिया और आप की बीवियों को यह मालूम हो गया कि आप के लिए दिन मुकर्रर करना वाजिब नहीं है और यह भी मालूम हो गया कि आप जो कुछ उन्हें माल अता फ़रमाएँगे वह भी केवल बरकत के लिए होगा, तो यह सब बातें जानते हुए अगर उन में से किसी को माल न मिला या बारी में शुमार नहीं की गई तो इस से रंजीदा न होंगी, जो कुछ मिलेगा उस से राज़ी रहेंगी और इस से उन की आँखें ठंडी रहेंगी।

बाज़ हज़रात ने **ﷺ** से माल मुराद नहीं लिया, बल्कि उन के दर्मियान बारी मुकर्रर करना और बारी को छोड़ देना मुराद लिया है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ سَائِرَ تَلْوِيْظِهِ

‘साहिबे रुहुल् मआनी’ लिखते हैं कि यह रसूलुल्लाह (सल्ल०) को आप की पाकीज़ा बीवियों रज़ियल्लाहु अन्हा को ख़िताब है और मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जो आप के दिल मुबारक में बाज़ बीवियों की तरफ़ मैलान डाला और अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में जो हुक्म नाज़िल हुआ जिसे उन्होंने खुशी के साथ कुबूल किया।

अल्लाह तआला को इस सब का इल्म है बावजूद यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह इजाज़त थी कि जिसे चाहें दूर रखें और जिसे चाहें क़रीब रखें, फिर भी आप तक्सीम में बराबरी फ़रमाते थे और ग़ैर अख़्तियारी रुझान जो किसी की तरफ़ था उस के बारे में अल्लाह तआला के दरबार में अर्ज़ किया:-

اللّٰهُمَّ هٰذَا قَسَمِيْ فَيَمَّا اَمْلِكُ فَلَا تَلْمَنِيْ فَيَمَّا تَمْلِكُ وَلَا اَمْلِكُ (ऐ अल्लाह! यह मेरी तक्सीम है जो मेरे अख़्तियार में है, लिहाज़ा आप इस पर मलामत न फ़रमाइए जो कि आप के अख़्तियार में है यानी (कल्बी मैलान) और जो मेरे अख़्तियार में नहीं है। (तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) तमाम बीवियों के लिए बारी मुकर्रर करते थे और बराबरी फ़रमाते थे, अल्बत्ता हज़रात सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी बारी हज़रात आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दी थी, इसलिए आप (सल्ल०) उन की बारी हज़रात आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे देते थे और सफ़र में तशरीफ़ ले जाते थे तो कुरअ़ डालते थे, इस तरह आप सब की दिलदारी भी फ़रमाते थे।

हज़रात आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, “जब आप (सल्ल०) को एक बीवी की बारी के दिन दूसरी बीवी के यहाँ जाना होता तो आप बारी वाली बीवी से इजाज़त लिया करते थे”। (बुख़ारी)

**وَكَانَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ رَحِيْمًا** और अल्लाह तआला जानने वाला है उसे सब कुछ मालूम है और हलीम भी है। अगर कोई शख्स अल्लाह के फैसले पर राज़ी न हो उसे सज़ा देने में जल्दी नहीं फ़रमाता।

52

لَا يَحِلُّ لَكَ الْبَسَاءُ مِنْ بَعْدِ وَلَا أَنْ تَبْدَلَ بِهِنَ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَغْنَيْتُكَ عَنْهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ  
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا

### दूसरी बीवियों से निकाह

इस आयत का मतलब ज़ाहिरी शब्दों के एतिबार से यह है कि इस वक़्त (इस आयत के नुज़ूल के वक़्त) जो आप के निकाह में औरतें हैं आप उन्हीं को अपने निकाह में रखें, इन के अलावा किसी औरत से आप को निकाह करना हलाल नहीं है और इस की भी इजाज़त नहीं है कि इन में से किसी औरत को तलाक़ देकर उस की जगह किसी और औरत से निकाह कर लें।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से और दूसरे लोगों से इस की यह तफ़सीर नक़ल की है। हज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने आप की अज़ाजे मुतहहरात (रज़ि०) को अख़्तियार दे दिया कि चाहो तो दुनिया ले लो और चाहो तो मेरे पास रहो।

(जिस का ज़िक्र आयते करीमा **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ فَإِنَّ لَكَ أَزْوَاجًا وَبَنَاتٍ** में गुज़र चुका है) और आप (सल्ल०) की अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हा ने 'नफ़का' की माँग छोड़कर आप ही की ज़ौजियत में रहना पसन्द कर लिया तो अल्लाह तआला ने उन पर यह इन्आम फ़रमाया कि अपने नबी (सल्ल०) के लिए उन्हीं बीवियों के लिए ख़ास फ़रमा दिया जो उस वक़्त आप (सल्ल०) के निकाह में थी, जिन की तअदाद नौ थी उन के सिवा किसी से आप के लिए निकाह जायज़ नहीं रखा गया।

‘साहिबे रूहुल् मअानी’ ने सुनने बैहकी से हज़रत अनस (रज़ि०) का यह क़ौल नक़ल किया है, फिर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से भी यही बात नक़ल की गई है:

(حبسه الله تعالى عليهن كما حبسهن عليه عليه الصلوة والسلام)

जब उन्होंने आप (सल्ल०) की ज़ौजियत में रहने को अख़्तियार कर लिया तो अल्लाह तआला ने उन के ज़ब्बे की क़द्र फ़रमाई और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दे दिया कि उनके निकाह में होते हुए या उन में से किसी को छोड़कर उन के बदले में किसी दूसरी औरत से निकाह करने की इजाज़त नहीं है।

साथ ही **وَأَوْغَيْنَاكَ عَنْهُنَّ** भी फ़रमा दिया यानी उन के अलावा किसी औरत से निकाह करना आप के लिए अब हलाल नहीं है चाहे किसी औरत का हुस्न आप को पसन्द आ जाए।

बाज़ हज़रात ने इस की दूसरी तफ़सीर भी की है, जो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से मन्कूल है और वह यह है कि शुरु आयत में आप के लिए औरतों की जितनी किस्में हलाल थी उन के बाद यानी उन के अलावा किसी और किस्म की औरतों से आप को निकाह करने की इजाज़त नहीं है, अपने ख़ानदान की औरतों में से आप (सल्ल०) के लिए सिर्फ़ वह औरतें हलाल की गईं जो मक्का से हिज़रत कर के मदीना आ गई थीं, ग़ैर मुहाजिरात से आप का निकाह हलाल नहीं रखा गया। इसी तरह अहले किताब से आप



(सल्ल०) का निकाह जायज़ नहीं रखा गया और **مِنْ بَعْدُ** का मतलब यह हुआ कि जितनी किस्में आप के लिए हलाल कर दी गई आप उन्हीं में से किसी औरत से निकाह कर सकते हैं।

अगर यह मतलब लिया जाए तो यह किसी नये हुक्म को दोहराना नहीं है, बल्कि पहले हुक्म ही की तस्दीक है। ऐसी सूरत में आयत का मतलब यह होगा कि आप के निकाह में जो मौजूदा नौ औरतें हैं उन के अलावा किसी और से निकाह दुरुस्त नहीं। अगर पहली तफ़्सीर मुराद ली जाए तब भी इस हुक्म को मन्सूख माना गया है।

उम्मुल् मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि आप का विसाल (इन्तिक़ाल) होने से पहले अल्लाह तआला ने आप के लिए दूसरी औरतों से निकाह की इजाज़त दे दी थी।  
(रवाहुल्लु तिर्मिज़ी फी तफ़्सीर सूर: अहज़ाब)

### कई बीवियों के रखने की हिक्मत

यहूद व नसारा और दूसरे मुश्रिक जिन्हें इस्लाम और मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) से दुश्मनी है, उन का एक एतिराज़ यह है कि मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बहुत सी शादियाँ की थीं और आप के निकाह में बहुत सी बीवियाँ थीं।

हकीकत में सब से पहले बुनियादी बात यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नुबूव्वत के दलायल और आप के मोअजिज़ात को देखना चाहिए जिन में सब से बड़ा मोअजिज़ा कुर्आन करीम है।

कुर्आन करीम ने चैलेन्ज किया है कि कुर्आन जैसी कोई सूर: बनाकर लाओ अगर तुम सच्चे हो! आज जबकि कुर्आन के इस चैलेन्ज को डेढ़ हज़ार साल के करीब हो रहे हैं, कोई शख्स या जमाअत इस की मिसाल नहीं ला सकी और ला भी नहीं सकते क्योंकि कुर्आन ने साथ ही **وَلَنْ تَفْعَلُوا** भी फ़रमा दिया है।

मुहम्मदुरसूलुल्लाह ने मुकम्मल दीन पेश किया, इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम हालात के क़वानीन बताये, आदाब भी बतलाये और अख़्लाक भी सिखाये, जबकि आप (सल्ल०) ने किसी से कुछ भी नहीं पढ़ा था। क्या यह सब चीज़ें इस बात की दलील नहीं हैं कि वाकई आप (सल्ल०) अल्लाह के रसूल और नबी हैं?  
**لكن الناس يعاندون الحق**

जब दलील से साबित हो गया कि मुहम्मदुरसूलुल्लाह (सल्ल०) वाकई और बिला शक व शुब्हा अल्लाह तआला के रसूल हैं और नबी हैं तो आप की हर बात और हर अमल सहीह है, अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के मुवाफ़िक़ है, बन्दों के लिए क़ानून बनाने वाला, हुक्म भेजने वाला और बाज़ को बाज़ हुक्मों से अलग करने वाला वही है, चूँकि वह ख़ालिफ़ और मालिक है और सारे बन्दे उसी की मख़्लूक हैं, इसलिए उसे अख़्तियार है कि जो हुक्म लागू फ़रमाये और जिस अमल की इजाज़त दे दे जो दूसरों के लिए न हो।

इन्हीं बातों में से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लिए कई बीवियों का हलाल होना भी है। आ़म मोमिनीन को अद्ल व इन्साफ़ की शर्त के साथ चार बीवियों की इजाज़त है और आप (सल्ल०) के लिए इस से ज़्यादा निकाह करने की इजाज़त दे दी है।

फिर फ़रमा दिया:

لَا يَحِلُّ لَكَ الْيَسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبْدَلَ بِهِ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَجْنِبَتْ حُسْنُهُنَّ إِنَّكَ مَلَائِكَةُ رَبِّكَ

(इस के बाद आप (सल्ल०) के लिए औरतें हलाल नहीं हैं और न यह हलाल है कि आप उन के बदले दूसरी बीवियाँ हासिल कर लें, चाहे आप को उन का हुस्न भाता हो सिवाय यह कि कोई आप (सल्ल०) की बाँदी हो।

यहाँ यह बात काबिले ज़िक्र है कि अगर आप बिल् फ़र्ज़ अल्लाह के नबी नहीं थे और ज़्यादा बीवियाँ रखना केवल नफ़्सानी ख्वाहिशात के लिए था तो आप ने यह क्यों फ़रमाया कि मुझ पर आयते करीमा **لَا يَحِلُّ لَكَ الْيَسَاءُ مِنْ بَعْدُ** नाज़िल हुई है और मुझे अब आइन्दा निकाह करने से मना फ़रमा दिया गया है।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जो शख्स नफ़्स ही का पाबन्द होगा वह अपने ऊपर ऐसी पाबन्दी क्यों लगाएगा?

हज़रत अली (रज़ि०) ने अर्ज़ किया कि आप के चचा हम्ज़ह (रज़ि०) की फ़लाँ लड़की बहुत खूबसूरत है उस से निकाह फ़रमा लें। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हम्ज़ह (रज़ि०) मेरे रज़ाई भाई हैं उन की लड़की से मेरा निकाह हलाल नहीं है।

इसी तरह बाज़ बीवियों ने अपनी बहन से निकाह करने की गुज़ारिश की जिसे आप (सल्ल०) ने नामन्ज़ूर फ़रमा दिया।

ज़ाहिर है कि जिस को शहवत से मतलब हो वह क़ानून और हराम व हलाल की परवाह नहीं करता खासतौर से जबकि उस की ज़बान से कुछ निकल जाता हो, उस के मानने वालों के नज़्दीक वही क़ानून बन जाता हो।

फिर यह भी समझना चाहिए कि हज़रात सहाबा-ए-किराम सब आप के फ़रमाँबरदार ही नहीं बल्कि जाँनिसार भी थे। अगर आप (सल्ल०) चाहते तो बहुत सी कुंवारी लड़कियों से निकाह हो सकता था, लेकिन आप के निकाह में सिर्फ़ एक बीवी ऐसी थी जिस से कुंवारेपन में निकाह हुआ यानी हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा, उन से निकाह करने से उम्मत के लिए बहुत से अहक़ाम मालूम हो गये जिन में से एक यह भी है कि बड़ी उम्र वाले शख्स का कम उम्र की लड़की से निकाह जायज़ हो गया।

इमाम बुख़ारी (रह०) ने इस पर मुस्तक़िल बाब कायम किया है, फिर यह मस्ला भी साबित हुआ कि ससुराल में मियाँ-बीवी का मेल हो सकता है और दिन में भी मेल हो सकता है।

हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक दिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) के घर में तशरीफ़ लाए और वहीं तन्हाई और अलैहिदगी में रहने का मौक़ा दे दिया गया।

इस के अलावा और भी बहुत से अहक़ाम साबित हुए। आप (सल्ल०) कौल से भी तअलीम देते थे और अमल से भी, आप (सल्ल०) उम्मत की रहबरी न फ़रमाते तो कौन बताने वाला था, जबकि सब को आप ही की पैरवी का हुक्म दिया गया है।

हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा नौ साल आप के साथ रहीं, इस नौ साल के ज़माने में

उन्होंने बड़ी भारी तअ़दाद में रिवायात कौली और फ़ेअली को महफूज़ किया, फिर आप (सल्ल०) की वफ़ात के बाद अड़तालिस साल तक उन की तब्लीग़ फ़रमाई, बड़ी तअ़दाद में हज़रात ताबिअीन (रह०) ने आप से इल्म हासिल किया।

आप से जो रिवायात मरवी हैं उन की तअ़दाद 2200 से ज़्यादा है, आप हर साल हज़ के लिए तशरीफ़ ले जाती थीं, मिना में जो आप का ख़ेमा होता था वह एक बहुत बड़ा मरकज़ी दारुल् उलूम बन जाता था, हमेशा से पूरी उम्मत मुस्लिमा आप की रिवायत की हुई कौली और फ़ेअली अह़ादीस से फ़ायदा उठाती रहीं और उठाती रहेगीं।

कई बीवियों की वजह से तअ़लीमी और तब्लीगी फ़ायदे जो उम्मत को हासिल हुए और जो अहक़ाम उम्मत तक पहुँचे उन का शुमार करना दुश्वार है। हदीस की किताबें इस पर गवाह हैं अल्बत्ता कुछ दूसरे फ़ायदों की तरफ़ यहाँ हम इशारा करते हैं।

इन्सान की ज़िन्दगी का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जिस में नबी अकरम (सल्ल०) की रहबरी की ज़रूरत न हो, नमाज़ बाजमाअत से लेकर बीवियों से तअ़ल्लुकात, आल व औलाद की परवरिश, पाख़ाना, पेशाब और तहारत तक के बारे में आप (सल्ल०) की कौली और फ़ेअली हिदायात से हदीसों भरपूर हैं, घर में क्या-क्या काम किया, बीवियों से कैसे मेलजोल रखा और घर में आकर मसायल पूछने वाली औरतों को क्या-क्या जवाब दिया। इस तरह के सैकड़ों मसायल हैं जिन से अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि०) के ज़रिये ही उम्मत को रहनुमाई मिली है, तअ़लीम व तब्लीग़ की दीनी ज़रूरत के पेशेनज़र रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लिए कई बीवियाँ रखना एक ज़रूरी बात थी।

### हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह-

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के शौहर (पति) अबू सल्मा (रज़ि०) की वफ़ात के बाद आप (सल्ल०) ने उन से निकाह कर लिया था, वह अपने पहले शौहर के बच्चों के साथ आप (सल्ल०) के घर तशरीफ़ लाई, उन के बच्चों की आप (सल्ल०) ने परवरिश की और अपने अमल से बता दिया कि किस प्यार व मुहब्बत से सौतेली औलाद की परवरिश करनी चाहिए।

आप (सल्ल०) की बीवियों में सिर्फ़ यही एक बीवी हैं जो बच्चों के साथ आई, अगर कोई भी बीवी इस तरह की न होती तो अमली तौर पर सौतेली औलाद के परवरिश की तअ़लीम का तरीका न मालूम होता और उम्मत को इस सिलसिले में कोई हिदायत न मिलती।

हज़रत उमर बिन अबी सल्मा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की गोद में परवरिश पाता था। एक बार आप (सल्ल०) के साथ खाना खाते हुए प्याले में हर जगह हाथ डाल रहा था। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया **سَمِ اللّٰهُ وَكُلْ بِمِائِكَ وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ**

(अल्लाह का नाम लेकर खाओ, दाहिने हाथ से खाओ और सामने से खाओ।) (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के रिवायतों की तअ़दाद 'तीन सौ अठहत्तर' तक पहुँची हुई है।

## हज़रत ज़ैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह

हज़रत ज़ैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा एक जिहाद में कैद होकर आई थीं, दूसरे कैदियों की तरह यह भी तक्सीम में आ गई और 'साबित बिन कैस' या उन के चचाज़ाद भाई के हिस्से में उन को लगा दिया गया, लेकिन उन्होंने अपने आका से इस तरह मामला कर लिया कि इतना-इतना माल तुम को दूँगी मुझे आज़ाद कर दो, यह मामला कर के रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आये और माली मदद की दरख्वास्त की, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया इस से बेहतर बात तुम्हें न बता दूँ?

वह यह कि मैं तुम्हारी तरफ़ से माल अदा कर दूँ और तुम से निकाह कर लूँ उन्होंने बख़ुशी मन्ज़ूर कर लिया, आप (सल्ल०) ने उन की तरफ़ से माल अदा कर के निकाह फ़रमा लिया। उन की क़ौम के सैकड़ों लोग सहाबा (रज़ि०) की मिलकियत में आ चुके थे क्योंकि वह सब लोग कैदी होकर आये थे। जब सहाबा (रज़ि०) को पता चला कि ज़ैरिया (रज़ि०) आप (सल्ल०) के निकाह में आ गई हैं तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के एहतिराम के पेशेनज़र सब ने अपने-अपने गुलाम बांदी आज़ाद कर दिये।

सुब्हानल्लाह! इस ज़ब्बे के पेशेनज़र कि यह लोग अब सरकारे दो आलम (सल्ल०) के ससुराल वाले हो गये हैं उन को गुलाम बनाकर कैसे रखें, सब को आज़ाद कर दिया।

हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इस वाकिये के बारे में फ़रमाती हैं:

فلقد اعتق بتزوجه إياها مائة أهل بيت من بنى المصطلق فما أعلم امرأة

اعظم بركة على قومها منها (الاستيعاب والاصابة)

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह कर लेने से बनू अल् मुस्तलिफ़ के सौ घराने आज़ाद हुए। मैंने कोई औरत ऐसी नहीं देखी जो हज़रत ज़ैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से बढ़कर अपनी क़ौम के लिए बड़ी बरकत वाली साबित हुई हो।)

## हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने शौहर के साथ शुरु ही में मक्का में इस्लाम कुबूल किया था और फिर दोनों बीबी-शौहर हिजरत कर के काफ़िला के दूसरे लोगों के साथ हब्शा चले गये, वहाँ उन का शौहर नसरानी हो गया और चन्द दिन के बाद मर गया।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने शाहे हब्शा नज्जाशी के ज़रिये उन के पास निकाह का पैग़ाम भेजा जिसे उन्होंने कुबूल कर लिया और वहीं हब्शा में नज्जाशी ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के साथ उन का निकाह कर दिया।

दिलचस्प बात यह है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि०) की बेटी थीं और हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि०) उस वक़्त उस गिरोह के अगुवा थे जिस ने इस्लाम दुश्मनी को अपना सब से बड़ा मक़सद करार दिया था और वह मुसलमानों को और मुहम्मद (सल्ल०) को तक्लीफ़ देने से

बाज़ नहीं आते थे और उन्हें मिटा देने की फ़िक्र में लगे रहते थे। जब उन को इस निकाह की ख़बर हुई तो बिला अख़्तियार उन की ज़बान से यह शब्द निकले **هُوَ الْفَحْلُ لَا يُجَدُّعُ اللَّهُ**

(यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवान मर्द हैं उन की नाक नहीं काटी जा सकती) मतलब यह है कि वह बुलन्द नाक वाले इज़्ज़तदार हैं उन को ज़लील करना आसान नहीं, इधर तो हम उन को ज़लील करने की तैयारियों में लगे हुए हैं और उधर हमारी लड़की उन के निकाह में चली गई।

इस निकाह से कुफ़्र के एक गिरोह के हौसले पस्त हो गये और इस निकाह की वजह से जो सियासी फ़ायदा मुसलमानों को पहुँचा उस की अहमियत और ज़रूरत से इन्कार नहीं किया जा सकता और यकीन से कहा जा सकता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस फ़ायदे को ज़रूर पेशे नज़र रखा होगा।

पच्चीस साल की उम्र से लेकर पचास साल की उम्र होने तक अकेली बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आप (सल्ल०) के निकाह में थीं, उनकी वफ़ात के बाद 'हज़रत सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा' और 'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा' से निकाह हुआ, लेकिन कम उम्र की वजह से हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने वालिद के घर में रहीं, फिर चन्द साल के बाद 2 हि० में मदीना मुनव्वरह में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़सती अमल में आई।

## 54 साल की उम्र से बीवियों का सिलसिला

आप (सल्ल०) की उम्र चौब्वन (54) साल हो चुकी थी, जब दो बीवियाँ इस उम्र में जमा हुईं। यहाँ से बीवियों का मामला शुरू हुआ, उसके एक साल बाद हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह हुआ, फिर कुछ माह बाद 'हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा' से निकाह हुआ, उन्होंने सिर्फ़ अठारह माह आप (सल्ल०) के निकाह में रहकर वफ़ात पाई। एक कौल के मुताबिक़ तीन माह आप (सल्ल०) के निकाह में ज़िन्दा रहें।

फिर 4 हि० में 'हज़रत उम्मे सलूमा रज़ियल्लाहु अन्हा' से निकाह हुआ, फिर 5 हि० में 'हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह़श रज़ियल्लाहु अन्हा' से निकाह हुआ। उस वक़्त आप (सल्ल०) की उम्र शरीफ़ अठ्ठावन (58) साल हो चुकी थी और इतनी बड़ी उम्र में आकर चार बीवियाँ जमा हुईं। उन के बाद 6 हि० में 'हज़रत ज़ैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा' और 7 हि० में 'हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा' 'हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा' और 'हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु तअ़ला अन्हा' से निकाह हुआ।

ख़ुलासा यह है कि चौब्वन (54) बरस तक की उम्र आप (सल्ल०) ने सिर्फ़ एक बीवी के साथ गुज़ारा यानी पच्चीस साल हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ और चार पाँच साल 'हज़रत सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा' के साथ गुज़ारे, फिर अठ्ठावन साल की उम्र में चार बीवियाँ जमा हुईं और बाकी अज़्वाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हा दो तीन साल के अन्दर निकाह में आईं और 10 हि० में आप (सल्ल०) ने वफ़ात पाई।

यह बात ख़ासतौर से काबिले ज़िक्र है कि उन सब बीवियों में से सिर्फ़ एक ही बीवी थीं जिन से

कुंवारेपन में निकाह हुआ यानी उम्मुल् मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा बाकी सब अज़्वाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हा बेवा थीं जिन में बाज़ के दो शौहर पहले गुज़र चुके थे और यह तअदाद आख़िर उम्र में आकर जमा हुई।

## दुश्मनों की हठधर्मी

इस्लाम के बुलन्द मक़ासिद और पूरी दुनिया की (व्यक्तिगत, सामाजिक व घरेलू ज़िन्दगी) मुल्की सुधार की फ़िक्र को दुनिया के शहवत परस्त इन्सान क्या जानें वह तो सब को अपने जैसा समझते हैं, उसी के नतीजे में कई सदी से इस्लाम दुश्मनों ने अपनी हठधर्मी से रसूल (सल्ल०) के कई बीवियों के होने को जिन्सी और नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैदावार समझते हैं। अगर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत पर एक सरसरी नज़र डाली जाए तो एक होशमन्द इन्साफ़ पसन्द मिज़ाज कभी भी आप (सल्ल०) के कई बीवियों के रखने पर एतिराज़ नहीं कर सकता।

आप (सल्ल०) की मासूम ज़िन्दगी कुरैशे मक्का के सामने इस तरह गुज़री कि सब से पहले पच्चीस साल की उम्र में एक बड़ी उम्र साहिबे औलाद बेवा जिसके दो शौहर फ़ौत हो चुके थे) से निकाह किया और पच्चीस साल तक उन ही के साथ गुज़ारा।

वह भी इस तरह कि महीना-महीना घर छोड़ कर ग़ारे हिरा में मशगूल अ़िबादत रहते थे, इस के बाद जो दूसरे निकाह हुए पचास साला उम्र शरीफ़ गुज़र जाने के बाद हुए। यह पचास साला ज़िन्दगी और जवानी का सारा वक़्त अहले मक्का की नज़रों के सामने था, कभी किसी दुश्मन को भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की तरफ़ कोई ऐसी चीज़ मन्सूब करने का मौक़ा नहीं मिला जो तक्वा व तहारत को मश्कूक कर सके।

आप (सल्ल०) के दुश्मनों ने आप (सल्ल०) को जादूगर, शाएर, मजनून, झूठा, गढ़ने वाला जैसे इल्ज़ामात लगाने में कोई कसर उठा नहीं रखा, लेकिन आप (सल्ल०) की मासूम ज़िन्दगी के बारे में कोई एक शब्द कहने की भी जुरात नहीं हुई जिस का तअल्लुक जिन्सी और नफ़्सानी ज़ब्बात से हो।

इन हालात में क्या यह बात ग़ौर तलब नहीं है कि जवानी से लेकर पचास साल की उम्र तक इस मुजाहिदा व तक्वा और दुनिया की लज़्ज़तों से यकसूई में गुज़ारने के बाद वह क्या चीज़ थी जिस ने आख़िर उम्र में आप (सल्ल०) के बहुत से निकाह करने पर आमादा किया, अगर दिल में ज़रा सा भी इन्साफ़ हो तो इन बहुत से निकाहों की वजह से, इस के अलावा कुछ भी नहीं कहा जा सकता जिस का ऊपर ज़िक्र किया गया है। وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ

**53-54**

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرِ نَظِيرٍ لَهُ ۖ وَلَٰكِنْ  
إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مَسْتَأْذِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَعْجِلُ  
مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَعْجِلُ مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقَائِكُمْ  
وَقُلُوبِكُمْ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ ۚ وَلَا أَنْ تُنكِحُوا أَرْوَاحَهُنَّ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ  
اللَّهِ عَظِيمًا ۝ إِنَّ تَبَدُّوا شَيْئًا أَوْ تَخَفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝



## पर्दे का हुक्म

हज़रत अनस (रज़ि०) का बयान है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा (बिन्ते जह़श) से निकाह किया और (वलीमा खाने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर पर) लोग हाज़िर हुए तो वलीमा का खाना खाकर वहीं बातें करते हुए बैठे रह गये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (चाहा कि यह लोग उठ जाएँ, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने) ऐसा तरीका अपनाया जैसे कि आप उठ रहे हैं (और वजह उस की यह थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मिज़ाज में वुस्अते अख़्लाफ़ की वजह से लिहाज़ बहुत था, इस वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साफ़ तौर से यह नहीं फ़रमाया कि चले जाओ।)

यह लोग आप (सल्ल०) को उठते देखकर भी न उठे, जब आप (सल्ल०) ने यह हाल देखा तो आप (सल्ल०) उठ कर चले गये। आप (सल्ल०) के उठ जाने पर कुछ लोग तो चले गये और कुछ फिर भी बैठे रहे।

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने जब हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह़श से निकाह के सिलसिले में वलीमा किया तो खाने के बाद आप (सल्ल०) ने उठने का इरादा किया, कुछ लोग ऐसे बैठे कि उठने का नाम ही न लिया। चुनाँचे जब आप (सल्ल०) उठे तो लोग भी उठ कर चले गये, मगर तीन लोग फिर भी थोड़ी देर बैठने के बाद गये तो मैंने नबी (सल्ल०) को ख़बर दी, फिर आप (सल्ल०) हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के खेमे में तशरीफ़ ले गये। (बुख़ारी व मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा के दरवाज़े तक जाकर यह समझते हुए) वापस हुए कि वह लोग निकल गये होंगे। जब तशरीफ़ लाए तो देखा कि वह लोग बैठे हुए हैं (लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर वापस हो गये) इस के बाद वह लोग खड़े हुए और चले गये। मैंने उन के चले जाने की ख़बर आप (सल्ल०) को दी। आप (सल्ल०) तशरीफ़ लाए यहाँ तक कि घर में दाख़िल हो गये, मैं भी आप (सल्ल०) के साथ दाख़िल होने लगा तो आप (सल्ल०) ने (मुझ को रोक दिया और) मेरे और अपने दर्मियान पर्दा डाल दिया और अल्लाह तअ़ाला ने आयत **لَا يَجْعَلُ الْفِتْنَةَ فِى دِينِكَ** (आख़िर तक) नाज़िल फ़रमाई।

यह किस्सा बुख़ारी शरीफ़ में कहीं थोड़ा कहीं पूरा कई जगह ज़िक्र हुआ है। हज़रत अनस (रज़ि०) बचपन से आप (सल्ल०) की ख़िद्मत में रहा करते थे, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हिज़रत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हज़रत अनस (रज़ि०) की उम्र दस साल की थी और आप (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से 5 हिज़्री में निकाह फ़रमाया, इसलिए इस हिसाब से इस वाक़िये के वक़्त हज़रत अनस (रज़ि०) की उम्र 15 साल हुई।

चूँकि वह पहले से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के घरों में आया जाया करते थे, इस वजह से जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) लोगों के चले आने के बाद घर में दाख़िल होने लगे तो हज़रत अनस (रज़ि०) ने भी

आप (सल्ल०) के साथ अन्दर जाने का इरादा किया, मगर चूँकि अब पर्दा का हुक्म आ चुका था इसलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उन को घर में अन्दर आने से रोक दिया।

हज़रत अनस (रज़ि०) चूँकि शुरु वाकिये से आखिर तक मौजूद थे इसलिए फ़रमाया करते थे **انا اعلم الناس بهذه** (यानी मैं पर्दा की आयत के मुतअल्लिक सब लोगों से ज़्यादा इल्म रखता हूँ।)

**इस आयत में बहुत से हुक्म बयान फ़रमाये हैं:**

● पहला हुक्म यह है कि नबी के घरों में दाख़िल मत हुआ करो, वहाँ अगर तुम्हें खाने के लिए बुलाया जाए तो दाख़िल हो जाओ, लेकिन ऐसी सूरत में भी ऐसा न करो कि जल्दी पहुँच जाओ और खाने के इन्तिज़ार में बैठे रहो।

● दूसरा हुक्म यह फ़रमाया कि जब खाना खा चुको तो वहाँ से जल्द अलग हो जाओ, वहाँ से उठ कर चले आओ ऐसा न करो कि खाना खाकर वहाँ बैठे बातें करते रहो और बातों में जी लगाये रहो क्योंकि इस से नबी करीम (सल्ल०) को नागवारी होती है वह तुम्हारा लिहाज़ करते जिसकी वजह से ज़बान से नहीं कहते कि चले जाओ। अल्लाह तआला तुम्हें साफ़ बताता और साफ़ हुक्म देता है कि तुम खाना खाकर चले जाओ, नबी करीम (सल्ल०) को तकलीफ़ न दो।

● तीसरा हुक्म यह दिया कि जब नबी करीम (सल्ल०) की बीवियों से कोई चीज़ माँगो तो पर्दा के पीछे से तलब करो। इस में पर्दा का एहतिमाम करने का हुक्म फ़रमा दिया कि मर्दों को कोई चीज़ तलब करना हो तो वह भी पर्दा के पीछे से तलब करें और औरतें भी सामने न आएँ। कोई चीज़ देना हो तो वह भी पर्दा के पीछे से दें। पर्दा के इस एहतिमाम पर और ज़ोर देते हुए फ़रमाया **ذِكْرُكُمْ أَظْهَرَ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ** यह बात तुम्हारे दिलों और उन के दिलों के पाक रहने का बहुत अच्छा ज़रिया है।

● चौथा हुक्म यह दिया कि नबी करीम (सल्ल०) को तकलीफ़ मत पहुँचाओ, जो लोग घर में बैठे रह गये थे उन से आप (सल्ल०) को तकलीफ़ पहुँची थी। वह एक वक्ती और खास किस्म की तकलीफ़ थी, इस के बाद आम हुक्म फ़रमा दिया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कभी भी किसी भी किस्म की तकलीफ़ मत पहुँचाओ।

● पाँचवां हुक्म फ़रमाया कि नबी के बाद उन की बीवियों से निकाह मत करना। इस सूर: के पहले रुकूअ में फ़रमाया **وَأَزْوَاجُهُمْ** कि आप (सल्ल०) की बीवियाँ उम्मत की माँ हैं और यहाँ फ़रमाया कि आप (सल्ल०) के बाद आप (सल्ल०) की बीवियों से किसी को निकाह करने की इजाज़त नहीं है।

यह हुक्म उन पाक बीवियों के इकराम व एहतिराम की वजह से है।

मज़ीद फ़रमाया **إِنَّ ذِكْرَكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا** (बिलाशुब्हा यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी भारी बात है।)

यानी बहुत बड़ा गुनाह है, न गुनाह का इरादा करो न गुनाह करो। इसी को फ़रमाया **إِنْ تَبَدَّأْتُمْ شَيْئًا أَوْ تَخْفَوْهُ** अगर तुम ज़ाहिरी तौर पर कोई गुनाह करोगे या उसे छुप कर करोगे तो दोनों गुनाह अल्लाह तआला के इल्म में होंगे, वह ज़ाहिर को भी जानता है और पोशीदा को भी **فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا** (वह हर चीज़ का ख़ूब जानने वाला है।)

यह जो अहकाम ऊपर ज़िक्र हुए हैं उन में सिर्फ़ एक हुक्म ऐसा है जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी के साथ खास है यानी यह कि आप (सल्ल०) के बाद आप (सल्ल०) की किसी बीवी से किसी का भी निकाह जायज़ नहीं, बाकी हुक्म सब के लिए बराबर हैं। न तो किसी के यहाँ बग़ैर बुलाये दअवत में जाए और न बुलाये जाने की सूरत में खाना पकने के इन्तिज़ार में उस के घर में जाकर बैठा रहे और न खाना खाकर वहाँ बैठ कर बातों में मशगूल रहे, बल्कि खाना खाकर वहाँ से चला आए। अगर किसी नामहरम औरत से कोई चीज़ तलब करनी हो तो पर्दा के पीछे से तलब करें। मर्द न अजनबी औरत के सामने आये और न किसी अजनबी औरत को देखें।

आजकल के बाज़ जाहिलों ने यह नुक्ता निकाला है कि चेहरे का पर्दा करने का हुक्म सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की अज़ाजे मुतहहरात (रज़ि०) के बारे में है। उम्मत के लोगों को यह हुक्म नहीं है, हालांकि उन को मुसलमानों की माँ बताया गया है तो दूसरी औरतों को कैसे इजाज़त हो सकती है। फिर इस दौर में, जो फ़साद और फ़िल्मों का दौर है।

पर्दा के बारे में सूर: नूर की (आयत नं० 31) **وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ** और इस सूर: की आयत नं० **وَقَرْنَ فِي بُيُوتِهِنَّ** देखा जा सकता है।



## आयत नं० 55 से 73 तक

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْتَبَاءَ إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْتَبَاءَ أَخَوَاتِهِمْ وَلَا  
 نِسَاءَهُمْ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا  
 الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ  
 عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا ظَاهِرًا كَتَبْنَا لَهُمْ فِي الدِّينِ أَنْ يَكُونُوا كَالَّذِينَ  
 قُتِلُوا وَلَئِنْ لَمْ يَمُوتُوا لَأُولَئِكَ جَزَاءُ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُؤْذُونَ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ  
 يُدْنِيهِمْ اللَّهُ إِلَى الْعَذَابِ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ  
 وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا ظَاهِرًا كَتَبْنَا لَهُمْ فِي الدِّينِ أَنْ يَكُونُوا كَالَّذِينَ قُتِلُوا وَلَئِنْ لَمْ يَمُوتُوا  
 لَأُولَئِكَ جَزَاءُ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُؤْذُونَ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِيهِمْ اللَّهُ إِلَى  
 الْعَذَابِ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا ظَاهِرًا  
 كَتَبْنَا لَهُمْ فِي الدِّينِ أَنْ يَكُونُوا كَالَّذِينَ قُتِلُوا وَلَئِنْ لَمْ يَمُوتُوا لَأُولَئِكَ جَزَاءُ الْيَوْمِ الَّذِي  
 كَانُوا يُؤْذُونَ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِيهِمْ اللَّهُ إِلَى الْعَذَابِ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ  
 عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا ظَاهِرًا كَتَبْنَا لَهُمْ فِي الدِّينِ أَنْ  
 يَكُونُوا كَالَّذِينَ قُتِلُوا وَلَئِنْ لَمْ يَمُوتُوا لَأُولَئِكَ جَزَاءُ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُؤْذُونَ ۚ  
 وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِيهِمْ اللَّهُ إِلَى الْعَذَابِ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

### अनुवाद-

(55) (औरतों को) न उनके लिए अपने बापों के सामने होने (पर्दान करने) में कोई गुनाह है और न अपने बेटों से, और न अपने भाइयों से, और न अपने भतीजों से, और न अपने भाँजों से, और न अपनी जैसी औरतों से, और न जो उनकी मिल्कियत में हैं (अर्थात दास और दासी) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। (56) अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दुरुद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरुद और सलाम भेजा करो। (57) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं, उन पर अल्लाह ने दुनिया और आखिरत में लानत की है और उनके लिए अपमान जनक अज़ाब तैयार कर रखा है। (58) और जो लोग ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को, ऐसे कामों पर तकलीफ़ देते हों, जो उन्होंने न किया हो तो उन्होंने अपने सर एक बोहतान (मिथ्यारोपण) और खुले गुनाह का भार उठा लिया। (59) ऐ नबी! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों, और ईमान वाली औरतों से कह दीजिए, “अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। इससे इस बात की ज़्यादा उम्मीद है कि पहचान (न) ली जाएँ और सताई न जाएँ, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (60) मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं, अगर बाज़ न आए, तो ‘हम’

तुमको उनके खिलाफ़ उठा खड़ा करेंगे, फिर वे उसमें तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पाएँगे। (61) वह भी फिटकारे हुए, जहाँ पाए गये पकड़े गये और बुरी तरह क़त्ल किये गये; (62) यह अल्लाह की सुन्नत (रीति) रही है उन के मामले में भी जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, और तुम अल्लाह की सुन्नत (नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे। (63) लोग आप से क़ियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, “इसका इल्म तो अल्लाह ही को है और तुम्हें क्या ख़बर? कि शायद वह घड़ी करीब ही आ गयी हो।” (64) बेशक अल्लाह ने इन्कार करने वालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है, (65) जिसमें वे हमेशा रहेंगे, न कोई दोस्त मिलेगा और न मददगार; (66) जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट कर दिये जाएँगे, वे कहेंगे, “काश हमने फ़रमाँबरदारी (अनुपालन) की होती अल्लाह की, और फ़रमाँबरदारी की होती रसूल की!” (67) और कहेंगे, “ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों की पैरवी की और उन्होंने हमें राह से गुमराह कर दिया; (68) ऐ हमारे रब! इनको दोगुना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर!” (69) ऐ ईमान वाले! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ पहुँचाई, तो अल्लाह ने उनसे, जो कुछ उन्होंने कहा था बरी कर दिया, और वह अल्लाह के यहाँ इज्ज़तदार था। (70) ऐ ईमान वाले! अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहा करो। (71) ‘वह’ तुम्हारे अ़ामाल (कर्मों) को ठीक कर देगा, और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगा, तो वह बहुत बड़ी कामियाबी हासिल करेगा। (72) हमने (वह) अमानत को आसमानों, और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसको उठाने से इन्कार किया, और उससे डर गये, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह बड़ा ज़ालिम और नादान (जाहिल) था। (73) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (कप्टी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और मुशिरक मर्दों और मुशिरक औरतों को अज़ाब दे; और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों पर रहम करे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

### आयत नं० 55 से 73 तक की व्याख्या

55

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْنَاءَ إِخْوَانِهِمْ وَلَا نِسَاءَهُمْ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

### औरतों को अपने महरमों के सामने आने की इजाज़त

‘रुहुल् मअानी’ में लिखा है कि जब पर्दे वाली आयत नाज़िल हुई तो अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना के बाप-बेटे और करीबी रिश्तेदारों ने अज़्र किया, या रसूलल्लाह! क्या हम भी उन से पर्दा के पीछे से बात किया करें। इस पर यह आयत नाज़िल हुई और अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना को इजाज़त दे दी गई कि अपने बापों, बेटों, अपने भाईयों के बेटों और बहनों के बेटों के सामने आ सकती हैं।

‘साहिबे रुहुल् मअानी’ लिखते हैं:

وفي حكمهم كل ذي رحم محرم من نسب اور ضاع على ماروى ابن سعد عن الزهري (भाग 22 पेज नं० 74)

यानी आयते करीमा में चार रिश्तों का ज़िक्र है। दूसरे जो महरम हैं नसब से हों या दूध शरीक उन का भी यही हुक्म है। फिर लिखा है कि आयते करीमा में चचा और मामू का ज़िक्र नहीं है क्योंकि यह दोनों माँ-बाप की तरह से हैं।

महरमों से पर्दा न करने की इजाज़त के साथ ही **وَالَّذِينَ آمَنُوا** फ़रमाया है यानी मुसलमान औरतों से भी उन का कोई पर्दा नहीं है। अल्बत्ता काफ़िर औरतों के सामने न आएँगे चाहे किताबिया यानी यहूदिया या नसरानिया हों।

**मज़ीद फ़रमाया:-**

**وَالَّذِينَ آمَنُوا** “और जिन के मालिक हैं उन के सामने आने में भी पर्दा नहीं”। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) ने फ़रमाया कि इस से बांदियाँ मुराद हैं, अपने गुलामों के सामने भी आना जायज़ नहीं है।

सूर: नूर की आयत **وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَصْوَاجِهِنَّ** में भी उन रिश्तेदारों का ज़िक्र है जिन से पर्दा करना वाजिब नहीं है, वहाँ कुछ रिश्ते ज़िक्र फ़रमाये। सूर: नूर की आयत की तफ़सीर देख ली जाए।

सूर: नूर में जो **أَوْ نِسَائِهِنَّ** और यहाँ सूर: अहज़ाब में **وَالَّذِينَ آمَنُوا** फ़रमाया है, इस से मालूम हो रहा है कि मुसलमान औरत को काफ़िर औरत के सामने आना जायज़ नहीं।

सूर: नूर में मोमिन औरतों को जो पर्दे का हुक्म दिया है और महारिम के सामने आने की इजाज़त दी है उस के आम माने में अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना भी आ जाती हैं। इस के बावजूद यहाँ खुसूसियत के साथ अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना का महारिम के सामने आना अलग से भी ज़िक्र फ़रमा दिया, जिस से यह सन्देह दूर हो गया कि शायद उन्हें महरमों के सामने भी आना जायज़ न हो।

**وَالَّذِينَ آمَنُوا** (और अल्लाह से डरती रहो) इस में अल्लाह तआला ने ख़िताब के सींगे के साथ अज़ाजे मुतहहरात रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना को ख़िताब (सम्बोधित) फ़रमाया कि अल्लाह तआला से डरती रहो, क्योंकि तक्वा ही हर नेकी की बुनियाद है।

**إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا**

(बिलाशुब्हा अल्लाह हर चीज़ पर हाज़िर है यानी वह हर चीज़ को देखता है) उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं। हकीकत में यह यकीन कि अल्लाह तआला हाज़िर व नाज़िर है, दिलों में तक्वा पैदा होने और उस के जाँचने के लिए काफ़ी है।

**56**

**إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا**

### नबी पर सलात व सलाम

इस में मुसलमानों को यह हुक्म देना था कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर सलात व सलाम भेजा करें, मगर उस के बयान में यह तरीका अपनाया कि पहले अल्लाह तआला ने खुद अपना और अपने फ़रिश्तों का रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर सलात भेजने का ज़िक्र फ़रमाया, उस के बाद आम मोमिनीन को इस का हुक्म



दिया जिस में आप की इज़्ज़त को और बुलन्द फ़रमा दिया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर दुरुद भेजने का जो हुक्म मुसलमानों को दिया जाता है वह ऐसा है कि खुद अल्लाह तआला और उस के फ़रिश्ते भी करते हैं।

आम मोमिनीन जिन पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बेशुमार एहसानात हैं उन को तो इस अमल का बड़ा एहतिमाम करना चाहिए और एक फ़ायदा इस में यह भी है कि इस से दुरुद व सलाम भेजने वाले मुसलमानों की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत यह साबित हुई है कि अल्लाह तआला ने उन को उस काम में शरीक फ़रमा लिया जो काम अल्लाह तआला भी करते हैं और उस के फ़रिश्ते भी।

आयते शरीफ़ा में शब्द **يُؤْتُونَ** आया है जिस का तर्जुमः यूँ किया गया है कि बिलाशुब्हा अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर पर रहमत भेजते हैं।

शब्द **يُؤْتُونَ** सलात से लिया गया है। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि शब्द सलात अरबी ज़बान में चन्द मअानी के लिए इस्तेमाल होता है। रहमत, दुआ, मदद व सना फिर जिस की तरह सलात मन्सूब होगी उसकी शान और मर्तबे के मुनासिब सना, तअज़ीम और रहमत व शफ़क़त मुराद लेंगे। जैसे कहा जाता कि बाप बेटे से, बेटा बाप से और भाई-भाई से मुहब्बत करते हैं।

मगर ज़ाहिर है कि जो मुहब्बत बाप को बेटे से है और बेटे को बाप से इस तरह की मुहब्बत नहीं है। इसी तरह भाई-भाई की मुहब्बत और बाप बेटे की मुहब्बत अलग होती है, लेकिन मुहब्बत सब को ही कहा जाता है।

### सलात भेजने का तरीका

इसी तरह सलात को समझ लें कि अल्लाह तआला नबी पर सलात भेजते हैं और फ़रिश्ते भी और आम मोमिनीन भी, मगर सब की सलात के मअना एक ही नहीं है, बल्कि हर एक की शान के मुनासिब सलात के मअना होते हैं।

हज़रत अबू अल् आलिया फ़रमाते हैं कि “अल्लाह की नमाज़ से मुराद यह है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों में आपकी तअरीफ़ फ़रमाता है और फ़रिश्तों की नमाज़ से दुआ मुराद है”। (बुख़ारी)

हज़रत अली (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “वह शख्स बड़ा बख़ील है जिसके पास मेरा ज़िक्र हो, फिर वह मुझ पर दुरुद न भेजे”। (तिर्मिज़ी)

चुनाँचे उल्मा ने लिखा है कि अल्लाह तआला की सलात रहमत भेजना है, फ़रिश्तों की सलात इस्तिफ़ार है, मोमिनों की सलात दुआ-ए-रहमत है और एक तअरीफ़ व सना और तअज़ीम के मअना हैं। अल्लाह तआला की तरफ़ से आप की अज़मत यह है कि आप का ज़िक्र बुलन्द फ़रमाया और आप के दीन को ग़ालिब किया और क़ियामत तक इस को बाकी रखा, आख़िरत में आप (सल्ल०) की अज़मत यह है कि आप को शफ़ाअत कुब्रा नसीब फ़रमाई, मक़ामे महमूद अता फ़रमाया और तमाम मुक़र्रबीन और अब्वलीन व आख़िरीन पर आप की फ़ज़ीलत फ़रमाई।

शब्द **السلامة** मसदर बमअने **سلام** है और मुराद इस से नुक्स व ऐबों और आफ़तों से सालिम रहना

है। मअना सना के है, इसलिए शब्द 'عَلَيْكَ' या 'عَلَيْكُمْ' कहा जाता है।

बाज़ हज़रात ने यहाँ शब्द 'सलाम' से मुराद अल्लाह तआला की ज़ात ली है, क्योंकि 'सलाम' अल्लाह तआला के अस्मा-ए-हुस्ना में से है तो मुराद 'अस्सलामु अलैका' से यह होगी कि अल्लाह तआला आप की हिफ़ाज़त व रिआयत का मुतवल्ली और कफ़ील है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि सरवरे आलम (सल्ल०) पर दुरूद भेजा करें। उल्मा-ए-उम्मत का इर्शाद है कि इस सीगा अम्र (صَلُّوا) की वजह से उम्र भर में एक मर्तबः हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर दुरूद भेजना फ़र्ज़ है और अगर एक मजलिस में कई बार हज़रत मुहम्मद का ज़िक्र मुबारक आए या सुने तो ज़िक्र करने और सुनने वाले पर हज़रत 'इमाम तहावी' (रह०) के नज़्दीक हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है, मगर फ़तवा इस पर है कि एक बार वाजिब है बाकी मुस्तहब है। एहतिyात इसी में है कि हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़े और आका-ए-दो जहाँ (सल्ल०) की मुहब्बत का सुबूत दे।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا

عَلَى حَبِيبِكَ مَنْ رَأَتْ بِهِ الْعُصْرُ

इस आयत में शब्द 'सलात' आया है जिस की व्याख्या यह है कि सलातुन्नबी के मअना यह हैं कि शफ़क़त व रहमत के साथ नबी (सल्ल०) की तअरीफ़ की जाए, फिर जिस की तरफ़ सलात मन्सूब होगी उस की शान और मर्तबः के मुनासिब सना तअज़ीम और रहमत व शफ़क़त मुराद लेंगे।

### दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ायल-

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर दुरूद भेजना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत वाला अमल है। कुर्आन मजीद में हुक्म फ़रमाया है (जैसा कि आयते बाला में नज़रों के सामने) और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने भी इस की बहुत सी फ़ज़ीलतें बयान फ़रमाई हैं।

'सहीह मुस्लिम' भाग 1 पेज नं० 166 में हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं।

'सुनन नसई' में यह भी है कि अल्लाह तआला उस के दस दर्जात बुलन्द फ़रमाते हैं और उस के लिए दस नेकियाँ लिख देते हैं और उस के दस गुनाह (नाम-ए-आमाल से) मिटा देते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मुझ से सब से ज़्यादा करीब वह लोग होंगे जो मुझ पर सब से ज़्यादा दुरूद भेजा करते थे।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते ज़मीन पर ग़श्त करते रहते हैं और मुझ को मेरी उम्मत का सलाम पहुँचा देते हैं।

इर्शाद फ़रमाया रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कि अपने घरों को क़ब्रें मत बनाओ और मेरी क़ब्र को ईद

मत बनाओ और मुझ पर दुरुद भेजो क्योंकि तुम्हारा दुरुद मेरे पास पहुँच जाता है तुम जहाँ कहीं भी हो।

(यह सब रिवायात मिश्कातुल् मसाबीह पेज नं० 82 'बाबुस्सलात अलन्नबी व फ़िस्साह' से ली गई हैं)

‘घरों को क़ब्रें मत बनाओ’ (इस का मतलब यह है कि जिस तरह क़ब्रें अ़िबादत से खाली होती हैं उसी तरह घरों को अ़िबादत से खाली मत रखो, बल्कि नफ़ल नमाज़ें अदा करते रहो।)

‘मेरी क़ब्र को ईद मत बनाओ’ इस का मतलब यह है कि जिस तरह ईद के दिन ज़ीनत के साथ खुसूसी इज्तिमाअ होता है, मेरे क़ब्र की इस तरह ज़ियारत न करो, बल्कि एहतिराम को सामने रखते हुए हाज़िरी दो।

आप (सल्ल०) का दरबार कोई मामूली दरबार नहीं है कि वहाँ हंसते हुए जाओ बल्कि वह तो शाहे दो जहाँ सय्यदुल् अम्बिया (सल्ल०) का दरे अतहर है, उस की अज़मत दिल में लेकर हाज़िर होना चाहिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जो कोई एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर दुरुद भेजता है अल्लाह और फ़रिश्ते उस शख्स पर सत्तर रहमतें भेजते हैं।

(मिश्कातुल् मसाबीह पेज नं० 87)

मुल्ला अली क़ारी (रह०) शरह मिश्कात में लिखते हैं कि यह (यानी एक दुरुद के बदले में सत्तर रहमतें नाज़िल फ़रमाना) शायद जुमअ के रोज़ के साथ खास है, क्योंकि बाज़ अवकात आमाल का सवाब वक़्त की फ़ज़ीलत व अज़मत की वजह से बढ़ा दिया जाता है, लिहाज़ा जुमअ के रोज़ दस रहमतों के बजाय सत्तर रहमतें नाज़िल होती हैं।

फ़रमाया रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कि तुम्हारे दिनों में सब दिनों से बेहतर जुमअ का दिन है, इसी रोज़ आदम (अलै०) पैदा किये गये और इसी दिन उन्होंने वफ़ात पाई, जुमअ के रोज़ ही सूर फूँका जाएगा और जुमअ ही के रोज़ सूर की आवाज़ सुनकर मख़्लूक बेहोश होगी, चूँकि जुमअ का दिन सब से अफ़ज़ल है इसलिए इस रोज़ मुझ पर कसूरत से दुरुद पढ़ा करो क्योंकि तुम्हारा दुरुद मुझ पर पेश किया जाता है।

(अबूदाऊद भाग 1 पेज नं० 150)

इर्शाद फ़रमाया रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कि जो भी मुसलमान मुझ पर दुरुद भेजता है फ़रिश्ते उस पर रहमत भेजते हैं। अब अख़्तियार है कि कोई बन्दा मुझ पर ज़्यादा दुरुद भेजे या कम। (इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था और रसूलुल्लाह (सल्ल०) मौजूद थे, आप के साथ हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। जब मैं नमाज़ पढ़कर बैठा तो अल्लाह की तअरीफ़ बयान की, फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर दुरुद भेजा, बाद में अपने लिए दुआ की, यह देखकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि माँग जो माँगेगा (अल्लाह की ओर से) मिलेगा।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख्स मस्जिद में दाख़िल हुआ और नमाज़ पढ़कर उस ने दुआ शुरु कर दी और कहा, “ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा”। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “ऐ नमाज़ पढ़ने वाले तूने दुआ करने में जल्दी की आइन्दा के लिए याद रख कि जब तू नमाज़ पढ़ चुके तो बैठकर अल्लाह की हम्द बयान

कर जैसी उस की ज़ात के लायक है, फिर मुझ पर दुरुद भेज फिर अल्लाह से दुआ कर”।

हज़रत फुज़ाला बिन उबैद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि इस के बाद फिर एक शख्स ने नमाज़ पढ़ी और अल्लाह तआला की तअरीफ़ बयान की और नबी करीम (सल्ल०) पर दुरुद भेजा, नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ नमाज़ पढ़ने वाले! दुआ कर तेरी दुआ कुबूल होगी। (तिर्मिज़ी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि दुआ के आदाब में यह भी है कि पहले अल्लाह तआला की हम्द बयान करे, फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर दुरुद भेजे, फिर अल्लाह से दुआ करे, दुआ के कुबूल होने में दुरुद शरीफ़ को बड़ा दख़ल है यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ि०) से नक़ल किया गया है कि जब तक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर दुरुद न पढ़ा जाए दुआ आसमान व ज़मीन के दर्मियान लट्की रहती है।

(मिशक़ातुल मसाबीह पेज नं० 87)

दुरुद शरीफ़ के अलावा जो दूसरे अज़्कार व अ़िबादात हैं कभी ऐसा भी होता है कि उन का सवाब न दिया जाए, लेकिन दुरुद शरीफ़ हमेशा मक़बूल ही होता है। जब दुआ करे तो दुआ से पहले भी दुरुद शरीफ़ पढ़े और दुआ के अख़ीर में भी। अल्लाह तआला बड़ा करीम है जब दोनों दुरुदों को कुबूल फ़रमाएगा तो दर्मियान में जो दुआ होगी उसे भी कुबूल फ़रमाएगा। (ज़करह फ़ी अल् हसन)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग किसी मजलिस में बैठें हों और उस में अल्लाह का ज़िक्र न किया हो और अपने नबी पर दुरुद न भेजा हो तो यह मजलिस उन के लिए नुक़सान का ज़रिया होगी। अब अल्लाह चाहे तो उन्हें अज़ाब दे और चाहे तो उनकी मग़्फ़िरत फ़रमा दे। (रवाहुल्लु तिमिज़ी)

इस हदीस से मालूम होता है कि कोई मजलिस अल्लाह के ज़िक्र और दुरुद शरीफ़ से खाली न होना चाहिए।

## दुरुद वाजिब-

जब किसी मजलिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़िक्र मुबारक आए चाहे खुद ज़िक्र करे या दूसरे शख्स से सुने तो दुरुद शरीफ़ ज़रूर पढ़े। यानी किसी मजलिस में आप (सल्ल०) का नाम सुनकर एक मर्तबः दुरुद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है, लेकिन अफ़ज़ल यही है कि जब भी आप (सल्ल०) का नाम सुने हर बार दुरुद शरीफ़ पढ़े, एहतियात इसी में है कि हर मर्तबः दुरुद शरीफ़ पढ़े क्योंकि दुरुद शरीफ़ न पढ़ने पर तम्बीह आई हैं।

हज़रत अली (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि असली बख़ील (कन्ज़ूस) वह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दुरुद न पढ़े। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबूज़र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, क्या मैं तुम को सब से बड़ा बख़ील न बता दूँ? सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया हुज़ूर ज़रूर इर्शाद फ़रमाएँ, फ़रमाया जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दुरुद न भेजे, वह सब से बड़ा बख़ील है।

हज़रत कअब बिन उजरह (रज़ि०) फरमाते हैं कि एक मर्तबः नबी अकरम (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया कि मेम्बर के करीब हो जाओ, चुनौचे हम हज़िर हो गये (और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेम्बर पर चढ़ने लगे) जब आप ने पहली सीढ़ी पर कदम रखा तो फरमाया, 'आमीन' फिर जब दूसरी सीढ़ी पर कदम रखा तो फिर फरमाया 'आमीन' जब तीसरी सीढ़ी पर कदम रखा तो फिर फरमाया 'आमीन'। जब आप मेम्बर से उतरे तो हम ने अर्ज़ किया कि हम ने आज आप से मेम्बर पर चढ़ते हुए ऐसी बात सुनी जो पहले न सुनी थी। आप ने फरमाया कि सबब इस का यह हुआ कि जिब्रईल मेरे सामने आए और जब मैंने पहली सीढ़ी पर कदम रखा तो जिब्रईल ने कहा कि हलाक हो वह शख्स कि जिस ने रमज़ान का महीना पाया और उस की मग़िफ़रत न हुई, मैंने कहा आमीन।

फिर जब मैं दूसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रईल ने कहा हलाक हो वह शख्स जिस के सामने आप का इस्मे गिरामी लिया जाए और वह आप पर दुखद न भेजे, मैंने कहा आमीन।

फिर जब मैं तीसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रईल ने कहा हलाक हो वह शख्स जिस के सामने उस के दोनों वालिदैन् या उन में से एक बूढ़ा हो जाए और (उन की खिद्मत कर के उस के ज़रिये अपने आपको) जन्नत में दाख़िल न करवा ले। (अब तर्गीब वल् तरहीब)

## मस्ता-

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़िक्र खुद करें या किसी से सुनें तो दुखद शरीफ़ पढ़ें। इसी तरह जब कोई लेख लिखने लगे तो उस वक़्त भी दुखद शरीफ़ के शब्द लिखना वाजिब है, कम से कम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या अलैहिस्सलाम वस्सलाम लिख दें।

हज़रत अबू तल्हा (रज़ि०) ने फरमाया कि एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ़ लाए आप के चेहरे पर बशाशत ज़ाहिर हो रही थी, आप ने फरमाया कि मेरे पास जिब्रईल आये थे, उन्होंने कहा कि बेशक आप के रब ने फरमाया है कि ऐ मुहम्मद! क्या यह बात आप को खुश करने वाली नहीं है कि आप की उम्मत में से जो शख्स आप पर दुखद भेजेगा मैं उस पर दस मर्तबः रहमत भेजूंगा और आप की उम्मत में से जो शख्स आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर दस सलाम भेजूंगा। (नसई)

**मस्ता-** सलात व सलाम दोनों ही एक साथ पढ़ना चाहिए। अगर एक ही नाम ले तो बाज़ हज़रात ने इस को 'मकरुह तन्ज़ीही' बताया है। दुखद शरीफ़ हैं जो सुन्नत से साबित हैं, उन के मुताबिक़ अमल करना अज़ज़ल है और दूसरे सीगों के ज़रिये सलात व सलाम पढ़ना भी जायज़ है।

हज़रत कअब बिन उजरह (रज़ि०) ने बयान किया है कि हम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि हम आप पर और आप के अहले बैत पर किस तरह दुखद भेजें, आप (सल्ल०) पर सलाम भेजना तो अल्लाह तआला ने हमें सिखा दिया (यानी नमाज़ में जो तशहहूद पढ़ते हैं उस में **السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ** बता दिया) आप ने फरमाया दुखद इस तरह पढ़ो:

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ  
بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

(ऐ अल्लाह! दुखद भेज मुहम्मद पर और मुहम्मद की आल (औलाद) पर जैसा कि आप ने दुखद भेजा इब्राहीम पर और इब्राहीम की आल पर, बेशक आप हम्द के हक्दार हैं और साहिबे मुजद्दिद हैं। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़रमाइए मुहम्मद पर और मुहम्मद की आल (औलाद) पर जैसा कि आप ने बरकत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। बेशक आप हम्द के हक्दार हैं और साहिबे मुजद्दिद हैं।) (रवाहुल बुख़ारी भाग 1 पेज नं० 477) यह दुखद शरीफ़ वही है जो नमाज़ में पढ़ा जाता है।

हज़रत अबू हमीद सअदी (रज़ि०) से रिवायत है कि सहाबा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अज़ किया कि हम आप पर कैसे दुखद भेजें। आप ने फ़रमाया कि यूँ कहो:

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ

(ऐ अल्लाह! दुखद भेज मुहम्मद पर और आप की बीवियों पर और उन की आल व औलाद पर, जैसा कि आप ने दुखद भेजा आले इब्राहीम पर और ऐ अल्लाह! बरकत दीजिए मुहम्मद पर और आप की बीवियों पर और उन की आल व औलाद पर जैसा कि बरकत भेजी आप ने आले इब्राहीम पर, बिलाशुब्हा आप हम्द के हक्दार हैं साहिबे मुजद्दिद हैं।) (रवाहुल बुख़ारी)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसे यह खुशी हो कि हम पर और हमारे अहले बैत पर दुखद भेजकर भरपूर तरीके पर नापतौल कर सवाब ले तो वह यूँ कहे:

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَأَزْوَاجِهِ أُمَّهَاتِ الْمُتَوَمِّينَ وَذُرِّيَّتِهِ وَأَهْلِ بَيْتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ

(ऐ अल्लाह! दुखद भेज मुझ पर जो नबी उम्मी हैं और आप की अज़ाज पर जो उम्माहातुल् मोमिनीन हैं और आप की औलाद पर और आप की अहले बैत पर जैसा कि आप ने दुखद भेजा इब्राहीम पर बिलाशुब्हा आप हम्द के हक्दार हैं साहिबे मुजद्दिद हैं।) (रवाहु अबूदाऊद पेज नं० 141)

हज़रत राफ़ेअ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने मुहम्मद (सल्ल०) पर दुखद भेजा और फिर यूँ दुआ की:

اللَّهُمَّ أَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

ऐ अल्लाह! उन को (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को) क़ियामत के रोज़ अपने क़रीब मक़ाम में नाज़िल कीजियो तो उस के लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। (मिशक़ातुल् मसाबीह पेज नं० 87)

**नोट-** कसरत से दुखद शरीफ़ पढ़ने के लिए यह मुख़्तसर दुखद शरीफ़ आसान है।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ عَدَدَ مَا فِي عِلْمِهِ



57-58

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۖ  
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا التَّسْبُؤِ فَاقْتُلُوا بِهِنَّ أَوْ اصْلَوْهُنَّ وَإِنَّ أَوْلَىٰ مُبِينًا ۖ

## आरोप लगाने वालों का बुरा अन्जाम

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के एहतिराम का हुक्म देने और आप पर सलात व सलाम भेजने का हुक्म फरमाने के बाद इर्शाद फरमाया कि जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (सल्ल०) को तकलीफ देते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आखिरत में लअनत कर दी।

लअनत फिट्कार डालने और अल्लाह की रहमत से दूर होने को कहा जाता है और सब से बड़ी लअनत काफ़िरोँ ही पर है यानी बाज़ गुनाहों पर भी लअनत आई है। अल्लाह तआला पाक है उसे कोई तकलीफ नहीं पहुँच सकती, ऐसे कामों के करने को अल्लाह तआला को तकलीफ पहुँचाना फरमाया है जिन से मख़्लूक को तकलीफ होती हो।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया कि इब्ने आदम मुझे तकलीफ देता है वह ज़माने को बुरा कहता है हालांकि मैं ज़माना हूँ (यानी मैंने ज़माने को पैदा किया है) सब काम मेरे कब्जे कुदरत में हैं रात और दिन को उलटता पलटता हूँ। (बुख़ारी)

हज़रत अबू मूसा अश्शरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया कि तकलीफ की बात सुनकर सब्र करने वाला अल्लाह से बढ़कर कोई नहीं।

लोग अल्लाह के लिए औलाद बनाते हैं (हालांकि वह इस से पाक है) फिर भी वह उन्हें आफ़ियत और रिज़क देता है।

हज़रत सायब बिन ख़ल्लाद (रज़ि०) ने बयान किया कि एक शख्स कुछ लोगों का इमाम बना, उस ने क़िब्ला की ओर थूक दिया, रसूलुल्लाह (सल्ल०) उस की तरफ देख रहे थे। जब वह नमाज़ से फ़ारिग हुआ तो आप ने उस की क़ौम से फरमाया कि आइन्दा यह तुम्हें नमाज़ न पढ़ाये। इस के बाद उस ने नमाज़ पढ़ाना चाही तो उन लोगों ने उसे मना कर दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के इर्शाद से बाख़बर कर दिया।

उस शख्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इस बात का ज़िक्र किया (यानी यह दर्याफ़्त किया कि क्या आप ने ऐसा फरमाया है) आप ने फरमाया हाँ! हज़रत सायब बिन ख़ल्लाद (रज़ि०) फरमाते हैं कि मुझे ख़याल है कि आप ने यूँ भी फरमाया कि बिलाशुब्हा तुम ने अल्लाह और उस के रसूल को तकलीफ दी। (अबूदाऊद)

कुछ हज़रात ने फरमाया कि अल्लाह को तकलीफ देने से रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तकलीफ देना मुराद है और इस में और ज़्यादा आप का इकराम है कि आप को तकलीफ देने को अल्लाह तआला को तकलीफ देने से तअबीर (संज्ञा) फरमाया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया कि मेरे

सहाबा (रज़ि०) के बारे में अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, उन को मेरे बाद अपने एतिराज़ात का निशाना मत बनाना, क्योंकि उन से जिस ने मुहब्बत की मुझ से मुहब्बत की वजह से की और जिस ने उन से बुग़ज़ रखा मेरे बुग़ज़ की वजह से रखा और जिस ने उन को तक्लीफ़ पहुँचाई उस ने मुझे तक्लीफ़ पहुँचाई और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने अल्लाह को तक्लीफ़ दी और जिस ने अल्लाह को तक्लीफ़ दी तो करीब है कि अल्लाह तआला उस की गिरफ्त फ़रमाएगा। (मिशकातुल् मसाबीह पेज नं० 554 तिमिज़ी)

आयते शरीफ़ा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हर किस्म की तक्लीफ़ पहुँचाने पर मल्हून होने का ज़िक्र है। बाज़ हज़रात ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से नक्ल फ़रमाया है कि जिस ज़माने में हज़रत आईशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर आरोप लगाया गया (जिस का ज़िक्र सूर: मोमिनून के दूसरे रुकूअ में गुज़र चुका है) तो मुनाफ़िकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई के घर में कुछ लोग जमा हुए जो इस आरोप को फैलाने की बातें करते थे, उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) से इस की शिकायत फ़रमाई कि यह शख्स मुझे तक्लीफ़ पहुँचाता है।

‘सुनन तिमिज़ी’ की जो हदीस हम ने ऊपर नक्ल की है उस में यह भी है कि आप ने फ़रमाया जिस ने मेरे सहाबा को तक्लीफ़ दी उस ने हमें भी तक्लीफ़ दी। इसी से समझ लिया जाए कि जो लोग हज़रात सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन को बुरा कहते हैं और उन को गालियाँ बकते हैं, यह लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँचाने का अमल करते हैं, लिहाज़ा कुर्आन करीम की रौशनी में यह लोग मल्हून हैं।

अल्लाह तआला और उस के रसूल को तक्लीफ़ पहुँचाने वाले लअनत के हक्दार हैं, फिर इस बात को स्पष्ट किया है कि मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को जो लोग तक्लीफ़ पहुँचाते हैं और वह काम उनके ज़िम्मे लगाते हैं जो उन्होंने किये यानी उन पर आरोप लगाते हैं, उन लोगों ने आरोप का और खुले गुनाह का बोझ अपने ज़िम्मे उठाया। (जिस का वबाल आख़िरत में बहुत ज़्यादा है।)

### बद्ज़बानी और बुरी बातें-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेम्बर पर तशरीफ़ ले गये और बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ वह लोगों! जिन्होंने ज़बान से इस्लाम कुबूल किया है और उन के दिलों तक ईमान नहीं पहुँचा, मुसलमानों को तक्लीफ़ न दो, उन पर ऐब न लगाओ और उन के छुपे हालात के पीछे न पड़ो क्योंकि जो शख्स अपने मुसलमान भाई की किसी छुपे हुए ऐब की बात के पीछे पड़ेगा अल्लाह तआला उस के पोशीदा ऐब के पीछे लगेगा और अल्लाह जिस के ऐब के पीछे लगे उसे रुस्वा कर देगा अगरचे अपने घर के अन्दर ही हो। (रवाहु अल् तिमिज़ी)

हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “सब से बड़ा सूद यह है कि जानबूझकर किसी मुसलमान की आबरू में ज़बान दराज़ी की जाए”। (अबू दाऊद)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे

मेअराज कराई गई, मैं ऐसे लोगों पर से गुज़रा जिन के ताँबे के नाखून थे, वह उन के पास चेहरों और सीनों को छील रहे थे मैंने कहा ऐ जिब्रईल! यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह वह लोग हैं जो लोगों के गोشت खाते हैं (यानी उन की गीबत करते हैं) और उन की बेआबरुई करने में पड़े रहते हैं।

(रवाहु अबूदाऊद कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 429)

लोगों में गीबत, बदगोई, चुगलखोरी और तक्तीफ़ देने की जो मजलिसें होती हैं, सब लोग इस आयते करीमा और हदीस शरीफ़ पर ग़ौर करें, अपनी इस्लाह करें और ज़बान पर पाबन्दी लगाएँ कि ज़बान का यह भेड़िया इसी को फाड़ कर खा जाएगा। अगर कभी किसी चुगलखोर बदगो की तरफ़ से कोई मुसलमान की बेआबरुई होती देखें तो उस का दिफ़ाअ करें और उसकी हिमायत करे।

हज़रत मुआज़ बिन अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख्स ने मुनाफ़िक़ की बातें सुनकर किसी मोमिन की हिमायत की, अल्लाह उस के लिए एक फ़रिश्ता भेज देगा जो क़ियामत के दिन उस के गोشت को दोज़ख़ की आग से बचाएगा और जिस शख्स ने किसी मुसलमान को ऐब लगाने के लिए कोई बात कही तो अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ के पुल (यानी पुल सिरात) पर रोक देगा यहाँ तक कि अपनी कही हुई बात से फिर जाए (या उसे राज़ी करे जिस की बेआबरुई की थी या अज़ाब भुगतेंगा।) (मिश्कातुल मसाबीह पेज नं० 424)

**59-62**

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ  
يَعْرِفْنَ فَلَا يُؤْذِينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ لَّيْنٌ لِّمَنِّيهِ الْفُقُؤُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ  
وَالْمَرْجُؤُونَ فِي الْمَذِينَةِ لَنُغَرِّبَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝ مَلْعُونِينَ ۖ إِنَّمَا تُشَقُّو  
أَجْدَاوًا وَقَتَلُوا نَفْسَيْنِ ۝ سَأَلَ اللَّهُ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَن يُجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

### पर्दे के एहतियाम का हुक्म

मुफ़ससरीन ने लिखा है कि रात के वक़्त जब घरों में बैतुलख़ला (बाथरूम) नहीं बनाये गये थे, औरतें कज़ा-ए-हाजत के लिए ख़जूर के बाग़ों में, नीचे के इलाक़ों में जाया करती थीं उन में हुरह (आज़ाद) औरतें और उम्मः (बाँदियाँ) दोनों होती थी। मुनाफ़िक़ीन और औबाश लोग रास्तों में खड़े हो जाते थे और औरतों को छेड़ते थे यानी इशारे बाज़ी करते थे, उन का ध्यान बाँदियों की तरफ़ होता था, अगर कभी किसी आज़ाद औरत को छेड़ते और उस पर गिरफ़्त की जाती तो कह देते थे कि हम ने यह ख़याल किया था कि शायद यह बाँदी है।

दुश्मनाने इस्लाम (जिन में मदीने के रहने वाले यहूदी भी थे और मुनाफ़िक़ भी) यह हरकत भी करते थे कि मुसलमानों के लश्कर में जब कहीं जाते तो लोगों में रोअब पैदा करने वाली बातें फैलाते और शिकस्त की ख़बरें उड़ा देते और ख़्वाह मख़्वाह बैठे बिठाये यूँ कहते थे कि दुश्मन आ गया दुश्मन आ गया।

ऊपर की आयत में पहले तो यह हुक्म दिया कि अपनी औरतों को पर्दा करने का हुक्म दें। इर्शाद

फ़रमाया **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ**

(ऐ नबी! अपनी बीवियों से, अपनी बेटियों से और मोमिनीन की औरतों से फ़रमा दीजिए कि अपनी बड़ी-बड़ी चादरें जो इतनी चौड़ी हों जिस में औरत सर से पांव तक अपने आप को लपेट सके, अपनी उन चादरों का एक हिस्सा अपने ऊपर डाल लिया करें।)

सर से ढके रहें, चेहरे भी और सीने भी। जब पर्दा का यह एहतिमाम होगा तो आज़ाद औरतें और बांदियाँ अलग-अलग पहचानी जा सकेंगी, क्योंकि काम-काज के लिए निकलने की वजह से बांदियों को चेहरा ढांकने का हुक्म नहीं है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने **يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ** की तफ़सीर करते हुए फ़रमाया कि अपने सरो को और चेहरों को बड़ी-बड़ी चादरों से ढाँके रहा करें, सिर्फ़ आँख खुली रहे जिस से चलने फिरने और देखने भालने की ज़रूरत पूरी हो सके और पूरा पर्दा करने की वजह से आज़ाद औरतों और बाँदियों में अन्तर हो जाए ताकि बुरे लोग छेड़छाड़ न कर सकें, यानी बांदियों के साथ भी छेड़छाड़ करना मना था, लेकिन आज़ाद औरतों को पूरे पर्दे का हुक्म देने से उन बुरे लोगों का यह बहाना ख़त्म हो गया कि हम ने बाँदी समझकर आवाज़ दिया था। (रुहुल मअानी भाग 2 पेज नं० 89)

याद रहे कि आयते करीमा में इर्शाद फ़रमाया कि ऐ नबी! आप अपनी बीवियों, बेटियों और मोमिनों की औरतों को हुक्म दे दें कि अपने ऊपर चौड़ी चादरें डाले रहा करें। इस से एक बात यह मालूम हुई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की एक से ज़्यादा बेटियाँ थीं।

दूसरी बात यह मालूम हुई कि जैसे सय्यदना रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़ाजे मुतहहरात (रज़ि०) और बेटियों (रज़ि०) को पर्दा करने का हुक्म था, उसी तरह दूसरे मोमिनीन की बीवियों को भी पर्दा करने का हुक्म है। बाज़ लोग जाहिल औरतों को बेपर्दा बाज़ारों और पार्कों में घुमाने को काबिले फ़ख़्र समझते हैं और यूँ कहते हैं कि पर्दे का हुक्म सिर्फ़ अज़ाजे मुतहहरात (रज़ि०) के लिए था, आम औरतों के लिए नहीं है। आयते करीमा से उन लोगों की यह जाहिलाना बातें रद्द होती हैं।

यहूदियों और मुनाफ़िकों की यह जो हरकत थी कि वह मुसलमानों में ख़ौफ़ व हिरास पैदा करें, उसके बारे में फ़रमाया **لَيْنَ لَّزَيْنَتَهُ السُّفَهَاءُ** अगर मुनाफ़िकीन और वह लोग जिन के दिलों में मर्ज़ है यानी ईमान की कमजोरी।

है ठीक तरह **وَهُمْ قَوْمٌ كَانَ فِيهِمْ ضَعْفٌ إِيْمَانُهُمْ وَقَلَّةٌ ثِبَاتٌ عَلَيْهِ عَمَاهُمْ عَلَيْهِ مِنَ التَّنْزِيلِ وَمَا يَسْتَتِيعُهُ مَا لَا خَيْرَ فِيهِ** (روح المعاني) से मुसलमान नहीं हुए और वह मदीना मुनव्वरह में ख़बरें उड़ाने वाले बाज़ न आए तो हम आप को हुक्म देंगे कि आप उन के साथ वह मामला करें जो दुश्मन के साथ होता है।

जब आप ऐसा करेंगे तो वह आप के साथ मदीना मुनव्वरह में थोड़े ही वक़्त रह सकेंगे। इस में ख़िताब तो है रसूलुल्लाह (सल्ल०) को, लेकिन तम्बीह है उन लोगों को जो बुरी हरकतें करते हैं। अगर उन्होंने अपनी हरकतें न छोड़ीं तो हम अपने नबी को उन पर मुसल्लत कर देंगे।

وَالْمُؤْمِنِينَ

जब मदीना मुनव्वरह से जिलावतन किये जाएंगे तो लअनत में फिरते रहेंगे, उन पर अल्लाह की फिटकार होगी।

إِنَّمَا تُقْبَلُونَ أَجْدُوا وَقَتْلُوا تَقْتِيلًا

फिर जहाँ कहीं भी होंगे पकड़े जाएंगे और खूब कत्ल किये जाएंगे।

سُئِلَ اللَّهُ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ

अल्लाह ने उन लोगों में तरीके मुकर्रर फरमा दिये हैं जो पहले गुज़र चुके हैं कि फसादियों को कत्ल किया जाता रहेगा और वह जिलावतन किये जाते रहेंगे और जहाँ कहीं भी होंगे लअनत के हक्दार और मक्तूल होते रहेंगे।

وَلَنْ يَجِدَ اللَّهُ تَبْدِيلًا “और आप अल्लाह के तरीके यानी अ़िबादत में तब्दीली न पाएँगे”।

‘साहिबे रूहुल् मअ़नी’ ने जो बातें लिखी हैं उन में से एक तो यह है कि मुनाफ़ि़कीन तकलीफ़ के कामों से रुक गये थे और तम्बीह नाज़िल हुई थी और जो तम्बीह नाज़िल हुई थी उस के डर से अपने कामों से बाज़ आ गये थे, लिहाज़ा कत्ल नहीं किया गया।

बाज़ हज़रात ने फरमाया है कि जिन लोगों को तम्बीह की गई थी वह अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आये और मस्जिद से निकाल कर उन्हें ज़लील किया गया और उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से भी हज़रात मुहम्मद (सल्ल०) को मना फरमा दिया। इस तरह वह सब की नज़रों में मलूअन हो गये, यह तो मुनाफ़ि़कीन के साथ हुआ।

अल्बत्ता यहूदियों को मदीना मुनव्वरह से जिलावतन किया गया, यह कबीला बनू नज़ीर का था और यहूद के कबीले बनू कुरैज़ा के बालिग़ मर्दों को कत्ल कर दिया गया।

63-68

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكِبَرَاءَنَا فَأَصَلَّوْنَا السَّبِيلَ ۝ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمُ لَعْنَا كَبِيرًا ۝

## काफ़ि़रों पर अल्लाह तअ़ाला की लअनत

काफ़ि़रों और मुनाफ़ि़कों के सामने जब क़ियामत का ज़िक्र आता था तो इस के वाक़ेअ होने का इन्कार करते हुए यूँ कहते थे यह तो बताओ कि क़ियामत कब आएगी? अल्लाह तअ़ाला ने जवाब में इश्ाद फरमाया إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ कि इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है, इस के घटित होने का वक़्त तय कर के अल्लाह तअ़ाला ने किसी को नहीं बताया, न किसी फ़रिश्ते को, न किसी नबी को, लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि यह वाक़ेअ ही न होगी, इस का होना मुकर्रर और मुक़दर है, इस के आने में देर लगना और तुम्हारे सामने वाक़ेअ न होना इस बात की दलील नहीं कि वह वाक़ेअ न होगी। फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से

ख़िताब फ़रमाया **وَمَا يَذُرُّكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ فِي يَدَيْهِ**

(और आप को इस की क्या ख़बर अज़ब नहीं कि क़ियामत करीब ही ज़माना में वाक़ेअ़ हो जाए।)

जब आप को इस का वक़्त मुक़र्रर मालूम नहीं हर वक़्त सन्देह है तो इन झुठलाने वालों को तो और भी इस का वक़्त मुक़र्रर मालूम नहीं। जब हमेशा होने का सन्देह है तो उस पर लाज़िम है कि उस से डरते रहें और तैयारी करते रहें न यह कि जल्दी मचाये, मज़ाक़ उड़ाये। इस में ख़िताब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को है और तम्बीह है इन्कार करने वालों पर।

इस के बाद काफ़िरों की बद्हाली बताई और इर्शाद फ़रमाया **إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ** बिलाशुब्हा अल्लाह ने काफ़िरों पर लअनत कर दी, वह दुनिया में भी मलूअन हैं और आख़िरत में भी। अगर दुनिया में कुछ मज़े उड़ते हैं तो अल्लाह तआला की तरफ़ से लअनत और फिट्कार में होते हुए जीते हैं और मलूअनियत की ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं और आख़िरत में उन के लिए दहकती हुई आग का अज़ाब है, वह भी थोड़े दिन का या बहुत ज़रा देर का नहीं बल्कि उस में हमेशा हमेश रहेंगे।

वहाँ कोई यार व मदद्गार न मिलेगा, जिस रोज़ उन के चेहरे आग में उलट-पुलट किये जाएँगे, चेहरों के बल दोज़ख़ की आग में घसीटे जाएँगे तो अप्सोस के साथ यूँ कहेंगे कि हाय काश! हम ने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की होती और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बात मानी होती। अगर हम इताअत करते तो आज अज़ाब में मुब्तिला न होते।

इस के बाद यूँ कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और बड़ों की फ़रमाँबरदारी की, उन्होंने हमें ईमान कुबूल न करने दिया और कुफ़्र पर जमे रहने की ताकीद करते रहे। इस तरह से उन्होंने हमें सही रास्ते से और दीने हक़ से हटाकर गुमराह कर दिया।

**سَادَاتُكُمْ وَكِبَرَاءُكُمْ** के उमूम में छोटे बड़े चौधरी, कुफ़्र के सरगने, गुमराही के लीडर सब ही दाख़िल हैं। दुनिया में जहाँ कहीं ईमान की फ़िज़ा बनती है, कौमों के लीडर और चौधरी ईमान से रोकते हैं, जो शख्स इस्लाम कुबूल कर ले उसे वापस कुफ़्र में ले जाने की कोशिश करते हैं।

कुफ़्र की दअवत देने के लिए और अपनी कौमों को इन्कार पर जमाने के लिए उन के लीडर बड़ी-बड़ी मेहनतें करते हैं और अरबों की तअदाद में रुपये खर्च करते हैं और दुनिया में अपनी बड़ाई और चौधराहट बाकी रखने के लिए करोड़ों इन्सानों को दोज़ख़ का ईधन बनाने और बनाये रखने की कोशिश जारी रखते हैं, दुनिया में यह हाल है लेकिन वहाँ जब अज़ाब में मुब्तिला होंगे तो अपने मानने वालों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे और छोटे बड़ों में हर किस्म के तअल्लुकात ख़त्म हो जाएँगे और छोटे बड़ों पर और बड़े छोटों पर लअनत करेंगे कोई किसी का मदद्गार न होगा, यही अ़वाम और पब्लिक के लोग जो दुनिया में अपने बड़ों और चौधरियों की बात मानते हैं दोज़ख़ में पहुँचकर अपने बड़ों, लीडरों और चौधरियों के बारे में अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे रब! इन को दोहरा अज़ाब दे, खुद गुमराह थे अज़ाब तो इन्हें होना ही है हमें जो उन्होंने गुमराह किया उस के बदले भी उन को अज़ाब दे।

दोज़ख़ी लोग अपने बड़ों के लिए यूँ भी दुआ करेंगे कि ऐ हमारे रब! इन पर बड़ी लअनत कीजिए



(जो शख्स कुफ़र पर मर गया उस पर लअनत है चाहे छोटा हो या बड़ा लेकिन आम लोग अपने बड़ों और चौधरियों के लिए बड़ी लअनत का सवाल करें।

**69-71**

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًُا  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۚ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ  
وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

## हज़रत मूसा (अलै०) की तरह

‘सहीह बुख़ारी’ पेज नं० 483 में हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मरफूअन नक्ल है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा हज़रत मूसा (अलै०) शर्म वाले आदमी थे और पर्दा करने का ख़ूब एहतिमाम करते थे, यहाँ तक कि उन के जिस्म की खाल भी नज़र आ जाए तो इस से भी शर्माते थे।

बनी इस्राईल के लोग समझते थे कि हज़रत मूसा के जिस्म में कोई ऐब है, जिस की वजह से अपने जिस्म का इतना सख़्त पर्दा करते हैं। एक दिन नहाने के लिए गये तो अपना कपड़ा एक पत्थर पर रख दिया, वह पत्थर अल्लाह के हुक्म से उनका कपड़ा लेकर भागने लगा और मूसा (अलै०) उसके पीछे दौड़ते गये यहाँ तक कि बनी इस्राईल की एक जमाअत के पास पहुँच गये। लोगों ने देखा कि हज़रत मूसा (अलै०) को न वर्स की बीमारी थी, न ही कोई दूसरा जिस्मानी मर्ज़। इस तरह बनी इस्राईल इल्ज़ामात लगाकर तकलीफें पहुँचाते रहे जिसका इस आयत में ज़िक्र है।

कुर्आन मजीद में जो **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا** फ़रमाया उस में इसी किस्से को बयान किया गया है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ऐ ईमान वालों! उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने हज़रत मूसा (अलै०) को तकलीफ़ दी, सो अल्लाह ने उन्हें उन की बातों से बरी कर दिया और वह अल्लाह तआला के नज़्दीक इज़्ज़त वाले थे।

यह तो हज़रत मूसा (अलै०) के वाकिये का ज़िक्र है, लेकिन इमामुल् अम्बिया मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) को लोगों ने कितनी तकलीफें दी थीं? इस के बारे में भी सहीह बुख़ारी भाग एक पेज नं० 446 और 483 में एक वाकिआ लिखा है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से मरवी है, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ग़ज़-ए-हुनैन के मौक़े पर अरब के बाज़ सरदारों में माल तक्सीम फ़रमाया था और उन में से किसी को दूसरे के मुक़ाबिले में ज़्यादा दे दिया, वहीं हाज़िरीन में से किसी ने यूँ कह दिया कि यह ऐसी तक्सीम है जिस में इन्साफ़ नहीं किया गया या यूँ कह दिया कि इस तक्सीम से अल्लाह की रज़ा मक्सूद नहीं है।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने (हुनैन की जंग का) माल तक्सीम किया तो एक शख्स कहने लगा कि इस तक्सीम से अल्लाह की रज़ा मक्सूद नहीं है। मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और उन्हें यह बात बतलाई। आप (सल्ल०) के चेहरे मुबारक पर गुस्से के अस्रात

ज़ाहिर हुए और फ़रमाया अल्लाह मूसा पर रहम फ़रमाए उन्हें इस से भी ज़्यादा तकलीफ़ दी गई लेकिन उन्होंने सब्र किया।” (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर होकर उन लोगों की यह बात नक्ल कर दी तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह और उस का रसूल इन्साफ़ नहीं करेगा तो फिर कौन इन्साफ़ करेगा? अल्लाह मूसा पर रहम फ़रमाए उन्हें इस से ज़्यादा तकलीफ़ दी गई, फिर भी उन्होंने सब्र किया।

बात यह है कि जो माल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने तक्सीम फ़रमाया वह किसी की मिल्कियत नहीं था वह अमवाले ‘फ़य’ था, इस में अल्लाह तआला की तरफ़ से आप को यह अख़्तियार दिया गया कि अपने अख़्तियार से तक्सीम फ़रमा लें, किसी का हक़ रोककर माल तक्सीम नहीं फ़रमाया था और यह बात न थी कि एक का हक़ दूसरे को दे दिया, फिर इस को इन्साफ़ के ख़िलाफ़ कहना ही जुल्म है।

हदीस की शरह लिखने वाले हज़रात ने लिखा है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर एतिराज़ करना कुफ़्र है जिस की सज़ा क़त्ल है, लेकिन आप ने बात के कहने वाले शख्स को क़त्ल नहीं किया क्योंकि ‘तालीफ़े क़ल्ब’ दिल को नर्म करने की ज़रूरत थी। अहले अरब में यह शोहरत हो जाती कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने साथियों को क़त्ल करते हैं, इस शोहरत की वजह से अन्देशा था कि इस्लाम जो फैल रहा था उस में रुकावट हो जाती।

बहरहाल रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इतनी बड़ी तकलीफ़ देने वाली बात को बर्दाश्त कर लिया और फ़रमाया कि हज़रत मूसा (अलै०) को इस से ज़्यादा तकलीफ़ दी गई और उन्होंने सब्र किया, यह तो एक तकलीफ़ थी इस के अलावा मुनाफ़िकीन से तकलीफ़ें पहुँचती रहती थीं आप दरगुज़र फ़रमाते थे। इसी तरह जब कभी कोई शख्स दअवत के लिए खड़ा होता है तो उसे भी तकलीफ़ पहुँचती हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपने अमल से बर्दाश्त कर के बता दिया और कौल से समझा दिया कि पहले भी ऐसा हुआ है।

यह जो इर्शाद फ़रमाया कि “उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ दी” मुसलमानों को ख़िताब फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और ठीक बात कहो, ठीक बात में सब कुछ आ गया सच्ची बात भी और सही बात भी और अद्ल व इन्साफ़ और हर दीनी बात भी।

इसीलिए हज़रत इकिरमा (रज़ि०) ने फ़रमाया (كما في معالم التنزيل) कि قَوْلُ سَيِّدِنَا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ से कहना मुराद है। तर्तीब में पहले तक्वा का ज़िक्र किया, फिर कौले सदीद कहने का हुक्म फ़रमाया। इस से यह बात निकलती है कि तक्वा होगा तो बन्दा नेक आमाल अख़्तियार करेगा। अगर तक्वा न हो तो आमाले सालिहा अख़्तियार करने और गुनाह से बचने की बन्दे को हिम्मत नहीं होती, अल्लाह से डरे और आख़िरत की फ़िक्र करे तब कौल और अमल सही होते हैं।

फिर तक्वा अख़्तियार करने और सही बात कहने का इन्आम बताया تَضِيحُ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल को कुबूल फ़रमा लेगा और तुम्हारे गुनाहों की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।

## अल्लाह और रसूल (सल्ल०) की इताअत में कामियाबी-

इस के बाद फ़रमाया **وَمَنْ يَطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا**

(और जो शख्स अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमाँबरदारी करे तो वह बड़ी कामियाबी के साथ कामियाब होगा।)

लोगों में कामियाबी के बहुत से मेअयार हैं, कोई माल ज़्यादा होने को कामियाबी समझता है और कोई बादशाह बन जाने को, कोई मन्त्री पद मिल जाने को और कोई जायदाद बना लेने को और कोई ज़्यादा पैसों वाली मुलाज़िमत मिल जाने को कामियाबी समझता है। अल्लाह तआला ने कामियाबी का मेअयार बता दिया कि कामियाब वह है जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करे और यही बड़ी कामियाबी है।

खुत्बा निकाह में रसूलुल्लाह (सल्ल०) शहादत के बाद आयते करीमा **يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ** और आयते करीमा **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ** और आयते करीमा **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ** पढ़ा करते थे। आप (सल्ल०) ने खुत्बा निकाह में जो तीन आयात अख़्तियार फ़रमाई उन में चार जगह तक्वा का हुक्म है, इस से तक्वा की अहमियत और ज़रूरत मालूम हो गई।

**72-73**

**إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝ لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝**

## अमानत का बोझ उठाने से इन्कार

यह दो आयात का तर्जुमः है। पहली आयत में अमानत सुपुर्द करने का और दूसरी आयत में नाफ़रमानों के लिए अज़ाब देने का और अहले ईमान पर मेहरबानी फ़रमाने का ज़िक्र है।

यह जो फ़रमाया कि हम ने आसमानों पर, ज़मीनों पर, पहाड़ों पर अमानत पेश की और उन्होंने इस की ज़िम्मेदारी उठाने से इन्कार कर दिया और उस से डर गये और इन्सान ने उस को उठा लिया। इस में अमानत से क्या मुराद है? इस बारे में बहुत सी बातें कहीं गई हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से हुक्म की फ़रमाँबरदारी करना यानी फ़रायज़ का अन्जाम देना मुराद है। आसमानों से, ज़मीन से और पहाड़ों से अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम अमानत को कुबूल करो यानी हुक्मों की फ़रमाँबरदारी की ज़िम्मेदारी का इक़्रार करो और उन की अदायगी का बोझ उठा लो, उन चीज़ों ने कहा कि अगर हम ज़िम्मेदारी को बर्दाश्त कर लें और हुक्मों पर अमल पैरा होने का वादा कर लें तो इस का अन्जाम क्या होगा? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर अच्छे अमल करोगे तो उस का अच्छा अज़्र मिलेगा और अगर नाफ़रमानी करोगे तो अज़ाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह हमारे बस की बात नहीं है, न हमें सवाब चाहिए न अज़ाब में मुब्तिला होने को तैयार हैं, (शरअी तौर पर हुक्मों का बोझ उठाना हमारे बस का नहीं।)

हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि०) रिवायत फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया

कि बिलाशुब्हा मक्का मुकर्रमा में एक पत्थर है मैं उसे पहचानता हूँ जिन दिनों मेरी बेअसत (अभ्युद्ध) हुई वह मुझे सलाम किया करता था। (सहीह मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 245)

### अमानत-

जब इन्सान पर अमानत पेश की गई और अल्लाह के हुक्म पर अमल पैरा होने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई तो इन्सान ने उसे कुबूल कर लिया और बर्दाश्त कर लिया और यह मान लिया कि मैं अल्लाह के हुक्म पर अमल करूँगा, फ़रायज़ की पाबन्दी करूँगा, वाजिबात अदा करूँगा।

وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ में الْإِنْسَانُ से क्या मुराद है? बाज़ मुफ़स्सिरीन के बयान के मुताबिक़ यह अमानत की पेशी हज़रत आदम (अलै०) पर हुई थी। सवाब मिलने के जोश में आकर उन्होंने कुबूल कर लिया, गुनाह की तरफ़ ख़ास ध्यान नहीं दिया और चूँकि अल्लाह की ओर से यह फैसला भी था और उन्हें ख़िलाफ़त के लिए पैदा किया गया था।

यह अमानत की पेशी कब हुई? बाज़ हज़रत ने फ़रमाया है कि यह भी يوم الميثاق में हुआ, जिस का ज़िक्र आयते करीमा (सूर: अअराफ़-172) وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ में है और बाज़ हज़रत ने फ़रमाया कि यह वाकिआ يوم الميثاق से पहले का है।

والله اعلم بالصواب

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर व बिन आस (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इन्सान में पहले शर्मगाह पैदा फ़रमाई और फ़रमाया कि यह अमानत है और तेरे पास अमानत के तौर पर रखी जा रही है, इसे बरबाद मत करना सिर्फ़ हलाल जगह में इस्तेमाल करना। अगर तूने इस की हिफ़ाज़त की तो मैं तेरी हिफ़ाज़त करूँगा (इस के बाद फ़रमाया) शर्मगाह अमानत है, कान अमानत हैं, आँख अमानत हैं, ज़बान अमानत हैं, पेट अमानत है, हाथ अमानत हैं, पांव अमानत हैं यानी इन चीज़ों से मुतअल्लिक़ जो अहक़ाम दिये गये हैं उन की ख़िलाफ़वर्ज़ी ख़यानत है और उन्हें अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल करना अमानत अदा करना है। (रुहुल मअानी भाग 22 पेज नं० 96 ता 98)

आयते करीमा (सूर: अन्फ़ाल 27) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا की तफ़सीर करते हुए हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया:-

لا تخونوا الله بترك فرائضه والرسول بترك سنته यानी फ़रायज़ को छोड़कर अल्लाह की ख़यानत न करो और सुन्नतों को छोड़कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़यानत न करो।

अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्ल०) की ख़यानत करने की मुमानिअत करने के बाद फ़रमाया وَأَطِيعُوا أَمْرًا और आपस में अपनी अमानतों में ख़यानत न करो, चूँकि अमानत का मतलब बहुत बड़ा है और हर तरह की अमानत में ख़यानत करने की मुमानिअत है, इसलिए हर ख़यानत से एहतिमाम के साथ परहेज़ करना ज़रूरी है।

माली ख़यानत को तो सभी जानते हैं, जैसे कोई शख्स किसी के पास अमानत रखे और वह उस

को खा जाए या इस्तेमाल करे या कम कर दे या दो साझीदार आपस में ख़यानत कर लें। जो शख्स कर्ज़ देकर या किसी भी तरह अपना माल देकर भूल जाये, उस का हक़ रख लें वगैरह-वगैरह। यह सब ख़यानतें हैं और हर शख्स को मालूम होता है कि मैंने किस का हक़ मारा है और किस की ख़यानत की है?

आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह का डर हो तो इन्सान ख़यानत से बच सकता है वरना दुनियावी फ़ायदे को देखकर अच्छे-अच्छे लोग इस मस्ले में कच्चे पड़ जाते हैं, हर शख्स अपने-अपने हुक्मों में दयानतदार है, छोटे बड़े बादशाह, रईस और मन्त्री अमानतदार हैं, उन्होंने जो ओहदे अपने ज़िम्मे लिये हैं वह उन की ज़िम्मेदारी शरीअते इस्लामिया के मुताबिक़ पूरी करें किसी भी मामले में अ़वाम की ख़यानत न करें।

इसी तरह बालिग़ और सफ़र के साथी, पड़ोसी, मियाँ-बीवी, माँ-बाप और औलाद सब एक दूसरे के माल के और दूसरे हुक्मों के अमानतदार हैं, जो भी कोई किसी की ख़यानत करेगा गुनाहगार होगा और आख़िरत के मैदान में पकड़ा जाएगा, मालियात के अ़लावा दूसरी चीज़ों में भी ख़यानत होती है जिन का ज़िक्र अह़दीस शरीफ़ा में वारिद हुआ है।

सूर: निसा (आयत नं० 58) में फ़रमाया **إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا** (बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म फ़रमाता है कि अमानत वालों को उनकी अमानतें दे दिया करो।)

सूर: बकर: (आयत नं० 183) में फ़रमाया है:-

**لَا تَأْخُذْ بَعِثَتِ الْوُحْيَ وَالَّذِي أَوْثَقَ الْأَمَانَاتِ** (सो अगर तुम में से एक शख्स दूसरे शख्स पर ए़तिमाद करे, तो जिस पर ए़तिमाद किया गया वह दूसरे की अमानत अदा करे और अल्लाह से डरे जो उस का रब है।

सूर: मअरिज (आयत नं० 32) में नेक बन्दों की तअरीफ़ करते हुए फ़रमाया:

**وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ**

(और वह लोग जो अपनी अमानतें और अपने अहद की रिआयत करने वाले हैं।)

हज़रत अनस (रज़ि०) ने फ़रमाया कि बहुत कम ऐसा हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने खुत्व: दिया हो और यूँ न फ़रमाया हो:-

**لَا إِيمَانَ لِمَنْ لَا أَمَانَةَ لَهُ وَلَا دِينَ لِمَنْ لَا عَهْدَ لَهُ** (رواه البيهقي في شعب الإيمان)

(उस का कोई ईमान नहीं जो अमानतदार नहीं और उस का कोई दीन नहीं जो अहद को पूरा न करे।)

मोमिन का काम यह है कि पूरी तरह अमानतदार रहे। अल्लाह तआला के फ़रायज़ और वाजिबात को भी अदा करे, सुन्नतों का भी एहतिमाम रखे, बन्दों के हुक्क भी अदा करे और अहद (प्रतिज्ञा) की भी पाबन्दी करे।

अमानतों की कुछ तफ़सील हम ने सूर: निसा की आयत **إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا** में बयान कर दी है।



إِنَّهٗ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا (बेशक इन्सान ज़लूम है जहूल है) 'ज़लूम' का मअना है जुल्म करने वाला और जहूल का मअना है 'नादान'।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि 'ज़लूम' का मअना यह है कि वह अपनी जान पर जुल्म करने वाला है और 'जहूल' का मतलब यह है कि उस ने जो अमानत की अदायगी का बोझ उठाया वह उसके अन्जाम को नहीं जानता था। यह लोगों के एतिबार से फ़रमाया क्योंकि इन्सानों में नेक भी हैं, उलमा भी हैं। इसीलिए आम लोगों का अन्जाम बताते हुए इर्शाद फ़रमाया:-

لَيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ

(ताकि अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों को, मुनाफ़िक़ औरतों को, मुशिरक मर्दों को और मुशिरक औरतों को)

وَيُعَذِّبَ اللَّهُ عَلَى الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ (और ताकि रहमत के साथ अल्लाह मुतवज्जेह हो मर्दों और मोमिन औरतों पर) यानी इन्सान ने अमानत के बोझ को उठा लिया, फिर इस ज़िम्मेदारी को निभाने वाले भी हुए और ख़िलाफ़वर्ज़ी करने वाले भी हुए जिस का अन्जाम यह हुआ कि मुनाफ़िक़ों और मुशिरकों को अज़ाब हो।

(इस में **الْكَافِرِينَ وَالْكَافِرَاتِ** का ज़िक्र नहीं है क्योंकि जब उन काफ़िरों का अन्जाम अज़ाब है, जो मुनाफ़िक़ हैं यानी ज़बान से इस्लाम का इक़्रार करते हैं और दिल से इन्कारी हैं तो जो लोग खुले काफ़िर होंगे वह मुस्तहिक्क़ अज़ाब होंगे।)

और ईमान वाले मर्दों और औरतों पर अल्लाह रहमत के साथ तवज्जोह फ़रमाएगा। इस में **وَيَرْحَمُ اللَّهُ** के बजाय **وَيُعَذِّبُ** फ़रमाया जिस में इस तरफ़ इशारा है कि जो शख्स नाफ़रमानी के बाद तौब: करेगा वह भी रहमत और मग़्फ़िरत का हक्कदार होगा।

आख़िर में जो **وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا** फ़रमाया, उस में यह बात बता दी कि मग़्फ़िरत फ़रमाना और रहम फ़रमाना अल्लाह तआला की सिफ़ात (गुण) हैं, काफ़िर और मुशिरक की तो मग़्फ़िरत नहीं। जैसा कि दूसरी आयत में बयान फ़रमाया है दुनिया में तो सब ही पर रहमत है और आख़िरत में केवल अहले ईमान पर रहमत होगी।



(भाग-34)

सूर-ए-सबा

(सूर: नं.34)

## तफ़्सीर सूर: सबा

**नाम-** आयत नं० (15) **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** से लिया गया है।

**नाज़िल होने का ज़माना-**

इब्ने मरदूविया और बैहकी ने अपनी किताब 'अल् दलायल' में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि यह सूर: मक्का में नाज़िल हुई थी। 'कुर्तुबी' लिखते हैं कि यह सूर: सब के नज़्दीक मक्की है, सिर्फ़ आयत नं० (6) के बारे में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ के नज़्दीक यह आयत मदनी है।



① तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए हैं, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, (सब) ‘उसी’ का है, और आखिरत में भी ‘उसी’ की तअरीफ़ है और ‘वही’ हिकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। ② ‘वह’ जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है, और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आसमान से उतरता है, और जो कुछ उस पर चढ़ता है, ‘वह’ रहम करने वाला, माफ़ करने वाला है। ③ और जिन लोगों ने इन्कार किया, उनका कहना है, (क़ियामत की) “वह घड़ी नहीं आएगी।” कह दीजिए, “क्यों नहीं! सारे संसार के ग़ैब (परोक्ष) के इल्म रखने वाले की क़सम, वह तुम पर ज़रूर आ कर रहेगी, ‘उससे’ ज़रा (कण) बराबर भी कोई चीज़ न आसमानों में छिपी है, और न ज़मीन में, और न इससे छोटी कोई चीज़ न बड़ी, मगर एक स्पष्ट किताब में (लिखी हुई) है; ④ ताकि ‘वह’ लोगों को बदला दे, जो ईमान लाए और अच्छे अमल करते रहे, उनके लिए माफ़ी और इज़्जत वाली रोज़ी है; ⑤ और जो लोग ‘हमारी’ आयतों को हराने की कोशिश करते रहे, उन्हें सख़्त दुःख देने वाले अज़ाब की सज़ा है।” ⑥ और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि आप के ‘रब’ की ओर से जो आप पर उतारा गया है, वह हक़ है, और ‘उसका’ रास्ता दिखाता है जो बड़ी ताक़त वाला, हम्द (तअरीफ़) के लायक़ है। ⑦ और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं, “क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाओगे तो फिर नये सिरे से जिन्दा किये जाओगे।” ⑧ क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़कर थोपा है,

या उसे जुनून है? नहीं, बल्कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, वह अजाब और निचले दर्जे की गुमराही में हैं। ⑨ क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा, जो उनके आगे भी है और उनके पीछे भी? अगर हम चाहें तो उन्हें धरती में धंसा दें या उन पर आसमान से कुछ टुकड़े गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो रूजूअ करने वाला हो। ⑩ और 'हमने' दाऊद को अपनी ओर से फ़ज़ल (श्रेष्ठ) किया था, ऐ पहाड़ो! इन के साथ तस्बीह करो और परिन्दों को (उन के वश में कर दिया) और 'हमने' उनके लिए लोहे को नर्म कर दिया था; ⑪ कि कुशादा ज़िरह (कवच) बनाओ और कड़ियों को अन्दाज़े से जोड़ो, और अच्छे काम करो, जो कुछ तुम करते हो उसको 'मैं' देख रहा हूँ। ⑫ और हवा को सुलेमान के अधिकार में कर दिया था कि उसका सुबह का चलना एक महीने तक (की दूरी) का होता, और उसका शाम के समय भी 'महीने तक (की दूरी) का होता, और 'हमने' उनके लिए पिघले हुए तौबे का स्रोत बहा दिया, और जिन्नो में से कितने ही जिन्न उनके रब के हुक्म से उनके सामने काम करते, "और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा 'हम' उसको आग का मज़ा चखाएँगे।" ⑬ वे (जिन्न) उनके लिए जो वह चाहते बना देते (अर्थात्) इमारतें, तस्वीरें, बड़े-बड़े थाल जैसे हौज़ और देगें (डेग) जो एक ही जगह रखी रहें।" ऐ दाऊद की औलाद शुक्र अदा करो, और मेरे बन्दों में बहुत ही कम शुक्रगुज़ार हैं। ⑭ फिर जब 'हमने' उनके लिए मौत का फैसला लागू किया, तो उनकी मौत का पता बस उस ज़मीन के कीड़े ने दिया जो उनकी लाठी को खा रहा था, फिर जब वह गिर पड़े, तब जिन्नो को मालूम हुआ कि अगर वे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखते तो इस अपमान भरी मुसीबत में न पड़ते।

## आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَلَمْ يَمَاتُ فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْخَزَائِرُ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَكِيمُ

“الحمد” से मुराद वह तमाम तअरीफें हैं जो आसमानों और ज़मीन के दर्मियान हो सकती हैं, उन सब का हक्कदार सिर्फ़ अल्लाह है जो आसमानों, ज़मीन और उन में पाई जाने वाली हर चीज़ का मालिक है। वह उन में से जिस तरह चाहता है करता है और वह तमाम नेअमतें जो रब्बुल् आलमीन ने बन्दों को दी हैं सब उसी की पैदा की हुई हैं, इसलिए आसमानों और ज़मीन में पाई जाने वाली मज़्लूक़ात के वजूद पर अल्लाह तआला की तअरीफ़ बयान करना यानी उस की उन नेअमतों पर तअरीफ़ बयान करना है जो उस ने अपने बन्दों को अता की हैं।

जिस तरह दुनिया की ज़िन्दगी में केवल वह तमाम तअरीफों का हक्कदार है, आखिरत की ज़िन्दगी में भी वही तमाम तअरीफों का हक्कदार होगा। अहले जन्नत जब अपने रब के फ़ज़ल व करम से जन्नत में भेज दिये जाएँगे तो उस का गुण गाएँगे, उस की हम्द व सना बयान करेंगे और कहेंगे “तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिस ने अपना वादा सच कर दिखाया।” (अल् जुमर, 74)

और कहेंगे, “तमाम तअरीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस राह पर डाला।” (सूर: अज़राफ़, 43)

और कहेंगे, “तमाम तअरीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म को दूर कर दिया।”

(सूर: फ़ातिर, 34)

और जिस ने अपने फ़ज़ल व करम से हमें उस जन्नत में दाख़िल कर दिया।” (सूर: फ़ातिर, 35)

मालूम हुआ कि रब्बुल् आलमीन जिस तरह दुनिया में तमाम तअरीफ़ों का हक्कदार है उसी तरह वह आख़िरत में भी तमाम तअरीफ़ों का हक्कदार है और जिस तरह वह दुनिया का मालिके कुल है, उसी तरह वह अकेला आख़िरत का भी मालिक है और वह अपने तमाम कामों में हिक्मत वाला है और अपनी मख़्लूक़ात के आ़माल से ख़ूब वाकिफ़ है।

**2** يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ الرَّحِيمُ الْعَفُورُ

अल्लाह तआ़ला से कोई चीज़ छुपी नहीं है वह आसमानों और ज़मीन के दर्मियान की हर चीज़ का इल्म रखता है। ज़मीन के अन्दर जो कुछ है चाहे वह पानी के ख़ज़ाने हों या दूसरी चीज़ों के और ज़मीन से जो कुछ निकलता है यानी पेड़, पौधे, ग़ल्ले, हैवानात और आसमान से जो कुछ नाज़िल होता है यानी बारिश, बर्फ़, ओले, बिजलियाँ, बन्दों की रोज़ी, फ़रिश्ते, आसमानी सहीफ़े और जो कुछ आसमान की तरफ़ चढ़ता है यानी फ़रिश्ते और बन्दों के आ़माल, उन सब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को होता है और वह अपने तौब: करने वाले बन्दों के गुनाहों को माफ़ करता रहता है।

**3** وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَ كُفْرُكُمْ ۖ عَلِيمُ الْغُيُوبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمُوتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

मुशिरकीने मक्का आख़िरत का इन्कार करते थे और कहते थे कि इस ज़िन्दगी के बाद कोई दूसरी ज़िन्दगी नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बान से उन के इस बातिल अक्कीदे को रद्द किया है कि यह तुम्हारी बद् ख़याली है, उस रब की क़सम जो तमाम ग़ैबी बातों का जानने वाला है क़ियामत आकर रहेगी।

उस ‘अल्लामुल् गुयूब’ से आसमानों और ज़मीन के दर्मियान एक ज़र्रह के बराबर भी कोई चीज़ छुपी नहीं है, छोटी या बड़ी हर चीज़ और हर बात उस के इल्म में है और लौहे महफूज़ में दर्ज है। इन्सानों की हड्डियाँ और उन के जिस्मों के टुकड़े जहाँ भी हों और जितने भी बिखर गये हों उसे एक ज़र्रह-ज़र्रह की ख़बर है और क़ियामत के दिन एक शब्द ‘कुन’ के ज़रिये उन सब को एक सेकेण्ड में जमा कर के उसी तरह ज़िन्दा कर देगा जिस तरह उस ने उन्हें पहली बार पैदा किया था।

**4-5** لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۖ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رَّحْمَتِ اللَّهِ ۖ

अक्ल का यही तकाज़ा है कि जिस अल्लाह ने इन्सानों को पैदा किया और उन्हें अपनी बन्दगी का मुकल्लफ़ बनाया, वह उन्हें दोबारा ज़िन्दा करे और उन के नेक व बुरे आ़माल का बदला चुकाये। इसी हक्कीक़त को अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (4/5) में बयान फ़रमाया है कि जो लोग ईमान लाएँगे और दुनिया की ज़िन्दगी में नेक अ़मल करेंगे तो क़ियामत के दिन अल्लाह उन के गुनाहों को माफ़ कर के उन्हें



जन्नत में दाखिल कर देगा और जो लोग उस की आयतों का इन्कार करेंगे उन में शुब्हात पैदा करेंगे और उस के बन्दों को उन पर ईमान लाने से रोकेंगे और इस ग़लत गुमान में मुक्तिला रहेंगे कि हम उन्हें दोबारा पैदा करने से बेबस हैं, ऐसे लोग बदतरीन और दर्दनाक अज़ाब से दो चार होंगे।

**6** وَيُرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝

मुशिरकीने मक्का तो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, लेकिन अहले किताब के उलमा जैसे- 'अब्दुल्लाह बिन सलाम' और उस के दूसरे मोमिन दोस्त यकीन रखते हैं कि कुर्आन करीम अल्लाह की बरहक़ किताब है क्योंकि तौरेत में आखिरत, मौत के बाद उठाये जाने, तक्दीर और लौहे महफूज़ में बन्दों के आमाल दर्ज किये जाने से मुतअल्लिक जो ख़बरें बयान की गई हैं वही कुर्आन करीम में मौजूद हैं। इसलिए जब वह कुर्आन की आयतें सुनते हैं तो उन का यकीन बढ़ जाता है कि यह भी अल्लाह की ही किताब है, जो उस के दीन व शरीअत की तरफ़ रहनुमाई करती है।

**7-8** وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نُنَادِيكُمْ عَلَىٰ رَحِيلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُرِقْتُمْ كُلٌّ مِرْقٍ ۚ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝  
أَفَتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝

मक्का के इन्कारी मौत के बाद उठाये जाने और क़ियामत के दिन बदला मिलने का इन्कार मुख्तलिफ़ अन्दाज़ में करते थे। एक अन्दाज़ा यह भी था कि वह ख़ातिमुन्नबीय़ीन (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाने के लिए भी ऐसी बातें छेड़ते थे और अपने ही जैसे दूसरे काफ़िरों से कहते थे, क्या तुम्हें एक ऐसा आदमी दिखाऊँ जो अपने महबूबाना ख़यालात में इस हद को पहुँच गया है कि वह कहता फिरता है कि जब हम लोग मरकर मिट्टी में गल सड़ जाएँगे तो अल्लाह हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा।

और कहते हैं कि अगर उस के पास कुछ अक्ल है तो वह अल्लाह पर आरोप लगा रहा है और कहता है कि मुझे अल्लाह ने यह बात बज़रिये व्ह्य बताई है या फिर वाकई इसे जुनून हो गया है जिस के असर से इस तरह की बहकी-बहकी बातें करता है।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल से सम्बन्धित इस मज़ाक़ वाली बात और आखिरत के इन्कार का अन्जाम बता कर जवाब दिया है यानी उन की बात इस काबिल है ही नहीं कि उस के सच्चे या झूठे होने से सम्बन्धित बात की जाए बस उन्हें जान लेना चाहिए कि क़ियामत के दिन दर्दनाक अज़ाब दिया जाएगा।

अल्लाह तआला ने उन के बारे में ख़बर दी कि वह अपनी गुमराही में बहुत दूर जा चुके हैं, जहाँ से राहे रास्त की तरफ़ उन के लौट कर आने की अब कोई उम्मीद नहीं है।

**9** أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ شَأْنَهُمْ خُفِيَ عَنْهُمْ الْأَرْضِ أَوْ يُسْقَطُ عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝

क़ियामत का इन्कार करने वालों के अन्दर यह गुमराह करने की हिम्मत इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने कभी आसमान व ज़मीन की पैदाइश के बारे में ग़ौर किया ही नहीं कि जिस मालिक ने इन मख़्लूक़ात को

पैदा किया है जो इन्सानों को उन के आगे और पीछे से नहीं बल्कि हर तरफ़ से घेरे हुए हैं। क्या वह इस पर कादिर नहीं है कि उन से निहायत छोटी मख़्लूक़ यानी इब्ने आदम को दोबारा ज़िन्दा कर सके?

इस आयत में दो बातें बयान की गई हैं। एक यह कि जिस अल्लाह के आसमान और ज़मीन की पैदाइश पर कुदरत है वह यकीनन इस पर कुदरत रखता है कि उन से छोटी मख़्लूक़ यानी इन्सान को दोबारा ज़िन्दा करे।

सूर: यासीन आयत नं० (81) में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِن دُونِهِ

“क्या जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, वह उन्हीं जैसा दोबारा पैदा करने पर कादिर नहीं है, वह यकीनन इस पर कादिर है”।

दूसरी बात यह है कि जिस ने ऐसे आसमान व ज़मीन पैदा किये जो इन्सानों को चारों तरफ़ से घेरे हुए हैं, वह इस पर भी कादिर है कि क़ियामत का इन्कार करने वालों पर जल्द ही कोई अज़ाब नाज़िल कर दे चाहे तो का़रून की तरह उन्हें ज़मीन में धंसा दे और चाहे तो आसमान से अज़ाब का कोई टुकड़ा उन के सरो पर गिरा दे।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश, उन का इन्सानों को हर तरफ़ से घेरे हुए होना, अल्लाह की कुदरत कामिला कि वह चाहे तो ज़मीन या आसमान से उन पर कोई अज़ाब मुसल्लत कर दे। इन सब बातों में ग़ौर व फ़िक्र से अल्लाह के उन बन्दों को नसीहत मिलती है कि जो अपने रब से अपना सम्बन्ध जोड़े रखते हैं।

**10-11**

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَمُوسَىٰ قُلُوبًا وَجِبَالًا أَقْنِي مَعَهُ وَالظَّالِمِينَ إِنَّا هُمْ غَدِيرٌ  
وَقَدَّرْنَا فِي السَّمَاءِ مِائِينَ صَالِحِينَ إِلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

ऊपर की आयत में अल्लाह से सम्बन्ध रखने वाले और उस की तरफ़ रुजू करने वाले बन्दों का ज़िक्र आया है कि वही लोग अल्लाह की अज़ीम निशानियों में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं और नसीहत हासिल करते हैं। इसी मुनासिबत से इस आयत में अल्लाह ने अपने दो ऐसे बन्दों का ज़िक्र किया जिन की एक बड़ी सिफ़त यह थी कि वह हर हाल में अपने रब को याद करते थे और तौब: व इस्तिफ़ार में मशगूल रहते थे। वह दोनों, ‘दाऊद’ और उन के बेटे ‘सुलेमान’ (अलै०) थे।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने ‘दाऊद’ को अपनी तरफ़ से ख़ास फ़ज़ल से नवाज़ा था, उन्हें नुबूव्वत, ‘ज़बूर’ और बादशाहत दी थी। पहाड़ों और चिड़ियों को हुक्म दिया था कि जब दाऊद अपने रब की तस्बीह बयान करें तो वह भी उन के साथ तस्बीह बयान करें और हम ने उन के लिए लोहे को मोम की तरह नर्म बना दिया था और उन्हें हुक्म दिया था कि उसे जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें और फैलाएँ और ज़िरहें बनाएँ और उन्हें उन के बाल बच्चों को हुक्म दिया था कि वह जब तक ज़िन्दा रहें नेक काम में लगे रहें इसलिए कि हम तुम्हारे तमाम आ़माल की ख़बर रखते हैं और क़ियामत के दिन उन का तुम्हें

बदला चुकाएंगे।

12

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غَدُوًّا شَهَرَ وَّ رَوَّاحَهَا شَهْرًا وَأَسْلَمْنَا لَهُ الْفِطْرَ وَمِنْ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ

بِلَاذِنِ رَبِّهِمْ ۚ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

हज़रत मिक्दाद बिन मअदीकरिब (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “किसी आदमी के लिए उस से बेहतर कोई खाना नहीं जिसे वह अपने हाथ से मेहनत करे के खाये और अल्लाह के नबी दाऊद अपने हाथ से ज़िरह (कवच) बनाकर खाया करते थे।” (बुख़ारी)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, हम ने सुलेमान के लिए हवा को भी मुसख़्ख़र (अधिकार में) कर दिया था, जिस पर सवार होकर उन की लकड़ी की बनी नाव तमाम साज़ो सामान के साथ सुबह के वक़्त एक माह की दूरी तय करती थी और शाम के वक़्त एक माह की। यानी सुलेमान एक दिन में दो माह की दूरी तय करते थे।

“और हम ने उन के लिए तांबे को नर्म कर दिया था जिस से वह तरह-तरह की चीज़ें बनाते थे और जिन्नों को हम ने उन के अधीन बना दिया था, जो उन के इशारों के मुन्तज़िर रहते थे और हमेशा उन के हुक्मों की तअमील में लगे रहते थे और हम ने उन जिन्नों को ख़बर दे दी थी कि उन में से जो कोई सुलेमान के हुक्म को न माने, हम उसे क़ियामत में आग का अज़ाब देंगे”।

बाज़ लोग कहते हैं कि नाफ़रमान जिन्नों को दुनिया में ही आग का अज़ाब दिया जाता था। सुद्दी कहते हैं कि अल्लाह ने एक फ़रिश्ते को मुकल्लफ़ कर दिया था जो नाफ़रमान जिन्न को आग के कोड़े मारता था, जिस से वह जलकर राख हो जाता था।

13

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبٍ وَتَمَثَّلِينَ هَاجَرًا وَقُدُوسٍ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ شَكُورًا

وَقَلِيلٌ مِنَ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ۝

वह शयातीन हज़रत सुलेमान (अलै०) के लिए बुलन्द व बाला महल व बिल्डिंगें, खाने के बर्तन और तांबे या पत्थर की बड़ी-बड़ी डेगें बनाते थे, जो हर वक़्त चूल्हों पर रखी रहती थीं और उन में खाने पकते रहते थे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि मूर्तियाँ या फ़ोटो या तो हैवानात के अलावा दूसरी चीज़ों की होती थीं या सुलेमान (अलै०) की शरीअत में अम्बिया और नेक लोगों की मूर्तियाँ या फ़ोटो बनाना जायज़ था, ताकि उन्हें देखकर लोग नसीहत हासिल करें और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शरीअत में मूर्तियों का बनाना हराम क़रार दिया या लेकिन हज़रत सुलेमान (अलै०) के यहाँ भी यही बात मालूम होती है कि फ़ोटो या मूर्तियाँ ग़ैर जानदारों की होती थीं। इसलिए कि तौरेत से यही साबित है कि इन्सानी और हैवानी तस्वीरें बनाना उन अम्बिया की शरीअतों में भी जायज़ नहीं था।

इस के बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने सुलेमान और उन के घरवालों को हुक्म दिया कि हम ने तुम पर जो एहसानात किये और नेअमतों की बारिश की, उन का शुक्र अदा करने के लिए हर

वक्त हमारी बन्दगी में लगे रहो, नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और तमाम हुक्मों पर चलते रहो।

मुफ़ससरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा में इशारा है कि नेकी यह है कि अल्लाह के एहसानात व इन्आमात का शुक्र करे और अल्लाह का शुक्र अदा करना वाजिब है और यह कि शुक्र अमल के ज़रिये अदा होता है न कि सिर्फ़ ज़बान से।

इस के बाद अल्लाह ने ख़बर दी कि उस के कम ही बन्दे ऐसे हैं जो हर वक्त अपने दिल, ज़बान और अज़ा (अंगों) के ज़रिये उस का शुक्र अदा करते हैं।

**14** فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम आदि ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि जब सुलेमान (अलै०) को ख़बर दी गई कि अब उन की मौत का वक्त आ चुका है तो उन्होंने अपने रब से दुआ की कि ऐ मेरे रब! मेरी मौत की ख़बर जिन्नों से छिपा दे, ताकि लोग जान लें कि जिन्न ग़ैब की कोई बात नहीं जानते।

चुनांचे उन्होंने एक लाठी पर टेक लगाकर नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी और इसी हाल में उन की मौत आ गई और जिन्न काम करते रहे और उन्हें एक मुद्दत तक इस की ख़बर न हुई। जब अल्लाह ने चाहा तो दीमक ने उन की लाठी को नीचे से खा लिया और हज़रत सुलेमान (अलै०) का जिस्म ज़मीन पर गिर गया, तब जिन्नों को उन की मौत की ख़बर हुई और कहने लगे कि अगर उन्हें ग़ैब का इल्म होता तो एक मुद्दत तक इस तरह न रहते।

मुफ़ससरीन लिखते हैं, हज़रत सुलेमान (अलै०) के ज़माने में लोगों का एतिकाद था कि जिन्न ग़ैब की बातें जानते हैं, इस आयत में इसी को रद्द किया गया है।



## आयत नं० 15 से 30 तक

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَهُمْ آيَةٌ ۖ جَاءَتْهُمْ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۚ كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ۝ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ السَّيْلَ ۚ الْغَمْرُ ۖ يَدُلُّهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ۖ ذَوَاتِى أَكْلٍ خَبْطٍ وَاتِلٍ ۖ وَشَىءٌ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۚ وَهَلْ يُجِزِئُ إِلَّا الْكَفُورُ ۝ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي يُزَكُّنَا فِيهَا قَرْيَ ظَاهِرَةً ۚ وَقَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۚ سِيرُوا فِيهَا لِيُبَيِّنَ ۝ فَأَمَّا الْإِيمَانِيْنَ ۖ فَعَلَّوْا رَبَّنَا بِعَدَبٍ ۖ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ۖ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا قَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّا لِيَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَن هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۚ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِنَّ مِنْ شَرِكٍ ۚ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ قَبِيلٌ ۝ وَلَا تَتَّبِعِ السَّفَاعَةَ ۚ عِنْدَهُ إِلَّا يَمَنٌ ۚ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا الْحَقُّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ قُلْ مَن يَرْفُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ قُلِ اللَّهُ وَإِنَّا أَوْفَىٰ بُدًىٰ مُّبِينٍ ۝ قُلْ لَا تَسْأَلُونَنِي ۚ عَنَّا أَجْرَمَنَا وَلَا تَسْأَلَنِي ۚ عَمَّا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۚ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَرَأَوِي الَّذِينَ أَهْبَأَتْهُمُ بِهِمْ شُرَكَاءُ ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ ۚ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً ۚ وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۝

### अनुवाद-

(15) सबा के लिए उनकी बस्ती में एक निशानी थी दो बाग-दाएँ और बाएँ, “खाओ अपने रब की रोज़ी, और उसका शुक्रिया अदा करो, शहर भी अच्छा सा, और रब भी माफ़ करने वाला।” (16) तो उन्होंने मुँह फेर लिया तो ‘हमने’ उन पर बाँध तोड़, बाढ़ भेज दी और उनके दोनों बागों के बदले में उन्हें दो दूसरे बाग दिये, जिनमें कुछ कड़वे-कसैले फल और झाऊ थे, और कुछ थोड़ी सी झड़बेरियाँ। (17) यह बदला ‘हमने’ उन्हें इसलिए दिया था कि उन्होंने नाशुकी की थी, और ऐसा बदला तो हम नाशुके को ही दिया करते हैं। (18) और ‘हमने’ उनके और उनकी बस्तियों के बीच, जिनमें ‘हमने’ बरकत रखी थी, स्पष्ट बस्तियाँ बसायी थीं जो सामने नज़र आती थीं और उनमें सफ़र की मन्ज़िलें खास अन्दाज़े पर रखीं, उनमें रात-दिन बेखटके चलो-फिरो। (19) तो फिर उन्होंने कहा, “ऐ हमारे रब! हमारी यात्राओं में दूरी कर दे, और इन लोगों ने खुद अपने आप पर जुल्म किया तो हमने उनके किस्से बना दिये और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, इसमें निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक़ करने वाले के लिए। (20) और इब्लीस ने अपनी अटकल सच कर दिखाई, और ईमान वाले के एक गिरोह के सिवा, उन्होंने उसी की पैरवी की। (21) और उसका उन पर कोई जोर न था, मगर (हमारा) मक़सद यह था कि जो लोग आख़िरत में शक करते हैं, उनसे उन लोगों को, जो उस पर ईमान रखते हैं अलग कर दें और तुम्हारा ‘रब’ तो हर चीज़ का संरक्षक है। (22) कह दीजिए, “अल्लाह को छोड़ कर जिनका तुम्हें दावा है, उनकी पुकार कर देखो वह न आसमानों में ज़र्रा बराबर चीज़ के मालिक हैं, और न ज़मीन में, और न इन दोनों में उनका कोई साझा है, और न इनमें से कोई उस (अल्लाह) का मदद्गार है”। (23) और उसके यहाँ कोई सिफ़ारिश काम न आएगी, मगर उसी के लिए जिस के बारे में ‘उसने’ इजाज़त

दी होगी, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी, तो (फ़रिश्ते) कहेंगे, “तुम्हारे रब ने क्या कहा?” वे कहेंगे, “बिल्कुल हक़ (कहा), और ‘वह’ ऊँचे मर्तबे वाला बहुत बड़ा है।” (24) पूछिए, “कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है?” कहिए, “अल्लाह,” और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में। (25) कह दीजिए, “तुम से हमारे जुर्म की पूछ-ताछ न होगी, और न जो कुछ तुम कर रहे हो, उसके बारे में हमसे पूछ-ताछ होगी। (26) कह दीजिए, “हमारा ‘रब’ हम को जमा करेगा, फिर हमारे बीच हक़ के साथ फैसला करेगा, और वही फैसला करने वाला, इल्म वाला है। (27) कह दीजिए, “मुझे उनको दिखाओ, जिनको तुमने साझीदार बना कर उसके साथ जोड़ रखा है, कुछ नहीं!! बल्कि वही अल्लाह बड़ी ताक़त वाला, हिकमत वाला है” (28) और (ऐ मुहम्मद) ‘हमने’ आप को तमाम लोगों के लिए खुशख़बरी देने वाला, और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (29) और कहते हैं, यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।” (30) कह दीजिए, “तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन की अवधि निर्धारित है जिससे न एक घड़ी भर पीछे हट सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।”

## आयत नं० 15 से 30 तक की व्याख्या

15

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالِهِ كَلُومًا مِّنْ رَّزْقِ رَبِّكَ ۖ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ  
بَلَدَةٌ طَيِّبَةٌ ۚ وَرَبُّ غَفُورٌ ۝

ऊपर की आयत में अल्लाह तआला के कुछ शुक्रगुज़ार बन्दों और शुक्र की वजह से उन पर अल्लाह के जो एहसानात हुए उन का ज़िक्र हुआ। इसी में अब ऐसी कौम का ज़िक्र हो रहा है जिस पर अल्लाह ने बड़े एहसानात किये थे, लेकिन उन्होंने इन्कारे नेअमत की राह अख़्तियार कर ली तो अल्लाह ने वह नेअमतें उन से छीन लीं और उन्हें फ़क्र व फ़ाका में मुब्तिला कर दिया।

वह कौमें (सबा बिन यशजब बिन यअरब बिन क़तहान की औलाद थी) जिन का इलाका अब ‘मअरब’ के नाम से जाना जाता है और सनआ से कुछ दूरी पर वाकेअ है। इन के मकानात वादी में वाकेअ थे, जिन के दाएँ और बाएँ दूर-दूर तक घने फलदार दरख़्तों के बागात थे। जिसमें मच्छर, मक्खी, जुएँ, बिच्छू, साँप और दूसरे कीड़े-मकोड़े नहीं पाये जाते थे।

अल्लाह तआला ने उन्हें उन नेअमतों से नवाज़ा और कहा कि तुम लोग अपने रब की दी हुई रोज़ी खाओ और उस का शुक्र अदा करो, नेक अमल करो और गुनाहों से बचो। इतना अच्छा, ख़ूबसूरत, पाक व साफ़ शहर और गुनाहों की मफ़िरत करने वाला रब, तुम से कहता है कि हर वक़्त अपने रब का शुक्र अदा करते रहो।

16

فَاعْرِضْهُمَا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ ۚ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جُنَّتَيْنِ ذَوَاتِ اَكْلِ خَبِطٍ ۚ وَاثِلَ ۚ وَشَى ۚ وَفَن سَدْرٍ قَلِيلٍ ۝

लेकिन अल्लाह की बेशुमार नेअमतों ने उन्हें ख़राब कर दिया, शुक्र के बजाय अल्लाह की नाशुक्री करने लगे, उन्होंने अल्लाह और उस के रसूलों की नाफ़रमानी की और राहे रास्त से दूर हो गये, तो अल्लाह



ने उन से इत्तिकाम लिया कि वह मज़बूत बाँध जो दो पहाड़ों के दरमियान बना हुआ था और जो बारिश के पानी को रोके रखता था और ज़रूरत के मुताबिक उस बाँध में बने हुए सुराखों से निकल कर बागात तक पहुँचता था। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि वह बाँध टूट गया और पानी की सख्त मौजों से उन के मकानात डूब गये और पूरा निज़ाम दरहम बरहम हो गया और वह लोग वहाँ से जान बचाकर दूसरी जगह चले जाने पर मजबूर हो गये, जहाँ या तो ऐसे दरख्त थे जिन के फल कड़वे थे या बगैर फलों वाले जंगली दरख्त थे और कुछ बेरी के दरख्त थे जो किसी काम के नहीं थे।

17

ذَٰلِكَ جَزَايَهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَافِرِينَ ۝

इस में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन की नाशुकी का हम ने उन्हें ऐसा बदला दिया। यह अल्लाह का निज़ाम है कि जो उस की नेअमतों का शुक्र अदा नहीं करता वह उस से अपनी नेअमतें छीन लेता है और मुसीबतों में मुब्तिला कर देता है।

18-19

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي بُرُكْنَا فِيهَا قَرْيَةً ظَاهِرَةً ۖ وَقَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا أُمِينَ ۝ فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَرَقْنَاهُمْ كُلَّ مِرْقٍ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

अल्लाह तआला ने पहले कौम-ए-सबा को दी गई अपनी नेअमतों का ज़िक्र किया, फिर नेअमत के नाक़्द्री की वजह से उन्हें जो परेशानियाँ आई उन का बयान हुआ। अब उन नेअमतों का ज़िक्र हो रहा है जो उन्हें उस ज़माने में अपने इलाके से बाहर हासिल थीं, उन की बस्तियों और मुल्क शाम के दरमियान शहरों और बस्तियों का एक सिलसिला कायम था और हर दो बस्ती के दरमियान की मुसाफ़त आधे दिन की थी।

जब वह लोग तिजारत के लिए मुल्क शाम रवाना होते तो रात एक बस्ती में गुज़ारते और दोपहर दूसरी बस्ती में और जहाँ जाते खाने-पीने की चीज़ें उन्हें फ़रावानी के साथ मिलती थीं।

इस तरह चार माह की मुसाफ़त पूरे अमन व राहत के साथ खाते-पीते तय करते और अपने साथ ज़ादेराह नहीं ढोते थे। कहते हैं कि उन दिनों यमन व शाम के दरमियान शहरों की संख्या लगभग चार हज़ार सात सौ थी।

लेकिन उन्हें यह नेअमत भी नहीं अच्छी लगी और अमन व आफ़ियत की क़द्र करना भूल गये और घमण्ड व ग़ुरुर में आकर कहने लगे कि यह भी कोई सफ़र है कि हर थोड़ी मुसाफ़त के बाद बस्ती पाई जाती है, मज़ा तो जब आता है कि चट्यल मैदान, जंगलात और पुरख़तर वादियों से गुज़र होता।

अल्लाह तआला को उन का इत्तराना पसन्द नहीं आया और उन बस्तियों को खण्डरात में बदल दिया और उन की तारीख़ लोगों के लिए कहानियाँ बन गईं, जिन्हें दुनिया वाले सुनकर हैरत करते हैं कि किस तरह अल्लाह ने उन के ऐश व आराम को सख़्ती व तंगी और परेशानी में बदल दिया यहाँ तक कि वह अरबों के लिए मिसाल बन गये कि जब उन्हें किसी कौम के बिगाड़ का हाल बयान करना होता तो कहते,

ऐसा बिखर गये जैसे कौम-ए-सबा की जमाअत बिखर गई। उन में से औस व ख़ज़रज वाले यस्रब (मदीनतुल् रसूल) ग़स्सान के लोग शाम, इज्दवाले, उमान और खुज़ाआ के लोग तहामा पहुँच गये और इस तरह पूरी कौम सबा तितर बितर हो गई।

अल्लाह तआला ने आयत के आख़िर में फ़रमाया कि इस में अल्लाह के सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले बन्दों के लिए बहुत इब्रत व नसीहत की बातें हैं।

20

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इस आयत का सम्बन्ध अगर कौमे सबा से माना जाए तो मतलब यह होगा कि इब्लीस ने उन के बारे में अपने दिल में यह गुमान किया था कि अगर उस ने उन्हें गुमराह किया तो वह लोग उस की पैरवी करेंगे, चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि उन्होंने शैतान की बातों में आकर अल्लाह और उस के रसूलों का इन्कार किया और सरकशी की राह अपनाई और अगर इस का सम्बन्ध आम इन्सानों से माना जाए तो मतलब यह होगा कि इब्लीस ने तमाम इन्सानों के बारे में ऐसा गुमान किया कि अगर वह उन्हें अल्लाह की नाफ़रमानी की तरफ़ बुलाएगा तो वह लोग उस की बात मान जाएँगे और उस के पीछे हो लेंगे, चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि अक्सर व बेशतर लोगों ने उस की पैरवी की और अल्लाह के हुक्मों को पीठ पीछे डाल दिया।

21

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنهَا فِيْ شَكٍّ ۚ وَرَتَّبْنَا عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ عَذٰبًا ۝

इब्लीस को इन्सान पर न कोई आर्थिक ताक़त हासिल है और न प्राकृतिक, उसे अल्लाह की ओर से केवल इतनी इजाज़त मिली है कि वह इन्सान के दिल में तरह-तरह के वस्वसे पैदा करे, गुनाह को उस की निगाह में ख़ूबसूरत बनाकर पेश करे और अल्लाह की नाफ़रमानी की तरफ़ बुलाये और यह इजाज़त इसलिए मिली है ताकि मालूम हो जाए कि कौन आख़िरत पर ईमान लाकर अल्लाह की भेजी हुई बात शरीअत के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है और कौन इस के बारे में शक व शुब्हा में मुब्तिला होकर गुनाह व सरकशी की राह अपनाता है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने अपने नबी से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि आप का रब हर चीज़ और हर बात से बाख़बर है, वह अपने बन्दों के अच्छे और बुरे आ़माल को गिन रहा है, ताकि क़ियामत के दिन उन का हिसाब ले और उन्हें उन का बदला दे।

22

قُلْ اَدْعُوا الَّذِيْنَ رَعٰىتُمْ مِن دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ

فِيْهَا مِنْ شَرْكَ ۚ وَمَالُهُمْ مِنْ ظَلَمٍ ۝

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी तमाम काफ़िरों और मक्का के इन्कारियों से फ़रमाया कि जिन मूर्तियों को अल्लाह को छोड़कर तुम अपना उपास्य समझते हो ज़रा उन्हें पुकारो तो सही, क्या वह तुम्हारी पुकार का जवाब देते हैं? जवाब यकीनन नहीं में होगा, इसलिए कि वह पत्थर की बेजान

मूर्ति हैं, आसमानों और ज़मीन में पाई जाने वाली चीज़ों में से एक ज़र्रह के भी मालिक नहीं हैं, न ही उन की पैदाइश व मिल्कियत में वह अल्लाह के किसी भी हैसियत से शरीक हैं और न कायनात के चलाने में अल्लाह को उन की मदद की ज़रूरत है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि जब उन की बेबसी और बेकसी इस हद को पहुँची हुई है तो अल्लाह तआला की तरफ़ उन्हें पुकारना और उन से उम्मीद लगाना कहाँ की अक्लमन्दी है।

**23** وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا الْحَقُّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

क़ियामत के दिन सिफ़ारिश उसी की सुनी जाएगी जिसे अल्लाह तआला शफ़ाअत करने की इजाज़त देगा और सिफ़ारिश उसी के हक़ में सुनी जाएगी जिस के लिए शफ़ाअत करने की अल्लाह तआला किसी को इजाज़त देगा। अल्लाह तआला ने इसी बात को इस आयत करीमा और कुर्आन करीम की दूसरी कई आयतों में बयान फ़रमाया है।

सूर: नज्म की आयत नं० (26) में है:

وَكَمْ مِنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنْ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى

“और बहुत से फ़रिश्ते आसमानों में हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा नहीं दे सकती, मगर यह और बात है कि अल्लाह तआला अपनी खुशी और अपनी चाहत से जिस के लिए चाहे इजाज़त दे दे।”

सूरतुल् अम्बिया आयत नं० (28) में है

“वह किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करेंगे सिवाय उन के जिन से अल्लाह खुश हों, वह तो खुद हैबत-ए-इलाही से लरज़ रहे होंगे।”

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जब अल्लाह तआला किसी काम का फैसला फ़रमाते हैं तो फ़रिश्ते अल्लाह तआला के इस कौल के लिए अज़िज़ी से अपने पर मारते हैं और ऐसी आवाज़ आती है जैसे किसी जन्ज़ीर को साफ़ पथर पर खींचने से आती है। फिर जब उन्हें होश आता है तो एक दूसरे से पूछता है तुम्हारे रब ने क्या कहा? दूसरा जवाब देता है कि जो कहा हक़ कहा वह बुलन्द व बाला है।” (तिर्मिज़ी)

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में काफ़िरों के उस कौल को झुठलाया गया है कि उन के झूठे उपास्यों के लिए सिफ़ारशी बनेंगे।

मैदाने महशर में तमाम फ़रिश्ते और अम्बिया, जिन से मुतअल्लिक उम्मीद की जाएगी कि वह दूसरों के लिए सिफ़ारशी बनेंगे और वह तमाम लोग सिफ़ारिश के मोहताज होंगे, इन्तेहाई परेशानी की हालत में होंगे और अल्लाह की हैबत से बड़े ख़ौफ़ज़दह होंगे, किसी को मालूम नहीं होगा कि अल्लाह तआला अपना कौन सा हुक्म जारी फ़रमाएगा। सभी इसी हाल में होंगे कि अल्लाह तआला शफ़ाअत की इजाज़त देगा और अहले महशर का ख़ौफ़ जाता रहेगा तो फ़रिश्ते अपने ऊपर वाले उन फ़रिश्तों से पूछेंगे जिन्होंने शफ़ाअत की ख़बर दी थी कि तुम्हारे रब ने क्या हुक्म फ़रमाया है? तो वह कहेंगे कि शफ़ाअत के हक्दारों के लिए

शफ़ाअत की इजाज़त दे दी गई है।

आयत के आख़िर में है कि अल्लाह तआला बहुत ऊँचा और बड़ी बड़ाई वाला है, क़ियामत के दिन फ़रिश्ता और कोई नबी उस की इजाज़त के बग़ैर दम नहीं मारेगा और शफ़ाअत उसी के लिए करेगा जिस के लिए अल्लाह शफ़ाअत की इजाज़त देगा।

24

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ وَإِنَّا أَوْأَلُّكُمْ لَعَلُّ مُدَىٰ أَوْفَىٰ ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी काफ़िरों को तम्बीह के तौर पर फ़रमाया कि तुम्हें आसमानों से बारिश और ज़मीन से पौधे उगाकर कौन रोज़ी देता है? ज़ाहिर है कि उन के पास इस के सिवा और क्या जवाब है कि वही अल्लाह है जो सब को रोज़ी देता है।

आयत के आख़िरी हिस्से में अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि काफ़िरों को ख़बर दें कि वह गुमराही पर हैं, लेकिन एक ऐसे तरीक़े से जिस में उन के लिए है, कहा कि हम दोनों जमाअतों में से एक ज़रूर हक़ की राह पर है और दूसरी जमाअत गुमराह है।

एक जमाअत उन लोगों की है जो केवल अल्लाह को ख़ालिक व राज़िक मानती हैं और उसी की अ़िबादत करती हैं। दूसरी जमाअत उन लोगों की है जो पत्थर के मूर्तियों की पूजा करते हैं जिन में कोई ताक़त नहीं है। हर अक्ल वाला यही कहेगा कि राहे हक़ पर वह लोग हैं जो ऐसे की अ़िबादत करते हैं जो पैदा करता है, रोज़ी देता और नफ़ा व नुक़सान का मालिक है और गुमराह वह लोग हैं जो बेजान मूर्तियों की अ़िबादत करते हैं।

25

قُلْ إِن تَسْأَلُونَ عَنَّا أَجْرًا وَلَا تَسْأَلُونَ عَنَّا تَعْلَمُونَ ۝

‘हाफ़िज़ इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि इस आयत करीमा में मुशिरकीन से अमन के साथ अलग होने का एलान है कि जब तक तुम ईमान नहीं लाओगे हमारा और तुम्हारा कोई रिश्ता और तअल्लुक नहीं हो सकता, हम अपने आमाल के ज़िम्मेदार हैं और तुम अपने आमाल के। अगर हम से कोई गुनाह होगा तो हम से उस के बारे में नहीं पूछा जाएगा और न तुम्हारे आमाल के बारे में हम से पूछा जाएगा। अगर ईमान ले आओगे तो हम सब भाई-भाई हो जाएंगे वरना हम तुम से बरी हैं और तुम हम से बरी हो।

अल्लाह तआला ने सूर: यूनुस आयत नं० (41) में फ़रमाया है:

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَلَيْهِمْ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنِّي لَأَعْلَمُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

“और अगर आप को झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरे लिए मेरा अमल और तुम्हारे लिए तुम्हारा अमल, तुम मेरे अमल से बरी हो और मैं तुम्हारे अमल से बरी हूँ”।

सूर: काफ़िरून में फ़रमाया:

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ وَلَا أَنَا عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُونَ ۝

“आप कह दीजिए कि ऐ काफ़िरों! न मैं अ़िबादत करता हूँ उस की जिस की तुम अ़िबादत करते हो, न तुम अ़िबादत करने वाले हो जिस की मैं अ़िबादत करता हूँ।

यह और इस तरह की दूसरी आयतों का हुक्म जिहाद व क़िताल वाली आयतों के ज़रिये मन्सूख़ (निरस्त) हो चुका है।

**26**

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَاتِحُ الْعَلِيمُ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि वह मुशिरकीन को इस बात की ख़बर दे दें कि आख़िरत आएगी और मैदाने महशर में हम और तुम सभी अल्लाह के पास जमा होंगे और वहाँ वह हमारे दर्मियान हक़ व इन्साफ़ के मुताबिक़ फैसला करेगा और हम में से हर एक को उस के अमाल का बदला मिलेगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में मुशिरकीन को आख़िरत के अज़ाब की धमकी दी गई है कि अगर वह अपने कुफ़्र व शिर्क से तौब: नहीं करेंगे तो आख़िरत के अज़ाब का इन्तिज़ार करें।

**27**

قُلْ أَرَأَيْتَ الَّذِينَ اتَّخَذُوا شُرَكَاءَ لِلَّهِ مِن دُونِهِ مُثُلًا حَكِيمًا ۝

इस आयते करीमा में मुशिरकीन के उपास्यों के झूठे और बातिल होने की दलील पेश की गई है। आप (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि उन से पूछें कि जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बताते हो ज़रा दिखाओ कि उन में से कौन सी ख़ूबी पाई जाती है जिस की बुनियाद पर तुम ने उन्हें अल्लाह का शरीक ठहराया है?

फिर अल्लाह ने खुद ही शिर्क का जवाब दिया, कि वह अपने झूठे मअबूदों (उपास्यों) में से कोई भी ऐसी सिफ़त साबित नहीं कर सकते और कोई भी ऐसा मअबूद (उपास्य) नहीं दिखा सकते जो अल्लाह के सिवा उन्हें नफ़ा या नुक़सान पहुँचा सकता हो, वह तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है जो बड़ी इज़्ज़त वाला, हर चीज़ पर भारी और अपने तमाम कामों में हिक्मत अपनाता है।

**28**

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को तमाम इन्सानों के लिए रसूल बनाकर भेजा था, ताकि आप उन पर ईमान लाने वालों और उन की फ़रमाँबरदारी करने वालों को जन्नत की बशारत दें और उन की नाफ़रमानी करने वालों को जहन्नम की आग से डराएँ।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने ख़बर दी है जिस से मक्सद आप को तसल्ली देना है कि अक्सर लोग रसूलों की अहमियत और उन की दअवत से नावाक़िफ़ होते हैं, इसीलिए उन की बताई हुई राह को छोड़कर इन्कार व गुमराही की राह अख़्तियार करते हैं। जैसा कि मक्का के इन्कारियों का हाल है कि वह कुफ़्र व शिर्क पर इस्सारा करते हैं और आप के मक़ामे नुबूव्वत से बेख़बर हैं।

आप (सल्ल०) तमाम इन्सानों के लिए रसूल थे। इस अक़ीदे को कुर्आन करीम की कई दूसरी आयतों में भी बयान किया गया है। सूर: अअ़राफ़ आयत नं० (158) में आया है:

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ۝

“आप कह दीजिए कि ऐ लोगों! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ”।

सूर: फुर्कान आयत नं० (1) में है:-

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا “बहुत ही बाबरकत है वह अल्लाह जिस ने अपने बन्दे पर फुर्कान उतारा, ताकि वह तमाम लोगों के लिए आगाह करने वाले बन जाएँ”।

और ‘बुखारी’ व ‘मुस्लिम’ ने हज़रत जाबिर (रज़ि०) से एक हदीस रिवायत की है जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है:-

“हर नबी अपनी क़ौम के लिए भेजा जाता था और मैं तमाम इन्सानों के लिए नबी बनाकर भेजा गया हूँ”।

‘सहीह मुस्लिम’ में हज़रत जाबिर (रज़ि०) से ही मरवी एक दूसरी हदीस है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मैं काले और गोरे सब के लिए भेजा गया हूँ।”

**29-30**

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۝

मक्का के इन्कारी जो क़ियामत और उस दिन के बदला के मुन्किर थे, नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों से मज़ाक़ के अन्दाज़ में पूछते थे कि वह अज़ाब कब आएगा जिस की तुम हमें धमकी देते हो? तो अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) से फ़रमाया:

आप कह दीजिए कि वह दिन अल्लाह के इल्म में मुकर्रर है, जब वह आ जाएगा तो तुम्हारे चाहने के बावजूद न एक सेकेण्ड पीछे होगा, ताकि तुम अपने कुफ़्र व शिर्क से तौब: कर लो और न किसी के कहने से एक सेकेण्ड आगे होगा।





## आयत नं० 31 से 45 तक

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُوَفَّوهُنَّ بِمَا نَذَرْتُمْ لَهُنَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا لَئِنْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَئِنْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ النَّاسِ ۝ إِذَا مَرُّونَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۝ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَنَا رَأَوُا الْعَذَابَ ۝ وَجَعَلْنَا الْإِغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۝ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝ وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۝ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ۝ قُلْ إِنْ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۝ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الْوَعْدِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُصْهِرُونَ ۝ قُلْ إِنْ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۝ وَمَا تَنْفَقُكُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۝ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مِنْ دُونِهِمْ ۝ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۝ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُونَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُم لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۝ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا فِيهَا مَكَذِبُونَ ۝ وَإِذْ أَتَيْنَا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا يَئِنِّي قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا آفَاقُ مَفْتَرَىٰ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۝ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا بَحْرٌ مُّجْمَعٌ ۝ وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ نُّبٍّ يَذْرَؤُوهَا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ۝ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۝ وَمَا يَأْتُوا بِمِثْقَالِ ذَرَّةٍ مِنْ آيَاتِنَا ۝ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۝ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

### अनुवाद-

(31) और जो काफिर (इन्कारी) हैं, वे कहते हैं “हम इस कुर्आन को हरगिज़ न मानेंगे और न उसके जो उसके आगे है, और अगर तुम देख लेते जबकि यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े कर दिये जाएँगे, वे एक-दूसरे को मलामत करेंगे, जो लोग कमजोर समझे जाते थे, वे उन बड़े लोगों से कहेंगे, “अगर तुम न होते तो हम ज़रूर मोमिन (मुसलमान) होते।” (32) बड़े लोग कमजोर लोगों से कहेंगे, “क्या हमने तुमको हिदायत (सच्ची राह) से रोका था, जबकि वह तुम्हारे पास आ चुकी थी? (नहीं) बल्कि तुम खुद ही मुजरिम (गुनहगार) थे।” (33) और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, (नहीं,) बल्कि रात और दिन की (तुम्हारी) चालें थीं, जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़र करें और (दूसरों को) उसके बराबर का ठहराएं, जब वे अज़ाब देखेंगे तो मन ही मन पछताएँगे, और ‘हम’ उन लोगों की गर्दनो में जिन्होंने कुफ़र को अपनाया था तौक़ डाल देंगे। उन्हें वही तो बदले में मिलेगा जो वे करते थे। (34) और ‘हमने’ किसी बस्ती में कोई सचेत करने वाला नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने कहा, “जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है, हम तो उसे नहीं मानते।” (35) और (यह भी) कहा, “हम तो धन और संतान में तुमसे बढ़कर हैं, और हम को अज़ाब नहीं दिया जाएगा।” (36) कह दीजिए, “मेरा ‘रब’ जिसकी चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादा) कर देता है और जिसकी चाहता है नपी-तुली देता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।” (37) और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं कि तुम को हमारा मुकर्रब बना दें हाँ (हमारा मुकर्रब वह है) जो कोई ईमान

लाया और उसने अच्छा काम किया, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए उसका दो गुना बदला है, और वे ऊपरी मंजिलों में चैन (इत्मिन्नान) से रहेंगे। (38) और जो लोग 'हमारी' आयतों के बारे में हराने (मात देने) की कोशिश करते हैं, वे अज़ाब में पकड़ लिए जाएंगे। (39) कह दीजिए, “मेरा रब अपने बन्दों में से जिसकी चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादा) कर देता है, और जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है, और जो कुछ तुम खर्च करते हो उसकी जगह वह तुमको और देगा, और वह सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।” (40) और जिस दिन (अल्लाह) इन सब लोगों को इकट्ठा करेगा, “फिर फ़रिश्तों से कहेगा, क्या यही लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?” (41) वे कहेंगे, “तू पाक है हमारा सम्बन्ध तो केवल तुझसे ही है, न कि इनसे, बल्कि यह लोग जिन्नात की पूजा किया करते थे, इनमें से अक्सर यकीन भी इन्हीं (जिन्नों) पर रखते थे। (42) “तो आज तुममें से कोई किसी को न फ़ायदा पहुँचाने का अधिकार रखता है और न नुक़सान पहुँचाने का, और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के अज़ाब को तुम झुठलाया करते थे, अब उसका मज़ा चखो।” (43) और जब उन्हें 'हमारी' स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं, “यह एक (ऐसा) व्यक्ति है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे कि जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, और कहते हैं, “यह (कुर्आन) तो एक गढ़ा हुआ झूठ है, जिन लोगों ने इन्कार किया उन्होंने हक़ (सत्य) के बारे में, जबकि वह उनके पास आया, कह दिया “यह तो खुला हुआ जादू है।” (44) और न उन्हें 'हमने' किताबें दी थीं जिनको यह पढ़ते-पढ़ाते हैं, और न आप से पहले हमने उनके पास कोई सचेत करने वाला भेजा। (45) और झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे, और जो कुछ 'हमने' उन्हें दिया था ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे हैं, तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो मेरा कैसा अज़ाब हुआ।

## आयत नं० 31 से 45 तक की व्याख्या

**31** وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ تَوْرِينَ هَذَا الْقُرْآنَ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْجَعُ  
بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلِ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنَّنَا مُؤْمِنِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) कुफ़ारे मक्का से तौहीद व रिसालत और आखिरत की बात करते हुए कभी कहते कि कुर्आन करीम की तरह तौरेत व इन्जील ने भी उन अक़ायद पर ईमान लाने की दअवत दी है, तो वह घमण्ड में आकर कहते, कि हम न तो कुर्आन को आसमानी किताब समझते हैं और न उन किताबों को जो इस से पहले नाज़िल हुई थीं।

**32** قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِجَاءِكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۝

मैदाने महशर और उस के बाद क्या हाल होगा उसे बयान कर के उन्हें इसी दुनिया में ग़ौर व फ़िक्र करने की दअवत दी गई है, ताकि ईमान ले आएँ। नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के कहा गया है कि काफ़िरों (इन्कार करने वालों) की बेकसी का कैसा मन्ज़र होगा जब वह रब्बुल् आलमीन के सामने ज़लील होकर खड़े होंगे और अपना अन्जाम अपनी आँखों से देख कर जब कुछ न बन पड़ेगा तो आपस में झगड़ेंगे और दुनियावी मक़ाम व मर्तब: के एतिबार से कमज़ोर काफ़िरों को जिन्होंने दुनिया में कुफ़ के

सरगनों की पैरवी की थी और ईमान नहीं लाए थे, उन सरदारों (लीडरों) से कहेंगे कि अगर तुम ने हमें ईमान लाने से न रोका होता तो हम ने इस्लाम कुबूल कर लिया होता और आज हमारा यह हाल न होता, तो वह कुफ़्र के सरदारों के दावे का इन्कार करते हुए कहेंगे कि हम ने उन्हें हक़ की पैरवी से कभी नहीं रोका था, तुम लोग खुद ही अहले जुर्म व फ़साद थे, इसीलिए जब हम ने तुम्हें अपनी पैरवी के लिए पुकारा तो तुम ने तुरन्त हमारी दअवत कुबूल कर ली और अपने ख़्वाहिश की इत्तिबअ करते हुए रसूलों की दअवत को ठुकरा दिया।

यह सुनकर पैरवी करने वाले कुफ़्फ़ार अपने सरदारों से कहेंगे कि बात वही सही है जो हम ने कही है, तुम तो रात दिन अल्लाह और उस के रसूल के ख़िलाफ़ साज़िश करते रहे और अपनी सरदारी और चौधराहट का रोअब गाँठ कर हमें हुक्म देते रहे कि उस के दीन का इन्कार कर दें और झूठे उपास्यों को उस का शरीक बनाएँ।

**33**

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرَ الْبَيْلِ وَالنَّهَارِ اِذَا تَأْمُرُونَنَا اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهُ اٰنْدَادًا ۚ  
وَأَسْكُنُوا الثَّنَآءَ لِمَا رَأَوْا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْاَعْمَالُ فِيْ اَعْتَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَآ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

इस में अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि छोटे और बड़े काफ़िरों की बातचीत के बाद उन के लिए जहन्नम का अज़ाब जब उन के सामने पेश कर दिया जाएगा तो अफ़सोस व हसरत से उन के दिल भर जाएँगे, लेकिन दुश्मनों की हंसी के डर से एक दूसरे से अपना अन्दरूनी हाल बयान नहीं करेंगे और काफ़िरों की गर्दनो में ज़ंजीरें डालकर उन के हाथों समेत बाँध दिया जाएगा और यह सब कुछ उन के अपने किये का अन्जाम होगा।

सरदाराने कुफ़्र और उन के पैरुकारों में से हर एक अपने-अपने जरायम के मुताबिक़ अज़ाब में डाले जाएँगे।

**34-36**

وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالُ مُتْرَفُوْهُمْ اِنَّا بَاۡرِعُوْنَكُمْ بِهٖ كُفْرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۚ  
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ رَّيْتُمْ اِلٰهِيْكُمْ اِلَّا رِجَالٌ مِّنْ نَّشْءٍ وَفِئْدَةٌ وَلَجْنٌ اَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

इन आयतों में पिछली कौमों के ऐश परस्तों और अम्बिया-ए-किराम के साथ उन के बुरे बर्ताव और कुफ़्र व शिर्क पर उन के इस्सार का हाल बयान कर के नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि मुशिरकीन कुरैश के कुफ़्र व शिर्क से आप परेशान न हों, इसलिए कि हर दौर के सरदाराने कुफ़्र अपने नबियों के साथ ऐसा ही बर्ताव करते रहे हैं।

अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि हम ने जब भी किसी बस्ती वालों की हिदायत के लिए कोई नबी भेजा तो उन के सरदारों, ऐश परस्तों और फ़ासिक व फ़ाजिर लीडरों से कहा कि तुम जिस अल्लाह पर यकीन की बात करते हो, हम उन बातों का सरासर इन्कार करते हैं और अगर थोड़ी देर के लिए हम मान भी लें कि कियामत आएगी और कुछ लोगों को अज़ाब दिया जाएगा तो हम उन लोगों में से नहीं होंगे, इसलिए कि जब अल्लाह ने हमें यहाँ माल व औलाद से नवाज़ रखा है तो आख़िरत में वह हमें अज़ाब नहीं देगा।

अगर हम अल्लाह की निगाह में अच्छे न होते तो हमें यहाँ नेअमतों से न नवाज़ा जाता और ईमान का दावा करने वाले अगर उस की निगाह में बुरे न होते तो उन्हें यहाँ अपनी नेअमतों से महरूम न रखता।

इस में अल्लाह तआला ने उन के इसी बुरे गुमान की तर्दीद करते हुए नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी फ़रमाया है कि 'रब्बुल आलमीन' अपने बन्दों में से जिस की चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और जिस की चाहता है घटा देता है, इस का तअल्लुक अल्लाह तआला की हिक्मत से है, इस में अच्छे और बुरे सभी आते हैं।

किसी की रोज़ी में वुस्अत इस बात की हरगिज़ दलील नहीं है कि वह अल्लाह का महबूब बन्दा है और न किसी की रोज़ी में तंगी, अल्लाह के नज़्दीक उस के नाराज़ होने की दलील है, लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं समझते और उन्हीं में से वह लोग भी हैं जो दुनिया की कामियाबी पर आखिरत की कामियाबी को समझते हैं।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दुनिया में रिज़क़ का इन्तिज़ाम अल्लाह की ओर से है न कि राज़ी होने से। बन्दों पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जब दो फ़रिश्ते नाज़िल न हों। उन में से एक यूँ दुआ करता है या अल्लाह! ख़र्च करने वालों को इस का बदला दे और दूसरा यूँ दुआ करता है। या अल्लाह! बख़ील का माल तबाह कर दे"। (बुख़ारी)

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स को यह बात अच्छी लगे कि उस का रिज़क़ कुशादा (बढ़ा दे) और उम्र लम्बी हो वह रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे।" (बुख़ारी)

37

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِآلَتِي تُفَرِّقُكُمْ عَنَّا نَالِي إِلَّا مَنَ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَنُجْزِيَنَّهُمُ  
الضَّعِيفُ بِأَعْيُنِنَا وَهُمْ فِي الْعُرْفَةِ آمِنُونَ ۝

पिछले जवाब की ताकीद के तौर पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह से करीब होने का ज़रिया नहीं बन सकते हैं। अल्लाह के नज़्दीक तो सिर्फ़ ईमान और नेक अमल की क़द्र व कीमत है। ईमान लाने के बाद जो शख़्स जितना फ़रायज़ व वाजिबात की पाबन्दी करेगा, नवाफ़िल और दूसरे अच्छे कामों का एहतिमाम करेगा, उसी क़दर वह अपने रब से करीब होता जाएगा और उन्हें उन के नेक आमाल महफूज़ का दो गुना, दस गुना और इस से ज़्यादा अज़्र मिलेगा और वह क़ियामत के दिन मौत और हर बुराई से महफूज़ जन्नत के बुलन्द व बाला कमरों में रहेंगे।

इस आयत का मज़मून सूर: मोमिनून की आयत (55/56) में यूँ बयान किया गया है:

يَحْسِبُونَ أَنَّنَا لَنُفَصِّلُ بَيْنَهُم مِّنْ مَّالٍ وَنُنَزِّلُ لَهُم فِي الْغَزَا بَلًا وَيَشْعُرُونَ ۝

"क्या वह समझ बैठे हैं कि हम जो उन के माल व औलाद बढ़ा रहे हैं उन के लिए भलाईयों में जल्दी कर रहे हैं, नहीं! बल्कि वह समझते नहीं हैं"।

सूर: तौब: आयत नं० (55) में आया है:

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْفِقَ أَنفُسَهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝

“बस आप को उन मे माल व औलाद तअज्जुब में न डाल दें। अल्लाह यह चाहता है कि इस से उन्हें दुनिया की जिन्दगी में ही सज़ा दे और कुफ़्र ही की हालत में उन की जानें निकल जाएँ।”

**38**

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝

आखिरत में मोमिनो का हाल बयान करने के बाद अब काफ़िरो का हाल बयान किया जा रहा है कि जो लोग हमारी आयतों का इन्कार करते हैं, लोगो के दिलों में शुब्हात पैदा करते हैं और समझते हैं कि वह हम से बचकर निकल जाएँगे, उन के लिए जहन्नम का अज़ाब अब तैयार किया गया है जिस से वह छुटकारा नहीं पा सकेंगे।

**39**

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

आयत नं० (36) में जो हकीकत बयान की गई है उसी की यहाँ दोबारा ताकीद की गई है कि किसी की रोज़ी में तंगी न इस बात की दलील है कि वह अल्लाह का मबूज़ (जिस पर गुस्सा हों) बन्दा है और न रोज़ी में वुस्अत अल्लाह का महबूब बन्दा होने की दलील है।

आखिर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उस के बन्दे उस की राह में और मुबाह कामों में चाहे जितना खर्च करें अल्लाह तआला दुनिया में उन्हें इतना फिर दे देगा और आखिरत में उस का अच्छा बदला अता करेगा।

बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से हदीसे कुदूसी रिवायत की है, अल्लाह तआला कहता है: “ऐ इब्ने आदम! खर्च करो, तुम पर खर्च किया जाएगा” और उन्होंने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ही से एक दूसरी हदीस रिवायत की है कि “हर दिन सुबह को दो फ़रिश्ते उतरते हैं। एक कहता है, ऐ अल्लाह! खर्च करने वाले को फिर दे दे और दूसरा कहता है, ऐ अल्लाह! बख़ील (कन्जूस) का माल बर्बाद कर दे”।

**40-41**

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَكَةِ أَمْوَالُهُ إِنَّا كُنَّا نَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مِنْ

دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ۝

इस आयत का तअल्लुक आयत नं० (31) में وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ से है और कहा जा रहा है नबी करीम (सल्ल०) से, जिसका मतलब यह है कि आप उस दिन को याद कीजिए जब अल्लाह तआला तमाम जिनो और इन्सानो को मैदाने महशर में इकट्ठा करेगा, फिर काफ़िरो को डाँटने और फटकारने के लिए फ़रिश्तो से मुखातब होकर पूछेगा (जिन्हें मुशिरकीन अल्लाह की बेटियाँ मानकर उन की अ़िबादत करते रहते थे) कि ऐ फ़रिश्तो! क्या तुम मेरी तरह मअबूद (उपास्य) हो और क्या यह लोग तुम्हारी अ़िबादत करते थे? तो फ़रिश्ते तुरन्त अल्लाह के सिवा मअबूद (उपास्य) होने से अपनी बराअत ज़ाहिर कर देंगे और अल्लाह की पाकी बयान करते हुए कहेंगे कि तू ही हमारा मौला है, हम तेरे बन्दे हैं और तेरी ही अ़िबादत करते हैं। हम ने उन्हें कभी नहीं कहा कि वह हमारी अ़िबादत करें, यह लोग हकीकत में इब्लीस और दूसरे शैतानो



की अ़िबादत करते थे और उन में से अक्सर लोग उन्हीं की बात मानते थे।

यहाँ फ़रिश्तों का ज़िक्र बतौर खास मुशिरकीन के उस अ़कीदे की वजह से किया गया है कि उन की मूर्तियाँ हकीकत में अल्लाह के करीबी फ़रिश्तों की शक्ल में बनाई गई हैं, ताकि वह फ़रिश्ते उन के सिफारशी बनें।

**42** **فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُم لِبَعْضٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا ۚ وَنُفَوِّلُ الَّذِينَ ظَلَمُوا دُفْعًا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝**

मुफ़ससरीन लिखते हैं कि जब फ़रिश्ते मैदाने महशर में मअबूद (उपास्य) होने से अपनी बराअत का एलान कर देंगे, तो अल्लाह तआला मुशिरकों की उम्मीद व हसरत बढ़ाने के लिए और इस बात का इन्हार करने के लिए कि वह फ़रिश्ते उस के बेबस बन्दे हैं उन को सम्बोधित करके कहेगा कि आज के दिन तुम में से कोई किसी के लिए नफ़ा या नुक़सान का अख़्तियार नहीं रखता है और फिर मुशिरकीन से कहेगा कि अब चखो जहन्नम का वह अज़ाब, जिसे तुम दुनिया में झुठलाते थे।

**43** **وَإِذْ اتَّخَذْتُمْ آلِهَتَكُمْ بَيْنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَنْ عِبَادَةِ آبَائِكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا أِفْكٌ مُفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا يَحْرُفُونَ ۝**

इस्लाम की राह में रोड़े अट्काने के लिए मुशिरकीने मक्का विभिन्न तरीके के हथकंडे इस्तेमाल करते थे। नबी करीम (सल्ल०) पर जब कुर्आन करीम नाज़िल होता और आप ताज़ा ब ताज़ा अहले कुरैश के सामने उस की तिलावत करते ताकि उन खुली आयतों को सुनकर अल्लाह पर ईमान ले आएँ तो उन पर इस का उल्टा असर पड़ता और आपस में एक दूसरे से कहते कि यह आदमी तुम्हें तुम्हारे बाप-दादा के दीन से रोकना चाहता है यानी तुम लोग अपने बाप दादों के दीन पर ही डटे रहो, इसलिए यह दीन सहीह है और मुहम्मद जिस दीन की तरफ़ बुला रहा है वह ग़लत है और कुर्आन करीम के बारे में कहते थे कि यह एक झूठा कलाम है जिसे अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ बताया जाता है।

जब नबी करीम (सल्ल०) की दअवत से मुतअल्लिक़ ख़बरें सुनते और देखते कि लोग असर कुबूल कर रहे हैं और बड़ी संख्या में लोग इस्लाम में दाख़िल होते जा रहे हैं, तो कहते हैं कि लोगों! उस की बात का असर न लो, यह तो खुल्लम खुल्ला जादू है और मुहम्मद बहुत बड़ा जादूगर है।

**44** **وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ۝**

मुशिरकीने मक्का नबी करीम (सल्ल०) और नुज़ूले कुर्आन से पहले कहा करते थे कि अगर यहूद व नसारा की तरह हमारे लिए भी कोई किताब नाज़िल होती तो उस की तअलीमात पर अमल कर के औरों के मुक़ाबिले में ज़्यादा राहे रास्त पर आ जाते।

जब अल्लाह ने उन पर एहसान किया और कुर्आन नाज़िल किया तो इस को झुठला दिया और उस की मुख़ालिफ़त पर आमादा हो गये।

**45** **وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَمَا تَبَعُوا مَعَشَارَ مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝**



मुशिरकीने मक्का को अल्लाह ने धमकी दी है कि उन्हीं की तरह इन से पहले की बहुत सी कौमों ने अपने रसूलों को झुठलाया था और हम ने कुफ़ारे मक्का के मुक़ाबिले में उन्हें बेशुमार नेअ़मतों से नवाज़ा था। इन के पास तो उन कौमों का दस्वां हिस्सा भी ज़िन्दगी गुज़ारने की चीज़ें नहीं है, लेकिन हम ने उन को सख़्त अज़ाब में मुब्तिला किया और अपने रसूलों को झुठलाने का उन से बड़ा सख़्त बदला लिया, इसलिए अहले मक्का भी होश में आ जाएँ और अपनी हालत बदल लें, ईमान ले आएँ और हमारे कुर्आन और रसूल को झुठलाने से बाज़ आ जाएँ वरना हमें उन से भी बदला लेने में देर नहीं लगेगी।



मुशिरकीन-ए-मक्का की सरकशी, अल्लाह और उस के रसूल के साफ झूठ के बावजूद अल्लाह ने उन्हें पिछली कौमों की तरह हलाक नहीं किया, बल्कि उन्हें बार-बार ईमान व नेक अमल की दअवत दी और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़बानी उन्हें नसीहत की, कि तुम जो कहते हो कि मुहम्मद मजनून (पागल) हैं तो तुम लोग कभी एक साथ सर जोड़कर और कभी तन्हा ही हर किस्म के तअस्सुब से ऊपर उठकर

गौर करो कि क्या मुहम्मद तुम्हें मजनून (पागल) नज़र आते हैं? और तुम्हारे दर्मियान उनकी बेमिसाल सच्चाई है। क्या ऐसी अक़ल वाला आदमी बग़ैर सोचे समझे कोई ऐसा दावा कर बैठेगा जो उस की ज़िल्लत व रुस्वाई का ज़रिया बने और जो उसे हलाकत व बर्बादी के दहाने तक पहुँचा दे।

फिर यह कि उन से बहुत से ऐसे मोअजिज़ात ज़ाहिर हो चुके हैं जो इस बात की दलील हैं कि वह अपने दअव-ए-नुबूवत में सच्चे हैं और लोगों को सख़्त अज़ाब से डराने के लिए भेजे गये हैं।

इसलिए ऐ मुशिरकीने मक्का! तुम्हारे लिए भलाई इसी में है कि तुम ऐसी जाहिलाना बातों से बाज़ आ जाओ और मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान ले आओ।

**47-50**

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجَرْتُ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ قُلْ إِنْ رَبِّي يَتَذَكَّرُ  
بِالْحَقِّ ۖ عَلَامُ الْغُيُوبِ ۖ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّلُ الْبَاطِلَ وَمَا يُعِيدُ ۖ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي ۖ  
وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۖ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۖ

दाअी के बारे में जब लोगों को शुब्हा हो जाता है कि उस का मक्सद दुनिया कमाना है तो उस की बात असर खो देती है। इसीलिए अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्ल०) से कहा कि आप मुशिरकीने मक्का के सामने इस बात की सराहत कर दीजिए कि मुझे तुम से किसी दुनियावी फ़ायदे की लालच नहीं है, मैं अपनी दअवत में मुख़्लिस (निः स्वार्थ) हूँ और अपने अज़्र व सवाब की उम्मीद अल्लाह से रखता हूँ जो मेरी सच्चाई और इख़्लास से ख़ूब वाकिफ़ है।

ऐ मेरे नबी! आप यह भी कह दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपनी नुबूवत के लिए चुन लेता है और उस पर वस्य नाज़िल करता है, चूँकि वह ग़ैब की तमाम बातों को ख़ूब जानता है इसलिए वही बेहतर इल्म रखता है कि कौन रिसालत व वस्य का बोझ उठाने का हक़दार है।

आप यह भी कह दीजिए कि इस्लाम आ चुका, दअवते तौहीद ज़ाहिर हो चुकी और बातिल ने दम तोड़ दिया और हमेशा के लिए रुख़सत हो गया।

मुशिरकीन आप के बारे में कहते हैं कि मुहम्मद अपने बाप दादों का दीन छोड़कर गुमराह हो गया, तो आप उन से कह दीजिए कि अगर मैं अपने नफ़्स का गुलाम बनकर गुमराह हो गया हूँ तो इस गुमराही का वबाल मुझ पर ही पड़ेगा और अगर मैंने अल्लाह की भेजी हुई हिदायत को कुबूल कर लिया है और राहे रास्त पर चल पड़ा हूँ तो मुझ पर यह अल्लाह का फ़ज़ल व करम है कि उस ने मुझे इस की तौफ़ीक़ बख़्शी और वह बड़ा सुनने वाला और बहुत ही करीब है।

मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि आयत में ज़िक्र की हुई आख़िरी बात, कि मुझे तो दअवत का अज़्र सिर्फ़ अपने रब से चाहिए यह तमाम दाअियों के लिए आ़ाम है, इसलिए कि जब अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) को यह हुक्म दिया कि अपने बारे में यह कहें तो दूसरे लोग तो और ज़्यादा इस हुक्म में दाख़िल हैं।

**51-53**

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ ۖ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاقُشُ مِنْ  
مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ

क़ियामत के दिन हिसाब व किताब और जज़ा व सज़ा के फैसले के वक़्त मुशिरकीन के दिल व दिमाग़ ख़ौफ़ व दहशत से भरे होंगे, वह कहीं भाग कर न जा सकेंगे और जहन्नम के अज़ाब से बचने की कोई सूरत न होगी, उन्हें बहुत ही क़रीब से पकड़ कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

उस वक़्त वह कहेंगे कि हम मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान ले आये, लेकिन अब वह ईमान को कहाँ पा सकेंगे, वह तो उस से बहुत दूर जा चुके होंगे, वह तो मैदाने महशर में होंगे और ईमान लाने की जगह तो दुनिया थी। जब ईमान लाना मुफ़ीद था और वह नेअमत उन से ही क़रीब थी तो उस से गाफ़िल थे और अब जबकि वह नेअमत उन से बहुत दूर हो चुकी है तो उस की तरफ़ हाथ बढ़ा रहे हैं, अब वह उसे हरगिज़ नहीं पा सकेंगे।

आयत नं० (53) में इसी की तस्दीक़ है कि दुनिया में उन मुशिरकीन ने नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार कर दिया था और केवल वहम व गुमान की बुनियाद पर उन्हें जादूगर, शायर और मजनून कहा था और मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार कर दिया था।

**54**

وَجِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۝

मैदाने महशर का ईमान मुशिरकीन के काम नहीं आएगा और उन्हें घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। जैसा कि उन से पहले उन्हीं जैसे काफ़िरों का अन्जाम हो चुका होगा यानी उन का भी मैदाने महशर का ईमान कुबूल नहीं किया गया था और जहन्नम में डाल दिये गये थे और मुशिरकीने मक्का का यह अन्जाम इसलिए होगा कि वह दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह और नबी करीम (सल्ल०) की सदाक़्त और मरने के बाद उठाये जाने के बारे में हमेशा शक में रहे और कुफ़्र व शिर्क की हालत में ही उन की मौत आ गई।



(भाग-35)

सूर-ए-फ़ातिर (सूर: नं. 35)

आयत नं० 1 से 11 तक

## तफ़्सीर सूर: फ़ातिर

### नाम-

इस सूर: की पहली आयत में अल्लाह तआला की सिफ़त **فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** बताई गई है। इसी से यह नाम लिया गया है, इस का दूसरा नाम 'अल् मलायका' भी है। इसलिए कि पहली ही आयत में फ़रिश्तों की कुछ सिफ़ात और अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर दी गई ज़िम्मेदारियों का ज़िक्र है।

### नाज़िल होने का ज़माना-

'कुर्तुबी' लिखते हैं कि यह सूर: मक्की है। इमाम 'बुख़ारी' वग़ैरह ने भी 'इब्ने अब्बास' रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि यह सूर: फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई थी।





## आयत नं० 1 से 11 तक

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِةِ رُسُلًا أُولَىٰ أَجْنِبَةٍ مَّتَنَّى وَثَلَّثَ وَرَبِّعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ لَهُمْ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآلَىٰ تُوَفَّقُونَ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْعُرُوفُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۚ أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءٌ عَلَىٰهِ فَذَلَّ حَسَاءً ۚ فَإِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ مِنَ يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَىٰ بَدْرٍ مَمِّيَّتٍ فَاحْتَبَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَلِكَ النُّشُورُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يُبْصَرُ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمِّرُ مِنْ مَعْتَبٍ وَلَا يَنْقُصُ مِنْ عُمرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

### अनुवाद-

① सब तअरीफ अल्लाह ही के लिए हैं, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को पैग़ाम पहुँचाने वाला बना कर नियुक्त करता है, जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह पैदाइश में जो चाहता है बढ़ा देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है। ② अल्लाह जो रहमत (दयालुता) लोगों के लिए खोल दे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिसे वह रोक ले तो उसके बाद उसे कोई जारी करने वाला भी नहीं, वह बड़ा ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है। ③ ऐ लोगो! अल्लाह के एहसान जो तुम पर हैं, उनको याद करो, अल्लाह के सिवा क्या और कोई पैदा करने वाला है, जो आसमान और ज़मीन से तुमको रोज़ी दे? उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, फिर तुम किधर उल्टे बहके चले जा रहे हो? ④ और अगर यह लोग आप को झुठलाते हैं तो आप से पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। ⑤ ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाल दे और न वह धोखेबा (शैतान) अल्लाह के बारे में तुम्हें धोखा दे। ⑥ शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसको दुश्मन ही समझो, वह तो अपने गिरोह को केवल इसी लिए बुला रहा है कि वह दोज़ख वालों में शामिल हो जाएँ। ⑦ जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और जो ईमान लाए और अच्छे अमल किये उनके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है। ⑧ फिर क्या वह व्यक्ति जिसको उसके बुरे कामों को (शैतान ने) अच्छे काम बना कर दिखाए हों, और वह उनको अच्छा समझने लगे तो बेशक अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, तो उन लोगों पर अफ़सोस करके आपकी जान न जाती रहे, जो कुछ ये कर

रहे हैं, अल्लाह खूब जानता है। ⑨ और अल्लाह ही तो है जो हवाएँ चलाता है फिर वे बादल को उभारती हैं, फिर 'हम' उसे किसी सूखी निर्जीव ज़मीन की ओर हाँक देते हैं, फिर हम ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं, इसी तरह (मरने के बाद) ज़िन्दा हो कर उठना होगा। ⑩ जो व्यक्ति इज़्ज़त का चाहने वाला हो तो इज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है, भली बातें अल्लाह तक पहुँचती हैं और भले काम उनको ऊँचा उठाते हैं, और जो लोग बुरी चालें चलते हैं उनको सख्त अज़ाब होगा, और उनकी चालें नाकाम होकर रह जाएँगी। ⑪ और अल्लाह ही ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर बूँद (वीर्य) से, फिर जोड़े- जोड़े बनाए, उसके इल्म के बिना न कोई औरत गर्भवती होती है और न जन्म देती है, और न बड़ी उम्र वाला उम्र पाता है, और जो कुछ उसकी उम्र में कमी होती है वह सब एक किताब में (लिखा होता) है, बेशक यह सब अल्लाह के लिए आसान है।

## आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1-2

الْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولٰٓئِیْ اَخْبٰتٌ مِّنْهُ وَتِلْكَ اٰیٰتُهُۥ لِيُذِیْقَ الْخَلْقَ مَا یَشَآءُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ مَا یَفْضَحُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكٍ لِّهَا ۚ وَمَا یُمْسِكُ ۚ فَلَا مُرْسِلَ لَهَا ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝

ﷻ से मुराद वह तमाम तअरीफ़ें हैं जो आसमानों और ज़मीन के दर्मियान हो सकती हैं। इन सब का हक्दार वह अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को बिना पिछली मिसाल व मादह के पैदा किया और जिस ने फ़रिश्तों को अम्बिया के पास वह्य देकर भेजा और अपने बाज़ दूसरे बन्दों के पास उन्हें वह्य और नेक ख़्वाबों के ज़रिये अपना पैग़ाम भेजने वाला बनाकर भेजा और उन फ़रिश्तों में से किसी के दो, किसी के तीन और किसी के चार पर होते हैं और किसी के इस से भी ज़्यादा होते हैं।

जैसा कि 'सहीह बुख़ारी' की रिवायत में है कि मेअराज की रात जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत जिब्रईल (अलै०) को देखा तो उन के छः सौ पर थे, इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जिस चीज़ को जितनी तअ़दद में चाहता है पैदा करता है, इसलिए कि वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। तमाम रहमतों, बरकतों, ख़ैरात के ख़ज़ानों का वह अकेला मालिक है, किसी का उन में कोई दख़ल नहीं है, वह अगर किसी को उन में से देना चाहे तो कोई रोक नहीं सकता और अगर किसी को उन से मह़रूम करना चाहे तो कोई उसे दे नहीं सकता। वह साहिबे इज़्ज़त और हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभावी) है और तमाम कामों में हिक्मत व मस्लहत के मुताबिक़ अमल करता है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैंने एक बार हज़रत जिब्रईल (अलै०) को उनकी असली हालत में देखा उनके छः सौ पर थे। पूरब व पश्चिम की पूरी फ़िज़ा उस से भरी हुई दिखाई देती थी।" (बुख़ारी)

हज़रत मुगीरा बिन शुअबा से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह पढ़ा करते थे:

(لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مَغْطِي لِمَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ.

“अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं वह ‘वहदहु लाशरीक’ है। बादशाही और हम्द उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह! जिसे तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिस से तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं।” (बुख़ारी व मुस्लिम)

3

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ  
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَى تُؤْفَكُونَ ۝

अल्लाह तआला ने इन्सान को हुक्म दिया है कि उन के लिए अल्लाह की जो नेअमतेँ मिली हैं उसे याद करें और उस का शुक्र अदा करते रहें, ताकि वह नेअमतेँ बाकी रहें और नेअमतों का सिलसिला बाकी रहे और उन नेअमतों को याद करने का एक फ़ायदा यह भी है कि जब बन्दा यह समझेगा कि इन नेअमतों का पैदा करने वाला और इन्हें, भेजने वाला सिर्फ़ अल्लाह है तो एक नेक आदमी के ज़ेहन में यह बात ज़रूर आएगी कि अ़िबादत का वही अकेला हक़दार है और इस से बढ़कर नाशुक्री क्या हो सकती है कि ख़िलाये वह मालिक और बन्दा बताये किसी दूसरे का। इसीलिए आयत के आख़िर में कहा गया है कि जब उस के सिवा कोई बन्दगी के लायक नहीं है तो लोग उस से क्यों मुँह फेरते हैं?

4

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि हक़ स्पष्ट हो जाने के बावजूद अगर मुशिरकीने मक्का आप को झुठलाते हैं, तो आप को रंजीदा नहीं होना चाहिए क्योंकि अहले कुफ़्र व शिर्क का हर दौर में यही तरीका रहा है कि जब भी अल्लाह का कोई रसूल आया तो उन्होंने उस को झुठला दिया।

5

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

इसमें अल्लाह तआला ने लोगों को ख़बरदार किया है कि इन्सानों का दोबारा ज़िन्दा किया जाना, हिसाब व किताब, जज़ा व सज़ा और जन्नत व जहन्नम की बातें बिल्कुल सहीह और बरहक़ हैं, इसलिए वह दुनिया की ज़िन्दगी, उस के ऐश व आराम में पड़कर आख़िरत की कामियाबी के लिए नेक अमल करना भूल न जाए यहाँ तक कि मौत आ जाए और अल्लाह के पास खाली हाथ पहुँचे, उस वक़्त अफ़सोस करते हुए कहे कि ऐ काश! मैंने इस ज़िन्दगी की कामियाबी के लिए नेक अमल किया होता और ऐसा न हो कि शैतान उन्हें यह कहकर बहका दे कि अल्लाह की रूहमत बड़ी वसीअ है और उस का फ़ज़ल व करम बड़ा आम है, इसलिए यहाँ ख़ूब ऐश कर लो, वह तो ग़फ़ूर रहीम है ज़रूर माफ़ कर देगा।

यानी इतना समझाने के बाद भी यह लोग आप (सल्ल०) को झुठलाएँगे तो ग़म न कीजिए। पिछले नबियों के साथ यही बर्ताव हुआ है, यह कोई अनोखी बात नहीं। हठधर्मी और ज़िद्दी लोग कभी अपनी

हट से बाज़ नहीं आए ऐसों का मामला खुदा के हवाले कीजिए। वहीं पहुँचकर सब बातों का फैसला हो जाएगा।

**6-7** إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا - إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ  
عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ

यानी क़ियामत आनी है और यकीनन सब को अल्लाह तआला की बड़ी अदालत में हाज़िर होना है। इस दुनिया की टीप टाप और फ़ानी ऐश व बहार पर न फूलो और उस शैतान के धोके में मत आओ। वह तुम्हारा हमेशा से दुश्मन है, कभी अच्छा मश्वरा न देगा। वह यही कोशिश करेगा कि अपने साथ तुम को भी दोज़ख में पहुँचा कर छोड़े, तरह-तरह की बातें बनाकर खुदा और आख़िरत की तरफ़ से ग़ाफ़िल करता रहेगा। इसलिए चाहिए कि तुम दुश्मन को दुश्मन समझो, उस की बात न मानो। उस पर साबित क़दम रहो कि हम तेरी मक्कारी के जाल में फंसने वाले नहीं। हम ख़ूब समझते हैं कि तू दोस्ती के लिबास में भी दुश्मनी करता है।

**8** أَفَمَنْ زَيْنَ لَهُ سَوَاءَ عَمَلِهِ فَرَأَاهُ حَسَاءً فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ - فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ  
عَنِهِمْ حَسْرَتٌ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ

यानी शैतान ने जिस की निगाह में बुरे काम को भला कर दिखाया क्या वह शख्स उस के बराबर हो सकता है जो खुदा के फ़ज़ल से भले बुरे की तमीज़ रखता हो? नेकी को नेकी और बुराई को बुराई समझता हो। जब दोनों बराबर नहीं हो सकते तो अन्जाम दोनों का एकसाँ कैसे हो सकता है और यह ख़याल न करो कि कोई आदमी आँखों से देखते हुए बुराई को भलाई कैसे समझ लेगा। अल्लाह जिस को भटकाना चाहे उस की अक्ल इसी तरह औंधी हो जाती है और जिस को हिदायत पर लाना चाहे तो किसी शैतान की ताक़त नहीं जो उसे ग़लत रास्ते पर डाल सके या उल्टी बात समझा दे।

बहरहाल जो शख्स शैतानी अग़्वा से बुराई को भलाई और नेकी समझ ले यानी ज़हर को तिर्याक समझ ले, क्या उस के सीधे रास्ते पर आने की कुछ उम्मीद हो सकती है? जब नहीं हो सकती और हिदायत व गुमराही अल्लाह की मर्ज़ी व हिक़मत के ताबेअ (अधीन) है तो आप इन हठधर्मियों के ग़म में अपने को क्यों घुलाते हैं? इस हसरत में यह कि बद्बख़्त अपने फ़ायदे की बात को क्यों कुबूल नहीं करते क्या आप अपनी जान दे देंगे, आप उन को एक तरफ़ कीजिए अल्लाह उन के सब करतूत जानता है वह खुद उन का भुगतान कर देगा, आप ग़मगीन न हों।

**9** وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فُسُقْنَهُ إِلَى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا - كَذَلِكَ النُّشُورُ

अल्लाह के हुक्म से हवाएँ बादलों को उठा कर लाती हैं और जो ज़मीन मुर्दा पड़ी थी यानी खेती व हरियाली कुछ न थी, बारिश के पानी से उस में जान पड़ जाती है। इसी तरह अल्लाह तआला तुम को भी मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर के खड़ा कर देगा।

रिवायात में है कि जब अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करना चाहेगा तो मुर्दे उसी तरह जी उठेंगे जैसे ज़ाहिरी बारिश से दाना ज़मीन से उग आता है।



10

مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۖ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ  
وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يُبْوَءُهُ ۚ

काफ़िरो ने दूसरे मअबूद (उपास्य) इसलिए ठहराए थे कि अल्लाह के यहाँ उन की इज्जत होगी।

(सूर: मरयम आयत नं० 81) وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ الْكَافِرِينَ أُولَٰئِكَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَٰهًا لَّهُمْ ۚ

और बहुत से लोग मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरो से दोस्ती (राजदार) बनाते थे कि इस से उन की इज्जत बनी रहेगी

(सूर: निसा नं० 139)

इस किस्म के लोगों को बतलाया कि जो शख्स दुनिया व आखिरत की इज्जत चाहे, उसे चाहिए कि अल्लाह से इज्जत तलब करे कि उसी की फ़रमाँबरदारी और यादगारी से असली इज्जत होती है। तमाम इज्जतों का मालिक वही अकेला है, जिस किसी को इज्जत मिली या मिलेगी उसी के ख़ज़ाने से मिली है या मिलेगी।

यह अल्लाह का कलाम है। ज़िक्कुल्लाह, दुआ, तिलावत, इल्म व नसीहत की बातें, यह सब चीज़ें अल्लाह की तरफ़ चढ़ती हैं और कुबूलियत की इज्जत हासिल करती हैं।

(ज़िक्कुल्लाह वगैरह) का मामला है ऊपर चढ़ना। उस के साथ दूसरे आमाल सालिहा हों तो वह उस को सहारा देकर और ज़्यादा उभारते और बुलन्द करते रहते हैं।

कुछ मुफ़सिरीन ने وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ यह मअना लिये हैं कि साफ़ सुथरा कलाम अच्छे काम को ऊँचा और बुलन्द करता है। यह भी दुरुस्त है कि बाज़ ने يَرْفَعُهُ की ज़मीर अल्लाह की तरफ़ लौटाई है यानी अल्लाह अमल सालेह को बुलन्द करता और कुबूल करता है, बहरहाल भले और अच्छे काम दोनों बलन्दी चाहते हैं, लिहाज़ा जो शख्स अल्लाह तआला से इज्जत का तालिब हो वह इन चीज़ों के ज़रिये इज्जत हासिल करे।

यानी जो लोग बुरी तद्बीरें सोचते और हक़ के खिलाफ़ रहते हैं आखिर नाकाम होकर ख़सारा उठाएँगे। कुरैश ने 'दारुल् नदवा' में बैठ कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कैद करने या क़त्ल करने या वतन से निकालने के मश्वरे किये थे। नतीजा यह हुआ कि 'जंगे बद्र' के मौक़े पर वही लोग वतन से निकले, मुसलमानों के हाथों से क़त्ल हुए और बद्र में हमेशा के लिए कैद कर दिये गये।

11

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ  
وَمَا يَحْمِلُ مِنْ مَّعْمَرٍ وَلَا يَنْقُصُ مِنْ عُمُرٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

यानी आदम को मिट्टी से फिर उस की औलाद को पानी की बूंद से पैदा किया। फिर मर्द व औरत के जोड़े बना दिये जिस से नस्लें फैलीं। इस दर्मियान हमल के ठहरने से लेकर बच्चे की पैदाइश तक जो समय गुज़रा सब की ख़बर अल्लाह ही को है। माँ-बाप भी नहीं जानते कि अन्दर क्या-क्या बना।

यानी जिस की जितनी उम्र है 'लौहे महफूज़' में लिखी हुई है और जो सबब उम्र के घटने बढ़ने के हैं या यह कि कौन पूरी उम्र को पहुँचेगा कौन नहीं, सब अल्लाह के इल्म में है और अल्लाह के लिए यह कुछ मुश्किल नहीं, उस को तो हर चीज़ का इल्म हमेशा से है। उस को अपने जैसा न समझो।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं कि हर काम आसानी से होता है। जैसे- आदमी का बनना और अपनी उम्र को पहुँचना। इसी तरह समझ लो इस्लाम बढ़ेगा और कुफ़्र को ज़लील होना होगा।

## Writer at a glance

**Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi** (*Aacharya*)

**Name** : Muhammad Sarwar Muhammad Sarwar Farooqui S/o. Mohd Haneef Farooqui S/o. Abdul Qayyum Farooqui S/o. Mahmood Ali Farooqui S/o. Ramzan Ali Farooqui S/o. Imam Baksh Farooqui S/o. Khairat Ali Farooqui S/o. Nisar Ahmad S/o. Muhammad Ali S/o. Athar Ali S/o. Abdul Hafeez S/o. Jalaluddin S/o. Mohd Suleman S/o. Allaiddin S/o. Mohd Ishaq S/o. Nabiullah S/o. Khwaja Bakarullah S/o. Abdullah Yamni S/o. Abdul Aziz Yamni S/o. Salim S/o. Abdullah S/o. Sayyedna Umar Farooque Raziallahu Anhu.

### Educational Background.

**Basic** : Intermediate,  
**Higher Education** : M.A.  
**Arabic** : Almiat, Fazeelat & Iftah,  
 (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.  
**Islamic Tadreebi Course** : **Jamia Islamiya**  
 Madina Munawarah (Saudi Arabia).  
**Urdu** : Adeeb Kamil & Mua'llim  
**Sanskrit** : Shastri, Acharya  
**Computer skill** : P.G.D.C.A  
**Major Research** : Qur'an and Fiqah,  
 Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

### Present Posts

**President** : **Jamiat Payam-e-Amn**, (Educational Society)  
 lucknow, U.P. (India)  
**Rafiq Ilmi** : **Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom**  
**Nadwatul Ulama, Lucknow, U.P. (India)**  
**Director** : **Markaz- ul-Tawheed Al-Islami** lucknow, U.P. (India)  
**Managing Director** : **Jamia Dar-e-Arqam**, Fatehpur, Haswa, U.P. (India)  
**Manager** : **Jamia Dar-e-Arqam**  
 (Educational Society) Allahabad (India)  
**Chairman** : **Arqum Model School**, Lucknow, U.P. (India) .  
**General Secretary** : **All India, Jamiat Darul-Aml**  
 lucknow, U.P. (India)  
**Manager** : **Universal Peace Foundation**  
 lucknow, U.P. (India)



**(मुफ़्तिरे कुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी साहब नदवी  
द्वारा लिखित अहम हिन्दी पुस्तकें**

| नाम                                                                             | मूल्य    |
|---------------------------------------------------------------------------------|----------|
| 1. कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/8)         | 300 रु.  |
| 2. कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/16)        | 110 रु.  |
| 3. कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़-20x30/32)        | 100 रु.  |
| 4. कुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)                              | 180 रु.  |
| 5. तफ़्सीर फ़ारुकी {भाग-1} (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)   | 400 रु.  |
| 6. तफ़्सीर फ़ारुकी {भाग-2} (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)  | 400 रु.  |
| 7. तफ़्सीर फ़ारुकी {भाग-3} (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक) | 400 रु.  |
| 8. तफ़्सीर फ़ारुकी {भाग-4} (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 19 से 25 तक) | 400 रु.  |
| 9. तफ़्सीर फ़ारुकी {भाग-5} (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 26 से 30 तक) | 400 रु.  |
| तफ़्सीर फ़ारुकी (मुकम्मल सेट) (भाग 1 से 5 तक)                                   | 2000 रु. |
| 10. इस्लाम धर्म क्या है? (कुबूले हुक के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागों में         | 250 रु.  |
| 11. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम                                                    | 180 रु.  |
| 12. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन                                            | 80 रु.   |
| 13. अन्तिम सन्देश कहाँ, कब और कौन (Hard bound)                                  | 150 रु.  |
| 14. अन्तिम सन्देश कहाँ, कब और कौन (Paper back)                                  | 120 रु.  |
| 15. जन्नत के हालात और जन्नती (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)                     | 100 रु.  |
| 16. कुफ़्र और शिर्क की इकीकत (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)                     | 90 रु.   |
| 17. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें               | 80 रु.   |
| 18. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी                                     | 200 रु.  |
| 19. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (कुर्आन व इदीस की रोशनी में)           | 200 रु.  |
| 20. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अज़माले इस्ना की रोशनी में)                    | 50 रु.   |
| 21. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद                                                 | 60 रु.   |
| 22. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से                                     | 100 रु.  |
| 23. अज़ान क्या है?                                                              | 30 रु.   |
| 24. आओ नमाज़ की ओर                                                              | 40 रु.   |
| 25. रोज़ा का हुक्म और उसके मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)                 | 40 रु.   |
| 26. हज़ और उमरा का आसान तरीका (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)                    | 30 रु.   |
| 27. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)                 | 40 रु.   |
| 28. उमरह का आसान तरीका (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)                           | 25 रु.   |
| 29. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)                                             | 70 रु.   |
| 30. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअवीज़, गंडे (शरीअत की रोशनी में)                 | 40 रु.   |
| 31. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)                       | 50 रु.   |
| 32. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)                       | 40 रु.   |
| 33. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ह जिन्दगी                       | 40 रु.   |

| नाम                                                    | मूल्य   |
|--------------------------------------------------------|---------|
| 34. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअत की रोशनी में)   | 40 रु.  |
| 35. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन               | 160 रु. |
| 36. सूर-ए- फ़ातिहा की तफ़्सीर                          | 30 रु.  |
| 37. तौहीद की इकीक़त (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)       | 40 रु.  |
| 38. पवित्र कुआन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम        | 30 रु.  |
| 39. इस्लाम धर्म तल्वार से फैला या सदाचार से            | 60 रु.  |
| 40. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से) | 60 रु.  |
| 41. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी        | 60 रु.  |
| 42. इस्लामी विरासत की तक्सीम एक नज़र में               | 20 रु.  |
| 43. मीरास की तक्सीम                                    | 30 रु.  |
| 44. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही                        | 40 रु.  |
| 45. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअत की रोशनी में)     | 20 रु.  |
| 46. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में           | 20 रु.  |
| 47. सृष्टि का सृष्टा कौन?                              | 30 रु.  |
| 48. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास   | 40 रु.  |
| 49. इस्लाम?                                            | 10 रु.  |

**(मुफ़सिरे कुआन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी साहब नदवी  
द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें**

|                                                                                    |         |
|------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| 50. मअ़ानी कुआनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रखाँ उर्दू तर्जुमः)           | 500 रु. |
| 51. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?                                                   | 140 रु. |
| 52. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुकात और मज़हबी आज़ादी                                  | 40 रु.  |
| 53. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात                        | 40 रु.  |
| 54. कुआन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअज़िज़ा                                      | 40 रु.  |
| 55. कुआन में इन्सान का मक़ाम और उस का अज़ला मक़सद                                  | 40 रु.  |
| 56. आमा़ल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत                              | 40 रु.  |
| 57. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक्सीम                                      | 40 रु.  |
| 58. उम्मेते मुहम्मदिया की इज़ज़त का मेअयार और बनी इस्राईल                          | 40 रु.  |
| 59. कायनात के अज़ायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक                             | 40 रु.  |
| 60. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)                   | 50 रु.  |
| 61. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर                              | 50 रु.  |
| 62. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक्क                                             | 50 रु.  |
| 63. हिन्दू धर्म, फ़िर्के तन्ज़ीमें और इदारों का तआरुफ़                             | 90 रु.  |
| 64. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में। | 40 रु.  |
| 65. बौद्ध धर्म और इस्लाम                                                           | 40 रु.  |

| नाम                                                                     | मूल्य   |
|-------------------------------------------------------------------------|---------|
| 66. कलिमा-ए-तय्यबः की हकीकत और उस के तकाज़े                             | 80 रु.  |
| 67. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअवत उस्तूबे अबिया की रोशनी में           | 70 रु.  |
| 68. अल्लाह तआला का तआरुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल                    | 70 रु.  |
| 69. कियामत तक के फ़िल्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में) | 70 रु.  |
| 70. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)                | 40 रु.  |
| 71. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क की तक्सीम और कमज़ोर तब्के की किफ़ालत       | 50 रु.  |
| 72. कुआन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल                                   | 70 रु.  |
| 73. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)                | 40 रु.  |
| 74. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद कुतुबे सीरत की रोशनी में)       | 40 रु.  |
| 75. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में) | 30 रु.  |
| 76. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें       | 100 रु. |
| 77. जन्नत के हालात और जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र                        | 80 रु.  |
| 78. कुफ़्र व शिर्क की हकीकत (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)                | 80 रु.  |
| 79. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सद्दाबा से मुतअल्लिक़ अकीदा    | 80 रु.  |
| 80. कुआन के मुताबिक़ दअवत और इस्लामी जिहाद (कुआन व हदीस की रोशनी में)   | 60 रु.  |
| 81. ज़बरदस्ती इस्लाम कुबूल करवाने की मुमानिअत                           | 60 रु.  |
| 82. दाढ़ी की अहमियत (शरीअत की रोशनी में)                                | 40 रु.  |
| 83. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा                        | 40 रु.  |
| 84. रोज़ः, तरावीह, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एहक़ाम व मसायल                  | 40 रु.  |
| 85. हज़ और उमरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअत की रोशनी में)                  | 40 रु.  |
| 86. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)              | 40 रु.  |
| 87. काग़ज़ी नोट और बैअ की हकीकत                                         | 40 रु.  |
| 88. इस्लामी विवज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)                            | 50 रु.  |
| 89. तफ़सीर का बुनियादी मअख़ज़                                           | 30 रु.  |
| 90. हिन्दुस्तान में कुआन के तर्जुमे की शुरुआत और चन्द तफ़ासीर का तआरुफ़ | 30 रु.  |
| 91. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)            | 120 रु. |
| 92. इस्लामी मआशियात का तकाबुली जायज़ा                                   | 30 रु.  |
| 93. इस्लाम का ज़रई निज़ाम                                               | 40 रु.  |
| 94. दौलत की पैदाईश और अतियाते कुदरत                                     | 40 रु.  |
| 95. मुसलमानों के फ़िर्के और उनके अक़ायद                                 | 80 रु.  |
| 96. इस्लाम में औरत का मक़ाम                                             | 50 रु.  |
| 97. तअहुदे इज्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आलिम की रोशनी में)               | 60 रु.  |
| 98. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें                                        | 30 रु.  |
| 99. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़दीस की रोशनी में)               | 30 रु.  |
| 100. जहन्नम के हालात और जहन्नमी (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)            | 60 रु.  |
| 101. मुस्तनद मस्नून दुआएँ                                               | 20 रु.  |

| नाम                                                                               | मूल्य   |
|-----------------------------------------------------------------------------------|---------|
| 102. इस्लाम की दअवत का असर इन्सानी दुनिया पर                                      | 50 रु.  |
| 103. कुर्आनी आयात और इस्लामी मुआशरा                                               | 30 रु.  |
| 104. आमाल सालिहा (भाग-1)                                                          | 100 रु. |
| 105. आमाल सालिहा (भाग-2)                                                          | 100 रु. |
| 106. अल्लाह तआला का तआरुफ और कलिम-ए-शहादत के फजायल                                | 100 रु. |
| 107. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख्लाक और आप (सल्ल०) की सीरत                   | 100 रु. |
| 108. आखिरत का अकीदा (कुर्आन व हदीस की रौशनी में)                                  | 50 रु.  |
| 109. इख्लास की फज़ीलत (कुर्आन व हदीस की रौशनी में)                                | 50 रु.  |
| 110. दअवत की जिम्मेदारी (कुर्आन व हदीस की रौशनी में)                              | 50 रु.  |
| 111. ईदैन व कुर्बानी के मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                      | 90 रु.  |
| 112. खातिमुन्नबीईन (कुर्आन व हदीस की रौशनी में)                                   | 150 रु. |
| 113. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                    | 80 रु.  |
| 114. नबियों की जीवनी (कुर्आन व हदीस की रौशनी में)                                 | 100 रु. |
| 115. ईमानियात, अक़ायद और नज़र से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)   | 60 रु.  |
| 116. इल्म से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                       | 40 रु.  |
| 117. तहारत से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                      | 40 रु.  |
| 118. हिफ़ाज़ते कुर्आन से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)           | 40 रु.  |
| 119. नमाज़ व जमाअत से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)              | 60 रु.  |
| 120. ओदैन व जुमअ से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                | 50 रु.  |
| 121. तरावीह व एतिकाफ़ से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)           | 50 रु.  |
| 122. सफ़र और सद्क-ए-फ़ित्र से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)      | 60 रु.  |
| 123. कुर्बानी से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                   | 60 रु.  |
| 124. तलाक़ व इहत और नफ़का से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)       | 80 रु.  |
| 125. निकाह से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                      | 60 रु.  |
| 126. हिबा व जहेज़ से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)               | 40 रु.  |
| 127. वक्फ़ से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                      | 40 रु.  |
| 128. मस्जिद से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                     | 80 रु.  |
| 129. तिजारत की मुख़लिफ़ किस्मों से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) | 40 रु.  |
| 130. वसीयत व मीरास से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)              | 40 रु.  |
| 131. अज़ान व इक़ामत से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)             | 40 रु.  |
| 132. तर्बियत, रज़ाअत व अकीका से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)    | 80 रु.  |
| 133. ज़कात से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                      | 80 रु.  |
| 134. हज़ से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                        | 40 रु.  |
| 135. इमामत से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                      | 40 रु.  |
| 136. किरत से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)                       | 40 रु.  |
| 137. सज्द-ए-तिलावत से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)              | 40 रु.  |

## नाम

## मूल्य

138. इस्लामी पर्दा (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) 80 रु.  
 139. मीरास से मुतअल्लिक मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) 40 रु.  
 140. मुहर्रम की हकीकत और आशूरा के वाकिआत 25 रु.  
 141. इज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अरब 50 रु.  
 142. ग़ैर अरबी रस्मुल्ख़त (फ़ॉन्ट) में कुर्आन की इशाअत 12 रु.

## (मुफ़स्सिरे कुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी साहब नदवी की अरबी पुस्तकें

143. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अदयान वल्हज़ारात अल्मुख़्तलह 60 रु.  
 144. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल कुर्आन वल् सुन्नह 40 रु.  
 145. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् कुर्आन वल् सुन्नह 120 रु.  
 146. अस्बाब तहबतुल् अज़माल वल् हमियतुल् निया फ़ी ज़ौइल कुर्आन वल् सुन्नह 120 रु.  
 147. अल् फ़ितन अल् वाकिअः इला कियामः अल् साअह फ़ी ज़ौइल अह्दादीस अल् शरीफ़ा 100 रु.  
 148. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुब अल् हिन्दूसिया वसी वल् दियानात 150 रु.  
 149. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अकाइदोहा, मुनज्ज़िमातुहा व अहदाफुहा 140 रु.  
 150. अहमयतुल् दअवह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल कुर्आन वल् सुन्नह 100 रु.  
 151. ज़िक्र मुहम्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद 80 रु.  
 152. नब्ज़ह अ़न सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 80 रु.

## (मुफ़स्सिरे कुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी साहब नदवी की अंग्रेज़ी पुस्तकें

153. मुहम्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण 40 रु.  
 154. मुहम्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप 30 रु.  
 155. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम 80 रु.  
 156. दी स्वीड ऑफ़ इस्लाम 40 रु.  
 157. अज़ान, ए कालिंग फ़ार हियूमेनिटी 40 रु.  
 158. इस्लाम? 10 रु.

## (मुफ़स्सिरे कुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी साहब नदवी की अनुवाद की हुई पुस्तकें

159. मुन्तख़ब अह्दादीस (लेखक- इज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०) 60 रु.  
 160. कादियानियत नुबूवते मुहम्मदी के ख़िलाफ़ बगावत (लेखक- इमामे हरम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्थिल) 40 रु.  
 161. दारे अरक़म का एहसान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-इज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०) 30 रु.  
 162. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुहम्मद हसनी रह०) 30 रु.  
 163. रमज़ान का तोहफ़ा (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ हसनी नदवी) 20 रु.  
 164. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ हसनी नदवी) 20 रु.  
 165. मालिक व मख़्लूक श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा कादरी) (तस्वीर व तर्ज़ीब- मु० मुहम्मद सरवर फ़ारूकी) 30 रु.  
 166. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीकी नदवी) 30 रु.

नाम

भाषा

मूल्य

(मुफ़्तिरे कुआँन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी साहब द्वारा लिखित दीगर पुस्तकें

|                                                                                    |        |         |
|------------------------------------------------------------------------------------|--------|---------|
| 167. दो मआशरती मसौयल                                                               | उर्दू  | 80 रु.  |
| 168. तफ़सीर फ़ारुकी (जिल्द शशुम)                                                   | हिन्दी | 500 रु. |
| 169. तफ़सीर फ़ारुकी (जिल्द हफ़्तुम)                                                | // //  | 500 रु. |
| 170. तफ़सीर फ़ारुकी (जिल्द हश्तुम)                                                 | // //  | 500 रु. |
| 171. तारीख़ुल् इस्लाम                                                              | उर्दू  | 500 रु. |
| 172. कससुल् अम्बिया                                                                | // //  | 500 रु. |
| 173. मजमुआ अह्दादीस (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                                  | // //  | 200 रु. |
| 174. दुआ के आदाब (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                                     | // //  | 20 रु.  |
| 175. इस्लाम के अदालती फैसले (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                          | // //  | 40 रु.  |
| 176. सीरत सहाबा                                                                    | // //  | 200 रु. |
| 177. कुर्बानी से मुतअल्लिक मसौयल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                     | // //  | 500 रु. |
| 178. तह़ारत से मुतअल्लिक मसौयल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                       | // //  | 50 रु.  |
| 179. इल्म से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                         | // //  | 50 रु.  |
| 180. ईमानियात, अक़ायद और नज़र से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)     | // //  | 50 रु.  |
| 181. ईदैन व जुमअः से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                 | // //  | 40 रु.  |
| 182. मदारिस से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                       | // //  | 30 रु.  |
| 183. हिबा व जहेज़ से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                 | // //  | 30 रु.  |
| 184. सूद से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                          | // //  | 30 रु.  |
| 185. सफ़र और सद्कः फ़ित्र से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)         | // //  | 30 रु.  |
| 186. तलाक़ व इद्दत और नफ़का से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)       | // //  | 40 रु.  |
| 187. नमाज़ व जमाअत से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                | // //  | 50 रु.  |
| 188. निकाह से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                        | // //  | 40 रु.  |
| 189. ज़कात से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                        | // //  | 50 रु.  |
| 190. हज़ से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                          | // //  | 40 रु.  |
| 191. इमामत से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                        | // //  | 50 रु.  |
| 192. किराअत से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                       | // //  | 40 रु.  |
| 193. तिजारत की मुख़्तलिफ़ किस्मों से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में) | // //  | 50 रु.  |
| 194. वसीयत व मीरास से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                | // //  | 40 रु.  |
| 195. अज़ान व इक़ामत से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)               | // //  | 50 रु.  |
| 196. तर्बियत, रज़ाअत व अक़ीका से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)     | // //  | 40 रु.  |
| 197. अलामात क़ियामत (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                                  | // //  | 80 रु.  |
| 198. सज्दः से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                        | // //  | 40 रु.  |
| 199. वक्फ़ से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                        | // //  | 40 रु.  |
| 200. मस्जिद से मुतअल्लिक मसायल (कुआँन व सुन्नत की रौशनी में)                       | // //  | 40 रु.  |



| नाम                                                                          | भाषा  | मूल्य  |
|------------------------------------------------------------------------------|-------|--------|
| 201. इल्म व उल्मा से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)            | उर्दू | 40 रु. |
| 202. तक्लीद व इज्तिहादी की शरई हैसियत (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)           | // // | 50 रु. |
| 203. सज्दः सहू से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)               | // // | 50 रु. |
| 204. बिद्अत की नहूसत से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)         | // // | 50 रु. |
| 205. किरायेदारी से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)              | // // | 50 रु. |
| 206. कारोबार में शिकत से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)        | // // | 40 रु. |
| 207. मीरास से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)                   | // // | 40 रु. |
| 208. सुन्नत व नवाफिल से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)         | // // | 40 रु. |
| 209. इस्लाह मुआशरह से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)           | // // | 40 रु. |
| 210. औरतों के मख्सूस मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)                      | // // | 40 रु. |
| 211. इन्साना अअज़ा से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)           | // // | 40 रु. |
| 212. मय्यत से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)                   | // // | 40 रु. |
| 213. रमज़ान, रोज़ः और तरावीह से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में) | // // | 60 रु. |
| 214. एतिकाफ़ से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)                 | // // | 30 रु. |
| 215. ज़मीन से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)                   | // // | 50 रु. |
| 216. रवय्यतुल हिलाल से मुतअल्लिक मसायल (कुआन व सुन्नत की रीशनी में)          | // // | 30 रु. |

